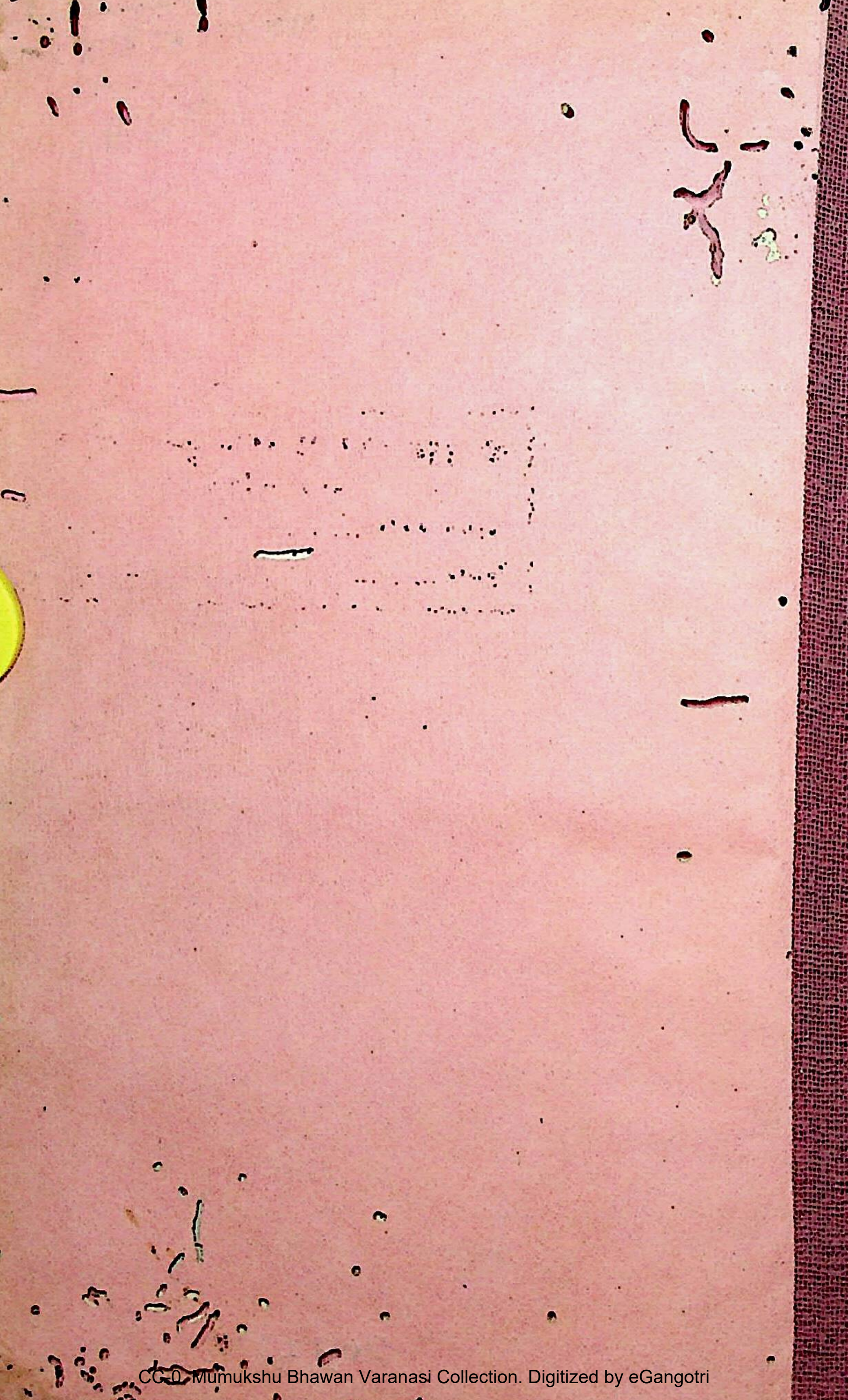
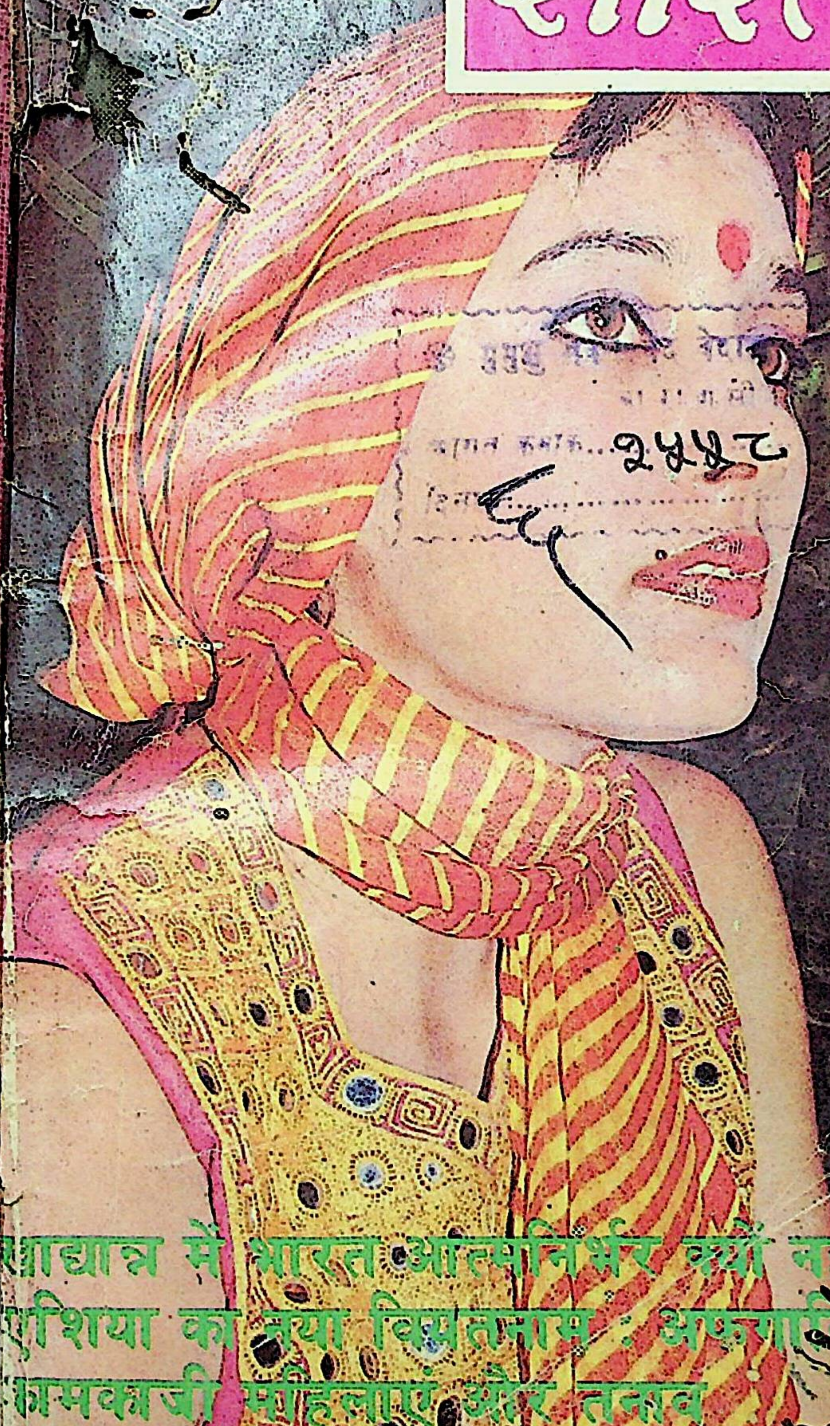
कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

14-12-83		



सरिता



खाद्यान्न में भारत आत्मनिर्भर क्यों नहीं?

एशिया का नया वियतनाम : अफगानिस्तान

कामकाजी महिलाएं और तनाव



अप्रैल (द्वितीय) 1983
अंक 672

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक
पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका



कथा साहित्य

लेख

संपादक व प्रकाशक **विश्वनाथ**

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स.प. प्रा.लि., गाजियाबाद में मुद्रित.
संपादन, प्रकाशन, एजेंसी व ग्राहक विभाग: 3—ई, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
बंबई कार्यालय : 79 ए, मित्तल चैंबर, नरीमन पाइंट, बंबई. फोन नं. 232409.
मद्रास कार्यालय : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008.
कलकत्ता कार्यालय : पोद्दार पाइंट, तीसरी मंजिल, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-16.
बंगलौर कार्यालय : नं. 302- 'बी', 'ए' विंग-तीसरी मंजिल, क्वींस कार्नर अपार्टमेंट, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001.
व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
मूल्य : एक प्रति 3.50 रु., वार्षिक : 84 रु., विदेशों में (समुद्री डाक से) : 170 रुपए. यूरोप में (हवाई डाक से) : 400 रु. अमरीका में (हवाई डाक से) : 475 रु.

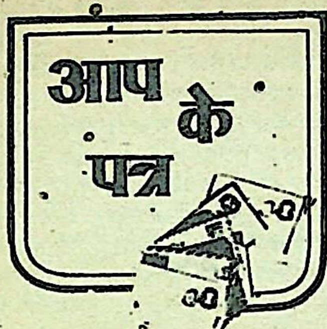
कविताएं



स्तंभ



पॉयज़ की ताज़गी
दिन भर लुभाए
नहाने के बाद जैसे
मन खिल जाए
पॉयज़ डियोड्रॅन्ट के कारण हर समय
एक भला-सा एहसास! इसे, नहाने के बाद
इस्तेमाल कीजिए और पसीने की बदबू से
छुटकारा पाइए. सारा दिन ताजगी ही ताजगी।
पॉयज़ रोल-ऑन या स्प्रे की
भीनी-भीनी खुशबुओं की
सदाबहार ताजगी.
दोनों ही नये आकर्षक
ग्लास कन्टेनर में.
poise
poise
पॉयज़
रोल-ऑन और स्प्रे
डियोड्रॅन्ट
विक्रेता:
लीज़ इण्डिया लिमिटेड.
U-PD-15 HIN



निष्पक्ष व स्पष्ट विचार

फरवरी (प्रथम) अंक के 'सरित प्रवाह' में आप के बड़े ही निष्पक्ष, स्पष्ट और लोकतंत्र को प्रोत्साहन देने वाले विचार पढ़ने को मिले. इतने स्पष्ट विचार केवल सरिता में ही पढ़ने को मिलते हैं. 'ईश्वर का अस्तित्व' लेख तो वैचारिक क्रांति का ही जनक है. साथ ही इस अंक के अन्य लेखों व कहानियों द्वारा भी सामाजिक कुरीतियों का सशक्त विरोध किया गया है.

—स. कुमार

*

अधकचरापन : कुछ प्रतिक्रियाएं

समस्या कथा 'अधकचरापन' (मार्च/प्रथम) कई बहनों की जिंदगी से जुड़ी हुई कहानी है. मेरी एक सहेली के साथ भी कुछ ऐसी ही घटना हुई थी, मगर उस ने पहले ही दिन समझदारी से काम लिया. लेकिन अफसोस की बात तो यह है कि जब उस ने यह बात अपनी मां को बताई तो मां अपनी बेटी को ही भलाबुरा कहने लगी.

आज इस घटना को पांचछः साल हो चुके हैं फिर भी अभी तक उस निर्दोष लड़की से रूखा व्यवहार किया जाता है. उसे किसी भी पुरुष के साथ बोलने की मनाही है. वह घुटघुट कर जी रही है और उस में बदले की भावना पनप रही है.

—विमला धवन

*

'अधकचरापन' कहानी सरिता के स्तर की नहीं है.

मान लीजिए, किसी लड़की के साथ इस प्रकार की अनुचित घटना घटती है और वह हीन भावना से ग्रस्त है. लेकिन क्या यह उचित है कि अपनी आपबीती का वर्णन वह उत्तेजक भाषा में विस्तार से करे? शायद सरिता का कोई भी प्रबुद्ध पाठक किसी भी समस्या को इस प्रकार कथा के रूप में पेश किया जाना पसंद नहीं करेगा.

—ओंकारनाथ बजाज

*

कहानी के अंत में समस्या का जो समाधान सुझाया गया है, वह मेरे विचार में बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं है. कदाचित इस समाधान को प्रस्तुत करते समय लेखिका का यह उद्देश्य रहा हो कि एक नए जीवन के आरंभ में पतिपत्नी एकदूसरे को अपने अतीत से अवगत करा कर अपराधभाव से मुक्त हो जाएं, परंतु इस के भयानक परिणाम विशेष कर पत्नी के भावी जीवन को नारकीय बना देते हैं.

पुरुष स्वयं भले ही चारित्रिक पतन की निम्नतम सीमा का भी अतिक्रमण कर चुका हो परंतु अपनी पत्नी को त्याग, प्रेम एवं वफा की मूर्ति के रूप में ही देखना चाहता है. नारी की हेय स्थिति का शायद यही सब से बड़ा कारण है.

अतः भविष्य में पति के प्रति ईमानदारी ही उचित कदम है और दुखद अतीत को दफना देना ही सर्वश्रेष्ठ हल है.

—बलजीतसिंह 'गुलशन'

*

क्या यही धर्मरक्षा है

'धर्मरक्षा' (मार्च/प्रथम) में राजनीतिबाजों और अंधविश्वासी पंडितों का परदाफाश किया गया है. इस कहानी को पढ़ने के बाद यही लगा कि हम 'धर्म' के नाम पर नंदन जैसे इनसान को दुनिया से विदा करना पसंद करते हैं. क्या यही धर्म की रक्षा है?

—प्रदीपचरण पहाड़ी

*

सोने का हार : कुछ प्रतिक्रियाएं

कहानी 'सोने का हार' (मार्च/प्रथम) जिस दिन पढ़ी, उसी दिन मेरे एक दोस्त के पास दो यतीम बच्चे एक हार ले कर आए. मेरा दोस्त मेरे पास आया तो मैं ने उस की बात सुन कर उसे सरिता की इस कहानी को पढ़ने के लिए कहा. तभी सामने खड़े बच्चे उस हार का छोटा सा टुकड़ा, जो सोने का था, छोड़ कर भाग गए.

—इंद्रभान सोनी

*

लगभग चार माह पूर्व हमारे यहां भी अनाथालय से कुछ लड़के आए थे. उन्होंने मेरी पत्नी से कहा कि हमें साहब से मिलना है. मैं उस समय दफ्तर जाने के लिए तैयार हो रहा था. उन्होंने मुझे सन 1921 के चांदी के कुछ सिक्के दिखाए और कहा कि ऐसे ही 200-250 सिक्के तथा सोने का एक हार उन के पास है.

उन लड़कों की उम्र लगभग 20 वर्ष के आसपास थी. जब उन्होंने इन चीजों को बेचने की इच्छा प्रकट की तो मैं ने उन्हें सुनार का पता बता दिया. इस पर वे बोले कि वे यहां चंदा मांग रहे हैं, इसलिए हमें कोई भी पकड़ कर पुलिस के हवाले कर देगा. मुझे लगा कि ये लड़के ठगने की नीयत से आए हैं. अतः मैं ने उन्हें बाहर निकाल दिया. मैं ने उन्हें पुलिस के हवाले इसलिए नहीं किया कि अगर उन की बात सचमुच ठीक हुई तो सारा माल पुलिस वाले ही पचा जाएंगे.

मुझे विश्वास है कि इस कहानी को पढ़ कर कम से कम सरिता के पाठक इस प्रकार की धोखाधड़ी से बच सकेंगे.

—वीरेंद्रकुमार

*

जानकारीपूर्ण लेख

लेख 'प्रकृति के मारे ये अधूरे बेचारे' (मार्च/

प्रथम) नपुंसकों के बारे में जानकारी देने में पूर्णतः सफल रहा.

—सुनीलकुमार व्यास

*

प्रभावशाली लेख

लेख 'अजी, यह रिश्वत नहीं, सेवाशुल्क है' (मार्च/प्रथम) प्रभावशाली लगा. एक जगह लेखक ने कहा कि कर्मचारी बीमा आफिस के एक क्लर्क ने दो रुपए ले कर मजदूर को फार्म दिया. लेकिन मेरे अनुभव से तो आजकल राज्य कर्मचारी बीमा योजना के हर पदाधिकारी ने अपने पद के अनुसार अपना 'सेवाशुल्क' तय कर रखा है.

अच्छाखासा स्वस्थ किंतु कामचोर मजदूर बड़ेबड़े डाक्टरों को उन का 'सेवाशुल्क' दे कर टी.बी. का मरीज प्रमाणित हो कर लंबे समय तक छुट्टी के साथसाथ पैसा भी प्राप्त करता रहता है.

—सुखरामसिंह तोमर 'आनंद'

*

'गांधी' फिल्म को चार सितारे क्यों?

पिछले 25-30 वर्षों से सरिता का पाठक रहा हूं. पत्रिका की निर्भीकता और बेबाकपन का कायल हूं. परंतु 'गांधी' फिल्म के लिए चार सितारे देख कर धक्का लगा. किसी कृति को क्या होना चाहिए था, यह तो दर्शक या पाठक का अधिकार नहीं, पर 'वह क्या है' और उस में अच्छा और बुरा क्या है, यह निश्चय ही पाठक या दर्शक का अधिकार है.

फिल्म 'गांधी' में गांधीजी ने असहयोग और अहिंसा का नारा क्यों बुलंद किया? वे कौन से प्रभाव और परिस्थितियां थीं जिन्होंने गांधीजी को सत्याग्रही, असहयोगी बनने और अहिंसक रास्ते को ही शस्त्र के रूप में प्रयोग करने के लिए बाध्य किया, इस पर फिल्म बिलकुल खामोश है.

चार सितारे आप की आलोचना के अनुसार इसलिए भी खले कि आप ने बेन किंग्सले और रोहिणी को ही पूरी तरह सफल घोषित नहीं किया, सहायक पात्रों की तो बात ही जाने दीजिए.

फिल्म समीक्षा में कहा गया है कि 'गांधीजी जैसे थे उन्हें वैसा ही पेश करने की फिल्म में ईमानदारी से कोशिश की गई है.'

किंतु सही बात तो यह है कि फिल्म में गांधीजी महामानव तथा राष्ट्रपिता के रूप में भी पूरी तरह नहीं उभर सके. पूरी फिल्म में पत्रकारों और अंगरेज जाति को सभ्य बताने की ज्यादा कोशिश की गई है. नहीं तो दक्षिण अफ्रीका से ले कर भारत तक विदेशी पत्रकारों को ही दिखाने की क्या जरूरत थी?

—संतोष

*

'गांधी' फिल्म को चार सितारे दे कर आप ने सिद्ध कर दिया है कि दर्शकों के साथसाथ आप भी अच्छी फिल्म को बराबर प्रोत्साहन देते हैं.

सचमुच बेन किंग्सले ने गांधीजी को परदे पर हूबहू साकार करने में अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी. लेकिन कितने अफसोस की बात है, गांधीजी के ऊपर एक अच्छी फिल्म बनाने की कोशिश एक विदेशी फिल्मकार ने ही की. हमारे निर्माता निर्देशक तो केवल पैसा बटोरने वाली फिल्म बनाना जानते हैं.

कुछ भी हो, यह फिल्म अपनेआप में एक इतिहास है. सब से बड़ी खासियत तो यह है कि फिल्म देखते समय दर्शक पूरी तरह आजादी से पहले वाले जमाने में चला जाता है और उसे ऐसा महसूस होता है जैसे यह सब उस के सामने घटित हो रहा हो. फिल्म हर हालत में गांधीजी के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने में सफल रही है.

—इंद्रजीत वहरानी

*

गलतबयानी

'व्यवसाय विवाह कराने का, दावे कितने खोखले' (फरवरी/प्रथम) लेख में जनकपुरी, दिल्ली के शादी कराने वाले जिस पाठकजी की चर्चा आई है, उन के बारे में मुझे भी कुछ अनुभव हुए हैं.

कुछ समय पूर्व मुझे अपने एक संबंधी के साथ, जो अपनी लड़की की शादी के लिए काफी परेशान थे, उन के घर जाने का मौका मिला. पाठकजी ने मेरे संबंधी की कठिनाई को एकदम भांप लिया और छूटते ही बोले, "आप एकदम ठीक जगह आए हैं." थोड़ी मनोवैज्ञानिकता का उपयोग करने के बाद वह एकदम व्यावसायिक रूप में आ गए और बोले, "हमारी दाखिला फीस 25 रुपए है. नाम दाखिल करने के पश्चात मेरी श्रीमतीजी आप के घर जाएंगी और आप के रहनसहन के स्तर का निरीक्षण करेंगी और फिर उसी के अनुरूप आप को वर बताया जाएगा. इस के लिए आप को 150 रुपए देने होंगे, जो दो माह तक वर का पता देने के लिए होंगे. यदि दो माह तक आप का काम नहीं बना तो आप को 150 रुपए और देने होंगे. कार्य संपन्न होने पर आप को 551 रुपए आदि..." 'आदि' से उन का मतलब शायद वर या कन्या पक्ष वालों की ओर से अपनी मरजी से कुछ देने से था, क्योंकि बातचीत के दौरान उन्होंने बताया था कि लोग अपनी खुशी से उन्हें कूलर, फ्रिज आदि दे जाते हैं.

वस्तुतः इस लेख के माध्यम से उन्होंने अपना प्रचार तो करवा लिया, लेकिन लेखिका को अपनी फीस गलत बता कर अपनी आय को भी सुरक्षित रखा है.

—दीपराज प्लाहा

*

असंभव नहीं तो मुशकिल अवश्य है

पत्रपत्रिकाओं में तंत्र व्यवसाय से संबंधित लेख (फरवरी/द्वितीय) बहुत ही तर्कसंगत था. निस्संदेह इस तरह की सामग्री देशवासियों में वैचारिक क्रांति लाने में सर्वाधिक बाधक है. परंतु जब देश के शासक वर्ग की अनेक जानीमानी हस्तियां ही उन के चक्कर में रहती हैं तब इस प्रकार की अंधेरगर्दी पर अंकुश लगाना असंभव नहीं तो मुशकिल अवश्य है.

—शकुनचंद गुप्त विशारद

अब प्रकृति की जड़ी बूटियां सुकोमल, सुरुचिपूर्ण सुगंध से भरपूर साबुन में

नैचुरेल हर्बल सोप





जो दिन भर तरोताज़ा रखे और त्वचा की भरपूर देखभाल करे... एकदम प्राकृतिक ढंग से

नैचुरेल हर्बल सोप। जड़ी बूटियों के विशुद्ध अर्क से निर्मित। त्वचा की नमी और पोषण के लिए और इसे सुकोमल, मुलायम तथा तरोताज़ा रखने के लिए। दिन भर स्वच्छ और प्रफुल्ल रखने वाला उत्तम साबुन।

नैचुरेल हर्बल सोप।

सुरुचिपूर्ण सुगंध से भरपूर झाग जो वनों की प्राकृतिक सुगंध और ओस की ताज़गी से सराबोर कर दे।

Naturelle



HERBAL SOAP.

क्योंकि त्वचा की देखभाल प्रकृति से ही प्रारंभ होती है।

CHITRA-RBY-3382 HI

युवा दिलों की आवाज

कविता 'तुम्हारा चले जाना' (फरवरी/द्वितीय) बेहद पसंद आई. वास्तव में यह कविता हम जैसे युवा दिलों के लिए लिखी गई है. —अजहर अंजुम

*

बेटी नहीं, बहू समझ कर पालिए

लेख 'लड़की को इतना नाजुक न बनाइए' (फरवरी/द्वितीय) में लेखिका ने उन परिवारों को सचेत किया है, जो अपनी लड़कियों को इतना नाजुक समझते हैं कि वे स्वयं अपना कार्य भी नहीं कर सकतीं.

इस संदर्भ में मैं यह कहना चाहूंगा कि लड़कियों को बेटी समझ कर नहीं, बहू समझ कर पालना चाहिए ताकि ससुराल में जा कर वह एक आदर्श बहू सिद्ध हो सके. —पवन केजड़ीवाल

*

ढकोसलों का सही चित्रण

कहानी 'सवा हजार फल' (फरवरी/द्वितीय) में वर्तमान पंडितों के चरित्र का बिलकुल सही चित्रण किया गया है.

हम लोगों को और मुख्य रूप से हमारी मांबहनों को पंडितों पर बिलकुल भी श्रद्धा नहीं रखनी चाहिए. मेरी नजर में आज के पंडित ही हमारी गृहकलह व विपदाओं के मूल कारण हैं. हमें इन पंडितों के ढकोसलों पर नहीं, वरन अपने कर्मों पर अधिक विश्वास करना चाहिए. —सुधीर विदल

*

ऐसे प्रभाव प्रभावशाली सिद्ध होंगे

'शगुन' (फरवरी/प्रथम) एक सराहनीय लेख है, जिस में लेखक ने शगुन के नाम से लूटने एवं लुटने दोनों ही पहलुओं को लिया है. इस की वजह से मध्यम वर्गीय लोग हमेशा ही परेशान रहते हैं. इन कुरीतियों को इसी प्रकार के लेखों द्वारा उभारा जा सकता है. —डा. विशंभरचंद्र

*

महत्त्वपूर्ण लेख

'कार्यालय व आपसी संबंधी' लेख (जनवरी/द्वितीय) में महत्त्वपूर्ण बातों को समझाया गया है. कार्यालय में कार्य करते समय हरेक को चाहे वह पुरुष हो या महिला, सभी के साथ मधुर संबंध बनाए रखने चाहिए. परंतु यह व्यवहार एक निश्चित सीमा तक ही होना चाहिए.

विवाहित पुरुष यदि किसी महिला सहकर्मी से मिलता है तो पत्नी को चिंतित व शंकित न हो कर समझदारी से काम लेते हुए उस महिला कर्मचारी से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित कर समस्या का समाधान करना चाहिए. —सुषमा पाठक

*

शंकराचार्य ने मुझे नास्तिक घोषित कर दिया

सन 1974 में जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य निरंजनदेव तीर्थ जमशेदपुर में बर्मा माइंस देवस्थान के एक भवन का उद्घाटन करने आए थे. इस अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित की गई थी.

चूंकि मैं छोटानागपुर अंचल के इतिहास तथा संस्कृति पर शोधकार्य कर रहा हूं, अतः आयोजकों के आग्रह से मैं ने एक निबंध लिखा जो उस स्मारिका में प्रकाशित किया गया.

निबंध में कहा गया था कि रामचरित मानस के हनुमान बंदर नहीं, वानर थे. वानर का अर्थ होता है– वनवासी. आज भी छोटा नागपुर के अधिकांश वनवासी अपनी उपाधि 'वानर' लिखते हैं.

आदिवासी भाषा में एक शब्द है– 'हनुमान केटूटा' जिस का अर्थ है हनुमान चाचा. चूंकि हनुमान को ब्रह्मचारी कहा जाता है, अतः उन्हें चाचा कहना सर्वथा उपयुक्त है. साथ ही रांची के पास आंजन नाम का एक गांव है. वहां हनुमान को गोद में लिए हुए अंजनी की मूर्ति है. मैं ने निबंध में यह भी लिखा था कि छोटानागपुर की पहाड़ियां रामचरित मानस में वर्णित ऋष्यमूक पर्वत की ही श्रेणियां हैं.

शंकराचार्य ने जब यह लेख पढ़ा तो वह क्रोधित हो उठे. बाद में मुझे बुला कर उन्होंने कहा, "आप ने यह लिख कर महान अनर्थ किया है. तुलसीदास ने हनुमान को बंदर कहा था. अगर पूंछ न होती तो वह लंका में आग कैसे लगाते? क्या आप तुलसीदास से ज्यादा योग्य हैं? इस शास्त्र विरुद्ध कथन के लिए आप को सार्वजनिक सभा में क्षमा मांगनी होगी."

मैं ने उत्तर दिया, "क्या तुलसीदास वाल्मीकि से ज्यादा योग्य थे, जो उन्होंने कथानक में स्थानस्थान पर परिवर्तन किया है? जब किसी बंदर को देवता बनाया जा सकता है तो ऐतिहासिक साक्ष्य के आधार पर क्या किसी शूद्र अथवा आदिवासी को देवता नहीं बनाया जा सकता? गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित 'रामचरित मानस' में जिस चित्रकार ने हनुमान का चित्र बनाया है क्या उस ने हनुमान को देखा है? आप यदि इस संबंध में प्रमाण दें तो मैं अपने लेख पर विचार कर सकता हूं."

शंकराचार्य को शायद ऐसे उत्तर की आशा नहीं थी. वह बोले, "आप अपनेआप को हिंदू कहते हैं और इस क्षेत्र में ईसाई धर्म फैल रहा है. बजाए स्वधर्म रक्षा के शास्त्रों की टांग तोड़ रहे हो."

इस पर मैं ने विनम्रतापूर्वक कहा, "आप जैसे धर्माचार्यों के रहते तो ईसाई धर्म फैलेगा ही." मैं ने उन्हें बताया कि रांची से आने वाले पादरी यहां की ईसाई या गैर ईसाई संस्था में भाषण देने के बाद बस के भाड़े के लिए मात्र 20 रुपए लेते हैं, किंतु आप को बुलाने पर चार व्यक्तियों के मार्ग व्यय के अतिरिक्त कम से कम 1,151 रुपए और देने पड़ते हैं. भला ऐसा महंगा धर्म कैसे चलेगा?" शाम के समय शंकराचार्य ने लगभग आधा घंटा भाषण धर्म पर दिया और आधा घंटा मेरे ऊपर. अंत में उन्होंने कहा कि बच्चन पाठक सलिल नाम का एक ब्राह्मण नास्तिक हो गया है. —बच्चन पाठक सलिल





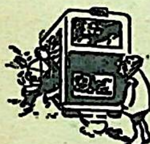
उपहार देने के लिए परेशानी न उठाइये
इसको आसान उपाय अपनाइये



उपहार पसंद करना
आसान काम नहीं...
इस दुकान से उस दुकान.
इस काउंटर से उस काउंटर, आखिर
स्टील या क्रॉकरी ! फोटो अल्बम या क्या लें ?
टेबल लैम्प ! बेहतर है छोड़ ही दें, है न !



और ले लिया तो पैकिंग का झंझट–
कितनी खट-पट ? काग़ज़ लपेटो, कैंची चलाओ, काटो-मोड़ो, चिपकाओ और सेलोटेप लगाओ। फिर रंगीन फ़ीते से सजाओ। इतनी मेहनत और नतीजा? ज़्यादातर सब गड़बड़, न सजीला न सुंदर।



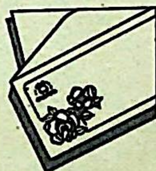
सब से बढ़कर–ले आओ ढोकर !
भारी, नाज़ुक, बड़ा, न उलटने के लायक न पलटने के काबिल यानी संभालना मुश्किल। चाहे बस का हो सफ़र या जाना हो चलकर। भला इतनी परेशानी क्यों उठायें जब इसके बिना भी बात बन जाये...

और सब के बावजूद सारा उत्साह निराशा में बदल जाये अगर उपहार सही न बन पाये। क्योंकि मुमकिन है कोई और बाज़ी मार ले और वही उपहार पहले ही दे दे।

शानदार उपहार का आसान उपाय–
कार्पोरेशन बैंक उपहार चेक



४ आकर्षक डिज़ाइनों और मूल्य में–जो चाहिए, चुन लीजिए। फूलोंवाले ४ सुंदर, सलोने डिज़ाइन इतने आकर्षक हैं कि रुपयोंवाले इस उपहार को चार चांद लग गये हैं। मनचाहे चुनाव के लिए ४ सुविधाजनक मूल्यों में–११ रु., २५ रु. ५१ रु. या १०१ रु.–हर अवसर और हर बजट के अनुकूल।



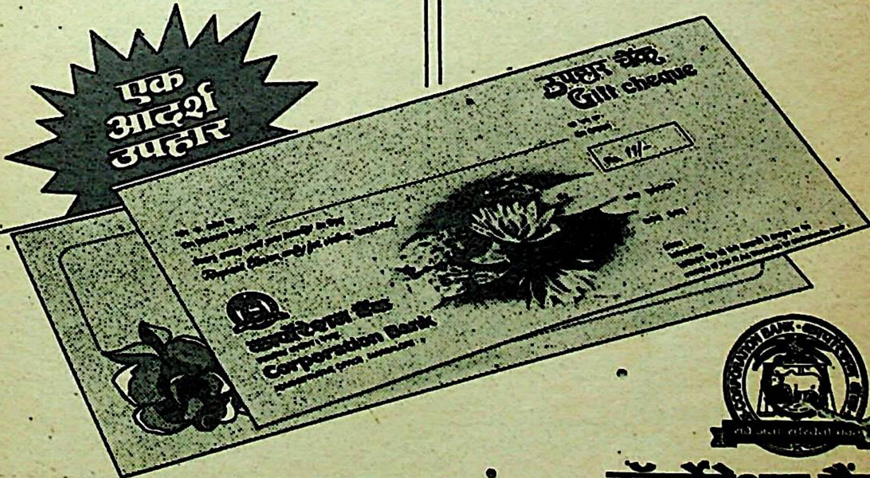
विशेष लिफ़ाफ़ा–
खास डिज़ाइनवाले आपकी व्यक्तिगत पसंद के लिए। सुंदर, विषयानुकूल सजावट और साथ ही पर्याप्त जगह भी, जहां आप नाम और हस्ताक्षर अंकित कर सकें। इसे सचमुच एक यादगार उपहार बनाइये।



**खरीदना भी आसान,
देना भी आसान।**
कॉर्पोरेशन बैंक की हर शाखा से आप उपहार चेक खरीद सकते हैं और भुगतान भी पा सकते हैं।

उपहार चेक देने का मतलब है आप अपने प्रियजन को मनचाही वस्तु खरीदने की स्वतंत्रता या बचत करने की सुविधा भी दे रहे हैं।

कॉर्पोरेशन बैंक की सभी शाखाओं में उपलब्ध





कॉर्पोरेशन बैंक
प्रशासन कार्यालय : मंगलोर

SURYA-808-JPN

संपादकीय
अप्रैल (द्वितीय) 1983



अरित प्रवाह

नए बजट में यातायात या सफर खर्च पर पाबंदी लगा दी गई है. आयकर देने वालों के सफर खर्च का 20 प्रतिशत उस की आमदनी में टैक्स निर्धारण के लिए जोड़ दिया जाएगा और उस पर लगभग 70 प्रतिशत टैक्स देना होगा.

इस टैक्स से व्यापारउद्योग को बहुत धक्का लगेगा, क्योंकि आज बिना सफर किए, सेल्समैन भेजे कोई भी अपना माल सारे देश में नहीं बेच सकता. सरकार के मंत्री व अधिकारियों को ही लीजिए, क्या वे महीने के तीसों दिन और बारहों महीने अपने स्थान पर जमे रहते हैं? आप रोज इन के तूफानी दौरों के हाल पढ़ लीजिए.

वित्त मंत्री ने इस सिलसिले में दलील दी है कि कंपनियां, व्यापारी व उद्योग सफर खर्च में रुपया उड़ाते हैं और इस का उदाहरण है इंडियन एअरलाइंस की प्रथम श्रेणी, जो अभी हाल में बनाई गई थी और जिस का किराया साधारण दरजे से ड्योढ़ा होता है, खचाखच भरी रहती है.

पर अगर श्री प्रणव मुखर्जी का उद्देश्य प्रथम दरजे को खाली रखना है तो अव्वल तो उन्होंने हवाई जहाजों में प्रथम श्रेणी बनाने की छूट ही क्यों दी? दूसरे, बजाए खर्च पर टैक्स लगाने के प्रथम श्रेणी के टिकट पर टैक्स लगा देते.

और क्या मंत्री महोदय व उन के साथी रेल में दूसरे दरजे में सफर करने को तैयार हैं? और क्या हवाई जहाज में वे साधारण दरजे में सफर करते हैं?

इसी प्रकार बजट में विज्ञापन और बिक्री बढ़ाने के खर्च पर भी टैक्स लगाया गया है. यह सोने के अंडे देने वाली मुर्गी को मारने वाली बात है. यदि कोई कंपनी या संस्थान बिक्री बढ़ाता है तो निश्चय ही अधिक मुनाफा कमाने के लिए जिस पर आप 70 प्रतिशत टैक्स लगाते हैं. जब बिक्री बढ़ने ही नहीं देंगे तो आयकर कैसे बढ़ेगा? आप ने विज्ञापन, बिक्रीवर्धक खर्च पर टैक्स तो लगा दिया, पर बढ़ते हुए मुनाफे को भी तो समाप्त कर दिया.

पर शायद इस टैक्स का असली उद्देश्य पत्रपत्रिकाओं को मारना हो, क्योंकि पत्रपत्रिकाओं का जीवन ही विज्ञापन पर चलता है और अधिकांश पत्रपत्रिकाएं सरकार के कारनामों की (सही) आलोचना करती रहती हैं, राजनीतिबाजों और सरकारी अधिकारियों के कुकर्मों का पर्दाफाश करती रहती हैं. यह कैसे बरदाश्त किया जा सकता है?

बिहार प्रेस बिल तो इन (दुष्ट) अखबार वालों ने किसी तरह पास नहीं होने दिया, अब उन की गरदन पीछे से मरोड़ो.

*

फ्रांस में दो वर्ष पहले श्री फ्रांस्वा मित्तरां अपने समाजवादी नीतियों को ले कर बड़ी शान से राष्ट्रपति चुने गए थे. गद्दी पर बैठते ही उन्होंने बहुत सी बड़ी कंपनियों का सरकारीकरण कर दिया. इस के अलावा अपना अन्य समाजवादी कार्यक्रम भी शुरू किया, जिस का मूल उद्देश्य लोगों को बिना उन से उचित मूल्य लिए सेवाएं देना, वेतन व सुविधाओं में वृद्धि करना और सरकारी खर्च बढ़ा कर नई नौकरियां निकालना था.

पर इन दो वर्षों में जो कुछ हुआ उस से फ्रांस आज आर्थिक दृष्टि से एक कगार पर आ खड़ा हुआ है. अब तक दो बार फ्रांस की मुद्रा का अवमूल्यन हो चुका है और आगे भी उस का टूटना बड़ी मुशकिल से रोका जा रहा है..

विदेशी व्यापार में जबरदस्त घाटा है और बेरोजगारी पहले से बहुत ज्यादा है.

इन सब बातों को देखते हुए फ्रांसीसी जनता ने श्री मित्तरां की सरकार को एक जोरदार तमाचा लगाया है. स्थानीय चुनावों में उन का दल बुरी तरह हार गया है जिस के कारण अब श्री मित्तरां को अपना सारा कार्यक्रम बदलना पड़ रहा है. समाजवाद और सर्वहारा वर्ग को ऊपर उठने के नाम पर बिना कमाए मौज का सिद्धांत ताक पर रखना पड़ रहा है.

*

फ्रांस अपना माल बेचने के लिए आजकल बहुत परिश्रम ही नहीं कर रहा है, अफवाह यह है कि वह अन्य देशों के ऊंचे अधिकारियों व राजनीतिबाजों को बड़ीबड़ी रिश्वतें देने में भी आनाकानी नहीं कर रहा है.

5,000 करोड़ रुपए के मीराज लड़ाकू हवाई जहाज जो भारत ने फ्रांस से खरीदने का सौदा किया है, इसी घोटाले में आते बताए जाते हैं. इस के अलावा टेलीफोन केंद्रों, रेल व अन्य सामान की खरीद में भी बड़ी रकमों के आदानप्रदान के बारे में बातें सुनी जा रही हैं.

इस प्रकार की रिश्वतों में जो रकम ली जाती है, वह बड़ी आसानी से स्विटजरलैंड के बैंकों में बिना नाम वाले, केवल नंबरों से पहचाने जाने वाले गुप्त खातों में जमा कर दी जाती है.

हमारे उच्च श्रेणी के राजनीतिबाज और सरकारी अधिकारी जब जेनीवा, ज्यूरिक के चक्कर लगाते हैं तो इन खातों की देखभाल कर लेते हैं. इन खातों का चुनावों में, राजनीतिक उखाड़पछाड़ में बड़ा योग होता है. भारत में ऊंचे आय व संपत्ति करों द्वारा जो कानूनी डकैती होती है, उस से बचने का भी यह आसान रास्ता है— यद्यपि यह डकैती राजनीतिबाज व सरकारी अधिकारी ही आयोजित करते हैं.

1980 के लोकसभा के चुनावों की घोषणा के बाद भारत के समाचारपत्रों में एक खबर छपी थी कि यूरोप व पश्चिम एशिया के बाजारों में भारत के 100 रुपए के नोट की कीमत बहुत बढ़ गई है और यह 120 रुपए तक में खरीदा जा रहा है. अनुमान यही था कि स्विस बैंकों से धन निकाल कर ये भारतीय नोट खरीदे गए और पूर्व यूरोप के एक विदेशी दूतावास के माध्यम से भारत लाए गए. स्विटजरलैंड से सीधे फ्रैंक या डालर या पाउंड भारत नहीं लाए जा सकते, न उन का प्रयोग ही किया जा सकता. इन का भारतीय रुपए में परिवर्तन बैंक ही कर सकते हैं और यह काम गोपनीय नहीं रहता. इसलिए यूरोप व पश्चिम एशिया में सौ रुपए के नोट खरीद कर भारत लाए गए.

*

अमरीका ने तथाकथित खालिस्तान के नेता डा. जगजीतसिंह चौहान को बिना भारतीय पासपोर्ट के अमरीका में प्रवेश करने की अनुमति दे कर एक गलत काम किया है. यद्यपि डा. चौहान ब्रिटिश नागरिक नहीं हैं, फिर भी ब्रिटिश सरकार ने उन्हें यात्रा पत्र दिए जिन के आधार पर अमरीका ने वीजा दे दिया.

भारत सरकार ने अमरीका के इस कदम का विरोध किया है, जो उचित है. पर आश्चर्य है कि ब्रिटिश सरकार के डा. चौहान को यात्रा पत्र देने के बारे में कुछ नहीं कहा गया.

यदि डा. चौहान ब्रिटिश नागरिक नहीं हैं तो वह निश्चय ही भारतीय नागरिक हैं. ऐसी स्थिति में भारत सरकार उन के ब्रिटेन से निकाले जाने और वापस भारत भेजने की मांग क्यों नहीं करती? डाक्टर चौहान ब्रिटेन में रह कर भी तो खालिस्तान का प्रचार कर सकते हैं और कर रहे हैं.

दरभंगा, बिहार के ललितनारायण मिथ्र मिथिला विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने पिछले दिनों इस बात के लिए उपकुलपति के कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया कि उन्हें अन्य विश्वविद्यालयों या कालिजों की तरह परीक्षाओं में नकल क्यों नहीं करने दी जा रही? यानी नकल कर के पास होना उन का जन्मसिद्ध अधिकार है!

हरिजन या अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों के लिए दाखिले या नौकरियों में आरक्षण का इसलिए विरोध किया जाता है कि यद्यपि इन लोगों के नंबर कम होते हैं और फिर भी इन्हें दाखिला या नौकरियां दी जा रही हैं.

अब अंकों के आधार पर किसी को दाखिला या नौकरी देने या न देने की क्या तुक रह गई है?

यह तो सर्वविदित ही है कि एक हरिजन के मुकाबले उच्च वर्ण वाले विद्यार्थी के लिए प्रश्नपत्र 'आउट' करना, नकल करना और इस प्रकार अच्छे अंक प्राप्त करना बहुत ज्यादा आसान है.

*

बंबई के एक समाचार के अनुसार वहां एक रुपए के नोट और सिक्कों की कमी के कारण इन पर 10 प्रतिशत तक का 'ब्लैक' शुरू हो गया है और इस का फायदा रिजर्व बैंक के कर्मचारी और कुछ व्यापारी लोग उठा रहे हैं.

एक रुपए के नोट की कमी का कारण सरकार द्वारा इस का छापना बंद किया जाना है. यह नोट बड़ी जल्दी कटफट जाता है, गंदा हो जाता है और इस पर लागत भी काफी आती है. इस के बदले सरकार ने एक रुपए का सिक्का कई वर्ष पहले चालू किया था, पर उस का उत्पादन भी मांग के अनुसार नहीं हो रहा है.

वैसे भी एक रुपए के नोट के अलावा अन्य राशियों के नोटों का भी बुरा हाल है. बाजार में अधिकांश नोट गंदे और लगभग टुकड़ेटुकड़े होने की स्थिति में रहते हैं. जब यह हाल दिल्ली, बंबई जैसे बड़े शहरों का है तो गांवों, कसबों का क्या हाल होगा?

आवश्यकता है कि अब एक रुपए के सिक्के का तेजी से उत्पादन किया जाए और दो रुपए और पांच रुपए के सिक्के भी तैयार किए जाएं. गरम, नम देश में बजाए कागज के नोटों के ये विशेष सुविधाजनक रहेंगे, विशेषतः गांवों में, जहां फटेपुराने नोट बदलने की कोई सुविधा नहीं होती.

वैसे नोट बदलने की सुविधा तो बंबई, दिल्ली में भी नहीं है. यद्यपि रिजर्व बैंक कहता है कि सारे सरकारी व्यापारिक बैंकों को हिदायत है कि वे नोट बदल दें, पर उन का (या उन के कर्मचारियों का) यही सीधा, रूखा उत्तर होता है, रिजर्व बैंक जाइए. अब जब सारे बड़े शहर में रिजर्व बैंक की एक ही शाखा हो (सारे देश में कठिनाई से आठदस शाखाएं हों) तो नोट कैसे, कहां बदले जाएं? और कसबों और गांवों में क्या हाल होगा?

*

भारत सरकार ने अकालियों की यह मांग स्वीकार कर ली है कि जालंधर रेडियो केंद्र द्वारा अमृतसर के दरबार साहिब से गुरबानी को प्रसारित किया जाए.

वास्तव में तो किसी भी सरकारी विभाग को और कम से कम रेडियो व दूरदर्शन को किसी भी धार्मिक अनुष्ठान, सम्मेलन, कीर्तन, भजन, नात या प्रार्थना, प्रवचन इत्यादि में भाग नहीं लेना चाहिए, न इन्हें प्रचारितप्रसारित करना चाहिए. वास्तविक धर्मनिरपेक्षता सब धर्मों और संप्रदायों के प्रचार से नहीं, इन से अलग रहने में है.

भारत में बराबर धार्मिक दंगे हो रहे हैं, जिन में जानमाल की विशाल हानि होती है. ये दंगे रोके नहीं रुक रहे हैं—और अब तो ब्रिटिश सरकार भी नहीं है जिस को इन के लिए बदनाम किया जा सके.

इन धार्मिक दंगों का असली कारण तो इन के नाम से ही प्रकट है— धार्मिकता. जब आदमी अपने को किसी धर्म के साथ जोड़ लेता है तो वह अन्य सभी धर्मों के लोगों से अलग हो जाता है. वह दूसरों को नीच,

गलीज, मलेच्छ, काफिर, नास्तिक समझता है और मौका मिलते ही उन्हें नष्ट करने को तैयार हो जाता है.

आज सारे देश में यदि थोड़ीबहुत भी शांति है और दंगे थोड़ी देर बाद समाप्त हो जाते हैं तो उस का कारण पुलिस और फौज है. इन को हटा लीजिए और 1947 के विभाजन के समय की आपसी मारकाट का 'मजा' लूटिए.

आज आवश्यकता धार्मिकता को कम करने की है, उसे हर संभव तरीके से बढ़ाने की नहीं है. इस काम में सरकारी तंत्र, सरकारी रेडियो व दूरदर्शन का बहुत बड़ा महत्त्व है.

यदि आज रेडियो द्वारा दरबार साहिब से गुरबानी का प्रसारण शुरू किया जा रहा है तो हिंदुओं के दुर्गयाना मंदिर से आरती या कीर्तन क्यों न प्रसारित किया जाए, ईसाइयों के गिरजाघर से क्यों न प्रसारण हो, मुसलमानों की जामा मस्जिद की अजान क्यों न प्रसारित हो?

*

दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने पिछले वर्ष नवंबर से इस वर्ष फरवरी तक हड़ताल रखी. अपनी आय हर व्यक्ति को कम लगती है, चाहे उस की सेवाओं का बाजार भाव कुछ भी हो. शिक्षकों की मांगों में मुख्य यह थी कि उन्हें एक विशेष अवधि के बाद पदोन्नति मिल जाए, चाहे वे उस के योग्य हों या नहीं, उस के लिए काम किया हो या नहीं. मकान, चिकित्सा, बढ़े हुए वेतन, सफर खर्च इत्यादि मांगें तो थीं ही.

किसी भी व्यक्ति को अपनी सेवाओं का मुआवजा बढ़ाए जाने की मांग करने का अधिकार है, पर मांगें पूरी न होने पर काम पर न जाना, दूसरों को भी काम न करने देना और संस्था को ठप कर देना कतई स्वीकार्य नहीं हो सकता. जिन दिनों कोई व्यक्ति काम न करे, उस के वेतन का भी उसे कोई अधिकार नहीं है. भारत जैसे अकर्मण्य देश में 'काम नहीं तो दाम नहीं' का सिद्धांत बिलकुल सही और उचित है और वह सख्ती से लागू होना चाहिए.

दिल्ली विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने शिक्षकों को हड़ताल के दिनों कहा था कि हड़ताल के दिनों का वेतन नहीं दिया जाएगा. पर अब उन्होंने इस बात को टाल दिया है और वेतन देना स्वीकार कर लिया है, यह गलत है. काम नहीं किया, विद्यार्थियों को न पढ़ाया, न पढ़ाने दिया, उन का बहुमूल्य समय बेकार किया, इस का दंड तो मिलना ही चाहिए.

इस के अतिरिक्त शिक्षण संस्थाओं में जहां बजाए शिक्षकों के विद्यार्थी या कर्मचारी हड़ताल करते हैं, वहां भी शिक्षकों को हड़ताल के दिनों का वेतन नहीं मिलना चाहिए, क्योंकि 95 प्रतिशत हड़तालें शिक्षकों या उन के कुछ गुटों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए प्रेरित की जाती हैं.

शिक्षक फैक्टरियों के अफसरों की तरह तो हैं नहीं, न विद्यार्थी मजदूरों की तरह. शिक्षक विद्यार्थियों के पथप्रदर्शक, अभिभावक और उन के चरित्र के निर्माता होते हैं. यदि वे विद्यार्थियों को गलत राह पर जाने से नहीं रोक सकते तो और कौन रोक सकता है? मातापिता यदि यह काम कर सकते तो बच्चों को स्कूल, कालिज या विश्वविद्यालय भेजने की आवश्यकता ही क्या थी?

शिक्षण संस्थाओं में हड़ताल, तोड़-फोड़, बदअमनी रोकने के लिए केवल दो उपाय हैं:

एक, विद्यार्थी संघों की सदस्यता अनिवार्य न हो. जिस विद्यार्थी की इच्छा हो वही सदस्य बने और सदस्यता शुल्क विद्यार्थी नेता स्वयं जमा करें, वही उस का हिसाबकिताब रखें.

दो, जितने दिन भी हड़ताल चले, चाहे वह किसी कारण से भी हो, शिक्षकों को उस अवधि का वेतन नहीं दिया जाए, क्योंकि उन्होंने पढ़ाया तो किसी को भी नहीं. यदि शिक्षकों का वेतन कटने लगेगा तो वे भरपूर प्रयत्न करेंगे कि हड़तालें या उपद्रव न हों.

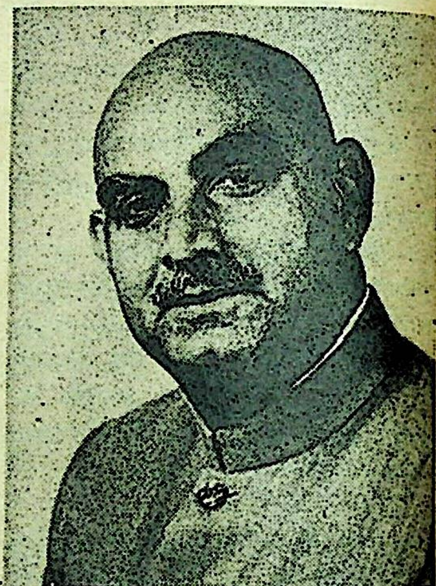
खाद्यान्न के क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भर क्यों नहीं?

लेख • ज्योतिर्मय

स्वतंत्र होने के बाद विभिन्न क्षेत्रों में देश की प्रगति होने और निर्भरता प्राप्त कर लेने के दावे किए जाते हैं, लेकिन तथ्य यह है कि भारत अभी तक खाद्यान्न उत्पादन के मामले में ही आत्मनिर्भर नहीं हो पाया है. गत 26 फरवरी को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की साधारण सभा की वार्षिक बैठक में कृषि मंत्री राव वीरेंद्रसिंह ने भी यह तथ्य स्वीकार किया.

यद्यपि सरकारी प्रचारतंत्र अनाज के मामले में आत्मनिर्भर हो जाने की बात निरंतर प्रचारित करता है, किंतु प्रति व्यक्ति अनाज की उपलब्धि पिछले दिनों सन 1960-61 से कम हो रही है. सन 1960-61 में प्रति व्यक्ति 181.5 किलोग्राम प्रति वर्ष अनाज उपलब्ध था. 1980-81 में इस मात्रा से भी कुछ कम 181 किलोग्राम अनाज उपलब्ध रहा.

सन 1970-71 तक सातवें दशक में प्रति व्यक्ति 10 किलोग्राम अनाज ज्यादा उपलब्ध रहा, किंतु उस का एक बड़ा कारण विदेशों से अनाज का आयात किया जाना भी था. सातवें दशक के पूर्वार्द्ध में प्रतिवर्ष 216.1 टन अनाज हर वर्ष आयात किया जाता रहा. अमरीका के पी.एल. 480 कार्यक्रम के अंतर्गत आए विदेशी अनाज के बारे में तो अधिकांश पाठकों को याद होगा, क्योंकि इस संबंध में उन दिनों काफी विवाद हुआ था. 1965 के बाद और अधिक मात्रा में अनाज मंगाया गया. सन 1965 के बाद सन 1967 तक प्रति वर्ष औसतन 88 लाख टन अनाज अधिक मात्रा में उपलब्ध रहा तो उस



कृषि मंत्री राव वीरेंद्रसिंह : भारत अभी तक खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर नहीं हो पाया है.

का मुख्य कारण विदेशों से अनाज की खेपें आना था.

क्या कारण है कि खाद्यान्न के क्षेत्र में भारत अभी तक आत्मनिर्भर नहीं हो सका है. पिछले वर्ष ही निर्धारित लक्ष्य से 50 लाख टन कम अनाज पैदा हुआ. कृषि मंत्री के अनुसार इस का कारण 13 राज्यों में बाढ़ और सूखे की स्थिति उत्पन्न होना था. अनाज कम पैदा होने के कारण क्या इस वर्ष भी विदेशों से गेहूं मंगाया जाएगा, इस प्रश्न का उत्तर कृषि मंत्री ने गोलमाल दिया है.

इस से पहले 1981-82 में भी कोई बहुत अच्छी फसल नहीं हुई थी और सरकार को अमरीका की मंडियों से 20 लाख

टन गेहूं आयात करना पड़ा था, यद्यपि उस समय भी भारत को अनाज उत्पादन की दृष्टि से आत्मनिर्भर बताया गया था. गेहूं के आयात का कारण सुरक्षित अन्न भंडारों में गेहूं का पर्याप्त स्टाक रखने की आवश्यकता बताई गई थी, क्योंकि किसानों से गेहूं की वसूली नहीं हो पाई थी.

यह सच है कि पिछले कुछ वर्षों में

हमारे देश में दुनिया के किसी भी देश से ज्यादा किसान और कृषि योग्य भूमि है. इस के बावजूद हम खाद्यान्न के क्षेत्र में अभी तक आत्मनिर्भर क्यों नहीं हो पाए हैं?

भारत कुछ अधिक अन्न पैदा करने लगा है. लेकिन जितना अनाज उगाया जाता है वह भारत की आवश्यकता के अनुसार कम पड़ता है. इस का कारण अन्न उत्पादन के साथसाथ जनसंख्या में वृद्धि होते रहना भी है. जनसंख्या में वृद्धि के अनुपात से खाद्यान्न का उत्पादन नहीं बढ़ता है, इसलिए भारत खाद्यान्न के क्षेत्र में पिछड़ा ही रहता है.

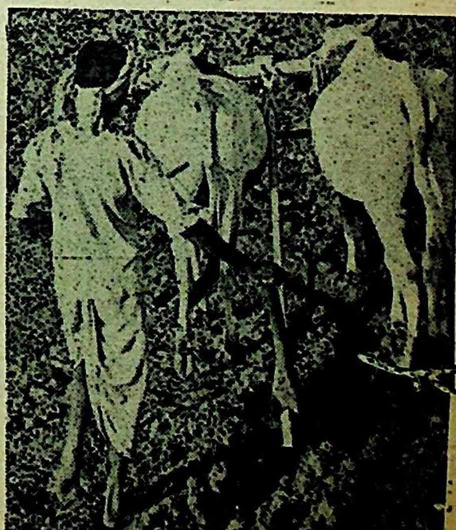
अन्न उत्पादन की दृष्टि से आत्मनिर्भर नहीं होने का प्रमुख कारण भी यही बताया जाता है कि हमारे देश में आबादी तेजी से बढ़ रही है, इसलिए प्रगति के सारे प्रयत्न बेकार हो जाते हैं. यह बात बहुत सीधी दिखाई देती है कि जनसंख्या ज्यादा बढ़ने के कारण उपलब्ध साधन कम पड़ते हैं तथा पर्याप्त उत्पादन होने के बावजूद हर व्यक्ति के हिस्से में कम अनाज या दूसरे उत्पादन आ पाते हैं. सन 1961-62 में कुल 827 लाख टन अनाज पैदा हुआ था और तब भारत की जनसंख्या 43 करोड़ थी. सन 1981-82 में 1,198 लाख टन अनाज पैदा हुआ था जो 1961-62 की तुलना में 50 प्रतिशत अधिक था, लेकिन आबादी 1961-62 की तुलना में करीब 65 प्रतिशत अधिक यानी लगभग 70 करोड़ हो गई.

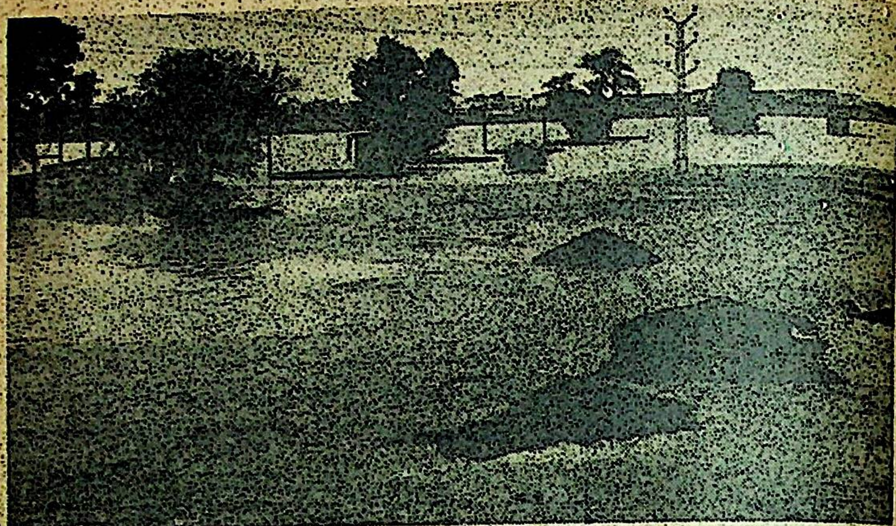
आंकड़ों का यह फैलाव खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर न हो पाने के लिए जनसंख्या वृद्धि को ही मुख्य कारण दर्शाता है. लेकिन स्थिति का एक दूसरा पहलू भी है. भारत वास्तव में अन्न उत्पादन के मामले में ही पिछड़ा हुआ है. संयुक्त राष्ट्रसंघ के खाद्य और कृषि संगठन के अनुसार भारत में अन्य देशों की तुलना में बहुत कम अनाज पैदा हुआ.

पैदावार ही कम होती है

खाद्य और कृषि संगठन द्वारा प्रकाशित 1978 के आंकड़ों के अनुसार दुनिया में प्रति हेक्टेयर औसतन 2,112 किलोग्राम अनाज तथा 658 किलोग्राम दालें पैदा होती हैं. एशियाई देशों में प्रति हेक्टेयर 2,038 किलोग्राम अनाज तथा 62 किलोग्राम दालों का औसत उत्पादन होता है. भारत में अनाज का औसत उत्पादन 1;386 किलोग्राम तथा दालों का औसत उत्पादन 437 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है.

खेती करने के सदियों पुराने तरीके अधिक उत्पादन में बाधक हैं.





प्रति वर्ष बाढ़ आना लगभग स्वाभाविक है और उन दिनों खड़ी फसलें इस की चपेट में आ जाती हैं.

यानी हमारे यहां औसत उत्पादन एशियाई देशों से भी बहुत कम होता है. क्षेत्रफल के अनुसार औसत उत्पादन की दृष्टि से यह पिछड़ापन स्पष्ट करता है कि हमारा देश आबादी के अनुसार पैदावार बढ़ जाने के कारण पिछड़ा हुआ नहीं है बल्कि पैदावार ही कम होती है.

यह भी नहीं कहा जा सकता कि भारत में खेती ज्यादा लोगों का व्यवसाय नहीं है, इसलिए अनाज कम पैदा होता है. कृषि प्रधान देश भारत का सर्वज्ञात विशेषण है. यहां के 70 प्रतिशत लोग खेती से जुड़े हुए हैं और कृषि योग्य जमीन की कमी भी नहीं है. भारत की जनसंख्या एशिया की कुल जनसंख्या का 27.1 प्रतिशत है जब कि हमारे देश में एशिया की कुल कृषि योग्य जमीन की 38.6 प्रतिशत जमीन उपलब्ध है. आबादी और कृषि योग्य जमीन की दृष्टि से भारत में जनसंख्या का प्रतिशत कम है और कृषि योग्य जमीन ज्यादा है.

कुछ एशियाई देशों में प्रति व्यक्ति कृषि योग्य जमीन के औसत से यह बात और अच्छी तरह स्पष्ट होती है. भारत में औसतन एक व्यक्ति के हिस्से में 0.24 हेक्टेयर जमीन आती है. श्रीलंका में 0.07 अर्थात भारत में उपलब्ध जमीन के तिहाई हिस्से से भी कम, इंडोनेशिया में 0.09 हेक्टेयर, चीन में 0.09 हेक्टेयर, फिलिपीन में 0.14 हेक्टेयर जमीन हर व्यक्ति के हिस्से में आती है. जापान में सब से कम जमीन कृषि योग्य है—0.034 हेक्टेयर प्रति व्यक्ति. वहां भारत की तुलना में आठवें हिस्से के बराबर जमीन कृषि योग्य है. लेकिन वह भी खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर है. अतः जनसंख्या की वृद्धि या जमीन की कमी जैसे कोई भी कारण नहीं हो सकते, जो भारत को खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर न होने दें.

जनसंख्या अधिक है, कृषि योग्य जमीन भी अधिक है, इसलिए होना तो यह चाहिए कि भारत और देशों की अपेक्षा अधिक अनाज पैदा करे. अधिक जनसंख्या के कारण भारत के पास प्रचुर जनशक्ति है. श्रमशक्ति का नियोजन करने के लिए पर्याप्त क्षेत्र भी उपलब्ध है. हमारे यहां दुनिया के किसी भी देश से ज्यादा किसान और खेत हैं. इस के बावजूद यदि हम खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं हो पाए हैं तो इस के कारण कुछ और ही होने चाहिए.

भारत में अभी भी फसल का अच्छा या बुरा होना मौसम के मिजाज पर निर्भर करता है. वर्षा समय पर और ठीकठाक हुई तो फसल भी अच्छी होती है. वर्षा थोड़ी भी कमज्यादा हुई तो फसल सूख जाती है, गल जाती है या बाढ़ में नष्ट हो जाती है. लेकिन दुनिया के अन्य देशों में भी कभी पानी नहीं बरसता है, कभी बहुत ज्यादा बरसता है और बाढ़ें भी आती रहती हैं. अन्य देश अतिवृष्टि और अनावृष्टि से इस बुरी तरह प्रभावित नहीं होते कि खाद्यान्न के क्षेत्र में उन्हें तत्काल दूसरों का मुंह देखना पड़े.

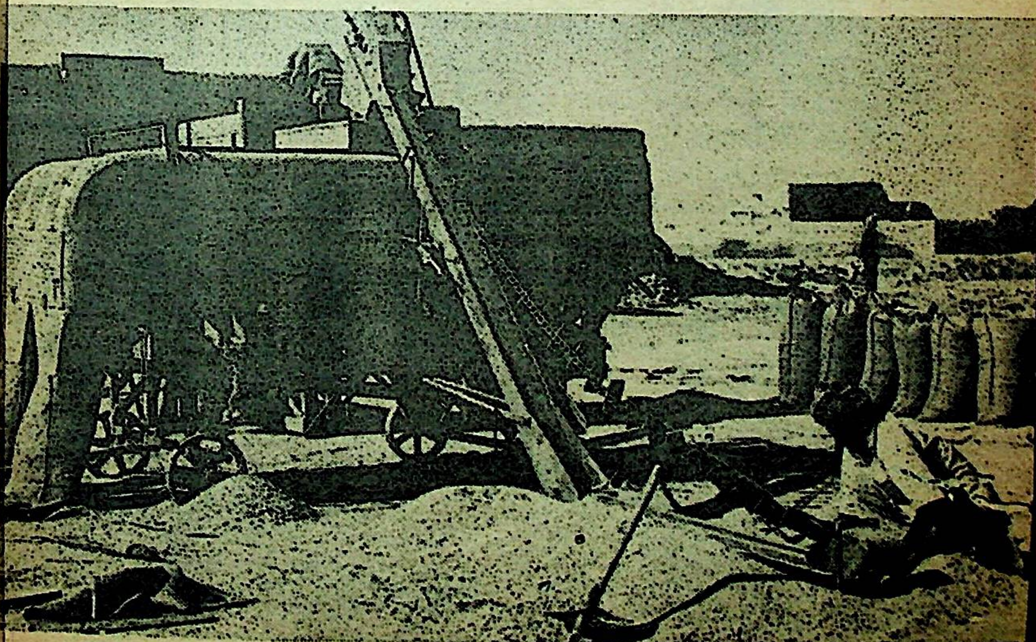
फसलों को मौसम के बुरे प्रभाव से बचाने के लिए प्रायः सभी देशों ने सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण की व्यवस्था कर रखी है. इस के अलावा खेती के उन्नत तरीके अपना कर भी दूसरे देशों ने कम जमीन पर कम मेहनत से उत्पादन बढ़ाने में सफलता प्राप्त की है. भारत में न सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था है और न ही फसलों को अतिवृष्टि के प्रभाव से बचाने का प्रबंध, खेती के तरीके भी सदियों पुराने हैं. फलतः ज्यादा लोग मिल कर भी देश की आवश्यकता का अनाज पैदा नहीं कर पाते.

काम न करने की आदत

लेकिन खेती के लिए मौसम के मिजाज पर निर्भर रहने और सदियों पुराने ढंग से खेती करने के लिए कौन जिम्मेदार है? दूसरे देशों में किन्ही बाहरी लोगों ने कृषि पैदावार बढ़ाने के लिए काम नहीं किया. उन देशों के किसान और कृषि वैज्ञानिक ही खेती को उन्नत बनाने के लिए काम करते रहे. भारत में इस दिशा में कुछ करने के संकल्प का अभाव है. संकल्प का अभाव इसलिए कि दिखाने को तो कोई ढांचा खड़ा कर लिया जाता है, किंतु काम कुछ नहीं होता. दूसरे शब्दों में इसे काम से जी चुराने की मनोवृत्ति या काम न करने का स्वभाव भी कह सकते हैं.

खेती के उन्नत तरीके खोजने और किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए सन 1929 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की स्थापना हुई थी. सन 1974 में यह स्वायत्त संस्था के रूप में काम करने लगी,

उन्नत व वैज्ञानिक किस्म की खेती के तरीके भारत में लगभग न के बराबर हैं.



जिस का घोषित उद्देश्य कृषि और पशुपालन के उन्नत उपाय खोजना तथा उन्हें व्यापक स्तर पर लोगों को सिखाना था. 22 अनुसंधान केंद्र, दो तकनीकी अनुसंधान प्रयोगशालाएं तथा कृषि विश्वविद्यालय और प्रशिक्षण केंद्र आदि कुल मिला कर 100 से भी अधिक शाखाओं के विस्तार वाले इस प्रतिष्ठान में सैकड़ों वैज्ञानिक काम करते हैं. आज तक इस परिषद की कोई उल्लेखनीय उपलब्धि सामने नहीं आई है.

अन्य सरकारी संस्थाओं की तरह ही कृषि अनुसंधान परिषद का काम भी चलता है. काम के नाम पर फाइलें खिसकती रहती हैं. कृषि मंत्री राव वीरेंद्रसिंह ने गत 26 फरवरी को परिषद की साधारण सभा में परिषद के वैज्ञानिकों से लोगों के बीच जा कर काम करने की बात कही. परोक्षतः यह इस बात की स्वीकृति थी कि परिषद में काम कुछ नहीं होता है, वैज्ञानिक दफ्तरों में बैठ कर कागजी अनुसंधान करते रहते हैं.

परिषद का उल्लेख तो एक उदाहरण के रूप में दिया गया है. रोजमर्रा के जीवन में इस तरह के उदाहरण कभी भी देखे जा सकते हैं जो अकर्मण्यता के स्वभाव का परिचय देते हैं. काम नहीं करना, जैसे हमारा जीवन दर्शन बन गया है. इस के मूल में हमारी सांस्कृतिक आस्थाएं विद्यमान हैं. परलोक के बारे में हमारे यहां इतना सोचा-विचारा जाता है और इस बात को इतना अधिक महत्त्व दिया जाता है कि उस के सामने यथार्थ को उपेक्षित ही कर दिया जाता है. जीवन से सीधा संबंध रखने वाले विषयों को भौतिकवाद और संसारी कह कर उपेक्षित ही नहीं, निंदित भी किया जाता है.

जीवन और जगत से जुड़े प्रश्नों को नितांत महत्त्वहीन समझने वाला हमारा सांस्कृतिक चरित्र जीने के लिए दूसरों का मुहताज बनाए रखता है. खाद्यान्न के मामले में ही नहीं, अपनी अधिकांश आवश्यकताओं के लिए भी हम दूसरों के मुहताज हैं तो उस का मूलभूत कारण काम न करने की आदत ही है. ●



दिन दहाड़े



मेरे गांव में पड़ोसी के घर एक शाम एक व्यक्ति आया. उस ने अपनेआप को उन का दूर का रिश्तेदार बताया और रात भर ठहरने के लिए कहा. हमारे पड़ोसी ने उसे रिश्तेदार मानते हुए उस की खूब आवभगत की और अपने साथ कमरे में सोने का भी प्रबंध कर दिया.

सवेरा होते ही वह व्यक्ति चला गया. लेकिन जब पड़ोसी ने किसी काम से अलमारी खोली तो उस में रखे पांच हजार रुपए, जेवर और अन्य सामान गायब थे. पड़ोसी अपना सिर पीट कर रह गए.

—मुरलीमनोहर तोषनीवाल

*

हमारे पड़ोसी की पत्नी को मायके जाना था. उस ने अपने सारे जेवर, कपड़े आदि अटैची में रख लिए और दूसरे काम निबटाने लगी. उस के पति दफ्तर चले गए थे.



लगभग 11 बजे दो महिलाएं चंदा लेने के बहाने उस के घर में घुस गईं. फिर उन्होंने उसे चाकू दिखा कर उस के मुंह में कपड़ा ठूंस दिया. फिर एक कमरे में हाथपांव बांध कर अटैची व कपड़े ले कर चंपत हो गईं.

—भूपेंद्रकुमार खरे

*

एक बार एक महिला अपने एक महीने के बच्चे को दिखलाने हस्पताल में आई. उसी समय एक पुरुष ने उस महिला से पूछना शुरू किया कि वह बच्चा लड़का है या लड़की.

जब महिला ने बताया कि वह लड़का है तो उस ने पूछा, "इसे टीका दिलवाया है या नहीं?"

महिला के 'नहीं' कहने पर उस ने बच्चे को गोद में ले लिया और कहा, "मैं अभी इसे टीका लगवा कर आता हूं." और वह उसे ले कर चंपत हो गया. —पूनम

*

दोपहर के समय एक आदमी मेरे घर में आया और बोला, "आप के पिताजी ने मुझे घर में राड लगाने को भेजा है." उस ने मेरी मां और भाई को एक डोर दे कर रसोई और स्नानघर में खड़ा कर दिया और कहा, "यह ढीली न होने पाए."

काफी समय बीत जाने के बाद मेरी मां को शक हुआ. वह बाहर निकलीं तो दंग रह गईं, क्योंकि बक्सा खुला पड़ा था और चोर सारा सामान ले कर चंपत हो चुका था.

—राजकुमार शर्मा

*

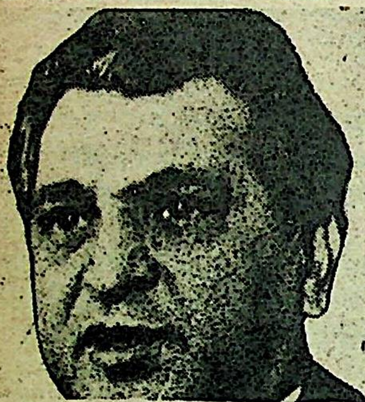
एक बार मैं और मेरा भाई कहीं जाने के लिए ट्रेन में चढ़े तो हमें बैठने के लिए तो किसी तरह जगह मिल गई, लेकिन सामान रखने के लिए जगह नहीं मिली. तभी हमारे ऊपर बैठे एक व्यक्ति ने हम से सामान ले कर अपने पास रख लिया.

बाद में जब हम घर पहुंचे तो हमारे बैग में से कपड़े गायब थे. —पूनम गोगिया

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

अफगानिस्तान
एशिया का नया वियतनाम

लेख • योगेशचंद्र शर्मा



राष्ट्रपति बबरक करमाल : कम्यूनिस्ट नेताओं से संपर्क तो खूब बढ़ाया लेकिन देश की जनता के लिए कुछ नहीं किया.

26 दिसंबर, 1982 को अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप को आरंभ हुए तीन वर्ष हो गए. सोवियत संघ का कहना है कि अफगानिस्तान में उस की सेनाओं की मौजूदगी अस्थायी है और जैसे ही वहां विदेशी (अमरीकी तथा पाकिस्तानी) हस्तक्षेप समाप्त हो जाएगा और शांति स्थापित हो जाएगी, उस की सेनाएं वापस लौट आएंगी. मगर अभी तक ऐसा कुछ नहीं हुआ. इस के विपरीत स्थिति निरंतर विषम होती जा रही है. अमरीका के निर्देशन और सहयोग से सऊदी अरब, चीन, मिस्र तथा पाकिस्तान द्वारा जनवरी, 1980 से विद्रोही अफगानों को हथियार देने की लगभग 10 करोड़ डालर की जिस योजना पर अमल प्रारंभ हुआ, वह न केवल बदस्तूर जारी है, अपितु उस में और अधिक वृद्धि के भी प्रयत्न किए जा रहे हैं.

सोवियत संघ अपने एक लाख सैनिकों के बल पर विद्रोही अफगानों को कुचलने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है, मगर अब तक सफलता की कहीं कोई संभावना नजर नहीं आ रही है. 'लंदन टाइम्स' ने अपने 18 नवंबर, 1982 के अंक में एक प्रत्यक्षदर्शी का बयान छापा है. उस के अनुसार अफगानिस्तान के जिन क्षेत्रों में छापामार विद्रोहियों की उपस्थिति की आशंका होती है, वहां सोवियत सैनिक कहर ढाने में कोई कसर नहीं छोड़ते. सोवियत सेना के टैंक उन क्षेत्रों को तबाह करते हुए आगे बढ़ जाते हैं. मकानों को गिरा दिया जाता है और उस के निवासियों को बाहर नहीं निकलने दिया जाता. इस से वे उन्हीं में दब कर मर जाते हैं. यही नहीं, उन की फसलें भी जला दी जाती हैं. बड़े कसबों पर हवाई जहाजों से बम बरसाए जाते हैं, जहरीली गैसें छोड़ी जाती हैं तथा आग लगाने वाले नापाम बम जैसे निषिद्ध हथियारों का प्रयोग किया जाता है. यह अमानवीय काररवाइयां कभीकभी उन क्षेत्रों में भी की जाती हैं जिन का न तो छापामार विद्रोहियों से कोई संबंध होता है और न ही उन का कोई सामरिक महत्त्व ही होता है.

अफगानिस्तान की आंतरिक स्थिति के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों के कुछ ऐसे ही विवरण हमें अन्यत्र भी इन दिनों बड़ी मात्रा में पढ़ने को मिल रहे हैं. इन समाचारों में कुछ अतिशयोक्ति संभव है, मगर इन्हें निराधार नहीं कहा जा सकता. अफगानिस्तान में न तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है और न बाहर समाचार भेजने की. मानव अधिकार जैसी

कोई चीज वहां है ही नहीं. ऐसी स्थिति में वास्तविकता को जानना संभव नहीं है. किंतु वस्तुस्थिति को जानने की सुविधा न होना ही इस बात का प्रमाण है कि वहां आतंकपूर्ण वातावरण तथा असामान्य परिस्थिति है.

भयानक आतंक फैलाने के बावजूद सोवियत संघ अफगानिस्तान पर अपनी पकड़ मजबूत नहीं बना पा रहा है. अफगानिस्तान का बड़ा क्षेत्र अब भी उस की पहुंच के बाहर है. अफगानिस्तान की लगभग डेढ़ करोड़ की जनसंख्या में से उस का एक तिहाई भाग या तो मर खप चुका है या कहीं भाग गया है. इस समय लगभग 80 हजार अफगान लोग बेघर हो कर अपनी ही भूमि पर शरणार्थी बने हुए हैं. इन में से अनेक परिवारों को गुफाओं में भी शरण लेनी पड़ रही है. इन के अतिरिक्त लगभग 30 लाख व्यक्ति पाकिस्तान में शरण लिए हुए हैं. और इन के लगभग आधे ईरान में हैं. स्पष्ट ही ये आंकड़े स्थिति की भयानकता को प्रमाणित करने के लिए कम नहीं हैं.

आज अफगानिस्तान में सोवियत टैंकों के प्रति जितनी घृणा है, उतनी ही या उस से भी अधिक घृणा बबरक करमाल के प्रति है, जो सोवियत संघ के बाद अफगानिस्तान के सर्वेसर्वा बने हुए हैं. इस परिस्थिति का स्वभावतः अमरीका तथा पश्चिमी देश भरपूर लाभ उठा रहे हैं. वे विद्रोही छापामारों को आर्थिक और सैनिक सहायता

सोवियत संघ व अमरीका दोनों अफगानिस्तान को मोहरा बना कर अपनी चालें चल रहे हैं. देखना यह है कि एशिया के इस वियतनाम में शांति कब स्थापित होगी?

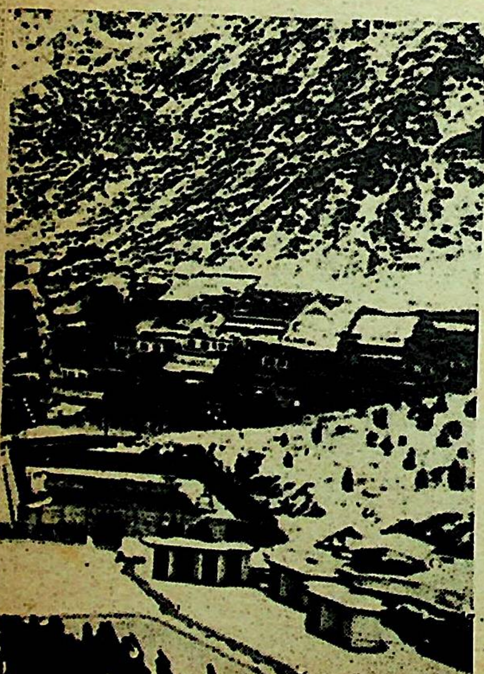


अस्थिरता व आतंक का वातावरण आज भी इन सोवियत सैनिकों के कारण बना हुआ है.

दे रहे हैं, जिस के बल पर वे सोवियत सेना से मजबूत टक्कर ले रहे हैं. सोवियत संघ जिस विदेशी हस्तक्षेप को समाप्त करने की बात करता है, वह हस्तक्षेप इसी सैनिक तथा आर्थिक सहायता के माध्यम से है.

यदि वह सहायता बंद हो जाए तथा सभी विद्रोही अफगान सोवियत सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दें तो भी इस बात की कतई संभावना नहीं है कि सोवियत संघ अफगानिस्तान को पूर्णतः स्वतंत्र छोड़ कर लौट जाएगा. उस स्थिति में केवल यही संभव है कि सोवियत संघ अपनी कठपुतली सरकार को स्थायी और सुरक्षित बना कर अपनी अधिकांश सेना को वापस लौटा ले. जब भी उस कठपुतली सरकार के सामने जनता की कोई चुनौती होगी, सोवियत सेना का वापस लौटना भी निश्चित है. दूसरे शब्दों में सोवियत संघ अफगानिस्तान को अपना वैसा ही परोक्ष रूप से अधिकृत क्षेत्र बनाना चाहता है, जैसे पोलैंड, हंगरी या चेकोस्लोवाकिया आदि हैं.

अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में सोवियत सेना.



इस से सोवियत संघ को एशिया के इस भाग में घुसपैठ करने तथा हिंद महासागर के कुछ और निकट पहुंचने का अवसर मिलेगा. यही वह स्थिति है जो अमरीका को स्वीकार्य नहीं हो सकती. पाकिस्तान भी अपनी सीमाओं पर बढ़ते हुए इस खतरे से प्रसन्न नहीं हो सकता. इस से वहां पर अफगानिस्तान की बबरक सरकार तथा विद्रोही अफगानों के माध्यम से स्वयं सोवियत संघ और अमरीका एकदूसरे से परोक्ष संघर्ष कर रहे हैं. कमोबेश यही स्थिति विएतनाम में थी. वहां सोवियत संघ विद्रोहियों के साथ और अमरीका सत्ताधारी वर्ग के साथ था. वहां अमरीका की सेना लड़ रही थी और उस के विरुद्ध सोवियत संघ के हथियार थे, लेकिन यहां विपरीत स्थिति है.

विएतनाम के लंबे संघर्ष में थक कर तथा अपने राष्ट्रीय जनमत से प्रभावित हो कर अमरीका को अपनी सेना को वापस बुलाना पड़ा था और विजयश्री सोवियत संघ के हाथ लगी थी. लगता है अमरीका विएतनाम की हार का बदला यहां अफगानिस्तान में लेना चाहता है. मगर अफगानिस्तान अमरीका से काफी दूर है, जब कि सोवियत संघ के बहुत निकट. ऐसी स्थिति में अमरीका कब तक यह मुकाबला कर पाएगा, कहना कठिन है. अफगानिस्तान को विएतनामी पथ पर ठेलने से स्वयं अफगानिस्तान में जो अस्थिरता और आतंक का वातावरण बना हुआ है, उस की चिंता न सोवियत संघ को है और न अमरीका को.

अफगानिस्तान में लंबे अरसे से अस्थिरता की स्थिति बनी हुई है. 19वीं शताब्दी में इंगलैंड और रूस के बीच निरंतर इस बात के लिए संघर्ष रहता था कि इस मध्यवर्ती देश में किस की पसंद का आदमी सत्ताधीश बने. अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए ये दोनों ही देश यदाकदा अफगानिस्तान में सैनिक हस्तक्षेप भी कर देते थे. इंगलैंड और रूस की इस प्रतिस्पर्धा के कारण ही 19वीं शताब्दी में अमीर

आगे पृष्ठ 36 पर

नखरे हुस्न के

ये नखरे हुस्न के और ये अदाएं,
क्यों न मन ये मेरा बहक जाए.

तुम जो आई छा गई मृगार बन कर,
राग बसंती में कोयल क्यों न गाए.

हुस्न को पहचान कर जो देखती है,
आज कलियों में भरी चंचल बयार,

इस तरह सजधज रही हो आज में,
फूल जैसे खुशबू का सिमट जाए.

होंठ जैसे रस की गागर छलक जाए,
नैन जैसे पुतली हो छुप छिपाए.

ये नखरे हुस्न के और ये अदाएं,
क्यों न मन ये मेरा बहक जाए.

—अन्नु प्रेमा शुक्ला



पृष्ठ 34 से आगे

अब्दुर्रहमान ने कहा था, "अफगानिस्तान रूसी भालू और ब्रिटिश शेर के बीच बकरी के समान है. वह जिधर भी ज्यादा झुकेगा, वही पक्ष उस का सफाया कर देगा." यह कथन उक्ति के रूप में लंबे समय तक अफगानिस्तान में प्रचलित रहा.

इस मान्यता के बावजूद अफगानिस्तान का झुकाव इन दोनों में से किसी एक के प्रति कुछ न कुछ रहा ही. पहले यह झुकाव इंगलैंड की तरफ था, किंतु प्रथम अफगान युद्ध के बाद जब अफगानों ने ब्रिटिश फौज के एकएक सैनिक को समाप्त कर दिया और उस के उपरांत बच्चा सक्का के कुशासन से मुक्ति प्राप्त की तो अफगानों के मन में इंगलैंड के प्रति भयानक घृणा भर गई. इस के उपरांत अफगानिस्तान का झुकाव अधिकांशतः रूस की तरफ होने लगा.

अफगानिस्तान ने 1921 में सोवियत संघ से एक मैत्री संधि की थी. बच्चा सक्का के कुशासन के उपरांत 1931 में इस संधि को पुनः दोहराया गया. इन दोनों संधियों में एकदूसरे की प्रभुसत्ता को मान्यता दी गई तथा एकदूसरे के आंतरिक मामलों में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप न करने का वादा किया गया. इन संधियों के अंतर्गत जहीर शाह के संपूर्ण शासनकाल में अफगानिस्तान और रूस के बीच मधुर संबंध बने रहे. आंतरिक रूप में भी अफगानिस्तान में अपेक्षाकृत शांति रही. 1973 ईसवी में हुई क्रांति के परिणामस्वरूप अफगानिस्तान में जहीर शाह को हटा कर दाऊद ने सत्ता छीन ली. दाऊद रूस के न समर्थक थे, न विरोधी. इसलिए रूस ने इस सत्ता परिवर्तन में कोई रुचि नहीं ली. उस की रुचि अफगानिस्तान में पनप रही पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रति अवश्य उत्पन्न हुई, जिस का रुझान पूरी तरह कम्यूनिज्म की ओर था.

दाऊद के शासनकाल में भी अफगानिस्तान और सोवियत संघ के बीच मधुर संबंधों का सिलसिला बना रहा. अप्रैल, 1978 में अफगानिस्तान में पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के नेतृत्व में कम्यूनि[st] सैनिक क्रांति हुई, जिस के परिणामस्व[रूप] नूर मुहम्मद तराकी राष्ट्रपति बने औ[र] बबरक करमाल उपराष्ट्रपति. प्रधान मं[त्री] बनाए गए हफीजुल्लाह अमीन. दिसं[बर] 1978 में अफगानिस्तान तथा रूस के बी[च] पिछली दो मैत्री संधियों को पुनः दोहरा[या] गया.

सत्ता की होड़

अंतरराष्ट्रीय कम्यूनिज्म के स[मर्थक] अफगानिस्तान की कम्यूनिस्ट पार्टी पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी भी इस समय दो गुटों में बंट चुकी थी. ये दोनों ही गुट के समर्थक तो थे, किंतु खल्क गुट कम्यूनिज्म के साथ कुछ राष्ट्रीयता के [...] थे जब कि दूसरे गुट 'परचम' अंतरराष्ट्रीय कम्यूनिज्म के प्रति निष्ठा[...] खल्क गुट का प्रभाव अधिक था तथा उस[का] नेतृत्व स्वयं राष्ट्रपति तराकी के हाथों में [था]. प्रधान मंत्री अमीन भी खल्क गुट से संबं[धित] थे, किंतु उपराष्ट्रपति बबरक करमाल [का] संबंध परचम गुट से था. इसलिए वह [...] में अधिक समय तक नहीं रह पाए. [...] चेकोस्लोवाकिया में राजदूत बना कर [...] दिया गया और कुछ समय बाद उस प[द से] भी उन्हें हटा दिया गया. करमाल ने [...] अफगानिस्तान लौटने के स्थान पर मास्को [में] कम्यूनिस्ट नेताओं से संपर्क बढ़ाना और [उन] का विश्वास प्राप्त करना अधिक [...] समझा. इस का उन्हें भरपूर लाभ भी मि[ला].

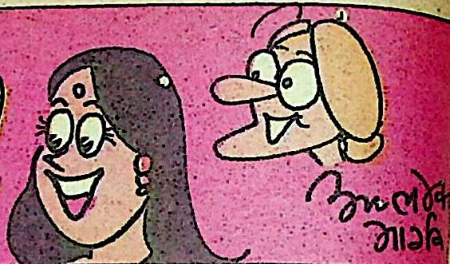
इधर अफगानिस्तान में राष्ट्र[पति] तराकी और प्रधान मंत्री अमीन के बीच सत्ता की होड़ शुरू हो गई. दोनों एक[दूसरे] की जड़ काटने का प्रयत्न करने लगे. [इस] संघर्ष में अमीन की जीत हुई. 14 सितं[बर] 1979 को एक सैनिक क्रांति में तराकी [को] गोली मार दी गई और अमीन सर्वेसर्वा [बन] गए. अमीन कम्यूनिस्ट विचारधारा [के] समर्थक होते हुए भी सोवियत संघ [के] अनुचर नहीं थे. वह अपनी स्वतंत्र सत्ता [के] समर्थक थे. तराकी से उन के मतभेद का[...]

कारण यह भी था. इस स्थिति में अमीन का सत्ता में आना सोवियत संघ को रुचिकर नहीं लगा.

उधर अंतरराष्ट्रीय स्थिति इस प्रकार की नहीं थी कि कोई सोवियत संघ की किसी कारस्वाई पर विशेष ध्यान दे पाता. अमरीका ईरान द्वारा बंधक बनाए गए राजनयिकों के मामले में उलझा हुआ था तथा इस मामले में राष्ट्रपति कार्टर बहुत कमजोर सिद्ध हो रहे थे. ईरान गृहयुद्ध के कगार जैसी स्थिति में था. पाकिस्तान का फौजी शासन भी आंतरिक झगड़ों में उलझा हुआ था. भारत में भी आंतरिक उलझनें बढ़ी हुई थीं. यहां चरणसिंह किसी तरह शासन की बागडोर संभाले हुए थे. देश चुनावों के माहौल में डूबा हुआ था. अकेला चीन कुछ कर पाने में असमर्थ था.

सोवियत संघ ने इस परिस्थिति को पूर्णतः अपने अनुकूल समझा और इसलिए अफगानिस्तान के साथ हुई पिछली सभी मैत्री संधियों को भुला कर उस ने 26 दिसंबर, 1979 को बड़ी संख्या में अपने सैनिक पूरी युद्ध सामग्री के साथ अफगानिस्तान में भेज दिए. बहाना यह बनाया गया कि स्वयं अमीन ने सोवियत संघ को सैनिक सहायता के लिए आमंत्रित किया है, ताकि देश के अंदर विद्रोह पर उतारू कबायलियों को कुचला जा सके. इस आमंत्रण का कोई प्रमाण सोवियत नेता नहीं दे पाए. अमीन या उन के किसी सहयोगी के द्वारा भी इस के समर्थन में कोई वक्तव्य नहीं दिया गया. अमीन इस कारस्वाई पर अपनी कोई प्रतिक्रिया जाहिर करते, इस से पहले ही उन की हत्या कर दी गई और बबरक करमाल को उन का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया गया, जो अब तक सोवियत संघ में ही मौजूद थे.

अफगानिस्तान में हुई इन घटनाओं का भारत से गहरा संबंध है. अफगानिस्तान न केवल हमारा मित्र देश है, अपितु पड़ोसी देश का पड़ोसी भी है. पाकिस्तान से हमारे मतभेद निरंतर बने ही रहते हैं. अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप की आड़ में पाकिस्तान बहुत बड़ी मात्रा में जो हथियार एकत्र कर रहा है, वह हमारे लिए चिंतनीय है. इसलिए भारत ने अफगानिस्तान में सभी प्रकार के विदेशी हस्तक्षेप का विरोध किया है और उस की स्वतंत्रता का समर्थन किया है. भारत की मान्यता है कि अमरीका और उस के पिछलग्गू देश विद्रोही अफगानों को सैनिक सहायता देना बंद करें तथा संपूर्ण सोवियत सेना वापस लौट जाए. इस के उपरांत अफगान जनता पूर्णतः मुक्त वातावरण में अपनी सरकार स्वयं बनाए तथा वह बिना किसी हस्तक्षेप के अपने ढंग से जिए. ●


उम्र !?!


ताई, इतनी उदास क्यों बैठी हो ?


क्या करूं? छोटे बच्चे दिन में स्कूल चले जाते हैं, बड़े कालेज और बहू तुम्हारे क्लब में.


अब हमारी उम्र की स्त्रियां कहां जाएं?


तुम चिंता न करो. मैं ने इस का हल भी ढूंढ़ लिया है.


अगले दिन
चालीस वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं की सभा
देखो.


अरे ताई, तुम्हारे सिवा कोई भी महिला नहीं आई !


आइडिया
कोई बात नहीं, कल देखना.


अगली दोपहर
चालीस वर्ष से कम उम्र की महिलाओं की सभा
वाह! श्रीमतीजी, तुम ने तो कमाल कर दिया! एक ही दिन में दस सदस्यों की वृद्धि हो गई


HINDON
हिन्डन के कपड़ों में
बात बन जाये कहीं भी...
कभी भी
DCM

जीवन की मुसकान

गरमी की छुट्टियों में हम कैमोर से नागपुर जा रहे थे. बस में भीड़ बहुत थी, लेकिन किसी तरह सीट मिल गई. जैसे ही बस चली, एक बूढ़ी औरत हमारे पास आ कर बैठने के लिए सीट मांगने लगी. बड़े भाई साहब ने मना कर दिया तो वह चुपचाप खड़ी हो गई.



थोड़ी देर बाद पीछे से आवाज आई, "आप यहां आ कर बैठ जाइए, मैं खड़ा हो जाता हूं."

हम ने मुड़ कर पीछे देखा तो हमारी आंख भर आई, क्योंकि एक लंगड़ा व्यक्ति बूढ़ी औरत को जगह देने के लिए खुद खड़ा हो गया था. —सनमीत वनर्जी

*

एक बार मैं अपने परिवार के साथ केदारनाथ मंदिर देखने गया. वापसी में मां को कुछ थकान महसूस हुई तो वह एक चट्टान पर बैठ गईं. अचानक एक आदमी ने मेरी मां को जबरदस्ती चट्टान से दूर खींच लिया. उसी समय पत्थर का एक विशाल टुकड़ा उसी चट्टान पर गिरा, जहां मां बैठी थीं. हम उस स्थिति की कल्पना कर के कांप उठे.

हम ने उस मजदूर का आभार व्यक्त किया और कुछ धन देना चाहा, लेकिन उस ने कुछ भी लेने से मना कर दिया.

—पीयूष शर्मा

मैं 20 वर्षीय नवयुवक हूं. मैं ने पिछले वर्ष हायर सेकंडरी की परीक्षा दी. परीक्षा के एक महीने पहले मैं अपनी आदतों और कुछ परिस्थितियों के कारण कुछ परेशान हो गया था और नौकरी के लिए अपने एक मित्र के साथ बिना घर बताए दिल्ली चला गया था.

दिल्ली पहुंच कर हमें लगा, जैसे हम अपने देश से निकल कर किसी बाहर के देश में पहुंच गए हैं. जैसेतैसे मैं अपने मित्र के साथ उस के परिचित के घर पहुंचा, जो स्वयं ओखला में सिर्फ दो सौ रुपए महीने की नौकरी पर लगा हुआ था. उस ने अपनी स्थिति के अनुसार हमारी खातिरदारी की. पर हमारे आने का प्रयोजन जानते ही वह गंभीर हो उठा. वह बोला, "मेरे दोस्त, यह तुम ने ठीक नहीं किया. मांबाप, जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया है, उन्हें छोड़ कर तुम यहां आ गए. तुम्हारे इम्तहान के दिन भी करीब हैं. दिल्ली घूमना है तो घूम कर वापस जाओ और परीक्षा दो. तुम्हें जरूर सफलता मिलेगी."

तब उस ने दिल्ली घूमने के लिए हमें पैसे भी दिए, लेकिन मेरा मन फिर दिल्ली में नहीं लगा और मैं ने वापस आ कर मन लगा कर पढ़ाई की और परीक्षा दी. मेरे सब पेपर अच्छे हो गए. अगर मेरे मित्र का वह परिचित हमें राह नहीं दिखाता तो न जाने हमारा क्या होता. —राजेंद्रप्रसाद

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

नए फैशन

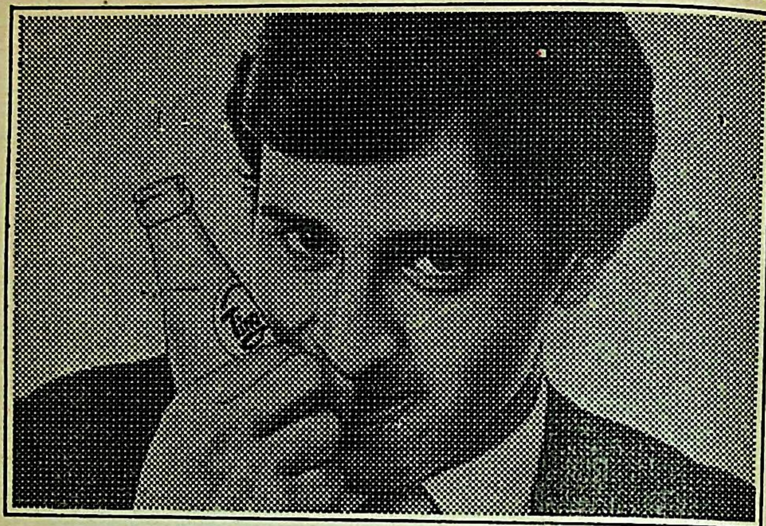


नई पोशाकें नए अंदाज

कालेपीले रंग के प्रिंटेड कपड़े की बनी इस फुल मिडी की शोभा बिलकुल निराली है. मानो बसंत बहार बजाए बागों में आने के इस मिडी पर ही आ कर छा गई है. शो बटनों पाईपिंग व चीन के परंपरागत तरीके वाले गले की यह मिडी आप कहीं भी किसी भी समय पहनें, जवाब नहीं इस का.

गरमियों के मौसम में ठंडक का एहसास दिलाने वाली सफेद रंग की इस मिडी स्कर्ट के क्या कहने. स्कर्ट पर रंग-बिरंगी कढ़ाई, पीला निटेड टाप व उस पर सफेद जैकेट क्या शानदार तालमेल है. इस पोशाक को पहन कर आप बाग में सैर करें या सहेलियों के साथ खरीदारी करने जाएं. ऐसे समय आप के लिए इस से बेहतर पोशाक और कोई नहीं है.





मेरी होने वाली 'उन से' मुलाकात, और टिंगलिंग की शुरूआत

'लाजवन्ती'

जी, यह मेरी होने वाली बीवी का नाम नहीं बल्कि वह नाम था जो कालेज की लड़कियों ने मुझे दे रखा था।

हे भगवान, वो भी क्या दिन थे... ख़ासकर मुझ जैसे लजीले, शर्मीले व्यक्ति के लिए। बचपन से ही मैं शांत स्वभाव का था और स्कूल में भी मैं ज्यादातर चुपचाप रहता था। यहां तक कि हमारी क्लास की एक छोटी सी शरारती लड़की मुझे पिन चुभोने या किसी न किसी तरीके से छेड़ने की ताक में रहती थी।

उसे मालूम जो था कि मैं यह सब कुछ सह लेने वाला हूं।

ख़ैर... कॉलेज आते-आते तो ज़माने की हवा लग जानी चाहिए थी।

मगर लगी नहीं।

कालेज की कलियां

एक दिन मैं कालेज के लॉन में बैंच पर बैठा किताबों में खोया हुआ था। कुछ देर बाद कुछ सुना और कुछ देखा कि 3 चुलबुली लड़कियां मेरे ही बैंच पर बैठी हंस-हंस कर बातें कर रही थीं।

क्या बातें कर रही थीं, यह बताने की ज़रूरत है क्या! आप खुद ही समझ रहे होंगे।

"किताबी कीड़ा"... "छुई-मुई"... "दब्बू"... "ब्रह्मचारी"... "पंडितजी"... ऐसे ही कुछ शब्द मेरे कानों में पड़ रहे थे। और मैं आहिस्ता-आहिस्ता बैंच के दूसरी ओर सरकता जा रहा था। उन बलाओं से टलने की कोशिश में।

"धप्..प्..प"

अरे ये क्या... न जाने कब बैंच का कोना ख़त्म हो गया और मैं ज़मीन पर चित्त पड़ा था।

उन लड़कियों की ज़ोरदार हंसी आज तक मेरे कानों में गूंजती है।

उस दिन...

एक दिन कनॉट प्लेस से घर वापिस आते हुए बस में काफ़ी भीड़ थी। उस पर कर्ज़न रोड के स्टॉप से कुछ तितलियां और आ पहुंचीं। और वे सब मेरे इर्द-गिर्द कुछ ऐसे आ खड़ी हुईं कि मैं न इधर का रहा, न उधर का। बस बीच मझदार में फंस सा गया।

(हे कृष्ण कन्हैया, तुम कैसे इतनी गोपियों के बीच रास रचाते थे!)

मैं सांस रोक कर, आंखें नीची कर, सिकुड़ कर खड़ा रहा। और मन ही मन प्रार्थना करने लगा – हे कन्हैया पार लगा मेरी नैया।

कन्डक्टर स्टाप के बाद स्टाप आने की

घोषणा करता गया... पर मैं कहां हिल सकता था। आप समझ ही गये होंगे कि उस दिन मुझे घर पहुंचने के लिए पांच स्टॉप वापिस पैदल चलना पड़ा।

'मेरी 'उन से' मुलाकात...

शर्माने के उस ज़माने में एक दिन मेरे पिताजी ने बताया कि बेटा तुम्हारे लिए रिश्ते पे रिश्ते आ रहे हैं और कल शाम लड़की देखने जाना होगा।

यह सुनकर उस गर्मी में भी मैं ठिठुरने सा लगा।

ख़ैर, कब तक ख़ैर मनाता। और अगले दिन हम सपरिवार पहुंच गए 'ससुराल' निवास।

दिल धड़क रहा था... आंख फड़क रही थी। 99 रन बना लेने वाले क्रिकेट-खिलाड़ी जैसी हालत थी मेरी।

हमें दुल्हन की तरह सजे-संवरे ड्राइंग-रूम में बिठाया गया। फिर शुरू हुआ आवभगत का सिलसिला। लड़की की बहनें और उनकी सहेलियां मुझे अखियों के झरोखों से देख रही थीं और मैं अपनी उंगलियों को एक दूसरे में फंसाता कभी छत को, तो कभी दीवारों पर लगी तस्वीरों को देखता।

तभी एक 'तस्वीर' हाथ में चाय की ट्रे लेकर दरवाज़े के अन्दर दाख़िल हुई। मैं समझ गया ये 'वही' हैं।

जब तक मैं अपने आप को सम्भालता वो मेरे साथ, मेरे पास सोफ़े पर बैठ चुकी थी।

फिर, बाकी लोग कोई न कोई बहाना बना वहां से खिसक लिए। हम कमरे में अकेले रह गए।

"चाय में कितनी चीनी लेंगे आप?" चीनी से भी मीठी आवाज़ ने पूछा।

"मैं...मैं...वो...मैं... चीनी... नहीं...चाय नहीं पीता।"

(हर रोज़ 15 कप से ज़्यादा की औसत थी उन दिनों मेरी)

"अच्छा! तो चलो हम टिंगलिंग का मज़ा लेते हैं। बहुत मज़ा आएगा।"

वह काफ़ी फ़ारवर्ड लगती थीं। लेकिन इतना सुनते ही मेरे पांव से ज़मीन खिसकने लगी। मैं कहीं का कहीं खो गया।

मुझे पता भी न लगा कि कब दो टिंगलर की बोतलें हमारे सामने आ गईं।

"आपने कभी पहले टिंगलिंग का मज़ा लिया है?" शोख़ अंदाज में उन्होंने पूछा।

"नहीं! तो बस शुरू हो जाइए। पहले एक छोटा सा सिप लीजिए...अब जीभ को प्यार से मुंह में आहिस्ता-आहिस्ता घुमाइए। हूँ... ऐसे!'

उनकी बातों में ऐसा जादू था कि मैं वैसा ही करता गया। वो मज़ा आ रहा था कि बस! मुंह में मानों नीबूं के ताज़ा, चटखटे स्वाद वाले हज़ारों छोटे-छोटे बुलबुले सन-सन करते हुए फूट पड़े हों। और ऐसा लगा जैसे वह स्वाद मानों उत्तेजना की एक लहर बनकर सारे बदन में फैलता जा रहा हो।

मेरे मुंह से बस इतना ही निकला — "वाह"।



एक सिप के इस कमाल के बाद तो मुझ से रहा न गया।

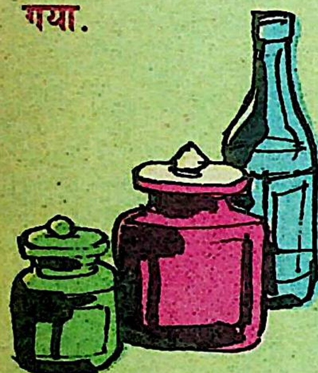
टिंगलर की बोतल ख़त्म करते-करते मैंने फ़ैसला कर लिया कि मैं शादी यहीं करूंगा।

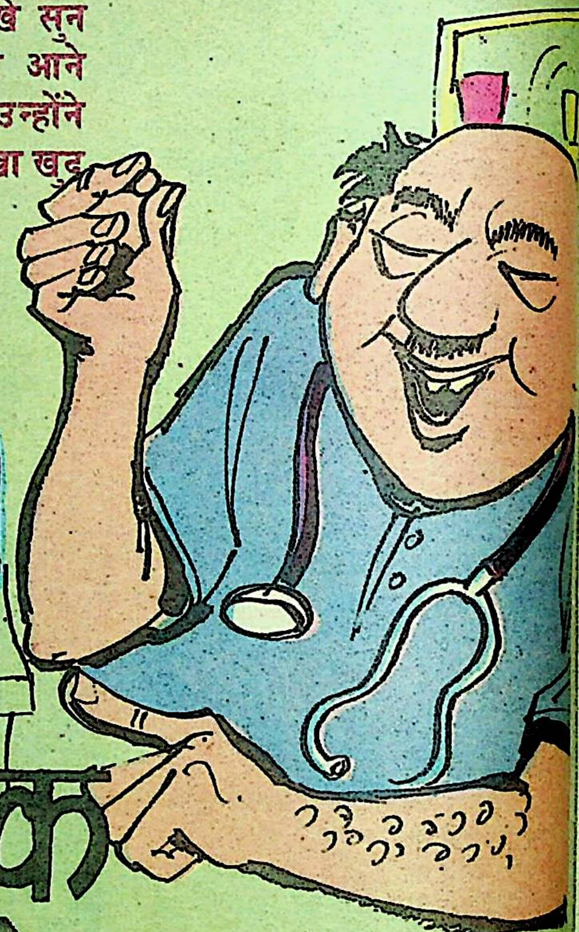


खिल उठेगा तन-मन!

व्यंग्य • लाज ठाकुर

फूफाजी को डाक्टर बना देख कर मैं हैरान रह गया और उन के डाक्टरी नुसखे सुन कर तो मुझे चक्कर आने लगे. लेकिन जब उन्होंने अपना ही बनाया नुसखा खुद पर आजमाया तो मैं सहम गया.





यमलोक के द्वारपाल

"जलेबी डाक्टर!" हम ने आंखें मलते हुए चौथीबार नामपट्ट को पढ़ा.

"आ जाओ, बेटा मनोज, बाहर ही क्यों रुक गए?" फूफाजी ने खिड़की की सलाखों में से नाक बाहर निकालते हुए पुकारा.

मैं चौखट पार कर के बैठक में पहुंचा और हैरानी से इधरउधर निगाह दौड़ाई. बैठक का सारा पुराना फरनीचर गायब था. उस की जगह नए प्रकार का फरनीचर लगा था.

दरवाजे के बिलकुल सामने दीवार के पास एक मेज रखी थी, जिस पर स्टेथोस्कोप, थर्मामीटर, रक्तचाप मापने का यंत्र और एक बड़ा, एक छोटा लिखने का पैड पड़ा था. मेज पर रखे लकड़ी के रैक में से

चमकदार कागज़, दवाई की शीशियां आदि झांक रही थीं. मेज के साथ रखी गद्देदार घूमने वाली कुरसी के पीछे दीवार के साथ लगी लकड़ी की बिना दरवाजों वाली अलमारियों में विभिन्न आकारों के डब्बे और दवाइयों की शीशियां कतारों में सजी हुई थीं. एक छोटी सी बेंच दीवार के साथ लगी हुई थी. मेज के गिर्द चार कुरसियां और एक स्टूल पड़ा था. नीले परदे के पीछे मरीज को लिटा कर मुआयना करने वाली लंबी मेज नजर आ रही थी. उस पर सफेद चादर बिछी हुई थी. दीवार पर चार तख्ते लटके हुए थे, जिन पर लिखा था:

'मेरी दवाइयों के आगे भगवान की इच्छा नहीं चलती.'

'डाक्टर साहब मौजूद हैं, अभी आप का मुआयना करेंगे.'

'अपनी बारी का इंतजार करें. आप यहां पहुंच गए हैं, अब आप को मरने नहीं दिया जाएगा.'

'उधार बिलकुल बंद है, क्योंकि मरीजों का कुछ भरोसा नहीं.'

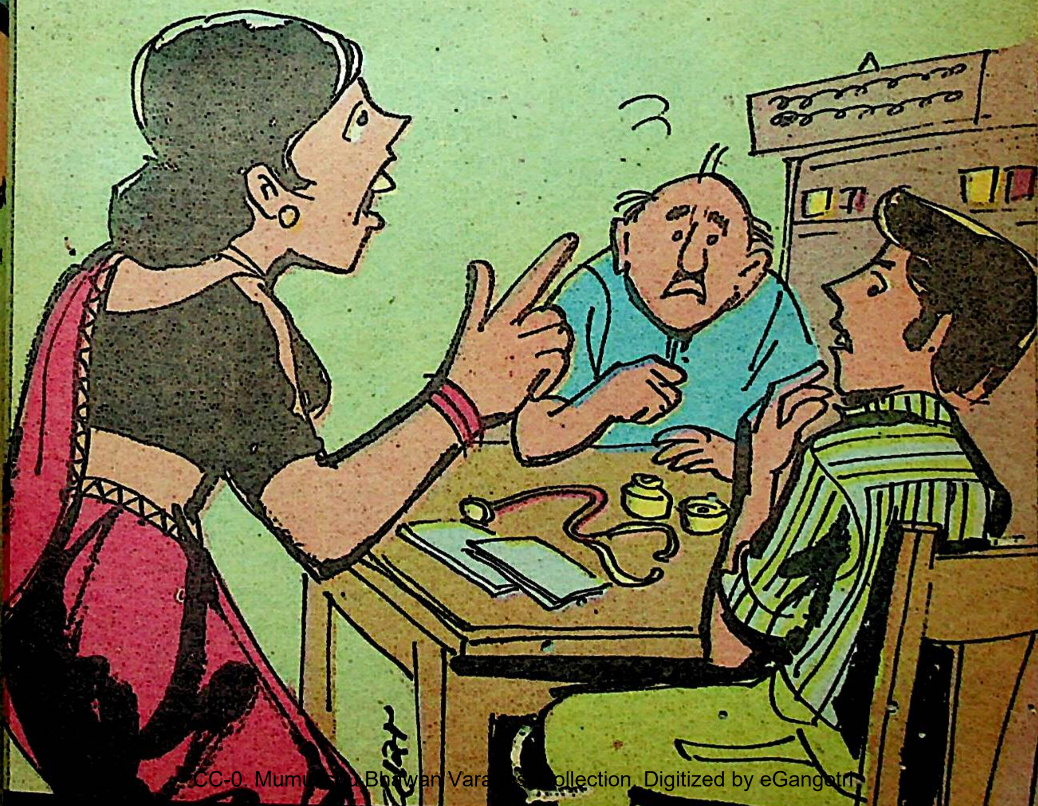
"क्या देख रहे हो?" फूफाजी ने पूछा.

"यह जलेबी डाक्टर कौन है? क्या आप ने यह कमरा किसी डाक्टर को किराए पर दे दिया है?" मैं ने तख्तों पर से नजरें हटा कर फूफाजी की ओर देखा.

"नहीं... नहीं, किसी को नहीं दिया है. मैं ने ही डाक्टरी शुरू कर दी है." फूफाजी की आंखें खुशी से नाच रही थीं. "तुम तो जानते ही हो, मुझे नौकरी से निलंबित कर दिया गया था. न जाने इस मामले का फैसला कब तक होगा और फिर क्या पता कि फैसला मेरे हक में होगा भी या नहीं. सो, मैं ने सोचा कि नौकरी हाथ से जाने से पहले ही दूसरे काम में पांव जमा लूं."

"मगर आप ने डाक्टरी की शिक्षा कहां से और कब ली?" मैं ने उन्हें सिर से पांव तक देखते हुए हैरानी से पूछा.

"मैं तो कहती हूं कि तुम्हारे इस अनाड़ी इलाज से पांचसात आदमी जान से हाथ धो बैठे तो बजाए कैद के सीधी फांसी हो जाएगी."



"बहुत बेतुका प्रश्न है." फूफाजी मेज का चक्कर काट कर घूमने वाली कुरसी पर बैठ गए और बोले, "फिर तो तुम मुझ से यह भी पूछोगे कि मैं ने साइकिल के पहिए में हवा भरना कहां से सीखा, परीक्षाओं में नकल करने का प्रशिक्षण कहां से लिया, हिसाबकिताब में हेराफेरी करने की शिक्षा कहां से और कब ली."

"ये बातें और हैं, मगर डाक्टरी करने के लिए तो डाक्टरी डिगरी, दवाइयों के बारे में जानकारी, रोग की पहचान और उस के इलाज की पूरीपूरी जानकारी होनी जरूरी है. आप को तो..."

"तुम ठीक कहते हो. दो सप्ताह पहले तक सचमुच मैं मर्ज और दवा के बारे में कुछ नहीं जानता था. मगर अब रोग, रोगी और इलाज का मुझे पूरापूरा ज्ञान है. बैठोबैठो, खड़े क्यों हो?"

मैं उन के सामने वाली कुरसी पर बैठ गया.

"दो सप्ताह में ही आप पूरे डाक्टर कैसे बन गए? इस के लिए तो वर्षों की पढ़ाई और अनुभव की आवश्यकता होती है."

फूफाजी ने मेज की दराज खोली और सुनहरी जिल्द वाली एक पतली सी पुस्तक मेरी आंखों के आगे हिलाते हुए बोले, "यह सब इस का कमाल है." उन की आंखों में उल्लास की चमक थी.

"यह क्या है?" मैं ने हाथ बढ़ा कर वह पुस्तक लेनी चाही. मगर फूफाजी ने झट से उसे फिर दराज में रख कर खट से ताला लगा दिया.

"कौन सी पुस्तक थी यह?" मैं ने व्यग्र हो कर पूछा.

"अब तुम से क्या छिपाना," फूफाजी बोले, "पिछले दिनों जब मैं बस में सफर कर रहा था तो हमारी बस एक छोटे से कसबे में रुकी. वहां पर एक बुजुर्ग गेरुए कपड़े पहने, कंधे पर झोला लटकाए बस में सवार हुए और आते ही आवाज लगाई कि बस में कोई भी रोगी हो तो हाथ खड़ा कर दे. दोतीन हाथ उठे. हर हाथ उठाने वाले को उस ने ऊंचे स्वर में अपने रोग की जानकारी देने को कहा. फिर खड़ेखड़े अपने झोले से उन लोगों को अलगअलग शीशियों से रंगबिरंगी गोलियां व चूर्ण दिया. थोड़ी देर पहले जो रोगी रोग से बेहाल थे और कराह रहे थे, तुरंत भलेचंगे हो गए."

"हूं." मैं सुनता गया.

"फिर उस गेरुए वस्त्रधारी बुजुर्ग ने कहा, 'भाइयो, मैं वर्षों से जनता की सेवा करता आ रहा हूं. दांत, कान, आंख का दर्द, आधे सिर का दर्द व पूरे सिर का दर्द, पेट गैस, वायु गोला, खांसी, दमा, तपेदिक, हृदय रोग, लकवा, कैंसर हर रोग का इलाज मेरे पास है. अपने जीवन भर के अनुभवों का निचोड़ मैं ने एक किताब 'जेबी डाक्टर' में छपवा दिया है. मैं ने इस किताब की मामूली कीमत साढ़े पांच रुपए रखी है, ताकि हर बालबच्चे वाला इसे खरीद कर अपने परिवार और आसपड़ोस के लोगों की भलाई कर सके.'" फूफाजी सांस लेने को रुके.

"फिर?" मैं और व्यग्र हो उठा.

"अभी उस ने झोले में से किताबें निकाली ही थीं कि बस की सभी सवारियां उस किताब को खरीदने के लिए उस पर टूट पड़ीं. मैं ने भी एक पुस्तक मोल ले ली," फूफाजी कुरसी की पीठ से पीठ टिका कर बोले, "अब जो मैं ने किताब पढ़नी शुरू की तो हर एक लाइलाज मर्ज को दूर भगाने का कौड़ियों के मोल का नुसखा इस में लिखा पाया. उस बस अड्डे से अपने शहर पहुंचतेपहुंचते मैं अपनेआप को पूरा डाक्टर महसूस करने लगा."

फूफाजी ने गर्व से छाती फुलाते हुए आगे कहा, "घर पहुंचते ही मैं ने सब से पहले यह काम किया कि रातदिन एक कर के सभी दवाइयां पुस्तक में लिखे नुसखों के अनुसार बना कर शीशियों में भर लीं और अपनी बैठक को दवाखाने में बदल दिया."

"मुझे लगता है कि वे बस वाले रोगी उस बूढ़े के एजेंट होंगे और किताब खरीदने में पहल करने वाले भी उसी के आदमी



होंगे,'' मैं बोला, ''इस किताब में छपे नुसखों से बाज आइए. इन से किसी का भला नहीं, उलटे नुकसान ही होगा.''

''आखिर हो तो अपनी बूआ के भतीजे. इस घर में सभी मेरी जड़ें उखाड़ने वाले बैठे हैं,'' कहतेकहते फूफाजी के माथे पर बल पड़ गए, ''वह भी अपने जानपहचान के 10-15 मरीज मेरे पास लाने की बजाए मुझे ही समझा रही है कि रोगियों के हाल पर दया करो और उन्हें अपनी दवा से नहीं, रोग से मरने दो. वह मेरे पीछे पंजे झाड़ कर पड़ी है कि मैं लोगों का भला करने के नेक काम से बाज आऊं. अब यही कुछ तुम ने कहना आरंभ कर दिया है.''

''क्या बूआजी भी इस काम के खिलाफ हैं?''

''वह तो मेरे हर काम का विरोध करती है.''

फूफाजी के मुंह की कड़वाहट बढ़ गई, ''दफ्तर के सामान की खरीदारी में चार पैसे

मैं गोली के इतनी जल्दी और भरपूर असर को देख कर हैरान था. फूफाजी सचमुच किंगकांग बन गए थे.

अपनी सूझबूझ से बचा लेता था तो यह हर समय टोकती रहती थी, 'गोलमाल न करो, यह पाप है.' उस की रोज की चखचख से सारी दुनिया को खबर हो गई और इसी का नतीजा है कि नौकरी खतरे में पड़ी है और जेल जाने का डर अलग से बना हुआ है.''

''मैं तो कहती हूं कि तुम्हारे इस अनाड़ी इलाज से कहीं पांचसात आदमी जान से हाथ धो बैठे तो बजाए कैद के सीधी फांसी हो जाएगी,'' तभी बूआजी आटे से सने हाथ लिए बैठक में आ कर बोलीं. फिर मुझे देखते ही बोलीं, ''तुम कब आए, मनोज बेटा? मैं तो समझी थी कि फिर कोई रोगी इन के शिकंजे में आ फंसा है. कहो, कैसे हो? घर पर तो सब ठीकठाक हैं न?'' ▷



आपके बच्चे कल क्या बनते हैं

यह इस पर निर्भर करता है कि आप उन्हें आज पढ़ने के लिए क्या देते हैं

आपके बच्चों के लिए
स्कूल के पश्चात सिर्फ खेलना ही काफी नहीं.
उनको दीजिए सुमन सौरभ- दिल्ली प्रेस की नई पत्रिका.
जी हां, वही दिल्ली प्रेस जो पिछले 40 वर्षों से
आपके पूरे परिवार के लिए सरिता, गृहशोभा, मुक्ता,
भूभारती, चंपक, कैरेवान और चूमंसईरा प्रकाशित
करते आ रहे हैं.

सुमन सौरभ आपके बच्चों का संतुलित विकास करने
के लिए प्रकाशित की जा रही है.

सुमन सौरभ की शिक्षा पूर्ण कहानियां व रोचक स्तंभ
आप के बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे.
उन का स्वस्थ मनोरंजन करने के साथसाथ उन को देश व
समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभाने के लिए तैयार
करेंगे.



हर महीने अपने बच्चों को ले कर दें

सुमन सौरभ

चित्रविजय-सुमी-103

"मनोज की कुशलक्षेम तो बाद में पूछना, पहले मुझे फांसी के फंदे पर लटकवा दो. इस काली जबान से कभी तो मेरे लिए कोई शुभ बात निकाला करो. अभी प्रैक्टिस शुरू हुई नहीं, कोई मरीज आया नहीं कि इस ने पहले से ही मरीजों के मरने और मेरे फांसी चढ़ने की मन्नतें माननी शुरू कर दी हैं," फूफाजी ने घूमने वाली कुरसी को एक झटके से बूआजी की ओर घुमाते हुए कहा, "तुम्हारी जगह कोई और स्त्री होती तो पति की ऐसी कामयाबी और लियाकत देख कर खुशी के मारे फूली न समाती."

"खुशी से फूली तो क्या समाती, दिनरात तुम्हारी इन नादानियों पर रोती रहती," बूआजी ने तड़प कर कहा, "अब तुम्हीं कहो, बेटा मनोज, इन के पास कौन सी डाक्टरी डिगरी है? कौन सा अनुभव है जो यह लोगों का इलाज करने लगे हैं? थर्मामीटर तो सही ढंग से लगा नहीं सकते, नब्ज देखना तक आता नहीं और चले हैं डाक्टरी करने."

"मेरे लिए यह थर्मामीटर-फर्मामीटर सब बेकार हैं. अपना बचपन तो उस महल्ले में बीता है, जहां हकीम साहब परदे की ओट से आते धागे को थाम कर बता देते थे कि यह नब्ज किसी स्त्री की है या भैंस की. क्या जमाना था वह भी. हकीम साहब का हाथ किसी नाजुक कलाई पर होता था. हर धड़कन के साथ कानों में शहनाइयां सी बज रही होती थीं. दरियों पर बिछी सफेद चादरों पर बैठे लोग कव्वाली के हर बोल पर दाद दे रहे होते थे."

"लो, देख लो अपने फूफाजी का दिमाग, नब्ज देखने का जिक्र करतेकरते कव्वाली पर पहुंच गए." बूआजी ने टोका.

"अरे हां, नब्ज की बात पर मुझे हकीम साहब की तीसरी शादी की याद आ गई थी," फूफाजी ने पलकें झपकाते हुए कहा.

"मैं किसी की शादी के बारे में नहीं, तुम्हारी इन मूर्खतापूर्ण डाक्टरी के बारे में कह रही थी. परसों मुन्ने को दोचार डकारें आ गईं तो इन्होंने न जाने क्या उलटीसीधी



आंधी

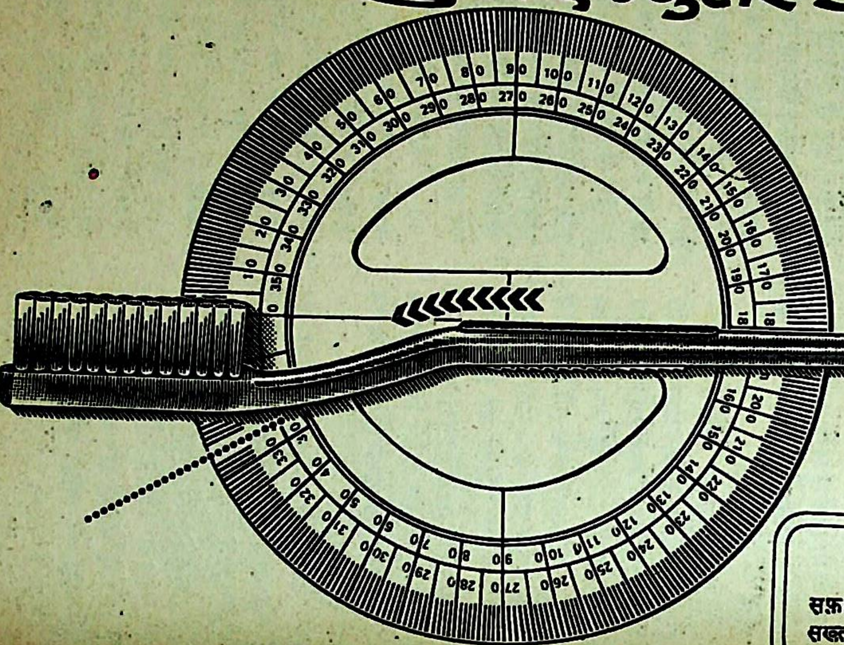
गुल से लिपटी हुई
तितली को गिरा कर देखो,
आंधियो तुम ने
दरख्तों को गिराया होगा.
—कैफ भोपाली

गोलियां दे दीं कि उसे अफारा हो गया और वह पेट दर्द से तड़पने लगा. वह तो मैं ने डाक्टर कुमार से दवा दिलवा दी, वरना जाने उस का क्या हाल हो जाता."

"तो आप ने उसे किसी दूसरे डाक्टर से दवा दिलवा दी थी. मैं भी तो कहूं यह सारी गड़बड़ क्यों हुई. जब मेरी दवा रोगी के शरीर में किसी दूसरे डाक्टर की दवा से टकराएगी तो तूफान तो उठेगा ही. मैं तो खूब सोचसमझ कर दवा दूं और वह अनाड़ी डाक्टर उलटेसीधे नुसखे लिख दे तो रोगी को तकलीफ तो उठानी ही पड़ेगी."

"अच्छा, वह डिगरी वाला डाक्टर तो अनाड़ी हो गया और आप दो सप्ताह में हकीम लुकमान के भतीजे हो गए."

"चाहे मैं हकीम लुकमान का भतीजा हूं या बुकरात का भानजा, आज से अपने परिवार का डाक्टर मैं स्वयं होऊंगा." फूफाजी ने मुंह सिकोड़ा, "मेरी दवाओं में वह तासीर है कि मुर्दा भी जी उठे. रही डिगरी की बात तो वह बाहर बोर्ड पर पढ़ लो और जाने से पहले मेरा बनाया हुआ सुरमा 'ऐनक तोड़ आंख फोड़' लगा लेना." फूफाजी ने अपने पीछे रखे रैक में से एक शीशी उठा ली.



२५ डिग्री बेहतर
नया फोरहॅन्स ऐन्गुलर डीलक्स टूथब्रश
२५ डिग्री पर झुके हैन्डल के कारण दाँतों की छिपी हुई सतहें भी इसकी पहुँच में...
डबल ऐक्शन रेशे दाँतों की सफ़ाई के साथ-साथ आपके मसूड़ों की मालिश भी करते हैं
दाँतों की सफ़ाई के लिये सख्त नीले रेशे
मसूड़ों की मालिश के लिये मुलायम सफ़ेद रेशे
ज़्यादा रेशे ज़्यादा साफ़ दाँत।

"बोर्ड पर तो जलेबी डाक्टर लिखा है, यह कौन सी डिगरी है?" मैं ने नामपट्ट पर जो पढ़ा था उसे दोहराते हुए पूछा.

"क्या तुम्हें भी इस सुरमे की जरूरत है? बरखुरदार, जलेबी डाक्टर नहीं जेबी डाक्टर लिखा है यानी पाकेट डाक्टर. क्योंकि मेरी डाक्टरी की सारी करामात इस जेबी डाक्टर नामक पुस्तक की देन है."

"सुन लो, बेटा, इसी किताब के सहारे यह लोगों को श्मशान की राह दिखा रहे हैं."

"श्मशान की राह दिखा रहे हैं," फूफाजी ने बूआजी के लहजे की नकल उतारते हुए कहा, "पता भी है, उस में क्याक्या टोटके हैं? सुनो, एक जगह लिखा है... इंजन का कोयला बारीक पीस कर कपड़े से छान लो. फिर चील के अंडे की जर्दी और सफेदी में सात दिन और नौ दिन लगातार खरल करो. इस के बाद 15 ग्राम लौंग का तेल मिलाओ. इस से बहुत ही शानदार सुरमा तैयार होगा."

"इंजन के कोयले से सुरमा!" मैं ने चौंक कर कहा.

"सुनते जाओ. अपने इस करामाती सुरमे से यह न जाने किसकिस को अंधा करेंगे." बूआजी ने अपने माथे पर हाथ मारा.

"ठहरोठहरो, मुझे याद करने दो. सुरमे का नुसखा बताते हुए मुझे दंत मंजन का नुसखा याद आ गया," फूफाजी ने माथे पर बल डाल कर याद करने की नाकाम कोशिश की, "अच्छा, इसे रहने दो. पेट दर्द का नुसखा देखो. पेट की हर बीमारी इस की एक पुड़िया से गायब हो जाती है."

"वह भी सुना दो," बूआजी ने बेरुखी से कहा.

"लि[illegible]खा है," फूफाजी ने खंखार कर गला साफ किया, "हरड़, बहेड़ा, आंवला, सत गुलो कूटछान कर उस में आधा नोला नौशादर, 50 बूंद तारपीन का तेल, 60 आक के फूल और डेढ़ तोला संखिया मिला दो. फिर मटर के दाने के बराबर गोलियां बना कर छाया में सुखा लो."

"आक के फूल, तारपीन का तेल और संखिया ये सब पेट दर्द के लिए!" मैं सीधा हो कर बैठ गया.

"शायद पेट दर्द के नुसखे के साथ मैं सांप काटे की दवा की मिलावट कर गया हूं. ठहरो, मैं किताब में से ठीक तरह पढ़ कर बताता हूं." फूफाजी ने दराज में कुंजी घुमाई.

"बसबस, रहने दो, मैं अपने घर में यह सब नहीं होने दूंगी. मैं नहीं चाहती कि लोग यहां रोगी ले कर आएं और लाश उठा कर ले जाएं."

"मनोज बेटा, सुन लो अपनी बूआ की बातें?" फूफाजी ने मेरा कंधा हिलाया, "अब तो तुम्हें विश्वास हो गया न कि यह मेरा हित नहीं चाहती? अरे भई, शुरूशुरू में यदि पांचसात मरीज मर भी गए तो क्या हुआ, धीरेधीरे हाथ जम जाएगा."

"जिस तरह के नुसखे आप बता रहे हैं, उन से तो यमपुरी ठसाठस भर जाएगी. आप बूआजी की बात मान कर इस दवाखाने को बंद कर दें."

"शाबाश, मेरे शेर, मैं ने तो तुम से उम्मीदें बांधी थीं कि तुम मेरे इलाज और दवाखाने का ढिंढोरा दुनिया में पीट कर मेरा कारोबार इतना बढ़ाओगे कि हर शहर में मेरी शाखाएं खुल जाएंगी. मगर तुम तो उलटा मुझे यह दवाखाना ही बंद कर देने की सलाह दे रहे हो. बेटे, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि ये दवाइयां और गोलियां खूब सोचसमझ कर एकदम नुसखों के मुताबिक तैयार की गई हैं. इस डिबिया से झांकती हुई इंद्रधनुष के रंगों वाली इस छोटी सी गोली को ही ले लो."

फूफाजी ने मेज की दराज में से प्लास्टिक की एक छोटी सी डिबिया निकाल कर मेज के ऊपर रखी. डिबिया के अंदर बिछी नीले रंग की मखमल पर एक रंगबिरंगी गोली पड़ी थी. फूफाजी ने बूआजी और मेरी ओर बारीबारी से देखा.

"यह तो नन्ही की अंगूठी की डिबिया हैं. इस में से अंगूठी किधर गई? कहीं बेच कर भंग तो नहीं पी गए?" बूआजी ने फूफाजी को घूरते हुए पूछा.

"नन्ही की अंगूठी वहीं संदूक में पड़ी है. मैं इस गोली की बदौलत हजार अंगूठियां बनवा सकता हूं." फूफाजी ने बुरा सा मुंह बनाया, "हां, तो इस गोली को 'इंद्रधनुषी' कहते हैं, क्योंकि यह एक गोली सब तरह की कमजोरियों को दूर भगा कर जीवन में खुशियों के रंग भर देती है."

"जाने क्याक्या कूटकाट कर इस में मिला दिया होगा," बूआजी ने मुंह बिचका कर कहा.

"बस यह न पूछो. इस के बारे में पुराने ग्रंथों में लिखा है. दुर्योधन इसी गोली का सेवन कर के भीम के सामने डट गया था. उस से गदा युद्ध में भीम पसीनापसीना हो गया था. इस में हीरेपन्ने, मोती, मूंगे के कुश्ते, सोनेचांदी के वर्क, शेर के दांत, चीते के नाखून, घड़ियाल की खाल और बिच्छू के डंक की भस्म प्रयोग होती है.

"इस के हलक से उतरते ही बदन में बिजली की सी फुरती भर जाती है. सफेद बाल काले हो जाते हैं. झुर्रियां दूर हो जाती हैं. टूटे हुए दांत फिर उग आते हैं. जिस्म फौलाद का बन जाता है. ईंट, पत्थर, लोहे की चोट असर नहीं करती. अकेला आदमी चार आदमियों को उठा कर पटक सकता है. हाथी से भिड़ सकता है. यों समझो कि इसी नन्ही सी गोली में पूरा किंगकांग भरा हुआ है, टारजन बंद है."

"अच्छा, अब इस गोली को नाली में फेंको और यह डिबिया खाली कर के मुझे दो, ताकि मैं नन्ही की अंगूठी इस में वापस रख सकूं."

"सुन लिया, बेटे? यह इस संजीवनी बूटी को नाली में फेंकने को कह रही है." फूफाजी ने मेरी ओर मुंह मोड़ा, "अच्छा, भई मनोज, मैं यह गोली तुम्हारे सामने खाता हूं. यदि तुम इस की करामात और मेरी डाक्टरी का लोहा मान जाओ तो तुम मेरे हस्पताल में



कंपाउंडर का काम संभाल लेना और तुम्हारी बूआ नर्स का और यदि गोली बेकार सिद्ध हुई तो मैं अपनी डाक्टरी छोड़ दूंगा. बोलो मंजूर है?" फूफाजी ने डिबिया से गोली निकाल कर हथेली पर रख ली और बोले, "शर्त यह है कि मुकरना नहीं. हां, तो यह लो."

फूफाजी ने दन से गोली मुंह में रख ली और गरदन को एक झटका दे कर हलक से नीचे उतार ली. दूसरे ही पल वह बिजली की सी तेजी से उठ खड़े हुए. घूमने वाली कुरसी को हाथ के धक्के से फर्श पर लुढका दिया. मेज को इस जोर से दूर धकेला कि उस पर रखी कापियां, किताबें और स्टेथोस्कोप, रक्तचाप नापने का यंत्र दूर जा पड़े और मेज बूआजी की कुरसी से जा टकराई. बूआजी कुरसी समेत उलट कर फर्श पर गिर पड़ीं. मैं घबरा कर उठ खड़ा हुआ. बूआजी को सहारा दे कर किसी तरह खड़ा किया.

फूफाजी तांडव नृत्य सा करने लगे थे. उन के पांव जमीन पर नहीं टिक रहे थे. बाजू पवन चक्की के पंखों की तरह हवा में लहरा रहे थे. जीभ बारबार मुंह से बाहर निकल कर लहरा जाती थी और उन के हलक से गूं....गूं... गां....गां... का स्वर निकल रहा था. मैं गोली के इतनी जल्दी और ऐसे भरपूर असर को देख कर हैरान था. फूफाजी सचमुच किंगकांग बन गए थे.

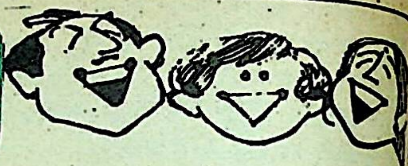
फूफाजी उछल कर बाहर वाले दरवाजे की दीवार से भिड़ गए और फिर फर्श पर गिरे. वह फिर उठे और दोनों हाथ फैला कर मेरी तरफ हमला किया. मैं सहम गया और झट से एक ओर हट गया. फूफाजी पार्टीशन के लिए लगाए गए परदे से झूल गए और उसे एक झटके से उखाड़ कर बूआजी की तरफ उछाल दिया. वह घबरा कर पीछे दीवार के साथ लग कर खड़ी थरथर कांपने लगीं. फूफाजी मेज की दराजों को खींच कर फर्श पर पटकने लगे. फिर दायां हाथ फैला कर एक झटके से मेरी कमीज को मुट्ठी में पकड़ कर इस जोर से खींचा कि नई कमीज का एक भाग 'चिर' की आवाज के साथ मेरे जिस्म से अलग हो कर फूफाजी के हाथ में लहराने लगा.

अब उन के हाथ में मेरा कलम था. उन्होंने फुरती से कलम खोला और उस का ऊपरी भाग उतार कर जोर से मेरे चेहरे पर दे मारा. यदि मैं तेजी से न बैठ जाता तो आज सारे संसार को एक ही आंख से देख रहा होता. फूफाजी ने झुक कर फर्श पर से लिखने की कापी उठा ली. उस पर तेजी से कुछ लिखा और कापी मेरी नाक से भिड़ा दी. मैं ने उसे हाथ में ले लिया आड़ेतिरछे अक्षरों में लिखा था—"मेरी जीभ...मेरा तालू सूज रहा है. जिस्म में चिंगारियां सी लग रही हैं. फौरन डाक्टर के पास ले चलो."

इस के बाद फूफाजी दवाइयों की डिबियों, शीशियों व गोलियों के बीच गिर गए और हाथपांव पटकने लगे.

बूआजी सहायता के लिए पड़ोसियों को पुकारने लगीं और मैं टैक्सी लाने के लिए बाहर सड़क की ओर भागा.

यह भी खूब रही



मेरी भाभी पहली बार ससुराल आईं. एक दिन भैयाभाभी कमरे में थे कि महल्ले की कुछ औरतों ने बाहर से दरवाजा बंद कर दिया और कहने लगीं कि एक किलो मिठाई खिलाओ, तब दरवाजा खुलेगा. वे बाहर बैठ कर गीत गाने लगीं.



भाई साहब परेशान हो गए. उन्होंने भाभीजी से फिल्म देखने चलने को कहा. दोनों कमरे की खिड़की से निकल कर फिल्म देखने चले गए और खिडकी बंद कर गए.

करीब साढ़े तीन घंटे बाद जब वे थक गईं तो उन में से एक ने दरवाजा खोला. अंदर भैया और भाभी को न पा कर वे आश्चर्य में पड़ गईं.

उसी समय दोनों फिल्म देख कर आ गए. औरतों का मुंह देखने लायक हो गया.

—राजेश वोहरा

*

करीब दो वर्ष पूर्व मैं बीकानेर में नौकरी कर रहा था. उन दिनों मेरी शादी नई-नई हुई थी और मेरी पत्नी मायके में थी. एक दिन मैं ने जल्दीजल्दी में अपनी पत्नी को पत्र लिखा कि मैं अगले रविपार को छुट्टी ले कर घर पहुंच रहा हूं.

रविवार को ससुराल पहुंच गया जो, बीकानेर से करीब 200 किलोमीटर की दूरी पर है. वहां पहुंचने पर मुझे मालूम हुआ कि मेरी पत्नी अपने भाई के साथ मेरे गांव चली गई है. मैं दूसरे दिन जब अपने गांव पहुंचा तो, मेरी माताजी ने बताया कि मेरे यहां न मिलने से बहू काफी चिंतित थी, इसलिए वह अपने भाई के साथ बीकानेर रवाना हो गई है.

तीसरे दिन जब मैं बीकानेर पहुंचा तो मकान मालिक ने बताया कि मेरी पत्नी और उस का भाई आए जरूर थे, लेकिन मेरे न मिलने से उसी समय वापस चले गए. मैं ने मकान मालिक से कहा कि उन्होंने उन को रोका क्यों नहीं.

इस पर मकान मालिक का जवाब था, "तुम यह बता कर तो गए नहीं थे कि तुम कितने दिन की छुट्टी पर जा रहे हो." मुझे विवश हो कर बीकानेर में ही ठहरना पड़ा क्योंकि मेरी छुट्टी समाप्त हो गई थी.

—मक्खनसिंह ढिल्लों

*

एक बार मेरी एक सहेली बस में कहीं जा रही थी. वह अकेली एक सीट पर बैठी थी. तभी एक वृद्ध आदमी ने उस से कहा, "देखो, बेटी, मैं तुम्हारे पिता के समान हूं, मुझे अपने बाजू में बैठने दो." मेरी सहेली ने उन्हें बैठने की जगह दे दी. एक कालिज का लड़का यह सब देख रहा था. उसे मजाक सूझी. वह मेरी सहेली के पास आ कर बोला, "देखिए, मैं आप के भाई के समान हूं, मुझे बैठने के लिए जगह दे दीजिए." यह सुन कर मेरी सहेली अपनी सीट पर से उठ गई और बोली, "आप दोनों बापबेटे यहीं बैठिए, मैं खड़ी हो जाती हूं."—आरती श्रीवास्तव

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

पांच वर्षों में जन्मी पांच बेटियों ने जहां मेरा स्वास्थ्य चौपट कर दिया था, वहीं अम्मां भी मुझे देख कर मुंह फेर लेती थीं. ऐसी हालत में भी मैं सब कुछ सहती रही. मगर जब पानी सिर से ऊपर चढ़ गया तो मेरे पति ने ही मुझे उबार लिया

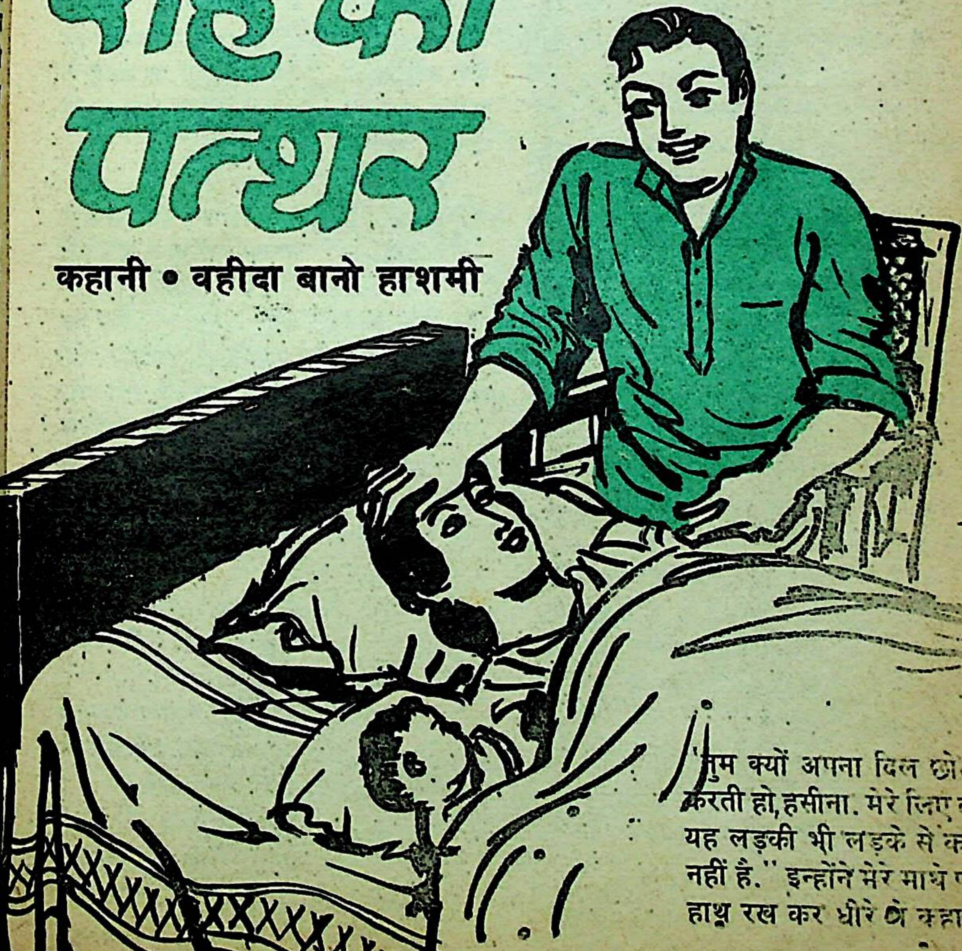
सरिता, बीस साल पहले, अप्रैल, 1963.

राह का पत्थर

कहानी • वहीदा बानो हाशमी

और जब इतनी मिन्नतोंमुरादों के बाद मेरे यहां इस बार भी लड़की ही पैदा हुई तो सारे घर में सन्नाटा छा गया. जिस ने जहां सुना वहीं सिर झुका कर खामोश हो गया. उस पीड़ा में भी मैं ने अम्मां के माथे की सलवटों को लेख की तरह पढ़ लिया. जैसे दाई ने कहा, "पोती मुबारक हो, अम्मां," उन के माथे पर एक साथ कई शिकनें उभर आईं. एक नजर उस गोश्त के लोथड़े पर डाली और सिर झुका कर चुपचाप कमरे से बाहर निकल गईं.

दालान में छोटी ननद बेकरारी से टहल रही थी, बोली, "अम्मां, भाभी के इस



"तुम क्यों अपना दिल छोटा करती हो, हसीना. मेरे लिए तो यह लड़की भी लड़के से कम नहीं है." इन्होंने मेरे माथे पर हाथ रख कर धीरे से कहा

बार लड़का ही हुआ है न! देखो, मैं कहती थी कि इस बार भैया जरूर होगा!"

"इस जनमजली के क्या लड़का होगा! लड़के भी अल्लाह की देन होते हैं और किस्मत वालों को मिलते हैं."

"हाय, अल्ला, तो क्या पांचवीं बार भी लड़की!" वह घबरा कर बोली मगर अम्मां बिना जवाब दिए आगे बढ़ चुकी थीं. बेचारी लड़की का मुंह उतर गया.

तभी बाहर की बैठक का दरवाजा खुला और उन्होंने आशा तथा निराशा के लहजे में पूछा, "अम्मां, किसी चीज की जरूरत तो नहीं?"

और अम्मां ने बजाए जवाब देने के एक नजर उन की तरफ देखा और यों सिर झुका लिया जैसे कुछ मिनट पहले भगवान ने लड़की के रूप में जो मुसीबत उन पर उतारी थी उस के भार से उन की गरदन हमेशा के लिए मुक्त हो गई हो.

"क्या बात है, अम्मां? हसीना तो अच्छी है!" वह अम्मां के चेहरे पर छाई मुर्दनी को देख कर घबरा गए थे.

"उस कलमुंही को भी कुछ होना है. वह तो घर में आई ही इसलिए है कि लड़कियों की फौज तैयार करे."

इस के बाद और कुछ कहनेसुनने की जरूरत न थी. वह खुद ही समझ गए. चुपचाप दिल पर धीरज का पत्थर रख कर बाहर वाली बैठक में चले गए.

ढोलक पर सोहर गाने वाली औरतें भी घर का यह रंग देख कर धीरेधीरे गायब होने लगीं.

अब मेरे धैर्य का बंधन टूट गया. मैं फूटफूट कर रो पड़ी: सुनती हूं, खुदा के यहां किसी चीज की कमी नहीं है. अगर इस बार मेरे यहां लड़का हो जाता तो कौन सी उस के खजाने में कमी हो जाती.

मैं ने शायद ही कोई पीरऔलिया छोड़ा हो जिस की मन्नत न मानी हो. कितने गंडेतावीज अब भी मेरे हाथ, पैर, गरदन, बाल, बिस्तर, तकिए आदि में रखे थे. मगर हुआ वही जिस का डर था.

अभी कल ही की तो बात है, मैं दुलहन बना कर इस घर में लाई गई थी. मेरे कितने नाज उठाए जाते थे. सास, ननद, देवर, ससुर और वह खुद मेरे ऊपर जान देते थे. मगर इन पांच सालों और साथ ही साथ पांच बेटियों ने जहां एक तरफ मेरा स्वास्थ्य और निखार छीन लिया, वहीं मेरे और घर वालों के बीच पांच दीवारें भी खड़ी कर दीं. अम्मां मुझे देखते ही मुंह फेर लेतीं. अब्बा माना कि मुंह नहीं फेरते, मगर उदास जरूर हो जाते हैं, और वह तो अपने दिल की बात मुझ पर कभी प्रकट नहीं होने देते.

मगर मैं भी कोई बच्ची तो हूं नहीं, तेईसचौबीस साल की उम्र होने को आई, खूब समझती हूं. उन्हें भी हर बार लड़की देख कर दुख जरूर होता है, मगर मेरे कारण प्रकट नहीं करते. मेरा दिल रखने के लिए मुझे तसल्लीदिलासा देते रहते हैं. काश, यह मेरे बस में होता! फिर अम्मां के तानों से कलेजा क्यों छलनी होता, यह जिल्लत क्यों उठानी पड़ती?

बाहर के कमरे से उन की आवाज सुनाई दी, "अम्मां, हसीना के कमरे में रोशनी तो कर दो, अंधेरे में पड़ी होगी."

उन के स्वर में निराशा तथा दुख का अंश साफ झलक रहा था, मैं कट कर रह गई. बाहर से उन की आवाज आ रही थी, "मगर, अम्मां, आखिर इस में हसीना बेचारी का क्या कसूर? लड़केलड़की बनाना कुछ उस के बस में तो है नहीं."

अम्मां फिर बड़बड़ाईं पर उन की बात समझ में न आ सकी.

"कैसी बातें करती हो, अम्मां, दूसरी शादी करना कोई मजाक तो है नहीं. फिर आखिर हसीना का क्या होगा?"

"मगर मैं यह कब कह रही हूं कि उसे बिलकुल छोड़ देना. खानाकपड़ा उसे भी देते रहना," अम्मां जोश में बोल उठीं

"तुम भी कैसी नासमझी की बातें करती हो. सौ रुपए की थोड़ी सी आय में किस मुशकिल से तो महीना पार लगता है

और अगर उस में दोचार खाने वाले और बढ़ गए तो कहां से लाओगी?"

"तुम पर तो उस चुड़ैल ने जादू कर दिया है. बालबांधे गुलाम हो. खर्च तो मुझे चलाना है. तुम्हें इस से क्या?" और अम्मां ने धड़ से कोई बरतन नल की मुंडेर पर पटक दिया.

मुझ पर जैसे बर्फ की सिल गिर पड़ी. रोतेरोते बेसुध हो गई. न जाने कब वह मेरे कमरे में दाखिल हुए. तकिए को आंसुओं से तर देख कर शायद उन का दिल भर आया. दूध का गिलास मेज पर रख कर उन्होंने मेरे माथे पर हाथ रखा और धीरे से पुकारा, "हसीना!"

मैं ने तुरंत आंखें खोल दीं. आंसुओं का बांध सहानुभूति का स्पर्श पा कर टूट गया.

"तुम क्यों अपना दिल छोटा करती हो, हसीना, मेरे लिए तो यह लड़की भी लड़के से कम नहीं है. दुनिया बकती है तो बकने दो, मैं तो कुछ नहीं कहता."

"आप अम्मां का कहना मान कर दूसरी शादी कर लीजिए. मैं खुशी से कह रही हूं," मैं ने सिसकते हुए कहा.

"तुम किसी के कहने की परवा मत करो. मैं जो हूं तुम्हारे साथ."

"आप मेरी वजह से अम्मां का कहना नहीं मानते. उन का दिल दुखता है और यह मुझे पसंद नहीं. उन का कहना मानना आप का फर्ज है."

"ठीक है, मगर तुम्हारे साथ किए गए

शम्मी मुझ से आ कर लिपट गई और अम्मां पोते को गोद में उठा कर बलाएं लेने लगीं.



वादे को आखिर तक निभाना भी तो मेरा ही फर्ज है."

सहानुभूति और प्रेम की इस मूर्ति के सहारे मैं ने बुरेभले सवा महीने काटे और स्वस्थ हो कर फिर से घर की गाड़ी खींचने लगी. लेकिन अब अम्मां ने नाराज हो कर मुझ से बोलचाल भी बंद कर दी थी. छोटी ननद भी कभी जरूरत पर ही बात करती थी. अड़ोसपड़ोस की औरतें भी अगर आतीं तो अम्मां उन से मेरा ही दुखड़ा ले कर बैठ जातीं. उन को पूरा विश्वास था कि मैं ने उन के लड़के को दुआतावीज करा के अपने काबू में कर लिया है और इसी लिए वह दूसरी शादी पर राजी नहीं होता. किसी के घर लड़का होने की खबर सुनतीं तो ठंडी सांस भरतीं और मेरी ओर क्रुद्ध दृष्टि से यों घूर कर देखतीं कि मैं सिमट कर रह जाती थी.

रोतेझींकते जिंदगी के दिन गुजर रहे थे. कुछ कारणों से अब्बा गांव वाले मकान में रहने लगे थे, मगर अम्मां और शम्मी हमारे ही साथ रहती थीं.

एक दिन विचित्र घटना हुई. शाम के चार बजे का समय होगा. लड़कियां स्कूल से आने ही वाली थीं. मैं रसोईघर के सामने बैठी बरतन साफ कर रही थी. एकाएक सलमा और सितारा एकदूसरे को धक्का देतीं, दौड़तीभागती मेरे पास पहुंचीं और एक साथ ही बोलीं, "अम्मां, अम्मां, फहमी खाला आई हैं."

मैं अजीब कशमकश में पड़ गई. महीने की 25 तारीख, कनस्तर में आटा नहीं और हाथ में पैसा नहीं. हर चीज खत्म हो रही है, मेरे खुदा! फहमी की आवभगत ऐसे में क्या हो सकेगी और कैसे हो सकेगी! ऊपर से अम्मां का व्यवहार! मैं भले ही सब कुछ बरदाश्त कर लूं, मगर फहमी भला क्यों बरदाश्त करने लगी!

यही सब सोचती मैं फहमी के स्वागत को दरवाजे पर पहुंच गई. चारों लड़कियां उसे ड्योढ़ी में घेरे थीं.

"आदाब, बाजी."

"जीती रहो," भरे गले से मैं ने जवाब दिया और बढ़ कर गले लगा लिया.

एकाएक मुझे खयाल आया, मेरे कपड़े जगहजगह से जोड़ लगे और बड़े ही गंदे हैं. लहसुन, प्याज की बू भी जरूर आ रही होगी. शर्म की एक लहर सी बदन में दौड़ गई. मैं ने घबरा कर जल्दी से फहमी को अलग कर दिया.

"या अल्लाह! बाजी, आप तो सपना हो गईं. आज कई सालों बाद देखा आप को." उस ने जरा गौर से सिर से पैर तक मुझे देखा और मैं अपनी झेंप मिटाने के लिए बच्चों से बातें करने लगी, "अरी, शादां, देख, तू ने खाला के कपड़े गंदे कर दिए, चल हट, परे हो." मैं ने टांगों से लिपटी हुई शादां को खींचना चाहा तो वह बिसूरने लगी.

"चलो, हटो भी, बाजी, तुम तो ऐसी गैरियत बरत रही हो जैसे यह बच्चियां मेरी कुछ लगतीं ही नहीं."

मैं बच्चों पर झुंझला पड़ी. कमबख्त कुछ समझतीं ही नहीं. फूहड़ बनी घूम रही हैं और चाहती हैं कि हर व्यक्ति उन्हें प्यार ही करे.

"सलमा, कौन आया है, री? क्यों घर सिर पर उठा रखा है?" दूसरे कमरे से अम्मां की आवाज सुनाई दी और खिलखिलाती लड़कियों को जैसे काठ मार गया.

तलाश

उन के खुशनुमा वजूद में
गुम हो गए हैं हम,
उन में ही बस अब
हम को तलाश कर लो.

—सुरभि पांडेय



"फहमी आई हैं, अम्मां, आजकल दशहरे की छुट्टियां हैं न!" मैं ने कहा.

छोटी ननद ने सिर निकाल कर बाहर झांका और फिर शायद अम्मां के हुक्म से कमरे के दरवाजे खटाक से बंद कर दिए.

फहमी ने अर्थ भरी दृष्टि से मेरी तरफ देखा. "बहुत डरती हैं लड़कियां अपनी दादी से." उस ने नकाब उतार कर अलगनी पर डाल दिया.

"हां, बड़ों का लिहाज बच्चों को रखना ही चाहिए." मैं ने हंस कर बात बनानी चाही और अपने कमरे में बैठ कर फहमी से घर का हाल पूछने लगी.

"इस वक्त क्या पकेगा, अम्मां?" नियमित रूप से मैं ने अम्मां से पूछा.

"पुलाव, कोरमा, परांठा, कबाब, रोज मेहमान ही आते रहते हैं. ऐसा ही मेहमानी करने का शौक था तो अम्मांअब्बा ने किसी लाट साहब के घर ब्याहा होता बेटी को."

अम्मां का तेज और कड़ा लहजा सुन कर मैं डरी, कहीं फहमी न सुन ले. क्या सोचेगी वह अपने दिल में! तेजी से कदम बढ़ा कर मैं अपने कमरे में आ गई. लड़कियां सजीबनी अपने बाप के इंतजार में अंदरबाहर एक किए दे रही थीं. साइकिल की घंटी सुनते ही चारों आ कर आंगन में इकट्ठी हो गईं.

"अब्बा... यह!" शादां ने अपनी फ्राक ऊपर उठा कर दिखानी चाही.

"आहा! यह बेटी ने नईनई फ्राक कहां से पहनी?" उन्होंने मुसकरा कर उसे गोद में उठा लिया.

"फहमी खाला आई हैं और हम सब के लिए कपड़े लाई हैं." सलमा ने पूरी रिपोर्ट पेश की.

"अच्छा!" और वह आंगन में ही चारपाई पर बैठ गए. बेटे को दफ्तर से आया देख कर अम्मां भी आंगन में निकल आईं. बोली, "निगोड़ियां चार चीथड़े पा कर ऐसी आपे से बाहर हो रही हैं जैसे कपड़े कभी देखे ही नहीं हैं. जब से फहमी आई है, लड़कियों ने घर सिर पर उठा रखा है. हुंह... महीने की



कत्ल

वहीं पे शजरे मुहब्बत की
छांव कत्ल हुई,
जहां पे धूप का
लश्कर दिखाई देता है.
—देवेंद्र मांझी

आखिरी तारीखें और यह मेहमानी."

"चुप रहो, अम्मां, कौन रोजरोज आता है हमारे यहां. और फिर मेहमान तो अपनी रोजी साथ ले कर आता है."

बात फिर आईगई हो गई. मगर मेरी पूरी कोशिश के बाद भी फहमी से मेरे घर का रंगढंग और अम्मां का बरताव छिपा न रह सका.

तीन दिन और निकल गए.

मैं दिन भर के धंधे से छुट्टी पा कर छोटी बच्ची को ले कर बिस्तर पर लेटी तो फहमी भी पास आ बैठी और धीरे से बोली, "बाजी, मुझे अफसोस इस का नहीं है कि दूल्हा भाई की थोड़ी आमदनी की वजह से तुम मुसीबतें उठा रही हो, मगर यह खयाल मेरे लिए बड़ी तकलीफ का है कि दूल्हा भाई तुम्हारे होते हुए दूसरी शादी कर लें और तुम देखा करो. क्या अब्बा, भैया और हम सब लोग तुम्हारे लिए मर गए हैं जो तुम ने किसी को कानोंकान इस बात की खबर तक न दी. दूल्हा भाई ने तुम्हें बेसहारा समझ रखा है कि जो कुछ उन का दिल चाहेगा, करेंगे! मैं कल ही जा कर घर पर खबर देती हूं. अगर दूल्हा भाई को दूसरी शादी करनी ही है तो तुम्हें यहां रह कर लौंडीगीरी करने की जरूरत नहीं."

"मगर मेरी बात तो सुनो, फहमी, तुम दूल्हा भाई पर बेकार नाराज हो रही हो, वह तैयार ही नहीं, वरना अब तक कब की दूसरी शादी हो चुकी होती. अम्मां अलबत्ता जोर देती हैं और क्यों जोर देती हैं, यह तो तुम जानती ही हो. फिर तुम बेकार में भैया और अब्बा को भी जा कर परेशान करोगी. मुझे मेरी किस्मत पर छोड़ दो. तुम्हें मेरी कसम है, घर पर मेरी हालत का जिक्र किसी से मत करना."

मगर फहमी ने मेरी एक न सुनी और दूसरे ही दिन मुझे दुविधा और कशमकश की हालत में छोड़ कर चली गई.

इधर जिस आदमी के जरिए मुन्नेखां की लड़की की बात तय हो रही थी, उस का आनाजाना कुछ ज्यादा हो गया. बहुधा मांबेटे में इस मामले में झड़पें हुईं, मगर कुछ फैसला न हो पाता था. अम्मां इस विचार से कि जब मैं कहीं रिश्ता पक्का कर के जबान दे दूंगी तो फिर मजबूरन उन को तैयार ही होना पड़ेगा, ऊपरऊपर सारा प्रबंध कर रही थीं. यहां तक कि एक दिन शुभ घड़ी देख कर बेटी वालों के यहां जा कर मंगनी की रस्म भी अदा कर आईं और शादी की तारीख भी पक्की कर आईं. मैं सब कुछ देख कर भी अनजान बनी रही. न अम्मां से कुछ कहने की हिम्मत थी, न उन के बेटे से ही इस विषय पर बात करने का मौका मिलता था, क्योंकि अम्मां का पहरा समय के साथसाथ कड़ा होता जा रहा था.

कभीकभी यह खयाल अलबत्ता सताता था कि मालूम नहीं फहमी ने घर जा कर अब्बाअम्मां से क्या कहा हो. अब तक कोई आया नहीं. कहीं भैया और अब्बा नाराज तो नहीं हो गए. अगर शादी होने के बाद वे लोग आए भी तो क्या हो सकेगा. और सच पूछो तो हो अब भी कुछ नहीं सकता. सब कुछ शादां के अब्बा पर निर्भर है. अगर वह न चाहें तो यह शादी सात जनम में भी नहीं हो सकती. मगर अम्मां जबान दे चुकी हैं. तारीख तक तय हो चुकी है. पता नहीं उन्हें इस बात की खबर है या नहीं.



न्यूट्रामूल शक्ति.
हर चैम्पियन की पहली पसंद.

न्यूट्रामूल. पौष्टिक अमूल दूध, पसंदीदा माल्ट, स्वास्थ्यवर्द्धक विटामिन, स्फूर्तिदायक प्रोटीन, आवश्यक मिनरल्स और मज़ेदार चॉकलेट स्वाद...इतना सबकुछ बोर्नविटा, बूस्ट और माल्टोवा जैसे पेय पदार्थों के मुकाबले कहीं कम कीमत में। और क्वालिटी...तो केवल न्यूट्रामूल को ही हासिल है आई एस आई का क्वालिटी निशान।

न्यूट्रामूल 'दादा' बनिए.

Nutramul
AMUL'S NOURISHING DRINK

क्या आप ऊंचे,
ताकतवर और चुस्त बनना चाहते हैं?
विशेष 'स्ट्रेन्थ बुक' ऑफ़र !

To: Nutramul, P.O. Box 10148, Bombay 400 001. bb

प्रिय न्यूट्रामूल,

कृपया दारासिंह की पुस्तक : 'हाइट इन्क्रीज़, स्ट्रेन्थ एण्ड फ़िटनेस' मुझे भेजिए. इस पत्र के साथ १.५० रुपये की कीमत वाली डाक टिकिट और न्यूट्रामूल के ५०० ग्रा. डिब्बे का एक कैशमेमो भी मैंने भेजा है. मुझे मालूम है कि यह भेंट केवल माल रहने तक ही उपलब्ध है.

नाम ________________ (बड़े अक्षरों में) ______

पता ________________





विक्रेता :
गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फ़ेडरेशन लिमिटेड
आणंद - ३८८ ००१

daCunha/GCM/76/HN/82

यह भी बड़ी अजीब बात है कि लड़की वालों ने बिना दूल्हा देखे ही बात पक्की कर ली. हालांकि दोनों खानदान एक ही शहर में रहते हैं और आसानी से एकदूसरे को देख सकते थे. या शायद वह गए हों और मुझे बताना ठीक न समझा हो. आखिर अम्मां के कहनेसुनने का कुछ तो असर होगा ही. मान ली होगी उन की बात. लगातार रगड़ से तो पत्थर भी घिस जाता है, फिर वह तो आदमी ठहरे. हे मालिक, क्या होगा मेरा नतीजा!.

अब तो वह भी कुछ चुपचुप से नजर आते हैं. मुझ से नाराज होंगे या फिर कोई परेशानी होगी. उन का चिंता और गम से भरा हुआ चेहरा देख कर तो जैसे मेरा दम घुटने लगता है. मेरा दिल चाहता है, किसी तेज औजार से अपना पेट फाड़ कर इस में परवान पाने वाले बच्चे को निकाल कर बाहर फेंक दूं और चीखचीख कर खुदा से कह दूं, लेले अपनी यह अमानत, मुझे इस की जरूरत नहीं. अगर मेरे नाम पर उस के यहां लड़कों का स्टाक खत्म हो गया है तो मुझे लड़की नहीं चाहिए. अब एक भी नहीं. और फिर निराशा की हालत में हिसाब जोड़ने लगती कि इस छठीं बला के आने में अभी कितना समय है.

दिन गुजरते देर नहीं लगती. देखते ही देखते शादी की तारीख सिर पर आ पहुंची. अम्मां ने एक दिन मौका गनीमत जान कर छोटी ननद को मेरे पास भेजा. "भाभी! अम्मां ने कहा है कि आप कुछ दिनों के लिए अपने मायके चली जाइए."

"मगर क्यों, शम्मी, घर से कोई मुझे लेने तो आया नहीं है."

"इस से क्या होता है. आप खुद चली जाइए," वह व्यंग्य भरी मुसकराहट के साथ बोली, "अम्मां ने ऐसा ही कहा है. आगे आप जानें."

अब मेरे सब्र का पैमाना भर चुका था. उसी शाम को सब लोग आंगन में बैठे थे. मैं ने अम्मां के सामने ही झिझकतेझिझकते पूछा, "कल मैं अपने मायके जा रही हूं. क्या आप मुझे पहुंचाने चलेंगे?"

"मैं! क्यों?" वह हड़बड़ा कर उठ बैठे, "खैरियत तो है न? क्यों कोई लेने आया है?"

अम्मां ने पंखा झलने की रफ्तार और तेज कर दी.

"सब खैरियत है. कोई लेने भी नहीं आया है, मगर अम्मां का हुक्म है कि..."

"मगर किस लिए?" अब यह अम्मां की ओर मुखातिब हो गए, "अम्मां, हसीना को आप मायके क्यों भेज रही हैं?"

अम्मां कुछ सोच में पड़ गईं तो छोटी ननद बोल उठी, "भैया, अगले जुमा को आप का निकाह है न. बस, इसी लिए."

"मेरा निकाह!" वह ताज्जुब से बोले, "मगर मुझे तो इस की कोई खबर नहीं है. मजाक मत करो, शम्मी. अम्मां, आप बोलिए न! आखिर बात क्या है?" उन का लहजा धीरेधीरे तेज होता जा रहा था.

"मजाक नहीं, असलियत है. मुन्नेखां की लड़की से मैं तुम्हारा रिश्ता पक्का कर चुकी हूं. मंगनी की रस्म भी अदा हो चुकी है," अम्मां ने सब कुछ एक ही बार में कह देना चाहा.

"खूब, बहुत खूब! क्या मैं पूछ सकता हूं कि बगैर मेरी सलाह और मरजी के आप ने यह रिश्ता क्यों तय कर लिया."

"इस में तुम से पूछने की क्या बात थी? लड़की हजारों में एक है. सलीका, सुघड़ापा, तमीज, अदब, तौरतरीके— हर लिहाज से तुम्हारे काबिल है. क्या मां की पसंद बेटे की पसंद नहीं हो सकती?"

"पसंद नापसंद का सवाल तो उस वक्त उठता, अम्मां, जब मैं शादी के लिए तैयार होता. यहां तो मैं सिरे से दूसरी शादी के खिलाफ हूं. मुझे दूसरी लड़की अगर हूर हो तो भी नहीं चाहिए. मेरे लिए हसीना ही काफी है."

"यह बात मैं तुम से ज्यादा समझ सकती हूं कि तुम्हें क्या चाहिए और क्या नहीं चाहिए. इस के अलावा अब तो जो कुछ

होना था वह हो चुका. वह बिरादरी वालों को बुलावा तक दे चुके हैं."

"मगर अम्मां, यह शादी नहीं हो सकती. कभी नहीं हो सकती. चाहे इस में आप की कितनी ही बदनामी और जगहंसाई क्यों न हो! अभी वक्त है, आप खान साहब के यहां इनकार कहला दीजिए, नहीं तो मुफ्त में बेइज्जती होगी."

"अब इनकार की गुंजाइश ही नहीं रही, बेटा, मेरी लाज तुम्हारे ही हाथ में है."

"अम्मां, मैं मजबूर हूं. मैं ने आज नहीं, हमेशा ही आप से इस मामले में इनकार किया है. फिर आप ने ऐसी गलती क्यों की? आखिर आप हसीना पर इतना जुल्म क्यों ढा रही हैं. क्या कसूर है उस का?"

"हुंह, यह अपने दिल से पूछो. क्या तुम्हारे दिल में यह आरजू न होगी कि अपने बाद कोई वारिस छोड़ जाओ. मगर इस की बात ही दूसरी है कि तुम पर इस कुटनी ने जादूटोना कर रखा है और..."

"मैं पूछता हूं कौन सी लाखोंकरोड़ों की जायदाद है मेरे पास, जिस के लिए आप को वारिस की तलाश है. और क्या आप यह गारंटी कर सकती हैं कि जिस लड़की को आप ब्याहने जा रही हैं उस के कभी लड़की न होगी, लड़का ही होगा. अगर लड़की हुई तो मैं उसे शूट कर दूंगा."

"तोबा! तोबा! लड़के, तेरे मुंह में खाक, जो मुंह में आता है औलफौल बकता चला जाता है. तू ही दुनिया में निराला मर्द है क्या, जो दूसरे की बेटी को ला कर मार डालेगा!" अम्मां अब संभल कर बैठ गई थीं. मोरचा तगड़ा था, "यह तो ठीक है कि कोई गारंटी नहीं की जा सकती, मगर, बेटा, मैं ने ये बाल धूप में सफेद नहीं किए हैं. आज तक यही देखती आई हूं कि जब पहली बीवी से लड़का नहीं होता तो दूसरी से जरूर होता है... और मेरा दिल कहता है, ऐसा जरूर होगा. खुदा बख्शे नईम मामू को, दूसरी शादी से उन को भी वारिस मिला था, तुझे क्या मालूम कि यह तमन्ना मैं कितने सालों से अपने सीने में लिए हूं, मगर यहां तो हमेशा मुई लड़कियां ही देखने में आती हैं."

"मगर सुनो तो, अम्मां, तुम्हें आखिर लड़कियों से इतनी चिढ़ क्यों है? जमाना बहुत बदल चुका है. अब लड़कियां मांबाप के सिरों का बोझ नहीं हैं. वे पढ़ती हैं, लिखती हैं, ट्रेनिंग लेती हैं, नौकरी करती हैं और मर्दों से कंधे से कंधा मिला कर काम करती हैं. अपनी तकदीर वे खुद बनाती हैं. यही नहीं, अपने मांबाप के दुखदर्द में वे बराबर की साझेदार बनती हैं.

"तुम्हें पता नहीं, मेरे दफ्तर में कितनी ही लड़कियां मेरे साथ काम करती हैं और अपने बूढ़े मांबाप का खर्च चलाती हैं जब कि भाई आवारागर्दी और ऐयाशी में लगे रहते हैं. उन का गुजारा भी बहन की कमाई पर होता है. क्या ऐसे निकम्मे और आवारा लड़कों से लड़कियां अच्छी नहीं? मैं तो अपनी लड़कियों को लड़कों से किसी हालत में कम नहीं समझता.

"अम्मां, तुम यकीन मानो, मुझे रत्ती भर भी इस बात का दुख नहीं कि मेरे पांच लड़कियां हैं. मेरा आखिरी फैसला है कि मैं दूसरी शादी नहीं कर सकता, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाए. और, हसीना," वह मेरी तरफ घूम कर बोले, "तुम मायके नहीं जाओगी. यह लो, शादां को ले जा कर ऊपर सुलाओ और खुद भी आराम करो. दिन भर काम करतेकरते थक गई होगी. इस घर में तुम्हारा भी बराबर का हक है, तुम्हें इतना दब कर रहने की जरूरत नहीं. और कल से शम्मी घर के कामकाज में बराबर से तुम्हारा हाथ बंटाएगी. इसे भी पराए घर जाना है. कुछ कामधंधा सीखना चाहिए. आखिर तुम भी आदमी हो, कभी आराम करने को दिल चाहता होगा, दिनोंदिन

दंभ

जिस वस्तु को मनुष्य दे नहीं सकता, उसे ले लेने की स्पर्धा से बढ़ कर दूसरा दंभ नहीं. —जयशंकर प्रसाद

जब भी
अम्हौरियां
निकलें...

केवल जॉन्सन्स प्रिकली हीट पाउडर इस्तेमाल कीजि
जलन और चुभन से <u>सचमुच जल्द</u> आराम पाइए!

जब भी अम्हौरियां निकलें, तुरंत जॉन्सन्स प्रिकली हीट पाउडर से दूर कीजिए.

केवल जॉन्सन्स प्रिकली हीट पाउडर ही एक ऐसे प्रमाणित औषधियुक्त फ़ार्मूले वाला है, जो ३ तरह से असर करता है :

- ☐ बैक्टीरिया का जमाव रोकता है
- ☐ पसीना सोख लेता है
- ☐ जलन व चुभन से आराम दिलाता है—सचमुच जल्द !





चंदन की
सुगंध में भी
मिलता है

Johnson & Johnson

तुम्हारी तंदुरुस्ती गिरती जा रही है."

एकाएक अम्मां की सिसकियों की आवाज सुन कर हम दोनों चौंक पड़ें. मैं जल्दी से शादां को ले कर ऊपर चली गई जहां से कोशिश करने पर भी नीचे की बातें न सुन सकी. मगर इतनी आहट जरूर मिली कि गई रात तक मांबेटे में झपड़ होती रही. हमदर्दी और मुहब्बत के चंद छींटों ने जैसे देखतेदेखते मेरी सारी थकान खींच ली थी और मैं चांदतारों के साथ आसमान में उड़ रही थी. दिल चाहता था उन के कदमों को आंसुओं से धो डालूं. उन्हें मेरा कितना खयाल था.

सवेरे अंधेरे में ही उन्होंने मेरा कंधा पकड़ कर हिलाया, "हसीना, उठो तो जरा, नीचे जा कर देखो तो अम्मां क्या कर रही हैं?"

और मैं नल से पानी लेने के बहाने आंगन में आई तो देखा शम्मी और अम्मां दोनों बड़ी तेजी से सामान बांधने में लगी हुई हैं. मुझे देख कर अम्मां के माथे पर एक साथ कई सिकुड़नें उभर आईं और उन्होंने मुंह फेर लिया. मगर शम्मी फूटफूट कर रो पड़ी.

"भाभी, मैं तुम्हारे साथ घर का सारा कामकाज करने को तैयार हूं, मगर अम्मां को गांव जाने से रोक लो."

मैं ने उसे गले से लगा लिया और ताज्जुब से पूछा, "मगर तुम्हें गांव जाने को कहता ही कौन है? यह तुम लोग सामान क्यों बांध रही हो?"

मुझे सचमुच ताज्जुब था, मगर अम्मां ने उसे बनावट समझा और शम्मी को जबरदस्ती खींच कर मुझ से अलग कर दिया.

"गजब खुदा का. कहीं मुंह दिखाने के लायक न रखा और फिर कैसी अनजान बन कर पूछती है कि गांव जाने को कहता कौन है? तुझ पर भी इस डायन ने जादू कर दिया है तो मैं अकेली ही जाऊंगी. तू यहीं रह, मगर मैं तो यहां एक पल नहीं ठहर सकती. आग लगे उस घड़ी को जब मैं इसे दुलहन बना

...र अपनी दहलीज पर लाई थी, भरापूरा घर उजाड़ हो कर रह गया."

मैं परेशान हो कर उन के पास पहुंची और अम्मां को रोकने के लिए कहा तो वह बड़े इत्मीनान से बोले, "मैं ने उन से जाने के लिए कहा हो तो रोकने भी जाऊं. अपनी मरजी से जा रही हैं तो मैं बीच में दखल देने वाला कौन? तुम बेकार परेशान हो रही हो, मैं इन के जिद्दी मिजाज से खूब वाकिफ हूं. इस वक्त खामोश ही रहना अच्छा है. कुछ दिन बाद अपनेआप..."

"जरा देखिए तो, शायद कोई बाहर आवाज दे रहा है." मैं ने बीच में ही टोक दिया.

और जब वह ऊपर आए तो अम्मी और अब्बा को उन के साथ देख कर मैं झट से खड़ी हो गई. हैरानी और खुशी से पागल हो कर मैं अम्मी के गले से लग कर सिसक उठी. वह प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरती रहीं और अब्बा तसल्ली देते रहे.

"यह क्या बेवकूफी है, हसीना, यह खुशी का मौका है, रंज का नहीं. चलो, कुछ चाय वगैरह का इंतजाम करो." मैं जैसे अचानक जग पड़ी. अम्मी और अब्बा दोनों की नजरों में कुछ खोज सी थी. वह सब कुछ इसी वक्त जान लेने को बेताब थे.

"तुम्हारी सास और ननद कहां हैं, हसीना?" आखिर अम्मी से न रहा गया.

"वे लोग तो नीचे ही हैं, जिधर से आप आई हैं. मगर आप लोगों को देख कर वह लोग परदे में हो गई थीं," उन्होंने मुसकरा कर कहा और अम्मी की हैरानी दूर करने के लिए रात की सारी कहानी कह सुनाई.

"तुम्हारी बात सुन कर हम लोगों को खुशी भी हुई और दुख भी. तुम्हें किसी न किसी तरह अपनी मां को मनाना ही चाहिए. हसीना की मां," अब्बा ने अम्मां से कहा, "तुम जा कर समधिन को रोक लो न!"

"ना, ना, अम्मी, ऐसा गजब मत कीजिएगा, नहीं तो फिर आप से बुरा कोई न होगा. मैं उन का मिजाज अच्छी तरह समझता हूं. इस वक्त उन को अपनी सी कर लेने दीजिए, फिर मैं खुद ही सब कुछ संभाल लूंगा."

नीचे से अम्मां के बड़बड़ाने की आवाज आ रही थी, "ऐ हां, जब अम्मांबाबा को बुला कर रखना ही था तो इस नाटक की क्या जरूरत थी!"

"यह लीजिए!" और यह कह कर वह खटखट नीचे उतर गए. अम्मी की जिद पर मैं भी नीचे आई. डरतेडरते सलाम किया, मगर उन्होंने न मुझे जवाब दिया, न बेटे को. और शम्मी के साथ तांगे पर बैठ गईं. न जाने क्यों मेरी आंखों में आंसू आ गए.

अम्मां और अब्बा निश्चिंत हो कर तीसरे ही दिन वापस चले गए और मैं अकेली गृहस्थी की गाड़ी घसीटने लगी.

तीन महीने बाद मुझे फिर नए मेहमान के स्वागत के लिए तैयारी करनी पड़ी और हम दोनों की खुशी की हद न रही जब तार के जवाब में शम्मी दीवानों की तरह आ कर मुझ से लिपट गई और अम्मां पोते को गोद में उठा कर चटाचट बलाएं लेने लगीं. ●



उत्तर रक्षागृह की अधीक्षिका श्री... उषा पूजा.

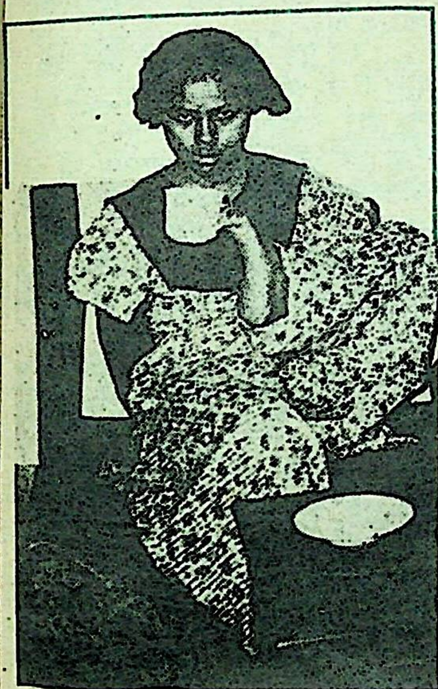
लेख • कृष्णकुमार श्रीवास्तव

उत्तर प्रदेश का समाज कल्याण विभाग और निराश्रित महिलाएं

निराश्रित और बदनसीब महिलाओं के उद्धार के नाम पर करोड़ों रुपए फूंकने वाले इस संस्थान की उपलब्धियां क्या हैं?

उत्तर प्रदेश में भी अन्य प्रदेशों की तरह समाज कल्याण निदेशालय नामक एक बहुत बड़ा सरकारी विभाग है, जो हरिजन एवं समाज कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत समाज कल्याण निदेशक की देखरेख में काम करता है. यों बजट के नाम पर यह विभाग प्रति वर्ष राज्य का ... करोड़ रुपया खर्च करता है और विज्ञाप... पोस्टरों, नामपट्टों आदि के माध्यम से इ... की 'महान' उपलब्धियों का ढिंढोरा भी खू... पीटा जाता है, परंतु हकीकत में इस के तह... कितनी निराश्रित और बदनसीब महिला...

की बालिकाओं का उद्धार हुआ, कितने हरिजनों एवं बालकों का पुनर्वास हो सका और कितने अपंगों को पुनः समाजोपयोगी बनाया जा सका, कोई नहीं जानता.



सच पूछें तो इस विभाग का समूचा क्रियाकलाप ही गंभीर और पूर्ण जांच का विषय है, परंतु प्रस्तुत लेख में हम केवल भगाई गई, वेश्यालयों अथवा अपराधियों के चंगुल से छुड़ाई गई निराश्रित महिलाओं के उद्धार, भरणपोषण और पुनर्वास के लिए इस विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों की ही विवेचना करेंगे.

इस उद्देश्य से यह विभाग राज्य के अलमोड़ा, मेरठ, आगरा, लखनऊ, वाराणसी एवं गोरखपुर जिलों में घर से भगाई गई अथवा अपराधियों एवं वेश्यालयों से छुड़ाई गई लड़कियों व महिलाओं के लिए संरक्षण गृह और लखनऊ, मेरठ व सहारनपुर में उत्तर रक्षा गृह तथा लखनऊ, वाराणसी एवं पिथौरागढ़ में प्रशिक्षण केंद्र चलाता है. इन के अतिरिक्त वाराणसी, देहरादून व टिहरी गढ़वाल में नारी निकेतन और बरेली, उन्नाव, इटावा, मथुरा,

◀ कुमारी शीला पैर से चाय पीते हुए.

प्रशिक्षण केंद्र में सिलाई करती हुई बालिकाएं. ▼

इलाहाबाद, फैजाबाद, हल्द्वानी, टिहरी गढ़वाल, कोटद्वार, देहरादून एवं कानपुर में महिला आश्रम भी चलाता है.

इन आश्रमों में रहने वाली महिलाओं



अपने कार्य में व्यस्त श्रीमती जियाई

एवं बालिकाओं में से प्रत्येक के लिए राज्य सरकार औसतन 100 रुपए मासिक देती है, परंतु महिला आश्रमों का दौरा करने पर पता चला कि वहां लड़कियां जो कुछ भी करती हैं, उन के पारिश्रमिक में से उन का खर्चा काटा जाता है. सरकारी अनुदान कहां जाता है और लड़कियों को उन के काम का पूरा भुगतान क्यों नहीं किया जाता, इस का उत्तर कोई नहीं देता.

आवासीय समस्या

इन आश्रमों की महिलाएं एवं बालिकाएं साफसुथरी जरूर मिलेंगी, पर एकएक कमरे में मात्र दो की जगह होने पर भी पांच से 15 तक लड़कियां एक साथ रहती हैं. छोटेछोटे कमरे कमरे न लग कर दड़बों जैसे लगते हैं. करेला ही होता तो बहुत था, उस पर नीम चढ़ा. मतलब यह कि साधारण स्थिति की लड़कियां तथा अपराधी प्रवृत्ति की लड़कियां सब एक रखी जाती हैं, जिस से सुधरने के बजाए के बिगड़ने के ही ज्यादा अवसर रहते हैं दोनों बातें आवासीय समस्या की ओर करती हैं.

जब एक ही विभाग है और उस एक ही उद्देश्य है तो सुधार गृह, उत्तर गृह और कर्मशाला आदि को अलग रख कर इस आवासीय समस्या को जटिल बनाने के पीछे आखिर तुक क्या है सब एक ही संस्था के अंतर्गत ला कर का लाखों रुपया तो बचाया ही जा सकता आवासीय समस्या का भी काफी हद तक किया जा सकता है.

शादी

सुधार गृहों से इन लड़कियों की शा भी की जाती है. संरक्षण गृह में सामान्यतः अपराधी प्रवृत्ति की– जैसे जेबकत आवारा एवं बदचलन लड़कियां ही होतीं ऐसी 50 प्रतिशत लड़कियां शादी हो जाने बावजूद अपने चालचलन के कारण अप पतियों के साथ निभा नहीं पातीं और वाप चली आती हैं.

उत्तर रक्षा गृह में संपन्न शादियों कुछ हद तक सफल कहा जा सकता है. विडंबना यह है कि यहां की लड़कियों से व्यक्ति विवाह करता है, जिस की शादी तो आवारागर्दी या गरीबी के कारण नहीं पाती. चाहे जितना आदर्शवादी व्यक्ति वह यहां की लड़कियों से शादी करने के पर कतराने लगता है. शादी हो जाने पर जनसाधारण इन लड़कियों को छिना हरामी, वेश्या कह कर प्रताड़ित करता दूसरी ओर वेश्यावृत्ति अथवा आवारा कर चुकी महिला एक पति और घर संतुष्ट नहीं हो पाती. यहां से विवाहित लड़की को 500 रुपए नकद एवं 1,00 रुपए का गृहस्थी का सामान दिया जाता है

इन संस्थाओं में लड़कियों को पढ़ा व्यावसायिक प्रशिक्षण (जैसे नर्स, अध्या एवं तकनीकी) तो दिलवाया जाता है, लेकि

नौकरी में इन्हें किसी प्रकार की वरीयता नहीं दी जाती, जिस से नौकरी के लिए इन्हें काफी संघर्ष करना पड़ता है. निराश्रित महिलाओं को प्रशिक्षण केंद्र में सिलाईकढ़ाई का व्यावसायिक प्रशिक्षण दे कर प्रमाणपत्र तो दिया जाता है, परंतु उस का बाहर किसी प्रकार का कोई लाभ नहीं है. सरकार इन को किसी प्रकार का अनुदान भी नहीं प्रदान करती, जिस से ये अपना स्वतंत्र कार्य चला सकें. फलतः प्रशिक्षण योजना एकदम विफल हो जाती है.

अधीक्षकों की मुसीबत

तीनों संस्थाओं की महिला अधीक्षकों की शिकायत है कि महिला सुधार गृहों में 24 घंटे की नौकरी तथा वहीं निवास करने के कारण उन का दांपत्य जीवन अस्तव्यस्त हो गया है. ये लोग अपने रिश्तेदारों या मित्रों तक को महिला सुधार गृहों में नहीं बुला सकतीं. अगर ये लोग ऐसा करें तो फौरन इन के विरोधी हरिजन समाज कल्याण विभाग के अधिकारियों से यह शिकायत कर देते हैं कि ये अपने पति के मित्रों या रिश्तेदारों को लड़कियां सप्लाई करती हैं. कोई भी यह नहीं सोचता कि कोई भी पत्नी अपने सामने अपने पति को किसी दूसरी लड़की के साथ कैसे बर्दाश्त कर सकती है?

राजकीय महिला संरक्षण गृह

1956 में अनैतिक व्यापार अधिनियम के अंतर्गत संरक्षण गृह का निर्माण किया गया था. इन में वही महिलाएं रखी जाती हैं, जिन्हें समाज विरोधी कार्य करते हुए पकड़ा गया हो अथवा जिन पर किसी मामले में न्यायालय में मुकदमा चल रहा हो. जैसे—अपने प्रेमी के साथ भागी और पकड़ी गई लड़की को जेल के बजाए राजकीय संरक्षण गृह में भेजा जाएगा. जब न्यायालय इन के मामले में निर्णय दे देता है तो इन्हें या तो छोड़ दिया जाता है अथवा फिर अभिभावक को सौंप दिया जाता है. जो लड़कियां हत्या, वेश्यावृत्ति, गिरहकटी, आवारागर्दी आदि के आरोप में पकड़ी जाती

लखनऊ स्थित राजकीय उत्तर रक्षा गृह का भवन.



हैं, उन्हें भी संरक्षण गृह में ही रखा जाता है. अपराध सिद्ध होने पर इन्हें नारी निकेतन भेज दिया जाता है.

यहां की अधीक्षिका श्रीमती रीता मेहरोत्रा ने बताया कि यहां जो वेश्या या गिरहकट लड़कियां पकड़ी जाती हैं, वे किसी न किसी गिरोह से संबद्ध होती हैं. इन्हें बाद में गिरोह वाले जमानत पर रिहा करा लेते हैं. इन्हें समाज के 'बड़े' लोगों का संरक्षण प्राप्त होने के कारण स्थिति में किसी प्रकार का सुधार होना बड़ा मुशकिल दिखाई देता है.

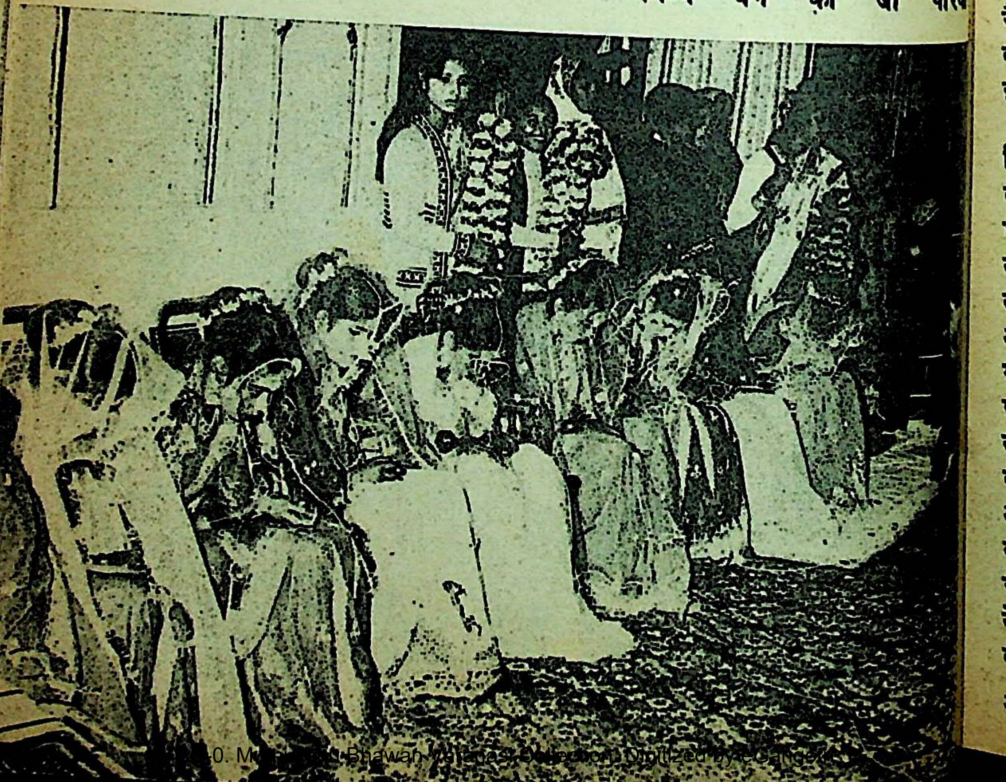
अपराधी प्रवृत्ति की महिलाएं

आजकल लड़कियों को विभिन्न अपराधों में बहुत सक्रिय किया जा रहा है. ये अपराध करते हुए पकड़ी भी जाती हैं तो महिला होने के कारण छोड़ दी जाती हैं या फिर अपने शरीर का लालच दे कर छुटकारा पा जाती हैं. इन लड़कियों को खूब प्रशिक्षण दे कर अपराध करने के लिए ... जाता है. कम उम्र की जो लड़कियां अप... क्षेत्र में उतरती हैं, वे आगे चल कर ... के लिए सिरदर्द हो जाती हैं.

इसी तरह की 12 वर्षीया ... कबूतरी से मुलाकात होने पर उस ने ब... कि उस के परिवार में तीन भाई और ... बहन हैं. सभी समाजविरोधी कार्य क... जीविका चला रहे हैं. कबूतरी को जेब का... के कार्य में प्रशिक्षित कर के सिटी ब... चौराहे पर तैनात कर दिया गया. वहीं ... बस के अंदर एक व्यक्ति की जेब काटते ... पकड़ी गई. उसे पुलिस के हवाले कर दि... गया. कबूतरी का हाथ देखने पर उस ... ब्लेड के घाव के निशान नजर आए. ... तरह की लड़कियां आगे चल कर वेश्यावृ... एवं अन्य समाजविरोधी कार्यों को अपना ... घोर पतन की ओर बढ़ जाती हैं. ऐ... लड़कियां जो किसी न किसी गिरोह से सं... होती हैं, बाद में गिरोह के मुखिया द्वारा छु... ली जाती हैं. इसी प्रकार कबूतरी भी 10 दि... बाद जमानत पर रिहा करा ली गई.

निम्न वर्ग का जो परिव...

उत्तर रक्षा गृह की सवासनियों का सामूहिक विवाह.





तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह उत्तर रक्षा गृह की लड़की के विवाह के अवसर पर उसे आशीर्वाद प्रदान करते हुए.

रोजीरोटी का मोहताज हो और शहर में रह रहा हो तो अकसर उस परिवार की लड़कियां चाहे पढ़लिख न पाएं, पर अकसर फैशन उसी तरह करने का प्रयास करेंगी, जैसे उच्च कुल की लड़कियां करती हैं. अगर कहीं समाज के आवारा लड़कों का संरक्षण इन्हें मिल जाए तो कहना ही क्या.

यही हाल शांति का हुआ. शराबी पिता मजदूरी कर के जो पैसा पाता, शराब की भेंट कर देता. 19 वर्षीया शांति की शादी भी एक मजदूर से कर दी गई. उसे ससुराल में शहरी वातावरण एवं आधुनिक सुविधा नहीं मिल पाई, अतः वह घर लौट आई. अब शांति की शादी पिता ने एक ऐसे मजदूर से, जिस की पहली पत्नी दो बच्चे छोड़ कर मर गई थी, कर दी. शांति की यह ससुराल भी देहात में थी, अतः वहां भी उस का मन नहीं लगा. गांव में शांति अकसर अपने वैभवपूर्ण जीवन की चर्चा महिलाओं से करती रहती थी और इस शादी पर रोती रहती थी. इस का फायदा एक दूसरी औरत ने उठाया. उस ने शांति से कहा कि वह उस के साथ चले तो एक संपन्न व्यक्ति के साथ उस की शादी हो सकती है. शांति घर छोड़ कर उस महिला के साथ हो ली. उस महिला ने शांति को एक व्यक्ति के हाथ बेच दिया. उस व्यक्ति ने उस को कुछ दिन तो बड़े कायदे से रखा, बाद में उस से वेश्यावृत्ति कराने लगा.

एक दिन जब वह शांति को नियमित रूप से कोठे पर बैठने के लिए ले जा रहा था तो रास्ते में मौका पा कर वह चिल्लाई. पुलिस ने उस आदमी को तो जेल भेज दिया और शांति को संरक्षण गृह. फिलहाल शांति अपने घर नहीं जाना चाहती. वह यहीं पर सिलाईकढ़ाई सीख कर फिर शादी करना चाहती है. इस प्रकार शांति ने आधुनिकता एवं शहर की चकाचौंध के कारण अपना जीवन बरबाद कर लिया.

21 वर्षीया पढ़ीलिखी बिन्ना ने हिंदू धर्म को छोड़ कर, घर से दुश्मनी मोल ले कर

एक मुसलिम युवक से शादी कर मुसलिम धर्म ग्रहण कर लिया. पति के साथ धार्मिक समानता लाने के लिए उस ने सलवारकुरता भी पहनना शुरू कर दिया और कुरान की आयतों को भी कंठस्थ करने लगी. लेकिन



कुमारी उर्मिला : शादीशुदा व्यक्ति द्वारा धोखा मिला.

पति महोदय शादी के बाद अपने भाइयों के ताने न बर्दाश्त कर पाए और पत्नी को छोड़ कर भाग गए. बिंद्रा को हिंदू समाज, मांबाप पुनः नहीं अपनाना चाहते थे, अतः पुलिस में रिपोर्ट लिखवाने पर बिंद्रा को इस संरक्षण गृह में स्थान मिला. बिंद्रा के पति को खोजा जा रहा है, लेकिन वह आज तक नहीं मिल सका है.

21 वर्षीया नजमा के पिता कानपुर की एक कपड़ा मिल में काम करते हैं. इन के चार लड़के, तीन लड़कियां हैं. नजमा सब से छोटी है. इस की शादी अख्तर से कर दी गई. नजमा ने बताया कि उस का पति शराब पी कर उसे मारतापीटता था, अतः उस का एक दूसरे व्यक्ति से संबंध हो गया. वह उस के साथ झांसी भाग गई. लेकिन झांसी वाले प्रेमी के साथ भी उस की पटी नहीं. अतः वह तीसरे व्यक्ति के साथ भाग गई. रास्ते में वह पकड़ी गई. प्रेमी को तो जेल भेज दिया गया और उसे संरक्षण गृह . नजमा अपने घर जाना चाहती है, लेकिन परिवार के लोग ऐसी लड़की को वापस नहीं ले जाना चाहते. वह यहां सिलाई सीख रही है, यहीं से शादी भी करने का विचार है.

20 वर्षीया बंगाली मुसलिम युवती सुलताना बेगम सौतेली मां और पांच सौतेले भाईबहनों के व्यवहार के कारण पास की कालोनी में बरतन मांज कर एवं झाडूबुहारी कर के अपना जीवन बिताने का प्रयास कर रही थी. वहीं पर एक महिला मिली, जिस ने कहा कि मेरी बड़ी लड़की बांदा में रहती है, तुम मेरे साथ बांदा चलो. हमारे ही घर में रह कर खाना और आराम की जिंदगी व्यतीत करना. सुलताना बेगम उस महिला के साथ बांदा पहुंच गई, जहां उस औरत ने सुलताना को एक हिंदू व्यक्ति के हाथ बेच दिया. वह व्यक्ति सुलताना बेगम से बाकायदा शादी करना चाहता था, पर सुलताना ने विरोध किया कि वह किसी हिंदू से शादी नहीं करेगी. सुलताना के चीखनेचिल्लाने पर किसी ने पुलिस को फोन कर दिया. पुलिस ने जबरदस्ती शादी करने वाले व्यक्ति को तो कुछ लेदे कर छोड़ दिया और सुलताना को वहीं के महिला गृह में भेज दिया. बाद में सुलताना लखनऊ आ गई. सुलताना भी अपने मांबाप के यहां नहीं जाना चाहती, वरन यहीं पढ़लिख कर शादी करना चाहती है.

कमरे में 14 वर्षीया कादर को देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतनी सुंदर लड़की यहां कैसे आ गई. उस की कहानी सुन कर बड़ा दुख हुआ. कादर ने बताया कि वह मूलतः नेपाली है, उस के पिता सेना में सिपाही थे. वह अक्सर बाहर ही रहते थे. उस की मां लखनऊ में उस की छोटी बहन चंद्रा और भाई नरेश के साथ रहती थीं. पिताजी कई सालों तक लखनऊ नहीं आए. मां तीनों बच्चों को वहीं छोड़ कर किसी के साथ भाग गई. तीनों बच्चे, जो क्रमशः 8, 6, 2 साल के थे, भूखों मरने लगे. तब महल्ले के

एक सामाजिक कार्यकर्ता ने इन बच्चों को बालिका निकेतन में भरती करा दिया. जब कादर बड़ी हो गई तो उसे संरक्षण गृह में भेज दिया गया. छोटी बहन बालिका निकेतन में एवं भाई बच्चों के अनाथालय में है. कादर यहां से कोई प्रशिक्षण ले कर आत्मनिर्भर हो कर अपने भाईबहनों की जिंदगी बनाना चाहती है. फिलहाल उस ने हाई स्कूल पास कर लिया है. वह महिला आश्रम की अधीक्षिका को ही अपना मांबाप मानती है.

ये चरित्रवान व्यक्ति

यहां एक किस्सा सुनने को मिला. यहां से पहले लड़कियों को बड़ेबड़े घरों में कामकाज के लिए भेज दिया जाता था. एक बार एक सेना से अवकाश प्राप्त कैप्टन घर के कामकाज के लिए नौकरानी तलाशते वहां आए. 19 वर्षीया एक लड़की को कैप्टन के घर घरेलू कामकाज के लिए भेज दिया गया. कुछ महीने बाद वह लड़की कैप्टन साहब के यहां से भाग आई.

उस ने बताया कि कैप्टन साहब के घर के कामकाज के बाद उसे उन की वा... पूर्ति भी करनी पड़ती थी. कैप्टन ... पहले तो यही कहते थे कि रानी बन... रहना, लेकिन जब गर्भ ठहर गया तो उ... भगा दिया.

अधिकारी महोदय ने कैप्टन साह... बुलवाया. कैप्टन साहब को जब उन... करतूत बताई गई तो उन्होंने कहा कि... झूठ आरोप लगा रही है. यह और कई ... के घर आयाजाया करती थी, वहीं कि... संबंध हो गया होगा.

कैप्टन के इस व्यवहार से उस ल... को बड़ा आघात पहुंचा. बाद में इसी संर... गृह में उस के बच्ची पैदा हुई, लेकिन ल... का हंसनाबोलना सभी बंद हो गया. ... अपनी बच्ची के पास पड़ीपड़ी छत या ... को एकटक निहारा करती है. इस लड़की... इलाज चल रहा है.



कुमारी रीना, आशा, उमा, लीला जिन की मांएं जेलों में सजाकाट रही हैं.

उत्तर प्रदेश में निराश्रित महिलाओं के लिए प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना 7 जुलाई, 1970 को हुई थी. इस की स्थापना का मुख्य उद्देश्य असहाय, अनाथ एवं निराश्रित महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई एवं चिकन के क्रम में प्रशिक्षित कर के इस योग्य बनाना है कि वे प्रशिक्षण के बाद धनोपार्जन कर के अपनी जीविका चला सकें.

यहां कोई भी निराश्रित महिला प्रवेश पा सकती है. अधिकतर अनाथ, विधवा, परित्यक्ता और समाज से तिरस्कृत महिलाएं यहां आती हैं या लाई जाती हैं. इस में एक बार अधिकतम 100 महिलाएं रह सकती हैं. इन में से 50 के लिए निःशुल्क आवास, भोजन, चिकित्सा, वस्त्र आदि की व्यवस्था है.

30 ऐसी महिलाओं को भी निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है, जो इस आश्रम में न रह कर अपने परिवार में रहती हैं. इन्हें प्रशिक्षण काल में किसी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता. प्रशिक्षण काल की अवधि अभी शासन द्वारा निर्धारित नहीं की गई है. प्रशिक्षण के बाद इन्हें वहीं कार्य करने का अवसर दिया जाता है. वहां विभिन्न संस्थाओं से प्राप्त आर्डर के आधार पर कार्य करा कर उचित पारिश्रमिक भी दिया जाता है.

इस केंद्र में इन दिनों जो महिलाएं और बालिकाएं प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं उन में ससुराल से निकाली गई, गरीबी के कारण घर से भागी, बदमाशों द्वारा अपहृत और बलात्कार का शिकार महिलाएं अथवा बालिकाएं प्रमुख हैं. कुछ वेश्यालयों से छुड़ाई गई लड़कियों तथा बेरोजगारी और भुखमरी के शिकार परिवारों की बालिकाएं भी हैं.

राजकीय उत्तर रक्षा गृह

इस संस्था की स्थापना 1958 में की गई थी. इस का उद्देश्य निराश्रित महिलाओं, बालिकाओं को जो आर्थिक संकट में ग्रस्त हों और अविवाहित माताओं को संरक्षण दे कर उन का नैतिक विकास क[र] और उन्हें प्रशिक्षित कर कढ़ाई, सि[लाई] बेंत कला में कुशल बना कर स्वाव[लंबी] बनाना है.

यहां इस समय एक लड़की [...] में, पांच हाई स्कूल में, आठ इंटर में त[था] प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ रही हैं. लखन[ऊ] इस केंद्र में 32 महिलाएं व बालि[काएं] सिलाईकढ़ाई सीख रही हैं. यहां अधिक[तम] 100 लड़कियां रह सकती हैं. यहां [...] लड़कियां इंटर, बी.ए. करने के [...] अध्यापिका, नर्स, शार्टहैंड आदि [...] प्रशिक्षण प्राप्त करती हैं. 1979-80 में [...] की 13 लड़कियों को नौकरी दिलाई [...] 175 लड़कियों की शादी इस संस्था ने [...] तथा 300 महिलाओं को समझौते करा [...] फिर वापस घर भेजा गया है. 63 लड़कि[यों] को विभिन्न तरह के प्रशिक्षण दे कर [...] पैरों पर खड़ा किया गया है. इस संस्था [...] प्रवेश प्रबंध कार्यकारिणी की अध्यक्षा [...] अनुमति से दिया जाता है. इस केंद्र [...] शाखाएं लखनऊ, मेरठ, सहारनपुर में [...]

दहेज के कारण

लड़के वाले दहेज के लालच में कि[स] तरह बहुओं पर अत्याचार करते हैं, बान[गी] देखिए:

21 वर्षीया मीनू के पिता मेडिक[ल] कालिज, लखनऊ में कंपाउंडर थे. मां 19[...] में ही मर गई थी. एक ही भाई है, जो रा[ज्य] परिवहन में बस संवाहक है. मीनू जब [...] वर्ष की थी, तभी उस की शादी 1975 [...] राजेश निगम के साथ, जो विद्युत विभा[ग] कर्मचारी हैं, हो गई थी. पति का एक अ[न्य] लड़की से भी प्रेम रहा था. मीनू के ससु[राल] दहेज में मकान मांगा था. मकान न मिलने [...] वह महाशय अंदर ही अंदर मीनू और उस[के] परिवार वालों से खार खाए बैठे थे. पति [...] पत्नी से छुटकारा पा कर अपनी मनप[संद] लड़की से शादी करना चाहता था. अतः [...] इन लोगों ने मीनू को मारनापीटना शुरू [कर] दिया. मीनू को वे जबरन मायके छोड़ [...]

राजेश ने पीछे से अपनी मनपसंद लड़की के साथ शादी कर ली. मीनू की भाभी उसे ताने देती रहती थी कि अपना परिवार छोड़ कर भाई के टुकड़ों पर पल रही है. भाई पत्नी के सामने नहीं बोल पाता था. अतएव मीनू ससुराल वालों और मायके में भाभी के व्यवहार से दुखी हो कर निराश्रित महिलाओं के आश्रम में रह रही है.

गरीबी के कारण

गरीब परिवारों की लड़कियां घर से निकल कर गलत लोगों के हाथों में पड़ जाती हैं. मुंगेर (बिहार) की 14 वर्षीया लड़की हसीना की मां भी बचपन में ही मर गई थी. पिता बेचारे थोड़ी सी खेती करते थे. वहां भी इसे भरपेट भोजन नहीं मिल पाता था. हसीना की चाची हसीना से छुटकारा पाना चाहती थी. तभी पड़ोस की एक महिला ने हसीना की चाची से कहा कि हसीना को लखनऊ भेज दो. वहां इस की नौकरी लगवा दी जाएगी. वह औरत हसीना को लखनऊ ले आई और एक कोठी में महरी के तौर पर रखवा दिया. उस घर के लोगों के व्यवहार से तंग आ कर वह यहां आ गई.

गीता जब चार साल की थी तो वह अपने मांबाप के साथ मेला देखने गई थी. वहां भीड़ में भटक गई और एक गिरोह के हाथ में पड़ गई. इस गिरोह के लोग गीता को पकड़ कर बेचने के लिए वाराणसी ले जा रहे थे. वहां अचानक वह "मांमां" पुकार कर रोने लगी. पुलिस वालों को शक हुआ तो सब पकड़े गए. गीता को अनाथालय में भरती करा दिया गया. आज गीता सिलाई सीख रही है और 21 वर्ष की हो चुकी है.

गलत संगति से

ऐयाशी एवं आवारागर्दी इतनी बढ़ गई है कि मांबहन के पवित्र रिश्ते भी संदिग्ध हो गए हैं. इस आश्रम की सरोज को देख कर इस की पुष्टि भी हो गई. सरोज हाईस्कूल पास 20 वर्षीया सुंदर, सुशील एवं सामान्य लड़की है. मांबाप बचपन में ही मर गए थे. घर में सरोज सहित तीन भाई हैं. बड़ा भाई वायुसेना में है. उस से छोटा अपनी पत्नी के साथ उसी घर में रह रहा है, सब से छोटा भाई जो टैंपो चालक है और निहायत बदमाश है, अपनी छोटी बहन सरोज के ही कमरे में सोता है.

सरोज को बचपन से ही मिरगी के दौरे पड़ते हैं, जिस के कारण वह दो से चार घंटे तक बेहोश रहती है. एक दिन भाईबहन एक ही कमरे में सो रहे थे. तभी सरोज के ऊपर मिरगी का दौरा पड़ गया. पता नहीं उस के छोटे भाई को क्या सूझा कि उस ने बेहोशी का फायदा उठा कर सरोज के साथ बलात्कार कर डाला. वह प्रातः ही घर से खिसक लिया. सरोज को सुबह महसूस हुआ कि उस के साथ कुछ हुआ है. लेकिन मारे



लेखकों से निवेदन

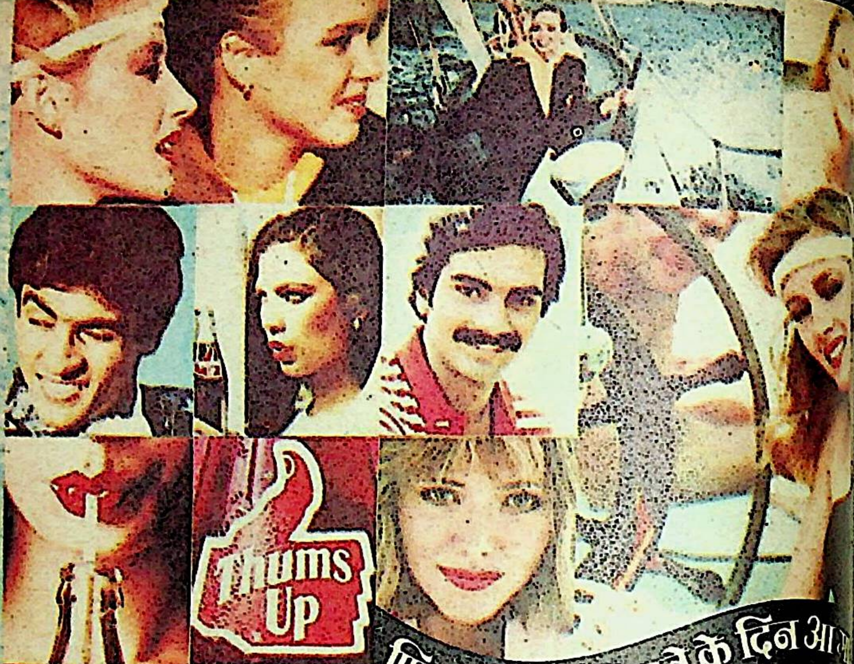
प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में चारछः सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्रव्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि हम कुछ भी बताने में असमर्थ होते हैं. हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं. स्वीकृत रचनाओं के बारे में सूचना चार से छः सप्ताह में दे दी जाती है.

टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं.

रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें.

यदि आप किसी ऐसे विषय पर लिखना चाहते हैं जिस में अधिक समय अथवा परिश्रम के लगने की संभावना है तो उस बारे में पूर्व सलाह लेना काफी लाभदायक होता है. इस बारे में भेजे गए पत्रों का यथोचित उत्तर दिया जाता है.

—संपादक



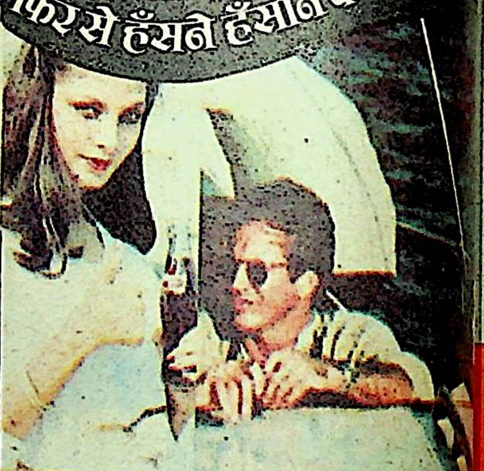










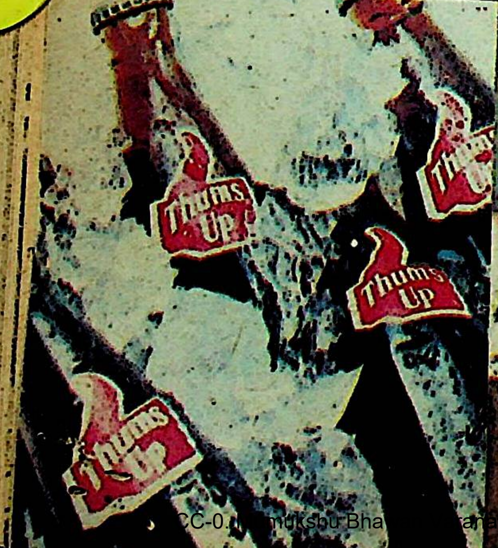




मिलकर
खुशियां मनाने के
दिन आ गए!

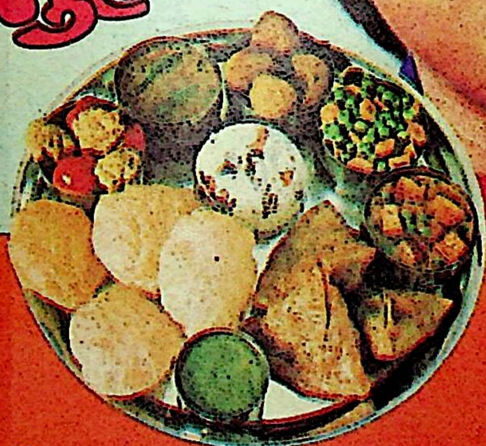
थम्स
अप

कोला की उमंग
ताज़गी के संग





मुंह में पानी!



ालडा रिफ़ाइन्ड तेल. कितना शुद्ध है यह: इससे भोजन का
्वाभाविक स्वाद बना रहता है. इसमें पकाइए और खाइए.
वा! इस भोजन का तो मज़ा ही निराला है. देखते ही बच्चों से
रहा ही न जाय, और पतिदेव के मुंह में भी पानी आ जाय!

डालडा
रिफ़ाइन्ड तेल

मज़ेदार भोजन का राज़



शर्म के उस ने यह बात किसी को नहीं बताई.

अब तो जब भी सरोज पर मिरगी का दौरा पड़ता, उस का छोटा भाई उस के साथ मुंह काला करता. कुछ दिन बाद सरोज को यह पता लग गया कि यह दुष्कर्म उस का भाई ही करता है. लेकिन फिर इज्जत, शर्म के कारण उस ने किसी से इस बात की चर्चा नहीं की पर दो महीने बाद ही उसे इस बात का एहसास हुआ कि उस के पेट में कुछ पल रहा है. तब इस की चर्चा उस ने भाई से कर दी. वह इतना घबरा गया कि घर छोड़ कर कहीं भाग गया. बड़े भाई और उस की पत्नी को जब इस की सूचना मिली तो इन लोगों ने उसे बहुत मारापीटा. गर्भपात का प्रयास भी किया गया, पर सफलता नहीं मिली.

सरोज के बच्चा होने की बात महल्ले भर में फैल गई. बड़ा भाई भी घर छोड़ कर भाग गया. कुछ दयालु व्यक्तियों ने सरोज को इस आश्रम में भरती करा दिया. यहां से उसे बलरामपुर हस्पताल में भरती करा दिया गया जहां उसे लड़का हुआ. बच्चा होने के बाद मिरगी का इलाज कराया गया. वह अब लगभग ठीक हो गई है. सरोज बच्चा छोड़ने को राजी नहीं है. उस से जब कोई यह कहता है कि बच्चा छोड़ दो तो उसे मिरगी के दौरे पुनः आने लगते हैं. चाहे जो हो, सरोज दया की पात्र है, उस के साथ जो भी हुआ है वह अनजाने में हुआ, जिस का परिणाम वह भुगत रही है.

इस संस्था में कुछ लोग स्वेच्छा से अपनी लड़कियों को भरती करा जाते हैं. इलाहाबाद की कुमारी चंद्रा के पिता, जो आजादी के पहले स्वतंत्रता सेनानी रहे, देश सेवा की भावना के कारण ही अपनी नौकरी छोड़ बैठे थे. चंद्रा के चार बहनें हैं, जिन में से दो की शादी हो गई है. एक भाई नौकरी कर रहा है, एक भाई इंटर का छात्र है. पिता के मरने के बाद मां ने परेशान हो कर इन दोनों लड़कियों को स्वेच्छा से बालिका निकेतन, इलाहाबाद में भरती करा दिया. इलाहाबाद से चंद्रा कक्षा चार पास कर उत्तर रक्षा गृह लखनऊ आ गई, जहां इस ने इंटर तक अध्ययन किया. उस के बाद नर्स की ट्रेनिंग कर के सुलतानपुर में नर्स की नौकरी कर रही है. चंद्रा की छोटी बहन सुमन भी यहां इंटर कर रही है. ये दोनों लड़कियां आज आत्मनिर्भर हो कर मां का सहारा बन गई हैं.

मां जेल में, बच्चे उत्तर रक्षा गृह में

उत्तर रक्षा गृह में उन लड़कियों को भी जिन की मांएं जेल में सजा काट रही हैं, रखा जाता है. 10 वर्षीया आशा, उस की मां और 12 वर्षीया लीला की मां अपने पतियों की हत्या के आरोप में जेल में सजा काट रही हैं. तीन वर्षीया उमा भी, जिस की मां हत्या के आरोप में सुलतानपुर में सजा काट रही है, इसी गृह में रह रही है. इन के भविष्य के बारे में महिला अधीक्षक ने बताया कि इन लड़कियों को पढ़ायालिखाया जाएगा, फिर नौकरी में भेजने का प्रयास किया जाएगा. इन्हें इस योग्य बना दिया जाएगा कि समाज में अपनी जीविका अर्जित कर सकें.

इन सब के लिए ऐसे युवक ढूंढ़े जाते हैं, जो इन की घरेलू परिस्थितियों पर नहीं, अपितु इन की योग्यता देख कर इन से विवाह को तैयार हो जाएं.

लालची पिता की करतूत

कोई बाप अपनी बेटी की शादी किसी पागल से इसलिए कर दे कि वह अपने पैसे से लड़की के घर वालों को मदद देगा तो आप क्या कहेंगे:

20 वर्षीया मधु सिन्हा के पिता अत्यधिक लालची हैं. बोकारो (बिहार) में नौकरी पर हैं. इन की पहली पत्नी से तीन लड़कियां एवं एक लड़का है. दूसरी मां इन बच्चों को प्यार नहीं दे पाई. पिता ने मधु का विवाह नंदलाल नामक एक ऐसे व्यक्ति से कर डाला जो पागल था. जब मधु ने इस का विरोध किया तो पहले ससुराल से जेवर, नकदी चोरी कर घर भेजने का लालच दिया. वह जब नहीं मानी तो उसे मारापीटा. वह अब आश्रम में है.

मुझे शिकायत है

इन प्रकाशित शिकायतों को काट कर संबंधित व्यक्तियों को भेजिए या उपयुक्त स्थान पर चिपकाइए ताकि इन्हें पढ़ने वाले अपनी त्रुटियों को पहचान कर उन्हें दूर कर सकें.

मुझे शिकायत है उन व्यक्तियों से, जो दर्शनीय स्थानों को देखते समय वहां की दीवारों पर अपना नाम व पता आदि लिख देते हैं, जिस से उन स्थलों की सुंदरता एवं मौलिकता को क्षति पहुंचती है.

—मोहनकुमार मालपानी



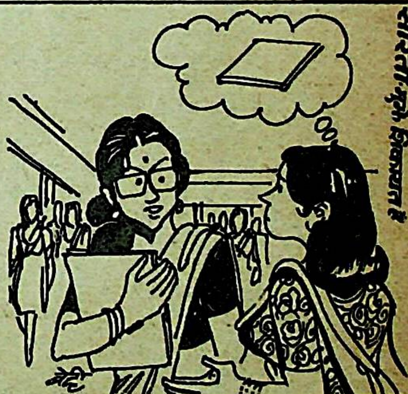


मुझे शिकायत है उन लोगों से, जो अपना स्वयं का पेन नहीं रखते तथा दूसरों से मांगते रहते हैं. इस प्रकार वे दूसरों के लिए अनावश्यक परेशानी पैदा करते हैं और कभीकभी तो वे पेन ले कर ही चलते बनते हैं.

—म.व. चौहान

मुझे शिकायत है उन प्राध्यापिकाओं से, जो विद्यार्थियों की उत्तरपुस्तिकाओं को लापरवाही से रख देती हैं. जब विद्यार्थी अपनी उत्तरपुस्तिका मांगता है तो वह अकड़ कर जवाब देती हैं कि इधरउधर रख दी है, देख कर दे दूंगी और मुसकरा कर चल देती हैं. जब कि बारबार मांगने पर भी न तो उन्हें देखती हैं तथा न ही साफसाफ बोलती हैं कि खो गई. इस से विद्यार्थियों को कितनी असुविधा होती है, इस का अंदाजा शायद वे नहीं लगा पातीं.

—एक छात्रा





मुझे शिकायत है उन मातापिताओं से, जो बच्चों के सामने झगड़ते हैं जिस का बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है.

—हेमा बिष्ट

मुझे शिकायत है उन बस ड्राइवरों से, जो अपने सामने लगे शीशे के माध्यम से बस में बैठी सुंदर लड़कियों एवं स्त्रियों को लगातार देखते रहते हैं जिस से दुर्घटना का डर रहता है.

—संतोषकुमार सक्सेना



अरविंद



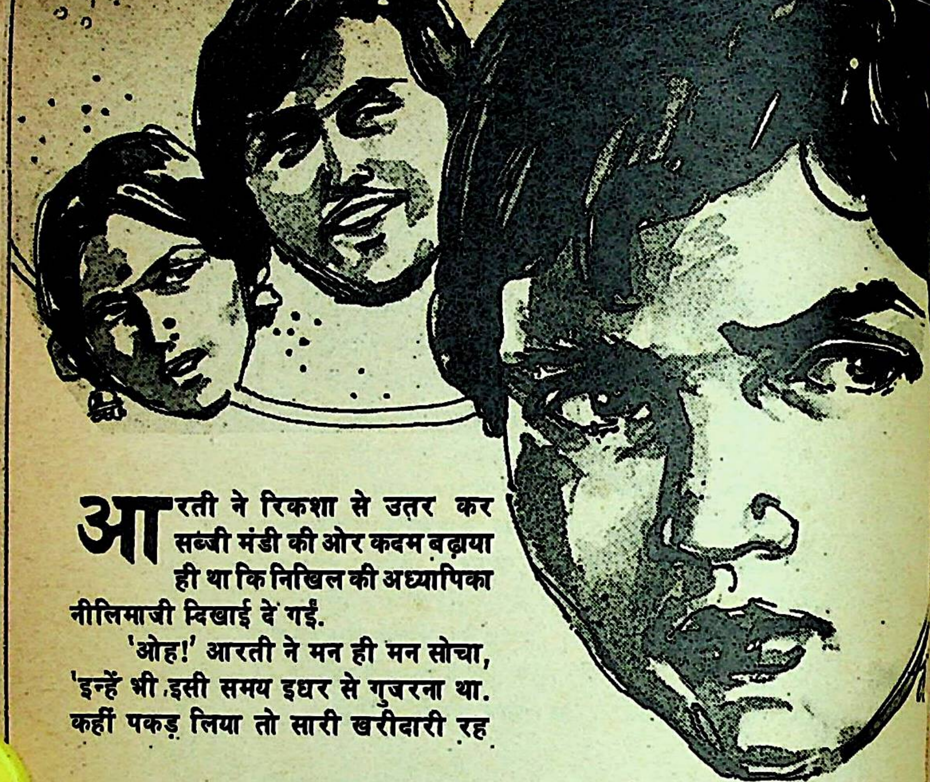
शर्टिंग्स • सूटिंग्स • साड़ियाँ • ड्रेस मटीरियल

विज्ञापन शादी का

वीनूजी आ कर यों बोले, भाभी मेरा तनमन डोले.
शादी अब तुम करवा दो, विज्ञापन यों छपवा दो.
कमाऊ चाहिए घरवाली, गोरी हो या हो काली.
स्वभाव की भोलीभाली, न ज्यादा नखरे वाली.
पैसे वाला ससुर चाहिए, सालेसाली नहीं चाहिए.
लाख रुपए का चैक चाहिए, गाड़ी बंगला साथ चाहिए,
रसोई का सामान चाहिए, गैस सिलेंडर चार चाहिए.
मिक्सी हीटर ओवन चाहिए, कुकर तो हाकिंस चाहिए.
पंखे कूलर दो चाहिए, टी.वी. टेपरिकार्ड चाहिए.
शुद्ध सोने के सैट चाहिए, डिनर सैट चांदी का चाहिए.
बस मामूली ये शर्तें हैं, और हमें कुछ नहीं चाहिए.
सस्ता वर बिकाऊ है, खरीदार जल्दी चाहिए.

—रमा खंडेलवाल





आरती ने रिकशा से उतर कर सब्जी मंडी की ओर कदम बढ़ाया ही था कि निखिल की अध्यापिका नीलिमाजी दिखाई दे गईं.

'ओह!' आरती ने मन ही मन सोचा, 'इन्हें भी इसी समय इधर से गुजरना था. कहीं पकड़ लिया तो सारी खरीदारी रह

संस्कार

कहानी • माधवी प्र. देशपांडे

जाएगी. सारा वक्त बातों में ही उलझाए रखेंगी.'

लेकिन जब सामना पड़ ही गया तो बचने की गुंजाइश भी नहीं थी. विवश हो कर नीलिमाजी की मुसकराहट का 'हैलो' से जवाब देते हुए आरती उन्हीं के साथ हो ली.

नीलिमाजी बातों की शुरुआत करते हुए बोलीं, "आरतीजी, मैं काफी दिनों से आप से मिलने की सोच रही थी, मगर वक्त ही नहीं मिलता. देखिए न, स्कूल का काम, घर का काम और ऊपर से ये पांच ट्यूशनें निबटातेनिबटाते हालत पस्त हो जाती है. प्रिंसिपल भी चाहती है कि सारा अतिरिक्त काम भी मैं ही करूं. आखिर पूरी जिम्मेदारी और मुस्तैदी से काम करने वाला दूसरा है ही कौन?"

आरती ने सहमति व्यक्त करते हु कहा, "ठीक कहती हैं आप. जो काम कर है, उसी के कंधों पर सारा बोझ पड़ जाता और कामचोर व्यक्ति बच जाता है."

"अब आप ही देखिए," सहानुभूति कर नीलिमाजी को जोश आ गया, "स्कूल टूर्नामेंटों के अधिकांश खेलों का आयोज मुझे ही करना पड़ता है. विविध स्पर्धाओं मुझे ही खपना पड़ता है. ऊपर से क्ला टीचर होने के नाते अपनी कक्षा जिम्मेदारी तो है ही. भई, अपना स्वभाव ऐसा नहीं है कि अतिरिक्त काम की आड़ कर अपनी कक्षा की ओर ध्यान न दूं."

"लेकिन आप के इसी स्वभाव से

सब खुश हैं," आरती बोली, "हम भी तो निखिल की जिम्मेदारी आप को सौंप कर निश्चिंत हैं."

अपनी तारीफ सुन कर नीलिमाजी फूली न समाईं. कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद आरती की बात का सूत्र पकड़ते हुए उन्होंने कहा, "अरे हां, जिस बात के लिए मैं आप से मिलना चाहती थी, उस की चर्चा करना तो भूल ही गई. अभी पिछले हफ्ते स्कूल में हुई वादविवाद प्रतियोगिता में निखिल फिर से अव्वल आया है न, उसी के लिए मैं आप को बधाई देना चाहती थी."

"अरे वाह, बेटे की सफलता पर मां को बधाई," आरती ने बनते हुए कहा.

"हां, आरतीजी, ऐसे होनहार बेटे की मां होने के कारण आप सचमुच बधाई की पात्र हैं. निखिल पर तो हमारे पूरे स्कूल को नाज है. ऐसा कोई नहीं, जिस में उस ने बाजी न मारी हो. आप सचमुच बहुत भाग्यशाली हैं, आरतीजी, जो ऐसा प्रतिभाशाली बेटा पाया है."

आरती के मन में प्रसन्नता की फुलझड़ियां छूटने लगीं, चेहरा खिल उठा. ऐसी कौन सी मां होगी, जो अपने बेटे की तारीफ सुन कर फूली न समाए? निखिल को पा कर उस का जीवन मानो सफल हो गया था. निखिल उसे बचपन से ही वह सुख देता आ रहा था, जिस की आकांक्षा हर मां को होती है.

'और निखिल को भी तो देखिए, मात्र चौदहपंदरह वर्ष की उम्र में ही उस की कैसी अद्भुत विचारशक्ति है. ऐसेऐसे तर्क प्रस्तुत करता कि सुन कर आश्चर्य होता है.' आरती एकाएक निखिल के विचारों में डूब गई थी. जब उस के कानों से नीलिमाजी के ये शब्द टकराए तो वह चौंक कर बोली, "हां,

आरती अपने बेटे निखिल को समर्थ व्यक्तित्व का मालिक बनाना चाहती थी और इस के लिए उस ने पहल भी की थी. किंतु तभी घर में घटी एक घटना ने उसे विचलित कर दिया.



ठीक कहती हैं आप, उस में सचमुच बड़ा आत्मविश्वास और निर्भयता है. जहां अपनी गलती स्वीकारने में उसे हिचक नहीं होती, वहीं अपना दोष न होने पर बेवजह डांटा जाना भी उसे पसंद नहीं है."

पीछे से एक स्कूटर के हार्न की आवाज से उन की बातों का सिलसिला टूट गया. सहसा आरती को खयाल आया कि उसे जल्दी से खरीदारी कर के घर पहुंचना है. थोड़ी ही देर में उस के पति खाना खाने के लिए घर आएंगे. अगर उस वक्त वह घर में न हुई तो बहुत नाराज होंगे. निखिल और उस के दादादादी भी उस की राह देख रहे होंगे.

सब्जी बाजार में काफी भीड़ थी. जैसेतैसे सब्जी खरीद कर आरती घर लौटने को हुई. रिकशा मिलने का कोई ठिकाना नहीं था, सो पैदल ही घर की ओर चल दी.

नीलिमाजी की कही बात बारबार उस की दिमाग से टकराती, "आप सचमुच बहुत भाग्यशाली हैं, आरतीजी, जो ऐसा प्रतिभाशाली बेटा पाया है."

निखिल आरती और उस के पति की आंखों का तारा था. आरती के पति चाहते थे कि निखिल केवल पढ़ाईलिखाई में ही नहीं, बल्कि हर क्षेत्र में अपना सिक्का जमाए. साथ ही उस का व्यक्तित्व इतना समर्थ हो कि आगे चल कर वह जीवन की हर समस्या से जूझ सके, हर जिम्मेदारी को निभा सके. उस में अच्छे संस्कार हों.

आजकल के बच्चे प्रायः दोहरी नैतिकता के शिकार होते हैं. घर में उन्हें सीख मिलती है कि शराब पीना बुरी बात है, पर घर के ही बड़ी आयु के लोग खुद फैशन के तौर पर शराब पीते हैं. उन से कहा जाता है कि रिश्वत लेना या देना पाप है, लेकिन बिना रिश्वत दिए तो स्कूलों में दाखिला तक नहीं मिलता.

ऐसे वातावरण में मातापिता अपने बच्चों को बुरी बातों से बचाएं भी तो कैसे?

किंतु इस का हल यह नहीं है कि बच्चों को दुनियादारी सिखाने के बहाने उन में बुरे संस्कार डाले जाएं. बीज तो हमेशा अच्छा ही बोना चाहिए.

निखिल के पिता हमेशा कहा करते थे, "माना कि दुनिया बुरी है, लेकिन दुनिया के आगे झुक जाने से तो यह बुरी ही बनी रहेगी बल्कि बुराई फैलती जाएगी. इस से टक्कर ले कर ही बुराई खत्म की जा सकती है."

निखिल ठीक अपने पिता पर गया था. मांबाप और दादादादी के दिए संस्कार उस ने व्यर्थ नहीं जाने दिए.

आरती को सोचते हुए मन ही मन हंसी आ गई. निखिल को अच्छी आदतें डालने के लिए स्वयं उसे और उस के पति को कितना बदलना पड़ा था. रोज सुबह बिना मंजन किए चाय पीने के आदी निखिल के पिता अब बिना भूले सुबहसुबह सब से पहले मंजन करते थे. अब पति को नियमित कसरत करते तथा हर चीज को यथास्थान रखते देख कर उसे विश्वास ही न होता था कि ये वही श्रीमानजी हैं, जो सजेसंवरे घर को मिनटों में कबाड़खाना बना देते थे.

वह स्वयं भी तो खाना खाते समय पुस्तक पढ़ने की आदत त्याग चुकी थी. बातबात पर वादविवाद करने की आदत भी लगभग खत्म हो चुकी थी. चिड़चिड़ाने और झल्लाने की आदत पर काबू पाने के लिए उसे कितना प्रयास करना पड़ा था. यह वही जानती है और कई छोटेछोटे काम जिन में झूठ बोल कर काम चलाया जा सकता था, अब बड़ी सावधानी से झूठ को टाल कर किए जाने लगे थे.

घर पहुंचने पर आरती ने अपेक्षा के विपरीत देखा कि निखिल कुछ मायूस सा बाहर कमरे में बैठा है. वह उस से कुछ पूछना ही चाह रही थी कि अंदर से निखिल की दादी बाहर आई और बोली, "लो सुन लो अपने लाड़ले की बात. बित्ते भर का छोकरा हम से जबान लड़ाता है. बड़ों से बात करने की जरा भी तमीज नहीं है इसे."

"लेकिन हुआ क्या? क्या हुआ निखिल बेटा?"

निखिल के दादाजी भी बाहर आ खड़े हुए. उन्होंने गुस्से से भरे स्वर में कहा, "उस से क्या पूछती हो, वह क्या बताएगा? मैं बताता हूं."

दादाजी की बात से आरती को पता चला कि जब उन्होंने अपनी किताब का पहला पन्ना फटा हुआ देखा तो उन्होंने इस बारे में निखिल से पूछा. निखिल ने कहा कि पन्ना उस से नहीं दादीजी से फटा है. जब उस की दादीजी से पूछा गया तो उन्होंने इस बारे में अनभिज्ञता प्रकट की और कहा कि घर में छोटा बच्चा एक निखिल ही है, शायद उस ने फाड़ा होगा.

इस पर निखिल ने चिल्ला कर कहा, "मैं ने पन्ना नहीं फाड़ा. कल रात दादीजी के हाथ से फटा है. मुझ पर झूठ इलजाम क्यों लगाया जा रहा है?"

उस के कहने के ढंग पर दादादादी दोनों बिगड़ उठे. उन्होंने इस बदतमीजी के लिए निखिल को डांटा. किंतु फिर भी वह अपनी ही बात पर अड़ा रहा. इस पर दादाजी ने उसे एक चांटा लगा दिया.

पल भर के लिए आरती ने भी सोचा कि निखिल को इस तरह बुजुर्गों से जबान नहीं लड़ानी चाहिए थी. लेकिन क्या सचमुच सारी गलती निखिल की ही थी?

कुछ क्षण चुप्पी में बीते. इस चुप्पी को तोड़ा बाहर से आए निखिल के पिता ने. आरती ने सहज होने की कोशिश की, लेकिन वह वातावरण के तनाव को भांप गए.

"क्या बात है, भई? क्यों, बेटा, क्या बात हो गई?"

निखिल को जैसे पिता का सहारा मिल गया था. सारी बात बता कर उस ने कहा कि दादीजी झूठ बोलती हैं.

"निखिल, बड़ों के लिए ऐसी बात नहीं

"आरती, तुम तो गजब करती हो, जरा सी बात में इस तरह मुंह फुलाने की क्या जरूरत है?" निखिल के पिता ने आरती से कहा.



कहते," पिता ने डांट कर कहा.

"लेकिन, पिताजी, आप ही तो कहते हैं कि कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए और झूठ सुनना भी नहीं चाहिए."

"देखो, बेटे, दादा और दादी उम्र में तुम से काफी बड़े हैं. उन से इस तरह बात नहीं की जाती. चलो, माफी मांगो."

"मैं माफी नहीं मांगूगा, मेरी कोई गलती नहीं है."

"अगर माफी नहीं मांगी तो रात को खाना नहीं मिलेगा, समझे?"

अब आरती से नहीं रहा गया. परिस्थिति को और बिगड़ने से रोकने के लिए उस ने निखिल को अपने कमरे में भेज दिया और सब को समझाबुझा कर खाने के कमरे में ले गई.

खाने के बाद काम निबटा कर आरती ने निखिल के कमरे में झांक कर देखा, निखिल पलंग पर सोया हुआ था. सोने से पहले शायद रोया भी था.

आरती का मन भर आया. उस के माथे पर हाथ फेरते हुए वह सोचने लगी, 'आखिर निखिल की क्या गलती है? उसे जो सीख मिली, वही उस ने दोहरा दी.'

न जाने कब निखिल के पिता भी उस के पीछे आ खड़े हुए थे.

"आरती, तुम भी गजब करती हो. जरा सी बात में इस तरह मुंह फुलाने की क्या जरूरत है?"

"जरा सी बात?" आरती ने कहा.

"अरे भई, बच्चा है, कुछ देर रोएगा, फिर भूल जाएगा और बड़ों से माफी मांगने में कोई अपमान तो नहीं है?"

"आप ही ने इसे सिखाया था न कि अगर गलती अपनी हो तो निर्भयता से स्वीकार करो और अगर अपनी गलती न हो तो किसी के आगे हरगिज मत दबो?"

"लेकिन बड़ों से बात करने का एक ढंग होता है, आरती. बड़ों से विनम्रता से बात करनी चाहिए."

"क्या आप नहीं सोचते कि बड़ों के भी आचरण का एक ढंग होता है? अगर बड़े अपनी मर्यादा त्याग दें तो छोटे उन्हें कैसे देंगे? रही अपमान की बात, सो निखिल बच्चा हो, लेकिन उस का भी एक व्यक्तित्व है. क्या उस के आत्मस को ठेस नहीं लगी होगी? आप चाहते हैं निखिल बाहर की दुनिया में एक व्यक्तित्व का मालिक बने? फिर घर में वह दब्बू बना रहे?"

यह बात निखिल के पिता के मन में उतर गई. 'ठीक ही तो है,' उन सोचा, 'हम बड़े भी बच्चों के साथ दोहरा व्यवहार करते हैं? अपनी गल छिपाने के लिए, अपनी सुविधा के मुता उन्हें छोटा या बड़ा करार दे डालते हैं. उन्हें बड़ा बना कर जिम्मेदारियों अनावश्यक बोझ डाल देते हैं और तरहतरह की उम्मीदें करते हैं तो छोटा जान कर झिड़क देते हैं."

फिर वह आरती से बोले, "शायद ठीक कहती हो, आरती. अगर हम निखि को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व समझते हैं तो उसे एक व्यक्ति का सा ही सम्मान चाहिए."

"आप मेरी बात समझते हैं न? निखिल में जोश है, गरम खून है, अन्याय देखता है, सह नहीं पाता और बोल उठता है. धीरेधीरे शांति और सं के साथ अपनी बात कहना सीख जाए लेकिन..."

"लेकिन तब तक के लिए हम दोहरे बरताव से उसे दोहरी नैतिकता शिकार न होने दें. यही कहना चाहती हो आरती?"

आरती का मन पति के प्रति प्यार अभिमान से भर आया. राहत की सांस हुए वह मन ही मन सोचने लगी— पथरी जमीन में हमारे प्रेम का जो बिरवा उसे पनपने के लिए काफी संघर्ष पड़ेगा. लेकिन जब दिल मिल जाते हैं मुशकिलें अपनेआप आसान हो जाती शक्ति दोगुनी हो जाती है.

लेख • विवेक सक्सेना

बाबा भूतनाथ

एक सफल बाजीगर से अधिक कुछ नहीं.

पिछले दिनों दिल्ली से प्रकाशित होने वाली हिंदी मासिक पत्रिका 'कादंबिनी' ने दो तंत्र विशेषांक प्रकाशित किए. इस के पहले तंत्र विशेषांक अर्थात नवंबर, 1982 के अंक में संपादकीय लेख में यह कहा गया था कि पिछले साल इस पत्रिका के तंत्र विशेषांक को इतनी अधिक सफलता मिली कि इस साल इसी विषय पर दो विशेषांक प्रकाशित किए जा रहे हैं. साथ ही यह भी दावा किया गया था कि नवंबर अंक की दो लाख प्रतियां छापी गई हैं.

पर सवाल यह उठता है कि इस पत्रिका ने, जो साहित्य और भारतीय भाषाओं की एक विशिष्ट पत्रिका होने का दावा करती है, इस विशेषांक में जो कुछ भी प्रकाशित किया, उसे छापने से पहले सत्यता की कसौटी पर भी परखा? क्या यह आम पाठक को गुमराह करने और तथाकथित तांत्रिकों का प्रचार करने का प्रयास नहीं है. क्षणिक रोमांच प्रदान कर सकने के अलावा क्या इस अंक की वास्तव में कोई उपयोगिता है?

इन सभी सवालों के जवाब पाने के लिए यदि पत्रिका में प्रकाशित एकएक लेख का विवेचन किया जाए तो यही निष्कर्ष निकलता है कि उस में या तो सत्यता का कोई अंश है ही नहीं अथवा जो कुछ भी कहा गया है, उस को प्रमाणित कर पाना संभव नहीं है.

'कादंबिनी' के नवंबर, 1982 के तंत्र विशेषांक में कुल मिला कर 48 लेख हैं. इन में से एक लेख है—'बाबा भूतनाथ: चमत्कार भैरव तंत्र का,' जिसे इस पत्रिका के संपादक राजेंद्र अवस्थी ने स्वयं लिखा है और उन का दावा है कि यह लेख उन्होंने बाबा भूतनाथ से मिलने और तथ्यों की जांच करने के बाद लिखा है.

इस लेख में लखनऊ के तथाकथित तांत्रिक बाबा भूतनाथ को समाजसेवक, जीवनदाता, वैद्य, भविष्यवक्ता और न जाने क्याक्या प्रमाणित करने वाले क़िस्से दिए गए हैं. साथ ही इस लेख में यह भी कहा गया है कि बाबा भूतनाथ ने केवल तंत्रमंत्र की सहायता से दिल्ली के एक व्यक्ति का गुर्दा ठीक कर दिया, टेटेनस से पीड़ित लखनऊ के एक प्रशासनिक सेवा अधिकारी को जादुई पत्थर के स्पर्श मात्र से स्वस्थ कर दिया, एक लड़की को प्रेत से मुक्ति दिलवा दी, जम्मू कश्मीर के वर्तमान मुख्य मंत्री डा. फारूक अब्दुल्ला के बारे में जुलाई, 1982 में ही यह

लखनऊ स्थित बाबा भूतनाथ का आश्रम

भविष्यवाणी कर दी थी कि वह कशमीर के मुख्य मंत्री बनेंगे.

बाबा भूतनाथ के पास एक टेढ़ीमेढ़ी लकड़ी रहती है, जिस के बारे में राजेंद्र अवस्थी का दावा है कि उन्होंने खुद उसे सांप बनते देखा है. सवाल यह है कि जब उन्हें इस चमत्कारी लकड़ी के बारे में पहले से पता था तो उन्होंने इस लकड़ी के सांप बनते समय फोटो क्यों नहीं लिए? इस लेख में बाबा भूतनाथ के बारे में जो कुछ भी कहा गया है, वह सस्ते तिलस्मी उपन्यासों में गढ़े गए किस्सों से अधिक और कुछ नहीं है.

मैं स्वयं बाबा भूतनाथ से कई बार मिला हूं और मैं ने खुद वहां जा कर जब इन तथाकथित चमत्कारों की जांच की तो पता चला कि बाबा भूतनाथ एक सफल मदारी से अधिक और कुछ नहीं हैं. बाबा भूतनाथ के लखनऊ व कानपुर में आश्रम हैं, जहां लोगों की काफी भीड़ लगी रहती है. 'कादंबिनी' में प्रकाशित लेख में बाबा भूतनाथ के शिष्य विजय बाबू को लकवा मारे जाने और बाद में बाबा द्वारा उन्हें ठीक कर देने की बात कही गई है. मैं विजय बाबू से अच्छी तरह परिचित हूं और उन के साथ काफी अर्से तक मेरा उठनाबैठना रहा है. विजय बाबू ने मुझे खुद बताया था कि बाबा भूतनाथ ने उन से कहा कि वह पढ़ाई छोड़ कर उन के पास आ जाएं. यह घटना 1975 की है. उस समय तक न तो विजय बाबू कभी लकवे से पीड़ित ही हुए थे और न ही बाबा भूतनाथ ने उन का इलाज ही किया था.

सचाई यह है कि इन दोनों ही आश्रमों में बहुत ही सुनियोजित तरीके से लोगों के साथ नाटकबाजी की जाती है. मुझे उन कानपुर व लखनऊ स्थित दोनों ही आश्रमों में जाने व वहां की गतिविधियों का गहराई से अध्ययन करने का अवसर मिल चुका है. कानपुर में बाबा भूतनाथ का आश्रम सर्वोदय नगर में रेलवे लाइन के फाटक के पास ही है. यहां हफ्ते में एक या दो बार बाबा भूतनाथ आते हैं. विजय की आयु लगभग 28 वर्ष होगी. वह बाबा भूतनाथ का निजी सचिव और वही बाबा से मिलने का समय निश्चित करता है.

कानपुर में उन के आश्रम में बाहर और एक काफी बड़ा बरामदा है, जिस में भूतनाथ के विभिन्न फिल्मी अभिनेताओं व अभिनेत्रियों के साथ खिंचवाए फोटोग्राफ लगे हुए हैं. इन चित्रों के का एकमात्र उद्देश्य वहां आने वाले

को प्रभावित करना है. इस बरामदे में बीच में परदा डाल कर उस के दो हिस्से कर दिए जाते हैं. सामने कामाख्या देवी की मूर्ति व उस के साथ बाबा भूतनाथ का रंगीन फोटो रखा रहता है.

जब सन 1975 में मैं अपने कुछ मित्रों के साथ बाबा भूतनाथ के आश्रम में गया तो वहां काफी भीड़ लगी हुई थी. उन से मिलने वाले लोगों की काफी कड़ाई से जांच पड़ताल होती है. उस के बाद ही उन्हें मिलवाया जाता है. जिन लोगों को मिलाना होता है, उन्हें एक अलग पंक्ति में बैठा दिया जाता है. उन्हें जिस क्रम से बैठाया जाता है, उसी क्रम से अंदर भी ले जाया जाता है. वहां बैठी कुछ औरतें व पुरुष, जो खुद को बाबाजी का भक्त बताते हैं और उन के चमत्कारों का गुणगान करते हैं, बातों ही बातों में लोगों से उन की समस्या मालूम कर लेते हैं. इस के बाद वे वहां से गायब हो जाते हैं.

मैं ने अपना नाम जानबूझ कर गलत बताया था. बाहर बैठे लोगों से मैं ने बातचीत के दौरान कहा कि मैं बी.एससी. कर रहा हूं व आगे होटल मैनेजमेंट का कोर्स करना चाहता हूं. मेरे साथ लगभग 10-12 लोग और थे. एक घंटे तक इंतजार करवाने के बाद हमें अंदर ले जाया गया और उसी तरह से खड़ा कर दिया गया जैसे हम बाहर खड़े थे. जब मेरी बारी आई तो बाबा भूतनाथ ने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "कहो, बेटा अशोक, अब तुम कैसे हो? परेशान क्यों होते हो? इस साल बी.एससी. कर लो. इस साल तो तुम्हें होटल मैनेजमेंट में प्रवेश मिलना मुशकिल है, पर अगले साल जरूर मिल जाएगा. तीन साल तक भारत में रहने के बाद तुम विदेश चले जाओगे."

उन की यह बात सुन कर मन ही मन हंसी आना स्वाभाविक था, क्योंकि मैं उस समय इंटरमीडिएट का छात्र था और पत्रकारिता में जाना चाहता था. बाबा भूतनाथ ने मेरा नाम भी वही लिया जो कि मैं ने बाहर लोगों को बताया था. उन्होंने मेरे दोस्त राघवेंद्र बाजपेयी से कहा कि वह बी.ए. कर के बैंक में लग जाएगा, जब कि वह आज इंजीनियर है और मैं पत्रकारिता में हूं.

एक अन्य दोस्त ने बाहर यह कहा था कि उस का जीव विज्ञान का परचा खराब हो गया है. वह दो सवाल बिना हल किए ही परचा छोड़ आया था. बाबा भूतनाथ ने उस से दोतीन मिनट तक इधरउधर की बात की

आश्रम के अंदर स्थित मंदिर का एक दृश्य.



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और फिर सांप के आकार वाली लकड़ी का एक सिरा टेलीफोन की तरह अपने कान में लगाया और बात करने लगे जो कुछ इस प्रकार थी:

"हलो, मैं भूतनाथ बोल रहा हूं. देखो, फलां का जीव विज्ञान का परचा खराब हो गया था. इस बारे में क्या कुछ किया जा सकता है?"

फिर वह उस दोस्त की ओर मुड़ कर बोले, "यह (भूत) तो हमें यह बता रहा है कि तुम दो सवाल बिना किए ही परचा छोड़ आए थे. तुम्हारी कापी आजमगढ़ गई हुई है."

दोस्त ने ऐसा चेहरा बनाया, जैसे वह उन की बात सुन कर बहुत प्रभावित हो गया हो. वह बोला, "बाबाजी, कुछ कीजिए न."

बाबाजी बोले, "हलो, सुनो, कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा. खास मामला है. तुम पूरी कोशिश करना." इस के बाद वह दोस्त से बोले, "मैं ने एक जबरदस्त भूत को तुम्हारे काम के लिए लगा दिया है. वह तुम्हारा काम बनवाने की पूरी कोशिश करेगा. मामला बहुत बिगड़ चुका है, क्योंकि तुम ने आने में बहुत देर कर दी है."

वह दोस्त असल में गणित का छात्र था और उस ने जीव विज्ञान का कभी एक शब्द भी नहीं पढ़ा था.

मदारी की करतूत

इस के बाद बाबा भूतनाथ ने वहां खड़ी महिलाओं को उन के रोगों के बारे में बताना शुरू कर दिया. वह उन से ऐसे बात कर रहे थे जैसे वह बहुत बड़े डाक्टर हों. बातबात में हवा में हाथ कर के इलायची निकालना या फिर पांचपांच रुपए वाली अंगूठियों में जड़े जाने वाले 'तिलस्मी पत्थर' निकाल कर भक्तों को देना उन की आदत है.

हेलन से भी ज्यादा तेजी से वह 'मैक्सी' बदलते हैं. हर 10 मिनट बाद एक नई मैक्सी पहन आते हैं, जो ज्यादातर विदेशी कपड़े की बनी होती है. लड़कों से ज्यादा वह लड़कियों से बात करने में रुचि लेते हैं और बातचीत का मुख्य विषय उन के प्रेम प्रसंग होते हैं. हर लड़की से वह यह जरूर कहते हैं कि उस के आई.ए.एस. अधिकारी बनने की पूरी संभावनाएं हैं व उस के दो व्यक्तियों के साथ प्रेम प्रसंग चल रहे हैं या चलने की संभावना है.

मेरे एक परिचित आज से सात साल पहले लापता हो गए थे. उन के दो साल के अंदर लौट आने की बाबा भूतनाथ ने भविष्यवाणी की थी, पर वह आज तक लापता हैं. भक्तों में लड़कों को वह एक केला दे कर विदा कर देते हैं तो लड़कियों को दोतीन सेब या संतरे देते हैं. साथ ही उन की समस्याओं को सुनने में काफी रुचि लेते हैं.

जब उस समय बाबा भूतनाथ से भेंटवार्ता करने के लिए समय मांगा गया तो पहले तो उन्होंने बड़ी खुशी से समय दे दिया. मेरे टेपरिकार्डर में उस समय सेल नहीं थे. विजय ने पूछा कि बिना सेल के आप कैसे टेप करेंगे. मैं ने विजय से कहा कि लोगों का कहना है कि बाबा भूतनाथ में इतनी शक्ति है कि अगर वह चाहें तो बिना सेल के भी टेपरिकार्डर चला कर दिखा सकते हैं. यह सुन कर विजय चुप हो गया. कुछ देर बाद वह अंदर चला गया और फिर बाहर आ कर बोला, "अरे, मैं तो भूल ही गया था. आज तो बाबाजी का मौनव्रत है. वह आप से बात नहीं कर पाएंगे."

'कादंबिनी' के इसी विशेषांक में तंत्रमंत्र, ज्योतिष की अनेक पुस्तकों के विज्ञापन भी हैं. एक विज्ञापन प्रसिद्ध भविष्यवक्ता, प्रकांड ज्योतिषी, हस्त रेखा विशेषज्ञ एवं सिद्धहस्त तांत्रिक डा. नारायणदत्त श्रीमाली की तीन पुस्तकों का भी है. इन पुस्तकों को पढ़ कर साधारण पाठक के भी एक अच्छा सम्मोहन विशेषज्ञ बनने की बात कही गई है, पर नारायणदत्त श्रीमाली पिछले वर्ष अपने घर पर पड़ने वाले आय कर विभाग के छापे से न केवल पूर्णतया अनभिज्ञ रहे, बल्कि आयकर अधिकारियों को सम्मोहित कर सकने में भी पूरी तरह असफल साबित हुए थे. ●

ये पति



एक दिन मैं ने अपने पति से कहा, "आप की तो हर रविवार के अलावा त्योहारों को भी छुट्टी रहती है, लेकिन हम औरतों को घर के कामकाज से कभी छुट्टी नहीं मिलती."

इस पर इन्होंने कहा, "ठीक है, इस बार गुड फ्राइडे को तुम्हारी छुट्टी रहेगी. घर का कोई कामकाज नहीं करना."

मैं ने खुश हो कर पूछा, "उस दिन बरतन, झाड़ू, कपड़े धोने, खाना बनाने का काम आप करेंगे?"



झट जवाब मिला, "खाना होटल से ले आऊंगा, बाकी काम तुम अगले दिन कर लेना."

—कविता डिगवानी

*

हमारे भाई के मित्र की नईनई शादी हुई थी. उन की एक आदत बहुत बुरी थी कि जहां भी कोई लड़की देखते, वह छेड़ने लग जाते. एक बार उन्होंने अपनी पत्नी की सहेली से, जिसे वह जानते नहीं थे, छेड़खानी शुरू कर दी.

शादी के बाद पहली बार जब उन की पत्नी अपनी सहेली से मिलने आई तो उस ने सारी बात उसे बता दी. यह सुन कर उसे बहुत गुस्सा आया. उस ने अपने पति को सीधे रास्ते पर लाने की तरकीब सोची और सारी सहेलियों को इकट्ठा किया.

जब उस के पति दफ्तर जा रहे थे तो बीच बाजार में उस की सहेलियों ने उन की इतनी पिटाई की कि वह दफ्तर न जा कर हस्पताल पट्टी बंधवाने चले गए. इस के बाद वह घर लौट आए तो पत्नी ने पूछा, "यह पट्टी कैसी?"

उन्होंने बहाना बनाते हुए कहा कि साइकिल वाले ने टक्कर मार दी. इतना सुनना था कि सारी सहेलियां कमरे से बाहर निकल आईं और पूछने लगीं कि ज्यादा चोट तो नहीं लगी.

उन्होंने देखा कि वे वही लड़कियां थीं, जिन्होंने उन की पिटाई की थी. अब उन की समझ में सारी बात आ गई और उन का सिर शर्म से झुक गया.

—केशकुमार सर्मा

*

मेरे एक मित्र बहुत हंसमुख स्वभाव के हैं. इस के विपरीत उन की पत्नी बहुत सीधीसादी और शांत स्वभाव की है. एक दिन हम कई मित्र उन के घर पहुंचे तो वह बहुत अच्छे मूड में थे.

सब लोग अपनीअपनी पत्नियों के विषय में बातें करने लगे. मित्र की पत्नी जब चाय ले कर आई तो मित्र ने कहा, "मैं दफ्तर से चाहे जितनी देर से आऊं, यह खाना मेरे साथ ही खाती हैं."

हम सभी के मुंह से 'भई वाह' निकला, लेकिन तभी मित्र ने कहा, "क्योंकि खाना मुझे ही आ कर बनाना पड़ता है."

यह सुन कर मित्र की पत्नी का चेहरा देखने लायक था.

—ईश पुन्यानी

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

रैलिफ़ैन पंखों में उत्तमता समायी इसकी गारंटी है.

Rallifan
SUPERSTAR*

रैलिफ़ैन सुपरस्टार की पूरी तरह संतुलित यंत्र-रचना बेशिकायत काम के लिए है.

Rallifan
3
2
4
1
0

जब शानदार काम की बात आती है, तब रैलिफ़ैन सुपरस्टार का मुकाबला नहीं. मोटर की लंबी उम्र और बेआवाज काम के लिए डबल बाल-बियरिंग. साथ ही हवा के समान फैलाव के लिए पूरी तरह संतुलित ब्लेड, ऑल-मेटल रेग्युलेटर सहनशीलता के लिए है. ताकि आपको एक ऐसा पंखा मिले जो काम में बहुत ही कुशल हो.

सुपरस्टार पर भरोसा कीजिए. यह काम में लाजवाब है.

रैलिफ़ैन

उत्तम उत्पादनों के लिए

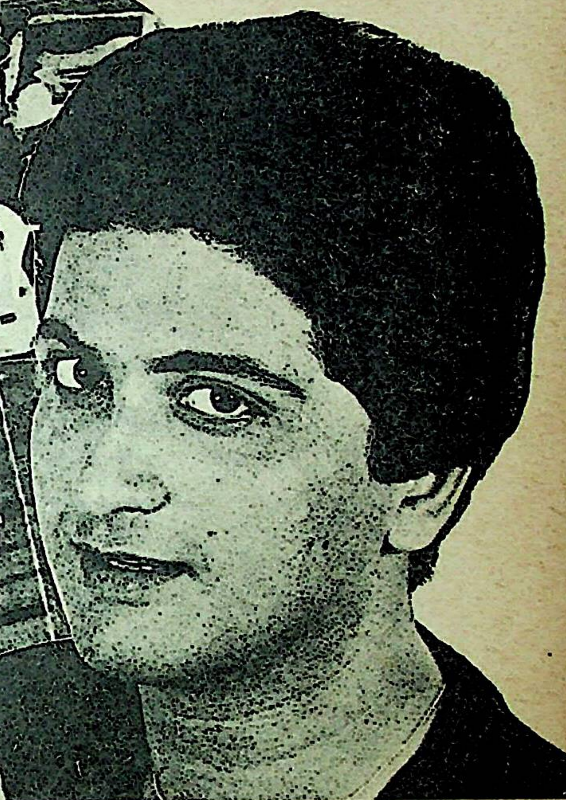


रैलीज
मल्टी-टॅक्नोलॉजी ग्रुप

ULKA-RFC-2-82

लेख •

युवा होते ही पुत्र की नुमाइश न लगाएं

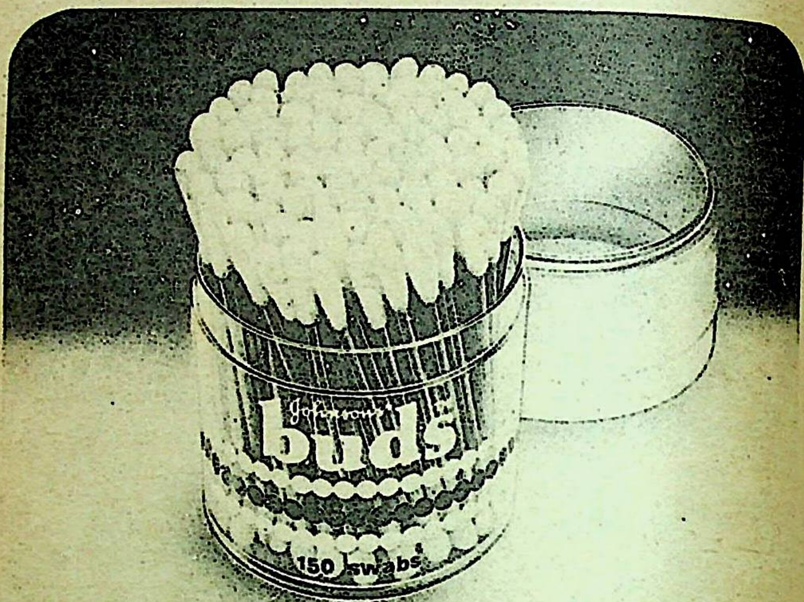


बेटे का विवाह करने से पूर्व मातापिता कुछ जरूरी बातों पर अवश्य ध्यान दें अन्यथा उन के पास हाथ मलने के अलावा कुछ नहीं बचेगा..

कई बार तो लड़की के परिवार के लोग ही नहीं, स्वयं लड़की ही लड़के को नापसंद कर देती है. कारण? लड़का कुरूप है, नौकरी मामूली है, व्यवसाय में अधिक गुंजाइश नहीं है या कारोबार अच्छा है तो डिगरियां नहीं हैं. लड़की किसी ऊंचे पद पर है तो भी वह अपने से अधिक पढ़ालिखा और अधिक आय वाला लड़का चाहती है. लड़की संपन्न परिवार की हो तो उस अवस्था में भी वह अपने से कम हैसियत वाले युवक के चयन से इनकार कर देती है. कभीकभी जातिबंधन का प्रश्न ही अड़चन पैदा कर देता है. इस के अलावा बारबार लड़की वालों को दिखाए जाने और उन की ओर से इनकार होने पर लड़के भी लड़कियों की तरह अपनी इस नुमाइश से इतने कुंठाग्रस्त हो जाते हैं कि वे फिर विवाह की चर्चा किया जाना भी पसंद नहीं करते.

ऐसे में लड़के को मनोरंजन के साधन और हंसीमजाक भी अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाते. जिन बातों में उसे पहले दिलचस्पी रही है, अब उस से भी चिड़चिड़ाहट पैदा होने लगती है. नतीजा यह होता है कि अपने परिवार में रहते हुए भी युवक एकांतप्रिय हो जाता है और अपने को अकेला महसूस करने लगता है.

अब लीजिए जॉन्सन्स* बड्स™



कानों की सफ़ाई का सुरक्षित स्वास्थ्यप्रद तरीक़ा

माचिस की तीली, हेयरपिन, साड़ी का पल्लव या तौलिये के कोने का इस्तेमाल... अस्वास्थ्यकर तो है, ख़तरनाक भी हो सकता हैं.
जॉन्सन्स बड्स पर भरोसा कीजिए. कानों के लिए ज़रूरी प्रतिदिन की कोमल सफ़ाई के लिए जॉन्सन्स बड्स से बढ़कर कोमल, सुरक्षित और स्वास्थ्यप्रद और कुछ नहीं है.
जॉन्सन्स बड्स के ऊपरी सिरे कोमल गद्देदार होते हैं ताकि आप कानों की सफ़ाई बड़ी कोमलता और सुरक्षा से कर सकें और हलके तने लचीले हैं, झुक जाते हैं, लेकिन टूटते नहीं.
जॉन्सन्स बड्स. आपके लिए विशेषरूप से निर्मित.
पैक पर दिए गए प्रयोग के निर्देशों का पालन कीजिए.



सफ़ाई में सावधानी
जॉन्सन्स बड्स.

Johnson & Johnson

'TM and *Trademarks' © J&J 81

OBM-6685

मायाजी संपन्न परिवार की एक भावुक महिला हैं, पढ़ीलिखी, विशाल हृदय और आधुनिक विचारों वाली. बहुत समय तक संतान नहीं हुई तो एक लड़की को गोद ले लिया. संयोग से एक पुत्र ने भी जन्म ले लिया. दोनों बड़े स्नेह से पल कर युवा हुए. लड़की की शादी दो वर्ष पूर्व एक अच्छे घर में हो गई. दामाद भी सुंदर और पढ़ालिखा है तथा उस का कारोबार भी अच्छा है. अपने बच्चों से मायाजी का व्यवहार हमेशा मित्रवत रहा है. बड़ा गर्व रहा है उन को अपनी संतान पर. लड़का भी पढ़ाई पूरी कर अच्छी नौकरी में लग गया है. स्वभावतः अनेक लोग उन के लड़के के साथ अपनी लड़की के विवाह संबंध के लिए आए. लड़के को दिखाने में मायाजी को कोई आपत्ति नहीं रही है, क्योंकि जहां भी मनपसंद लड़की मिलेगी स्वीकृति तो वहीं देंगी.

परंतु कुछ दिन पूर्व वह बाजार में मिलीं तो लड़के की शिकायत करतेकरते एक रहस्योद्घाटन कर बैठीं. बोलीं, "नितिन के लिए कई जगह लड़कियां देखीं, परंतु कोई पसंद ही नहीं आई. उधर नितिन को मालूम नहीं क्या हो गया है बजाए सलाह देने के विवाह करने से ही इनकार करने लगा है. बहुत एकांतप्रिय हो गया है वह. किसी से मिलनाजुलना ही पसंद नहीं करता. साधारण सी बात का उत्तर भी कटु शब्दों में देता है. कुछ भी काम करने को कहती हूं तो टाल जाता है. दफ्तर से लौटने के बाद उपन्यास ले कर बैठ जाएगा या दोस्तों से गप्पें लड़ाने बाहर निकल जाएगा. पड़ोस के बच्चों में भी उस की कोई दिलचस्पी नहीं रही. पहले पढ़ालिखाई में उन की खूब मदद करता था. अब यह भी उसे अच्छा नहीं लगता."

उन्होंने उस के मित्रों को बुराभला कहते हुए और भी न मालूम क्याक्या कहा. सुन कर आश्चर्य हो रहा था. मन में बारबार यही प्रश्न उठता कि नितिन तो बड़ा मिलनसार, मृदुभाषी और आज्ञाकारी लड़का था. छोटेबड़े सभी उसे चाहते हैं. इस तरह उस के स्वभाव में अंतर आने के कारण कहीं सचमुच उस के संगीसाथियों की संगत ही तो नहीं जैसा कि उस की मां को संदेह है?

लेकिन बाद में पता चला कि जब भी नितिन के विवाह की बात चलती है और लड़की वाले उस को देखने आते हैं या उस को किसी अच्छी लड़की की फोटो दिखाई जाती है तो उस का भावुक मन फौरन ही उसे चाहने लगता है. यह उम्र ही ऐसी होती है कि हर खूबसूरत चीज पर मिट जाने को जी चाहता है. फलतः युवा नितिन का हृदय भी यह चाहने लगा है कि किसी लड़की से उस का प्यार हो. वह हमेशा अपने भावी जीवन के सपनों में ही खोया रहता है.

लड़के की राय अवश्य लें

उधर नितिन के मातापिता हैं कि इस बात को महसूस ही नहीं करते. कभी वे किसी लड़की को नापसंद कर देते हैं तो कभी कोई लड़की वाला ही लौट कर कोई खबर नहीं देता. कारण जो भी हो, इस से नितिन के सपने टूट जाते हैं. अनेक बार इस तरह की घटनाएं होने के बाद अब तो नितिन ने अपनी मां से स्पष्ट शब्दों में कह दिया है, "मां, तुम मेरी चिंता छोड़ दो, अभी मुझे शादी नहीं करनी है."

दरअसल इस में मायाजी का दोष नहीं है. उन के बेटे ने ही उन से कहा था कि उसे योग्य और जीवन भर साथ निभाने वाली लड़की चाहिए, तड़कभड़क, दिखावे और खूबसूरती पर मर मिटने वाली नहीं. वह ऐसी ही लड़की की तलाश में थीं, परंतु अभी तक उन्हें ऐसी कोई लड़की नजर नहीं आई थी, इसी लिए उन्होंने सब को नापसंद कर दिया था, लेकिन नितिन इस बारबार के इनकार का कुछ और ही मतलब निकाल बैठा. मायाजी बिना कारण उस की दृष्टि में अपराधिनी बन गईं.

अपने बेटे के लिए विवाह की बात शुरू करने से पूर्व आप का यह जानना जरूरी है कि आप का बेटा कैसी लड़की से विवाह करना चाहता है—घरेलू किस्म की लड़की से या

नौकरी करने वाली से. यह जानने में आप को ज्यादा कठिनाई नहीं होगी. उस के छोटे भाईबहन, मित्र या रिश्ते की भाभियां इस काम में आप की पूरी सहायता करेंगी. यदि आप का अपने बेटे के साथ व्यवहार मित्रवत है तो आप स्वयं भी मालूम कर सकती हैं. नहींनहीं करते हुए भी आप को सही उत्तर मिल जाएगा.

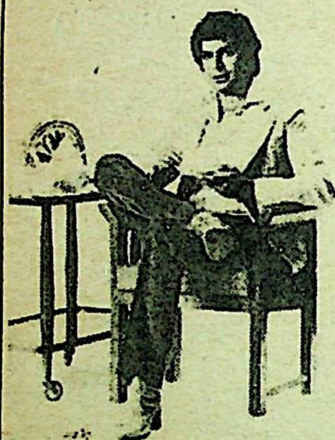
विवाह के लिए आप जिस किसी भी लड़की का चयन करें, उस के परिवार के लोगों से मिल कर पहले ही इस बारे में अपनी संतुष्टि कर लें कि उस की पारिवारिक पृष्ठभूमि क्या है. बातचीत तो अनेक जगहों में चलती है, परंतु जहां तक हो सके बेटे को मालूम ही न होने दें. उस के मन मुताबिक लड़की मिलने पर और सारी बातें पक्की हो जाने के बाद ही लड़के लड़की को एकदूसरे को देखने का अवसर दें. बारबार हर लड़की वाले के सामने उसे न बिठाएं. वह कोई नुमाइशी चीज तो है नहीं. अनेक कारणों से बात बनतेबनते रह जाती है और लड़का भी नापसंद कर दिया जाता है.

आप भावुक दृष्टि से नहीं, बल्कि अनुभवी दृष्टि से लड़की को परखेंगी जब कि पुत्र में केवल भावना की ही प्रधानता होगी. भावना को ठेस लगते ही उस के मन पर बुरा प्रभाव पड़ेगा. भावुक और कोमल हृदय युवक बुरी तरह खीज उठते हैं और शादी करने से इनकार करने लगते हैं.

कभीकभी ऐसा भी होता है कि युवा होते पुत्र आत्मकेंद्रित हो कर अपने व्यावसायिक जीवन को बनाने की चिंता में लग जाते हैं. वे चारों ओर से अपना ध्यान हटा कर ऊंची से ऊंची शिक्षा प्राप्त करने और अधिक से अधिक आय वाले व्यवसाय में लग जाने की चिंता में जुट जाते हैं. ऐसे युवा ही जीवन में सब से अधिक सुखी और सफल जीवन बिताते हैं, परंतु इस उम्र में सब में इतनी बुद्धि कहां होती है? जिन युवा लोगों के सम्मुख विवाहशादी की बातें चलती रहती हैं, वे उसी को अपने जीवन का लक्ष्य मान बैठते हैं.

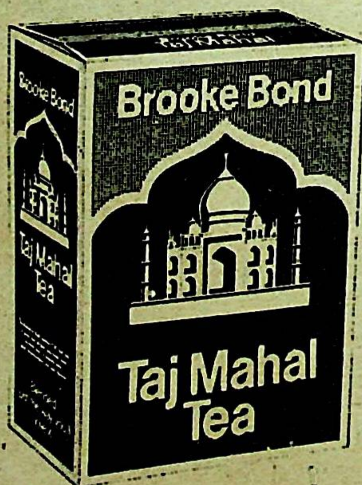
मातापिता के ध्यान न देने पर युवा बेटे भटक भी जाते हैं. वे कालिज में या आसपड़ोस की किसी किशोरी को मित्र बना लेते हैं, उस से मर मिटने का वादा करते हैं, झूठी कसमें खाते हैं. पिक्चरें देखना व एकांत स्थलों में घूमना उन के प्रिय शौक बन जाते हैं. पैसा, समय और चरित्र तो बरबाद होता ही है, पढ़ाईलिखाई, कामधंधे पर भी इस का बुरा प्रभाव पड़ता है. कभीकभी यह उच्छृंखलता बड़ी महंगी पड़ती है और मातापिता के लिए उन का यह कदम लज्जास्पद सिद्ध होता है. फिर उन के पास हाथ मलने के अतिरिक्त कुछ नहीं बचता. इस भूलभुलैया के जंगल से उन्हें दूर ही रखें. ●

चाय के समय से मेरी
कोई दिलचस्पी नहीं थी।
लेकिन अब...



वाह!ताज





गरमागरम ज़ायक़ेदार ताज चाय पीने के बाद मु
अहसास हुआ कि चाय का समय भी कितना खूबसूर
सकता है। मैं तो इसके ज़ायक़े का दीवाना हो गया
सचमुच मज़ेदार ज़ायक़ा है इसका। ताज की भरपूर
से मुझमें एक नई जान आ गई और इसे पीते ही मैं
अन्दर ताज़गी की उछाल महसूस करने लगा।
वाह! ताज! यही तो है तेरा राज़!

ब्रुक बॉंड
ताजमहल चाय

ज़ायक़ा और तेज़ी

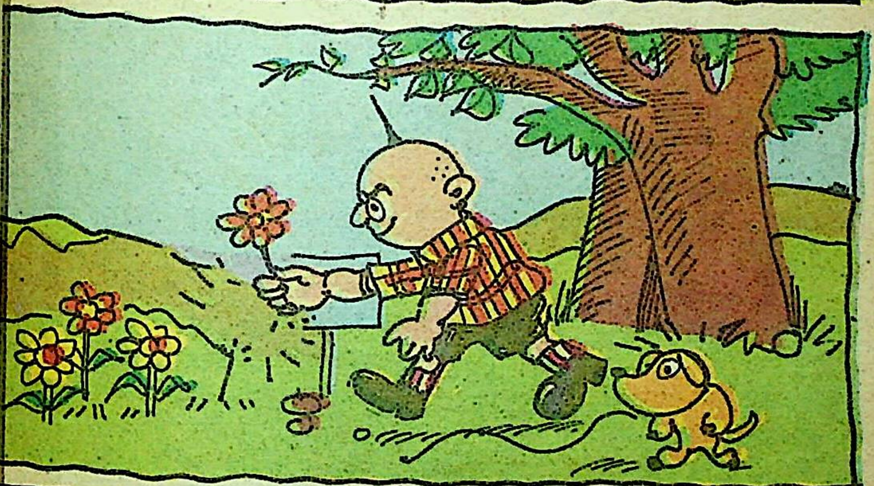
एक शानदार ब्लेंड जिसे आप बेहद पसन्द करेंगे

HTC-BBI-4730

ननमुन

—पंकज गोस्वामी—







वेदों में क्या है?

जनसाधारण को वेदों के विषय में सही जानकारी देने के लिए सरिता में इस स्तंभ में हर बार ऋग्वेद के एक सूत्र का (सायण भाष्य पर आधारित) अविकल अनुवाद (अनुवादक डा. गंगासहाय शर्मा, एम.ए. (हिंदीसंस्कृत), पीएच.डी., व्याकरणाचार्य) प्रकाशित किया जा रहा है.

(प्रथम मंडल)

सूक्त-८४

देवत

हे इंद्र! तुम्हारे निमित्त सोम निचोड़ लिया गया है, अतएव हे बल शत्रुघर्षक! यज्ञस्थल में आओ. जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों द्वारा आकाश हैं, उसी प्रकार सोमपान से उत्पन्न शक्ति तुम्हें पूर्ण करे. (१)

हरि नामक दोनों घोड़े अप्रधर्षित बल वाले इंद्र को वशिष्ठ आदि ऋषियों मनुष्यों की स्तुति एवं यज्ञ के समीप पहुंचावें. (२)

हे शत्रुविध्वंसकारी इंद्र! तुम्हारे दोनों घोड़ों को हम ने मंत्र द्वारा रथ में जोड़ इसलिए रथ पर चढ़ो. सोम कूटने के लिए प्रयुक्त पत्थर का शब्द तुम्हारा मन ओर फेरे. (३)

हे इंद्र! अतिशय प्रशंसनीय, अमारक एवं मादक सोम को पियो. यज्ञ संबंधी वर्तमान तेजस्वी सोम की धाराएं तुम्हारी ओर बहती हैं. (४)

हे ऋत्विजो! इंद्र का शीघ्र पूजन करो. इंद्र को लक्ष्य कर के स्तुतियां करो. हुआ सोम इंद्र को प्रसन्न करे. इस के पश्चात परम प्रशंसनीय एवं शक्तिशाली प्रणाम करो. (५)

हे इंद्र! जब तुम अपने हरि नामक अश्वों को रथ में जोड़ देते हो, उस समय श्रेष्ठ रथी कोई नहीं होता. तुम्हारे समान बली एवं सुंदर अश्वों का स्वामी भी है. (६)

हव्य देने वाले यजमान को धन देने वाले इंद्र शीघ्र ही समस्त जगत के ईश हैं. (७)

जैसे बरसात में उगी छतरियों को सहज ही पैर से कुचल दिया जाता है, उसी इंद्र यज्ञ न करने वालों का हनन करेंगे. इंद्र हमारी प्रार्थनाएं न जाने कब सुनें

हे इंद्र! तुम निचुड़े हुए सोम द्वारा सेवा करने वाले यजमान को शीघ्र ही करते हो. (९)

श्वेत वर्ण गाएं रसयुक्त एवं सभी प्रकार के यज्ञों में व्यापक मधुर सोम करती हैं. वे शोभा बढ़ाने के लिए कामवर्षी इंद्र के साथ चलती हुई प्रसन्न दूध दे कर निवास करने वाली वे गाएं इंद्र का अधिकार प्रदर्शित करती हैं.

इंद्र को छूने की अभिलाषा करने वाली ये विभिन्न रंगों की गाएं इंद्र के सोम को अपने दूध से मिश्रित कर देती हैं. ये गाएं इंद्र में ऐसा मद उत्पन्न करती

त्रुनाशक वज्र को चला सकें. ये गाएं इंद्र का अधिकार प्रदर्शित करती हैं. (११)

प्रकृष्ट ज्ञानयुक्त ये गाएं अपना दूध पिला कर इंद्र की शक्ति बढ़ाती हैं. ये शत्रुओं की जानकारी के लिए शत्रु के विनाश आदि कर्म पहले ही बता देती हैं. इस प्रकार ये इंद्र का अधिकार प्रदर्शित करती हैं. (१२)

प्रतिकूल शब्दरहित इंद्र ने दधीचि ऋषि की हड्डियों द्वारा बने हुए वज्र से वृत्र आदि राक्षसों को आठदस बार हराया था. (१३)

इंद्र ने अश्व संबंधी दधीचि के पर्वत में छिपे हुए मस्तक को पाने की इच्छा की एवं शर्यणावति नामक तालाब में प्राप्त किया. (१४)

इस गतिशील चंद्र मंडल में जो तेज छिपा है, वे सूर्य की किरणें हैं, ऐसा जानो. (१५)

आज यज्ञ में जाते हुए इंद्र के रथ के अग्र भाग में वीर्य कर्म युक्त, तेजस्वी शत्रुओं द्वारा असहनीय क्रोध से युक्त घोड़ों को कौन जोड़ सकता है? शत्रुओं पर प्रहार करने के लिए उन घोड़ों के मुख में बाण लगे हैं. वे अपने पैरों से शत्रुओं का हृदय कुचल कर मित्रों को प्रसन्न करते हैं. जो यजमान अश्वों की प्रशंसा करता है, वही जीवन प्राप्त करता है. (१६)

अनुग्रहकर्ता इंद्र के होते हुए शत्रुओं से भयभीत हो कर कौन निकलता है एवं शत्रुओं द्वारा नष्ट होता है? अर्थात कोई नहीं! हमारे समीपस्थ इंद्र को रक्षक के रूप में कौन जानता है? पुत्र की, अपनी, धन की एवं शरीर की रक्षा के लिए इंद्र की प्रार्थना कौन करता है? अर्थात प्रार्थना के बिना ही इंद्र रक्षा करते हैं. (१७)

इंद्र को जानना कठिन है, इसलिए कौन यजमान इंद्र के निमित्त हवि दे कर अग्नि की स्तुति करता है? वसंत आदि ऋतुओं को लक्षित कर के स्रुच नामक पात्र में घी ले कर कौन इंद्र की पूजा करता है? किस यजमान के लिए देवगण अविलंब प्रशंसनीय धन देते हैं? यज्ञकर्ता एवं देवप्रिय कौन यजमान है जो इंद्र को जानता है? अर्थात कोई नहीं. (१८)

हे शक्तिशाली इंद्र! तुम अपनी स्तुति करने वाले मनुष्य की प्रशंसा करो. हे मघवन! तुम्हारे अतिरिक्त कोई सुख देने वाला नहीं है. इसी कारण मैं तुम्हारी स्तुति करता हूं. (१९)

हे निवासदाता इंद्र! तुम्हारे संबंधी प्राणिसमूह तथा सहायक मरुद्गण कभी हमारा विनाश न करें. हे मनुष्य हितकारक इंद्र! हम मंत्र दृष्टाओं को सभी संपत्तियां दो. (२०)



उदास मत होना

यों अकेले में कभी
आए याद मेरी
सौगंध मेरे प्यार की
मनुहार की
उदास मत होना.



पूछ लेना झांक कर उस
झील में
वह बता देगी पता मेरा
पर्वतों के पार जाती
उस हवा से
जो मेरे होंठों को छू कर
खोजती है गंध कस्तूरी
हिरन सी
वह बता देगी पता मेरा.

डर यही है
खो न जाऊं मैं
उन्हीं गहरी गुफाओं में
जो संकोच से
गुमनाम हैं मन के पहाड़ों में
खोज लेना तुम वहां भी
शायद मुझ को पा सको?

—विश्वमोहन माथुर

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए



और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किय फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. भी हजारों वर्ग मील भारतीय विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पू लिए बहुत बड़े पैमाने पर सा सहयोग और सद्भाव की आवश होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, पूंजीपति या राजनीतिक दल से सं नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रका सहायता स्वीकार करती है. यह एक ही वर्ग की सहायता और बलबू निर्भर है. और वह हैं सरिता के इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साह सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी सरकार का और देशी व वि

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.



अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

नए पकवान

चावल और पनीर के कटलेट

सामग्री : दो कप पके चावल, 2 कप अमूल चीज कद्दूकस किया हुआ, एक छोटा प्याज बारीक कतरा हुआ, एक छोटी हरी मिर्च बारीक कतरी हुई, एक बड़ा चम्मच हरी धनिया बारीक कतरी हुई, एक छोटा चम्मच बारीक कटा अदरक, नमक स्वादानुसार व इतनी टमाटर कैचप जिस में सारी सामग्री आपस में मिल सके, एक अंडा फेंटा हुआ व कुछ ब्रेड क्रंब ऊपर लगाने के लिए.

विधि : चावल में सभी मसाले व टमाटर कैचप डाल कर आपस में मिला लें.

इस से चार गोले बना लें व इन्हें चपटा कर के गोल कटलेट्स का आकार दे दें. अब प्रत्येक कटलेट को अंडे में डुबोएं व ब्रेड क्रंब लगा कर तवे पर कम घी डाल कर तल लें.

लीजिए तैयार है, शानदार स्वाद वाले कटलेट्स.



मसूर कबाब

सामग्री : 400 ग्राम साबूत मसूर की दाल, 100 ग्राम प्याज, 15 लहसुन की तुरियां, 15 ग्राम ताजी हरी धनिया की पत्तियां, एक छोटा चम्मच गरम मसाला, एक कप ब्रेड क्रंब, स्वादानुसार नमक व तलने के लिए घी या तेल.

भरने के लिए सामग्री : 150 ग्राम प्याज, 5-6 हरी मिर्चें, 50 ग्राम हरी धनिया, 2 छोटे चम्मच अमचूर.

विधि : दाल को प्रेशर कुकर में धनिया, अदरक व लहसुन डाल कर 20 मिनट तक पकाएं. आंच से उतार कर फालतू पानी फेंक दें व ठंडा होने पर दरदरी कर लें. अब इस में नमक व गरम मसाला स्वादानुसार डाल दें.

अब भरने की सामग्री तैयार करें. 50 ग्राम प्याज कतर कर हलके भूरे कर लें. अब इस में कतरी हुई हरी धनिया, हरी मिर्चें व आधा चम्मच नमक व अमचूर डालें.

अब दाल वाली सामग्री में भरने वाली सामग्री डाल कर मनपसंद आकार के कटलेट्स बना लें व ब्रेड क्रंब लगा लें.

तवा गरम करके उस पर थोड़ा सा घी डालें, कटलेट्स सुनहरी भूरे रंग के तल लें. प्याजों के गोल छल्लों, उबले अंडों के छल्ले लगा कर टमाटर सास के साथ परोसें.

"मामाजी, आप...!" सुरेंद्र के चेहरे पर आश्चर्य तथा उल्लास के मिश्रित भाव उभर आए.

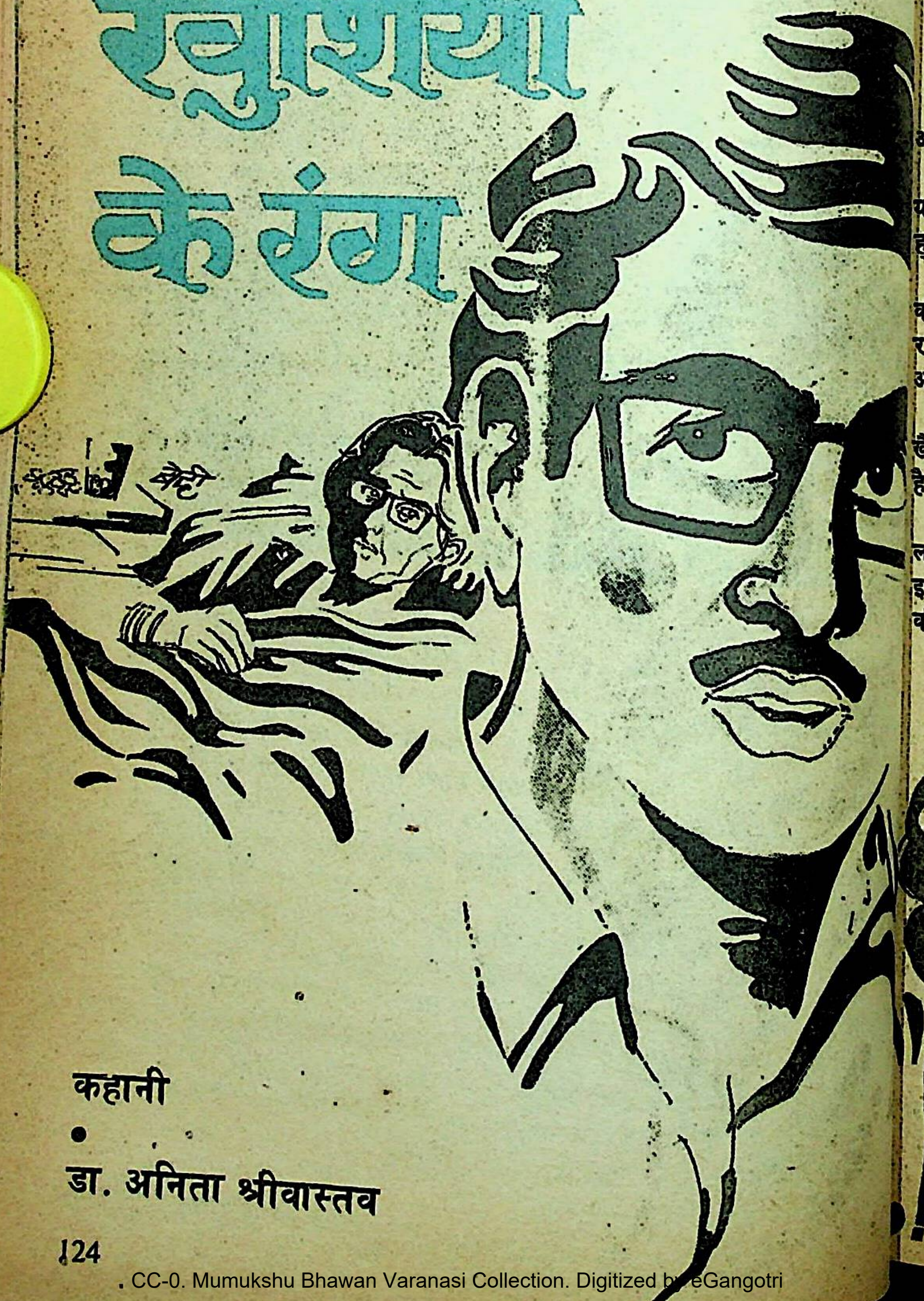
"कौन है भाई?" रामप्रसादजी की चश्मे से झांकती आंखें आश्चर्य से फैल गईं.

"मैं हूं, मामाजी, आप का मुन्ना."

"अरे मुन्ना, तू! कितना बदल ग-रे, पहचानने में ही नहीं आ रहा है."

"मामाजी, छः साल हो गए हैं मिले. अब तो कुछ परिवर्तन आएगा मामाजी, अच्छा यह तो बताइए, यहां

खुशियों के रंग



कहानी

•

डा. अनिता श्रीवास्तव

घर छोड़ते वक्त सुरेंद्र ने सोचा था कि वह रिश्ते के धागों को तोड़ देगा, लेकिन आज वापस घर लौटने पर उसे लगा कि वह अब तक कितने भुलावे में था.



आना हुआ?" सुरेंद्र ने उत्सुकतावश पूछा.

"अरे मुन्ना, तू नहीं जानता.मेरी पिंकी यहीं लखनऊ में ही तो है. उस की शादी यहीं हुई है."

"तो पिंकी इतनी बड़ी हो गई है कि उस की शादी भी हो गई? जब मैं कानपुर में रहता था तो वह फ्राक पहनती थी और आठवीं क्लास में पढ़ती थी."

"अब तो वह बी. ए. पास कर चुकी है. खैर, तुम अपनी सुनाओ, कैसे हो? बहू कैसी है? बच्चे कितने हैं?"

"शुभा ठीक है और तीन बच्चे हैं—दो लड़कियां तथा एक लड़का," सुरेंद्र ने कहा. इस के बाद उस ने कनखियों से रामप्रसादजी की ओर देखा. छः साल में कितना अधिक परिवर्तन हो गया था. उन की कनपटी के सारे बाल सफेद हो गए थे. शरीर भी ढल गया था. जब वह कानपुर में रहता था तो रामप्रसादजी कितने चुस्त व गठीले शरीर के थे. इतने अधिक वृद्ध भी नहीं लगते थे. उसे अपने घर की याद आने लगी. मां, नरेंद्र भैया, महेंद्र भैया और दोनों भाभियों का चेहरा उस की आंखों के आगे घूम गया.



"मां कैसी हैं? घर में और लोग कैसे हैं?" न चाह कर भी वह पूछ बैठा.

इस प्रश्न से रामप्रसादजी का चेहरा अचानक बुझ सा गया. वह धीमे स्वर में बोले, "मुन्ना, विद्या बहन को तो दो बार दिल का दौरा पड़ चुका है. बेचारी खाट पर ही लेटी रहती है. तेरी मां बहुत बीमार है, मुन्ना."

सुन कर सुरेंद्र का मन व्यथित हो उठा. जब वह घर आया तो उस का क्लांत चेहरा देख कर शुभा पूछ बैठी, "क्या बात है? आज आप बड़े परेशान दिख रहे हैं."

शुभा के इस प्रश्न से उस की आंखें नम हो गईं. अपनी आंखों को पोंछते हुए उस ने भरे गले से कहा, "शुभा, मां बहुत बीमार हैं. उन्हें दो बार दिल का दौरा पड़ चुका है."

"तुम्हें कैसे पता चला?"

"हमारे घर के सामने वाले रामप्रसाद मामा आज मिले थे, वही बता रहे थे."

"ओह, तब तो तुम्हें फौरन कानपुर जाना चाहिए."

"हूं," सुरेंद्र ने जैसे कुछ सोचते हुए

आगे पृष्ठ 128 पर

- सौंदर्य प्रसाधनों के इस्तेमाल की सही जानकारी.
- मिनटों में वधू का सा मेकअप स्वयं घर में कैसे करें.
- मुहांसों से छुटकारा पाने के उपाय.
- किस तरह अपने चेहरे के दागधब्बे मिटाएं भी, छिपाएं भी.
- हाथ पांव, वक्षःस्थल, कमर, पीठ, जंघाओं, बांहों में आकर्षण बढ़ाने वाले व्यायाम व सौंदर्य उपचार.
- छोटे, लंबे व मध्यम आकार के बालों की नई केशसज्जाएं
- बिंदी का प्रयोग कैसे करें

इस के अतिरिक्त विभिन्न सौंदर्य संबंधी समस्याओं के समाधान के उपयोगी तरीके.

साथ ही गृहसज्जा, हस्तकला, फिल्मों, बुनाईकढ़ाईसिलाई, बागबानी, स्वास्थ्य व पकवानों पर रंगीन चित्रों सहित सामग्री.घरगृहस्थी की समस्याओं व कहानियां व व्यंग्य.

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराएं



दिल्ली प्रेस प्रकाशन

मनोरंजन से भरपूर महिलाओं को रिझाने वाली संपूर्ण पत्रिका

पृष्ठ 125 से आगे

उस की बात का समर्थन किया. वह मन ही मन सोच रहा था कि शुभा ठीक कह रही है. जब से उस ने घर छोड़ा था, तब से वह यही समझता रहा था कि उस ने अपने दिल से पुरानी यादों को निकाल कर फेंक दिया है. रिश्तों के धागों को तोड़ दिया है, लेकिन अब उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह अब तक भुलावे में था. तभी तो मां की बीमारी की बात सुन कर उस का मन एकाएक विक्षुब्ध हो उठा. मां को देखने के लिए वह व्याकुल हो उठा और उस ने सुबह की गाड़ी से ही कानपुर जाने का निर्णय ले लिया.

रात को उस ने एक अटैची में अपने कुछ कपड़े रखे. कपड़े रखने के बाद वह आरामकुरसी पर बैठ कर मां के विषय में सोचने लगा. मां की ममता के लिए वह हमेशा तरसता रहा था. समुद्र के रहते हुए भी उसे एक बूंद की तलाश थी. अपने दोनों हाथों से उस ने अपना चेहरा ढांप लिया और थोड़ी ही देर में उसे अपनी पलकों के भीग जाने का एहसास हुआ. उस ने झट से अपनी आंखें पोंछ डालीं और उठ कर कमरे की बत्ती बुझा दी. चांदनी रात होने के कारण कमरे में अब भी हलकाहलका प्रकाश था. शुभा और तीनों बच्चे पलंग पर सो रहे थे. मगर उस की आंखों में नींद नहीं थी. उसे रहरह कर बीती घटनाएं याद आ रही थीं.

घर में वह सब से छोटा था. सब से बड़ा नरेंद्र था, जो उस से 10 साल बड़ा था. नरेंद्र डाक्टर बन गया था. मां के पैसों से कानपुर में उस का क्लीनिक खुल गया था. महेंद्र दूसरे नंबर पर था, वह उस से आठ साल बड़ा था. पिताजी के मरने के बाद उन की बिसाती की दुकान महेंद्र ने संभाल ली थी. केवल सुरेंद्र का ही भविष्य अनिश्चित था.

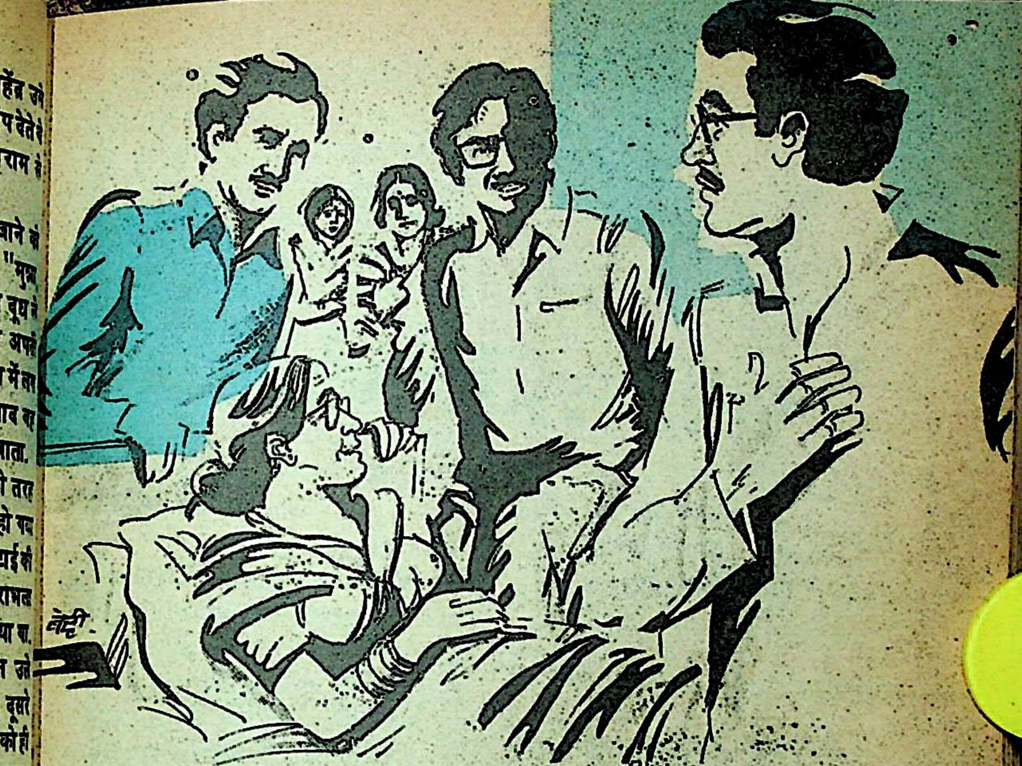
नरेंद्र और महेंद्र दोनों ही बहुत सुंदर थे. मां और पिताजी भी सुंदर थे. न जाने वह कैसे बदसूरत पैदा हो गया था. वह तो बस एक अनचाही औलाद की तरह टपक गया था. यही कारण था कि मां उसे हमेशा ही झिड़कती रहती थीं. नरेंद्र तथा महेंद्र उसे जबतब घर का कोई न कोई काम सौंप देते थे और स्वयं मालिक की तरह आराम से कुरसी पर बैठे रहते थे.

जब नरेंद्र अपनी क्लीनिक जाने को होता तो मां सुरेंद्र को आवाज देती, "मुन्ना, जल्दी से नरेंद्र के लिए एक गिलास दूध ले आ." मां की आवाज सुनते ही वह अपनी पढ़ाई छोड़ कर अपनी मां के कहे काम में लग जाता. दोपहर स्कूल से लौटने के बाद वह महेंद्र के लिए दुकान पर खाना ले जाता.

उसे अभी तक वह दिन अच्छी तरह याद था जब वह हाई स्कूल में फेल हो गया था, तब नरेंद्र ने उस की जम कर पिटाई की थी. महेंद्र और मां ने भी उसे खूब बुराभला कहा था. उसे तब सभी पर गुस्सा आया था. एक तो उस की रुचि के विपरीत उसे विज्ञान के विषय दिला दिए गए थे, दूसरे घर के हर छोटेमोटे काम के लिए उस को ही दौड़ाया जाता था. जब उस ने मां से ट्यूटर लगाने की बात कही थी तो मां ने बुरा सा मुंह बना कर कहा था, "अपनेआप नहीं पढ़ सकता क्या? ट्यूटर लगा कर खामखां खर्च बढ़ाना चाहता है."

नरेंद्र और महेंद्र कमाते थे, इसलिए मां उन पर किए गए खर्चों का हिसाब ही नहीं रखती थी, परंतु उस पर किया जाने वाला कोई भी खर्च मां को बड़ा अखरता था. कभीकभी वह इस भेदभाव के बारे में सोचसोच कर अकेले में खूब रोता था. उसे घर में कोई भी अच्छा नहीं लगता था. हां, सामने के घर में रहने वाले रामप्रसाद मामा उसे बहुत अच्छे लगते थे. रामप्रसाद हमेशा उसे अपने बच्चे की तरह प्यार किया करते थे. उन के केवल दो लड़कियां थीं– निशि और पिंकी. निशि बड़ी थी और पिंकी छोटी. उन के कोई बेटा नहीं था. शायद इसी लिए वह सुरेंद्र को 'बेटाबेटा' कह कर पुचकारते थे.

सुरेंद्र की मां उन की मुंहबोली बहन थीं. वह अकसर उस की मां को समझाते, "विद्या, तुम मुन्ना को हर समय झिड़का मत



करो. उस का यही तो कुसूर है कि वह बदसूरत है और इतने सालों बाद इस घर में अनचाहे आ गया. लेकिन इन दोनों बातों के लिए उस का क्या दोष?" उत्तर में सुरेंद्र की मां केवल 'उंह' कह कर रह जातीं.

जब नरेंद्र की शादी हुई तो सुरेंद्र ने सोचा कि भाभी के प्यार में वह अपने दुखों को भूल जाएगा, लेकिन उस का यह अनुमान गलत सिद्ध हुआ. उस की भाभी सुनीता हमेशा महेंद्र से ही बातें किया करती थी. उस से वह बस इसी तरह की बात करती, "मुन्ना, जरा भाग के विभा के यहां कह दे कि मैं ने बुलाया है" या "मुन्ना, जरा बाजार से यह सामान तो ला दे."

वह दौड़दौड़ कर सुनीता का सब काम करता, मगर सुनीता फिर भी उसे महेंद्र की तरह प्यार नहीं करती, जब कि महेंद्र सुनीता के लिए एक तिनका तक नहीं उठाता था.

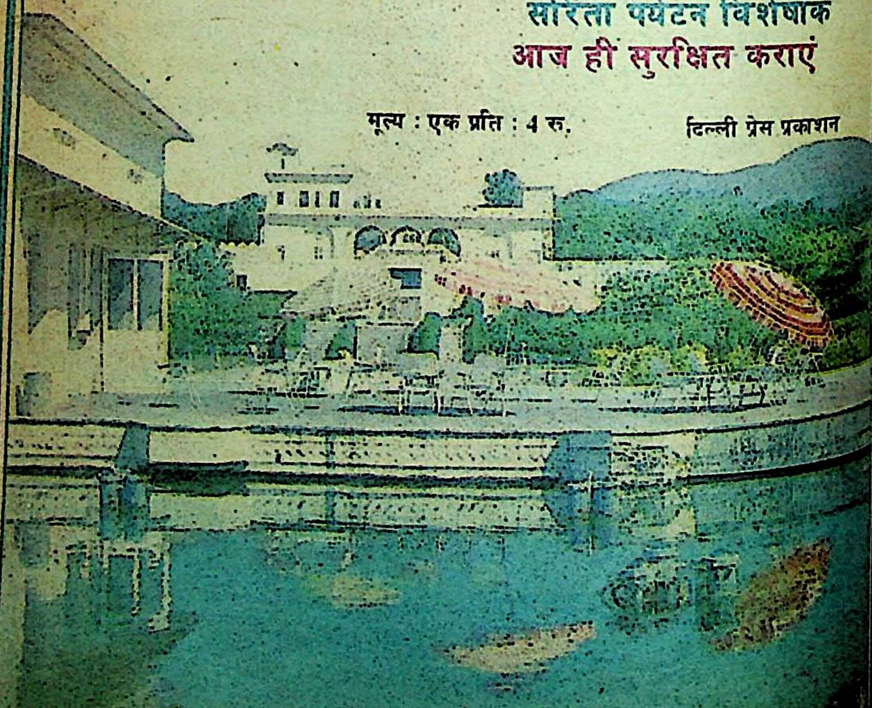
महेंद्र की शादी हुई तो महेंद्र की पत्नी शोभा भी सुनीता जैसी निकली. वह भी सुरेंद्र से 'मुन्नामुन्ना' कह कर घर के सब काम

"मुझे मेरा हिस्सा चाहिए, बड़े दा." सुरेंद्र के मुंह से यह बात सुन कर सब उस की तरफ देखने लगे. ▲

करवा लेती और बदले में प्यार के दो शब्द भी न बोलती. नईनई शादी के चक्कर में महेंद्र ने दुकान से खूब छुट्टी ली और फिर दुकान की देखभाल सुरेंद्र को ही करनी पड़ती. तब वह बी.एससी. में पढ़ता था. पढ़ाई के साथसाथ दुकान पर बैठना, सारा हिसाबकिताब रखना सब काम उस के जिम्मे था. वह थक जाता था. पर उस के थकने की किसी को परवाह नहीं थी. उधर मां दोनों बहुओं से लाड़ लड़ाने में लगी रहती थीं. सुरेंद्र की चिंता उन्होंने कभी नहीं की थी.

सुरेंद्र ने हमेशा अपनेआप को अकेला ही महसूस किया. शुभा उस के अंधेरे जीवन में रोशनी बन कर आई थी. शुभा से उस की पहली मुलाकात कालिज में हुई थी. वे दोनों एम.एससी. में साथसाथ पढ़ते थे.

शुभा मेधावी छात्रा थी. गोरा रंग और



तीखे नाकनक्श, लेकिन एक दुर्घटना में उस के पैर में ऐसी चोट लगी कि वह थोड़ा लंगड़ा कर चलती थी. शुरूशुरू में कालिज में कई छात्रछात्राओं द्वारा उस का खूब मजाक उड़ाया जाता था. उस समय सुरेंद्र ने उस से मित्रता का हाथ बढ़ा कर उसे मानसिक रूप से संबल प्रदान किया था और शुभा ने अपने निश्छल प्यार से उस की तनहाई को बांट लिया था.

शुभा भी सुरेंद्र के समान अपने को अकेला महसूस करती थी. यही कारण था कि शुभा और सुरेंद्र धीरेधीरे एकदूसरे के करीब आते चले गए थे.

सुरेंद्र ने निर्णय ले लिया था कि वह शुभा को ही अपना जीवनसाथी बनाएगा. सुरेंद्र ने अपना यह निर्णय रामप्रसाद के माध्यम से अपने घर पहुंचाया था. उस के इस निर्णय से घर में एक हंगामा मच गया था. घर में किसी को इस बात पर एतराज नहीं था कि शुभा लंगड़ी थी, बल्कि इस बात पर एतराज था कि वह ऊंचे घराने की नहीं थी. केवल रामप्रसाद ही उस के पक्ष में थे. उन्होंने सुरेंद्र की मां से कहा था, "विद्या, मुन्ना लड़की पसंद कर चुका है. शुभा में कोई बुराई नहीं है. वह बेहद सुशील और सुंदर है. दुर्घटना तो हर व्यक्ति के साथ हो सकती है. इस में उस का क्या दोष? लड़के और लड़की दोनों एकदूसरे को बेहद चाहते हैं. सुरेंद्र ने मुझे शुभा से मिलवाया था. मैं चाहता हूं तुम भी उसे देख लो."

"बस...बस, भैया, यदि आप की अपनी सगी बहन होती तब भी क्या आप उस के लड़के के लिए लंगड़ी बहू देखते? उस का घराना क्या है, यह भी देखा है?" सुरेंद्र की मां तुनक कर बोली थीं.

"मैं जानता हूं, विद्या, बात यहीं पर आ कर अटक जाती है. तुम्हें ऊंचा घराना चाहिए और शुभा एक साधारण परिवार की लड़की है."

"फिर आप किस बात को ले कर शुभा की तरफदारी कर रहे हैं?" सुरेंद्र की मां ने



आवारा

निगाह जिस ने पा लिया
चाहत का नशा,
दुनिया की निगाहों में
आवारा हो गई.

—मजबूर

एक तीखी दृष्टि रामप्रसाद पर डालते हुए कहा था.

रामप्रसाद कुछ नहीं बोले थे. वह समझ गए थे कि जिन्हें दौलत का नशा है, उन्हें किसी के रूप, मृदुल स्वभाव और सरस व्यवहार की बात समझाना व्यर्थ है.

सुरेंद्र के कालिज से लौटते ही मां ने उस से कहा था, "मुन्ना, मैं यह क्या सुन रही हूं? रामप्रसाद भैया ने जो कुछ कहा है, क्या वह सच है?"

"हां, मां." सुरेंद्र के शब्दों में दृढ़ता थी.

"मुन्ना, तेरी शादी कहां होगी, इस का फैसला हम लोग करेंगे, समझे?" 'समझे' शब्द पर जोर देते हुए नरेंद्र ने कहा था.

"मुन्ना को इतनी समझ ही कहां, जो अपने लिए लड़की देखे. तभी तो एक लंगड़ी को पसंद कर लिया." यह कह कर मुंह में पल्ला ठूंस कर सुनीता हंस पड़ी थी.

महेंद्र और शोभा ने भी व्यंग्यबाण छोड़े थे. सुरेंद्र पहले तो सब कुछ सुनता रहा था, फिर उस ने विद्रोह भरे स्वर में कहा था, "शादी मुझे करनी है, आप लोगों को नहीं. मैं अपनी पसंद बता चुका हूं. यदि आप लोग सहमत नहीं हैं तो आप लोगों की सहमति के

बिना ही यह शादी होगी."

सुरेंद्र के शब्द सुन कर सब लोग स्तंभित रह गए थे. बचपन से ही सुरेंद्र सब की डांटफटकार चुपचाप सुनता रहा था. उस ने हमेशा दूसरों के आदेश का ही पालन किया था. यह पहला अवसर था कि सुरेंद्र का विद्रोही स्वर इस घर में गूंजा था.

मां गुस्से में अपना संयम खो बैठी थीं, "मुन्ना, तू यह कान खोल कर सुन ले कि यदि तू ने शुभा से शादी की तो इस घर में तेरे लिए कोई जगह नहीं होगी."

दूसरे ही दिन सुरेंद्र ने शुभा से कोर्ट मैरिज कर ली थी.. रामप्रसाद ने दोनों को आशीर्वाद दिया था. उन्होंने सुरेंद्र की मां से एक बार फिर बात की थी कि अब तो शादी हो चुकी है, इसलिए वह बहूबेटे को आशीर्वाद दे कर घर में बुला लें. मगर वह टस से मस नहीं हुई थीं.

शुभा के कहने पर सुरेंद्र उस के मामा-मामी के पास लखनऊ चला आया था. उन के एक दोस्त के घर दो कमरे किराए के लिए खाली थे, जिस में शुभा और सुरेंद्र रहने लगे थे. सुरेंद्र ने उसी शहर में एक स्कूल में अध्यापक की नौकरी कर ली थी और शुभा ने पास के दोचार घरों में ट्यूशन कर ली थी. इसी तरह छः साल व्यतीत हो गए थे. इन छः सालों में शुभा के सहयोग तथा प्रेरणा से सुरेंद्र ने पीएच.डी. भी कर ली थी और डिगरी कालिज में लेक्चरर हो गया था.

"अरे, तुम अभी तक सोए नहीं?" शुभा के शब्दों से वह चौंक गया. शुभा शायद पानी पीने के लिए उठी थी. यह उस की पुरानी आदत थी. रात में एक बार उठ कर वह पानी जरूर पीती थी. इसी लिए पास की मेज पर सोने से पूर्व वह पानी से भरा गिलास ढक कर रख लेती थी.

पलंग से उठ कर शुभा सुरेंद्र के पास आ गई. सुरेंद्र के कंधे पर अपने हाथ रखते हुए उस ने कहा, "बहुत रात हो गई है, अब सो जाओ."

"क्या करूं, शुभा, आज नींद ही नहीं आ रही है. घर की बहुत याद आ रही है," सुरेंद्र रुंधे कंठ से बोला.

"कल तो तुम घर जा ही रहे हो. सब से मिल लोगे तो मन अपनेआप हलका हो जाएगा," शुभा ने बड़े प्यार से उस का माथा सहलाते हुए कहा.

"जा तो रहा हूं, पर पता नहीं घर में सब लोग कैसा व्यवहार करें," सुरेंद्र चिंतित अवस्था में बोला.

"कैसा भी व्यवहार करें, तुम मां को देख कर चले आना," शुभा ने कहा.

दूसरे दिन जब वह कानपुर पहुंचा तो उसे देख कर सब लोग अचंभित हो गए. सब उसे ऐसे देख रहे थे, जैसे अजायबघर से कोई जानवर निकल कर आ गया हो.

"नमस्ते, बड़े भैया," सुरेंद्र ने नरेंद्र के पैर छूते हुए कहा. फिर महेंद्र तथा भाभियों के पैर छू कर उन्हें प्रणाम किया. सब ने बड़े रूखेपन से उत्तर दिया.

"लखनऊ में रामप्रसाद मामा से कल पता चला कि मां बहुत बीमार हैं," सुरेंद्र ने कुरसी पर बैठते हुए कहा.

"मां तो बहुत दिनों से बीमार हैं. तुम्हें



बेकरारी

ले गया छीन के
कौन तेरा सब्रोकरार,
बेकरारी तुझे ऐ दिल
कभी ऐसी तो न थी.

—जफर

आज भी वक़्त है !

हिस्सा लीजिए :

पॉण्ड्स

पर्ल गर्ल प्रतियोगिता



यह योजना 1,000 साड़ियों का सपना

एक शानदार पुरस्कार

हर दिन एक नई साड़ी

365 साड़ियाँ या

Rs.50,000/-

10 द्वितीय पुरस्कार हर हफ़्ते

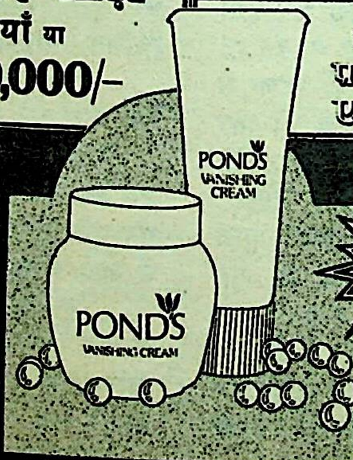
हर हफ़्ते एक नई साड़ी

प्रत्येक को 52 साड़ियाँ या

Rs.6,000/-

115 विशेष पुरस्कार

प्रत्येक को एक सिल्क साड़ी



जल्दी कीजिए
प्रतियोगिता की
अंतिम तारीख
30 अप्रैल 1985

पॉण्ड्स वैनिशिंग क्रीम

मुख पर मोतियों सी आभा...
बनिए मोतिया सुन्दरी, हर पल... हर घड़ी !

हर हफ़्ते पुरस्कार !
51/- रुपयों वाले विशेष गिफ्ट पैक
हर हफ़्ते सबसे पहले प्राप्त
होने वाले प्रवेश पत्रों को
दिए जाएंगे।

LINTAS (M)-PIL-PVC-2-1811-HI

अब सुध आई है?" सुनीता सब्जी काटते हुए बोली.

सुरेंद्र चुप रहा. वह पहले से ही जानता था कि इस घर में उसे सम्मान नहीं मिलेगा. हमेशा तिरस्कार पाने के बाद भी पता नहीं वह कौन सी चीज थी जिस के वशीभूत हो कर वह मां को देखने चला आया था. मां का स्नेह तो उस ने नहीं पाया था, फिर भी उस का स्नेह पाने की इच्छा उस के अचेतन मन में दबी हुई थी.

"मां कहां हैं?" उस ने धीरे से पूछा.

"होंगी कहां, अपने कमरे में पड़ी रहती हैं. तीमारदारी के लिए हम लोग तो जिंदा हैं ही." यह स्वर शोभा का था.

"चलो, मुन्ना, मां के कमरे में ही चलते हैं. सुनीता, एक कप चाय बना कर अंदर ले आना." नरेंद्र की बात सुन कर सुरेंद्र उठ खड़ा हुआ.

मां ने जब अचानक सुरेंद्र को देखा तो आश्चर्य प्रकट करते हुए बोलीं, "तू कब आया?"

"बस अभीअभी आया हूं. तुम कैसी हो, मां?"

"ठीक हूं, मुन्ना." मां आगे कुछ कहने वाली थीं कि सुनीता चाय ले आई. सुरेंद्र ने चाय का प्याला थामते हुए मां के कमरे में चारों तरफ भरपूर दृष्टि डाली. कमरे में काफी धूल जमी थी. मेज पर दवाइयों का ढेर लगा था.

थोड़ी देर में नरेंद्र तथा सब लोग मां के कमरे से चले गए. चाय पीने के बाद सुरेंद्र ने प्याला मेज पर रखते हुए दवाइयों के ढेर की तरफ इशारा कर के पूछा, "मां, तुम इतनी सारी दवाइयां खाती हो?"

"दो महीने से बीमार हूं, मुन्ना. अब भी न जाने कब तक खाट पर लेटे रहना पड़े. इसलिए जो दवाइयां याद रहती हैं, खा लेती हूं. बाकी का ढेर बन जाता है." मां के शब्दों में बेबसी थी.

"तो क्या बड़े भैया, छोटे भैया और दोनों भाभियां तुम्हारा ध्यान नहीं रखतीं? क्या वे तुम्हें समय पर दवाई भी नहीं देतीं?" सुरेंद्र ने आश्चर्यमिश्रित स्वर में पूछा.

"उन की अपनी गृहस्थी है. उन के अपने छोटेछोटे बच्चे हैं. कोई किसी का कहां तक ध्यान रखेगा?" मां की आंखें सजल हो उठीं.

"ठीक है, आज से तुम्हारी दवा का ध्यान मैं रखूंगा," सुरेंद्र ने कहा.

सुरेंद्र ने लगातार पंदरह दिनों तक मां की खूब सेवा की. मां के कमरे की सफाई वह रोज करता. दवाई से ले कर उन के खानेपीने का खूब ध्यान रखता. मां की सेवा में उसे इस तरह लगा हुआ देख कर एक बार सुनीता ने नरेंद्र से कहा, "छः साल के बाद आखिर मुन्ना यहां किस लिए आया है? लगता है कि मां की लल्लोचप्पो कर के अपना हिस्सा मांगेगा."

"हिस्सा कैसा? उस ने तो छः साल पहले ही घर छोड़ दिया था. तब से हम लोग ही इस घर में रह रहे हैं. इस घर की ईंटईंट पर हम लोगों का अधिकार है," नरेंद्र ने अपने एकएक शब्द पर जोर देते हुए कहा.

एक बार मां को तीसरी बार दिल का दौरा पड़ा. वह पसीने से बुरी तरह नहा गईं. दिल में दर्द उठ रहा था. उसे ऐसा लगा कि वह बेहोश हो जाएगी. नरेंद्र, महेंद्र, सुरेंद्र और घर के सभी लोग उस के पास आ गए. सहसा मां के कानों में नरेंद्र के ये शब्द पड़े. "मां...मां, सुनो, दादी मां के सारे जेवर कहां रखे हैं?"

"बड़े भैया, आप भी कमाल करते हैं. मां की हालत गंभीर है और आप को जेवरों की पड़ी है?" सुरेंद्र बौखला गया.

"तुम चुप रहो, मुन्ना. मां को यह तीसरा दौरा पड़ा है, पता नहीं अब यह बचें या नहीं. इसलिए यह तो पता चल जाए कि घर के जेवरात कहां रखे हैं," महेंद्र ने कहा.

मां को इस से आगे कुछ सुनाई नहीं दिया. आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा और वह बेहोश हो गईं. सुरेंद्र तुरंत दौड़ कर डाक्टर को बुला लाया. डाक्टर ने कुछ दवाइयां लिखीं, एक इंजेक्शन दिया, फिर

कहा कि यदि आधे घंटे में होश आ जाए तो समझिए कि मरीज खतरे से बाहर हो गया है.

सुरेंद्र के लिए वह आधा घंटा एक युग के समान बीता. मां की पलकें धीरेधीरे खुलने लगीं. सुरेंद्र को बड़ी राहत मिली. खुशी के मारे उस की आंखों में आंसू आ गए.

इस के बाद मां करीब एक महीने तक खाट पर पड़ी रहीं. सुरेंद्र ने दो महीने की छुट्टी ले ली थी. वेतन कटने की उसे परवाह नहीं थी, उसे अपनी बीमार मां की परवाह थी. सुरेंद्र का वश चलता तो वह शुभा को भी मां की सेवा के लिए बुला लेता. मगर वह नहीं चाहता था कि जिस तरह इस घर में उस का तिरस्कार होता रहा है, उस तरह शुभा का भी हो.

मां अब पहले से कुछ ठीक हो गई थीं. थोड़ाबहुत उठनेबैठने भी लगी थीं. सुरेंद्र को कानपुर से आए बहुत दिन हो गए थे. दूसरे दिन वह जाने वाला था कि मां ने तीनों लड़कों तथा बहुओं को अपने पास बुलाया. फिर बोलीं, "मेरे जीवन का कोई भरोसा नहीं. इसलिए मैं अपनी जमीनजायदाद तथा जेवर तीन हिस्सों में कर के निश्चित हो जाना चाहती हूं."

"क्या?" नरेंद्र का माथा ठनका.

"ओह, तो मुन्ना ने केवल दो महीने आप की सेवा कर के इतना अधिकार पा लिया कि छः साल से इस घर से संबंध तोड़ लेने के बाद आज बंटवारे के मामले में फिर इस घर से जुड़ गया?" सुनीता बोली.

"मां, मुन्ना तो इस घर से पहले ही अलग हो गया था. उस का कैसा हिस्सा?" महेंद्र ने कहा. शोभा ने भी इसी बात का समर्थन किया.

मां थोड़ा सोच में पड़ गईं, उस के बाद बोलीं, "मुन्ना का हक तो बराबर का ही बैठता है. यह बात और है कि वह स्वेच्छा से अपना हिस्सा छोड़ दे."

"स्वेच्छा से क्या, उस का हिस्सा तो बनता ही नहीं है. शुभा से शादी करने से ही वह इस घर से अलग हो गया था. मुन्ना, तू बता, क्या तुझे हिस्सा चाहिए?" नरेंद्र ने माथे पर बल डालते हुए पूछा.

"मुझे मेरा हिस्सा चाहिए, बड़े भैया." अब तक चुपचाप खड़े सुरेंद्र के मुंह से यह बात सुन कर सब उस की तरफ देखने लगे.

"मेरा क्लीनिक है. उस से तुम्हारा कोई संबंध नहीं."

"और मेरी दुकान से तुम्हारा कोई सरोकार नहीं."

नरेंद्र और महेंद्र की बातें सुन कर मां बोलीं, "अब मकान और जेवर बचते हैं. इस में तो मुन्ना का हिस्सा होगा ही."

"मकान और जेवर बड़े भैया तथा छोटे भैया में बराबरबराबर बांट दो, मां," सुरेंद्र ने कहा.

"क्या?" मां चौंक कर बोलीं, "फिर तुझे क्या चाहिए?"

"मुझे मां चाहिए," सुरेंद्र ने मां की तरफ एकटक देखते हुए कहा.

मां हक्कीबक्की सी सुरेंद्र की तरफ टकटकी लगा कर देखने लगीं. उन्हें कोई जवाब नहीं सूझ रहा था.

"तुम तो कल जा रहे हो और सात-आठ दिनों बाद ही होली है. मां होली के बाद तुम्हारे पास चली आएंगी," सुनीता ने कहा.

"ठीक है." सुरेंद्र ने बुझे मन से सहमति दे दी. फिर मां से बोला, "मां, होली के बाद तुम्हें लेने आ जाऊंगा."

"नहीं, मैं अभी तेरे साथ चलूंगी. होली मैं छोटी बहू के घर मनाऊंगी." मां के शब्दों में दृढ़ता थी, साथ ही संतोष की भावना भी. मां के चेहरे पर अपने लिए ममता और स्नेह देख कर सुरेंद्र की आंखों में खुशियों के कई रंग एक साथ तैर गए.

"संपत्ति का बंटवारा मैं बाद में करूंगी. यह मकान, दुकान, जेवर, पैसा सब तुम्हारे पिता की कमाई है. वह यह सब मेरे नाम कर गए हैं, इसलिए सुरेंद्र को मैं भी दूंगी. यह निर्णय मैं स्वयं करूंगी," मां ने निर्णायक स्वर में कहा.

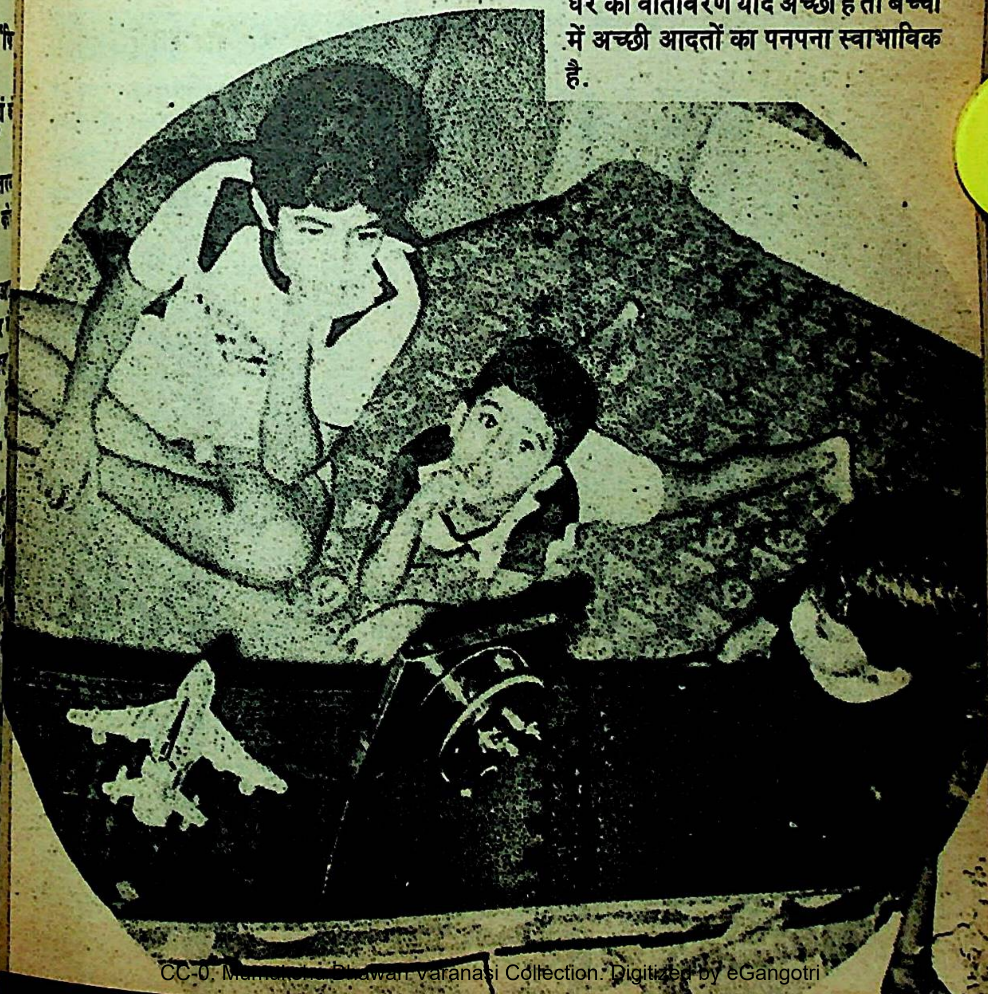
बच्चों में बुरी आदतों के लिए जिम्मेदार कौन?

लेख • उषा मनोहर

कुछ दिन हुए लेखिका अपनी बहन के घर गई. लगा, वह कुछ परेशान है. पूछने पर वह लगभग उबल पड़ी और अपनी बेटी वीनू के स्कूल, उस की अध्यापिका, स्कूल के अन्य बच्चों और उन बच्चों के मातापिताओं सभी को कोसने लगी. कुछ क्षण तो लेखिका हक्कीबक्की बैठी रही. कुछ समझ में ही नहीं आया.

बात दरअसल यह थी कि वीनू की अध्यापिका ने शिकायत की थी कि वीनू अकसर झूठ बोलती है और उस का जवाब देने का तरीका बड़ा असभ्यतापूर्ण है, अतः

घर का वातावरण यदि अच्छा है तो बच्चों में अच्छी आदतों का पनपना स्वाभाविक है.



मातापिता को चाहिए कि वे उस की इन आदतों को सुधारने की ओर खास ध्यान दें. यह सुनते ही समझ में आ गया कि गलती कहां है. गलती स्कूल, अध्यापिका या अन्य बच्चों की नहीं, बल्कि स्वयं वीनू के मातापिता तथा उन के घर के वातावरण की है.

वीनू के पिता स्वभाव से तो अच्छे थे, पर उन में ये दोनों ही बुरी आदतें थीं. एक तो वह कभी भूलेभटके ही सच बोलते थे और दूसरे जब अपनी झूठी बात भी मनवानी हो तो चीख कर कहते, "कह दिया न एक बार..." इत्यादि. पतिपत्नी जब कोई भी बात करते तो पत्नी को पति की बात पर विश्वास नहीं होता था. मसलन यदि वीनू के पिता कुछ कहते तो बहन की पहली प्रतिक्रिया होती, "झूठ. सच बताइए, क्या हुआ?"

घर के ऐसे वातावरण का वीनू के कोमल मन पर तत्काल प्रभाव हुआ और झूठ बोल कर गुजारा चला लेना तथा न चले तो चीख कर झूठ को सच साबित करने का प्रयत्न करना उस की आदतों में शुमार हो गया.

झूठ बोलना अस्वस्थ मानसिकता तथा दूषित वातावरण का प्रतीक है. यह वातावरण घर का भी हो सकता है और बाहर का भी.

आम तौर पर देखा जाता है कि इस स्थिति के लिए मातापिता स्कूल और अध्यापकों को दोषी ठहराते हैं और अध्यापक बच्चे के घर तथा मातापिता को. किंतु केवल दोषारोपण से यह समस्या नहीं सुलझ सकती. दोष दोनों ओर का होता है. बच्चा अधिक समय घर में बिताता है और घर के वातावरण का उस पर सब से अधिक प्रभाव पड़ता है. उस का अचेतन मन धीरेधीरे बड़ों की नकल करने लगता है. वह अपने बड़ों जैसा बनने का प्रयत्न करता है. अच्छे या बुरे की परख करने की समझ बच्चों में नहीं होती. उन के लिए जो बड़े करें, वही आदर्श होता है. जो कुछ बड़े बोलें, वही अनुकरणीय होता है. इसी अनुकरण का परिणाम होता है कि जिन बच्चों के मातापिता सुसंस्कृत नहीं होते उन के बच्चे भी संस्कार हीन हो जाते हैं. ऐसे बच्चों को आप कितना भी उपदेश दें, उन पर कोई असर नहीं होगा, क्योंकि वे जो कुछ घर में देखते हैं वही उन के लिए अनुकरणीय होता है.

लेखिका की एक सहेली को शिकायत थी कि उस का बेटा बहुत ही लापरवाह है और उसे डर था कि अभी से इस की लापरवाही उसे आगे चल कर कहीं नुकसान न पहुंचाए. "कितना भी कहो, कोई असर नहीं होता. मानता ही नहीं. न जाने इस की बुद्धि को क्या हो गया है," वह कई बार आह भर कर कहती.

बच्चा अनुकरण से सीखता है

एक दिन उस के पति को देखा. उन का कुल व्यवहार देख कर लगा, बच्चा तो पिता का बिलकुल प्रतिरूप है. जूतों में पालिश नहीं थी. रूमाल जेब से निकाला तो वह बिना तह किया हुआ था. दफ्तर से आते ही हाथ में पकड़ा अखबार बिस्तर पर फेंक दिया. ऐसे बेढंगे बाप को देखदेख कर बच्चा और कहां से सीखता? जाहिर है, अनुशासन उपदेश से नहीं, अनुकरण से सीखा जाता है.

बच्चे के जीवन की दूसरी सीढ़ी तब आती है जब वह स्कूल जाने लगता है. उस समय अध्यापक/अध्यापिका ही बच्चे के आदर्श बन जाते हैं. ऐसे में बच्चा बातबात में उन की नकल करने लगता है. उस के मन में एक आदर्श मूर्ति उभरने लगती है जो उस के लिए पूजनीय, अनुकरणीय हो जाती है. बच्चा उस की आलोचना सहसा सहन नहीं कर पाता. इसलिए अध्यापकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने व्यवहार से बच्चे पर ऐसा प्रभाव डालें कि उस के मन में बनी वह आदर्श मूर्ति टूटने न पाए.

महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में दक्षिण अफ्रीका में भारतीय बच्चों के लिए खोले गए एक स्कूल में अपनी अध्यापकी ...

भूमिका का बड़ा सजीव तथा रोचक वर्णन किया है. यह स्कूल जोहानिसबर्ग से 28 मील दूर टालसटाय फार्म पर था. इस में बच्चों के चारित्रिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास पर उतना ही ध्यान दिया जाता था, जितना बौद्धिक विकास पर. किंतु चाहे शारीरिक काम होता या नैतिक उपदेश, गांधीजी स्वयं उस का उदाहरण प्रस्तुत करते थे. बच्चों से फार्म पर जब कभी काम करवाना होता था तो गांधीजी कुदाली, फावड़ा लिए सब से आगे होते थे ताकि बच्चों को केवल शब्दों से नहीं, बल्कि स्वयं उस काम को कर के बताया जाए. इतना ही नहीं, उन्होंने एक स्थान पर यह भी लिखा है कि अपने नैतिक आचरण के प्रति भी वह बहुत सजग रहते थे, क्योंकि उन की जरा सी भी भूल उन बच्चों के मन में उन के प्रति भावना को बदल सकती थी.

घर तथा स्कूल के बाद आती है तीसरी मंजिल बाहर के वातावरण तथा समाज की. धीरेधीरे बच्चा बड़ा होने लगता है. मातापिता, भाईबहन आदि की अपेक्षा वह अपना अधिक समय समवयस्कों में बिताने लगता है. ऐसे लोग अच्छे भी हो सकते हैं और बहुत खराब भी. कई बार अच्छे, सीधे तथा सरल स्वभाव वाले बच्चे अन्य शरारती बच्चों के व्यंग्य बाणों का शिकार हो कर या तो अंतर्मुखी हो जाते हैं और उन में

अध्यापकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने व्यवहार से बच्चों पर ऐसा प्रभाव डालें कि वे अच्छे नागरिक बनें.



हीन भावना पैदा हो जाती है. या फिर वे स्वयं उन बुराइयों का शिकार हो जाते हैं जिन से उन के मातापिता ने उन्हें अब तक सुरक्षित रखा हुआ था. ये दोनों ही परिस्थितियां बहुत गंभीर हैं और मातापिता को चाहिए कि वे तुरंत इस पर ध्यान दें.

बच्चा अंतर्मुख होता नजर आए तो उसे घर में यथासंभव स्वतंत्र वातावरण दिया जाए ताकि वह मन की बात खुल कर बोले. यह नहीं कि मातापिता उस के साथ जरूरत से ज्यादा स्वतंत्र हो जाएं और अपने प्रति सम्मान की भावना व आवश्यक भय खो दें, बल्कि बच्चे में धीरेधीरे आत्मविश्वास जगाएं.

वैसे अंतर्मुखी होना कोई भय की स्थिति नहीं है. कई बच्चे स्वभावतः ऐसे होते हैं. पर जो बाद में हो जाते हैं, उन्हें ऐसा होने से बचाना चाहिए. यदि बच्चे में हीन भावना उत्पन्न हो रही हो तो उसे बच्चे में आत्मविश्वास जगा कर दूर किया जाना चाहिए. इस के लिए मातापिता का सतर्क व सजग होना आवश्यक है ताकि बच्चे में आ रही तबदीलियों को वे एक नजर में भाप सकें.

अपने व्यवहार पर ध्यान दें

जिन घरों में बच्चे पर बहुत ज्यादा सख्ती की जाती है, उन घरों के बच्चे भी कई बुरी आदतों के शिकार हो जाते हैं. जैसे— यदि बच्चा टाफ़ी या कोई इस तरह की चीज चाहता है जो आप उसे देना नहीं चाहते तो उसे पहले तो वह चीज दे दीजिए, फिर समझाइए कि आप इस तरह की चीजें देना क्यों पसंद नहीं करते. आप के कोमल व्यवहार से बच्चा समझ जाएगा वरना आप से चोरीछुपे वह वही काम करेगा जिस पर आप प्रतिबंध लगा रहे हैं. इस से बच्चे में या तो आप से चोरीचोरी काम करने की आदत पड़ जाएगी या वह झूठ बोलने लगेगा.

हालांकि सभी मातापिता यह चाहते हैं कि उन के बच्चों में अच्छी आदतें हों, किंतु कभीकभी वे स्वयं ऐसी बात कर बैठते हैं जिन का बच्चों के कोमल मन पर अ[illegible] प्रभाव नहीं पड़ता. मातापिता के अ[illegible] बाहर का वातावरण, विशेषकर आज [illegible] फिल्मों का भी बच्चों के मन पर बुरा प्र[illegible] पड़ता है. धीरेधीरे बच्चे की आदतें बिग[illegible] लगती हैं और मांबाप सोचते ही रह जाते [illegible] कि कब, कहां और कैसे बच्चा बुरी आ[illegible] सीख गया.

वास्तव में बहुत सी ऐसी बातें हैं जि[illegible] सीखने के लिए बच्चे को कहीं बाहर न[illegible] जाना पड़ता. जानेअनजाने में वे सब बातें [illegible] स्वयं उन्हें सिखाते हैं. एक तरफ हम ब[illegible] को उपदेश देते हैं. उन्हें लंबीचौ[illegible] नैतिकता से पूर्ण बातें, कहानियां सुनाते [illegible] और दूसरी ओर स्वयं अपने व्यवहार [illegible] छोटीछोटी बातों का भी ध्यान नहीं रख[illegible]

बच्चों के सामने डींगें न मारें

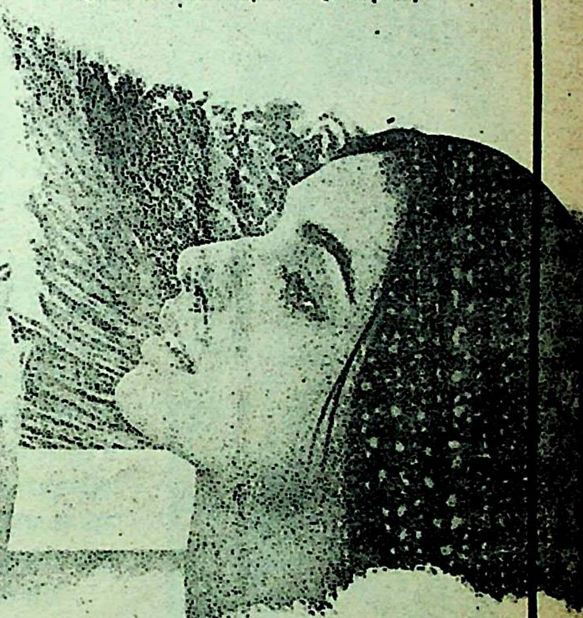
मसलन, बच्चों का पिता परिवार [illegible] सभी लोगों के सामने डींग मारता है कि कि[illegible] प्रकार उस ने देर में दफ्तर पहुंचने पर [illegible] को धोखा दे कर रजिस्टर में अपनी हाजि[illegible] लगा ली. लोगों का अपने बच्चों के लि[illegible] दफ्तर से पेंसिल, कागज आदि चुरा [illegible] लाना आम बात है. बहुत बार हम अ[illegible] साधारण झूठ को भी बड़े गर्व के साथ सु[illegible] हैं. अपनेआप में ऐसा झूठ शायद हानिकार[illegible] नहीं होता— जैसे हमें छुट्टी चाहिए औ[illegible] अफसर सख्त है तो हम सूचना भेज देते [illegible] कि हम बीमार हैं, चाहे बाद में हम सिने[illegible] देखने ही क्यों चले जाएं.

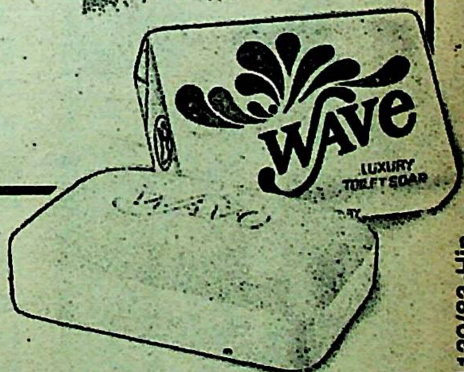
पर जब हम डींग मार कर इन [illegible] बातों के लिए अपनेआप को गौरवान्वि[illegible] महसूस करते हैं तब हम यह भूल जाते हैं [illegible] दीवारों के भी कान होते हैं. कहीं आसप[illegible] खेल रहा बच्चा जब यह सुनता है और [illegible] आगे चल कर वह भी ऐसा ही करने लग[illegible] है. उस की हरकत पर हमें क्रोध आता है [illegible] हम यह नहीं सोचते कि उस में इन बातों [illegible] बीज स्वयं हम ने ही बोए हैं. हमेशा [illegible] रखिए "बोया पेड़ बबूल का आम कहां [illegible] होय?"

खुशबू भरी लहरों में बहा ले जाए...वेव

मस्ती भरी उमंग...खुशियों की तरंग,
नहाने का नया साबुन
वेव!
झाग का लहराता समुन्दर...
अनोखी-निराली सुगंध की मचलती लहर..वेव!
हर किसी पर छा जाए, आज ही आज़माएं.







नया
वेव
लक्ज़री टॉयलेट सोप

खुशबू की तरंगों में आपको लहराए!

Sista's-1139/83-Hin

कर्नाटक सोप्स एण्ड डिटर्जेंट्स लि., बेंगलौर का एक अनूठा उत्पादन. बिक्री व्यवस्थापक: हैप्पू सेंट्स इंटरनेशनल लिमिटेड, बेंगलौर–560 052

कहीं आप कामकाजी पत्नी के लिए तनाव तो पैदा नहीं कर रहे?

लेख• दुर्गाशंकर त्रिवेदी

उमा ने नौकरी पा लेने की प्रसन्नता अपने अधिकारी पति को दफ्तर ही फोन कर के व्यक्त कर दी. सुनते ही उस का पति कुछ पल रुका और बोला, "अरे वाह, बधाई हो तुम्हें... चलो अच्छा ही रहा." और उस ने फोन रख दिया. उमा को बुरा लगा. यह स्वाभाविक ही था, क्योंकि वह तो यही मान कर चल रही थी कि पति की जगह अगर वह खुद होती तो खुशी से उल्लसित हो उठती. उस ने मुझ से यह व्यथा बड़ी आत्मीयता से कही और जानना चाहा कि आखिर उस के पति का ऐसा रुख क्यों रहा.

उस समय तो मैं ने अपने शब्दजाल से उस का ध्यान इस सवाल से हटा दिया, किंतु मैं स्वयं मन ही मन कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का अध्ययन जरा गंभीरता से करने लगी.

ऐसे जीवन का क्या अर्थ?

सरकारी ठेकेदार रामचंद्र को एक दिन बड़ा झटका सा लगा. उस की पत्नी ने अधेड़ उम्र में उस के समक्ष अध्यापिका बनने का विचार रखा. उसे पत्नी का यह प्रस्ताव बड़ा विचित्र लगा. उस ने इस का जोरों से विरोध किया तो वह बोली, "मैं नौकरी आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होने की गरज से नहीं करना चाहती, पर जीवन की सार्थकता के लिए मुझे यह जरूरी लगने लगा है. इतने साल तक चौकेचूल्हे से जूझती रही हूं. ...

जीवन का भी कोई अर्थ है? मैं ने अपना जीवन सामान्य औरतों की तरह बरबाद कर डाला है. अब मैं अपने जीवन का कोई लक्ष्य बनाना चाहती हूं. इसी लिए मैं ने ऐसा सोचा है."

पति, बच्चों और परिचितों ने इस बात का विरोध किया, पर पत्नी ने अपना निश्चय नहीं बदला. पत्नी के इस निश्चय से पति को बड़ी परेशानी हुई. उस की समझ में ही नहीं आया कि वह क्या कहे, क्या करे. वह पत्नी की मानसिक स्थिति को जरा भी नहीं समझ पाया. उस के व्यवहार में उस समर्पित महिला के प्रति सहानुभूति नहीं उपजी, बल्कि वह उसे अपनी प्रतिष्ठा को चोट पहुंचाने वाला कदम मान कर पत्नी को उलटीसीधी सुनाने लगा.

हर काम तुम्हीं क्यों करो?

माया ने अपने वकील पति के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि वह अपने बुनाई के शौक को कारोबार में बदलना चाहती है. पति ने तुरंत उस का उत्साह बढ़ाते हुए कहा, "ठीक है, इस से तुम्हारी कला साधना भी पूरी होगी और नई लड़कियों को समुचित प्रशिक्षण की सुविधा भी उपलब्ध हो जाएगी."

इस पर वह प्रसन्न हो कर बोली, "और हम ने एक दुकान भी देख ली है."

"अरे वाह, जवाब नहीं तुम्हारा भी," पति बोला, "मैं आज ही मुंशीजी से कह कर किरायानामा लिखवा देता हूं और फरनीचर तथा अन्य चीजें जुटा देता हूं."

यह सुनते ही माया के सारे उत्साह पर पाला पड़ गया. वह गुस्से में थरथराती हुई बोली, "मुझे आप की सहायता की जरा भी आवश्यकता नहीं है. क्या आप को मेरी प्रतिभा पर भरोसा नहीं है? हर काम आप ही क्यों करें?"

पति की समझ में नहीं आया कि पत्नी को कामकाजी बनाने का समर्थन उसे महंगा क्यों पड़ा. वह दुख से भर उठा. पत्नी के एक ही वाक्य ने अंदर ही अंदर पति को छटपटाने के लिए मजबूर कर दिया.

इस घटिया काम में क्या धरा है?

देवेंद्र प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक है. कुछ ट्यूशनें कर के अतिरिक्त आय कर लेता है. पत्नी अधिक पढ़ीलिखी नहीं है, पर घरगृहस्थी के कामों में होशियार है. बढ़ती महंगाई और जिम्मेदारियों को देख कर पत्नी ने पापड़, बड़ी आदि बना कर बेचना शुरू कर दिया. इस से धीरेधीरे उस की आय अपने पति के बराबर होने लगी. अब वह पापड़, बड़ी तैयार करने में कुछ विधवा महिलाओं से भी सहयोग लेने लगी है. इस से उस की अपनी आमदनी बढ़ने के साथसाथ अन्य बेसहारा औरतों को भी रोजगार मिल गया है. पर देवेंद्र का सदा यही कहना है, "इस घटिया काम में क्या धरा है?" यह कह कर वह अपनी पत्नी के उत्साह पर पानी फेर

कामकाजी पत्नी के काम की उपेक्षा न कर, उस की प्रशंसा कीजिए. इस से जहां उस की कार्यक्षमता बढ़ेगी, वहीं आप को भरपूर प्यार भी वह देगी.



देता है. उसे यह काम अपनी प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं लगता. फलस्वरूप पतिपत्नी में अब पहले जैसा प्यार नजर नहीं आता.

समाज सेवा में क्या धरा है?

शैलेश इंजीनियर है. उस की पत्नी ने अपने शहर की एक गरीब बस्ती में जा कर बच्चों को निःशुल्क पढ़ानेलिखाने का काम शुरू कर दिया. शैलेश को बड़ा गुस्सा आया. वह उस से तो कुछ नहीं कह पाया, पर अमूमन यह कह कर कि, "आखिर समाज सेवा में क्या धरा है?" अपना आक्रोश व्यक्त करता रहा. उस की पत्नी को समाज सेवा में खूब आनंद आता. तभी एक दिन शैलेश ने उसे यह सेवा कार्य करने से साफसाफ रोक दिया.

उस की पत्नी रो पड़ी और बोली, "इस बंगले में मैं अब अपनेआप को बहुत ही अकेला महसूस करती हूं. बच्चे बड़े हो गए हैं. बिटिया ससुराल चली गई है. आप को फैक्टरी के काम से ही फुरसत नहीं. लगता है अब किसी को मेरी जरूरत नहीं रही है. ऐसी हालत में मैं बंगले में बैठेबैठे क्या करूं? आखिर जरूरतमंदों को पढ़ाने में क्या बुराई है? क्या समाजसेवा करना बुरी बात है?"

"पर समाज सेवा के और भी तो कई तरीके हैं. समय किसी और तरीके से भी तो काटा जा सकता है. तुम क्लब जा सकती हो, सहेलियों में बैठ कर या सिनेमा देख कर समय काट सकती हो. उन गंदे लोगों के बीच जा कर काम करना मैं अपनी प्रतिष्ठा के खिलाफ मानता हूं."

जाहिर है कि शैलेश को अपनी प्रतिष्ठा की बात सताने लगी है, पर वह अपनी पत्नी की मनोव्यथा को जरा भी समझने को तैयार नहीं है.

नया तनाव

अब जब कि स्त्रियों ने पुरुषों के समान घर से बाहर निकल कर काम करना शुरू कर दिया है, वे चाहती हैं कि उन का पति उन्हें समुचित आदर दे, उन्हें प्रोत्साहन दे और उन के काम में हिम्मत बंधाए. अधिकांश महिलाओं के पतियों का य[...] ऐसा नहीं है. नतीजा यह हुआ कि सुख[...] से जी रहे परिवारों में भी एक नया तूफा[न] खड़ा हुआ है. पतिपत्नी दोनों के [...] पारिवारिक जीवन में बड़ी विचित्र स्थि[ति] पैदा कर दी है.

वस्तुतः आज स्त्रियों में आत्मनि[र्भरता] या आत्मसंतोष प्राप्त करने के लिए [...] पुरुषों की तरह काम करने की जो [...] पैदा हुई है, उसे समझना पुरुषों के [लिए] कठिन हो गया है. इस का कारण [...] परिवारों में पुरुष को प्रधानता प्राप्त [...] है. जब कोई महिला अपने पति से यह [...] है कि वह भी घर की चारदीवारी से [...] निकल कर कोई काम करना चाहती है [...] पति को लगता है कि उस की पत्नी [...] परिधि से बाहर जा रही है. फलस्वरू[प] [...] का पुरुषोचित अहं उस में बौखलाह[ट] [...] कर देता है. पतिपत्नी में वैचारिक [...] बढ़ने लगता है और शंकालु प्रकृति का [...] पत्नी पर तरहतरह की शंकाएं करने [...] जाता है. घर की आर्थिक विपन्नता [...] निकालने के उद्देश्य से काम करने [...] पत्नी को वह जिम्मेदार न मान कर [...] चरित्र तक में संदेह करने लगता है.

स्त्री जब दिन भर कमाने के [लिए] खटती है तो वह पति से इतनी अपेक्षा [...] रखती ही है कि वह बच्चों के पालनपो[षण] [...] घरेलू कामकाज में उस का हाथ बंटाए. [...] पुरुष इसे अपनी तौहीन मानने लगता [...] यहीं से घर का सौहार्दपूर्ण वाता[वरण] बिगड़ने लगता है. यदि पतिपत्नी एक [...] की भावनाओं को समझ कर चलें तो [...] संबंध मधुर बने रह सकते हैं. किंतु [...] अकसर भावात्मक संबंधों की तरफ [...] ध्यान नहीं देता. पत्नी चाहे कामकाजी [...] घरेलू स्त्री, वह घर में अपना पूरा नि[...] और प्रधानता चाहती है. कामकाज के [लिए] निकली, समानता की मांग करने वाली [...] उसे एक चुनौती लगने लगती है. [...] तनावभरी स्थिति बड़ी आसानी से [...]

की जा सकती है. किंतु पुरुष अपने व्यवहार से इसे बनाए रखता है.

सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक राबर्ट ब्रेनन ने इस तनाव का कारण पुरुषों में व्याप्त एक गुप्त भय को माना है. उस का कहना है, "आदमी अपने काम से ही जाना जाता है, उस की आय और सामाजिक स्थिति उस के पुरुषत्व का प्रतीक है, अगर उस की पत्नी भी कोई कामकाज करने लगे तो उस की अभूतपूर्व उपलब्धि धरी रह जाती है."

यह उपलब्धि धरी रह जाने की गुप्त पीड़ा ही उसे अंदर ही अंदर सालती रहती है. फलतः वह पत्नी के प्रशंसनीय कार्यों में भी नुक्ताचीनी करना शुरू कर देता है.

समस्या से कैसे निबटें?

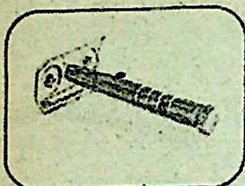
चूंकि आर्थिक कारणों और अपने बुद्धि कौशल के प्रति चेतना के फलस्वरूप नारी घर के बाहर कामकाज के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी तेजी से आ रही है, इसलिए आगे चल कर उसे और भी संघर्ष का सामना करना पड़ेगा. इसलिए पतिपत्नी दोनों के लिए अच्छा यही होगा कि वे स्थिति में तनाव या कटुता पैदा न कर समस्याओं को सौहार्दपूर्ण ढंग से हल करने का प्रयत्न करें. तभी नारी स्वातंत्र्य की लहर परिवार की सुख, शांति और प्रगति में सहायक सिद्ध हो पाएगी.

लेख के प्रारंभ में दिए गए उदाहरणों में हम सिर्फ बात का बतंगड़ बनाने वाली स्थिति ही पाएंगे. पुरुष यदि नारी स्वातंत्र्य की भावना को अन्यथा न ले और स्त्री के साथ भावात्मक संबंध बनाए रखे तो बात बनते देर नहीं लगेगी.

धैर्य, सद्भाव और उदारता के साथ पत्नी की सहायता करना पति को सीखना चाहिए. जहां तक संभव हो, उस को प्रोत्साहन देने में कंजूसी भी नहीं बरतनी चाहिए. आप के प्रोत्साहन और प्रशंसा के दो शब्द सुन कर आप की पत्नी प्रफुल्लित हो उठेगी. इस से जहां उस की कार्यक्षमता बढ़ेगी, वहां आप को अपनी पत्नी का भरपूर प्यार भी मिलेगा.

समझबूझ से काम न लेने वाला पुरुष अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है और कभीकभी न कहने योग्य बातें तक कहने में नहीं हिचकता है. पुरुष को यह मान कर अपनेआप को नए परिवेश में ढालना चाहिए कि पतिपत्नी दोनों की उपलब्धियां एक ही परिवार की हैं. आपसी सहयोग से उन के परिवार की सुखसंपन्नता बढ़ेगी ही. पुरुष को इस विषय में अधिक उदार बनना होगा और अपने मन से गुप्त भय निकालना होगा. जब तक ऐसा नहीं होगा, नएनए तनाव उत्पन्न होने से स्थिति उलझती ही रहेगी. कामकाजी नारी और पति दोनों ही अहं के चक्कर में न पड़ कर सहयोग पूर्वक चलें तो उन का पारिवारिक जीवन और भी सुखद हो सकता है. ●

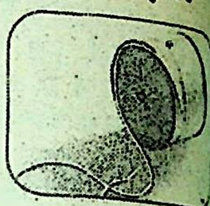
औरत की त्वचा कब तक सहेगी ये सज़ा?



शेविंग खुरदरापन लाए !
भद्दी खूटियां उगाए, बाल बढ़ाए



वैक्सिंग तकलीफ़ पहुंचाए !
रोम रोम त्वचा ढीली हो जाए



थ्रेडिंग टीस उठाए !
त्वचा को बार बार चोट पहुंचाए

एन् फ्रेंच
ऐसी नर्माई से बालों को साफ़ करे कि आपको पता भी न चले



औरत की त्वचा बड़ी ही कोमल होती है, इसके साथ मर्दानगी न दिखाइए, एन् फ्रेंच हेयर रिमूवर अपनाइए.

एन् फ्रेंच बहुत सौम्य है, ये बालों को नर्माई से इस तरह निकाल लेती है कि आपकी त्वचा को ज़रा भी तकलीफ़ न हो और वो साफ़, मुलायम, एक सी बनी रहे.

एन् फ्रेंच बहुत प्रभावशाली है, ये बालों को जड़ से साफ़ करती है, एन् फ्रेंच का इस्तेमाल बड़ा ही आसान, जहां भी लगाना है, लगाकर थोड़ा सा इंतज़ार...बस फिर पोंछ दीजिए.

एन् फ्रेंच हेयर रिमूवर

नर्माई से बालों की सफ़ाई



Licenced User of TM Geoffrey Manners & Co. Ltd.

7662 HIN-R

महिला ने पति को पुलिस गोली का शिकार होने से बचाया

लेख • मोहन सोलंकी



रक्षक ही जब भक्षक बनने की कोशिश करे, तब उन करोड़ों लोगों का क्या होगा, जो आज भी जमींदारों के शोषण व अत्याचार का शिकार हो रहे हैं. बलात्कार, क्रूरता और अत्याचारों की पुलिस कथाएं तो आम बात हो गई हैं. इस के बावजूद भी न तो शासन इस तरफ कोई ध्यान दे पा रहा है, न ही पुलिस अधिकारियों के कानों पर जूं रेंग रही है. नौबत इस हद तक पहुंच गई है कि अब जनता के रक्षक ही अपने अधिकारों का दुरुपयोग करते हुए जनता पर जुल्मोसितम की बिजलियां गिरा रहे हैं. अब तो लगता है सत्ताधारियों ने मानो पुलिस महकमे का इंतजाम जनता को लूटनेखसोटने के लिए ही किया है. न तो कानून को पुलिसकर्मी कोई महत्त्व देते हैं और न शासन को. इस का नतीजा यह हुआ है कि आज आम आदमी अपनेआप को असुरक्षित सा महसूस करने लगा है. पुलिस किस हद तक आगे बढ़ गई है इस का एक ज्वलंत उदाहरण कुछ ही दिनों पहले सामने आया है.

नेवसा (जिला अहमदनगर) में 9 नवंबर, 1982 को एस.टी. बस स्टैंड के सामने स्थित पंजाब रेस्टोरेंट में लगभग 11 बजे रात्रि को नेवसा पुलिस थाने का हैड कांस्टेबल साहेबराव धायतड़क खाना खाने आया था. उस वक्त वह शराब के नशे में मदहोश था. अत्यधिक शराब सेवन करने के बाद उस ने रेस्तोरां में प्रवेश करते ही एक प्लेट मीट लाने का आर्डर दिया. लेकिन 11 बजे रात्रि तक मीट समाप्त हो चुका था. तब रेस्तोरां के मालिक रमेश गुप्ता ने सरल शब्दों में साहेबराव से कहा कि इस समय मीट, चिकन या किसी तरह का मांसमिश्रित खाना नहीं है. अगर वह चाहे तो शाकाहारी खाना उसे परोसा जा सकता है.

कहते हैं इस पर पुलिस कांस्टेबल साहेबराव को अत्यधिक क्रोध आ गया. उसे इस बात में अपना अपमान नजर आने लगा. उस ने नशे की हालत में ही रेस्तोरां के मालिक रमेश गुप्ता से कहा कि यदि वह उसे मीट या चिकन नहीं खिलाएगा तो उस का शहर में रहना मुशकिल हो जाएगा. साहेबराव की बात सुन कर रमेश गुप्ता थोड़ा घबरा गया. तब उस ने अत्यंत दीन शब्दों में उस से प्रार्थना की कि इस समय रात अधिक हो जाने के कारण दोबारा मीट पकाने की व्यवस्था होना अस्वाभाविक है. अगर वह चाहे तो उसे शाकाहारी भोजन खिलाया जा सकता है.

इस बात ने मानो नमक का काम किया और साहेबराव आपे से बाहर हो गया.

साहेबराव ने रमेश गुप्ता को कुछ अपशब्द कहे और उस के साथ अपमानजनक व्यवहार किया. शराब के नशे में रमेश गुप्ता को भद्दी गालियां भी उस ने दीं.

इस समय तक नेवसा पुलिस स्टेशन के ड्यूटी पर तैनात सब इंसपेक्टर वसंतराव सानप को किसी ने इस बात की खबर कर दी कि पंजाब रेस्टोरेंट के मालिक रमेश गुप्ता व हैड कांस्टेबल साहेबराव के बीच झड़प हो रही है तथा साहेबराव नशे की हालत में रमेश गुप्ता को अनापशनाप गालियां दे रहा है.

सूचना प्राप्त होते ही पी. एस. आई. सानप तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे व दोनों को समझाबुझा कर शांत किया. सानप ने साहेबराव को तुरंत ड्यूटी पर जाने का आदेश दिया और रमेश गुप्ता से कहा कि वह चाहें तो अपनी शिकायत पुलिस चौकी में आ कर लिखा सकते हैं. इस के बाद सानप वहां से लौट गए.

प्रतिशोध की आग

लेकिन मामला यहीं शांत नहीं हुआ. साहेबराव तो नशे की हालत में था ही. वह आदेश पा कर पुलिस थाने लौट तो आया, लेकिन उस के भीतर क्रोध की आग बराबर सुलगती रही. प्रतिशोध की जलन से आग-बबूला हो कर उस ने अपनी व्यथाकथा उस समय पुलिस थाने में कार्यरत हैड कांस्टेबल मुरलीधर हंबर्डे को सुनाई. हैड कांस्टेबल हंबर्डे भी नशे में पहले से ही चूर था. अपने सहयोगी हैड कांस्टेबल साहेबराव की बातों ने उसे विचलित कर दिया. अपमान महसूस करते हुए उन दोनों सिपाहियों ने तब 303 की दो बंदूकें पुलिस गार्ड से बाहर निकालीं और थ्री नाट थ्री के 20 कारतूस साथ में ले कर तथा बंदूकें भर कर के वे दोनों बाहर निकलने लगे. उस समय पुलिस थाने में तैनात सब इंस्पेक्टर ने उन्हें बाहर जाने से रोकने की कोशिश की. मगर उन दोनों सिपाहियों के सिर पर तो शैतान सवार था. सिपाही साहेबराव ने तब 303 बोर की बंदूक उस पर तानते हुए क्रोध से कहा, "... रास्ता रोकने की कोशिश की तो जिं... छोड़ूंगा." इतना कह कर साहेबराव... मुरलीधर क्रोध में फनफनाते, ... श्रीरामपुर रोड पर स्थित पेट्रोल पंप के... आ कर रुक गए.

रमेश गुप्ता के साथ हुए इस ... की सूचना तब गुप्ता परिवार के ... सदस्यों तक भी पहुंच गई थी. इस सूच... प्राप्त होते ही रमेश गुप्ता के ... दिवानचंद गुप्ता, पत्नी विमला गुप्ता, ... नरेश, दिनेश तथा पुत्री रीतू भी रेस्... पहुंच चुके थे. रमेश गुप्ता ने अपने परि... को सब बातें समझा कर उन्हें शांत कर... था और अब वे रेस्तोरां बंद कर के अपने... की तरफ लौट रहे थे.

गुप्ता परिवार को सामने पा कर ... सिपाही चौकस हो गए. उन्होंने तब ह... दो फायर किए. गोली की धायंधायं... आवाज ने गुप्ता परिवार को अत्यंत भय... कर दिया था. उन्हें इस बात की कल्पना ... नहीं थी कि रास्ते में इस तरह उन का सा... इन सिपाहियों से हो जाएगा. ... अप्रत्याशित आक्रमण से गुप्ता परि... पसोपेश में पड़ गया.

अभी गुप्ता परिवार सोच भी ... पाया था कि क्या करें क्या नहीं कि साहेबरा... ने उन सभी को कठोर स्वर में हाथ ऊ... उठाने का आदेश दिया. जब सभी ने डर... से भर कर हाथ ऊपर उठा लिए ... साहेबराव ने अपनी 303 बोर की बंदूक... नली को रमेश गुप्ता की छाती पर टिका... हुए क्रोधपूर्वक कहा, "तू ने मेरी बेइज्ज... की, इसलिए मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा..."

रमेश गुप्ता के तो प्राण ही सूख ... मौत बिलकुल करीब आ कर उसे घूर र... थी. पिता दिवानचंद व पत्नी विमला गु... को भी इस वक्त कुछ सुझाई नहीं दे रहा ... कि वे क्या करें? उन्हें मालूम था कि ... सिपाही शराब के नशे में हिंसक पशु ... बन गए हैं और कब क्या हो जाए, यह कह... भी कठिन था.

विमला गुप्ता को पति की मृत्यु करीब, और करीब खिसकती हुई स्पष्ट दिखाई दे रही थी. पति की मृत्यु उसे बड़ी सहज किंतु बेमानी लग रही थी. किसी में इतना साहस नहीं था कि आगे बढ़ कर उन शराबी सिपाहियों के हाथों से बंदूकें छीन ले. साहेबराव क्रोध में अब भी उबल रहा था. उस की आंखों में दहकती प्रतिशोध की भावना स्पष्ट झलक रही थी.

अचानक विमला गुप्ता ने अपने टूटते साहस को बटोरने की कोशिश की और इस के पहले ही कि साहेबराव की अंगुली बंदूक के घोड़े पर दबाव देती, विमला ने अपने प्राणों का मोह छोड़ कर चीते की तरह अचानक साहेबराव पर झपट्टा मारा तथा उस के हाथों में थमी बंदूक को ऊपर कर लिया.

साहेबराव नशे में चुर तो था ही, वह इस अचानक हुए आक्रमण से अपनेआप को संभाल नहीं पाया और छीनाझपटी में चार फायर हवा में उछल गए. इसी बीच एक गोली रमेश के पांव को घिसटती हुई निकल गई थी.

गोली चलने का शोर सुन कर आसपास के लोग आ कर वहां जमा हो गए थे. परंतु जमा हुए लोगों में से सामने आ कर मदांध हैड कांस्टेबलों को रोकने का किसी को साहस नहीं हो रहा था. इस बीच उस ने साहेबराव के हाथ से बंदूक छीन ली और उसे नीचे जमीन पर पटक कर उस की छाती पर बैठ गई. यह दृश्य देख कर, तमाशबीन बने लोगों की चेतना शायद वापस लौट आई थी और तब खड़े हुए कुछ लोग उन दोनों कांस्टेबलों पर टूट पड़े. हैड कांस्टेबल मुरलीधर ने इस तरह लोगों के आक्रोश का शिकार होने से बचने के लिए तुरंत बंदूक वहीं छोड़ दी और वहां से किसी तरह भाग निकला.

मगर साहेबराव बच नहीं पाया. लोगों ने उस की पहले तो मरम्मत की और बाद में उसे पकड़ कर पुलिस थाने में ले गए.

पुलिस थाने में लोगों की भारी भीड़ देख कर थानेदार सानप ने सिपाही मुरलीधर तथा साहेबराव के विरुद्ध रपट दर्ज की. उन्होंने दोनों बंदूकें व 15 कारतूस भी अपने अधिकार में लिए तथा उन्हें भारतीय दंड विधान संहिता की धारा क्रमांक 307 (34) के अंतर्गत हिरासत में ले लिया. सुनने में आया है कि आक्रोश को देखते हुए उन दोनों कांस्टेबलों को निलंबित भी किया गया है.

अब देखना यह है कि इन दोनों कानून के रक्षकों के प्रति कानूनदारों का कौन सा रवैया अख्तियार होता है?

वैसे यदि पूर्व अनुभव से देखा जाए तो थोड़े दिन बाद दोनों सिपाहियों को न केवल छोड़ दिया जाएगा, बल्कि नौकरी पर बहाल कर दिया जाएगा. सरकारी कर्मचारी को अब गुनाहों से ऊपर समझा जाने लगा है. ●

किस्सा लौकी की बेल का

व्यंग्य • शकुंतला शर्मा

पंकजजी के बगीचे से जब बच्चों ने कुछ लौकियां तोड़ीं तो उन्हें बड़ा गुस्सा आया और उन्होंने लौकी की बेल को ही काट डाला. लेकिन जब एक बच्चे ने आ कर उन से माफी मांगी तो पंकजजी कभी बच्चे को देखते तो कभी बेल को.

कहीं पर खट से आवाज हुई और पकंजजी की नींद खुल गई. कुछ देर वह बिना हिलेडुले बिस्तर में पड़े रहे और दूसरी आवाज के आने की प्रतीक्षा करते रहे. बाहर शायद हवा चल रही थी, क्योंकि पत्तियों की सरसराहट हवा में फैल गई थी. एक क्षण के लिए उन्हें लगा कि बगीचे में कोई चोर है जो उन के वृक्षों के फलों को तोड़ रहा है. घड़ी में देखा तो तीन बजे थे. इतने सवेरे कौन चोरी करने



प्रतिदिन सवेरे पंकजजी उठ कर देखते तो लौकी की बेल छः इंच बढ़ी हुई मिलती.

आएगा? उन्होंने करवट बदल ली.

पर हाय रे मानव मन, चैन लेने दे तब न, पत्तियां फिर खड़खड़ाईं और वह चौंक कर उठ बैठे. वह सोचने लगे, 'चोरी करने के विचार से अगर कोई आया तो उसी समय आएगा न जब पकड़े जाने का कम से कम भय हो. इतनी सी बात पहले उन के दिमाग में क्यों नहीं आई?' उन्होंने स्वयं को धिक्कारा. उठ कर चप्पलें पहनीं, छड़ी उठाई और बाहर जाने के लिए द्वार खोलने ही वाले थे कि पंकजजी को विचार आया कि यदि सचमुच कोई बाहर हुआ तो वह उन्हें वहीं दबोच लेगा. हो सकता है दो या तीन आदमी हों. वह वृद्ध अवस्था में कर भी क्या लेंगे. ठिठक कर उन्होंने अपने बेटे अंशु को पुकारा, "अंशु, अरे ओ अंशु."

उधर से कोई उत्तर नहीं आया, "अंशु!" अब उन्होंने छड़ी से द्वार खटखटाया. "क्या है, पिताजी?" अंशु ने नींद में ही करवट बदली.

"क्या है के बच्चे, बाहर कोई चोर घुसा है और तू चैन की नींद सो रहा है."

"पिताजी, आप तो वृद्ध हो गए हैं, नींद आती नहीं है, इसलिए रात भर फलों की चोरी की चिंता सताती रहती है, जरा ठंडे दिमाग से सोचिए कि दोचार आमअमरूदों के लिए कौन अपनी रात की नींद खराब करेगा. जाइए, सो जाइए और मुझे भी सोने दीजिए, सुबह होते ही मुझे दफ्तर जाना है."

"हूं, यह है आजकल की औलाद, जबान चलाते शर्म नहीं आती. कह कर टाल दिया कि आप को तो नींद नहीं आती. ठीक है, मेरा क्या है, आज हूं कल नहीं, पर जब तक जीवित हूं किसी को फल नहीं चुराने दूंगा." फिर जोश के साथ उन्होंने द्वार खोला और बाहर बगीचे में आ गए. पूरा बगीचा चांदनी में नहा रहा था. आम, अमरूद, अनार आदि के वृक्षों से छनछन कर ज्योत्स्ना पृथ्वी पर पड़ रही थी. पर मनुष्य तो क्या वहां कोई चमगादड़ भी नहीं था. अंशु ठीक ही कह रहा था कि किस के पास इतना समय है कि उन के बगीचे में चोरी करने के लिए

अपनी नींद खराब करे.' फिर सो
एक बार खुल गई तो फिर से
नहीं. बिस्तर पर पड़ेपड़े एड़ियां
भी क्या लाभ! उन्होंने एक बार फि
वृक्ष के फल गिनने प्रारंभ कर दिए
अमरूद, आम यहां तक कि करौंदे
भी नहीं छोड़े. घर का द्वार बंद कि
अपने कमरे में आ कर बगीचे की
हिसाब लिखने लगे. फिर स्नान व पू
व्यस्त हो गए. कहीं भी जरा सी आ
तो उन के कान खड़े हो जाते.

लगभग तीन वर्ष पहले
अवकाश ग्रहण कर पुत्र व पु
साथ रहने यहां आए थे. लंबाचौड़ा
तो था नहीं, एकमात्र पुत्र अंशु
व्यवस्थित था. पंकजजी की पत्नी का
हो चुका था. उन्होंने सोचा कि अब
में उन्हें संन्यास आश्रम में प्रवेश क
चाहिए. वह घर में ही संन्यासियों
जीवन बिताने का स्वप्न देखने लगे.
चार बजे उठते, स्नान करते व पू
व्यस्त हो जाते, थोड़ाबहुत घूमफि
बहुत हुआ तो पास के पुस्तकालय
जाते. सिगरेट आदि की लत उन्हें
नहीं थी. अब तो भोजन भी दिन में
समय करने लगे थे.

पुत्र व पुत्रवधू को कभी उ
दिनचर्या से असुविधा नहीं हुई, अतः
ने कभी विघ्न नहीं डाला. पर पूजाप
कोई कितना करेगा और कब तक
पंकजजी विशुद्ध संसारी व्यक्ति थे,
विरक्त रहते? उन के पुत्र अंशु के म
आगेपीछे काफी भूमि खाली पड़ी
पुत्र या पुत्रवधू दोनों को बागबानी
नहीं थी. पंकजजी ने बागबानी में रुचि
प्रारंभ कर दी. संसार में कौन ऐसा
जिसे हरेभरे पौधों या तरहतरह
रंगबिरंगे फूलों ने मोहित न किया हो.
उस की पत्नी ने भी उन के कार्यकला
रुचि लेनी प्रारंभ कर दी. वर्ष भर में
लहलहा उठा. घर के सामने

लिया गुलाब, गुलदाऊदी, किनारे की दीवार पर चढ़ी रंगबिरंगे फूलों की बेलें, पीछे की ओर अमरूद, आम, अनार, पपीता, केले आदि के वृक्ष और दूसरी ओर सुंदर सा किचन गार्डन.

पर जब बगीचा फलनेफूलने लगा तो एक नई समस्या सामने आई. पहली मंजिल पर जो परिवार रहता था, उस में छह से तेरह वर्ष के चार बच्चे थे. वे जब नीचे वालों के बगीचे में आम, अमरूद लटकते हुए देखते तो उन से रहा न जाता. यों पंकजजी कम चौकस नहीं थे. वह बगीचे की इस तरह चौकीदारी करते कि अपने बहुमूल्य खजाने की रखवाली भी कोई क्या करेगा. चौथेपन में संन्यास लेने की बात पीछे छूट चुकी थी. पूजापाठ करने का न समय बचता था न इच्छा.

पंकजजी ने बगीचा लगाया था. वृक्षों के नाम रखे गए, उन के फलों की प्रतिदिन गिनती की जाती. गुलाबों पर आने वाले फूलों का क्या कलियों तक हिसाब रखा जाता. कोई पेड़ मुरझाया देख कर दिन भर उस के कारणों की विवेचना की जाती.

पर बच्चे तो बच्चे ही थे. आसपास के बच्चे ऊपर वालों की अगुआई में अवसर मिलते ही बगीचे पर हमला बोल देते और पक्के फलों के साथ कच्चे फल भी तोड़ ले जाते. फिर पूरी मित्रमंडली मिल कर उन्हें खाती. बेला, चमेली के फूलों की माला गूंथी जाती.

धीरेधीरे पड़ोसियों के बीच मनमुटाव

पंकजजी ने देखा, ऊपर वालों का बड़ा सुपुत्र दो लंबीलंबी लौकियां हाथ में लिए खुशी से नाच रहा था और उस के तीनों भाई उस का साथ दे रहे थे.



बढ़ने लगा. पहले पंकजजी जा कर बच्चों के मातापिता से शिकायत करते थे और मातापिता भी उन के दादा की आयु के व्यक्ति का सम्मान न करने के कारण उन के कान गर्म कर देते थे. फिर बात अंशु, उस की पत्नी व पड़ोसी व उस की पत्नी के बीच बढ़ने लगी और दोनों परिवार मित्रता से शत्रुता की ओर अग्रसर होने लगे.

दिनरात पंकजजी को बगीचे में चोरी का भय सताने लगा. कहीं एक दिन के लिए जाना चाहते तो जा न पाते. एक दिन किचन गार्डन में गुड़ाई करते समय विचार सूझा कि मिर्च, मूली, धनिया, पोदीना यह सब तो ठीक है, पर अभी तक उन्हें लौकी, तुरई बोने का विचार क्यों नहीं आया? अब तक तो यह कितनी लग चुकी होतीं. बाजार से सब्जी खरीदने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती. जब बगीचे पर इतना धन व शक्ति व्यय हो रहा है तो कुछ न कुछ लाभ तो मिलना ही चाहिए.

तुरंत लौकी व तुरई के बीज मंगा कर बो दिए गए. कुछ दिनों में अंकुर निकल आए और बेलें बढ़ने लगीं. तुरई तो मध्यम गति से ही बढ़ रही थी, पर लौकी की वृद्धि का क्या कहना! प्रतिदिन प्रातःकाल पंकजजी उठ कर देखते तो छह इंच बढ़ी हुई मिलती. शाखाएंप्रशाखाएं निकलने लगीं तो बेल ऊपर चढ़ा दी गई. पर इस बात की पूरी सावधानी रखी गई कि बेल ऊपर वालों की पहुंच तक न पहुंच जाए.

बेल पर जब भी सफेद फूल लगता तो घर के तीनों सदस्य उस का बारीकी से निरीक्षण करते कि उस के लौकी बनने की संभावना है या नहीं. अंततः वह शुभ दिन भी आया जब छोटीछोटी लौकियां बेल की शोभा बढ़ाने लगीं और फलों के साथ ही पंकजजी ने लौकियां गिनने का कार्य भी प्रारंभ कर दिया. फिर लौकियां तोड़ी जाने लगीं. लौकी की सूखी, रसेदार, भरवां सब्जी, लौकी का हलवा, लौकी का सूप, बरफी व लड्डू कौन सा ऐसा व्यंजन था जो उन के परिवार ने नहीं बनाया. सुना तो तक गया कि उन की पुत्रवधू ने लौकी चपातियां बनाने का प्रयत्न भी किया, सफलता नहीं मिली. फ्रिज, रसोईघर अलमारियों में जहां देखो लौकियां लौकियां.

फिर नाश्ते, दोपहर, रात के खा लौकी खाने का सिलसिला चल निक रोटी व चावल कम, लौकी अधिक लगी. मित्र संबंधियों में से जिस की चरणरज घर में पड़ती उस का सत्का लौकी के व्यंजनों से किया जाता और समय उपहार में अन्य व्यंजनों के साथ भी भेंट में दी जाती. सदा से महाकंजूस का परिवार अब बड़ा दानी हो गया था. कोई भिखारी आवाज लगाता और उसे लौकी पकड़ा दी जाती. भिख आशीर्वादों की झड़ी लगाता हुआ जाता, 'कर भला हो भला.' तब भी लौकियों ने पैदा होना बंद न किया आसपड़ोस में बांटी जाने लगीं. पंक प्रभुमय होना चाहते थे, अब लौकीम कर रह गए थे.

पर कैसा घोर अंधेर है कि नीचे के बगीचे में लंबीलंबी लौकियां लटकें ऊपर वाले केवल देख कर संतोष करें. पंकजजी के अनुसार ऊपर वालों के कुलदीपक कई बार उन के बगीचे तहसनहस कर चुके थे, अतः उन के लि यह सजा काफी थी.

पर उस दिन पंकजजी ने जो दृश्य उस पर स्वयं उन के नेत्र भी उस विश्वास करने को तैयार न थे. ऊपर का बड़ा सुपुत्र दो लंबीलंबी लौकियां हा लिए खुशी से नाच रहा था. तीनों छोटे उस का साथ दे रहे थे.

"दादाजी! आप की बेल लौकियां." उन्हें गरदन उठा कर अपनी देखते हुए देख कर पड़ोसी के बड़े वाले ने बालकनी से लौकियां लटका कर दिखाईं.



"आज फिर तुम बगीचे में घुसे? शर्म नहीं आती तुम लोगों को?"

"जिस की चाहे कसम ले लीजिए, हम ने आप के बगीचे में कदम रखा ही नहीं."

"फिर ये लौकियां कहां से आईं?" सब से छोटा लड़का खिलखिलाया. बड़े वाले लड़के ने उन्हें बेल की वह शाखा दिखलाई, जो उन के अनजाने ही बालकनी पर चढ़ गई थी. वह बेल इस तरह आड़ में पड़ती थी कि आज तक पंकजजी की नजर उस पर नहीं पड़ी थी.

"अब तक तुम लोग उस पर से कितनी लौकियां तोड़ चुके हो?"

"सिर्फ दस. वह भी इन दोनों को मिला कर." वह मुसकराया.

"हमारी बेल से लौकियां तोड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती?"

"लो, उलटा चोर कोतवाल को डांटे, एक तो आप की बेल हमारे घर में घुस आई, ऊपर से आप हमें ही दोष लगा रहे हैं." कहते हुए बच्चे अंदर चले गए.

पर पंकजजी क्रोध में भुनभुनाते रहे; "जरूर यह इन बच्चों की करतूत है. उन लड़कों ने ही इस शाखा को बालकनी के साथ बांध दिया होगा. और चुपचाप लौकियां खाते रहे, खैर, मैं भी वह मजा चखाऊंगा कि ये याद करेंगे."

प्रश्न केवल लौकियों का नहीं था, उन्हें तो वह अपमान सता रहा था जो बच्चों ने उन्हें अंधेरे में रख कर किया था. उन्होंने तुरंत निर्णय लिया और अंदर चले गए.

"नीरा, फावड़ा कहां है?" वह क्रोधित स्वर में अपनी पुत्रवधू से बोले.

"क्या बात है, पिताजी," वह उन के क्रोधित चेहरे को देख कर सकपका गई.

"ऊपर वालों ने नाक में दम कर रखा

"सुनो, पिताजी लौकी की बेल काट रहे हैं," नीरा दौड़ कर अंशु के पास पहुंची. पर तब तक बेल जड़ से अलग हो चुकी थी.

हैं. बालकनी में एक शाखा चढ़ा ली चुपचाप लौकियां खाते रहे. मैं आज इन को ही काट कर फेंक दूंगा. न रहेगा बां बजेगी बांसुरी."

"पर इतनी सी बात के लिए हरीभरी बेल काट देंगे?"

"तुम्हारा इतना साहस कि मेरे का टांग अड़ाओ? मैं पूछता हूं फावड़ा कहां

"मुझे नहीं मालूम," वह घबराए में बोली.

"ठीक है, मैं स्वयं ढूंढ़ लूंगा," पंक क्रोध से कांपते हुए बोले.

"सुनो, पिताजी लौकी की बेल का जा रहे हैं. कुछ करो न," नीरा दौड़ कर के पास पहुंची. पर इस से पहले कि वह कह या कर पाता बेल जड़ से अलग हो थी.

"यह आप ने क्रोध में क्या कर पिताजी? पूरी बेल ही काट डाली?" दुखी स्वर में बोला.

"हम ऐसी सैकड़ों बेलें उगा सकें पर अब दूसरी तरफ उगाएंगे, जहां मनहूसों की परछाईं भी न पड़े."

"नई बेल के फैलने में तो न कितना समय लगेगा, फिर उन लोगों दोचार लौकियां खा भी लीं तो क्या हो हम लोगों ने भी तो कुछ कम नहीं खा

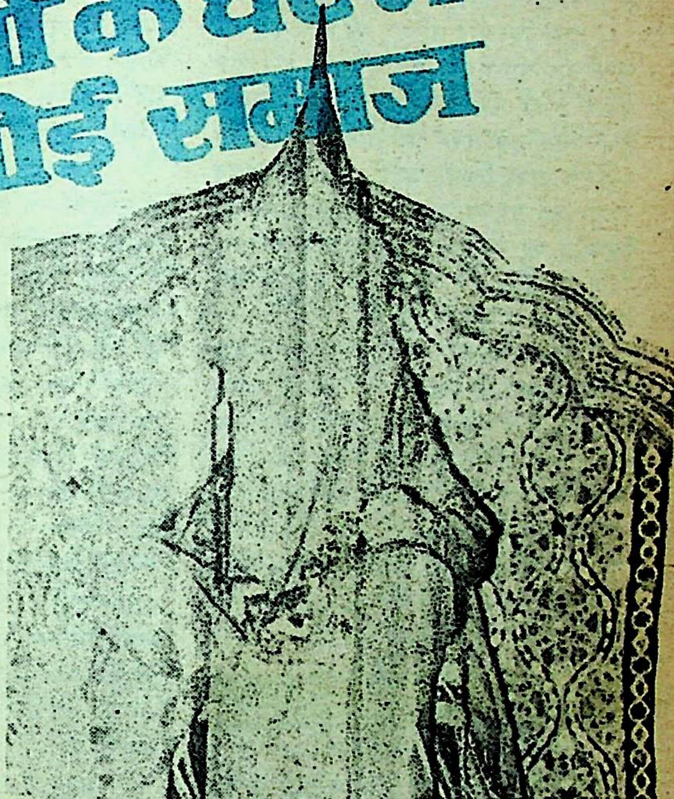
तभी द्वार की घंटी बजी और उ वालों के बड़े सुपुत्र ने दोनों लौकियां लटका हुए घर में प्रवेश किया.

"अंकल, हमें बहुत दुख है कि ह कारण दादाजी को लौकी की बेल का पड़ी, ये लौकियां आप रख लीजिए. अ हम आप के बगीचे की एक पत्ती भी छुएंगे." वह अंशु से बोला और तीर तरह बाहर निकल गया.

पंकजजी सामने पड़ी लौकियां दे रहे. अब उन का क्रोध पश्चात्ताप में ब गया था. उन का मन हुआ कि कहीं थोड़ा एकांत मिल जाए तो फूटफूट कर रो लें, पैरों में इतनी शक्ति भी नहीं बची थी अपने स्थान से हिल भी सकें.

लेख • ममता विष्णोई

रूढ़ियों के घेरे में विष्णोई समाज



आलोचनाओं एवं आपत्तियों के उत्तर

सरिता के अगस्त (प्रथम) 1982 अंक में प्रकाशित लेख 'रूढ़ियों के घेरे में विष्णोई समाज' पर पाठकों, विशेषकर विष्णोइयों में तीव्र एवं व्यापक प्रतिक्रिया हुई है. परिणामस्वरूप इस लेख पर सहमति तथा असहमति से भरे विचार एवं आपत्तियां प्राप्त हुई हैं. किसी ने लेखिका को गुमराह हो जाने तथा औरों को भी गुमराह करने का आरोप लगाया है तो किसी ने इस लेख को एक 'निंदनीय प्रयास' और सरिता को सदा ही कीचड़ उछालने वाली पत्रिका की संज्ञा दी है.

आखिर कौन सा और किस का डर है, जिस के कारण हमें अपनी कमियों और कमजोरियों के बारे में सोचनाविचारना तथा उन के विरुद्ध कुछ करना तो दूर, कहने तक से रोकने से कोशिश की जाती है. जब सुधार की आवश्यकता है और उस की संभावना है तो क्या उस का विश्लेषण करना अपराध है? लेखिका ने अपने समाज में व्याप्त कुछ बुराइयों का जिक्र अपने लेख में किया था. उस में जितने भी तथ्य दिए गए थे, वे सुनीसुनाई बातों या महज कल्पना के आधार पर नहीं थे. लेकिन यह भी सच है कि जबजब किसी समाज में बुराइयों के विरुद्ध कुछ लिखा गया, तबतब समाज का एक खास वर्ग बुरी तरह से चौंका है.

किंतु यह चौंकाना ही सुधार की पहली दस्तक है. रूढ़ियों तथा सड़ीगली परंपराओं के पोषक जब तक उन्हें दबाने और नकारने का सिलसिला बनाए रखेंगे, तब तक उन पर प्रहार किया जाना अत्यंत आवश्यक है

क्योंकि रूढियों का पक्ष लेने से वे ज्यों की त्यों बनी रह जाती हैं और इस तरह उन्हें भी कभी समाप्त नहीं किया जा सकता.

एक विष्णोई महिला को लेख पढ़ कर सिर्फ इसलिए गहरा दुख हुआ कि इस लेख की लेखिका भी विष्णोई है. उन का कहना है—"यदि इस तरह की बातें किसी अन्य व्यक्ति द्वारा लिखी जातीं, तब भी सहन किया जा सकता था. कम से कम किसी विष्णोई को तो ऐसा नहीं लिखना चाहिए जिस से अपने ही समाज की कमजोरियां तथा बुराइयां जाहिर हों."

इस का कारण स्पष्ट है. अपने समाज में जो गलत बातें प्रचलित हैं, उन का असर हम पर ही पड़ता है. बुराइयों का परिणाम हमें ही भुगतना पड़ता है, किसी अन्य को नहीं, इसलिए उस में सुधार की जिम्मेदारी भी हमारी ही है. यह कहां की तुक है कि हमारी कमियों के प्रति इशारा करने के लिए दूसरे लोग आगे आएं और हम खुद पड़े सोते रहें?

अपनी खामियों को खुद ही दूर करें

दूसरा कारण यह है कि जब सत्य और निष्पक्ष बात कहने पर एक विष्णोई को ही व्यंग्यबाणों से आहत कर दिया जाता है तो ऐसे में दूसरों को क्या जरूरत पड़ी है कि वह ओखली में सिर दे कर अपनेआप को जोखिम में डालें? सुधार की आवश्यकता तो हमें है, इसलिए अपनी कमियों का विश्लेषण भी हमें खुद ही करना होगा. इस संदर्भ में मुझे

"आज भी बहुत से विष्णोई लोग अपनी पुरानी विचारधारा के कारण घर से बाहर रह कर भूखा रहना मंजूर करते हैं, मगर किसी दूसरे के हाथ का खाना नहीं खाते. क्या सिर्फ 'पाहल' संस्कार ही व्यक्ति की पूर्ण शुद्धि का प्रमाण है?"

मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली की या याद आती है—"कौम के सच्चे खिदम वही हैं जो उस की कमियों और खामि महसूस कर उन्हें बिला खौफ और कबूल करते हैं और साथ ही उन्हें दूर की कोशिश करते हैं, न कि वे जो नकारते और छिपाते हैं."

लेख को गुमराह हो कर समा छींटाकशी करने वाला नहीं मान चाहिए, क्योंकि लेखिका स्वयं एक वि है और उसे भी इस समाज के प्र महापुरुष जांभोजी के प्रति उतनी ही श्र है, जितनी किसी सच्चे विष्णोई को चाहिए. हां, इतना जरूर है कि लेखि विश्वास एवं उस की आस्था में अंधता है. इसी लिए लेख में किसी बात को सोचविचार के मान लेने का समर्थन किया गया. धर्म के झूठे दावों के इनसानियत को ताक पर रख देने की क कड़ा विरोध कुछ पाठकों को अच्छा लगा. लेकिन चोट किसी व्यक्ति पर विशेष पर नहीं बल्कि उन क्रूर स्थि पर की गई है जिन में शीघ्र परिवर्तन जरूरी है.

आज के समय में सिर्फ विष्णोई के उत्थान की बात को ले कर सोच कोरी मूर्खता है. आवश्यकता समूचे स और पूरे राष्ट्र के उत्थान की है, राष्ट्र तो धर्म, जाति और संप्रदाय इन सर्वोपरि हैं. अतः कोई भी ऐसा वि सर्वमान्य नहीं हो सकता जो किसी सं विशेष के दायरे में ही कैद हो. वही ...ता से ग्राह्य होती है जो यथार्थ समीप हो. समाज में व्याप्त नैतिक यथार्थ बिंदुओं से दूर का भी संबंध न वाली रूढियों से हमारा उत्थान कदापि हो सकता. तब फिर इन बातों के विरो उठी आवाज को दबाने का प्रयत्न क्यों जाता है? क्या ऐसा करना अभिव्यक्ति स्वतंत्रता के मूल अधिकार का हनन नहीं

दरअसल लेख भी आपत्तियों की में कुछ कट्टरवादी धर्मांध लोगों के

रवैए का शिकार हुआ है. आपत्तिकर्ता लेख में दिए गए तथ्यों को झुठलाने की दिशा में कोई भी सशक्त प्रमाण और युक्ति प्रस्तुत नहीं कर सके. 'नीले वस्त्र मत पहनो' जैसे प्रचलित नियमों का वास्तविक स्वरूप विष्णोई समाज में आज भली प्रकार उजागर हो चुका है. समय के साथसाथ नियमों में बदलाव जरूरी है अन्यथा उन्हें कौन मानेगा? इसी तथ्य को ध्यान में रख कर कुछ विषमताओं, भ्रांतियों तथा रूढियों का उल्लेख करते हुए लेखिका ने पाठकों के समक्ष यह प्रश्न रखा था कि विष्णोई समाज अपनेआप में तमाम अच्छी बातों के लिए होने के बावजूद आज प्रगति की दौड़ में कहां है.

जहां लेखिका उन तमाम अच्छी बातों की समर्थक एवं प्रशंसिका है जिन का उपदेश जांभोजी ने दिया था, वहीं उन के अनुयायियों के परस्पर विरोधी, अव्यावहारिक तथा अमानवीय कृत्यों से उस का कड़ा विरोध भी है. ऐसा किया जाना समाजोत्थान के लिए आवश्यक है. लेख 'रूढियों के घेरे में विष्णोई समाज' भी इसी दिशा में एक छोटा प्रयास है, न कि समाज पर की गई छींटाकशी.

प्रगतिशील विचारों को रोका नहीं जा सकता. पुरातनपंथियों के लाख प्रयत्नों के बावजूद आज के समय में धर्म के नाम पर समाज में प्रचलित अनेक बातों पर फिर से विचार करना अनिवार्य हो गया है ताकि उन्हें तर्कसंगत और व्यावहारिक रूप दिया जा सके. तभी तो आने वाली पीढ़ियां उन्हें स्वस्थ विचारधारा के रूप में ग्रहण कर सकेंगी. इसी संदर्भ में जब लेख की मूल भावना वर्तमान और भावी पीढ़ियों को मूक तथा निरीह बने रहने से बचा कर उन की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है तब फिर लेख को 'निंदनीय प्रयास' की संज्ञा कैसे दी जा सकती है?

एक सज्जन को आपत्ति है कि लेखिका ने अपने एकपक्षीय विचार लाद कर विष्णोई समाज पर छींटाकशी की है. लेकिन इस का एकमात्र कारण यह है कि उन्होंने लेख को ध्यान से पढ़ा नहीं है अन्यथा वह मूल उद्देश्य को समझ जाते. यही कारण है कि उन्हें अपनी निराधार आपत्तियों के लिए न तो कोई ठोस धरातल ही मिल पाया और न ही कोई प्रामाणिक तर्क. लेखिका ने पर्याप्त प्रमाणों तथा तथ्यों का सम्यक अध्ययन तथा भ्रमण करने के उपरांत ही लेख में अपने निष्पक्ष विचारों को व्यक्त किया था तथा सामाजिक प्रगति की दिशा में कुछ बुनियादी सवाल उठाए थे. किंतु जो लोग अपनेआप को समाज का एकमात्र प्रहरी समझते हैं, उन के निर्णयों, निष्कर्षों, धारणाओं तथा विचारों के प्रति किसी प्रकार का कोई आग्रह, पूर्वाग्रह या दुराग्रह लेखिका का नहीं था और न है. लेख में क्षेत्रज्ञान, सीमा मर्यादा जैसे सभी तथ्यों का ध्यान रखा गया था. किंतु आश्चर्य है कि एक पाठक का कहना है कि विष्णोई समाज में तो एक भी रूढि या कुरीति देखने को नहीं मिलती.

"आज भी ग्रामों में लड़के और लड़कियां स्कूल न होने के कारण शिक्षा पाने में असमर्थ हैं. विधवा विवाह को विष्णोई समाज में मान्यता क्यों नहीं दी गई? दहेज जैसी अनेक कुरीतियों से बचने के लिए अंतरजातीय विवाहों का प्रचलन विष्णोई समाज में क्यों नहीं है?"

वह इतना तो अवश्य जानते होंगे कि हिसार से प्रकाशित 'अमर ज्योति' तथा जयपुर की 'संगोष्ठी वाणी' विष्णोई समाज की प्रतिनिधि पत्रिकाएं समझी जाती हैं, जिन में अधिकतर अंकों के संपादकीय तथा अन्य लेखों में यही चिंता प्रकट की जाती है कि विष्णोई समाज में बुराइयां कितनी बुरी तरह व्याप्त हैं. यह बात अलग है कि उन्हें दूर करने की दिशा में न तो कभी कोई ठोस

कार्यक्रम ही प्रस्तुत किया गया और न कभी कोई विचारविमर्श और चर्चापरिचर्चा ही सार्थक हो सकी.

जोधपुर, नागौर, बीकानेर, जैसलमेर और श्रीगंगानगर आदि जिलों में विष्णोई बहुत अधिक संख्या में रहते हैं. वहां शिक्षा का स्तर बहुत ही कम है. लड़कियों की शिक्षा का तो नामोनिशान ही नहीं है. अशिक्षा और अज्ञान के कारण वहां बाल विवाह का प्रचलन इतना अधिक है कि दूध पीते बच्चों का विवाह कर दिया जाता है.

मानवता और न्याय

तीन वर्ष पूर्व घोरीमना ग्राम में एक मां पंचों के समक्ष यह फरियाद ले कर आई कि उस की बेटी का विवाह बहुत छोटी उम्र में अमुक व्यक्ति के बेटे से कर दिया गया था. किंतु अब बड़े होने पर यह पता चला है कि वह लड़का पुरुषत्वहीन है तथा उस की लड़की पर अन्य अत्याचार भी हो रहे हैं. इसलिए उस की लड़की को छुटकारा दिलाया जाए. लेकिन अफसोस कि पंचों के रूप में बैठे समाज के कुछ ठेकेदारों ने पंचों के पद की गरिमा को कलंकित करते हुए यह निर्णय दिया कि कुछ भी हो, लड़की को तो लड़के के साथ ही रहना होगा.

क्या यही न्याय, कानून और नियम है? क्या यही मानवता है कि पूरे जीवन के लिए एक लड़की को अंधकार में धकेल दिया जाए? इस के बावजूद एक पाठक का तर्क है कि विष्णोई समाज तो आज की तमाम बुराइयों से अछूता है. सच बात तो यह है कि बुराइयां तो बहुत हैं, लेकिन यदि कोई अपनी आंखें मूंद कर अपने कानों में उंगली डाल ले तो इस का क्या इलाज है? अनदेखा करने के स्थान पर आज बुराइयों को दूर करने तथा अच्छाइयों के शुद्ध स्वरूप को उभारने तथा निखारने की आवश्यकता है.

एक पाठक की आपत्ति है कि "किसी विष्णोई के घर में ढूंढ़ने से भी पत्थर की मूर्ति नहीं मिलेगी." पत्थर की मूर्तियां क्योंकि महंगी आती हैं, इसलिए उन की जगह घरों में तसवीरों की पूजा की जाती है. दूसरे में घरों का नहीं बल्कि विष्णोई मंदिरों का जिक्र किया गया था. उन वर्णित स्थानों पर जा कर देखें तो पता चलेगा कि पत्थर की मूर्तियां मंदिरों में हैं या नहीं. और इस के लिए फिर एक बार पूर्व प्रकाशित लेख को ध्यान से पढ़ने का कष्ट उठाना पड़ेगा.

विष्णोई समाज के प्रवर्तक जांभोजी ने तो पाखंड और आडंबरों से दूर रहने का उपदेश दिया था. फिर उन के अनुयायी आज किस मार्ग पर चल रहे हैं? एक तर्क यह है कि आज कौन सा समुदाय है जिस में पर्दा प्रथा नहीं है. इस के उत्तर में इतना ही कहना है कि अगर कोई चोरी करने के बाद बचने के लिए यह सफाई दे कि आज ऐसा कौन है जो चोरी नहीं करता तो इस से उस को छुटकारा नहीं मिल सकता. यदि दूसरे अपना घर... रखते हैं तो क्या जरूरी है कि हम भी... करना छोड़ दें? परदे जैसी बातें सिर्फ वहीं... जहां अशिक्षा और अज्ञान का अंधेरा... प्रगतिशील समाज में तो ये बातें कभी... पीछे छूट चुकी हैं.

एक आपत्ति यह भी है कि लेख में... लगाने को 'चिप्पी' क्यों बताया गया है... के साथ उपजाति का प्रयोग तो रक्त... शुद्धि के लिए जरूरी है वरना एक भाई... शादी एक बहन से नहीं हो जाएगी?... आपत्ति भी सिर्फ दिमागी दिवालियेपन... ही परिचायक है. जो लोग अपने नाम के... जाति, उपजाति या गोत्र नहीं लगाते तो... उन का विवाह बहनों से हो जाता है या... का रक्त शुद्ध नहीं रह पाता? पु... मान्यताओं ने मानसिकता को इतना... बना दिया है कि लगता है जैसे सही... की शक्ति या तो क्षीण हो गई है या उस... प्रयोग ही नहीं किया जाता.

हठवादिता के शिकार

गेरुआ वस्त्र धारियों द्वारा एक... विष्णोई को बारबार यही समझाया... जाता है कि "बीस और नौ नियम मानने... को ही 'विष्णोई' कहते हैं. जब ये 29 नि...

बने थे तब जो देखा, सोचा और समझा गया था, उस से अच्छा आज के समय में तथा भविष्य में कुछ और हो ही नहीं सकता. इन में संशोधन करने या असहमति व्यक्त करने से हम धर्मभ्रष्ट और नास्तिक हो जाएंगे."

बस, यही कारण है कि इन्हें येनकेन प्रकारेण सही सिद्ध करने के लिए कोशिशें की जाती हैं. कोई भी पूर्व निर्धारित नियम केवल इसलिए तो मान्य नहीं हो सकता कि वह अत्यंत प्राचीन है? यह देखना और भी जरूरी है कि वह आज के युग में व्यावहारिक और विज्ञानसम्मत है अथवा नहीं.

लेख में दी गई इस बात को ले कर कोई आपत्ति नहीं उठाई गई कि जांभोजी ने हिंदू संस्कृति की रक्षा के लिए विभिन्न धर्मों और जातियों के लोगों को एकता के सूत्र में बांध कर समाज सुधार का जो अभियान चलाया था, उस में आ कर भी आज विष्णोई लोग अपने समाज के अंदर अलगअलग खेमों में क्यों बंटे हुए हैं. उन में उपजातियों का जंगल क्यों फैला हुआ है? और साथ ही ऐसी कौन सी विशेषता है जो कन्याकुमारी से कश्मीर तक के विष्णोइयों में एक समान हैं. सब अपने क्षेत्र, काल और वातावरण के बीच अपनी भिन्नभिन्न मान्यताओं, परंपराओं तथा रीतिरिवाजों से बंधे हुए हैं. आपत्तियों में उलटेसीधे तर्क तो बहुत दिए गए हैं, किंतु इस मूल प्रश्न का उत्तर किसी ने नहीं दिया कि धर्मांधता प्रधान है या विवेक.

ऐसे उदार लोगों की आज बहुत कमी है, जो अपने समाज की गलत बात को सुनते ही बौखला न उठें. ये तत्त्व हर संभव प्रयास करते हैं कि आगे कोई इस प्रकार के लेख लिखने का साहस न कर सके. इन्हें तत्त्वों के अड़ियल रवैए से किसी रूढि को मिटाने में बहुत लंबा समय लगता है. समयसमय पर इस दिशा में हुए बलिदान इस सत्य के जीवंत प्रमाण हैं. इसलिए यह सच है कि यदि सामाजिक कुरीतियों पर किए गए प्रहारों को किसी क्षेत्र, वर्ग या व्यक्ति विशेष पर किया गया मान लिया जाएगा तो कुरीतियों को दूर करने का मार्ग बुरी तरह अवरुद्ध हो

"विष्णोई समाज में बुराइयां तो बहुत हैं, लेकिन यदि कोई अपनी आंखें मूंद कर अपने कानों में उंगली डाल ले तो इस का क्या इलाज है? अनदेखा करने के स्थान पर आज बुराइयों को दूर करने की आवश्यकता है."

जाएगा. फलस्वरूप समाज उन रूढियों तथा अंधविश्वासों का गुलाम बन कर प्रगति के मार्ग से पिछड़ता चला जाएगा.

एक आपत्ति यह भी है कि लेख में सिर्फ जंतुओं के प्रति संकुचित प्रेम वाली बात को अनावश्यक ही दर्शाया गया है. इस का कारण स्पष्ट है कि पशुपक्षियों से प्यार करने वालों का असीम स्नेह इनसान के लिए कहां चला जाता है? एक विष्णोई महिला ने एक हिरणी के शिकार में मारे जाने पर उस के बच्चों को अपना स्तनपान कराया. वास्तव में यह गर्व की बात है. लेकिन विष्णोई लोग उन अनाथ बच्चों की क्या मदद कर रहे हैं, जिन के सिर पर मांबाप का साया नहीं है? हां, एक पाठक ने लिखा है कि विष्णोई समाज में बुद्धिजीवियों की संख्या कम नहीं है. किंतु सवाल यह है कि ये बुद्धिजीवी समाजोत्थान, नवजागरण एवं चेतना के लिए क्या कर रहे हैं? आखिरकार खुद चुप रह कर वे कौन सी दिशा अपने समाज को दे रहे हैं? और यदि उन्हें निष्क्रिय रह कर ही जीना है तो फिर उन्हें बुद्धिजीवी समझने की भूल क्यों की जाती है?

प्रगति का मापदंड

एक आपत्ति यह है कि लेख में स्वतंत्रता के बाद की गई विष्णोई समाज की उन्नति का उल्लेख नहीं किया गया. इस के लिए पहले यह देखना होगा कि क्या वास्तव में उन्नति हुई है. क्या सम्मेलन आयोजित कर लेने, मंदिरों तथा धर्मशालाओं की इमारतें खड़ी कर लेने

को ही उन्नति कहते हैं? या राजनीति के में एक दो के कूद कर आ जाने को समाज उन्नति कहा जाएगा? किसी समाज उन्नति का पता उस की कला, संस्कृति उस के साहित्य से चलता है. विष्णोई सम में आज क्या स्थिति है? स्वतंत्रता के बा नारी शिक्षा के क्षेत्र में कौन से नए आ खड़े किए गए हैं?

आज भी ग्रामों में लड़के और लड़कि स्कूल न होने के कारण शिक्षा पाने में अस हैं. विधवा विवाह को विष्णोई समाज मान्यता क्यों नहीं दी गई? दहेज जैसी कुरीतियों से बचने के लिए अंतरजा विवाहों का प्रचलन विष्णोई समाज में नहीं है? इन सब प्रश्नों के उत्तर में नहीं जो शब्द है, वह 'उन्नति' का जो चित्र ह सामने प्रस्तुत करता है उस से सारी साफ हो जाती है.

विष्णोई समाज में प्रचलित सामू विवाहों की यह विशेषता है कि लड़कालड़की की उम्र पर ध्यान नहीं जाता. राजस्थान में जब कोई बड़ाबूढ़ा जाता है तो किसीकिसी गांव में तो यह कर अनेक बच्चों के विवाह एक साथ इ आयोजित कर लिए जाते हैं कि ऐसा कर बहुत पुण्य मिलता है और लगे हाथों परि का मुखिया धार्मिक तीर्थों का भ्रमण भी आता है.

इस पर भी आपत्तिकर्ताओं ने किया है कि विष्णोई समाज में न तो सामू विवाह हैं और न तीर्थाटन जैसा जब कि सितंबर, 1979 में ही जोधपुर के के एक गांव में इस तरह के एकदो नहीं बाल विवाह संपन्न हुए थे, जिस का विव अगले ही महीने 'संगोष्ठी' पत्रिका में छपा था.

एक पाठक को यह आपत्ति है कि विष्णोई शब्द पर कोई विवाद नहीं है, लेख में ऐसा क्यों लिखा गया. अ.भा. वि सम्मेलन, औरैया में अध्यक्ष पद से बो हुए एक विष्णोई नेता ने अपने भाषण में था कि यह कोई जाति नहीं है. (इस

विस्तृत विवरण मई, 1979 की 'अमर ज्योति' में छपा था) जब कि स्वयं आपत्तिकर्ताओं का कहना है कि विष्णोई जाति है. उधर डा. हीरालाल माहेश्वरी तथा श्रीमती कमला रत्नम आदि का मत है कि यह संप्रदाय है (यही प्रमाणित सत्य है).

संकुचित मनोवृत्ति

आज भी बहुत से विष्णोई लोग अपनी पुरानी विचारधारा के कारण घर से बाहर रह कर भूखा रहना मंजूर करते हैं, मगर किसी दूसरे के हाथ का खाना नहीं खाते. क्या सिर्फ 'पाहल' संस्कार ही व्यक्ति की पूर्ण शुद्धि का प्रमाण है? किंतु उन्हें इस से कोई लेनादेना नहीं. इसी तरह के तमाम बेतुके और अस्वस्थ दृष्टिकोण साथ ले कर चल रहे, संकुचित मनोवृत्ति वाले हमारे समाज के ठेकेदार आखिर कब तक इन खोखली बातों की बैसाखियां लगा कर चलते रहेंगे? और हमारी मानसिक दासता कब तक इन रूढ़ियों से चिपकी रहेगी? कब तक अंधविश्वासों के गुलाम बन कर समाज के ये लोग पिछड़ेपन को ही अपनी प्रगति मानते रहेंगे?

यदि आंखोंदेखी सत्य बातों को लिखना अपराध है तो फिर किसी को यह अधिकार नहीं कि वह अपना झूठ का पुलिंदा उठाए हुए सड़ीगली परंपराओं का समर्थन कराने के लिए दूसरों को भी विवश करे. सोए हुए लोग कभी बदलाव नहीं ला सकते. परिवर्तन के लिए पहले जागना जरूरी है. सामाजिक क्रांति की शुरुआत सर्वप्रथम खुद अपने सुधार से शुरू होती है, जैसा कि स्वयं जांभोजी ने कहा था—"पहले क्रिया आप कमाइए ता औरां नू फरमाइए" अर्थात पहले हमें खुद कोई काम करना चाहिए. उस के बाद ही दूसरों से करने के लिए कहना चाहिए.

इस के लिए हमें नए सिरे से हर पहलू पर विचार करना होगा. यदि हम पुरानी लीक पर ही चलते रहे तो उन्नति संभव नहीं. विष्णोई समाज के प्रवर्तक गुरु जांभोजी के अनुयायी भटक कर आज कहां से कहां पहुंच गए हैं? क्या आज वे उस मोड़ पर नहीं हैं जहां एक तरफ उन की परंपरागत जीवनशैली है और दूसरी तरफ एक तेज रफ्तार जिंदगी, जो उन्हें प्रगति की दौड़ में निरंतर पीछे छोड़ती जा रही है? ●

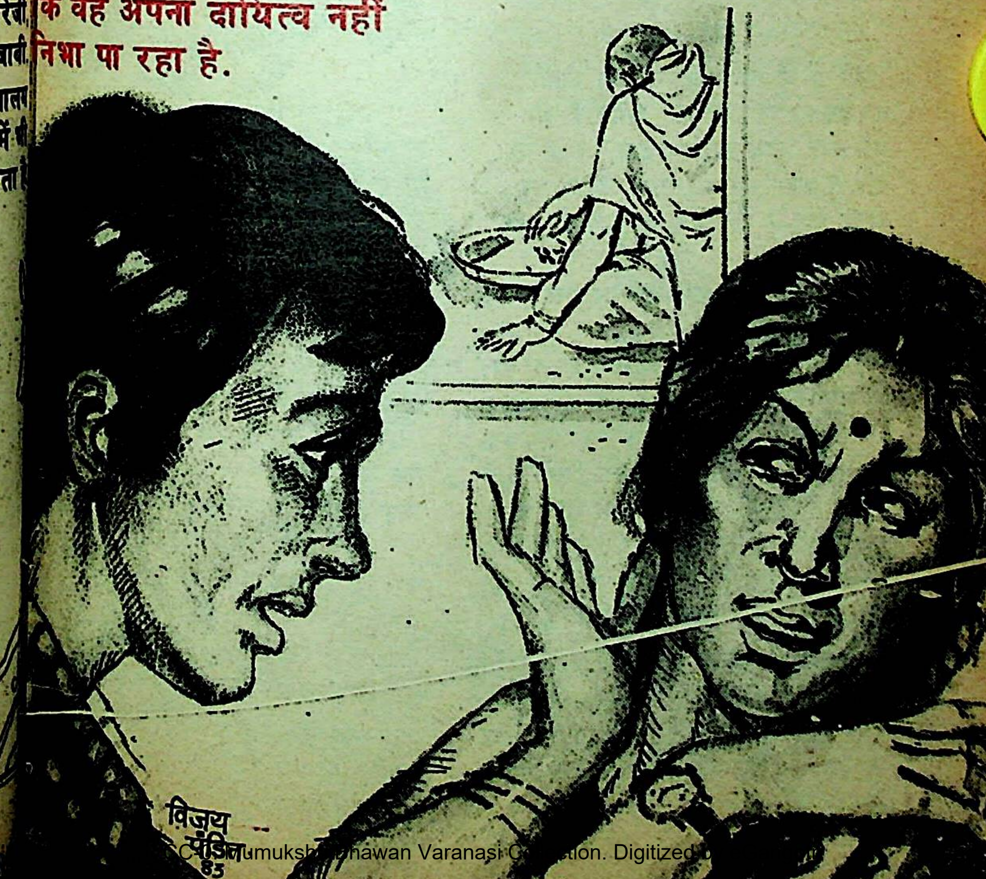
दायित्व

कहानी • अरुण अलबेला

दफ्तर में जब से सुमी आई थी, शेखर को सुधा से अरुचि सी होने लगी थी. उसे सुमी का हंसना, बोलना, आंखें मटकाना, बालों की लटें गरदन झटक कर पीछे ले जाना बहुत पसंद आता था. उसे वह अकसर एकटक देखता रहता.

सुमी जब भी बातें करती, होंठों को एक खास अंदाज में गोल कर लेती थी. मुसकराने का उस का ढंग भी अपना अलग ही था. वह धवल दंत पंक्तियां बिजली सी बिखेर देती. पुतलियों को इधरउधर चला

शेखर ने जब से सुमी को देखा था तब से उसे पत्नी सुधा नीरस लगने लगी थी. लेकिन सुमी के घर के हालात देख कर उसे लगा कि वह अपना दायित्व नहीं निभा पा रहा है.



"मुझे तुम से ऐसी आशा नहीं थी, शेखर. तुम इस पर भी उतर आए. लगता है, अब मुझे कोई कदम उठाना पड़ेगा," सुधा ने धीरे से कहा. शेखर रात को देर से घर आया. उस के मुंह से बू आ रही थी. ▲

कर जब वह पलकें झपकाती तो शेखर उसे देखता ही रह जाता.

सुधा तो ऐसा कुछ भी नहीं करती थी. वह सीधेसादे ढंग से रहती थी. न अधिक सजतीसंवरती थी और न ही आकर्षक साड़ियां पहनती थी. उसे तो सिर्फ यही कहना आता था, "घर में इतने काम हैं कि सजनेसंवरने की फुरसत ही नहीं मिलती. घर में मांबाबूजी हैं, बच्चे हैं, सब की देखभाल करनी पड़ती है, सब के लिए भोजन बनाना होता है, कपड़े धोने और इस्तिरी करनी होती है, झाड़ूबुहारी करनी पड़ती हैं. दिन यों ही गुजर जाता है, फिर तुम्हारा वेतन भी इतना नहीं कि नौकरानी रखी जा सके. बाबूजी जब कमाते थे तो ठाट का जीवन था. जब से उन्होंने अवका[श ग्रहण] किया है, घर का खर्च बढ़ गया है."

यह सुन कर शेखर बौखला उ[ठा],

"इस का अर्थ यह तो नहीं कि तु[म] फूहड़ की तरह बनी रहो. आखिर [पति को] खुश रखना भी तो पत्नी के लिए [...] काम है. तुम इस दिशा में अपने क[र्तव्य का] पालन क्यों नहीं करतीं?"

इधर जब से उस ने सुमी को [...] तब से तो उसे सुधा एकदम नीरस और अनाकर्षक लगने लगी थी.

वह सुमी पर मर मिटना चा[हता...] उस से जबतब बातें करने की को[शिश में] लगा रहता था.

एक दिन शेखर दफ्तर से [...] उस ने सुधा को अपने करीब बैठा[...] पर सुधा तत्काल दूर हट कर [...] नजरें घुमा कर हौले से बोली, "[...] मां, बाबूजी या बच्चों का तो [...]

करो. देखो, मांजी बरामदे में चावल साफ कर रही हैं. आभा और विभा वहीं बैठी पढ़ रही हैं. पता नहीं कब इधर देख लें. उन के सामने तुम्हें ऐसी कोई हरकत नहीं करनी चाहिए."

शेखर चिढ़ उठा. उस ने बुरा सा मुंह बनाया. उसे सुधा से यह अपेक्षा नहीं थी. वह इस समय इस तरह टका सा जवाब सुनने के मूड में नहीं था.

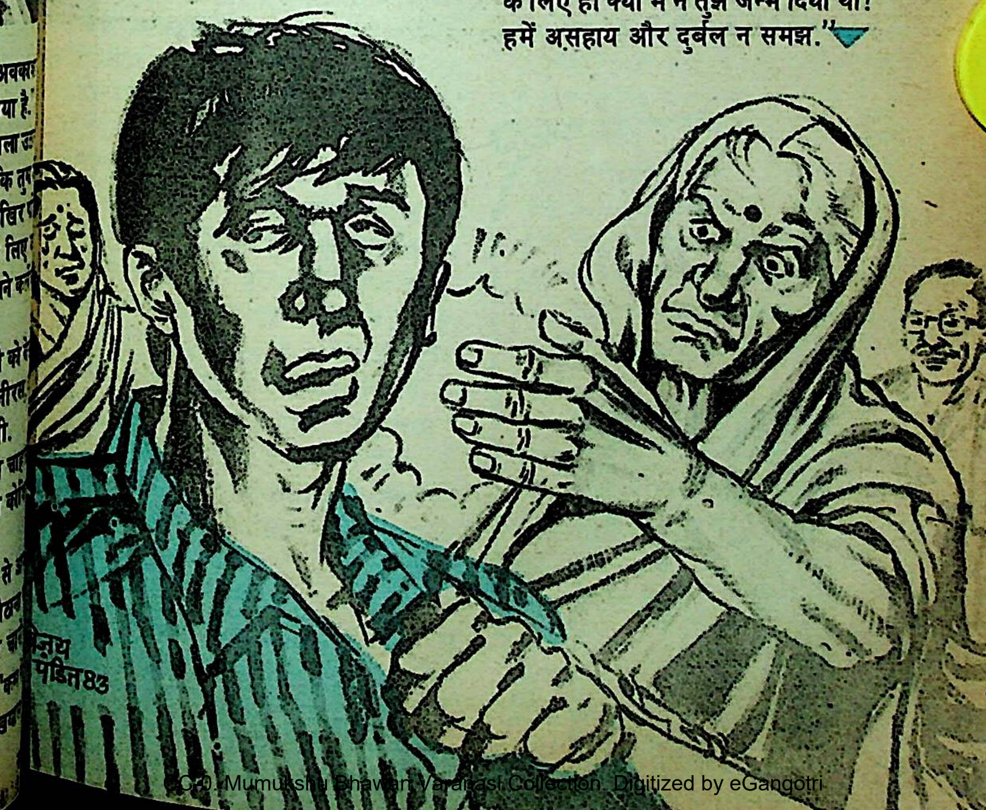
वह चाहता था कि जब भी वह दफ्तर से आए, सुधा उस के करीब आ कर उसे अपने प्यार से भर दे, उस की सारी परेशानियों को दूर कर दे.

सुधा तीन बच्चों की मां हो चुकी थी. आभा 10 साल की थी. विभा उस से दो साल छोटी तथा आनंद उस से भी दो साल छोटा था. पहले जब शेखर दफ्तर से आता था, तीनों बच्चे खुशी से 'पिताजी आ गए' कह कर चिल्लाते और उस से लिपट जाते थे. तब सुधा प्यार से उन्हें बाहर भेजना चाहती, पर सास कह उठतीं, "बहू, बच्चों को बाप का प्यार भी तो पाने दो. ये दिन भर तो स्कूल में रहते हैं. संध्या को एकाएक पिता को देख कर खुश होंगे ही. तुम दोनों को कुछ समय तो बच्चों के साथ बिताना ही चाहिए. शेखर जब छोटा था तो हम ने उसे कभी शिकायत का मौका नहीं दिया था."

मां ठीक कहती थी, पर शेखर समझता ही नहीं था. वह तो बच्चों और मातापिता को अपनी खुशी में बाधा समझने लगा था.

वह चाहता था कि सुधा हर समय सुमी की तरह उस के साथ रहे और आंखों को मटकामटका कर उस से बातें करे. हर समय सजीधजी रहे और जब वह दफ्तर से आए तो उस की बांहों में समा जाए. कई बार सुधा समझाती, "शेखर, हर चीज का कोई अवसर होता है. तुम्हें समय का ज्ञान होना

"तो रह अकेला," मां ने शेखर को तमाचा जड़ते हुए कहा था, "अकेला रहने के लिए ही क्या मैं ने तुझे जन्म दिया था? हमें असहाय और दुर्बल न समझ."



चाहिए. वही तुम्हारी परिपक्वता की पहचान होगी. इस तरह उच्छृंखल बनोगे तो सब की नजरों से गिर जाओगे और अपनी खुशियों पर भी स्वयं प्रहार कर डालोगे."

शेखर बुरा सा मुंह बना कर रह जाता. उस दिन भी वह नाराज हो कर दफ्तर चला गया था. सुधा चाहते हुए भी उसे कुछ समझा नहीं सकी थी.

"क्या बात है, बहू?" सास ने जानना चाहा था.

"कुछ नहीं, मांजी." उस ने बात आईगई कर अपने को घरेलू कामकाज में लगा लिया, पर उस के ससुर कुछ ताड़ गए थे.

जब से मातापिता गांव से आए थे, शेखर कुछ उखड़ाउखड़ा सा रहने लगा था. एक तो खर्च बढ़ गया था, ऊपर से सहानुभूति दर्शाने वाला भी कोई नहीं था.

सुधा थी भी तो वह बच्चों के सो जाने पर ही रात को सही ढंग से उस से बातें कर पाती थी. उस समय भी छः वर्षीय आनंद के जाग जाने का भय अकसर बना रहता था.

आनंद अपनी दादी के पास नहीं सोता था.

दोस्त

पत्थर तो हजारों ने
मारे थे मुझे लेकिन,
जो दिल पे लगा आ कर
एक दोस्त ने मारा था.

—सुहैल अजीमाबादी



कमरे दो थे. मां आभा और ... ले कर सो जाती थी. पिता बाहर ... में पड़ी खाट पर सोते थे.

अवकाश प्राप्ति के बाद पिता ... सारे रुपए बैंक में जमा कर दिए ... के सूद से गांव में गुजरबसर ... यदाकदा बच्चों को देखने की इच्छा ... पत्नी को ले कर शहर चले आते ... छोटेछोटे दो कमरों में इतने प्राणि... रहना मुशकिल हो जाता था.

शेखर का इतना वेतन नहीं ... अच्छा बड़ा मकान ले सकता. घर ... को रुपए बचते थे.

गृहकार्य में कुशल सुधा बखू... आवश्यकताओं की पूर्ति ... परिवार की गाड़ी वेतन के दिन तक ... जाती थी. अभाव खलता नहीं था, ... शेखर कुछ रुपए इधरउधर खर्च ... था तो स्थिति डगमगा उठती थी ... चाहता था कि जब वह दफ्तर से ... सुधा उस के करीब बैठे, उसे प्यार ... या कभी उस के साथ फिल्म या ...

एक दिन उस ने सुधा से कहा ... "सुधा, बच्चों को मां के जिम्मे छोड़ ... फिल्म चलो न."

सुधा बोल उठी थी, "मुझे ... एतराज नहीं, पर बच्चे भी तो कभी ... नहीं देख पाते. हमें इन्हें भी साथ ले ... चाहिए. थोड़े रुपए जरूर ज्यादा ... इन्हें भी तो लगेगा कि मातापिता ... फिल्म गए थे."

"लेकिन मैं तो सिर्फ तुम्हें ... चाहता हूं," शेखर ने क्षुब्ध हो कर ... "थोड़ी देर बाद कहोगी कि ... फिल्म होती नहीं, मांबाबूजी को भी ... जाए. इन सब को ले जा कर सिर ... करना है मुझे. मैं अपनी खुशी ... तुम्हें..."

"सिर्फ अपनी खुशी देखने ... होगा, शेखर, हमें सब की खुशि... खयाल रखना चाहिए."

"तुम मुझ जैसे अकेले के लिए खुशियां पैदा नहीं कर सकतीं तो सब के लिए कैसे कर सकती हो?"

"तुम्हारे सोचने का ढंग अलग है, शेखर."

इसी तरह छोटीछोटी बातों को ले कर तनाव का वातावरण बन जाता. ऐसे में शेखर कुढ़ कर या तो बाहर चला जाता या बिना खाए सोने का उपक्रम करता. तब सब के सो जाने पर सुधा उसे प्यार से सहलाती, समझाती. किंतु जब सुधा उस की कमजोरियों पर नाराज होती हो शेखर उसे मनाने की चेष्टा नहीं करता था. वह अपने अंदर आक्रोश भरे रहता था. वह चाहता था कि सुधा ही सदा अपने प्यार से उस के आक्रोश को दूर करती रहे.

यह सुधा को पसंद नहीं था. वह चाहती थी कि शेखर भी अपने व्यवहार में जरा सा परिवर्तन ला कर दांपत्य जीवन को सुखमय बनाने की चेष्टा करे, ताकि स्वस्थ वातावरण में बच्चों का पूर्ण विकास हो सके और मातापिता भी खुश रहें. इतनी सी विचारभिन्नता दोनों के जीवन झुलसाए जा रही थी और जीवन की जटिलताओं को सुलझाने के स्थान पर शेखर उन्हें उलझाए जा रहा था.

अब तो वह वेतन के रुपए भी घर पर कम देने लगा था. बाकी रुपए वह अपनी खुशियों पर खर्च करने लगा था. इस से घर की आर्थिक दशा और बिगड़ती जा रही थी. सुधा चाहती थी कि सब ठीक चलता रहे. घर में किसी चीज की कमी न हो, ताकि सासससुर कोई दूसरा अर्थ न लगा बैठें.

वह चाहती थी कि सासससुर बहुत दिनों के बाद गांव से आए हैं तो उन की सेवा होनी ही चाहिए. उन्हें समय पर और अच्छा भोजन मिलना ही चाहिए. ऐसा न हो कि उन्हें अपना यहां आना खलने लगे. एक दिन उस ने शेखर से कहा भी, "लगता है, तुम रुष्ट हो कर मुझे पैसे की कमी से संकट में डालना चाहते हो. कम से कम मांबाबूजी के यहां रहने तक तो ऐसी स्थिति न आने दो. याद करो कि इन्होंने तुम्हें योग्य बनाने में कितने कष्ट उठाए होंगे."



आंसू

शबनम के आंसू फूल पर
ये तो वही किस्सा हुआ,
आंखें मेरी भीगी हुई
चेहरा तेरा उतरा हुआ.
—बशीर बद्र

शेखर और चिढ़ उठा था, "बाबूजी ने कौन से मुझे अपनी बचत के रुपए दे दिए हैं? उन्होंने तो सारे रुपए बैंक में जमा करा दिए हैं और सूद के रुपए खुद उड़ा रहे हैं."

"शेखर," सुधा गंभीर हो गई थी, "इस तरह पिताजी पर तो झूठे आरोप न लगाओ. आखिर वे रुपए तुम्हारे ही तो होंगे. जब तक वे जिंदा हैं, तुम्हें दे कर खाली हाथ नहीं रहना चाहते और अगर उन्होंने तुम्हें रुपए दे भी दिए तो क्या पता, तुम रुपयों को अपनी खुशियों पर खर्च कर डालो."

"यानी तुम समझती हो कि मैं सारे रुपए उड़ा दूंगा?"

"हां, जैसे अभी उड़ा रहे हो. तुम्हें तो पिता की दृष्टि में विश्वासपात्र होने की चेष्टा करनी चाहिए. सोचो तो, गांव में रहते हुए वह तुम से अपनी गुजरबसर के लिए कभी रुपए नहीं मांगते थे. वह तुम पर अपना कोई बोझ नहीं डालते थे. अब जब गांव से आए हुए हैं तो हमें उन का बोझ

हसीखुशी सहन करना चाहिए."

शेखर कह उठा, "शायद, तुम उन्हीं रुपयों की खातिर मांबाबूजी की सेवा कर रही हो."

"शेखर," वह क्रुद्ध हो उठी थी, "मेरी सेवा को गलत अर्थ न दो."

बातें बढ़ गई थीं. शोर सुन कर मातापिता भी आ गए थे.

पिताजी ने पूछ ही लिया था, "क्या बात है?"

"कुछ नहीं, बाबूजी." सुधा ने बात टालनी चाही थी.

पर सास बोल उठी थी, "जब भी कुछ होता है, तुम दोनों लड़ने लगते हो. लगता है हम से कुछ छिपाया जा रहा है. आखिर हमें भी तो पता लगना चाहिए कि बात क्या है? हम यहां कुछ दिनों के लिए आए हैं, तुम दोनों का झगड़ा देखनेसुनने नहीं."

ससुर ने उदास स्वर से कहा था, "इसी लिए मैं ने गांव में ही रहने का निर्णय लिया है. वहां कम से कम चखचख तो नहीं सुननी पड़ती. हां, कभीकभी बच्चों का मोह जरूर यहां खींच लाता है."

एक दिन शेखर रात 10 बजे घर लौटा था. उस के मुंह से शराब की बू आ रही थी. उस वक्त सब सो रहे थे, सिर्फ सुधा जाग रही थी.

मातापिता को पता न चले, इसलिए सुधा धीरे से बोली, "मुझे तुम से ऐसी आशा नहीं थी. तुम इतने नीचे उतर आए? लगता है अब मुझे कोई कदम उठाना ही पड़ेगा. मैं तुम्हारी उच्छृंखलता अधिक सहन नहीं कर पाऊंगी."

शेखर कुछ नहीं बोला था. केवल दैनिक पत्र के पृष्ठ पलटता रहा था.

सुधा उस के करीब आ कर पूछ बैठी, "मैं जानना चाहती हूं कि तुम गलत राह पर क्यों जाने लगे हो?"

"क्योंकि तुम पूरी तरह 'भद्र महिला' बन गई हो. ऐसी महिला जिस के मुंह से सिवा उपदेश के कुछ नहीं निकलता. न हंसी, न मुसकान, न प्यार भरी बोलियां. तुम्हारी आंखों में वह बिजलियां नहीं कौंध[illegible] चाल में मस्ती है, इसी लिए मैं चाह[illegible] सुमी को..."

"कौन सुमी?" उस ने पूछा.

"ओह, माफ करना, मैं पहले बा[illegible] को चाहता हूं, जो दिल खोल कर हं[illegible] में भर कर मेरे पास आए. मैं नहीं चाह[illegible] तुम तीन बच्चों की मां होने पर अ[illegible] बुढ़िया समझने लगो."

सुधा बिफर गई, "तुम क्या सम[illegible] कि मैं सजधज कर नहीं रहना चाहती[illegible] तुम्हारा वेतन उस की अनुमति दे[illegible] अगर मैं बनसंवर कर रहूंगी तो बच्चे[illegible] क्या पहनाऊं, क्या खिलाऊं? क्या यह[illegible] रहेगा? क्या मैं सास के सामने अदा से[illegible] पास आऊं? क्या बच्चों के सामने तु[illegible] साथ रंगरेलियां मनाऊं? समयसम[illegible] बात है, शेखर. समय के साथ अपने[illegible] परिवर्तन लाना ही पड़ता है. जो ऐसा[illegible] करता, वह सिवा बदनामी के कुछ न[illegible] सकता.

"आज तुम ने शराब पी है, [illegible] आनंद भी कभी पी ले तो क्या तुम [illegible] करोगे? तुम्हारे पिता को यह मालूम हो[illegible] तो क्या वह तुम्हें अच्छा कहेंगे? उन्होंने[illegible] कितनी आशाओं से पाला था कि तुम[illegible] इनसान बनोगे."

सुधा रोने लगी, "मैं तुम्हारे मन की[illegible] समझती हूं, शेखर. मैं तुम्हारी इच्छा[illegible] से कभी अलग नहीं रही. मैं ने आरंभ[illegible] तुम्हारी हर इच्छा पूरी की है, तु[illegible] सुखदुख में साथ दिया है, पर अब मैं पत्नी[illegible] साथसाथ मां भी हूं. मुझे बहुत कुछ सं[illegible] पड़ता है. तुम भी अब सिर्फ पति नहीं[illegible] बाप भी हो, तुम्हारे ऊपर पूरे परिवार[illegible] बोझ है. तुम्हें अपने उत्तरदायित्व[illegible] समझना चाहिए और छोटीछोटी बातों[illegible] कर दांपत्य जीवन में दरार डालने का[illegible] नहीं करना चाहिए.

"शेखर, तुम्हें बच्चों या मातापि[illegible] सामने सभ्यता की सीमा के बाहर [illegible]

निकलना चाहिए. हमें पहले जैसे खुलेपन से हट कर बच्चों को सुचरित्र, आदर्शमय और विवेकशील बनाना होगा तथा वृद्ध हो गए मातापिता की सेवा करनी होगी, ताकि बच्चे भी (वृद्धों की सेवा) करने की बात अभी से जान सकें. हमें ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जिस से उन के मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े."

दूसरे दिन शेखर दफ्तर पहुंचा तो सुमी को एकटक देखने लगा. सुमी सजधज कर आई थी. उस ने चोटियों में फूल सजा रखे थे. आंखों में काजल डाल रखा था. अपनी ओर उस का ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से शेखर ने कहा, "सुमीजी, आप जानती हैं, हमारा बास बड़ा अड़ियल है. किसी की भी बात नहीं सुनता, फिर भी वह मेरी बात टालता नहीं. कोई काम हो तो कहिएगा, करा दूंगा, आप को स्थायी होने की बात सोचनी चाहिए."

यह सुन कर सुमी पीली पड़ गई थी, "मैं ने बास से यह बात कही थी, वह कुछ नहीं बोल सके थे."

"आप ने सीधे ढंग से अपनी बात रख दी होगी. उन्हें 'खुश' करना चाहिए था."

"मैं समझी नहीं."

"आश्चर्य है! मैं नहीं चाहता कि आप अस्थायी रहें. वेतन कम हो तो उसे बढ़वाने के लिए बास को खुश करना पड़ता है. कहिए तो होटल नटराज में कल संध्या चार बजे पार्टी दे दें."

शेखर ने समझा कि मौन स्वीकृति का लक्षण होता है.

सच बात यह थी कि वह इस बहाने सुमी के और निकट आना चाहता था.

दूसरे दिन वह नटराज जाने के उद्देश्य से जल्दी ही दफ्तर से घर आ गया.

सुधा बोल उठी, "आज जहां कहो मैं चलूंगी, मांजी ने बच्चों को उन के जिम्मे छोड़ कर घूम आने के लिए कहा है."

व्यवधान पड़ते देख कर वह भड़क उठा, "लेकिन कुछ मित्रों के साथ कार्यक्रम बन चुका है."

सुधा तिलमिला उठी, "मैं तुम्हारी खुशी के लिए कह रही हूं और तुम हो कि स्वयं इनकार कर रहे हो."

वह सुधा को छोड़ होटल नटराज पहुंचा, लेकिन वहां सुमी नहीं आई. उसे बेहद क्रोध आया.

सुमी ने न आ कर उस की शाम खराब कर दी थी. वह सोचने लगा अगर उस ने सुमी से न कहा होता तो वह कम से कम सुधा के साथ फिल्म तो देख सकता था. उस की धूर्तता उसे ही मार गई थी. स्वयं अपने ऊपर क्रोध आने लगा. वह घर लौटा तो सुधा चूल्हेचौके में व्यस्त थी. उस ने जिद करते हुए कहा, "चलो, सुधा, पार्क में घूम आएं."

"और चूल्हाचौका?"

"मां के जिम्मे छोड़ दो."

"और बच्चों की पढ़ाई?"

"बाबूजी के जिम्मे."

"तुम्हारी भी कुछ जिम्मेदारी है या नहीं?" सुधा क्रोध से उबल उठी.

बात बढ़ जाने से शेखर बिना खाए ही सो गया. सुधा के माफी मांगने पर भी नहीं माना. उसे सुमी याद आ रही थी. उसे सुधा का लटकता चेहरा पसंद नहीं आ रहा था. दूसरे दिन दफ्तर में सुमी दृढ़ स्वर से बोली, "मैं नौकरी जरूर चाहती हूं, पर स्थायी होने के लिए अपनी इज्जत नहीं बेच सकती."

शेखर को लगा, 'सुमी ने यह बात जैसे उसी को लक्ष्य कर के कही है.' उसे अपनी गलती महसूस होने लगी.

उस समय तो उस की स्थिति देखने योग्य थी, जब बास ने उसे डांटा, "तुम ने मेरे

सावधान

उस पर विश्वास नहीं करो जिस ने तुम्हें एक बार धोखा दिया है. जिस ने तुम्हें एक बार धोखा दिया वह तुम्हें फिर धोखा देगा. —शेक्सपियर

नाम से लाभ उठाने की बात कैसे सोची? मैं तुम्हारे विरुद्ध अनुशासनात्मक कारवाई करूंगा."

सुमी की ओर से निराश हो कर शेखर सुधा को बुरी तरह परेशान करने लगा. वह चाहता था कि सुधा आनंद को भी मां के पास सुला दिया करे.

सुधा झुंझला कर बोली, "अकेले में मुझे मार डालने का विचार है क्या?"

"तो बच्चों को तावीज बना कर गले में डाले रहो."

"तुम्हारी खुशियों के लिए मैं बच्चों की खुशियों पर तुषारपात नहीं कर सकती."

"तुम बहुत बकने लगी हो."

"इसलिए कि तुम स्वयं गलत बातें करने लगे हो."

"मैं तुम्हें वेतन देना बंद कर दूंगा तो सारी बकबक बंद हो जाएगी."

"तो तुम क्या समझते हो कि मैं चुप बैठी रहूंगी? सहनशीलता की भी सीमा होती है. मैं चाहूं तो प्रबंध विभाग के नाम तुम्हारी शिकायत भेज कर आधा वेतन ले सकती हूं, पर मैं ऐसा नीच काम नहीं करूंगी. मैं खुद नौकरी करूंगी, बच्चों को संभालूंगी, साससुसर की देखभाल करूंगी."

सुधा शेरनी सी दहाड़ उठी, "तुम पुरुष हो कर दायित्व से भले ही भाग जाओ, पर मैं नारी हो कर भी नहीं भाग सकती."

अब दोनों की बातें मातापिता सुन रहे थे.

मां ने आश्चर्य से पूछा, "बहू, तुम नौकरी करोगी?"

"हां, मुझे इन पर भरोसा नहीं रहा है."

"सुधा," शेखर चीखा, उसे लगा कि सुधा ने उस का अपमान कर दिया है. उस ने उस के गाल पर तमाचा जड़ दिया.

"बात यहां तक बढ़ गई?" बाबूजी बड़बड़ाए, "न जाने कब बेटा हम पर भी हाथ छोड़ दे. हमें तुरंत गांव चल देना चाहिए."

"सब जाओ, मैं रह लूंगा अकेला."

"तो रह अकेला," मां ने शेखर के गा[illegible] पर तमाचा जड़ते हुए कहा, "क्या अके[illegible] रहने के लिए मैं ने तुझे जन्म दिया था? ह[illegible] असहाय और दुर्बल न समझ. हमारे पास अ[illegible] भी इतना धन है कि तेरे बच्चों व बहू [illegible] संभाल लेंगे, पर बहू को नौकरी के लि[illegible] दरदर नहीं भटकने देंगे."

तमाचा खाते ही शेखर तिलमि[illegible] गया. वह क्रोध से कांपते हुए बाहर निक[illegible] गया.

वह शराब पी कर मस्तिष्क [illegible] नियंत्रण में लाना चाहता था तभी रास्ते [illegible] सुमी मिल गई. "क्या बात है, शेखर बा[illegible] आज आप कुछ उखड़ेउखड़े से लग रहे हैं[illegible] उस ने आश्चर्य से पूछा.

"मन भारी हो रहा है, सुमीजी."

"आइए, मेरा घर निकट ही है, ब[illegible] बैठ कर चाय पीजिए, शायद मन हलका [illegible] जाए."

शेखर उस के पीछेपीछे चलता ग[illegible] बरामदे में खड़े वृद्धवृद्धा से परिच[illegible] कराते हुए सुमी ने कहा, "इन से मिलिए, [illegible] मेरे मातापिता हैं."

उस के इशारे पर शेखर मेज के साम[illegible] कुरसी पर बैठ गया. सुमी ने फूलदान में [illegible] फूलों को ठीकठाक करते हुए कहा, "अ[illegible] मेरे बड़े भैया में दायित्व निभाने की क्षम[illegible] होती तो मुझे नौकरी करने की कोई ज़रू[illegible] नहीं थी. पर उन्हें तो पिताजी के फंड [illegible] रुपए चाहिए, शराब व ऐश में उड़ाने [illegible] लिए और आधुनिक युवतियों के सा[illegible] मौजमस्ती के लिए, भले ही घर की स्थि[illegible] कैसी भी क्यों न हो जाए. मगर मेरी दृढ़ता [illegible] उन्हें बतला दिया कि लड़कियां भी बेटों [illegible] तरह अपना दायित्व निभा सकती हैं."

क्षणभर चुप रहने के बाद उस ने अ[illegible] कहा, "मुझे ऐसे लोगों से सख्त नफरत है [illegible] अपनी खुशी अपने घर में न खोज कर [illegible] के लिए दूसरों की इज्जत पर कीच[illegible] उछलते हैं. मैं तो ऐसे युवक की खोज में

जो अपना दायित्व समझता हो तथा परिवार चलाने की क्षमता रखता हो."

यह सुन कर शेखर का सिर चकराने लगा. वह भी शराब पीता था, बाबूजी के फंड के रुपए लेना चाहता था. स्वार्थ के लिए सुमी को बहकाना चाहता था. परिवार ठीक से नहीं चला पा रहा था. पत्नी की अवहेलना कर रहा था और इस कारण वह न सिर्फ पत्नी की दृष्टि में, बल्कि मातापिता की दृष्टि में भी गिर गया था.

एक वह था जो पुरुष हो कर भी अपना दायित्व नहीं निभा पा रहा था और एक सुमी थी जो नारी हो कर भी मातापिता को नौकरी कर के संभाल रही थी.

उस के आचरण को देख सुमी की तरह सुधा भी नौकरी के लिए तैयार हो रही है. उस के लिए यह कितनी शर्म की बात है. और उधर मातापिता बहू को गांव ले जाना चाहते हैं. अपनी बचत के रुपयों से उस का और बच्चों का भरणपोषण करने के लिए वृद्ध मातापिता अब भी अपना दायित्व निभाने के लिए तैयार हैं... और वह?

क्या मातापिता ने उसे इसी लिए पालपोस कर बड़ा किया था कि वह शराब पीता रहे? या किसी दूसरी युवती के पीछे अपनी पत्नी की अवहेलना करे, बच्चों को नकार कर अपनी गृहस्थी में खुद आग लगाए तथा मातापिता को पूछे तक नहीं? यह सोच कर वह बेचैन हो उठा और सुमी से विदा ले कर तुरंत अपने घर चल दिया.

उस के मातापिता गांव जाने की तैयारी में लगे थे.

सुधा रोते हुए कह रही थी, "न जाइए मांजी, बाबूजी, मैं सब के लिए स्वयं नौकरी करूंगी. फंड के सूद से सब का निर्वाह नहीं हो सकेगा. उसे निकालने के बाद स्थिति और भी दयनीय हो जाएगी. उसे बैंक में रखना ठीक है."

"नहीं बहू, तुम भी साथ चलो, आगे की फिर सोचेंगे."

शेखर रोतेरोते मां तथा बाबूजी के पैरों में गिर पड़ा, "मुझे क्षमा कर दीजिए. मैं भटक गया था. मैं विश्वास दिलाता हूं, अपना दायित्व निभाने में मैं पीछे नहीं रहूंगा."

फिर वह सुधा से बोला, "मुझे माफ करो, सुधा, मेरे रहते तुम्हें नौकरी खोजने की जरूरत नहीं है."

उसे रोते देख आभा, विभा और आनंद भी रोने लगे.

"तुम सब को मैं अपने से अलग नहीं कर सकता." उस ने बच्चों को अपनी बांहों में समेट लिया.

"न रो, बेटे, देख तेरे रोने से सब रोने लगे हैं." मां की ममता छलक आई. वह उस के आंसू पोंछने लगी, "हमें खुशी है कि तू ने अपनी गलती स्वीकार कर ली है." फिर बहू को संबोधन कर के वह बोली, "बहू, मुझे आशा नहीं थी कि यह इतनी जल्दी सही राह पर आ जाएगा."

शेखर का सिर शर्म से उठ नहीं पा रहा था. अब भी तीनों बच्चे उस की बांहों में सिमटे हुए थे. ●

बदलते जीवन मूल्य

अपने कक्ष में बुद्ध प्रतिमा के पीछे एक युवती को छिपा देख कर ह्वानचांग की आंखें फटी रह गईं.

"कौन हो तुम?" क्या चाहती हो? बाहर आओ."

"श्रद्धेय, बाहर तो मैं आ जाऊंगी," युवती फुसफुसा कर बोली, "पर पहले कक्ष का द्वार बंद कीजिए, मैं आप के हाथ जोड़ती हूं."

"कक्ष का द्वार बंद करा कर क्या तुम मुझे अपमानित कराना चाहती हो?"

"माननीय विदेशी यात्री को मुझे समझने में भूल हुई है."

"अच्छा तो तुम्हें मेरा परिचय भी प्राप्त है?" युवती की निरीह दृष्टि में ताकते हुए ह्वानचांग ने आगे बढ़ कर अपने कक्ष का मुख्य द्वार बंद कर लिया. "देवी, अधिक समय व्यर्थ न कर शीघ्र अपना मंतव्य स्पष्ट करो. किसी ने इस कक्ष में तुम्हें देख लिया तो मेरा मरण ही हो जाएगा."

मूर्ति के पीछे से हटते हुए युवती खिलखिला उठी. ह्वानचांग को लगा जैसे कक्ष में चीनी जलतरंग की घंटियां बज उठी हों. "आश्चर्य है, आप एक क्षुद्र नारी की





अपने शत्रु चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय से मिल कर अैयन रोमांचित हो उठी फिर बौद्ध भिक्षुणी बन कर पल्लवों को उस के खिलाफ भड़का कर उस ने ऐसा बदला लिया कि वह देखता ही रह गया.

"कल यहां नासिक के मठ में वर्तमान चालुक्य शासक विष्णुवर्धन की उपस्थिति में मैं तुम्हें बौद्ध धर्म में दीक्षित करूंगा, परंतु एक बार फिर सोच लो." ह्वानचांग ने अैयन से कहा.

उपस्थिति मात्र से भयभीत हो उठे हैं. नारी जीवन के इस पहलू के उजागर हो जाने के पश्चात मैं अपनेआप पर गर्व करूं या अपना सिर धुन लूं?"

युवती के शब्दों में छिपी तार्किक बौद्धिकता ने ह्वानचांग को स्तंभित कर दिया. स्पष्ट था कि सामने वाली युवती कोई साधारण नारी नहीं थी. ह्वानचांग ने ध्यान से युवती के व्यक्तित्व का अवलोकन किया. उस का चंपई गात, उठी हुई तीखी नाक, उन्नत भाल, बड़ीबड़ी आंखें व लंबी गरदन सहित सुगठित इकहरा तन तथा सांचे में ढला उस का आकर्षक मुख उस के उच्चवंशीय होने के अकाट्य प्रमाण थे. काले, लंबे व अगणित भंवरों युक्त उस के केश तथा तीखी धनुषाकार भौंहों और पतले अधरों ने उस के सौंदर्य की धार को और अधिक तीक्ष्ण बना दिया था.

"देवी, जिस समाज में मुझे विचरण करना पड़ रहा है उस के नियमों का

ऐतिहासिक कहानी • डा. प्रभात त्यागी

कठोरतापूर्वक पालन मेरे लिए परमावश्यक है. किसी भी व्यक्ति की मेरी ओर उठी हुई एक उंगली मेरे आज तक के सारे परिश्रम को धोपोंछ सकती है, यह तुम्हें ज्ञात है न?"

"आप ने भी यह जान लिया होगा, श्रीमन, कि यदि मैं चाहूं तो किसी भी पुरुष को अपने रूपजाल में बांधना मेरे लिए कठिन नहीं है." युवती फिर मुसकरा उठी, "पर शारीरिक समागम के लिए एक से बढ़ कर एक रूपवान व्यक्ति मुझे मेरे देश में ही मिल सकते हैं. अैयन इसलिए आप के पास नहीं आई है."

"सौंदर्यमयी, एक जिज्ञासा मेरी भी है. क्या शारीरिक समागम का आधार केवल रूप ही होता है, साहस, बुद्धि, चातुर्य कुछ भी नहीं?"

ह्वानचांग की बात सुन कर अैयन मन ही मन प्रकंपित हो उठी. चीनी यात्री ने सचमुच एक दुखती रग स्पर्श कर दी थी. वह धम्म से फर्श पर बैठ गई. अविरल आंसुओं की धार उस के दोनों नयनों से बह निकली. उस की दृष्टि के सम्मुख दो माह पूर्व का वह अविस्मरणीय चित्र एक बार फिर घूम गया.

आंध्र प्रदेश के पुष्टिपुर क्षेत्र के, कुणाल कोलायर झील के आसपास, गोदावरी के कांठे में तब उस के पिता पृथ्वीपुर महाराज का अधिकार था. यह साम्राज्य विष्णुपुर कुंडिनों का कहलाता था. बहुत वैभव व लाड़प्यार में पल कर वह बड़ी हुई थी. जब वह 17 वर्ष की थी, तब अचानक पश्चिमी चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय ने पुष्टिकर, कौशल व कलिंग के क्षेत्रों पर अपना अधिकार कर उसे व उस के सारे परिवार वालों को पुष्टिपुर की सीमा पर स्थित एक गांव में शरणार्थी बना दिया था. विपन्नावस्था में अपने मातापिता को कष्टमय व असह्य जीवन व्यतीत करते देख कर अैयन ने एक निर्णय मन ही मन ले लिया था.

चालुक्यों की नई राजधानी वेंगी के राजमहल में उस ने दूसरी रात्रि को चुपचाप प्रवेश कर लिया था. राजमहल के चप्पेचप्पे से वह परिचित थी ही. चालुक्य पुलकेशिन द्वितीय के कक्ष में जब वह पहुंच कर उन के सम्मुख जा खड़ी हुई तब वह अर्द्धनिद्रित अवस्था में थे. फिर भी उसे अपने सम्मुख देख कर वह चौंक कर उठते हुए बोले थे, "देवी, कौन हैं आप? इस असमय आने का आप ने कैसे कष्ट किया?"

अैयन ने अपना परिचय दे दिया था. बड़े कातर शब्दों में उस ने अपने मातापिता की दुरवस्था बताई थी. उस ने अनुरोध किया था कि विजेता शासक के रूप में उन्हें उस के पिता को करद शासक बना कर उन का राज्य वापस कर देना चाहिए.

"तुम्हें तुम्हारे पिता ने अपना प्रतिनिधि बना कर भेजा है या तुम अपनी इच्छा से मेरे पास आई हो?"

"सम्राट, पिताजी मुझे यहां भेजने की अपेक्षा अपने प्राण देना अधिक पसंद करेंगे," अैयन ने तड़प कर प्रत्युत्तर दिया था.

"तो तुम्हारे अनुरोध का उत्तर तो तुम्हारे पिता ने ही दे दिया है. किसी भी श्रेष्ठ शासक को करद शासक बनाना सरल नहीं है. मैं यदि यह प्रस्ताव उन के सम्मुख रखता तो शायद तुम्हारे पिता मेरे मुंह पर ही थूक देते."

अैयन मन ही मन अपने पिता के प्रति श्रद्धानत हो उठी थी. अपनी भूल पर उसे पश्चात्ताप होने लगा था कि वह व्यर्थ ही वहां क्यों चली आई. वह जैसे ही जाने के लिए मुड़ी थी, पुलकेशिन द्वितीय के इन शब्दों को सुन कर वह जहां की तहां रुक गई थी, "तुम्हें तुम्हारे पिता का साम्राज्य एक ही प्रकार से पुनः प्राप्त हो सकता है यदि..." सम्राट अचानक मौन हो गए थे.

अैयन ने गरदन टेढ़ी कर प्रश्नवाचक मुद्रा में उस की ओर ताका था.

"यदि..." दूसरे ही क्षण वह बोल उठे थे, "तुम रात्रि भर इसी कक्ष में रहने का मुझे वचन दे दो."



"यदि मैं भाई की भक्ति त्याग दूं अर्थात आप के शब्दों में, वेंगी को स्वतंत्र कर दूं तो क्या आप मेरे साथ वहां चलेंगी?" विष्णुवर्धन ने बौद्ध भिक्षुणी अैयन से कहा.

"अैयन के नेत्रों में विद्युत कौंध उठी थी.

"दुष्ट, नराधम, पापी, ऐसी घिनौनी बात बोलते हुए तुझे लज्जा नहीं आई? मुझ से अभिसार रचाना चाहता है? मुझे अपनी अंकशायिनी बनाना चाहता है? वासना के पुतले, ले, ले और ले." अैयन अपनी मुट्ठियां बांध कर पुलकेशिन की छाती पर पागलों की तरह बरसाती गई थी. पुलकेशिन पर कोई भी प्रभाव न होता देख कर उस ने गुस्से में भर कर अपने नाखूनों से सम्राट का मुंह, गरदन और कलाइयां नोच डाली थीं. पर आश्चर्य था, पुलकेशिन चुपचाप सब कुछ सहते रहे थे.

थक कर पुलकेशिन की दोनों बांहों को पकड़ कर उन में झूलते हुए जब वह धरती पर गिरने लगी थी तो दोनों हाथों से उसे उठाते हुए चालुक्य शासक ने कहा था, "देवी, पुरुष का मन बड़ा अस्थिर होता है. रूप के इस अपार आगार सहित तुम भविष्य में भूल कर भी किसी परपुरुष के सम्मुख इस प्रकार जाने की मूर्खता मत करना. संसार में सब तुम्हें पुलकेशिन नहीं मिलेंगे. वास्तव में मैं तो तुम्हारी परीक्षा ले रहा था. मैं अगर चाहूं तो इसी क्षण तुम्हें वातापी भेज कर इस प्रकार छिपा कर रख सकता हूं कि धूप, हवा और चांदनी को भी तुम्हारी हवा नहीं लग सके.

"काश, मेरे राज्य की सभी युवतियां भी तुम्हारी जैसी साहसी व निडर बन जाएं. तुम्हारे मातापिता पर सचमुच मुझे भी गर्व है. जाने से पूर्व मेरी एक बात और सुन लो. मैं जो कुछ प्राप्त करना चाहता हूं, उसे झपट कर छीनने में विश्वास करता हूं. हाथ पसार

फ़र उस के लिए गिड़गिड़ाना मेरे स्वभाव में नहीं है. अब तुम जा सकती हो."

अैयन को ऐसा प्रतीत हुआ था जैसे उसे वस्त्रहीन कर दिया गया हो.

"चालुक्य सम्राट," वह भी तमक कर बोली थी, "मैं एकबार पुन: आप से भेंट करूंगी. तब तक मैं कुछ प्राप्त कर के ही आप को दिखाऊंगी. पर शायद मेरी प्राप्ति आप के लिए दुख का कारण बन जाए. यदि ऐसा हो तो मैं आज ही क्षमा मांग लेती हूं. आप ने अनजाने ही एकांत में स्थित शहद की मक्खी के छत्ते पर पत्थर दे मारा है." पुलकेशिन ठठा कर हंस पड़ा था.

"सुनो तो, जाने से पूर्व क्या अपना पूरा नाम भी नहीं बताओगी?"

"पूरा और अधूरा क्या, आप मुझे अनाम ही समझ लीजिए. जिस दिन मेरे नाम का कोई महत्त्व होगा, तब आप के कानों तक भी वह अवश्य पहुंच जाएगा."

"वाह, रूप व बुद्धि का इतना सुंदर सामंजस्य मैं ने अभी तक नहीं देखा था." पुलकेशिन के इन शब्दों को सुन कर तो वह भभक ही उठी थी. तेज चाल से वह राजमहल से बाहर निकल गई थी.

उसे बाद में ज्ञात हुआ कि पुलकेशिन जैसे अपने 'कट्टर शत्रु' को वह अपनी अनमोल धरोहर, हृदय गंवा आई थी. न जाने पुलकेशिन के पतले, ठठरीनुमा तन में क्या आकर्षण था कि उस की स्मृति मात्र से वह रोमांचित हो उठती थी. इस से बड़ी विडंबना और क्या होगी कि अपने 'प्रिय शत्रु' की चुनौती को स्वीकार कर वह उस के विरुद्ध प्रयत्नशील हो उठी थी.

'वाकई प्रत्येक पुरुष पुलकेशिन नहीं हो सकता, पर पुलकेशिन की संसार में बिलकुल समाप्ति भी नहीं हो गई है,' ह्वानचांग की ओर ताकते हुए अैयन ने सोचा. उसी पूर्व परिस्थिति में उसे लाचारी में अकेले इस कक्ष में आना पड़ गया था.

"महान मनीषी, आप के प्रश्न का उत्तर मैं अपनी छोटी बुद्धि से देने में असमर्थ हूं. फिर भी मेरा अपना विश्वास है कि नारी पुरुष में पुरुषोचित सौंदर्य ही खोजती है. बुद्धि, उदारता, ज्ञान व त्याग आदि उसे प्रभावित नहीं करते."

"क्या शिक्षित, ज्ञानवान नारी भी?" अैयन को प्रतीत हुआ जैसे उस के हृदय के झूठ को ह्वानचांग की दृष्टि ने पढ़ लिया था.

"देव, नारी कोई भी, कैसी भी हो वह नारी ही है." अैयन दूसरा झूठ उगल बैठी. ह्वानचांग सहसा ही मौन हो गए. उन्हें मौन देख कर वह बोल उठी, "श्रीमन, मैं आप के पास आने का वास्तविक उद्देश्य तो बताना ही भूल गई. मैं आप के हाथों बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने आई हूं."

"क्या!" ह्वानचांग के कानों को विश्वास नहीं हुआ, "तुम भिक्षुणी क्यों बनना चाहती हो?"

कुछ पल ह्वानचांग को चिंतन का अवसर दे कर उस ने कहा, "मान्यवर, गंगा किसी स्नानार्थी से प्रश्न नहीं करती कि वह उस के तट पर क्यों स्नान करना चाहता है..."

"ओह, सचमुच मैं कर्तव्यच्युत हो गया था. भ्रमित हो जाने के लिए मैं आप से

दिल

दिल क्या मिलाओगे कि
हमें आ गया यकीं,
तुम से तो खाक में भी
मिलाया न जाएगा.

—दाग



क्षमा चाहता हूं. ठीक है, मैं तुम्हें बौद्ध धर्म की दीक्षा दूंगा."

"किंतु वास्तविक नहीं, केवल दिखावे के लिए. मैं बौद्ध भिक्षुणी के वेश में कुछ राजनीतिक उद्देश्यों के लिए आप के साथ देश का भ्रमण करना चाहती हूं."

अब ह्वानचांग के चौंकने की बारी थी.

"तुम्हें ज्ञात होगा कि मैं धर्म के क्षेत्र में राजनीति के प्रवेश का विरोधी हूं. फिर तुम्हें अपने साथ भ्रमण के लिए ले जाने की मुझ में सामर्थ्य नहीं है. अब तुम कृपया कक्ष से चली ही जाओ."

"माननीय अतिथि, इतनी शीघ्रता से आप मुझ से अपना पीछा नहीं छुड़ा सकते. मैं आप को वचन देती हूं कि मुझ से तनिक भी अनिष्ट की आशंका हो जाने पर आप मुझे तुरंत बिना किसी सूचना के अपने से दूर करने के अधिकारी होंगे."

"केवल यही नहीं, तुम्हें वास्तव में बौद्ध धर्म की दीक्षा लेनी होगी अर्थात मन से न सही, तन से तो भिक्षुणी बनना ही होगा. कल यहां नासिक मठ में तुम्हें वर्तमान चालुक्य शासक कुब्ज विष्णुवर्धन की उपस्थिति में मैं तुम्हें बौद्ध धर्म में दीक्षित करूंगा. परंतु फिर सोच लो, तुम्हारी यह सुंदर केशराशि नोचनोच कर जब तुम्हारे सिर पर केवल आधे अंगुल के बाल छोड़े जाएंगे तो तुम्हें कैसा लगेगा."

"महोदय, मैं अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए केश तो क्या अपनी जिह्वा, अपनी ग्रीवा तक कटाने को तैयार हूं. शत्रु को एक बार नीचा दिखा कर ही मुझे चैन मिलेगा. पर, प्रभु, मेरी आप से करबद्ध प्रार्थना है कि मेरे शत्रु के संबंध में आप मुझ से कोई भी प्रश्न न करें, पर मेरे प्रश्न का उत्तर आप को देना ही होगा. यह बात मेरी समझ में नहीं आई कि चालुक्य सम्राट तो पुलकेशिन द्वितीय हैं, फिर यह विष्णुवर्धन कौन हैं, जिन का अभी आप ने नाम लिया?"

"सम्राट पुलकेशिन पूर्वी दक्कन के वेंगी क्षेत्र में विजय अभियान के लिए गए हैं और अपने भाई कुब्ज विष्णुवर्धन को पश्चिमी चालुक्य राजधानी बादामी (वातापी) में शासनाधिकारी बना गए हैं."



अजीज

वो चांदनी का बदन
खुशबुओं का साया है,
बहुत अजीज हमें है
मगर पराया है.

—बशीर बद्र

ह्वानचांग का ध्यान अैयन की ओर न था अन्यथा उस की दृष्टि में उठती चमक को देख कर निश्चय ही वह सशंकित हो उठते.

'तो विष्णुवर्धन उस के शत्रु पुलकेशिन का भाई है?' अैयन मन ही मन सुलग उठी.

दूसरे दिन मध्याह्न में जब वह बौद्ध भिक्षुणी बनने के लिए ह्वानचांग के सम्मुख पहुंची तो पंदरह अन्य युवतियों सहित पंक्तिबद्ध चालुक्य सम्राट के निकट पहुंच कर वह स्तंभित रह गई. पुलकेशिन द्वितीय कृशकाय तन सहित अपने गौरवर्ण के कारण यदि प्रखर दोपहरी का प्रकाश था तो विष्णुवर्धन अपनी काली, आबनूसी काया के कारण रात्रि का गहन अंधकार प्रतीत हो रहा था. उस ने सामने बैठे व्यक्ति की पीठ में निकले 'कूबड़' और उस के अत्यंत साधारण नाकनक्श को देख कर दूसरी ओर मुंह फेर लिया.

वास्तव में कुब्ज शब्द का अर्थ भी उसे अब स्पष्ट हुआ अन्यथा चीनी यात्री के मुंह

से विष्णुवर्धन के आगे इस शब्द को लगाए जाने पर वह उलझन में पड़ गई थी. उसे यह सुन कर और भी हंसी आई कि कुब्ज विष्णुवर्धन ने मकरध्वज व कामदेव की उपाधियां भी धारण कर रखी थीं. 'कुबड़ा कामदेव' शब्द को मन ही मन उच्चारित कर वह हंसे बिना नहीं रह सकी.

अन्य दर्शकों के साथ विष्णुवर्धन भी अैयन को देख कर आश्चर्यचकित रह गया था. उस के आश्चर्य का कारण था— अैयन की कम आयु तथा उस का आकर्षक सौंदर्य. पुष्पों जैसी स्निग्ध और कोमल किंतु मांसल काया, काले भंवरों को लज्जित करने वाले उस के रेशमी, धरती को इठला कर चूमते बाल, उन्मत्त यौवन, अखरोट की आकृति वाले उस के बड़ेबड़े नयन आदि से उस के मन में एक ही प्रश्न उठ खड़ा हुआ था कि वह आखिर भिक्षुणी क्यों बनना चाह रही है.

विष्णुवर्धन अपनी उत्कंठा को नियंत्रित नहीं रख सका. जैसे ही वह उस के आगे नतमस्तक हुई, चालुक्य सम्राट ने प्रश्न किया, "सुमुखी, मुझे आप के व्यक्तिगत निर्णय में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है. पर क्या मैं पूछ सकता हूं कि कौन सी मजबूरी आप को भिक्षुणी बना रही है? यदि उस मजबूरी को मैं दूर कर सका तो मुझे अत्यधिक प्रसन्नता होगी. प्रकृति ने आप को यह सुंदर रूप कुरूप बनाने के लिए प्रदान नहीं किया है. यदि अपने हृदय की पीड़ा आप को सब के सम्मुख प्रकट करने में कुछ हिचकिचाहट हो तो आप मेरे साथ वातापी चल सकती हैं. तब तक के लिए आप अपने निर्णय को कृपया स्थगित कर दीजिए."

"चालुक्य सम्राट, आप की दयापूर्ण व मानवीय कृपा के लिए मैं आप की आभारी हूं पर किसी मजबूरी से नहीं, अपितु प्रसन्नतापूर्वक मैं बौद्ध भिक्षुणी बनना चाह रही हूं. अतः आप मेरे लिए दुखी न हों."

अैयन गर्व से मस्तक उठा कर सधे हुए कदमों से ह्वानचांग के निकट बैठे बौद्ध भिक्षु के सामने जा खड़ी हुई. जब उस के सिर का एकएक बाल नोचा जाने लगा तो सम्राट के अतिरिक्त समस्त दर्शक वर्ग भी दृष्टि झुकाए बैठा था मानो अैयन की पीड़ा को देखने की उन में सामर्थ्य ही न हो. आधे घंटे के बाद पीत वस्त्रों में घुटा हुआ सिर लिए जब वह मंच पर आ खड़ी हुई तो बड़ेबड़े साहसी व्यक्तियों के मुख से भी आह निकल पड़ी. इस समय भी सब के नेत्र धरती पर गड़े हुए थे, केवल कुब्ज विष्णुवर्धन उसे अपलक ताक रहा था.

दीक्षांत समारोह की समाप्ति पर ह्वानचांग के आगे नतमस्तक हो कर चालुक्य सम्राट बोले, "सम्माननीय अतिथि, आप को चालुक्य राज्य में विचरण करते लंबा समय व्यतीत हो गया. आज तो आप को मेरा आमंत्रण स्वीकार करना ही होगा. राजधानी वातापी में सब आप की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं. कृपया वहां के बौद्ध मठ में चल कर आप मुझे अनुगृहीत करें. नव दीक्षित भिक्षुणियों को भी आप अपने साथ ले चलिए."

ह्वानचांग से अधिक स्वयं अैयन को सम्राट के आमंत्रण पर आश्चर्य था. पहले तो निश्चय ही उस के रूपाकर्षण ने उसे प्रभावित कर लिया होगा, पर अब इस कुरूपा को ले कर वह वातापी क्यों जाना चाहता है? अपने शत्रु की राजधानी में प्रविष्ट होने की तो उस की तीव्र लालसा थी ही. अतः उस के इंगित करने पर ह्वानचांग ने विष्णुवर्धन का प्रस्ताव तुरंत स्वीकार कर लिया.

चालुक्य सम्राट ने उन के आवास की बहुत अच्छी व्यवस्था कर दी थी. बादामी को देख कर अैयन पुलकेशिन द्वितीय की सांस्कृतिक चेतना व सौंदर्यानुभूति से प्रभावित हुए बिना न रह सकी. पर बादामी की जनता को आश्चर्य था कि शिव के कट्टर अनुयायी चालुक्य विष्णुवर्धन की अचानक ही बौद्ध धर्म के प्रति इतनी आस्था कैसे हो गई, वह प्रतिदिन न जाने क्यों बौद्ध मठ चला जाता था.

धर्म निरपेक्षता प्रत्येक समझदार

शासक का गुण होता है. चालुक्य शासक सब धर्मों को समान न समझते तो उन को इतनी सफलता कैसे मिल जाती? कई बार चालुक्य शासक को अैयन मठ में दिखाई न पड़ती. पूछने पर पता चलता कि वह भिक्षुणियों के साथ राजधानी में धर्म प्रचार के लिए गई हैं, जब कि वास्तविकता यह थी कि ह्वानचांग से विशेष सहमति प्राप्त कर वह भिक्षुणियों का साथ छोड़ कर न जाने कहां गायब हो जाती थी.

किंतु कुशल चालुक्य गुप्तचरों से वह कब तक बच कर रह सकती थी? एक रात्रि को अचानक ही अपने पीछे तीनचार गुप्तचरों के लग जाने पर जैसे ही उसे बंदी बनाया जाने वाला था, उस ने तुरंत राजमहल का मार्ग पकड़ लिया. सम्राट से भेंट का नाम ले कर वह गुप्तचरों को भ्रम में डाल कर जब विष्णुवर्धन के कक्ष में घुसी तो अैयन को देख कर सम्राट की बाछें खिल गईं.

"अरे, आप और यहां!"

"आप को मेरा आगमन रुचिकर न लगा हो तो मैं वापस लौट जाती हूं." मुसकरा कर उस ने अपने पीछे ताकते हुए सम्राट के निकट ही जानबूझ कर अपना स्थान ग्रहण कर लिया. "वातापी से कल लौट रही थी, मैं ने सोचा आप से भेंट करती चलूं."

"मेरा अहोभाग्य जो आप ने मुझे विस्मृत नहीं किया. कहिए, यहां आप का प्रवास तो सुखद रहा?"

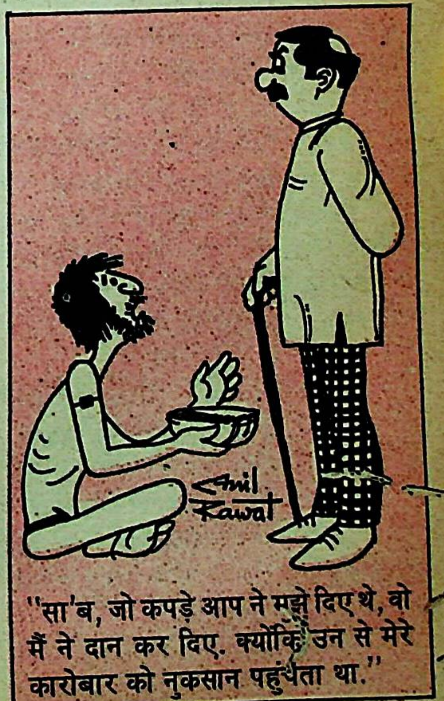
"जी, महामहिम," कुछ क्षण रुक कर वह बोली, "लगता है, आप के राज्य में किसी विशेष आयोजन की तैयारियां हो रही हैं. क्या किसी विशेष अतिथि का राजधानी में आगमन होने वाला है?"

"अरे, क्या आप को ज्ञात नहीं कि मेरे बड़े भाई सम्राट पुलकेशिन द्वितीय पूर्वी दक्कन की विजय के पश्चात परसों लौट रहे हैं. उन्हीं के विजयोत्सव की तैयारियां हैं. हम ने सभी स्वागत द्वारों पर वेंगी के परास्त शासक पृथ्वी महाराज के सिर के बल खड़े होने के चित्र बनवाए हैं. विष्णुकुंडिनों के राजसी जमड़े की चालुक्य सम्राट के लिए विशेष जूतियां बनवाई गई हैं. पृथ्वी महाराज के राजमुकुट में लगा हीरा व अन्य रत्न इन जूतियों में जड़े गए हैं. जरा बताइए तो, आप को ये जूतियां कैसी लगीं?"

अैयन की इच्छा हुई कि उन जूतियों को उठा कर वह टुकड़ेटुकड़े कर डाले. पर अपनेआप पर नियंत्रण रख कर उस ने शांति से प्रश्न किया, "चालुक्याधिपति, क्या आप को यह सब कुछ अच्छा लग रहा है? किसी पराजित शासक का इतना अपमान क्या उचित है?"

"साधुनीजी, सच पूछिए तो मैं इन गलत परंपराओं का कट्टर विरोधी हूं. पर मैं क्या कर सकता हूं? मुझे चालुक्य सम्राट को पुनः उन का राज्य सौंप कर उन की आज्ञा से राज्यपाल के रूप में वेंगी, पिष्टपुर व कलिंग का शासन संभालना है."

"आप का भ्रातृप्रेम श्लाघनीय है. पर आप ने क्या कभी विचार किया कि परजीवी पौधे अधिक काल तक जीवित नहीं रहते?



"सा'ब, जो कपड़े आप ने मुझे दिए थे, वो मैं ने दान कर दिए. क्योंकि उन से मेरे कारोबार को नुकसान पहुंचता था."

"दूसरों की कृपा पर आप कब तक फलफूल सकेंगे? और क्षमा करें, लोगों को तो विश्वास है कि आप पिष्टपुर पहुंचते ही स्वतंत्र राज्य की घोषणा कर देंगे."

"जी नहीं, मैं आप को विश्वास दिला सकता हूं कि अपने जीते जी पूर्वी चालुक्य राज्य को मैं वातापी से स्वतंत्र नहीं होने दूंगा. लोग न जाने क्यों उलटीसीधी बातों में आनंद लेते हैं."

"छोड़िए इन व्यर्थ की बातों को, मुझे इन से क्या मतलब." कुब्ज विष्णुवर्धन को क्रोधित होता देख कर उस ने बात बदल दी.

"अब आप किधर जाएंगी, यदि अन्यथा न लें तो मेरे साथ वेंगी चलिए."

"वेंगी! जी नहीं. मुझे ह्वानचांगजी से पूछना होगा. जैसे आप भाई के आज्ञापालक हैं, मैं भी चीनी यात्री की आज्ञा में बंधी हुई हूं."

"यदि मैं भाई की भक्ति त्याग दूं अर्थात आप के शब्दों में वेंगी को स्वतंत्र घोषित कर दूं तो क्या आप मेरे साथ वहां चलेंगी?"

इस अप्रत्याशित प्रस्ताव को सुन कर अैयन चौंक पड़ी. "प्रश्न यह है कि आप एक कुरूपा, सांसारिकता से दूर की स्त्री को प्रसन्न करने के लिए केवल उसे वेंगी ले जाने के लिए अपने भाई से द्रोह क्यों करेंगे?"

"महादेवी, सुंदरता तो आत्मा की होती है, तन की नहीं. भाई से द्रोह की आवश्यकता ही नहीं होगी. मैं जानता हूं, मेरी प्रसन्नता के लिए वह वेंगी मुझे ऐसे ही सौंप देंगे."

"क्षमा करें, सम्राट, मैं किसी की कृपा पर एक पल भी जीवित नहीं रह सकती, चाहे वह आप ही क्यों न हों. अच्छा मैं चलती हूं. कल शायद हम कांचीपुरम चले जाएं."

"कांचीपुरम?" विष्णुवर्धन के नेत्र सहसा बुझ गए. "चालुक्यों के प्रधान शत्रुओं पल्लवों की राजधानी में?"

"सम्राट, भिक्षुओं के लिए सब समान हैं, पल्लव हों या चालुक्य. हमें राजनीति से क्या लेनादेना?" अैयन ने ह्वानचांग के शब्द दोहरा दिए.

"इस प्रकार तो कुब्ज विष्णुवर्धन व नरसिंहवर्मन में भी आप को क्या अंतर हो सकता है?" शब्दों के तीखेपन ने अैयन के मन को छू लिया. उसे पहली बार प्रतीत हुआ कि विष्णुवर्धन का कूबड़ अवश्य घिनौना है पर उस का स्वभाव असाधारण नहीं है. औरों से अलगथलग अवश्य है. कैसी विडंबना थी कि एक भाई ने उस के जीवन में जहां कांटे ही कांटे बो दिए थे, दूसरा उस में गुलाब ही गुलाब खिलाने को तैयार था. पहले की चुनौती जहां उसे कष्ट दे रही थी, दूसरे का आमंत्रण भी उसे कम परेशान नहीं कर रहा था.

कांचीपुरम में अैयन ने पल्लव शासक नरसिंहवर्मन को एक गुप्त भेंट द्वारा केवल पुलकेशिन पर आक्रमण की ही प्रेरणा दी अपितु चालुक्य सैन्य शक्ति संबंधी गुप्त सूचनाएं भी दीं. पल्लव शासक पहले से ही चालुक्यों के विरुद्ध युद्ध की तैयारी कर रहा था, क्योंकि उस के पिता की मणिमंकलम में पराजय का प्रतिशोध उसे लेना था. विष्णुकुंडिनों का समर्थन मिल जाने से पल्लवों को प्रसन्नता हुई. कई दिन के प्रवास के पश्चात अैयन व ह्वानचांग एक दिन चुपचाप वहां से निकल कर वेंगी की ओर चल दिए.

एक माह पश्चात पुलकेशिन द्वितीय को यह समाचार सुन कर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि उस के भाई विष्णुवर्धन का विवाह होने जा रहा है. विवाह के लिए पुलकेशिन द्वितीय जब वेंगी पहुंचा तो विष्णुवर्धन ने उस की अभ्यर्थना की. वह बोला, "आप की अनुमति मुझे इस विवाह के लिए चाहिए, क्योंकि उस के बिना मैं विवाह की बात सोच भी नहीं सकता. वह युवती बौद्ध भिक्षुणी है, पर बहुत सुंदर व बुद्धिमान है."

"बुद्धिमान न होती तो वेंगी की शासिका बनने की बात वह कैसे सोच लेती?" पुलकेशिन मुसकराए, "युवती के

चयन के संबंध में मैं कुछ नहीं कहूंगा, क्योंकि तुम्हें उस के साथ जीवन व्यतीत करना है. पर मैं एक बात की तुम्हें अनुमति अवश्य देता हूं कि तुम वेंगी का शासन एक स्वतंत्र शासक के रूप में कर सकते हो. यह राज्य तुम्हें मेरी ओर से विवाह की भेंट है." कुछ दिन रुक कर पुलकेशिन वातापी लौट गया. एक बार भी उस ने बहू को देखने या बुलाने की जानबूझ कर इच्छा व्यक्त नहीं की.

वेंगी से लौट कर पुलकेशिन को पल्लव नरसिंहवर्मन के अचानक आक्रमण का सामना करना पड़ा. दोनों सेनाओं की भयंकर मुठभेड़ हुई, पर चालुक्यों को उस समय परास्त होना पड़ा और उन का शासक पुलकेशिन युद्ध में घायल हो गया. पल्लव सेनाएं वातापी में प्रविष्ट हो गईं.

युद्धक्षेत्र में बुरी तरह घायल पुलकेशिन को एक युवती द्वारा एक झोंपड़े में अपनी सेवाशुश्रूषा करते देख बड़ा आश्चर्य हुआ.

"अरे, तुम? पृथ्वी महाराज की पुत्री यहां? अब तो अपना नाम बता दो मुझे?"

"चालुक्य सम्राट, नाम तो मेरा आज भी कुछ नहीं है, परं आप के भाई की पत्नी मैं अवश्य बनने जा रही थी. पत्नी इसलिए नहीं बन सकी, क्योंकि आप के भाई की अपेक्षा आप ने मुझे अधिक प्रभावित किया है. बौद्ध भिक्षुणी बन कर आप के विरुद्ध पल्लवों को उभार कर मैं ने आप को इस स्थिति में पहुंचा दिया. किंतु जीत कर भी मैं हार गई. इसलिए प्रायश्चित्तस्वरूप मैं अैयन आप को युद्धक्षेत्र से घायलावस्था में निकाल लाई हूं. झपट कर मैं ने बहुत कुछ प्राप्त करने की सफल योजना बना डाली. पर आप को खो कर जोड़ बाकी की मेरी सारी गणित गड़बड़ा गई, इसलिए वेंगी से बहुत दिन पूर्व ही निकल आई."

"ओह," पुलकेशिन पीड़ा से छटपटाता हुआ बोला, "अैयन, तुम्हारे मन में मेरे प्रति श्रद्धा, प्रेम, स्नेह या जो कुछ भी भावना हो, इस मरणासन्न व्यक्ति को, जो आज पहली बार गिड़गिड़ा कर किसी से कुछ मांग रहा हैं, एक वचन दे दो कि तुम विष्णुवर्द्धन की पत्नी अवश्य बनोगी. उसे तुम्हारी ही आवश्यकता है. मैं देख रहा हूं जब पश्चिमी चालुक्य राज्य समाप्त हो जाएंगा, उस के कई सौ वर्ष बाद भी पूर्वी चालुक्य राज्य फलेगाफूलेगा." पुलकेशिन की आंखें उस समय खुली ही रह गईं, जब उस के शब्द होंठों में ही फंसे रहे.

उस दिन विष्णुवर्द्धन जब विष्णुकुंडिन पृथ्वी महाराज को सहशासक नियुक्त कर उस की जागीर वापस सौंप कर कलिंग से लौटा तो अपने कक्ष में घूंघट निकाले एक युवती को बैठा देख कर वह भौचक्का रह गया. "क्षमा कीजिए." कहते हुए वह जैसे ही कक्ष से लौटने लगा, अपनी पीठ पर युवती की बांहों का स्पर्श पा कर उस ने चौंक कर पीछे की ओर ताका.

"अरे अैयन, तुम!" खुशी से चीखते हुए वह बोला, "कितना अच्छा होता यदि भैया से भी तुम मिल लेतीं. मैं ने वेंगी की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी है."

"झूठे कहीं के. घोषणा कर दी है या भैया ने तुम्हें भेंट कर दी है?"

ह्वानचांग ने उन दोनों के विवाह के पश्चात अपना प्रश्न फिर दोहराया," वेंगी महिषी, अब तो बताइए कि नारी पुरुष में क्या खोजती है– शालीनता, साहस या सौंदर्य?"

'बुद्धिमानी.' मन ही मन वह बुदबुदाई. पुलकेशिन द्वितीय की छवि उस के नेत्रों के सम्मुख थी. ●

राजसत्ता

यदि राजसत्ता अत्याचारी हो तो किसान का सीधा उत्तर है–जा, जा, तेरे ऐसे कितने ही राज मैं ने मिट्टी में मिलते देखे हैं. –सरदार पटेल

झांसी का बरुआ सागर स्वर्गाश्रम विवाद

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और इंदिरा कांग्रेस के लोगों की चालों में फंसे आश्रम की अंदरूनी लड़ाई....

अकाली मुसलिम लीग के पद चिह्नों पर

आनंदपुर साहब के प्रस्ताव को ले कर अकाली किस प्रकार घृणा, द्वेष और ईर्ष्या के आधार पर खालिस्तान की इमारत खड़ी कर रहे हैं और पंजाब को विनाश के कगार पर ले जा रहे हैं?

क्या अमिताभ बच्चन प्रधान मंत्री बनेंगे?

फिल्मी परदे पर छा जाने वाला अमिताभ परदे के पीछे राजनीति के मंच पर अब कौन सा करिश्मा दिखा रहा है?

केदारनाथ साहनी

भारतीय जनता पार्टी की दिल्ली प्रदेश शाखा के नए अध्यक्ष केदारनाथ साहनी से दिल्ली की हार और तथा प्रदेश की अन्य ज्वलंत समस्याओं पर भूभारती से विशेष बातचीत....

साथ में रामचंद्र रथ, सुंदरलाल पटवा, मगनभाई बरोट, कर्पूरी ठाकुर से विशेष भेंटवार्ताएं.

बिहार मंत्रिमंडल में परिवर्तन

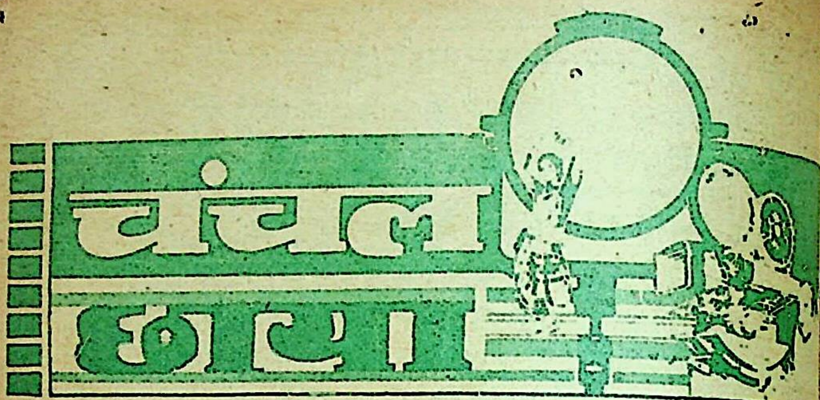
मुख्य मंत्री जगन्नाथ मिश्र की नई दोहरी चाल.

हाले दिल्ली

- झंडेवालान टावर : स्वास्थ्य के लिए खतरा
- उच्च अधिकारियों द्वारा अवैध कब्जे की दास्तान.
- महाविद्यालयों की शासकीय समितियां : बेताज बादशाह
- सरकारी अफसरों की नई दलील से जनसाधारण परेशान.

इन के अतिरिक्त अन्य कई लेख तथा सभी स्थायी स्तंभ

दिल्ली प्रेस प्रकाशन



★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण 0 बेका

★★ अर्पण

निर्माता : फिल्म युग
निर्देशक : ज. ओमप्रकाश
मुख्य कलाकार : जितेंद्र, रीना राय, परवीन बाबी, राज बब्बर, प्रीति सप्रू, सुजीतकुमार.

'अर्पण' एक नारी के त्याग की कहानी है, लेकिन इस की भी एक सीमा होती है, एक स्तर होता है. त्याग एक अच्छी बात है, पर जब नारी का त्याग खलनायक के सामने समर्पण तक पहुंच जाए तो वह त्याग की अपेक्षा नाटकीयता प्रतीत होने लगती है. यही कारण है कि नायिका शोभा (रीना राय) जैसेजैसे त्याग पर त्याग करती चली जाती है, वैसेवैसे हर त्याग के साथ वह दर्शकों की आंखों में ऊपर उठने की बजाए खीज पैदा करती चली जाती है.

शोभा और अनिल (जितेंद्र) प्रेम करते हैं. उधर शोभा की कंपनी का मालिक जे.के. (राज बब्बर) शोभा द्वारा ठुकराए जाने पर बदला लेने पर तुल जाता है. इसी कशमकश में शोभा मजबूर हो कर अनिल के परिवार की इज्जत बचाने के लिए जे.के. से शादी कर लेती है. असलियत से अनजान अनिल एक नर्तकी सोना (परवीन बाबी) से शादी कर लेता है. इस के बाद भी शोभा को अनेक परीक्षाओं में से गुजरना पड़ता है.

'अर्पण' अनिल, शोभा और जे.के. के त्रिकोण की कहानी है. इस त्रिकोणात्म कहानी में सब से बड़ी कमी यह खटकती कि संघर्ष में खलनायक की विजय दिखा गई है. शोभा का अपने प्रेमी को छोड़ क जे.के. से शादी कर लेना किसी भी प्रका त्याग या बलिदान नहीं कहा जा सकता. उ पर भी अखरने वाली बात यह है कि व अपने शरीर को तो पति को अर्पित कर दे है और मन में प्रेमी को बसाए रखती है. ऐ नारी की कैसे प्रशंसा की जा सकती है, जे पति और प्रेमी दोनों को ही धोखा दे रही है इस पर भी निर्देशक इस भूमिका को आदर्शवादी और त्याग का रूप देता चल गया है और यही बात दर्शकों के मन को नहीं सकी..

कलाकारों में रीना राय त्यागमयी भूमिका के उपयुक्त नहीं थी. जितेंद्र भी अपनी भूमिका में लड़खड़ाता रहा है. इन की तुलना में राज बब्बर और परवीन बाबी जब भी परदे पर आए हैं, कुछ ताजगी ले आए हैं

ज. ओमप्रकाश ने अपनी पहली फिल्मों की तरह अर्पण में भी संगीत पर ध्यान दिया है. एकदो गीत नारेबाजी तरह हैं, पर कुछ गीत मधुर हैं. यदि निर्मातानिर्देशक व लेखक ज. ओमप्रकाश किसी कम से कम लेखक की जिम्मेदारी किसी और को सौंप देता तो मारधाड़ से हट कर बनी पारिवारिक फिल्म 'अर्पण' एक अच्छी फिल्म बन सकती थी.

★ पशु संग्राम

निर्माता : अयप्पा प्रोडक्शंस
निर्देशक : यूजेव शूमेशेर

यह कर मुक्त फिल्म सही मायने में वृत्त फिल्म है, क्योंकि इस में कोई क्रमबद्ध कथा नहीं है, लेकिन, विषय, उस के प्रस्तुतीकरण व छायांकन के लिहाज से यह फिल्म कथा फिल्मों की तुलना में कहीं ज्यादा आकर्षक है. दरअसल वन्य जीवन पर आधारित फिल्म में कोई कथा गढ़ी ही नहीं जा सकती. उन में वन्य जीव जंतु ही ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाते हैं.

जरमन निर्माता निर्देशक यूजेन (शूमेशेर ने 'दि लास्ट आफ दि वाइल्ड' नाम की फिल्म बनाई थी जिसे धारावाहिक रूप में अंगरेजी में भारतीय दूरदर्शन पर दिखाया जा चुका है. 'पशु संग्राम' में इन तमाम हिस्सों का संकलन है और उस का विवरण हिंदी में डब कर दिया गया है.

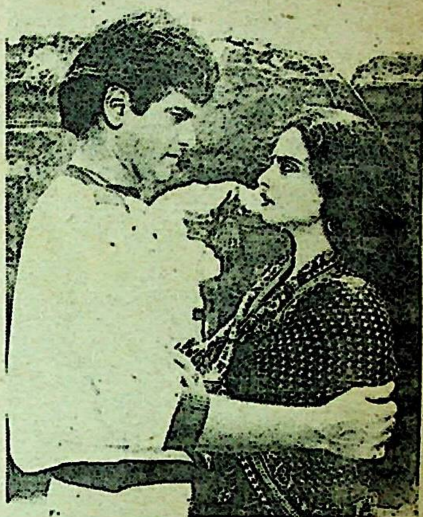
विभिन्न जीवजंतुओं के रहनसहन, उन की आदतों व उन के शिकार के रोमांचक दृश्यों को फिल्म में काफी कुशलता से फिल्माया गया है. अलास्का के रीछ, काले तेंदुए व अजगर की लड़ाई, बनेले सुअर व बाघ की भिड़ंत, राजस्थान के लकड़बग्घे और मलेशिया के समुद्री कछुए का विवरण रोंगटे खड़े कर देता है.

हिंदी डबिंग थोड़ी दोषपूर्ण है. परदे पर दिखाई जाने वाली घटना का सही चित्रण कमेंट्री कई जगह नहीं कर पाती. फोटोग्राफी बेहद आकर्षक है और फिल्म कहीं भी नीरस नहीं लग पाती.

O निशान

निर्माता : बरार प्रोडक्शंस
निर्देशक : सुरेंद्रमोहन
मुख्य कलाकार : जितेंद्र, रेखा, राजेश खन्ना, पूनम, जीवन, अमरीश.

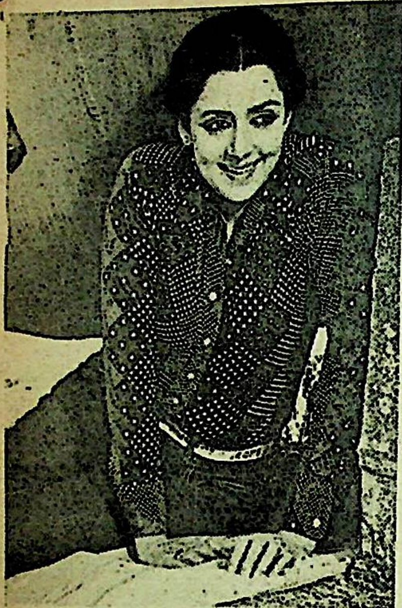
तीन साल में एक करोड़ रुपए से भी ज्यादा की लागत से बनी इस फिल्म में प्रतिशोध की जानीपहचानी कहानी को दो घंटे 40 मिनट तक फैलाया गया है, लेकिन प्रसंग इतने ज्यादा बासी हैं कि दर्शक को लगता ही नहीं कि वह कोई नई फिल्म देख रहा है. 'शोले,' 'दीवार' व 'धर्मकांटा' से पूरी तरह प्रभावित इस फिल्म को तेज गति, मारपीट व सितारों की भीड़ के बल पर दिलचस्प बनाने की असफल कोशिश की गई है.



फिल्म 'निशान' के एक दृश्य में जितेंद्र और रेखा.

दीवान (जीवन) के षड्यंत्रों की वजह से रतनसिंह (विजय अरोड़ा) की मृत्यु हो जाती है, उस की पत्नी पागल हो जाती है व दोनों बच्चे बिछुड़ जाते हैं. शंकर (राजेश खन्ना) ट्रक ड्राइवर बन जाता है और रवि (जितेंद्र) दीवान की लड़की रीता (रेखा) से प्रेम कर दीवान के यहां ही नौकरी करने लगता है. अंत में पूरा परिवार मिल जाता है और दीवान को उस के किए की सजा मिल जाती है.

पागल बघेलसिंह के रूप में सिर्फ अमरीश पुरी के अभिनय में ही नवीनता है.



फिल्म 'नास्तिक के एक दृश्य में हेमा मालिनी.

जितेंद्र, रेखा व पूनम ने अपनी भूमिकाओं को कामचलाऊ अंदाज में ढाला है. राजेश खन्ना ने अपनी तरफ से मेहनत की है, लेकिन वह ट्रक ड्राइवर नहीं लगता.

फिल्म में छः गीत हैं और सभी में तुक्के इस्तेमाल किए गए हैं. पार्श्व संगीत बेहद शोर वाला है. आधी से ज्यादा फिल्म में मारधाड़ व नाचगानें हैं, बाकी में जबरदस्ती भावुक बनाए गए प्रसंग जो कतई नहीं असर डाल पाते.

O नास्तिक

निर्माता : बी.आर. पिक्चर्स
निर्देशक : प्रमोद चक्रवर्ती
मुख्य कलाकार : अमिताभ, हेमा, प्राण, देवेन वर्मा, अमजद, रीता भादुड़ी, सारिका, नंदिनी जयंत, ललिता पवार, भारत भूषण.

हमारा देश हजारों सालों से भाग्य और भगवान में उलझा हुआ है और जहां हमारा बस नहीं चलता, हम और प्रयत्न करने की बजाए निराश हो कर भगवान पर छोड़ देते हैं. इसी लिए यह मानते चले आ हैं कि भगवान के यहां देर है, अंधेर नहीं 'नास्तिक' भी एक ऐसी ही कहानी है जि में शुरू से अंत तक भाग्य और भगव महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.'

किन्हीं कारणों से शंकर (अमिताभ का भगवान से विश्वास उठ जाता है और नास्तिक बन जाता है, लेकिन अंत में जब पर मुसीबत आती है और वह अपने लाचार महसूस करने लगता है तो भगवा में उस का विश्वास और भी बढ़ जाता

शंकर, बलवीर (प्राण) और (हेमा) तीनों जेबकतरे हैं और धीरे एकदूसरे के निकट आ जाते हैं. ये तीन घिसीपिटी भूमिकाएं मसाला फिल्मों उड़ाई गई हैं. खलनायक और नायक भूमिकाओं का चित्रण कर के ये भूमिक तैयार की गई हैं. इस के बावजूद इन टक्कर लेने के लिए खलनायक दाइ (अमजद) है ताकि किसी न किसी बहा फिल्म में मारपीट शुरू से अंत तक चल रहे. इन सब की अपेक्षा हास्य कलाकार रूप में देवेन वर्मा अधिक मनोरंजन करता इस की भूमिका में भी भाग्य और भगवा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, पर उस हनुमान का मजाक ही उड़ाया गया है.

अमिताभ अपने पुराने परिचित रूप है— वही अंदाज, वही शैली. हेमा और प्रा भी बासी लगते हैं और फिल्म में को ताजगी नहीं ला सके. प्राण अब बिलकु निष्प्राण हो गया है और हेमा अपना सौंदर्य आकर्षण दिन प्रतिदिन बड़ी तेजी से खो जा रही है. अमजद से तो अब वितृष्णा होने लगी है.

सचिन भौमिक की कहानियों का आधार प्रतिशोध ही रहता है. 'नास्तिक भी उसी शृंखला की एक कड़ी मात्र है आनंद बख्शी के गीत व कल्याणजी आनंदजी का संगीत सामान्य स्तर का है निर्देशक प्रमोद चक्रवर्ती की 'नास्तिक अपने शीर्षक के विपरीत अंधविश्वास का ही प्रचार करती है.

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

• वर चाहिए

प्रतिष्ठित परिवार की 25 वर्षीया, वैश्य, 160 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यों में दक्ष, एम.ए., बी.एड., केंद्रीय सेवारत कन्या हेतु सुशिक्षित, कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5477, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बरतानिया में स्थापित परिवार की 22 वर्षीया, सुयोग्य, बी.ए, एलएल.बी., गेहुआं रंग, कद 152 सें.मी. कन्या के लिए सम्मानित हिंदू परिवार की बरतानिया स्थित अथवा बरतानिया में बसने के इच्छुक व्यावसायिक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5544, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, बी.एससी. पास, एलएल.बी. में अध्ययनरत, 157 सें.मी. ऊंची, अत्यंत सुंदर, गेहुएं रंग वाली, शालीन, संपन्न परिवार की कन्या हेतु अधिकारी वर चाहिए. दहेज इच्छुक पत्रव्यवहार न करें. ब्राह्मण (बंगाली) एवं कायस्थ को प्राथमिकता जो उदार हों एवं मध्य प्रदेश निवासी हों. लिखें: वि.नं. 5567, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, एम.ए. अंगरेजी पास, अत्यंत सुंदर, 165 सें.मी. ऊंची, इकहरे बदन की संपन्न, ब्राह्मण परिवार की कन्या हेतु बंगाली ब्राह्मण, मध्य प्रदेश निवासी, अधिकारी वर चाहिए. इंजीनियर, बैंक अधिकारी, डिप्टी कलक्टर को प्राथमिकता. उदार विचार वाले अन्य ब्राह्मण एवं कायस्थ भी स्वीकार्य. दहेज इच्छुक पत्रव्यवहार न करें. लिखें: वि.नं. 5568, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 145 सें.मी., गर्ग वैश्य राजवंशी परिवार की सुंदर, गोरी, गृहकार्य में दक्ष, एम.ए., बी.एड. कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र और उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 5569, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, स्मार्ट, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, कद 153 सें.मी., हायर सेकंडरी और ज्ञानी पास (सिख अरोड़ा) लड़की के लिए (सिख) व्यवसायी सुंदर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5571, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 20 वर्षीया, एम.ए., बी.एड. एवं 22 वर्षीया, एम.ए., एलएल.बी., कद 165 सें.मी., गृहकार्य में दक्ष कन्याओं हेतु सजातीय, योग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित एक बार में लिखें: वि.नं. 5573, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, सुंदर, वैश्य, बी.ए., जिला बिजनौर में कार्यरत, मासिक वेतन 550/-, कन्या हेतु वर चाहिए. आदर्श विवाह के इच्छुक लिखें: वि.नं. 5574, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, 157 सें.मी., बी.ए., बी.एड, अध्यापिका, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, गौरवर्ण, सुंदर कन्या हेतु कार्यरत वर चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 5575, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तर प्रदेश के प्रतिष्ठित चौरसिया परिवार की 19 वर्षीया, स्नातक कन्या हेतु अच्छे पद पर कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5576, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, त्रिवेदी भारद्वाज गोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण, गौरवर्ण, इकहरा बदन, कद 163 सें.मी., स्वस्थ, एम.ए. इतिहास एवं राजनीति शास्त्र, बी.एड., गृहकार्य में दक्ष कन्या के लिए सजातीय, शासकीय अथवा अच्छी नौकरी में सेवारत वर चाहिए. प्रांत एवं उपजाति बंधन नहीं. विवाह शीघ्र एवं अच्छा. प्रथम पत्र में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 5577, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, मैढ़ क्षत्रिय (स्वर्णकार), सुंदर, गौरवर्ण, 155 सें.मी., एम.ए., बी.एड., कानवेंट स्कूल में अध्यापिका कन्या हेतु सुशिक्षित, उच्च कार्यरत वर चाहिए. पिता एअरफोर्स अधिकारी. लिखें: वि.नं. 5578, सरिता नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 150 सें.मी., बी.ए., कुलीन परिवार, मित्तल, गेहुआं रंग, आकर्षक, घरेलू, एक आंख में सफेद निशान किंतु दृष्टि दोष नहीं, कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5579, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.ए. अर्थशास्त्र, गृहकार्य कुशल, सिलाई डिप्लोमा, 26 वर्षीया, गेहुआं वर्ण, 162 सें.मी. ऊंची, शिक्षिका, धुरिया (केवट) कन्या के लिए योग्य वर चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 5580, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए. अर्थशास्त्र, कुमाऊंनी राजपूत कन्या हेतु सुयोग्य, कुमाऊंनी गढ़वाली वर चाहिए. पिता व्यवसायी. उत्तम व शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 5581, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.एससी., बी.एड., गोरी, 24, 145 सें.मी., श्रीवास्तव कन्या हेतु इंजीनियर अफसर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5582, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, ओसवाल जैन, 158 सें.मी., एम.ए., सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5583, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुसभ्य माहेश्वरी परिवार की बी.एससी. (होम साइंस), 22 वर्षीया, गुणवान, कानवेंट शिक्षित, सुंदर, स्मार्ट, 163 सें.मी. लंबी, गेहुआं रंग, अच्छे व्यक्तित्व वाली कन्या हेतु माहेश्वरी/अग्रवाल, उच्च शिक्षित इंजीनियर, डाक्टर, सी.ए. आर्किटेक्ट, उज्

भविष्य वाले अथवा सुस्थापित, ग्रेजुएट, व्यवसायरत, अच्छे रहनसहन परिवार का वर चाहिए. पत्रव्यवहार पूर्णतया गोपनीय रहेगा. लिखें: वि.नं. 5584, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 22 व 21 वर्षीया, 155 सें.मी., व 145 सें.मी., बी.ए. फेल, एम.ए. अध्ययनरत, सुशील, गृहकार्य में दक्ष कन्याओं हेतु कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5585, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 18, स्नातक, नर्सिंग ट्रेनिंग द्वितीय वर्ष, इंटर अध्ययनरत, सुंदर, छरहरी, 155 सें.मी. कन्याओं हेतु सरकारी, बैंक सेवारत वर चाहिए. जातिबंधन/दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 5586, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, 152 सें.मी., सैनी, विज्ञान स्नातक (बाटनी आनर्स), अंगरेजी माध्यम, अति सुंदर, गौरवर्ण, सुशील, स्वस्थ, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. चार्टर्ड एकाउंटेंट डाक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक, बैंक अधिकारी अथवा बड़े व्यापारी को प्राथमिकता. उत्तम विवाह. पिता व ताऊ राजकीय सेवारत डाक्टर, चाचा इंजीनियर. लिखें: वि.नं. 5587, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, क्षत्रिय, इंटर, सुंदर, इकहरा बदन, मंगली कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5588, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, पंजाबी शर्मा, बी.ए. प्रथम वर्ष, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, 152 सें.मी. कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 5589, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, राजपूत, सुंदर, गौरवर्ण, 157 सें.मी., एम.काम. कन्या हेतु डाक्टर इंजीनियर, लेक्चरर व अन्य अफसर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5590, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, गौरवर्ण, 25 वर्षीया, राजपूत, 155 सें.मी., स्थायी लेक्चरर, राजस्थानी सरकारी कालिज, कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, लेक्चरर व अन्य अफसर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5591, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, 156 सें.मी., ग्रेजुएट, तलाकशुदा, खत्री युवती के लिए वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 5592, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, अग्रवाल (गोयल), 158 सें.मी., सुंदर, एम.ए., बी.एड., राजस्थान में अध्यापिका हेतु सुयोग्य वर चाहिए. महाजन जाति को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 5593, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार की 21 वर्षीया, 156 सें.मी., बी.एससी. होम साइंस नर्सरी टीचर जिस के कुछ सफेद दाग हैं हेतु वर चाहिए. कोई जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 5594, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पश्चिम उत्तरप्रदेशीय कुर्मि क्षत्रिय राजनीतिज्ञ की पुत्री 23 वर्षीया, 155 सें.मी., गेहुआं, ... गृहकार्य दक्ष, एम.ए. हेतु सजातीय, ... इंजीनियर, राजपत्रित अधिकारी वर चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 5612, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, एम.ए., 158 सें.मी. एवं 26 वर्षीया 155 सें.मी., एम.ए., पीएच.डी., सुंदर, गृहकार्य दक्ष, बीसा ओसवाल जैन कन्याओं हेतु सुयोग्य सजातीय, अविवाहित वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 5633, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए. (भूगोल), ... सुंदर, गृहकार्य दक्ष, राजपूत कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5636, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, सक्सेना (दूसरे), एम.एससी., बी.एड., अति सुंदर, साफ रंग, आकर्षक, सरल स्वभाव, कानवेंट स्कूल में शिक्षा प्राप्त, गृहकार्य में पूर्णतया दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. उपजाति बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 5637, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, गौरवर्ण, गौड़ ब्राह्मण, बी.ए., ... 157 सें.मी. कन्या हेतु कार्यरत, दहेज न लेने का इच्छुक सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5638, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, बी.एससी., बी.एड., अविवाहित तथा 30 वर्षीया, इंटर, तलाकशुदा, निस्संतान, ... ब्राह्मण कन्याओं हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5639, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 160 सें.मी., प्रतिष्ठित माहेश्वरी परिवार की एम.ए., गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 564..., सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, श्रीवास्तव, बी.काम., 152.5 सें.मी., इकहरी, गौरवर्ण, गृहकार्यों में निपुण, शिक्षिका कन्या हेतु योग्य, कायस्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 564..., सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, प्रोटेस्टेंट क्रिश्चियन, कानवेंट सेवारत, एम.एससी., बी.एड. कन्या हेतु सजातीय, सुशील वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5642, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, श्रीवास्तव कायस्थ, 156 सें.मी., ... कि.ग्रा., स्लिम, म.प्र. महाविद्यालयीन व्याख्याता कन्या हेतु वर चाहिए. दहेज के इच्छुक न लिखें: वि.नं. 564..., सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, निस्संतान, तलाकशुदा, जैन श्वेतांबर, गौरवर्ण, 155 सें.मी., सुंदर, बी.ए. पास, गृहकार्यों में निपुण कन्या के लिए सुंदर वर चाहिए. उत्तम विवाह. (दूज वर भी संपर्क कर सकते हैं). लिखें: वि.नं. 5644, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, सिंघल अग्रवाल, एम.एससी. ...

बाटनी, बी.एड., सुंदर, सुशील, सिलाईबुनाई व गृहकार्य दक्ष, कद 156 सें.मी. कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर, उच्च पदस्थ. सजातीय वर चाहिए. अच्छी शादी. पिता नौकरीपेशा. लिखें: वि.नं. 5645, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 21 व 19 वर्षीया, क्रमशः एम.ए. (सामाजिक ज्ञान, नागरिक शास्त्र), शिक्षा कार्य में कार्यरत, बी.ए., एम.ए., गोरी बहनों हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5646, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 157 सें.मी., गोरी, स्लिम, सुंदर, पीएच.डी., अग्रवाल कन्या हेतु सुशिक्षित, सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5647, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, बंसल, 159 सें.मी., मैट्रिक, तलाकशुदा, गृहकार्य दक्ष हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5648, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, चौहान राजपूत, इंटर की छात्रा, 156 सें.मी., गेहुआं रंग, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु सजातीय, आत्मनिर्भर, स्वस्थ वर चाहिए. विवाह उत्तम. लिखें: वि.नं. 5669, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, यादव, मैट्रिक, गोरी, सुंदर, हरियाणा निवासी हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5670, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, ग्रेजुएट, माहेश्वरी कन्या हेतु दहेज विरोधी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5671, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न परिवार की 30, 158 सें.मी., रस्तोगी (वैश्य), बी.एससी., बी.एड., शिक्षिका, 800/- रुपए के लिए सुयोग्य, सेवारत वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 5672, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीया, ब्राह्मण, आकर्षक, राजपत्रित पदाधिकारी, वेतन 2,200/- मासिक, निस्संतान परित्यक्ता हेतु समकक्ष, मध्य प्रदेश निवासी ब्राह्मण वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5673, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

30 वर्षीय, 175 सें.मी., सिंघल गोत्रीय जैन, निजी उद्योगरत, मासिक आय चार अंकों में एवं 29 वर्षीय, 172 सें.मी., विदेश से लौटे, अंतरराष्ट्रीय कंपनी में एकाउंट्स आफीसर, मासिक 3,200/-, अति आकर्षक व्यक्तित्व वाले भाइयों के लिए अत्यंत सुंदर, सुशील, गृहकार्य निपुण वधुएं चाहिए. लिखें: वि.नं. 5510, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, माहेश्वरी, लेक्चरर, मासिक आय 5,000/-, एम.एससी., स्मार्ट युवक हेतु डाक्टर, लेक्चरर अथवा ग्रेजुएट, सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5512, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय सुंदर, स्मार्ट, 172 सें.मी. कद, व्यावसायिक, (सिख अरोड़ा) लड़के के लिए सुंदर, स्मार्ट, सिख पारिवारिक कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 5570, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, 176 सें.मी., स्मार्ट, सब इंजीनियर (म.प्र.), मुसलिम युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 5595, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थान सहकारी बैंक अधिकारी, 26½, 170 सें.मी., 1,700/- हेतु सुसंस्कृत, स्मार्ट, कार्यरत वधू चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. अध्ययनरत को वरीयता. लिखें: वि.नं. 5596, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, अग्रवाल, 167 सें.मी., निजी व्यवसाय, एलएल.बी., मासिक आय 2,000 रु., आकर्षक युवक हेतु आकर्षक, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5597, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मद्रास स्थित, निजी व्यवसायी, 32 वर्षीय, कान्यकुब्ज मिश्र हेतु सुसंस्कृत कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 5598, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, राजपूत, जूनियर इंजीनियर, केंद्रीय सरकार सेवारत, आय 1,300/- रु., कानूनन तलाकशुदा हेतु सुंदर, सुशील, राजपूत कन्या चाहिए. दिल्ली में नौकरीशुदा को वरीयता. लिखें: वि.नं. 5599, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27½ वर्षीय, महाराष्ट्रीयन (माली), गेहुआं रंग, भारत सरकार के एक उपक्रम में सेवारत, आय 900/-, युवक हेतु महाराष्ट्रीयन, सजातीय, सेवारत वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5600, सरिता नई दिल्ली-110055.

धोबी, 25, 165 सें.मी, केंद्रीय सरकार में जूनियर इंजीनियर हेतु सुंदर, गौरवर्ण, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5601, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोयल, चार्टर्ड एकाउंटेंट, 25, 169 सें.मी., उत्तर प्रदेश, निजी प्रैक्टिस में रत वर के लिए सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 5602, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, बी.ए., आय 1,000/-, संतानोत्पत्ति में असमर्थ (संतान गोद ली जा सकती है) हेतु संतानोत्पत्ति में असमर्थ या संतान की इच्छा न रखने वाली कन्या को प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. पूर्ण विवरण, लिखें: वि.नं. 5603, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, गोयल, फर्म में पार्टनर, न्यनतम शिक्षित युवक वास्ते गृहकार्य दक्ष, सुशील, सजातीय कन्या चाहिए. शीघ्र आदर्श विवाह. लिखें: वि.नं. 5604, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, 168 सें.मी., पंजाबी, इलेक्ट्रि... डिप्लोमा, निजी व्यवसाय, आय 2,000/-, युवक ...

शिक्षित, सुशील, गृहकार्य दक्ष कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 5605, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राहमण, म्र.प्र. निवासी, 25 वर्षीय, बी.ए., एलएल.बी. (अंतिम वर्ष), कांट्रेक्टर एवं 21 वर्षीय ओवरसियर (सिंचाई विभाग), हेतु सजातीय वधू चाहिए. भाई डाक्टर, पिताजी रेलवे में उच्चतम पदस्थ. लिखें: वि.नं. 5606, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, बैंक अफसर, 27, 175 सें.मी., 60 कि.ग्रा., वेतनमान चार अंकों में के लिए वधू चाहिए. (जातिबंधन नहीं). लिखें: 5607, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.एस. डाक्टर, राजपूत, शासकीय सेवारत हेतु सजातीय, एम.बी.बी.एस, डाक्टर वधू चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें: वि.नं. 5608, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 165 सें.मी., कार्यरत, 1,200/-, स्वस्थ, सुंदर, अनुसूचित जाति के स्नातक युवक हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 5609, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, विश्वकर्मा, संभ्रांत परिवार, बिहार वासी, साइंस स्नातक, 168 सें.मी., 800/-, आय हेतु सुशील, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5610, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, परिहार वंश, क्षत्रिय, राजकीय अध्यापक, स्नातक, 800/- मासिक हेतु सुयोग्य, गृहकार्य में दक्ष, सुंदर रंग, परिश्रमी, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 5611, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 27½ वर्षीय, 175 सें.मी., एम.काम., लेक्चरर, मासिक आय 1,600/- एवं 26½ वर्षीय, 166 सें.मी., शासकीय सेवारत, इंजीनियर, मासिक आय 1,800/-, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सजातीय वधुएं चाहिए. जन्मकुंडली सहित लिखें: वि.नं. 5613, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, 170 सें.मी., स्वर्णकार, मैकेनिकल इंजीनियर, प्रतिष्ठित फर्म में कार्यरत युवक हेतु स्मार्ट, ग्रेजुएट, अति सुंदर वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 5614, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, सुंदर, स्मार्ट, महाराष्ट्रीयन, सरकारी पदाधिकारी (इंजीनियर), 3,000/- वेतन, विधुर को गौरवर्ण, सुंदर, शिक्षित जीवनसंगिनी चाहिए. तलाकशुदा [illegible] स्वीकार्य. [illegible] नहीं लिखें: वि.नं. 5615, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, संपन्न, निजी व्यवसायी, मध्यप्रदेशीय, 27½ वर्षीय, 165 सें.मी., बी.एससी., पंजाबी अरोड़ा नवयुवक हेतु सुयोग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. [illegible]16, सरिता, नई दिल्ली-110055.

[illegible] 175 सें.मी., खूबसूरत, पंजाबी अरोड़ा, [illegible], व्यवसायी, आयकरदाता युवक हेतु सुंदर, पढ़ीलिखी, गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए. जातिबंधन [illegible] लिखें: वि.नं. 5617, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 170 सें.मी., राजपूत चौहान, [illegible] व्यवसाय, आय 1,500/- मासिक, युवक हेतु [illegible] पढ़ीलिखी, सुशील, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. [illegible] बंधन नहीं. शीघ्र विवाह. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 5618, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आकर्षक, सुंदर, निर्व्यसनी, शाकाहारी, [illegible] खानदानी, शिक्षित, जमींदार परिवार, 31, [illegible] सें.मी., वकील हेतु सुंदर, स्लिम, कुलीन वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5619, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, 170 सें.मी., ब्राह्मण, एम.ए., [illegible] रंग, निजी व्यापार, आय चार अंकों में युवक हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित, गृहकार्य दक्ष, स्मार्ट, गौरवर्ण, सुयोग्य, ब्राह्मण कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 5620, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37 वर्षीय, विधुर, राजपूत, आयुर्वेदाचार्य [illegible] जीवनसंगिनी चाहिए. विधवा और तलाकशुदा भी स्वीकार्य. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 5621, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीय, ग्रेजुएट, 167 सें.मी., राजकीय सेवारत, हिंदू, पश्चिमी उ.प्र. निवासी, युवक हेतु सुंदर, सुशील, बैंक/अध्यापिका वधू चाहिए. [illegible] लिखें: वि.नं. 5622, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, गौड़ ब्राह्मण, सरकारी सेवारत, वेतन 700/-, युवक हेतु सजातीय, सुंदर, गृहकार्य दक्ष कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 5623, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, एम.काम., पंजाबी अरोड़ा, सेक्शन अफसर (रेलवे), 1,200/- मासिक, बायां हाथ, [illegible] पैर आंशिक पोलियो प्रभावित, बाहर जाने पर कैलिपर प्रयोग हेतु सेवाभावी, सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. जाति, दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 5624, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी, 25 वर्षीय, दिगंबर जैन गर्ग, 17[illegible] सें.मी., व्यवसायरत युवक हेतु सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 5625, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दस हजार रु. मासिक आय वाले राजस्थान निवासी 27 वर्षीय, 172 सें.मी., स्मार्ट, ग्रेजुएट, गोयल युवक हेतु सजातीय (बीसा अग्रवाल), सुशिक्षित, अति सुंदर कन्या चाहिए. विज्ञापन अति सुंदरता के चयनार्थ. [illegible] बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 5626, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 170 सें.मी., संभ्रांत परिवार के [illegible] क्षत्रिय, स्टेट बैंक प्रावेशनरी अफसर, आय 2,300/- हेतु सुंदर, स्वस्थ, संभ्रांत परिवार की कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 5627, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, ओमरे वैश्य, 168 सें.मी., रेडियो एवं

इलेक्ट्रिकल व्यवसायी, गौरवर्ण, स्वस्थ युवक हेतु गोरी, सुंदर कन्या चाहिए. दहेज बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 5628, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, मांगलिक, ब्राह्मण, मैट्रिक, 157 सें.मी. लड़की के लिए योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5629, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्ता निवासी, 27 वर्षीय, 168 सें.मी., मित्तल अग्रवाल, एडवोकेट (लगभग 4,000 मासिक) हेतु शिक्षित, सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5630, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 183 सें.मी., आकर्षक, स्वस्थ, शाकाहारी, आय चार अंकों में, बंबई में निजी फ्लैट, रजिस्टर्ड आयुर्वेदिस्ट क्षत्रिय वर हेतु रजिस्टर्ड आयुर्वेदिस्ट/एलोपैथ, सुंदर, स्लिम, गौरवर्ण वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. प्रथम बार में ही जन्मांग सहित संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 5631, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, स्मार्ट, बीसा ओसवाल जैन, सी.ए., निजी प्रैक्टिस, प्रतिष्ठित परिवार के युवक हेतु सजातीय, सुयोग्य एवं सुंदर वधू चाहिए. 5632, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, धोबी, ग्रेजुएट, 175 सें.मी., इंश्योरेंस में सेवारत, मासिक वेतन 1,180/- रु. हेतु सजातीय, ग्रेजुएट, सुंदर, सुशील वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5634, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीय, अग्रवाल युवक, आकर्षक व्यक्तित्व, रु. 1,500/- मासिक के लिए सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5635, सरिता, नई दिल्ली-110055.

155 सें.मी., 26½, 1,200/-, स्मार्ट, पूर्णतया स्वतंत्र, लखनऊ के युवक हेतु स्लिम, आकर्षक, ग्रेजुएट, कार्यरत कन्या चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 5649, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 185 सें.मी., एम.ए., आय चार अंकीय, गढ़वाली राजपूत, व्यवसायी हेतु कुमाऊंनी गढ़वाली वधू चाहिए. पूर्ण विवरण प्रथम बार में लिखें: वि.नं. 5650, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 24 वर्षीय, सुंदर, एम.बी.बी.एस. डाक्टर युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5666, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 165 सें.मी., खंडेलवाल, पोस्ट ग्रेजुएट, डाक्टर हेतु खंडेलवाल, अग्रवाल, जैन, माहेश्वरी, ब्राह्मण डाक्टर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5667, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37½ वर्षीय, अग्रवाल गर्ग गोत्र, निजी व्यवसाय, मासिक आय चार अंकों में, विधुर, चार बच्चों हेतु संभ्रांत परिवार की अविवाहित, सुशिक्षित, सुंदर,

व्यक्तिगत विज्ञापन उत्तरदाताओं के लिए सूचना

सरिता में वैवाहिक विज्ञापन पाठकों की सेवा के लिए प्रकाशित किए जाते हैं. इन विज्ञापनों से आप अपने सीमित क्षेत्र में ही नहीं, पूरे देश में वैवाहिक संबंध स्थापित कर सकते हैं.

वैवाहिक विज्ञापनों का उत्तर देते हुए यदि आप निम्न बातों का ध्यान रखेंगे तो आप को, हमें और विज्ञापनदाताओं को काफी सुविधा रहेगी:

1. वैवाहिक पत्रव्यवहार बंद लिफाफे में करें.

2. पहली बार में ही लड़की व लड़के की आयु, शिक्षा, रंग, ऊंचाई, वजन, व्यवसाय, आय आदि पूरा विवरण लिखें.

3. विज्ञापनदाताओं के पास भेजे जाने वाले लिफाफे पर "विज्ञापन विभाग" "संपादक, सरिता" आदि न लिखें. केवल "वि.नं.– सरिता, नई दिल्ली-110055." पते के रूप में लिख देने पर पत्र हम तक पहुंच जाएंगे.

4. यदि आप कई विज्ञापनदाताओं से पत्रव्यवहार करना चाहते हैं तो सब विज्ञापनदाताओं के लिए विज्ञापन नं. लिखे लिफाफे एक ही बड़े लिफाफे में रख कर "वैवाहिक विज्ञापन विभाग, सरिता, नई दिल्ली-110055" के पते पर भेज दीजिए. विज्ञापन विभाग द्वारा आप के पत्र संबंधित [illegible] को अलगअलग भेज दिए जाएंगे. इस से आप को सब लिफाफों पर टिकट नहीं लगाने पड़ेंगे और पत्र भेजने में सुविधा भी रहेगी.

5. वैवाहिक विज्ञापन केवल पत्रव्यवहार के लिए संपर्क सूत्र का काम करते हैं. विवाह तय करने से पहले संबंधित व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त किए बिना और आवश्यक जांचपड़ताल किए बिना कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए.

सभ्य संतानोत्पत्ति में असमर्थ या संतानोत्पत्ति की इच्छा न रखने वाली सजातीय वधू चाहिए. विवाह साधारण और शीघ्र. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 5668, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वर व वधू चाहिए

गौड़ ब्राह्मण, 25, 165 सें.मी., बी.ए. युवक, 19, 21, 151 सें.मी., 152 सें.मी., बी.ए. प्रथम, एम.ए. फ़ाइनल बहनों हेतु वधू व वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5651, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, प्रतिष्ठित परिवार, 27, 170 सें.मी., बैंक सेवारत, पोस्ट ग्रेजुएट युवक हेतु वधू तथा 22, 152 सें.मी., एम.ए., एल.टी. कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5652, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीय, अविवाहित, मध्यप्रदेशीय, मराठी बुद्धिस्ट, रेल सेवा में कार्यरत, मासिक आय 1,275/- हेतु स्लिम, सुशिक्षित वधू चाहिए एवं 22 वर्षीया, सुंदर और शिक्षित बहन हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5653, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, बी.ए., शाकद्वीपीय ब्राह्मण, सुंदर, स्वस्थ, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, कार्यरत सजातीय वर तथा 26 वर्षीय, शाकद्वीपीय, व्यापाररत युवक हेतु सुशिक्षित, सुसंस्कृत, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5654, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, अनुसूचित जाति (वाल्मीकी), एम.ए. अध्ययनरत, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, प्रतिष्ठित परिवार की कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर व प्रथम श्रेणी अधिकारी वर तथा 23 वर्षीय, राजपत्रित अधिकारी भाई के लिए सुशील, सुशिक्षित, गौरवर्ण, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5655, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, खत्री सिख, 152 सें.मी., गृह... चेहरा साधारण, हंसते समय निचले होंठ में टेढ़ा... महसूस होना, गृहकार्य दक्ष, घरेलू सुशील कन्या एवं ... वर्षीय, 162 सें.मी., सुंदर, स्मार्ट, अकेला भाई, ... व्यवसायरत व संपत्ति, उत्तम व शीघ्र विवाह हेतु ... वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5656, सरिता नई दिल्ली-110055.

मैथिल ब्राह्मण, 26, एम.ए., बी.एड., ... विद्यालय अध्यापिका, मंगली, सांवला रंग कन्या हेतु वर एवं 28, बी.काम., राष्ट्रीय बैंक लिपिक युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 5657, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, 27 वर्षीय, 165 सें.मी., एम.एससी., एलएल.बी., एस.ए.एस., राजपत्रित अधिकारी. चार अंकीय वेतन, गौरवर्ण, सुंदर युवक तथा उन्हीं की बहन, एम.ए., यू.जी.सी. स्कालरशिप प्राप्त, पीएच.डी. शोधरत, 22 वर्ष, 150 सें.मी. सुंदर, गुणवान बालिका हेतु क्रमशः प्रतिष्ठित सजातीय, कुलीन परिवार की गुणवान, सुंदर, गौरवर्ण, विनम्र, वधू एवं डाक्टर, इंजीनियर, लेक्चरर व उच्च वेतन प्राप्त अधिकारी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 5658, सरिता, नई दिल्ली-110055.

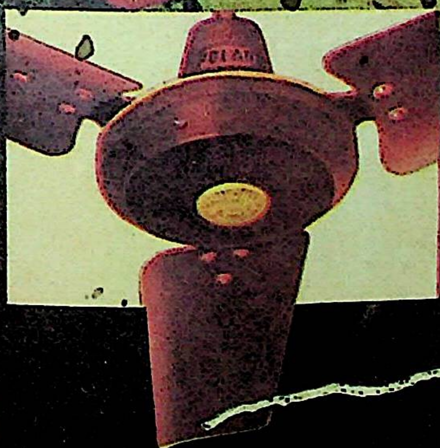
गोद विज्ञापन

ब्राह्मण दंपती अपनी एक साल की कन्या गोद देना चाहते हैं. लिखें: वि.नं. 5664, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार को एक साल या ... साल का बालक गोद लेना है. बालक व परिवार अग्रवाल होना चाहिए. शीघ्र लिखें: वि.नं. 5665, सरिता, नई दिल्ली-110055.

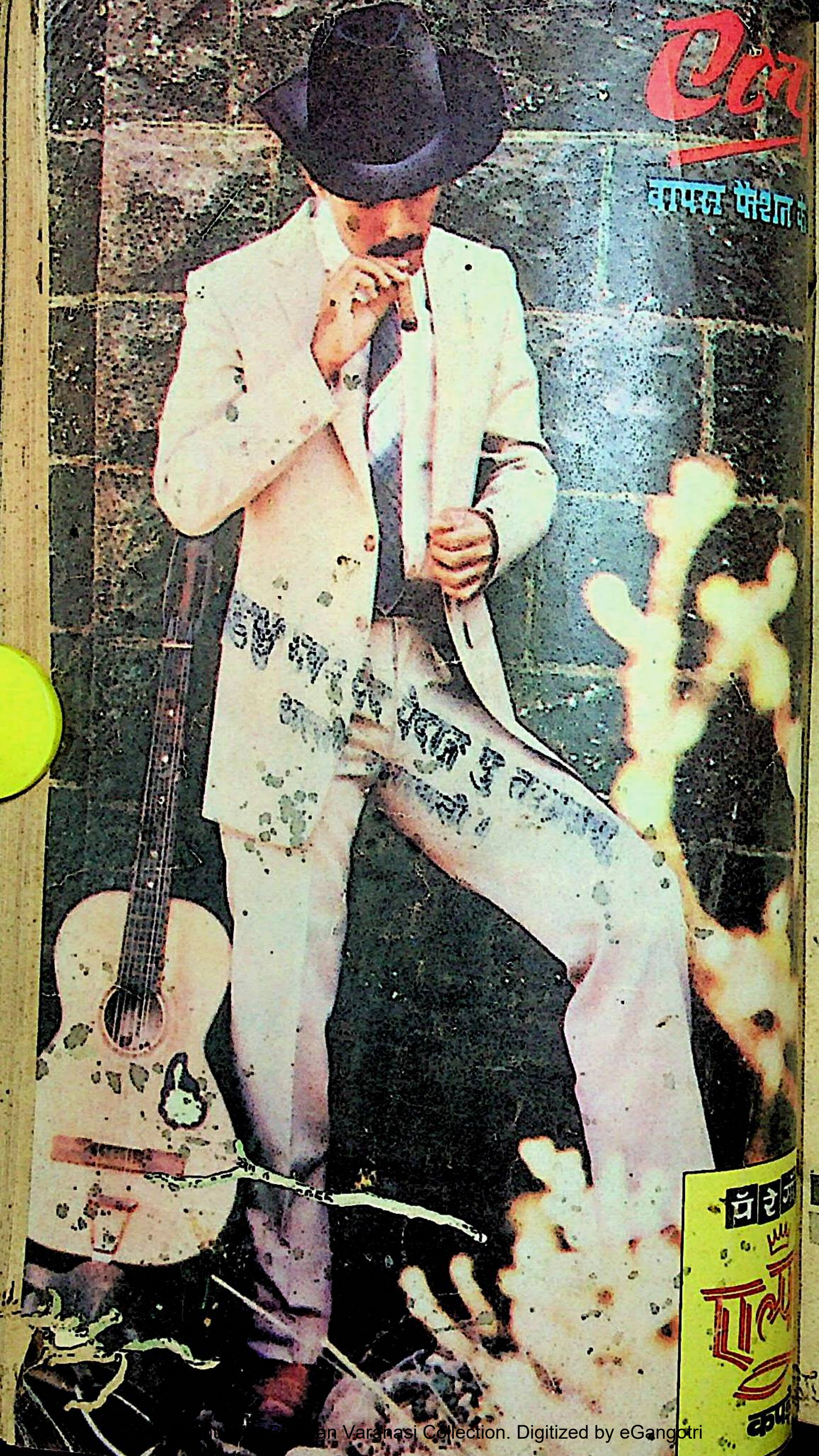
प्रिजरवेटिव/रसायन









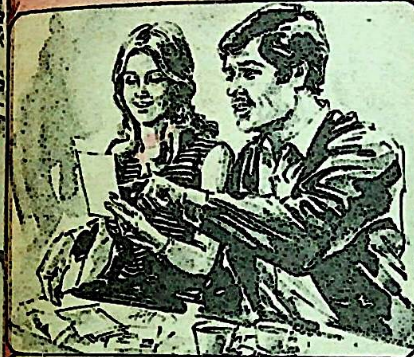

वाफ्स फैशन



जनवरी (प्रथम) 1983
अंक : 665

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पारिवारिक पत्रिका



कथा साहित्य

लेख

संपादक व प्रकाशक **विश्वनाथ**

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स.प. प्रा.लि., गाजियाबाद में मुद्रित..

संपादन, प्रकाशन, एजेंसी व ग्राहक विभाग : 3–ई, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.
बंबई कार्यालय : 79 ए, मित्तल चैंबर, नरीमन पाइंट, बंबई. फोन नं. 232409.
मद्रास कार्यालय : 6 एफ्स, खलील शीराज एस्टेट, पेंथनथन रोड, मद्रास. फोन नं. 88138.
व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
मूल्य : एक प्रति 3.50 रु., वार्षिक : 84 रु., विदेशों में (समुद्री डाक से) : 170 रुपए. यूरोप में (हवाई डाक से) : 400 रु. अमरीका में (हवाई डाक से) : 475 रु.

कविताएं



स्तंभ

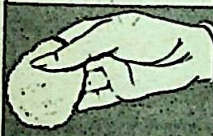
आवरण : जगमोहन

सरिता के पाठकों को नववर्ष की शुभकामनाएं

लड़केवाले गीता को देखने आनेवाले हैं, लेकिन...



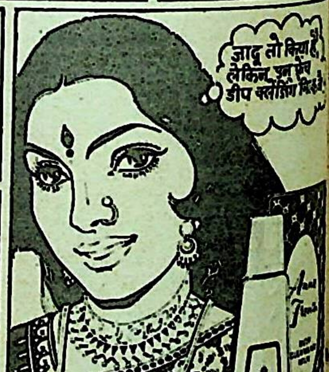














एन फ्रैंच डीप क्लेंज़िंग मिल्क से त्वचा की सफ़ाई, सुंदरता के संग

DCM-172



जब आपका गैस सिलिंडर आए तो याद रखें: लाल सिलिंडर का मतलब ख़तरा नहीं; इसका मतलब है चेतावनी !

आपके गैस सिलिंडर में एक बहुत ही ज्वलनशील लिक्विफ़ाइड गैस दबाव से भरी होती है. इसलिए जब आपका सिलिंडर बदला जा रहा हो तो सभी खुली आग और आग की लपटों को बुझा दें—सिगड़ी, हॉट प्लेट, दीया, अगरबत्ती और सिगरेट आदि. क्योंकि ज़रा सी चिनगारी से भी गैस आग पकड़ सकती है.

इसके अलावा, इस पर भी ध्यान दें कि सिलिंडर लाने वाला आदमी :

- मुरक्षा नट को खोलने मे पहले मिलिंडर वाल्व बंद कर दे जिममे गैम लीक न हो.
- मिलिंडर कॅप या वाल्व को खोलने के लिए हथौड़े आदि का उपयोग नहीं करें क्योंकि ऐसा करने मे वाल्व खराब हो मकता है जिममे गैम लीक होने लगेगी.
- हर बार प्रैशर रेग्युलेटर का रबर वॉशर बदल दे. घिसे-पिटे रबर वॉशर के कारण गैस लीक हो सकती है.
- साबुन के घोल मे सभी जोड़ों, कनेक्शन और ट्यूब आदि की जाँच कर ले जिसमे गैम लीक होने का पता चल जाए. गैम लीक होने पर साबुन के बुलबुले दिखाई देंगे.
- मिलिंडर बदलने के बाद बर्नर जलाकर देखे कि वे ठीक मे काम कर रहे हैं या नहीं.

याद रखिए, अगर सही ढंग से उपयोग करें तो कुकिंग गैस आज खाना पकाने का सबसे सुरक्षित साधन है. इसलिए थोड़ा ध्यान दीजिए. इसका दुरुपयोग नहीं कीजिए.

कोई भी कठिनाई हो तो अपने इंडेन वितरक या निकटतम इंडियनऑयल कस्टमर सर्विस सैल से सम्पर्क कीजिए.



Indane

इंडेन कुकिंग गैस

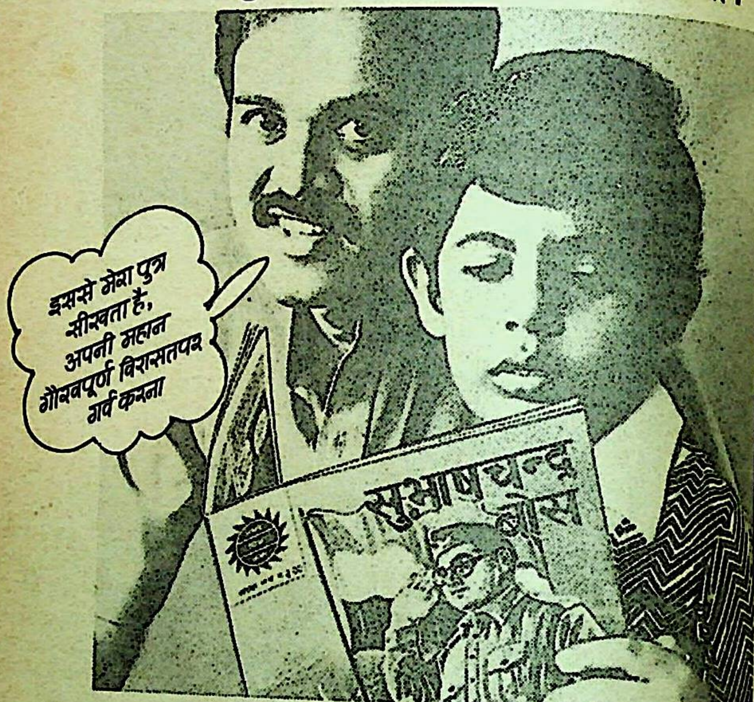


जनहित में इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा प्रकाशित

Shilpi IOCL 11/82 Hindi

अमर चित्र कथा

भारत के ऐतिहासिक, पौराणिक व लोक जीवन
अद्भुत, मनमोहक चित्र-कहानियाँ!



अमर चित्र कथा. हर बच्चे के लिये ज्ञान व मनोरंजन का भरपूर खज़ाना। भारत के प्राचीन गौरव को, पृष्ठ दर पृष्ठ, रंग व उमंग भरे चित्रों में साकार होते देखिए।

राम और रावण. कालिदास व कुरुक्षेत्र. मीराबाई. स्वामी विवेकानंद. कल्पना व कथावार्ताओं का अद्भुत संसार—युद्ध और वीरता की गौरवमयी गाथायें—अमर चित्र कथा के दो सौ सतहत्तर (२७७) अंकों में साकार। छः प्रांतीय भाषाओं के अलावा हिन्दी और अंग्रेजी में भी उपलब्ध।

अमर चित्र कथा। मनोरंजन के साथ साथ, इतिहास का ज्ञान—महान देश की महान विरासत पर गर्व की प्रेरणा—भूलते-बिसरते कल की गौरवमय याद।



अमर चित्र कथा

वितरक:

इंडिया बुक हाउस

बम्बई, नई दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास,
बंगलौर, हैदराबाद, पटना, त्रिवेंद्रम,

*नये मूल्य १ जनवरी १९८३ से



खालिस्तान के बाद सिख

खालिस्तान पर आप के विचार (सरित प्रवाह/दिसंबर/प्रथम) तर्कसंगत लगे. परंतु आप का यह प्रश्न कि खालिस्तान बनने पर पंजाब से बाहर रह रहे सुखी और समृद्ध सिखों का क्या होगा, न तो तर्कसंगत लगा, न ही इतिहाससंगत. पाकिस्तान बन जाने के बाद जैसे भारतीय मुसलमान भारत में रह रहे हैं, वैसे ही खालिस्तान बन जाने के बाद सिख भी अल्पसंख्यक बन कर और अधिक सुखी होंगे.

पाकिस्तान के निर्माण के बाद धर्मनिरपेक्षता का ढिंढोरा न पीट कर यदि मुसलमानों को निकाल दिया जाता, जैसे कि पाकिस्तान से हिंदुओं और सिखों को निकाल दिया गया था या कम से कम पाकिस्तान के समर्थकों को निकाल दिया जाता तो भारत में किसी भी धर्म के अनुयायियों को देश का और विभाजन करने की मांग करने की हिम्मत न होती. —अनंत कृपालाणी

*

महत्त्वपूर्ण स्वतंत्र आलोचना

आज जब लगभग सभी पत्रपत्रिकाएं महज चाटुकारिता करने में लगी हुई हैं, आप के द्वारा श्रीमती इंदिरा गांधी के संबंध में (सरित प्रवाह/नवंबर/द्वितीय) की गई स्वतंत्र आलोचना का विशेष महत्त्व है. व्यक्ति चाहे कोई भी हो, अगर वह किसी कारण आलोचना का पात्र बनता है तो उस की आलोचना होनी ही चाहिए. यही पत्रपत्रिकाओं का कर्तव्य भी है.

—उमेश ज्ञानचंदानी 'उम्मी'

*

कानून लागू करने से पहले

नकली दवाई विधेयक के बारे में (सरित प्रवाह/नवंबर/द्वितीय) यह स्पष्ट है कि मात्र कानून बनाना ही पर्याप्त नहीं है. सरकार को चाहिए कि यह कानून लागू करने से पहले इस का दुरुपयोग न होने के पहलुओं पर भी विचार करे.

इस प्रश्न को केवल सरकारी अधिकारियों पर ही न छोड़ कर नागरिक समितियां भी बना दी जाएं, ताकि ईमानदार दवाई विक्रेताओं के साथ अन्याय न हो सके.

—कुमार पवन

*

तकनीकी कालिजों में दान

दान ले कर प्रवेश देने वाले इंजीनियरिंग, मेडिकल एवं अन्य तकनीकी कालिजों की (सरित प्रवाह/नवंबर/प्रथम) जो हिमायत की गई है, उस से मैं सहमत नहीं हूं.

आप ने इसी संदर्भ में लिखा है कि शिक्षा का क्षेत्र भी तो पूर्णतः व्यापारिक है और इस से निकले छात्र भी तो वेतन या फीस (आप के अनुसार मुनाफा) लेते हैं. यह एकपक्षीय निर्णय है. इन के द्वारा की जाने वाली राष्ट्र की महत्त्वपूर्ण सेवा को गौण समझ लिया गया है. जाहिर है कि दान द्वारा प्रवेश पाने की प्रक्रिया को यदि जारी रहने दिया गया तो इस में वे ही अपना पैसा फूंकेंगे, जिन के पास प्रतियोगिता परीक्षाओं से हो कर प्रवेश पाने की योग्यता नहीं होगी.

आप ने नागरिक इंजीनियरिंग या मेडिकल कालिज खोले जाने का पक्ष लिया है. लेकिन जरा सोचिए, क्या इन से निकले छात्र मान्यता के अभाव में और सुखसुविधा में पले होने के कारण कम वेतन की सरकारी नौकरी करना पसंद करेंगे? अवश्य ही वे अपनी शिक्षा का लाभ किसी नागरिक कंपनी को ही पहुंचाएंगे. यहां यह उल्लेखनीय है कि 1976 में देश के 20 बड़े औद्योगिक घरानों की कुल संपदा 4,832 करोड़ थी, जो 1980 में बढ़ कर 7,611.92 करोड़ रुपए हो गई. क्या आप चाहते हैं कि देश की बचीखुची अर्थव्यवस्था भी उन के हाथों में सौंप दी जाए?

इसी अंक में प्रकाशित लेख 'दशहरा दीवाली विवाद' हिंदू धर्म के कथित आकाओं की हैरतअंगेज और हास्यास्पद स्थिति को दर्शाता है.

—सुनीलकुमार वर्णवाल

*

● बड़े घरानों की संपदा उन के मालिकों की नहीं है. मालिकों का स्वामित्व तो लगभग पांच प्रतिशत होता है. बाकी जनसाधारण द्वारा कंपनियों के हिस्से खरीदने से जमा होती है. वैसे भी इस 7,611.92 करोड़ रुपए में से कर्ज और देनदारी नहीं निकाली गई है. शुद्ध संपत्ति तो काफी कम होती है. —संपादक

*

स्वस्थ गायों को भी तो मारा जाता है

गोहत्या के बारे में आप ने (सरित प्रवाह/नवंबर/प्रथम) लिखा है कि मरणासन्न, बूढ़ी, बेकार गाय की हत्या करना उचित है. क्या आप यह बता सकते हैं कि केवल बूढ़ी, बेकार गायों की ही हत्या हो रही है, हृष्टपुष्ट, दूध देने वाली गायों की हत्या नहीं की जा रही है? —एम. सेतुपति

*

● इन हृष्टपुष्ट दूध देने वाली गायों को हत्या के लिए बेचता कौन है और क्यों? गाय अगर पवित्र पूजनीय 'माता' है तो पहले उस के खरीदने, बेचने पर पाबंदी लगाइए, उस के दान को, उस को संपत्ति मानने को अधर्म घोषित कीजिए. एक तरफ तो आप गाय को माता मानते हैं, दूसरी ओर गोदान को सब से बड़ा पुण्य मानते हैं. क्या माताओं को दान में देना, खरीदना, बेचना,

संपत्ति समझना सही है?

वैसे भी यदि कोई गाय अच्छी, काफी मात्रा में दूध देती हो तो उसे क्यों कोई कटने के लिए बेचेगा? मसल मशहूर है कि दूध देने वाली गाय की तो लात भी सही जाती है.

—संपादक

*

मशीन की जानकारी

मेरे लेख 'स्वेटर की बुनाई: घर बैठे कमाई' (नवंबर/द्वितीय) में कंप्यूटर वाली जिस मशीन का उल्लेख आया है, उस के विषय में बहुत से पाठकों ने जानकारी मांगी है.

स्वेटर बुनने की यह स्वचालित मशीन पहलेपहल जापान ने बनाई थी. जिस का ट्रेडमार्क—'ब्रदर निट मैटिक.' इसी नमूने की मशीन भारत में मैसर्स सिमैक ग्रुप (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, गुप्ता भवन, 4 गायवादी इंडस्ट्रियल एस्टेट, एस.वी.रोड, गोरे गांव (वेस्ट) बंबई—400062 ने तैयार की है. इस का मूल्य साढ़े पांच हजार रुपए के लगभग है. इस माडल का नाम ब्रदर—के.एच.—430 रखा गया है.

—मदन गुप्ता 'सपाटू'

*

गलत भविष्यवाणी

लेख 'नवें एशियाई खेल' (नवंबर/द्वितीय) में लेखक ने भविष्यवाणी की कि ये खेल इस शताब्दी के सब से 'फ्लाप' खेल साबित होंगे.

लेकिन एशियाई खेलों का पूरा आयोजन एकदम उत्कृष्ट रहा. खेल गांव में खिलाड़ियों को जो सुविधाएं मिलीं, वे काबिले तारीफ थीं. किसी खिलाड़ी को कोई शिकायत का मौका नहीं मिला. भारत का प्रदर्शन भी इन खेलों में काफी अच्छा रहा. उस ने अभी तक 13 स्वर्ण पदक जीते हैं जब कि लेखक को एक पदक की भी आशा नहीं थी. मालूम पड़ता है कि लेखक ने किसी राजनीतिक प्रेरणा से यह लेख बिना सोचेसमझे लिख डाला था.

—मनोज यादव

*

लेख 'नवें एशियाई खेल' पढ़ कर बेहद दुख हुआ. एशियाई खेलों के दौरान आप को ऐसा लेख प्रकाशित कर के खिलाड़ियों का मनोबल नहीं गिराना चाहिए था.

'चंचल छाया' स्तंभ (नवंबर/द्वितीय) में फिल्म 'शक्ति' की समीक्षा में लिखा है कि अश्विनीकुमार की बहादुरी की फिल्म में काफी चर्चा की गई है, लेकिन 20 साल के अरसे में वह तस्करों को नहीं पकड़ पाता. अगर वह उन तस्करों को पकड़ लेता तो बाकी फिल्म में क्या दिखाया जाता?

—अमित विसारिया

*

मुझे खेलों में कोई रुचि नहीं है, फिर भी जो कुछ एशियाई खेलों के सिलसिले में दिल्ली में बन गया है वह हमारी अगली पीढ़ियों के लिए उन के बुजुर्गों की देन होगी.

चाहे इस पर, 1,000 करोड़ से भी बढ़कर [illegible] हुआ हो, पर प्रत्यक्ष रूप में किसी भी एक आदमी [illegible] इस का कोई बोझ नहीं है. ये खेल असफल भी [illegible] क्या हो जाता? स्टेडियम तो बेकार नहीं जाएंगे. [illegible] के विचारों से सहमत होने का अर्थ है कि कभी भी [illegible] पर कोई इमारत यादगार के तौर पर नहीं बन [illegible] ताजमहल को ही ले लें. उसे बनाने में न जाने कि[illegible] जानें और रुपया चला गया, पर आज उस की [illegible] एवं विशालता को देख सभी दांतों तले उंगली दबा[illegible] हैं.

—विनयकुमार [illegible]

*

इंदिरा कांग्रेस : प्राइवेट लिमिटेड कंपनी भी नहीं

लेख 'इंदिरा कांग्रेस : पार्टी नहीं, एक अनि[illegible] प्राइवेट लिमिटेड कंपनी' (नवंबर/द्वितीय) में [illegible] विचार गलत है. प्राइवेट लिमिटेड कंपनी अव्व[illegible] अनियंत्रित होती ही नहीं, दूसरे, उस के कुछ [illegible] निर्धारित व सर्वमान्य नियम तो होते ही हैं. किंतु इं[illegible] कांग्रेस का तो कोई नियम ही नहीं है.

लेखक का यह मत सही है कि श्रीमती इं[illegible] गांधी हर काम स्वयं ही करती हैं और किसी को [illegible] बढ़ने देना ही नहीं चाहतीं. अपनी चौधराहट के [illegible] ही हर मामले में अपनी असफलता की झेंप मिटाने [illegible] लिए वह यदाकदा प्रदेश के मुख्य मंत्रियों को [illegible] कह कर उन्हें पदमुक्त कर देती हैं. इसी [illegible] स्वाभिमानी, समझदार व्यक्ति उन से अलग ही [illegible] हैं. और जो भूलेभटके कभी उन के साथ हो जाते [illegible] उन्हें वह स्वयं ही झटका दे कर अलग कर देती [illegible]

—'आवारा' [illegible]

*

लोगों की मेहनत पर पंडों के गुलछर्रे

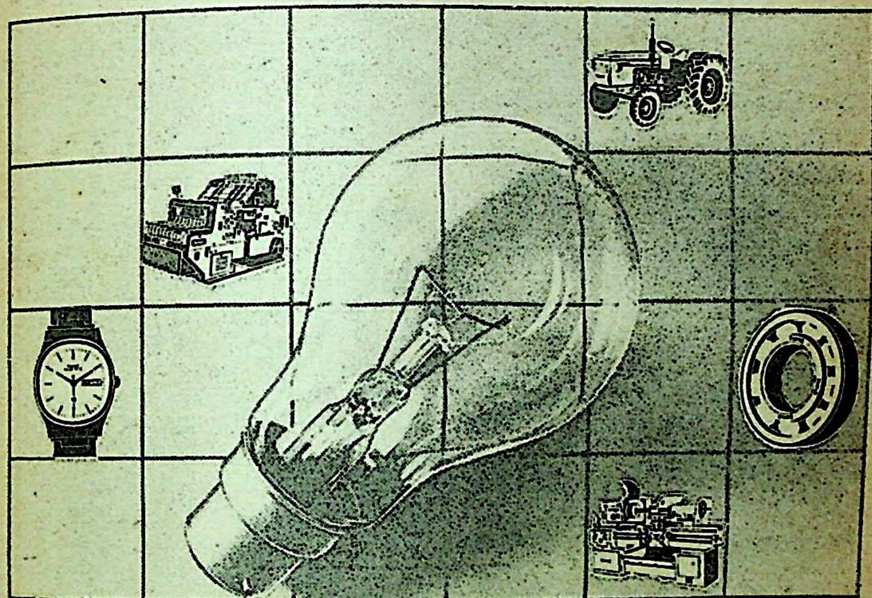
मैं हाल ही में मथुरा, वृंदावन, हरिद्वार [illegible] धार्मिक स्थानों की यात्रा कर के लौटा हूं. मैं ने वहां [illegible] कुछ देखा, उस से मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि [illegible] 'श्री वृंदावन धाम' (नवंबर/प्रथम) में वहां की [illegible] को पाठकों के सामने बड़े अच्छे ढंग से रखा गया है. [illegible] स्थानों के पंडे यात्रियों से हर संभव तरीके से [illegible] बटोरने का प्रयत्न करते हैं. मेरा विश्वास है कि [illegible] के जो पाठक उस में छपने वाले लेखों को ध्यान से [illegible] हैं, वे कभी भी इन लोगों के झांसे में नहीं आ स[illegible]

सच तो यह है कि लोगों के अंधविश्वास के का[illegible] ही ये निठल्ले और निकम्मे लोग समाज पर बोझ [illegible] हुए हैं. जब तक लोगों में चेतना नहीं आएगी, ये पंडे [illegible] तरह गुलछर्रे उड़ाते रहेंगे. अगर लोग उन के झांसे [illegible] नहीं आएं तो इन निठल्ले लोगों को मेहनत करने [illegible] मजबूर होना पड़ेगा.

मुझे इस बात की खुशी ही नहीं, बल्कि गर्व [illegible] कि सरिता एक रचनात्मक आंदोलन चला कर [illegible] को जागरूक बनाने में प्रयत्नशील है.

—अशोक [illegible]

जब बल्ब निर्माण का मज़बूत आधार हो...
एच एम टी की अचूक तकनीक...
तब आप क्या पाते हैं ?

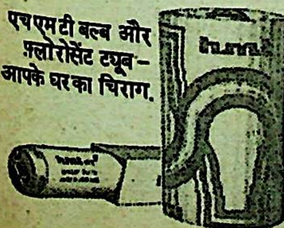


उज्जवलतम प्रकाश.

आज, एचएमटी यानी अचूक इंजीनियरिंग का एक नया नाम–मशीन टूल्स, घड़ियों, प्रिंटिंग मशीन और बेअरिंग्स निर्माण के अग्रणी निमार्ता. एचएमटी के हर बल्ब में मौजूद है यही अचूकता और विश्वसनीयता.

एच एम टी, केवल २८ वर्षों में ही, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में घड़ी, ट्रैक्टर और मशीन टूल्स निर्माण में अचूकता, सही माप और विश्वसनीयता के लिए अपनी धाक जमा चुके हैं. एच एम टी ने, पश्चिमी जर्मनी, इंग्लैण्ड और अमरीका जैसे देशों को अपने उत्पादनों का निर्यात कर, निर्यात क्षेत्र में भी एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है. एच एम टी के हर बल्ब पर एच एम टी की वही परम्परागत क्वालिटी की मोहर अंकित है. एच एम टी बल्ब यानी सौ फ़ी सदी एच एम टी बल्ब. क्योंकि बल्ब निर्माण प्रक्रिया के हर चरण में उत्तम क्वालिटी के लिए, बल्ब का हर पुर्ज़ा एच एम टी प्लांट में ही तैयार किया जाता है. एच एम टी ही देश के एकमात्र ऐसे निर्माता हैं जो लेम्प निर्माण की मशीनें भी तैयार करते हैं.

एच एम टी बल्ब और फ़्लोरोसेंट ट्यूब– आपके घर का चिराग.





उज्जवलतम प्रकाश.

लेखक को बधाई

लेख 'सस्ता व स्वादिष्ट खाना' (नवंबर/प्रथम) में जिस तरह अंतरराज्यीय बस अड्डे पर होटल वालों द्वारा की जा रही खुली लूट का भंडाफोड़ किया है, उस के लिए मेरी बधाई स्वीकार करें. —उमेश बेरीवाल

*

2,000 वर्ष गुलाम क्यों रहे?

समयसमय पर सरिता में प्रकाशित आप के इस प्रश्न के उत्तर में कि हम 'हिंदू 2,000 वर्ष तक गुलाम क्यों रहे,' मैं यह कहना चाहूंगा कि इस का मुख्य कारण मनुस्मृति और रामचरितमानस थे.

यों तो हम हिंदुओं में जाति प्रथा का उदय लोगों द्वारा विभिन्न पेशों को अपनाने के कारण हुआ, किंतु जिस जाति का समाज में दबदबा रहा, वह अपने को श्रेष्ठ मानने लगा और दूसरे को हीन. बाद में तुलसीदास ने भी 'ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी' कह कर इस भेदभाव को बढ़ावा दिया. इसी कारण आज हिंदू समाज में स्त्रियों एवं शूद्रों के साथ पशुतुल्य व्यवहार हो रहा है.

मैं सन 1942 से भारत दर्शन कर रहा हूं. इस बीच मेरा संपर्क सभी प्रकार के लोगों से हुआ है और मैं अनुभव के आधार पर यह कह सकता हूं कि आज भी सारा देश जातिवाद से उत्पन्न ऊंचनीच की भावना के कारण विद्रोह के आग से धधक रहा है. इस का अंत किस रूप में होगा? कहीं फिर गुलामी में तो नहीं? यह गुलामी हमें कहां ले जाएगी, सोचता हूं तो रोंगेटे खड़े हो जाते हैं. —प्रयागनारायण विशारद

*

दोष यात्रियों का भी है

सरिता का 'दिल्ली पर्यटन विशेषांक' (नवंबर/प्रथम) बहुत ही पसंद आया. सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी सरिता के अलावा कोई और पत्रिका दे ही नहीं सकती.

लेख 'रवैया रेल वालों का' (नवंबर/प्रथम) में सारा दोष रेलवे वालों को ही दिया गया है. असल में जितना दोष रेल वालों का है, उतना ही यात्रियों एवं व्यापारियों का भी है. अगर सभी लोग यह तय कर लें कि वे न तो गलत कार्य करेंगे और न करने देंगे तो हम ही रेलवे वालों को गलत काम करने को उकसाते हैं जैसे रेलवे वालों को गलत काम करने को उकसाते हैं. जैसे कहीं का किराया चार रुपए है तो टिकट कलक्टर को दो रुपए दे कर सफर करते हैं. इस से रेलवे को नुकसान होता है. अगर हम ने टिकट लिया हुआ हो तो भ्रष्ट से भ्रष्ट रेलवे कर्मचारी भी कुछ नहीं कर सकता.

—भुवनेशचंद्र शर्मा

*

सवर्ण अपराधियों की जाति का उल्लेख क्यों नहीं?

इस बारे में तो कोई दो राय नहीं हो सकती कि जो भी व्यक्ति देश की संपत्ति को किसी तरह से हानि पहुंचाता है, वह एक घृणित कार्य करता है, उस की निंदा की जानी चाहिए.

लेख 'रवैया रेल वालों का' में एक चोरी की घ[illegible] का जिक्र किया गया है, जिस में नावां स्टेशन [illegible] पारसल गोदाम से माल चोरी करने में एक ठेकेदार, [illegible] हरिजन तथा एक चौकीदार को अपराधी बताया [illegible] है. लेखक ने हरिजन का पद न लिख कर हरिजन [illegible] लिखा है जब कि ठेकेदार और चौकीदार को [illegible] व्यवसाय और पद से संबोधित किया है, उन की [illegible] या धर्म नहीं लिखा, क्योंकि शायद वह उन की [illegible] धर्म को बदनामी से बचाना चाहता था.

जो लोग इस देश को खोखला कर रहे [illegible] हरिजन हरगिज नहीं हैं. फिर भी अगर कोई [illegible] छोटी से भी गलती करता है तो उसे 'हरिजन' [illegible] प्रकाश में लाया जाता है, जब कि किसी [illegible] ऊंची जाति का आदमी इस देश को चाहे [illegible] नुकसान पहुंचाए, उस की जाति या संप्रदाय [illegible] छिपाने की कोशिश की जाती है या फिर उस का [illegible] व्यवसाय ही लिखा जाता है.

—एस.एस. [illegible]

*

चुनौतीपूर्ण सामग्री

लेख 'चमत्कारों से इलाज' (नवंबर/प्रथम) [illegible] लेखक ने अंधविश्वासों के सम्मुख एक चुनौती[illegible] सामग्री प्रस्तुत की है.

एक बार मैं बीमार हो गया. 15-20 दिन तक [illegible] न होने पर मेरे ही बड़े भाई साहब जो पढ़ेलिखे [illegible] अंधविश्वासी हैं, मुझे एक मंदिर में ले गए. वहां [illegible] रात्रि जागरण रखा गया एवं भोपों द्वारा बताई [illegible] सामग्री (जो करीब 125 रुपए की थी) मंगा कर [illegible] चढ़ाया गया. जब मैं ने इस का विरोध किया तो [illegible] मुझ से नाराज हो गए. इलाज में रुकावट आ जाने [illegible] और अस्वस्थ हो गया. इस पर ये लोग कहने लगे कि [illegible] तो देवता का ही कोप है. मगर मैं ने एक अच्छे [illegible] इलाज कराया तो धीरेधीरे मेरी हालत सुधरती [illegible]

—परशुराम [illegible]

*

मन को छूने वाली कहानी

सरिता में अकसर ऐतिहासिक कहानियां [illegible] प्रकाशित होती रहती हैं, पर मैं इन्हें न के बराबर [illegible] पढ़ता हूं. परंतु इस बार जब कहानी 'पराजय [illegible]' (नवंबर/प्रथम) पढ़नी शुरू की तो पूरी पढ़ कर [illegible] छोड़ी. यों तो मैं ने बहुत सी प्रेम कहानियां पढ़ी हैं [illegible] ऐसी नहीं. यह कहानी मन में कहीं गहरे तक [illegible] छाप अंकित कर गई है. कहानी का अंतिम अनुच्छेद [illegible] सर्वश्रेष्ठ है. प्रेम का अछूता दर्द, अनोखा प्रतिशोध [illegible] में चित्रित किया गया है.

इसी अंक में आप ने 'निकाह' फिल्म के चार [illegible] दिए, जिस पर बहुत प्रसन्नता हुई. पर मैं ने समीक्षा [illegible] पढ़ी, क्योंकि मैं फिल्म देखने के पश्चात ही [illegible] पढ़ता हूं. तभी पता चलता है कि मेरी और [illegible] राय कहां तक मिलती है. —[illegible]

दिल्ली पर्यटन विशेषांक: कुछ प्रतिक्रियाएं

दिल्ली पर्यटन विशेषांक (नवंबर/प्रथम) पढ़ा. इस में दिल्ली के विषय में दी गई जानकारी निश्चय ही दिल्ली की यात्रा करने वाले लोगों के लिए हमेशा सहायक सिद्ध होगी.

दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास आदि महानगरों में बाहर से आने वाले यात्रियों को धोखाधड़ी, लूटपाट और ठगी का सामना करना पड़ता है. इस विशेषांक को पढ़ कर कम से कम आम पाठक को दिल्ली में इन का तो सामना नहीं करना पड़ेगा. —प.म. लाल

*

दिल्ली पर्यटन विशेषांक इतना अच्छा था कि काफी रुपए खर्च करने पर भी ऐसी महत्त्वपूर्ण व बेबाक जानकारी प्राप्त नहीं हो सकती थी. भारत में सैकड़ों पत्रिकाओं के पचासों विशेषांक निकलते हैं, परंतु यह बहुत ही अच्छा लगा. एक कमी यह खटकी कि आप ने 50 रुपए से कम किराए वाले होटलों के पूरे पते व फोन नंबर नहीं दिए. —पूनमसिंह सोलंकी

*

नवें एशियाई खेलों के अवसर पर दिल्ली के बारे में इतनी सही जानकारी देने के लिए धन्यवाद. कृपया ऐसी ही जानकारी अन्य महानगरों एवं पर्यटन स्थलों के बारे में भी दें.

—शिवराजसिंह कुशवाहा

*

दिल्ली पर्यटन विशेषांक पढ़ कर बहुत दुख हुआ कि सरिता जैसी पत्रिका द्वारा भ्रष्टाचार और कालाबाजारी को प्रोत्साहन दिया जा रहा है.

दिल्ली में मनोरंजन के साधनों पर प्रकाश डालते हुए आप ने कालाबाजारी से सिनेमा टिकट प्राप्त करने के सभी साधनों और उन की दरों के बारे में भी जानकारी दी है. आप ने कैबरे जैसे अश्लील नृत्य को देखने की जो राय दी है, उस के लिए भी आप को धन्यवाद. —रवि पोद्दार

*

यह जानकारी जानबूझ कर दी गई है, ताकि लोग सोचसमझ कर ही सिनेमा देखने जाएं. —संपादक

*

'उपनिषदों की भूलभुलैया:' कुछ प्रतिक्रियाएं

लेख 'उपनिषदों की भूलभुलैया' (अक्तूबर/द्वितीय) पढ़ा. इस भूलभुलैया के तीन कारण हैं. एक तो सभी उपनिषदों का कोई एक ही लेखक या वक्ता नहीं है. दूसरे परमात्मा या ब्रह्म या तुरीय अवस्था एक ऐसी शक्ति और सूक्ष्म अवस्था है, जिसे सिर्फ विरोधाभासी वक्तव्यों द्वारा ही किया जा सकता है. तीसरे जगत का सारा अस्तित्व ही अनाम (चेतन और अचेतन दोनों से परे) शक्ति का विस्तार है, इसलिए व्याख्या की समस्या और भी जटिल हो जाती है.

यह उपनिषदों के रचनाकारों का कमाल है, जिन्होंने पहले तप और ध्यान से इस अस्तित्व के मूल सत्य को जानने का प्रयत्न किया और फिर उसे कहने का प्रयत्न किया. यदि लेखक के अनुसार वे इसे स्पष्ट नहीं कर सके तो भी वे इस प्रत्यक्ष और यथार्थ कहे जाने वाले जगत से भी सूक्ष्म अस्तित्व और शक्तियों की ओर संकेत करने में अवश्य सफल रहे हैं, जिन का उन्होंने अनुभव किया था.

कुछ ऋषियों ने यह भी समझा था कि ब्रह्म को पूरा जानना संभव नहीं है और न ही उसे किसी भी निश्चित तप या योग सिद्धांत द्वारा पाया जा सकता है. परंतु इस के बावजूद श्रेष्ठ बुद्धि और निरंतर ध्यान के अलावा कोई अन्य मार्ग भी उन्हें नजर नहीं आया.

बरसों से मैं धर्मपुस्तकों का अध्ययन करता आ रहा हूं, इसलिए मैं यह कह सकता हूं कि यदि उपनिषदों में सिर्फ शब्दजाल ही है तो फिर दुनिया की किसी और धर्म पुस्तक और दर्शन शास्त्र में भी इस के सिवा कुछ नहीं. उन में कोई सत्य नहीं है. ऋषियों के कहे सत्य को यदि जानना है तो लेखक को किसी पूर्ण गुरु के पास रह कर साधना करनी चाहिए. फिर वह देखेंगे कि क्या अनुभव हो सकता है. यदि कुछ भी अनुभव न हो तो फिर वह कह सकते हैं कि उपनिषद सिर्फ शब्दजाल हैं. स्वयं उपनिषदों में लिखा है कि केवल अधिक पढ़ाने या सुनने से आत्मा या ब्रह्म को प्राप्त नहीं किया जा सकता. —धर्मपाल

*

'उपनिषदों की भूलभुलैया' लेख का लेखक स्वयं भूलभुलैया में पड़ा है, अतएव उन्हें सभी जगह भूलभुलैया नजर आती है.

लेखक ने उपनिषदों को जीवन की समस्याएं हल करने में असफल पाया है. लेखक महोदय ने यह कैसे माना कि उपनिषद हमारी जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए हैं? यह मान्यता भी उन्हीं की है और इस के विरुद्ध भी वह ही बोल रहे हैं, क्योंकि यदि अन्य लोगों की भी यह मान्यता होती तो जिस प्रकार लेखक ने उपनिषद पढ़े हैं, उसी प्रकार अन्य जनता भी उन्हें पढ़ती.

उपनिषदों में तो जो है सो है, पाठक की आंख पारखी है तो वह सत्य बात देख लेगी. लगता है लेखक को जीवन का अनुभव टुकड़ों में है और वह अपनी बुद्धि के बल पर समग्र जीवन को परखा हुआ समझ कर अपनी बात कह रहे हैं. जीवन बुद्धि से ही नहीं जाना जा सकता, बुद्धि तो केवल व्यवस्था देती है. जीवन का सत्य तो अनुभव और परख से ही ज्ञात किया जा सकता है.

जीवन में संगीत, कविता, गुनगुनाहट, मनोरंजन कौन सी समस्याएं हल कर पाते हैं?

उपनिषद जीवन की अंतिम समस्याओं का समाधान हैं. वे अनुभव में पके फल हैं. सार स्वरूप हैं. जिन्होंने सभी प्रकार की भौतिक, मानसिक, आर्थिक समस्याएं हल कर ली हैं उन की भी समस्याएं हैं. —स्वामी प्रेम मौन

क्योंकि फ़ैरेक्स, मुन्नों के जल्द और सर्वांगीण विकास के लिये, अधिक पौष्टिक ठोस आहार है.

आपके मुन्ने के विकास के लिये फ़ैरेक्स में भरपूर प्रोटीन है.

शिशुको प्रोटीन की कमी से बचाने के लिये 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' ने डिब्बे-बंद ठोस आहारों को तैयार करने और उनमें प्रोटीन की मात्रा के बारे में कुछ नियम बनाये हैं. फ़ैरेक्स के आहार प्रोटीन से भरपूर होते हैं. प्रोटीन आपके मुन्ने के विकास के लिये बहुत ही जरूरी है.

फ़ैरेक्स में स्वस्थ खून के लिये अतिरिक्त आयरन है.

"जन्म के समय बच्चे को माँ से जो आयरन भंडार प्राप्त होता है वह जन्म के बाद धीरे-धीरे घटने लगता है. हालाँकि दूध एक अच्छा आहार है फिर भी आयरन की कमी के कारण यह अपने आप में पूर्ण आहार नहीं है. इसीलिये बच्चे को आयरन वाले ठोस आहार चाहिये."

डॉ. सुभाष सी. आर्य

फ़ैरेक्स में अधिक आयरन है जो मुन्ने के स्वस्थ खून, उसकी प्रतिरोधक क्षमता, उसके स्वास्थ्य और समुचित विकास के लिए बहुत ही जरूरी है, इसीलिये, किसी भी अन्य डिब्बे-बन्द ठोस आहारों के मुक़ाबले फ़ैरेक्स में आयरन की मात्रा अधिक है. दाँत और हड्डियों के विकास के लिये आपके मुन्ने को चाहिये कैल्शियम और फ़ॉस्फ़ोरस.

फ़ैरेक्स में कैल्शियम और फ़ॉस्फ़ोरस सही अनुपात में हैं, जो दाँत और हड्डियों के लिये बहुत ही ज़रूरी है.

लेकिन उसके लिये ये तभी लाभदायक सिद्ध होंगे जब कि ये २:१ के अनुपात में हों. फ़ैरेक्स में आप के मुन्ने के स्वस्थ हड्डियों और मजबूत दाँतों के लिये जरूरी ये दोनों तत्व आदर्श अनुपात में हैं.

और फ़ैरेक्स आसानी से पचने लायक है.

मुन्ने की कोमल पाचन शक्ति के अनुरूप फ़ैरेक्स को विशेष रीति से बनाया गया है.





डॉक्टरों की सिफ़ारिश है-

फ़ैरेक्स®

ग्लैक्सो उत्पादन

CASGLF-39-174 HIN



अरित प्रवाह

एशियाई खेलों के समापन समारोह में भारत के उत्तर पूर्वी राज्य अरुणाचल प्रदेश का एक लोक नृत्य पेश किया गया था. इस पर कम्युनिस्ट चीन की सरकारी समाचार एजेंसी ने आपत्ति की है कि इस राज्य को चीन ने मान्यता नहीं दी है, इसलिए इस जगह के नृत्य पेश कर के भारत इस क्षेत्र को भारत का अंग मान कर भारतचीन सीमा विवाद को उलझा रहा है.

इस विषय में यह याद रखने वाली बात है कि 1962 में चीन ने इस क्षेत्र में हमला किया था और भारत की काफी जमीन पर कब्जा कर लिया था. यह भूमि अभी भी चीन के अधिकार में है और भारतचीन सीमा विवाद अभी भी उलझा पड़ा है.

एशियाई खेलों में चीनी खिलाड़ियों द्वारा शानदार प्रदर्शन करने और स्वर्ण, रजत व कांस्य पदकों में प्रथम स्थान पाने पर भारत में चीन के प्रति जो सद्भावना पैदा हुई थी, उस पर चीन की सरकारी समाचार एजेंसी की इन दोतीन पंक्तियों की खबर ने पानी फेर दिया है.

वैसे भी खेलों में, नृत्यों में, राजनीति का समावेश गलत है. फिर अभी भी अरुणाचल प्रदेश में भारत सरकार का शासन तो है ही, हर मानचित्र में यह क्षेत्र भारत का अंग दिखाया जाता है. हर पुस्तक में इस का जिक्र है. फिर यकायक यह आपत्ति करने से क्या लाभ?

पिछले दिनों अरुणाचल विधान सभा के अध्यक्ष को चीन यात्रा के लिए चीन ने वीजा नहीं दिया था, पर बाद में आपत्ति वापस ले ली थी.

जो भारतीय सद्भावना शिष्टमं[...] चीन जा रहा था, उसे अब भारत सरका[...] रोक दिया है. सीमा विवाद को सुलझाने [...] जो प्रयत्न किए जा रहे थे, उन को भी इन [...] बातों से अवश्य धक्का लगा है.

वास्तविकता यह है कि कम्युनि[...] आज की सब से बड़ी साम्राज्यवा[...] विचारधारा है. पूंजीवादी देश तो यह [...] 1947 में छोड़ चुके, पर उन की जगह [...] कम्यूनिस्ट देशों ने ले ली है.

रूस ने एस्टोनिया, लिथुआनि[...] लेटविया आदि बाल्टिक देशों पर क[...] किया हुआ है, पोलैंड का आधा हिस्सा ह[...] कर रूस में मिला लिया है. पूर्वी यूरोप [...] उस का आधिपत्य है. अफगानिस्तान में [...] के एक लाख से ऊपर सैनिक अफगानों [...] कुचलने में लगे हैं— पौने दो करोड़ [...] आबादी में से 30 लाख से ऊपर अफ[...] शरणार्थी के रूप में पाकिस्तान में ही गु[...] कर रहे हैं.

चीन ने भी तिब्बत पर हमला कर [...] उसे अपने साम्राज्य में मिला लिया है, भा[...] की 14,000 वर्ग मील से अधिक भूमि ह[...] ली है तथा उस के और भी दावे [...] विएतनाम पर भी उस ने धावा बोला [...] (यद्यपि विएतनाम भी कम्यूनिस्ट है) औ[...] मंगोलिया से सीमा पर रोज झगड़ा होता [...]

इन दोनों को अगर अमरीका का ड[...] होता तो रूस सारे यूरोप व मध्य एशिया [...] और चीन सारे दक्षिणपूर्व एशिया औ[...] शायद आधे भारत को हड़प लेता.

इस के अलावा संसार के लगभग ह[...] देश में रूस और चीन द्वारा समर्थि[...]

राजनीतिक दल काम कर रहे हैं जिन का मुख्य उद्देश्य स्थापित राज्य सत्ता को गिरा कर अपने आकाओं की सत्ता को स्थापित करना है.

भारत में चीन समर्थक दल कम्यूनिस्ट पार्टी आफ इंडिया (मार्क्सवादी) है. एशियाई खेलों में नृत्यों पर चीन की आपत्ति पर इस दल की प्रतिक्रिया इन पंक्तियों के लिखते समय तक नहीं आई है. देखें, यह दल क्या कहता है. इस दल के एक प्रमुख नेता श्री प्रमोद दासगुप्त की मृत्यु अभी हाल में चीन की राजधानी बीजिंग में हुई थी जहां वह अपना इलाज कराने गए थे. (भारतीय कम्यूनिस्ट नेताओं को जब भी कोई बीमारी होती है तो वे सीधे मास्को या बीजिंग भागते हैं!)

*

इराक ईरान युद्ध से और किसी को नहीं तो इराकी महिलाओं को तो कुछ आजादी मिली है. इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन ने ईरान के 'मुल्लाए आजम' खुमैनी की नीतियों के विपरीत महिलाओं को घरों और इसलामी परदे से बाहर कर दिया है. 18 से 30 वर्ष के इराकी पुरुष या तो लड़ाई में मोर्चे पर हैं या सेना के अन्य विभागों में काम कर रहे हैं. उन की जगह महिलाओं ने ले ली है और कुछ तो हवाई जहाज भी चला रही हैं.

राजधानी बगदाद में सरकारी कार्यालयों में 75 प्रतिशत महिला कर्मचारी हैं, काफी संख्या में अफसर और अधिकारी भी वे ही हैं.

यद्यपि पश्चिमी एशिया के तेल उत्पादन से अमीर बने मुसलिम देशों में मजदूरों और कार्यकर्ताओं की बहुत कमी है, फिर भी इन देशों के शासकों ने बजाए महिलाओं को काम पर लगाने के बाहर से—मुख्यतः भारत, पाकिस्तान, कोरिया व इंडोनेशिया से—मजदूर और कारीगर मंगाने मंजूर किए, जिस के कारण अपनी तेल की आमदनी का काफी बड़ा भाग इन विदेशियों को देना पड़ रहा है.

केवल इसलाम के ही नहीं, लगभग सभी धर्मों के धंधेबाजों ने नारी की भर्त्सना की है और उसे दबा कर, ढक कर रखा है. सभी धर्म नारी को नरक की खान मानते हैं—यद्यपि इन धर्मों के संचालक नारी का पूरी तरह उपभोग करने में कभी नहीं चूकते.

पश्चिमी उदार विचारधारा से प्रभावित हो कर और मोहनदास कर्मचंद गांधी जैसे नेताओं के कारण हिंदू समाज तो अपनी स्त्रियों पर से एक के बाद दूसरा प्रतिबंध उठा रहा है, किंतु मुसलिम मुल्ला और धर्म के नाम पर धर्म की सहायता से अपनी सत्ता कायम रखने के उद्देश्य से ईरान, पाकिस्तान और सऊदी अरब जैसे देशों के शासक इन देशों की महिलाओं ने जो कुछ उन्नति की थी, उसे नष्ट कर के फिर उन्हें बुरके और घर की चारदीवारी में कैद करने में होड़ लगा रहे हैं.

*

जनता पार्टी के नेताओं ने इंदिरा कांग्रेस पर आरोप लगाया है कि वह एकाधिकारी पूंजीपतियों को समर्थन देने वाली संस्था है—यानी उन के पैसे पर चलती है.

पर क्या जनता पार्टी के नेता लोग यह बताने का कष्ट करेंगे कि स्वयं उन की रोजीरोटी, हवाई जहाजों द्वारा किए जाने वाले दौरों, कार्यकर्ताओं के वेतनों, जलूसों और सभाओं, प्रचार और चुनावों के लिए पैसा कहां से आता है? क्या ये सब नेता चरखा कात कर अपना या अपनी पार्टी का खर्च चलाते हैं?

विधान सभा की एक साधारण सीट के चुनाव पर लगभग 10 लाख और संसद की सीट पर 20-25 लाख से एक करोड़ रुपया लागत आती है. यह रुपया कहां से आता है? चार आने वार्षिक चंदा दे कर सदस्य बनने वालों से?

वास्तविकता तो यह है कि सारे (कम्यूनिस्टों सहित) राजनीतिबाज व्यवसायियों, उद्योगपतियों से चंदा वसूल

कर के अपना धंधा चलाते हैं और यह चंदा हमेशा, बिना अपवाद के, कालाधन होता है, क्योंकि कानूनी रूप से किसी कंपनी को भी किसी राजनीतिक दल को धन देना मना है.

इसलिए समय आ गया है कि राजनीतिबाज रोज सुबह उठ कर पूंजीपतियों, उद्योगपतियों और व्यापारियों को कालाबाजारी, मुनाफाखोरी और जमाखोरी के लिए गालियां देना बंद करें, क्योंकि इन सब तथाकथित जुर्मों के बिना राजनीतिबाजों की रोजीरोटी एक दिन भी नहीं चल सकती.

वास्तव में कालाबाजारी, मुनाफाखोरी और जमाखोरी के जन्मदाता स्वयं ये राजनीतिबाज ही हैं. इन तथाकथित जुर्मों का जन्म कंट्रोल, लाइसेंस, परमिट, ऊंचे और भारीभरकम करों से ही होता है. यदि मूल्य नियंत्रण न हो तो मुनाफाखोरी का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि सारे मूल्य अर्थशास्त्र के मांग और उपलब्धि के नियम द्वारा निर्धारित होंगे. यदि कंट्रोल, परमिट, ऊंचे और वहशी टैक्स न हों तो काला धन ही नहीं पैदा होगा.

पर मूल बात यह है कि यदि तथाकथित काला धन व मुनाफाखोरी नहीं होगी तो राजनीतिबाज चाहे वे समाजवादी हों, गांधीवादी हों या कम्यूनिस्ट, रोटी कहां से खाएंगे? अपनी पार्टियां कैसे चलाएंगे? इन के पास क्या अपनी मनमर्जी के अनुसार बनाए गए कानून सम्मत आमदनी का कोई स्रोत है?

*

भारत सरकार एक अंतरराष्ट्रीय वायु सेवा चलाती है 'एअर इंडिया' के नाम से. दूसरी, देश के अंदर की सेवा है— 'इंडियन एअरलाइंस.' कुछ दिनों पहले सरकार ने एक तीसरी सेवा 'वायुदूत' भी प्रारंभ की थी जिस का उद्देश्य था जहां इंडियन एअरलाइंस के वायुयान न जाते हों और जिन क्षेत्रों में अन्य यातायात साधनों की कमी हो, वहां यह सेवा काम करे.

इस तीसरी सेवा वायुदूत को इंडियन एअरलाइंस के पुराने हवाई जहाजों से [illegible] किया गया था. ये हवाई जहाज अर[illegible] लाभ देने के नुकसान देते हैं. इन के [illegible] महंगा पड़ता है. जिन रास्तों पर ये च[illegible] वहां यात्री भी कम ही होते हैं जिस [illegible] जहाज भर नहीं पाते. और सब से बड़ी [illegible] यह है कि इसे सरकारी कर्मचारी च[illegible] जिन्हें नफेनुकसान की कोई चिंता [illegible] रहती.

(अंतरराष्ट्रीय एअर इंडिया [illegible] मुनाफे में तो कभी घाटे में चलती है. इंडि[illegible] एअरलाइंस को बहुत वर्षों बाद पिछले [illegible] कुछ लाभ हुआ है. पर ये दोनों [illegible] एकाधिकार के मामले हैं— एअर इंडिया [illegible] सारा सरकारी यातायात मिलता है. इंडि[illegible] एअरलाइंस का तो एकाधिकार है ही, [illegible] वह जब चाहे किराए बढ़ाती जाती है.

भारत को एक तीसरी वायु सेवा [illegible] सख्त जरूरत है जो न केवल छोटे शहरों [illegible] जोड़े बल्कि जो इंडियन एअरलाइंस से [illegible] मुकाबला करे ताकि यात्रियों को [illegible] किराए पर अधिक सुविधाएं मिल स[illegible]

इसलिए अच्छा हो यदि वायुदूत [illegible] नागरिक क्षेत्र को सौंप दिया जाए, इस छू[illegible] साथ कि वह देश में चाहे जहां अपनी से[illegible] चला सकेगी ताकि छोटे या नुकसान [illegible] क्षेत्रों का घाटा बड़े शहरों की सेवा से [illegible] किया जा सके.

यहां यह आवश्यक नहीं है कि [illegible] तीसरी सेवा किसी बड़ी कंपनी के अधीन [illegible] अलगअलग क्षेत्रों में अलगअलग कंप[illegible] को भी इस काम के लिए तैयार किया [illegible] सकता है, ताकि किसी का एकाधिकार [illegible]

नागरिक क्षेत्र के व्यवसायों में [illegible] लाभ होता है तो सरकार 70 प्रतिशत [illegible] उस में से टैक्स के रूप में ले लेती है. नुक[illegible] होता है तो चलाने वालों का. इस प्र[illegible] जनसाधारण को तो नागरिक क्षेत्र [illegible] व्यवसायों से ही फायदा है, क्योंकि सरका[illegible] उद्योगों में लाभ नहीं के बराबर होता है [illegible] घाटा बढ़े हुए टैक्सों के रूप में गरीब ज[illegible] को ही भरना होता है.

पिछले अंक में एशियाई खेलों में पाकिस्तान से सात गोल के मुकाबले एक गोल से हार जाने के कारण भारतीय हाकी टीम की काफी आलोचना की गई थी. हर्ष का विषय है कि हारने के सात दिन बाद ही आस्ट्रेलिया में खेले गए एक मैच में भारतीय टीम ने पाकिस्तान को दो गोल के मुकाबले एक गोल से हरा दिया.

इस प्रकार भारत ने पाकिस्तान को हमेशा हाकी में दुनिया में सर्वोपरि होने का दावा करने से रोक दिया. पर एशियाई खेलों की हार की कसक कुछ तो बाकी है ही.

*

दो अमरीकी वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि पृथ्वी से 20 करोड़ प्रकाश वर्ष की दूरी पर (प्रकाश एक सेकंड में करीब 1,86,300 मील की गति से चलता है, इस हिसाब से एक वर्ष में प्रकाश 1,86,300x60x60x24x365 मील दूर चलेगा) एक निहारिका पुंज है जो 70 करोड़ प्रकाश वर्ष की दूरी जितना विस्तार वाला होता है. निहारिकाओं में अनगिनत सूर्य, हमारे सूर्य से करोड़ों गुना बड़े होते हैं. उन के उपग्रहों का तो कोई हिसाब ही नहीं है.

हमारे धर्मगुरु और धार्मिक धंधेबाज हमें सदियों से सिखा रहे हैं, और आज तो और भी अधिक जोरशोर से, कि जो शक्ति इस ब्रह्मांड को चलाती है (इस का कोई सबूत नहीं कि ऐसी कोई शक्ति है भी) वह यह भी ध्यान रखती है कि भारत के एक गांव में राम ने श्याम को क्यों चांटा मारा और अब्दुल मागरिट को क्यों ले कर भाग गया. और यदि काफी जोर से घंटे बजाए जाएं या आवाज की जाए तो इस शक्ति के कान खड़े हो सकतें हैं और आप की मनचाही वस्तु मिल सकती है— पर शर्त यह है कि इन लोगों को मोटी रकम कमीशन में दें और इन के कहने पर एकदूसरे का सिर फोड़ें.

*

शल्य चिकित्सा (आपरेशन) के बाद अकसर मरीज को खून की जरूरत पड़ती है. इस के लिए हर शहर में ब्लड बैंक बने हुए हैं जहां से मरीज को अपने खून की प्रकृति के अनुसार खून खरीद कर चढ़ाया जाता है. परंतु यह खून किस व्यक्ति का है, कैसा है, इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता. नतीजा : अकसर मरीज को नई बीमारी और अंत में मृत्यु.

मद्रास के एक प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक (सर्जन) ने अभी कहा है : यह खून जान बचाता है. पर मैं अपने मरीजों को इसे चढ़ाते हुए घबराता हूं. जहां तक हो सकता है, मैं उन्हें खून नहीं चढ़ाता, क्योंकि इस से बजाए फायदा होने के नुकसान अधिक होने लगा है.

खून लेने, रखने और देने में असावधानियां पगपग पर होती हैं. अकसर खून उन व्यक्तियों का लिया जाता है जो पेशेवर होते हैं यानी जो खून बेचते हैं. ये वही व्यक्ति होते हैं जो गरीब होते हैं, जिन के पास आजीविका कमाने का कोई साधन नहीं होता. इस प्रकार के लोग स्वस्थ हों, इस की संभावना भी कम रहती है. फिर ब्लड बैंक वालों को तो अपना धंधा चलाना है. यदि वे बहुत छानबीन करें तो उन को खून मिलना ही बंद हो जाए.

हस्पतालों में अकसर बाहर का खून चढ़ाने के बाद मरीज को पीलिया (जांडिस) हो जाता है. कुछ को मलेरिया पकड़ लेता है.

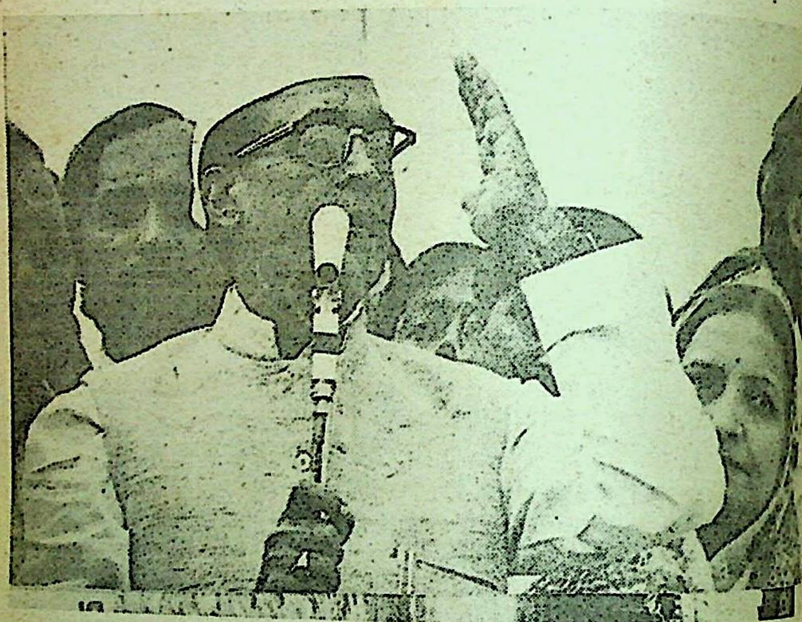
इस परेशानी से बचने के लिए अच्छे निजी नर्सिंग होम अपने विशेष रक्तदानी रखते हैं जिन को अधिक पैसा दिया जाता है और जिन की खून देने से पहले भली भांति जांच कर ली जाती है. पर सरकारी हस्पतालों में यह सब संभव नहीं होता.

शायद इस समस्या का अंत तभी होगा जब कृत्रिम या रासायनिक (सिंथेटिक) खून बड़े पैमाने पर बनने लगे. पर अभी इस दिशा में अनुसंधान चल रहे हैं.

इस बीच मरीज के अभिभावकों को चाहिए कि खून का प्रबंध करते समय उस की लागत का नहीं, उस के स्तर का खयाल ज्यादा रखें ताकि मरीज को खतरा कम से कम हो. ●

अग्रोहा तीर्थ

धर्म की नई दुकान



भूतपूर्व मुख्य मंत्री बनारसीदास गुप्त: सत्ता की राजनीनि में पिछड़े तो जाति की राजनीति शुरू. ▲

अग्रवाल हिंदू समाज के तीसरे वर्ग—वैश्य-की ही एक जाति है. इस जाति के लोग व्यापारव्यवसाय और उद्योगधंधों में लगे हुए हैं. आम तौर पर इस जाति के लोग औरों की अपेक्षा संपन्न हैं. ये लोग हिंदू देवीदेवताओं की ही पूजा करते हैं और अन्य हिंदुओं की तरह हिंदू मंदिरों, त्योहारों, तीर्थों, पंडेपुजारियों व धार्मिक ढकोसलों को मानते हैं. उन की अन्य हिंदुओं से कोई भिन्न स्वतंत्र पहचान नहीं है. होनी भी नहीं चाहिए. लेकिन पिछले दिनों अग्रवालों में अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने के बीज बोए जा चुके हैं.

लेख • विशेष प्रतिनिधि

दिल्ली से 200 किलोमीटर दूर हि
(हरियाणा) के पास एक छोटे से गांव अ
में 31 अक्तूबर को इस अग्रवाल सम्मेल
रूप में ऐसी कोशिशों की शुरुआत हुई
जा सकती है. अलग सांप्रदायिक प
बनाने के लिए देवता, मंदिर, तीर्थ
संगठन इन चार बातों की जरूरत होती
उपर्युक्त सम्मेलन में ये चारों आवश्यक
पूरी करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण
उठाया गया. महत्त्वपूर्ण इस मायने में
इस सम्मेलन की कोई उपयोगित

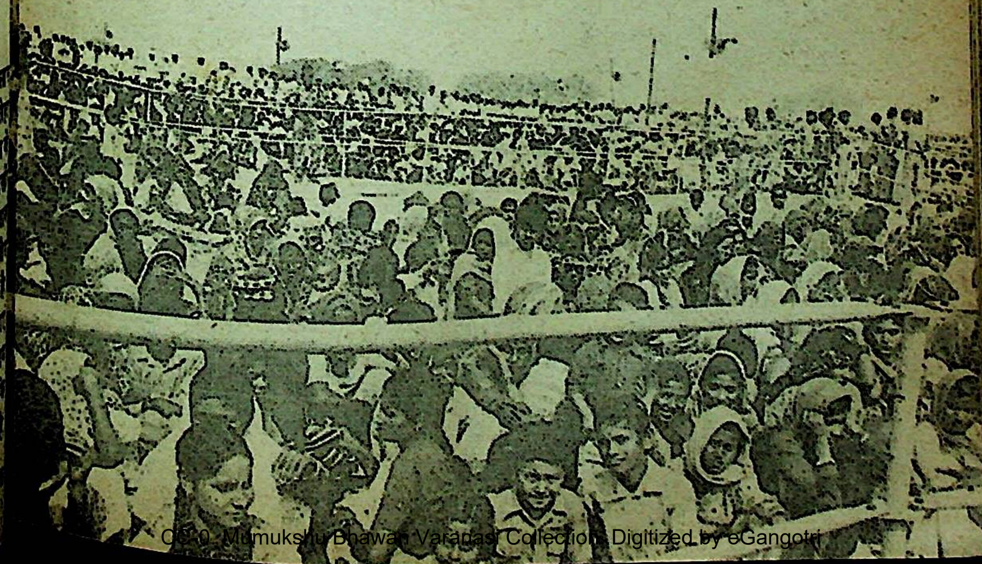
करोड़ों लोगों को उद्योग और व्यापार के माध्यम से रोजी देने वाले अग्रवाल समुदाय को थोड़े से लोग अपने फायदे के लिए कैसे अलग धर्म, जाति का रूप दे रहे हैं. अग्रवालों को कर्मठता, कार्यकुशलता के स्थान पर मंदिर, घंटेघड़ियाल वाली ब्राह्मणी-ढकोसले में धकेले जाने से बचना ही होगा.

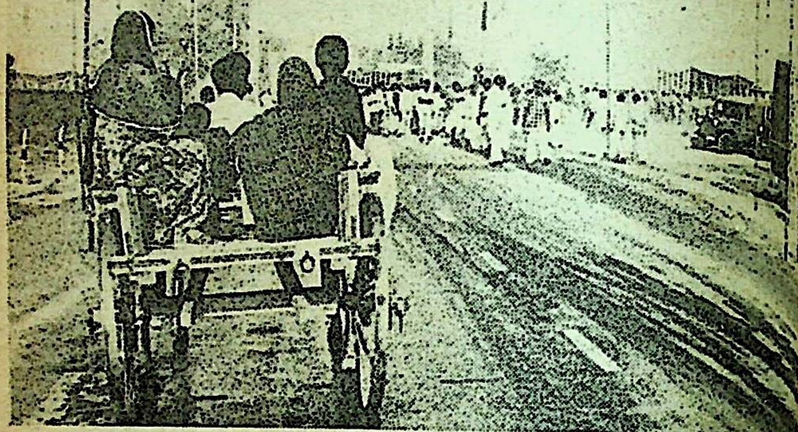
महत्त्वपूर्ण इसलिए मानना चाहिए कि देश भर में फैले करीब एक करोड़ अग्रवाल जनों में से एक लाख से भी ज्यादा लोग इस सम्मेलन में उपस्थिति हुए थे.

एक लाख की संख्या कोई बहुत महत्त्व नहीं रखती. लेकिन एक ही वर्गसमुदाय के लोगों में से, जो भारत के कोनेकोने में बसते हैं और जिन की संख्या एक करोड़ है, एक लाख व्यक्तियों का सम्मेलन में पहुंचना कोई साधारण बात नहीं है. एक करोड़ में से एक लाख लोगों के पहुंचने का मतलब है कम से कम 20 परिवारों में से एक व्यक्ति पहुंचा. आम तौर पर एक परिवार में सातआठ व्यक्ति होते हैं. अग्रवालों में तो वैसे भी संयुक्त परिवारों का प्रचलन है और एक परिवार में 20-25 व्यक्ति होना आम बात है. इस हिसाब से औसत और भी कम बैठता है. अग्रवालों में चारपांच लाख परिवारों में से एक लाख लोग पहुंचे तो सम्मेलन को विफल नहीं कहा जा सकता. और सम्मेलन विफल नहीं रहा, इसलिए उस के उद्देश्य, पहल व्र दूरगामी परिणामों का विश्लेषण और भी ज्यादा आवश्यक हो जाता है.

भारत के करीब छः लाख गांवों की तरह अग्रोहा भी एक छोटा सा गांव है. मुशकिल से डेढ़ हजार की आबादी वाले इस गांव का धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक या औद्योगिक किसी भी दृष्टि से कतई कोई महत्त्व नहीं है. 31 अक्तूबर, 1982 को जो लोग यहां पहुंचे, उन में से भी कई ने इस गांव का नाम यहां आने की तैयारी

अलग जाति, अलग धर्म का जहर पीने के लिए लाए गए लोग. ▼





औरतों, बच्चों को नए अंधविश्वास की पहली खुराक.

करते समय जाना, क्योंकि कुछ साल पहले ही इस गांव को अग्रवालों का मूल निवासस्थान प्रचारित करना आरंभ हुआ था. सन 1932 तक तो किसी को पता ही नहीं था कि अग्रवालों के आदि पुरुष कहे जाने वाले अग्रसेन का राज्य यदि कोई था भी तो कहां था.

सन 1932 में हिसार के पास स्थित एक टीले पर हुए उत्खनन में कुछ अवशेष मिले थे. इन अवशेषों के आधार पर पुरातत्ववेत्ताओं ने कहा था कि टीले की जगह करीब दो हजार साल पहले एक समृद्ध बस्ती थी, जो कलांतर में खंडहर हो गई. इस बस्ती का नाम आग्रेयगण था. बाद में कई पुरातत्वविदों ने यह सिद्ध करने की चेष्टा की कि इस जनपद के निवासी अग्रवाल कहलाते थे.

पुरातात्विक दृष्टि से अग्रोहा का इतना ही महत्त्व है कि यहां ईसा से दो सौ साल पहले के खंडहर मिले हैं. पिछले कुछ वर्षों से इस नितांत साधारण और महत्त्वहीन जगह से अग्रवालों का भावनात्मक संबंध जोड़ने कोशिश की जाती रही है. सन 1975 में अग्रवालों का तीर्थ बनाने की बात सोची सम्मेलन में यहां तीर्थ बनाने, मंदिर निर्माण करने और लोगों से नियमित दान देते रहने की अपीलें की गई. इन बातों से स्पष्ट जाहिर होता है कि यहां और धर्म की दुकान खोली जा रही है केवल धर्म की दुकान खोली जा रही बल्कि अग्रवालों में हिंदू समाज से संप्रदाय का सदस्य होने की भावना भी जा रही है.

अग्रवालों में अलगाव की भा जगाने जैसे प्रयत्नों की प्रतिक्रिया अभी भले न दिखाई दे, परंतु भगवान, तीर्थ और संगठन की योजनाओं के दूर परिणाम इस रूप में हों तो आश्चर्य की नहीं है. अन्यथा क्या कारण है कि अग्रोहा अमृतसर जैसा धार्मिक केंद्र बनाने योजना घोषित की गई. उसे चमत्का ढंग से मनोकामनाएं पूरी करने वाली बनाया जा रहा है तथा अग्रसेन को की तरह प्रतिष्ठित किया जा रहा है.

इतिहास में अग्रसेन का कोई वि

उल्लेख नहीं मिलता. समझा जाता है कि ईसा से दो सौ साल पहले भारत में जब छोटेछोटे सैकड़ों राज्य थे, अग्रसेन भी उन्हीं छोटेछोटे राज्यों में से किसी एक जनपद के शासक थे. उन के बारे में बहुत सी मनगढ़ंत बातें कही जाती हैं जिन का तथ्यों से भी कोई संबंध नहीं दिखाई देता.

अग्रसेन की जीवनी में कहा गया है कि वह भावनगर में जन्मे थे. उन के पिता वैश्य राजा थे. वैश्यों को धनवान बनाने के लिए उन्होंने शंकर की तपस्या की. शंकर ने उन्हें लक्ष्मी की उपासना के लिए कहा. अग्रसेन की तपस्या से प्रसन्न हो कर लक्ष्मी ने वरदान दिया कि तुम्हारे वंश के लोग सदा वैभवशाली रहेंगे. तुम गृहस्थाश्रम का पालन करो.

लक्ष्मी का आदेश मान कर अग्रसेन ने कोलपुर के राजा महीधर की लड़की से विवाह किया. अग्रसेन के जीवनीकार उन्हें वैश्य राजा धनपाल की छठी पीढ़ी में प्रतापनगर के राजा वल्लभ का पुत्र बताते हैं. उन के अनुसार अग्रसेन राजवंश के थे. राजा वल्लभ के बाद वही राजा होते और बने भी. पर प्रश्न यह है कि उस जमाने में किसी राजवंश के सदस्यों को गरीबी का शिकार क्यों होना पड़ा?

अगर अग्रसेन दूसरे वैश्य परिवारों के लिए चिंतित थे तो शंकर और लक्ष्मी की तपस्या करने की क्या जरूरत थी? तपस्या द्वारा अग्रसेन ने लक्ष्मी को खुश कर लिया और लक्ष्मी ने सभी अग्रवालों के संपन्न होने का वरदान दे दिया. तो भी बहुत से अग्रवाल उन्हीं दिनों कंगाल क्यों होते थे? उल्लेखनीय है कि अग्रसेन को भगवान के रूप में प्रतिष्ठित करने वालों के अनुसार ही अग्रोहा में जब कोई परिवार गरीब हो जाता था या कोई गरीब अग्रवाल बाहर से आ कर वहां बसता था तो अग्रोहा का प्रत्येक परिवार उस की मदद करता था.

लक्ष्मी ने सभी अग्रवालों को धनवान होने का वरदान दिया था तो किसी को गरीब होना ही नहीं चाहिए था. प्रत्येक अग्रवाल को लक्ष्मी के वरदान से अपनेआप धनवान हो जाना चाहिए था. जब कि कहा जाता है कि बाहर से आने वाले परिवारों को अग्रोहा में बसने वाले एक लाख परिवार में से प्रत्येक व्यक्ति एकएक रुपया और एकएक ईंट देता था. इस प्रकार वह गरीब व्यक्ति लखपति हो जाता था. इस हिसाब से अग्रसेन द्वारा लक्ष्मी की तपस्या करना और वरदान प्राप्त करना बेकार गया.

अग्रवाल सम्मेलन के आयोजकों ने बारबार यह बात दोहराई कि गरीब परिवार को एक रुपया व एक ईंट दे कर अपने बराबर संपन्न बना लेने की परंपरा द्वारा समाजवाद की शिक्षा दी गई. यद्यपि उन दिनों समाजवाद नाम की कोई विचारधारा नहीं थी, लेकिन इस परंपरा को आदर्श बताने वाले आयोजक इस परंपरा का हवाला दे कर क्या कहना चाहते हैं? क्या यह परंपरा व्यावहारिक है. इस से लोगों की गरीबी दूर हो जाएगी?

इंद्र से युद्ध और इंद्र को हराने, अठारह बार यज्ञों का आयोजन करने तथा अग्रोहा को इंद्रपुरी जैसा वैभवशाली बनाने की तमाम कथाएं, अग्रसेन को पौराणिक ढंग से महान राजा सिद्ध करने के लिए गढ़ी गई हैं. 193 वर्ष की आयु में संन्यास लेने और 11 वर्ष तक तपस्या करने के बाद मोक्ष प्राप्त करने की कहानी भी इस तरह की पुराण कथाओं की भृंखला में आती है.

कालांतर में अग्रोहा के नष्ट हो जाने की कथा भी पुराणकथाओं के समान अंधविश्वासपूर्ण है. कहा जाता है कि एक

अग्रोहा को तीर्थ स्थान घोषित करना और तथाकथित अग्रसेन का मंदिर बनाना, अग्रवालों के साथ सब से बड़ा विश्वासघात है.

व्यापारी की सब से बड़ी उपलब्धि उत्पादन करना और उत्पादन का वितरण करना है. घंटेघड़ियालों और मंदिरों से तो पंडेपुरोहित कमाते हैं, व्यापारी नहीं.

बार यहां बाबा धुंगनाथ नाम का कोई संन्यासी आया. उस ने छः महीने की समाधि लगाई. समाधि के दौरान उस के शिष्य को नगर में किसी ने भिक्षा नहीं दी. केवल एक कुम्हारिन ने भिक्षा दी थी. धुंगनाथ की समाधि खुली तो शिष्य से भीख नहीं मिलने की बात सुन कर वह क्रुद्ध हुए. उन्होंने कुम्हारिन को परिवार समेत अग्रोहा छोड़ने की आज्ञा दी और गांव वालों को श्राप दिया कि अगले दिन गांव के सारे लोग जल कर मर जाएंगे. बाबा का श्राप फलीभूत हुआ और अगले दिन दोपहर में वहां आग बरसी, जिस से गांव के सारे लोग जल कर मर गए.

विचारणीय है कि अग्रवाल अग्रोहा के ही रहने वाले थे तो अग्रोहा के सभी लोग कैसे जल कर मर गए. अगर सभी लोग जल कर मर गए तो वहां के मूल निवासी कैसे हुए? इस कथा के अनुसार तो गांव के सभी लोग अग्निवर्षा में जल कर मर गए थे. वहां कोई भी नहीं बचा था. जब कोई नहीं बचा तो अग्रोहा छोड़ कर अग्रवालों के अन्यत्र जा बसने की बात सरासर गलत हो जाती है.

इतिहास में अग्रसेन नाम के किसी ऐसे राजा का उल्लेख नहीं मिलता, जिस की राजधानी में एक लाख परिवार रहते हों और प्रत्येक परिवार की हैसियत लखपति से कम न हो. लेकिन किसी पात्र को भगवान सिद्ध करने के लिए ऐतिहासिक तथ्य जरूरी नहीं है. उस के लिए केवल अंधविश्वास पैदा करने वाली कहानियां ही पर्याप्त हैं, सो अग्रसेन की भगवत्ता के लिए उन्हीं कहानियों का प्रचार किया जाता है.

अग्रवालों के 18 गोत्र अग्रसेन द्वारा प्रारंभ किए गए माने जाते हैं. देश के वि भागों में बसने वाले इन 18 गोत्रों के परिवारों— अग्रवालों— को सम्मेलन में दिलाया गया कि हमारी जाति का कोई व्यक्ति अपनी जगह को नहीं भूलता. जीविकोपार्जन के लिए चाहे सौ मील दूर बसे या हजारों कोस दूर रहने लगे. गांव में स्मृति स्वरूप कुछ न कुछ बनवाता है. प्याऊ, कुआं, धर्मशाला लोकोपयोगी निर्माण कराने की परंपरा दिलाते हुए सम्मेलन के आयोजकों ने अपील की कि जब वे अपने गांव को न भूलते तो मूल स्थान को कैसे भूले हुए हैं, स्मृति के लिए कुछ क्यों नहीं करते?

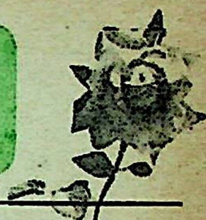
कुएं, प्याऊ और धर्मशाला की उपयोगिता हो सकती है. लोग इन्हें ब हैं तो इस की आलोचना नहीं की जा सक हालांकि सभी अग्रवाल ऐसा नहीं क लेकिन यह बात सुन कर उन उपस्थित को भी झूठी प्रशंसा सुनने का सुख मिला जो ऐसा कुछ नहीं करते. प्याऊ, कु धर्मशालाओं, स्कूलों और बगीचों निर्माणों की लोगों के लिए उपयोगिता है. कामों में उदारता दिखाने की प्रशंसा की सकती है, लेकिन इन कामों में दिखाई वाली उदारता की दुहाई दे कर तीर्थ मंदिर के लिए उदारता दर्शाने की अ पंडेपुजारियों की भाषा से कम चालाकी बात नहीं है.

प्याऊ, कुओं और धर्मशालाओं की फिर भी उपयोगिता है. ये निर्माण लोगों के काम आते हैं, तीर्थ और मंदिर किस का आते हैं? अग्रोहा तीर्थ भी— जैसा हम देखेंगे— लोगों को धर्म के नाम पर तोड़ने और अन्य तीर्थ स्थानों की भगवान और मंदिर के नाम पर छलने केंद्र ही बनेगा.

सन 1975 में अग्रवाल समाज स्वयंभू अगुआओं ने अग्रोहा में तीर्थ की योजना तैयार की थी. अगले सात

शेष पृष्ठ 126 पर

जीवन की मुसकान



मैं वनस्पतिशास्त्र में एम. एससी. कर रही थी. हमारी एक व्याख्याता बहुत अच्छा पढ़ाती थीं. किसी को भी कोई कठिनाई आती तो वह सहर्ष उस की सहायता करती थी. फाइनल में अच्छे अंक लाने के लिए मुझे उन से पढ़ने की आवश्यकता महसूस हुई. मैं ने उन से ट्यूशन की बात की तो उन्होंने हंस कर कहा, "तुम्हें जब भी पढ़ना हो तो मेरे पास आ जाया करो." फीस के बारे में पूछने पर उन्होंने कहा कि पहले पढ़ तो लो, फीस अपनेआप मिल जाएगी.

मैं उन के पास जा कर पढ़ने लगी. मेरे अलावा उन के पास जो भी पढ़ने आता, वह उसे खुशीखुशी पढ़ातीं. अपनी पारिवारिक व्यस्तता के बावजूद उन्होंने हम छात्राओं को पढ़ाने में ढील नहीं आने दी.

वार्षिक परीक्षा हो जाने के बाद जब मैं ने उन से फिर फीस के बारेमें पूछा तो वह बोलीं," वंदना बेटी, सच्चा गुरु अपना ज्ञान बेचता नहीं है, तुम एम. एससी. हो जाओगी, बस, वही मेरी फीस होगी."

बाद में मुझे पता चला कि वह जितनी भी छात्राओं को पढ़ाती थीं, उन से कुछ भी नहीं लेती थीं.

—कु. वंदना सक्सेना
(सर्वश्रेष्ठ)

*

उस समय मैं पांचवीं कक्षा में पढ़ती थी. मैं और मेरी मां रेल में पंजाब से दिल्ली आ रही थीं. रेल में बहुत भीड़ थी. मेरी मां का बैठने की बात को ले कर एक व्यक्ति से काफी झगड़ा हो गया था, इसलिए हमारा मूड काफी खराब हो गया था.

थोड़ी देर बाद काफी जोरों से वर्षा शुरू हो गई. जहां मैं बैठी थी, वहां की खिड़की टूटी हुई थी और उधर से काफी तेज बौछार आने से मैं भीगने लगी थी. तभी मुझे यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि जिस व्यक्ति से हमारा झगड़ा हुआ था, उसी ने मुझे भीगते देख कर तुरंत अपना छाता खोला और खिड़की में इस तरह लगा कर पकड़ लिया जिस से बौछार अंदर न आ सके, फिर वह छाते को उसी तरह तब तक पकड़े रहा जब तक कि बारिश बंद नहीं हो गई.

—ज्ञान मूर्ति

*

गोंडा स्टेशन पर गाड़ी रुकी. एक साहब प्लेटफार्म पर केले लेने के लिए उतरे. उन्होंने ठेले वाले से कुछ केले ले कर खाने के पश्चात धीरेधीरे खिसकना शुरू कर दिया और जब गाड़ी स्टेशन पर रेंगने लगी तो वह भी उस ट्रेन में चढ़ गए.

तभी उन्होंने देखा कि ठेले वाला उन की ओर दौड़ा चला आ रहा है. वह साहब यह सोच कर थोड़ा सकपकाए कि ठेले वाला पैसे मांगने आ रहा है. ठेले वाला उन के करीब पहुंच कर चश्मा देते हुए बोला, "साहब, आप अपना चश्मा मेरे ठेले पर भूल गए थे."

उन्होंने चश्मा तो ले लिया परंतु उन की स्थिति देखने लायक थी. उन का सिर ग्लानि से नीचे झुक गया था.

—मोहम्मद नसीम खां

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ अनुभव पर 60 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

लेख • रमेशचंद्र

दहेज का हल्ला



कितनी समस्या कितना गुल्ला

'सफल नेता बनने के लिए जरूरी है कि लोगों के सा झूठी समस्याएं गढ़ो, उन भयावह चित्र खींचो और भयभीत मा खुद को उद्धारक के रूप में पेश क हिटलर अपने घनिष्ठ सहयोगियों व्यावहारिक राजनीति का यह गुर अ समझाया करता था. इस गुर को अपना ही जरमनी का मसीहा बना और विश्व शासन करने का सपना देखने की स्थिति पहुंच सका.

उस का सपना पूरा नहीं हुआ, अलग बात है, लेकिन उस का गुर आज राजनीति और सामाजिक क्षेत्र में इतने



दहेज के विरोध में नारी रक्षा समिति के सदस्यों द्वारा निकाला गया जलूस: राजनीतिक क्षेत्र में अपनी अलग से पहचान बनाने की कोशिश.

करने की प्रवृत्ति आम तौर पर प्रचलित हो गई है. जुलाई के पहले सप्ताह से दिल्ली की दीवारों पर संस्थाओं, राजनीतिक दलों और सभागारों में दहेज विरोधी पोस्टरों की भरमार और इस विषय पर गोष्ठियों, सभाओं, नारों और रैलियों की गुहार इतने जोरशोर से मची कि लगने लगा कि इस देश में दहेज ही एकमात्र समस्या ऐसी है जो देश को प्रगति के रास्ते पर नहीं बढ़ने दे रही है.

जुलाई का महीना राष्ट्रपति चुनाव की सरगरमियां और प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की अमरीका यात्रा को ऐतिहासिक महत्त्व की घटना बताने वाले प्रचार में बीता. लेकिन बहुत सी संस्थाएं, खास तौर से महिला संगठन दहेज को ले कर अपनी चिंता व्यक्त करने लगे थे. जुलाई से पहले ही 25 महिला संगठनों ने संयुक्त रूप से दहेज विरोधी चेतना मंच का गठन किया था. इन संगठनों में से अधिकांश के नाम पहली बार ही सुने गए. खैर, दहेज के विरोध के लिए बनाए गए चेतना मंच ने पहली जुलाई से दहेज विरोधी अभियान कार्यक्रम की घोषणा की. उद्देश्य यह बताया गया कि दहेज के कारण स्त्रियों पर जो अत्याचार हो रहे हैं, उन पर लोगों का ध्यान आकर्षित करना.

यह अभियान शुरू होने से पहले भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय संगठन (नेशनल फेडरेशन आफ इंडियन विमेन) तथा अन्य सहयोगी संस्थाओं ने एक गोष्ठी आयोजित की. इस गोष्ठी में राजनीतिक या सामाजिक क्षेत्र में नेतृत्व का झंडा गाड़ने के लिए उत्सुक महत्त्वाकांक्षी महिलाओं और छात्राओं ने कानवेंटी अंगरेजी या अंगरेजी शब्दों की भरमार वाली खिचड़ी हिंदी में उन भारतीय महिलाओं की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए उस समस्या को रोंगटे खड़े करने वाले रूप में पेश किया, जिन्हें यह पता ही नहीं है कि उन के पति या ससुराल वाले दहेज के लिए उन्हें सता रहे हैं. सता रहे हैं या नहीं सता रहे हैं, यह भी उन बेचारियों को पता नहीं, जिन के लिए कानवेंटी अंगरेजी में करुणार्द्र कंठों से

सिसकियां भरी जा रही थीं.

कस्तूरबा गांधी मार्ग पर स्थित एक बहुमंजिली इमारत में कार्यालय खोल कर बैठी राष्ट्रीय संगठन की नेत्रियों से यह पूछने के लिए कई बार संपर्क साधा कि अचानक दहेज इतनी भीषण समस्या कैसे बन गई है कि भारत की 35 करोड़ महिलाओं का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है. यह समस्या बहुत पुरानी है तो अभी अचानक ध्यान देने की क्यों सूझी? अब तक ध्यान क्यों नहीं दिया गया? संपर्क साधने का एक उद्देश्य यह जानना भी था कि दहेज अगर सचमुच इतनी भयंकर समस्या है तो उसे दूर करने के लिए कौन से प्रभावी कार्यक्रम चलाए जाने की योजना है. यह मंतव्य बताने के बाद उत्तर मिलता, "अभी तो हम बहुत व्यस्त हैं. फिर कभी आइए, तब बात करेंगे."

इस उत्तर का आशय समझने में बड़ी मुशकिल हुई कि जब दहेज की विभीषिका के बारे में लोगों का ध्यान आकर्षित करना है तो इस विषय पर चर्चा करने से कतराना क्यों? 'पब्लिक अटेंशन आन दि एट्रोसिटीज कमिटेड अगेंस्ट इंडियन विमेन' (भारतीय महिलाओं पर क्रूरता के खिलाफ लोगों का ध्यान आकर्षित करने) का अंगरेजी नारा



उछाल कर पंदरह दिन तक क्या का... चलाए गए, इस की विस्तृत ... कार्यक्रम चलाने वाले संगठनों के पास... यदाकदा कहीं कोई गोष्ठियां होती थीं ... में 25 से 50-60 लोग शामिल होते... गोष्ठियों में दहेज समस्या का ... सामाजिक और सांस्कृतिक संद... विश्लेषण किया जाता.

गोष्ठियों में प्राय: वही महिलाएं ... से ज्यादा बोलने की कोशिश करतीं ... किसी दिशा से आशा की किरण ... देती कि समाजशास्त्रीय और ... सांस्कृतिक संकट के लिए ... 'शब्दावली का इस्तेमाल कर वे बाकी ... पर अपने विचारक होने की छाप ... सकेंगी. विचार व्यक्त करने के ... अपना लंबा भाषण पूरा करने के बाद ... के साथ वे उत्सुकता भरी निग... उपस्थित श्रोताओं की ओर यह जान... लिए देखतीं कि उन के भाषण ने ... लोगों को प्रभावित किया है. यह ... जरूरी है कि प्रभावित होने की मुद्रा ... वाले श्रोता प्रभावित होने की अपेक्षा ... बोलने की बारी का आकुलता से इं... करने का भाव अधिक दर्शा रहे थे.

दहेज से पीड़ित भारतीय महि... के लिए चिंतित इन संगठनों और ने... कुछ विचार बानगी के रूप में प्रस्तु... दहेज के कारण सताए जाने की शि... पुलिस आयुक्त या समाज कल्याण मं... को की जा सकती है. जनवरी से अ... 1980 तक समाज कल्याण मंत्रालय ... दहेज के 99 मामले पहुंचे थे. इन 10 ... में पूरे देश में दहेज उत्पीड़न की ... 100 घटनाएं हुई हैं यानी महीने में द... करोड़ की आबादी वाले देश में औसत... औरतों की दहेज के कारण मृत्यु से ... अंदाज लगाइए कि दहेज कितनी बड़ी...

महिलाओं के खिले चेहरे क्या यह ... नहीं करते कि इन्हें सिर्फ तमाशा ही ... करना है?

विकराल समस्या बन कर उभरती है.

महिला दक्षता समिति का कहना है कि दहेज उत्पीड़न के आंकड़े इकट्ठे करने की पद्धति दोषपूर्ण है. समाज कल्याण मंत्रालय के आंकड़े अखबारों में छपे समाचारों पर आधारित हैं, जब कि उन के पास एक महीने में प्राय: 12 अपराधों (दहेज के कारण मृत्यु) की सूचना पहुंचती है और दहेज के लिए सताए जाने की 100 शिकायतें मिलती हैं. मंत्रालय और समिति के आंकड़े सामने हैं. इन में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है. फिर भी दक्षता समिति ने समस्या का भीषण चित्र प्रस्तुत करने के लिए इस अंतर को चर्चा योग्य समझा. क्या इसी से साबित नहीं होता कि दक्षता समिति के पास अपने काम का महत्त्व बताने के लिए नितांत सतही और एक हद तक बचकाना दलील भर है?

दहेज के लिए सताई जा रही महिला के पास अपना जीवन खत्म करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि कानून का सहारा लेने पर उसे तुरंत मदद नहीं मिलती और बहू यदि ससुराल छोड़ कर स्वतंत्र रूप से जीना चाहती है तो परंपराएं और सामाजिक मान्यताएं उसे चैन से नहीं रहने देतीं. इसलिए उस के सामने मर जाने का रास्ता ही रह जाता है.

नारी रक्षा समिति की अध्यक्षा सरला मुद्गल के अनुसार उन का संगठन वेश्याओं का उद्धार करने और वेश्यावृत्ति दूर करने के लिए बना था. दहेज उन्मूलन का कार्यक्रम इसलिए हाथ में लेना पड़ा कि बहुत सी औरतें इसलिए वेश्यावृत्ति अपनाती हैं कि वे दहेज कम लाने के लिए ससुराल वालों द्वारा सताई जाती हैं. उन्हें घर से भगा दिया जाता है या उत्पीड़न से तंग आ कर वे खुद घर छोड़ देती हैं. घर से निकलने के बाद उन के पास जीवनयापन के लिए वेश्यावृत्ति का सहारा लेना पड़ता है.

दहेज के कारण बहुओं के उत्पीड़न और मायके वालों द्वारा उन्हें स्वीकार न करने के कारणों की चर्चा करते हुए एक अन्य महिला संगठन की नेत्री का कहना था



दहेज विरोधी आंदोलन या स्टंट

कि उन के पास एक पिता अपनी लड़की को ले कर आए, जो ससुराल वालों द्वारा सताई जाने के कारण पिता के पास आ गई थी. पिता ने अनुरोध किया कि हम इसे अपनी ससुराल वापस जाने के लिए समझाएं, क्योंकि यह उन के यहां रहेगी तो इस की दूसरी बहनों की शादी में दिक्कत होगी और लोग उन के परिवार की इज्जत पर भी उंगली उठाएंगे.

पूरे भारत में अगर एक महीने में 10 या 12 औरतें दहेज के कारण मरती हैं तो सवाल उठता है कि क्या यह समस्या वास्तव में बहुत भयंकर और पूरे देश की प्रगति जाम करने वाला कारण है? महिला संगठनों द्वारा ही प्रस्तुत आंकड़ों से साबित होता है कि समस्या उतनी चिंतनीय नहीं है, जितनी बताई या प्रचारित की जा रही है. फिर इतना हल्ला मचाने का क्या उद्देश्य है?

जिन दिनों पोस्टर, सभा, गोष्ठी और रैलियों का जोर चल रहा था, उन दिनों एक गोष्ठी में इन पंक्तियों के लेखक का जाना

हुआ. गोष्ठी एक ऐसे नए राजनीतिक सामाजिक संगठन द्वारा आयोजित की गई थी, जो अपनी पहचान बनाने की कोशिश में लगा हुआ है. इस गोष्ठी में वक्ताओं ने दहेज के कारणों और निवारणों के उपाय पर जम कर आदर्शवादी विचार व्यक्त किए. सुझाव आया कि संगठन के कार्यकर्ताओं को उन पुरुषों के खिलाफ उन के घरों के सामने प्रदर्शन करना चाहिए जो अपनी पत्नी को दहेज के लिए सताते हैं या और किन्हीं कारणों से परेशान करते हैं.

इस तरह के प्रदर्शन या दबाव से सुधार की अपेक्षा दहशत पैदा होगी, इस पहलू की किसी ने चर्चा नहीं की. न ही इस बात पर ध्यान देने की जरूरत समझी गई कि ऐसे कदम पतिपत्नी के संबंधों को और तनावपूर्ण भी बना सकते हैं. तनावपूर्ण न भी बनाएं तो जबरन साथ रहने के लिए पैदा की गई मजबूरी क्या पतिपत्नी के बीच सहज, स्वाभाविक आत्मीयता और मधुरता पैदा कर सकेगी?

वास्तविकता भी यही है

खैर, एक ओर आदर्शवादी भाषणबाजी चल रही थी, दूसरी ओर बाहर लान में युवा संगठन के पदाधिकारी चर्चा कर रहे थे कि फलां के घर प्रदर्शन किया जाए, वह अपनी बीवी को परेशान करता है.

"उस के यहां प्रदर्शन करने से क्या फायदा होगा?" एक ने पूछा.

सुझाव देने वाले ने कहा, "वह इंदिरा कांग्रेस को 15 हजार सालाना चंदा देता है. हम लोग भी कम से कम दो हजार रुपए तो खींच ही सकते हैं."

"तब तो 20-25 लड़कों को तुरंत तैयार करना चाहिए." फायदा पूछने वाले युवक ने प्रफुल्ल भाव से हंसते हुए कहा, "तब तो हमारे संगठन को हर तरफ से फायदा ही फायदा है."

प्रसंगवश इस घटना का उल्लेख यह बताने के लिए किया गया है कि उदीयमान संगठन भी, जिन्हें प्रायः युवा और विश्वविद्यालयों के छात्र चलाते हैं, [illegible] महिलाओं के उत्पीड़न की समस्या [illegible] वह वास्तव में समस्या है तो) किस [illegible] सोचते हैं. वैसे तो दहेज कोई बड़ी सम[illegible] ही नहीं. यह समस्या इसलिए बड़ी बन [illegible] रही है कि अखबार में नाम आने [illegible] लोकप्रियता अर्जित करने का एक [illegible] नुसखा हाथ लग गया है.

छोटेमोटे संगठनों ने तो जुलाई में [illegible] के अखाड़े में अपनी ताकत बढ़ाने के [illegible] कसरत की ही, बड़े राजनीतिक द[illegible] वातावरण में पैदा हुई थोड़ी सी गर[illegible] फायदा उठाने के लिए पीछे नहीं रहे. [illegible] कुछ महीनों से दहेज के लिए बहु[illegible] सताने की कई घटनाएं अखबारों में छ[illegible] बहुओं को सताने के समाचार इस बहु[illegible] से छपे कि किसी पत्रकार ने इन समा[illegible] पर रोचक टिप्पणी करते हुए [illegible] "आजकल बहुओं को जलाने के समाचार [illegible] तरह छप रहे हैं, जैसे ये मौतें किसी मह[illegible] की वजह से हो रही हैं."

ससुराल वालों ने मिल कर बहु[illegible] सताने या दहेज के लिए मार डाल[illegible] संगठित मुहिम शुरू कर दी है, यह [illegible] अगर असंगत है तो यह कहना [illegible] अतिरंजनापूर्ण होगा कि दहेज के [illegible] बहुओं की हत्या इन्हीं दिनों की जाने ल[illegible] कुछ घटनाएं घटती हैं, लेकिन उन की [illegible] नगण्य है. हुआ यह है कि दहेज के प्र[illegible] अचानक इस तरह उछाला गया कि [illegible] भी तरह या किसी भी कारण से कहीं [illegible] बहू अस्वाभाविक मौत मरी तो उ[illegible] कारण दहेज बताया जाने लगा. पहले [illegible] इस तरह की मौत का जो कारण बता[illegible] गया, जांचपड़ताल के बाद वह निरा[illegible] सिद्ध हुआ तो भी लोगों के मन पर [illegible] समाचार का ही प्रभाव रहता है.

पिछले दिनों दहेज की कथित [illegible] ने तूल पकड़ा तो अलगअलग [illegible] अपनेअपने ढंग से दहेज का विश्लेषण [illegible] चित्रण करने लगे. इस विश्लेषण [illegible] चित्रण से चर्चित हो गए दहेज के मसले [illegible]

विभिन्न राजनीतिक दलों ने भी सक्रियता दर्शाई. भला इतना महत्त्वपूर्ण बन गए मुद्दे पर मौन रह कर कोई दल अपना अहित क्यों करना चाहेगा? अहित यही होता कि वे इस कृत्रिम समस्या पर चुप रहते तो जनहित (?) के लिए सजग न रहने वाले मामले में (उन की अपनी दृष्टि से) पिछड़ जाते.

लिहाजा पहली, दूसरी और तीसरी अगस्त को भारतीय जनता पार्टी, मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी तथा अन्य राजनीतिक दलों ने दिल्ली में दहेज विरोधी रैलियां निकालीं. इस से पहले दिल्ली की दीवारों पर अलगअलग पार्टियों ने अलगअलग नारे लिखे, पोस्टर लगाए और इन पोस्टरों में पार्टियों का नाम इस तरह लिखा गया, जैसे दहेज के कारण पीड़ित महिलाओं के लिए एकमात्र वही चिंतित हैं.

अलगअलग दिनों में हुई रैलियों में श्रीमती विजयाराजे सिंधिया, अटलबिहारी वाजपेयी (भाजपा), श्रीमती गोपालन (मा.क.पा.), प्रमिला दंडवते (ज.पा.) आदि राजनेताओं ने दहेज या नारियों के उत्पीड़न के साथसाथ अपने राजनीतिक दृष्टिकोण की चर्चा भी की. श्रीमती विजयाराजे सिंधिया ने दहेज की निंदा और इसे मिटाने का उपदेश देने के अलावा श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा मेनका गांधी को आधी रात के समय घर से बाहर निकालने और राजीव गांधी को भावी प्रधान मंत्री के रूप में पेश करने की चर्चा खास तौर से की. दहेज के प्रश्न पर बोलते हुए इन मुद्दों को उठाना अप्रासंगिक ही कहा जाएगा.

आम तौर पर विरोधी दल जिस तरह सरकार की आलोचना करते हैं, उसी तरह दहेज के लिए भी सरकार की आलोचना करते रहे. आलोचना करना कोई बुरा नहीं है, पर दहेज को खत्म करने की बात की जा रही थी तो किसी भी वक्ता ने यह घोषणा क्यों नहीं की कि वह अपने बेटेबेटियों का विवाह बिना दहेज लिए करेगा.

मजे की बात तो यह है कि दहेज को एक सामाजिक बुराई मानते हुए भी इन राजनीतिक दलों ने एक मंच पर आ कर संयुक्त रूप से दहेज प्रथा का विरोध करने की बात नहीं सोची. दहेज प्रथा को सभी राजनीतिक दल बुरा मानते हैं तो उसे हटाने के लिए तो एक मंच पर आ ही सकते थे. कम से कम एक दिन तो संयुक्त शक्ति का प्रदर्शन कर सकते थे. इसी से जाहिर होता है कि इस कथित सामाजिक बुराई की किसी को चिंता नहीं थी, न है.

दहेज वैसे भी जनसाधारण की समस्या नहीं है. औसत परिवारों में लेनदेन की बात पहले ही तय हो जाती है और बहुत कुछ लियादिया जा चुका होता है. परिवार में बहू का जो स्थान होता है, उसे देखते हुए सामान्य व्यक्ति के लिए पांचसात हजार रुपयों के वास्ते घनिष्ठ आत्मीय और स्नेह की पात्रा बहू की हत्या अस्वाभाविक है.

अपवादों को छोड़ कर बहुओं की हत्या कहीं होती हो, यह मानने के ठोस आधार नहीं हैं. अखबारों, भाषणों, गोष्ठियों, नारों के सिवाए यह समस्या कहीं भी चिंतनीय नहीं है. हां, चिंतनीय बता कर लोग अपने लिए राजनीतिक या सामाजिक क्षेत्र में जगह बनाने की कोशिश जरूर कर रहे हैं. ●



"अब तो आप मान गए न कि हमारे यहां मिट्टी के तेल की कोई कमी नहीं है." ●

नयनों की उलझन

वेणी में क्यों बांध लिया,
प्रिय तुम ने मेरा मन?
नजर झुकाए चुपचुप सी
बैठी हो शरमाई,
ज्यों फूलों पर लच जाती
सूरज की अरुणाई.
होंठ तुम्हारे चंपे से
ओस सजीला चुंबन!

लहराती नदियों जैसी
गोरीगोरी बांहें,
पास तुम्हारे आने को
मीठी हैं ये राहें.
वन की हरियाली सा है,
प्यार भरा आलिंगन!

पास तुम्हारे आने क्यों
मन के दुख घुल जाते,
जीवन में इंद्रधनुष से
अर्थ नए खुल जाते.

रूप देख कर बढ़ जाती
इन नयनों की उलझन.

—प्रकाश मनु



यह भी खूब रही



एक दिन मैं दिल्ली में 'मुद्रिका बस' में सफर कर रहा था. माडल टाउन आने पर एक सभ्य महिला बस में चढ़ी और 'महिला सीट' पर बैठे एक व्यक्ति से सीट देने का अनुरोध करने लगी. परंतु वह व्यक्ति सीट से नहीं उठा.

फिर बातोंबातों ने उस महिला को पता चल गया कि उस व्यक्ति को लाजपतनगर जाना है. थोड़ी देर बाद वह व्यक्ति सो गया. फिर जैसे ही अगला स्टैंड आया, महिला ने उस व्यक्ति को जगाते हुए कहा, "भाई साहब, उठिए, लाजपतनगर आ गया."

वह व्यक्ति हड़बड़ा कर उठ बैठा और उतरने के लिए आगे जाने लगा. उस के उठते ही महिला तपाक से उस की सीट पर बैठ गई और आसपास खड़े लोग ठठा कर हंस पड़े.

—प्रभातकुमार गुप्ता (सर्वश्रेष्ठ)

*

उन दिनों मैं बंबई गया हुआ था. एक दिन मैं ने कुलाबा से वी.टी. स्टेशन के लिए बस पकड़ी. मेरे सामने वाली सीट पर जो सज्जन बैठे थे उन्होंने भी मेरे साथ वी.टी. स्टेशन का टिकट लिया था.

मुझे वी.टी. स्टेशन का पता नहीं था, लेकिन चूंकि उन सज्जन को भी वी.टी. स्टेशन उतरना था, इसलिए मैं इतमीनान से बैठा था कि जब वह उतरेंगे तो मैं भी उन के साथ ही उतर जाऊंगा.

जब काफी देर हो गई तो मुझे कुछ शंका सी हुई. अब वह सज्जन भी बारबार मुझे ही देख रहे थे. मैं ने तब उन से पूछ ही लिया, "भाई साहब, वी.टी. स्टेशन कब आएगा?"

तब वह सज्जन अचरज से बोले, "यही मैं आप से पूछने वाला था. क्या आप को भी पता नहीं है?" —राजकुमार मनचंदा

हमारे पड़ोसी के आठ और 10 वर्षीय दो पुत्र हैं. जब भी छोटे लड़के के लिए कोई नई चीज आती है तो बड़ा लड़का जिद करने लगता है कि वह तो वही चीज लेगा.

उस की इस आदत से घर वाले बहुत परेशान थे. एक दिन छोटे लड़के के लिए नई हाकी स्टिक लाई गई. बड़ा लड़का आदत के अनुसार उसी नई स्टिक को लेने की रट लगाने लगा.

यह देख कर दादाजी ने अपने पुत्र से कहा, "बेटा, इन दोनों की शादी एक साथ करना, नहीं तो बड़ा यह कह कर फिर लड़ेगा कि मैं तो नई पत्नी लूंगा, मेरी तो पुरानी हो गई है." —विक्रम सिंह

*

मेरे पड़ोसी की 10 वर्षीया पुत्री को गहने पहनने का बहुत शौक था. एक दिन वह स्कूल गई, लेकिन थोड़ी देर बाद रोती हुई वापस आ गई. पूछने पर उस ने बताया कि रास्ते में एक आदमी ने रोक कर उसे दो चांटे मारे और गहने उतरवा कर भाग गया.

दूसरे दिन भी स्कूल जाने के बाद वह तुरंत रोती हुई वापस आई और बोली कि कल वाला आदमी आज फिर मिला था और उस ने दो चांटे मार कर कहा कि पीतल के गहने पहनती है.

दरअसल कम उमर होने के कारण उसे पीतल के गहने पहनाए गए थे.

—विजयकुमार श्रीवास्तव

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ अनुभव पर 60 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

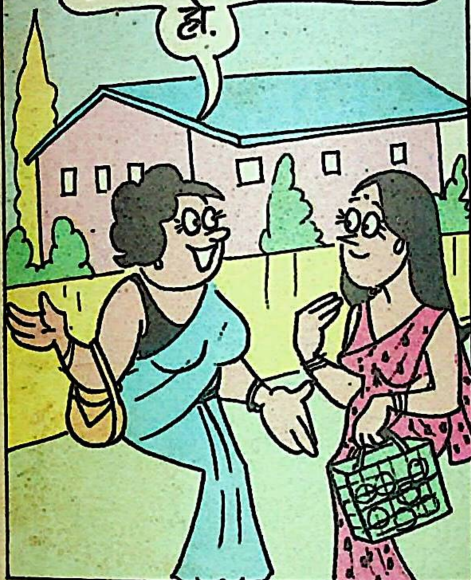

देखभाल


बड़ी मुसीबत है! सारी रात जागे जागे कटती है.


क्या तुम को नींद नहीं आती, श्रीमतीजी?


नींद तो आती है, पर मैं सो नहीं सकती.
क्यों?


मेरे पति बीमार हैं.


अच्छा! तो तुम श्रीमानजी की देखभाल करती रहती हो.


नहीं, यह काम तो नर्स करती है.


समझ नहीं आता फिर तुम सारीसारी रात क्यों जागती रहती हो?
हस्पताल


उस नर्स पर नजर रखने के लिए.

यदि आप पूरी तरह स्वस्थ हैं... तो क्या आपको किसी स्वास्थ्यवर्द्धक टॉनिक की जरूरत है ?

आमला का रहस्य क्या है ? 'अमृत' किसे कहते थे ?

विश्व के सर्वोत्तम आयुर्वेदिक टॉनिक के बारे में आश्चर्यजनक तथ्य

डाबर च्यवनप्राश

'अमृत'

च्यवनप्राश का शाब्दिक अर्थ है "च्यवनऋषि का आहार"। किंवदन्ती यह है कि च्यवनप्राश का निर्माण सबसे पहले ३,००० वर्ष पूर्व देवताओं के चिकित्सकों ने एक स्वास्थ्य-आहार के रूप में किया था।

इसमें इतनी आश्चर्यजनक शक्ति थी कि ऋषिगण प्रायः इसे "जीवन" अथवा "अमृत" कहते थे।

ऋषियों की धारणा थी कि यह न केवल शरीर की प्रतिरोध-शक्ति बढ़ाता है और शरीर के तंतुओं को युवा रखता है, बल्कि यह मस्तिष्क को भी सजग और तीव्र रखता है।

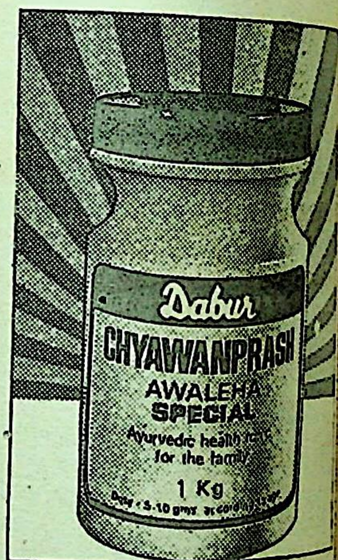


३,००० वर्ष बाद...डाबर च्यवनप्राश

सदियों तक, च्यवनप्राश ऋषियों और गिने चुने आश्रमों का रहस्य बना रहा।

अभी १८८४ में जब डाबर ने अपना पहला आयुर्वेदिक कारखाना स्थापित किया तब च्यवनप्राश हर आदमी को सुलभ हो सका।



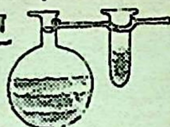


डाबर च्यवनप्राश सावधानी से चुनी ग... ४० से भी अधिक जड़ी-बूटियों और वनस्... तैयार किया गया है। इनमें से सबसे महत्व... है ताजा आमला। इसमें दशमूल (१० ज... अष्टवर्ग (८ जड़ी-बूटियां), तिल का तेल, घी, चीनी और मसाले शामिल हैं।

आमला का रहस्य

प्राचीन काल के आयुर्वेदाचार्यों ने सबसे पहले यह खोज की कि बीमारी से बचाव का सर्वोत्तम प्राकृतिक उपाय है—आमला। प्राकृतिक विटामिन सी के जितने भी ज्ञात साधन हैं, उनमें यह सबसे समृद्ध है। दरअसल आमला के रस में संतरे के रस के मुकाबले २० गुना अधिक विटामिन सी है।

चिकित्सा के क्षेत्र में एक आश्चर्यजनक खोज



वर्षों तक लोग यह सोचते रहे कि विटामिन सी महज ठंड से बचाव करता है।

दो बार नोबल पुरस्कार से सम्मानित डा० लाइनस पॉलिंग को इस खोज का श्रेय है कि विटामिन सी शरीर के तंतुओं को नयी शक्ति देता है और वृद्धापे की प्रक्रिया को धीमा करता है। यह शरीर में रोग संक्रमण का प्राकृतिक प्रतिरोध पैदा करके, आपको खांसी-जुकाम जैसी बिमारियों से बचाता है।

> **विख्यात आयुर्वेदिक विशेषज्ञ डा० अशोक मजुमदार का कहना है :**
>
> "मैं अपने सभी रोगियों को डाबर च्यवनप्राश लेने की जोरदार सिफारिश करता हूँ। यह जवानों और बूढ़ों दोनों को एक लम्बी अवधि तक विविध फायदे पहुँचाता है।"

आपके परिवार के लिए संपूर्ण स्वास्थ्य-आहार

डाबर च्यवनप्राश महज एक स्वास्थ्य टॉनिक ही नहीं है—यह आपके परिवार के हर सदस्य के लिए एक पूर्ण स्वास्थ्य आहार है।

यह शरीर में प्रतिरोध शक्ति का निर्माण करता है तथा रोग संचार से इसकी रक्षा करता है; यह माँसपेशियों को मज़बूत बनाता है और तंतुओं के विकास में मदद पहुंचाता है; यह शरीर में प्रोटीन के भरपूर उपयोग में मदद करता है; यह आपको सक्रिय और शक्ति से भरपूर रखता है।

डाबर च्यवनप्राश का निर्माण आयुर्वेदिक उत्पादनों के विश्व के सबसे बड़े निर्माता द्वारा पूरी तरह स्वचालित कारखानों में किया जाता है।

डाबर च्यवनप्राश-रोग-निवारण का आपका दैनिक उपाय



आयुर्वेद की सदा से यह धारणा रही है कि इलाज से बेहतर है परहेज करना। शरीर में रोग संक्रमण का प्राकृतिक प्रतिरोध पैदा करके डाबर च्यवनप्राश आपके परिवार को स्वस्थ रखने में मदद पहुँचाता है।

डाबर च्यवनप्राश को अपने परिवार के हर व्यक्ति की एक स्वास्थ्य संबंधी आदत बनाइये।

क्या किसी स्वस्थ व्यक्ति को स्वास्थ्य-टॉनिक की जरूरत होती है?

अधिकांश लोग यह सोचते हैं कि स्वास्थ्य-टॉनिक केवल उन्हीं लोगों के लिए है जो बीमार हैं।

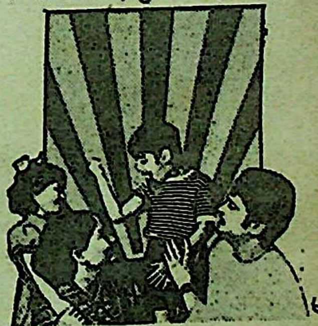
सच्चाई यह है कि एक अच्छा स्वास्थ्य-टॉनिक निरोधक के रूप में काम करता है। यह सही अर्थों में शरीर की प्रतिरोध क्षमता बढ़ा सकता है और आपको आसानी से बीमार पड़ने से रोक सकता है।

इसलिए परिवार के प्रत्येक सदस्य को एक स्वास्थ्य टॉनिक लेना चाहिए।

प्राकृतिक स्वास्थ्य टॉनिक बेहतर क्यों होता है?

जब आप विटामिनों और खनिज तत्वों को उनके प्राकृतिक रूप में लेते हैं तो आपका शरीर उन्हें अपेक्षाकृत ज्यादा आसानी से ग्रहण कर लेता है।

चूंकि प्राकृतिक स्वास्थ्य टॉनिक में कोई रसायन या कृत्रिम पदार्थ नहीं होता इसलिए प्राकृतिक स्वास्थ्य टॉनिक किसी भी तरह के अपकारक प्रभाव से पूरी तरह मुक्त होता है और बच्चों के लिए सुरक्षित होता है।



डाबर च्यवनप्राश

आपके परिवार का प्राकृतिक स्वास्थ्य टॉनिक

5012

कहानी • कांता निशा

कंजूस करुणा दी

बेटी को डोली में बैठा कर करुणा की सास ने अपनी आंखें पोंछते हुए गदगद हो कर कहा, "इस घर में करुणा जैसी बहू न आती तो मेरी बेटी का विवाह होना कठिन ही था. जहां भी बात चलती थी, 50-60 हजार रुपए से कम की तो कोई बात ही नहीं करता था. घर में था नहीं और मेरी नींद हराम थी. मे मुकुल भी परेशान था. बहू ने आते ही काम बना दिया." घर में एकत्रित महिलाओं की प्रशंसा भरी दृष्टि करु ओर उठ गई.



करुणा मन ही मन मुसकराई, 'कल तक तो घर के सभी लोग मुझे कंजूस कह कर नाकभौं सिकोड़ते थे, अब इन्हें समझ आ गई कि बचत ही मनुष्य के काम आती है. यह भी एक कला है, जो सभी नहीं जानते. कमा कर लुटाना कितना आसान होता है, लेकिन बचाना बहुत कठिन है.'

उमा देवी महिलाओं के समूह से हट कर एक ओर चली गईं तो उन की आपसी फुसफुसाहट आरंभ हो गई, "बहू का लाया हुआ बेटी को दे दिया होगा, नहीं तो क्या बहू तीन ही महीने में कहीं से छप्पड़ फाड़ कर थोड़े ही ले आती.

"इस के आने के महीने भर बाद ही तो रंजना की सगाई हुई है, पूरे 12 हजार खर्च हुआ था उस में. उमा के पास तो एक पैसा तक नहीं था.

"सब बहू के पिता का दिया होगा. सुना तो यही था कि बजाए सामान लाने के नकद ही लाई है."

"तभी तो उमा का काम चल गया. बहू बेचारी भली है."

करुणा अनजान बनी सब बातें सुन रही थी. वह मन ही मन बुदबुदाई, 'सब अपने ही दृष्टिकोण से सोचते हैं, लेकिन इन्हें क्या मालूम कि मुकुल ने तो पिताजी का दिया एक पैसा तक बहन के लिए खर्च करने से इनकार कर दिया था. लेते भी क्यों? ससुर का एहसान उम्र भर के लिए सिर पर क्यों लदवाते? ठीक ही तो किया उन्होंने. यह विवाह तो मुझ कंजूस के कारण ही संपन्न हो सका.'

अपने लिए 'कंजूस' शब्द का प्रयोग स्वयं करते ही उसे विचित्र सा लगा. यह 'कंजूस' शब्द उस महाखर्चीली युवती के नाम के आगे कब से जुड़ गया? इतने अमीर घराने में जन्म ले कर भी वह कंजूस क्यों कहलाने लगी?

क्या कमी थी उस के मायके में? खर्चे का हिसाबकिताब तो कभी होता ही नहीं था. पिता का वेतन तीन हजार से भी ऊपर था और महीना बड़े आराम से गुजरता था.

कंजूस कह कर नाकभौं सिकोड़ने वालों की तरफ करुणा ने कभी ध्यान नहीं दिया. और जिस समझदारी से उस ने अपनी ननद रंजना की शादी तय की उसे देख कर तो सभी दंग रह गए.

बिना गिने ही नोट अलमारी में रख दिए जाते और फिर जिस का जितना मन होता, खर्च करता.

तीन बहनों व अकेले भाई में सब से बड़ी होने के नाते पैसे सब उसी के हाथ में रहते. छोटी बहनों व भाई के मुंह से जो निकल जाता, वही पूरा होता. कालिज में तीनों बहनें जी खोल कर सहेलियों को खिलातीं. कभी बाजार निकल जातीं तो पर्स खाली किए बिना लौटती नहीं थीं. छोटीमोटी बेजरूरत की चीजें खरीदी जातीं या किसी रेस्तोरां में बैठ कर जबरदस्ती पैसे खर्च किए जाते.

पैसे का क्या मूल्य है, इस का पता तो तब चला था जब पिताजी अचानक ही एक बार दो महीने के लिए बीमार पड़ गए थे. बैंक में दोतीन हजार पड़े थे, वे भी खर्च हो गए तो सगेसंबंधियों का मुंह ताकना पड़ा था. अपनी गलती का एहसास उसी घटना के बाद हुआ था. "ऐसे समय के लिए रुपया जमा होता तो कितना अच्छा होता, मां," करुणा ने ही मां से कहा था. मां ने विवशता से उस की आंखों में झांक कर मानो उत्तर दे दिया था, 'मैं ने तो सब इसी लिए तुम्हारे हाथ में सौंप दिया था कि तुम्हें घरगृहस्थी चलाने का अनुभव हो, ससुराल में पहुंच कर उस अनुभव से तुम कुछ सीख सको.'

तब से करुणा ने एकएक पैसा सोचसमझ कर खर्च करने की अपनी आदत बना ली थी. आशा व रेणु जब ससुराल गईं

तो उन्हें भी उस ने यही शिक्षा दी थी, "अपने पति की कमाई का कुछ हिस्सा अवश्य बचा कर रखना. जिंदगी एक अनदेखा खेल है, न जाने किस समय कौन सा पासा किस ओर पलट जाए."

दोनों छोटी बहनों के विवाह भी करुणा के विवाह से पहले ही हो गए थे. देखने में सीधीसादी, कमजोर व दुबलीपतली करुणा को जो भी युवक देखने आता, आशा व रेणु को पसंद कर के चलता बनता. दोचार जगह इसी लिए रिश्ता टाल भी दिया गया. "यह कैसे हो सकता है कि बड़ी बहन कुंआरी रह जाए और उस से छोटी बहनों की शादी कर दी जाए? पहले हम करुणा का ही रिश्ता पक्का करेंगे," उस के पिताजी ने एक दिन अपना फैसला पत्नी से कहा था तो करुणा को लगा था कि उस के लिए बहनों के जीवन के साथ खिलवाड़ करना उन के प्रति अन्याय है. साथ ही इस से उस के आत्मसम्मान को ठेस पहुंची थी. "मैं अपना रास्ता स्वयं ढूंढ़ लूंगी, आप इन के विवाह में देरी न कीजिए नहीं तो समय हाथ से निकल जाएगा," उस ने दृढ़ शब्दों में कहा था.

छोटी बहनें एकएक कर के ससुराल चली गईं. उस के देखते ही देखते सभी सहेलियों की शादियां भी हो गईं. उस के अपने सपने एकएक कर के बिखरने लगे. जब सहेलियों के पत्र आते तो ऐसेऐसे अनुभव लिखे होते कि उस का मन अंदर तक गुदगुदा उठता. हर नवयुवती जिन मधुर स्वप्नों में खोई रहती है, वह भी उन से अछूती नहीं रही, लेकिन विवाह के मामले में पीछे रह जाने से उस ने कभी अपने भीतर टूटन, कुढ़न व आत्मग्लानि का अनुभव नहीं किया. उस के दृढ़ आत्मविश्वास ने उस के हृदय में हार जैसी किसी भावना का आभास तक नहीं होने दिया, अपितु अपनेआप को और भी अधिक उत्साह से आगे की पढ़ाई में डाल दिया. पहले हिंदी में एम.ए. थी, फिर इतिहास की घटनाएं व तिथियां रटने में अपनेआप को इतना डुबा दिया कि दो... कैसे बीते, कुछ पता ही नहीं... विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान ग्रहण कि... तो एकदम नौकरी भी मिल गई.

करुणा जिंदगी के 27 वर्ष पूरे... चुकी थी. पूरे कालिज में वह 'करुणा दी'... नाम से प्रसिद्ध हो गई थी. उस के पढ़ाने... ढंग व स्मरणशक्ति का पूरा कालिज का... हो उठा था. हर लड़के व लड़की के दिल... उस के प्रति दृढ़ विश्वास, अचूक श्रद्धा... असीम स्नेह उत्पन्न हो गया था. कक्षा क... नहीं लगती थी, लगता था किसी ने सब... मंत्रमुग्ध कर रखा हो. पूरा इतिहास व... हिंदी साहित्य जबान पर यों रटा हुआ था... कभी नोट्स वगैरह ले जाने की आवश्यक... नहीं पड़ी. अपने द्वारा अर्जित ज्ञान... विद्यार्थियों के मस्तिष्क में उड़ेल देना उस... अपनी प्रसन्नता रही थी.

वह अत्यंत ही संवेदनशील थी. अ... सहकर्मियों, सहयोगियों व विद्यार्थियों... जीवन के दुखदर्द बड़े गौर से सुना करत... हर स्थिति को कैसे भोगना है, सुलझाना... इस के परामर्श के लिए कालिज के अं... व्यक्ति उस के पास आने लगे थे.

हर माह 15 सौ हाथ में आने पर... करुणा ने अपने जीवन का लक्ष्य सादगी... कमखर्ची को ही माना था. पिता की बीमा... वाले हादसे का एक गहन अमिट प्रभाव उ... के हृदय पर पड़ा था. उस की सभी सहेलि... महंगाई का रोना रोते हुए कहती थीं कि... सौ में उन का काम नहीं चलता. वे सैकड़ों... रुपए सौंदर्य प्रसाधनों, नकली जेवरों व... फैशन के कपड़ों पर ही खर्च कर देती थीं... जब कि करुणा अपने ऊपर केवल... एकतिहाई खर्च कर के बाकी सब बचाती... थी. जिन दुकानों में उस की सहेलियां जा क... रुपए फूंक कर आती थीं, उन में वह घुसती... तक नहीं थी. इसलिए सब उसे दबी जबान से... 'कंजूस करुणा दी' बुलाने लगी थीं. लेकिन... करुणा ने कभी उन की परवाह नहीं की.

अनजाने ही एक मुसकान फिर करुणा... के होंठें पर खेल गई, 'कंजूस' कहलाने के...

बचने के लिए यदि मैं भी अंधाधुंध खर्च करती तो क्या आज रंजना को इतना अच्छा घर मिल पाता? कितनी संतुष्टि का एहसास मन में हो रहा है उसे.

कई बार उस ने विचारा भी था कि कहीं यही कारण तो नहीं कि वह नवयुवकों द्वारा नापसंद की जाती रही है. अपनेआप को बनासंवार कर कभी रखा ही नहीं. लेकिन जब वह शीशे के सम्मुख खड़ी हो कर स्वयं अपना चेहरा निहारती तो उसे अनुभव होता कि उस में कुछ ऐसा है जो किसी सौंदर्य प्रसाधन की अपेक्षा नहीं रखता.

'फिर क्या कारण है कि इतने नवयुवकों में से कोई भी इस स्वाभाविक सौंदर्य से आकर्षित नहीं हो पाया?' उस का हृदय प्रश्न कर उठता.

'उन के पास आंखें ही नहीं थीं इसे देखनेपरखने की,' सोच कर वह आश्वस्त हो उठती. उस के पूरे शरीर पर नया आनंद, उल्लास व हर्ष छा जाता.

उस की एक धारणा यह भी थी कि जीवनसाथी यों खोजने व देखनेभालने से नहीं मिला करते, समय आने पर स्वयं ही मिल जाया करते हैं. उसी की प्रतीक्षा में वह दिन गुजार रही थी.

करुणा की प्रतीक्षा विफल नहीं हुई. एक दिन वह पुस्तकालय में बैठी कोई पुस्तक पढ़ रही थी कि उसी के कालिज के जीवविज्ञान के प्राध्यापक मुकुल ने वहां प्रवेश किया. दोनों में अभिवादन का आदानप्रदान हुआ. मुकुल उसी के बराबर वाली कुरसी पर बैठ गया और फिर बिना किसी औपचारिकता के बोला, "आज मैं आप से एक प्रश्न पूछने आया हूं, करुणाजी, जो आप के निजी जीवन से संबंधित है. आशा है आप बुरा न मानेंगी?"

करुणा एक बार असमंजस में पड़ गई थी. उस ने मुकुल के चेहरे की ओर देखा जो हमेशा की भांति निष्कपट व निश्छल था. मुकुल के व्यक्तित्व से वह भलीभांति

शेष पृष्ठ 48 पर





पृष्ठ 45 से आगे

परिचित थी. वह जानती थी कि वह कोई बेढंगी बात पूछ ही नहीं सकता. उस ने निस्संकोच हो कर कहा था, "कहिए, क्या जानना चाहते हैं आप? मेरे जीवन में तो ऐसा कुछ घटा ही नहीं जिसे किसी से छिपाया जाए."

"उस से मेरा कोई संबंध नहीं. कुछ घटा भी होगा तो मेरी दृष्टि में उस का कोई महत्त्व नहीं. मैं तो केवल यही जानना चाहता हूं कि आप ने अब तक विवाह क्यों नहीं किया?"

सिहर उठी थी करुणा मुकुल के इस प्रश्न से. इतना भावविह्वल करने वाला प्रश्न पहली बार किसी ने उस से पूछा था. कोई उत्तर नहीं सूझा था उसे. बस नजरें झुका ली थीं. सोचने लगी थी, क्या कहे, क्या बताए.

"आप यदि बताना नहीं चाहतीं तो मत बताइए, मैं आप को विवश नहीं करूंगा. लेकिन इतना ही कहना चाहूंगा कि कभी विवाह करने का विचार हो तो मेरे बारे में भी विचार कर लीजिएगा."

करुणा का पूरा शरीर रोमांचित हो उठा था. उस ने मुकुल की आंखों में यह जानने के लिए झांका था कि कहीं वह उस के साथ मजाक तो नहीं कर रहा. परंतु उस ने उन आंखों में प्यार का एक गहरा सागर पाया था. एक क्षण के लिए वह उतराती चली गई थी उस सागर में डुबकी लगाने को. फिर उस ने शीघ्र ही अपने को संभाल लिया था. स्नेह से ओतप्रोत हो कर वह बोली थी, "आप ही बताइए न कि आप ने किस कारण से अब तक विवाह नहीं किया?"

मुकुल ने बताया था, "देखिए, मुझ पर कुछ ऐसे उत्तरदायित्व हैं, जिन्हें पूरा किए बिना मैं अपने विवाह के बारे में सोच भी नहीं सकता. आप तो जानती ही हैं कि गृहस्थी का पूरा भार मुझ पर ही है. मुझ से छोटी दो बहनें हैं. मां का कहना है कि पहले उन के हाथ पीले कर दूं. लेकिन समस्या पैसे की है. बिना दहेज के कोई अच्छा वर मिलेगा नहीं और मुझ अकेले की आय में से तो भी नहीं बच पाता."

"वाह, पैसा बचाया जाए तो कैसे नहीं? मेरी मानें तो ऐसी बहू जो सुचारू ढंग से खर्च कर के घर

"उस के लिए आप से अधिक कौन हो सकता है. तभी तो आप आया हूं." मुकुल की आंखों में अ

मुकुल के किए गए प्रस्ताव पर को उसी समय अपनी स्वीकृति चाहिए थी, लेकिन उस ने केवल इ कहा था, "मुझे कुछ सोचने का दीजिए. कल तक मैं अपना निर्ण दूंगी."

रात भर वह सोचती रही थी अ मुकुल को ले कर. पिछले दो व एकदूसरे को जानतेपहचानते आ रहे कालिज में वे दोनों ही तो अविवाहित बार मजाकमजाक में दोनों को ले कर चर्चा स्टाफरूम में उठी भी थी. मु व्यक्तित्व में वह एक अनोखा आक अनुभव करती आ रही थी. लेकिन का प्रस्ताव जब सामने आया तो असमं पड़ गई. मुकुल की दोनों बहनें जिस खर्च करती थीं, वह करुणा से छि था. 'इसलिए तो, कुछ बच नहीं' करुणा ने सोचा था, 'और यदि आते सब कुछ हाथ में लूंगी तो सास व नन बहुत अखरेगा.'

लेकिन करुणा ने उन के विचा अधिक महत्त्व देना उचित नहीं सम वह जानती थी कि वैवाहिक जीवन फूलों की सेज नहीं, संघर्षपूर्ण भी है उस संघर्ष में यदि उस का साथ मां तो क्यों न वह उस का साथ दे. फिर भी आत्मविश्वास था कि कुछ दिनों सब उसे अपना लेंगे. अगले ही दिन मुकुल को अपनी स्वीकृति सुना दी.

मुकुल ने करुणा से विवाह का सहर्ष उमा देवी के सम्मुख रखा तो उन्हें उत्तर मिला था, "तुझ से इतनी बार

रखा है कि बहू बाद में लाना, पहले बहनों की डोली विदा कर दे. विवाह भी करने चला है तो करुणा जैसी से. वह तो आते हीं सारी पूरी कमाई अपने हाथ में ले लेगी. अपने भविष्य के लिए खूब जोड़ेगी. मेरी बेटियां क्या यों ही बैठी रहेंगी?'

मुकुल ने कहा था, "मां, करुणा घर में आ जाएगी तो देखना कितने सुचारू ढंग से घर चलाएगी. रंजना व अंजु के विवाह उस के आने पर ही हो पाएंगे, क्योंकि वह बहुत कम खर्च करती है और बचत खूब कर लेती है."

"जानती हूं. तू यही सुनाना चाहता है न कि हम पैसा फूंक रहे हैं?. भाड़ में झोंक दे अपनी बहनों को." उमा देवी रो दी थीं. लेकिन मुकुल भी अपनी जिद पर अड़ गया था और उमा देवी को मानना ही पड़ा था.

करुणा के मातापिता खुले दिल से बेटी के विवाह की तैयारी में लग गए. इतने दिनों की इंतजार के बाद उन की बेटी को वर मिला था. तब भी करुणा ने व्यर्थ की फजूलखर्ची का विरोध किया था. दहेज में ढेर सारा व्यर्थ का सामान लेने के लिए उस ने साफ मना कर दिया था और बोली थी, "पिताजी, आप अपनी सामर्थ्य के अनुसार जितना देना चाहें, नकद रुपए के रूप में ही दें, ताकि मैं आवश्यकता पड़ने पर इस रुपए का सही प्रयोग कर सकूं." सुझाव उन्हें भी पसंद आ गया और करुणा की कुछेक कीमती साड़ियों व दोचार हलके जेवरों के अतिरिक्त सारा दहेज नकद रुपयों में ही दिया गया. करुणा ने उसे अपने बैंक के खाते में डलवा दिया.

दानदहेज में वस्तुओं की कमी देख कर सास बड़बड़ाई थीं, "मैं ने तो पहले ही कहा था कि इस के मातापिता भी भारी कंजूस होंगे, तभी तो कुल चार ही साड़ियां लाई है, ताकि सासननद न ले सकें. जो रुपए दिए, वे भी बैंक में अपनी बेटी के ही नाम डलवा दिए. हमें क्या मिला?"

घर में कदम रखते ही करुणा को सब के रोष का शिकार होना पड़ा. घर में बचत करने का उद्देश्य ले कर तो करुणा आई ही थी, अतः सब खर्चा आते ही उस ने अपने हाथ में ले लिया तो उमादेवी, रंजना व अंजु मुंह फुलाए रहतीं. करुणा का हर काम उन्हें कंजूसी से भरपूर लगता, उस की हर बात का अप्रत्यक्ष रूप में मजाक उड़ाया जाता.

उधर मुकुल रंजना व अंजु के लिए वर की तलाश में था. वह चाहता था कि दोनों का विवाह एक साथ ही कर दिया जाए. लेकिन करुणा ने उसे सुझाया, "अंजु तो अभी बी.ए. फाइनल में है, फिर एम.ए. कर लेगी. उस के लिए दो साल और ठहरा जा सकता है. दोनों के विवाह एकदम करेंगे तो हो नहीं पाएगा."

"तुम वास्तव में बहुत समझदार हो. अब तक न जाने मैं क्यों तुम से कुछ कह नहीं पाया. यह घर पहले से ही सुधर जाता."

"अभी कौन सी देर हो गई है? झटपट रंजना के लिए लड़का ढूंढ़ो, सब ठीक हो जाएगा."

"ढूंढ़ तो रहा हूं, लेकिन 10-12 हजार तो सगाई पर ही चाहिए. आखिर हम इस थोड़े से समय में इतना कहां बचा पाएंगे?"

"बच तो रहा है, कभी तीन सौ, कभी चार सौ. इस से अधिक की संभावना तो नहीं है," करुणा ने बताया था.

"अभी तो डेढ़ हजार भी नहीं हुआ होगा. समझ में नहीं आता कि क्या करूं?"

"तुम्हें रुपए की चिंता क्यों हो रही है? जानते तो हो कि पिताजी ने मुझे 50 हजार नकद दिया है. वह फिर किस काम आएगा?"

"तुम चाहती हो कि तुम्हारे पिताजी द्वारा तुम्हारे नाम दी गई राशि का उपयोग मैं रंजना की शादी के लिए करूं? इस से तो हमारे संबंधों में दरार आएगी. पिताजी यही सोचेंगे कि रुपए के लोभ में ही मैं ने तुम से विवाह किया है."

करुणा भी सोच में पड़ गई थी, 'हो सकता है कि बेटी के नाम दिए गए रुपयों का उपयोग रंजना के विवाह के लिए करने की बात उन्हें पसंद न आए और उन के मन में मुकुल के प्रति जो आदर अब है, वह न रहे.'

तब उस ने मुकुल से कहा था, "पिताजी की कमाई पर आप यदि अपना हक नहीं समझते तो मेरी कमाई पर तो आप का पूरा हक है न? मैं भी तो पिछले तीनचार वर्षों से जमा करती आ रही हूं. मैं हर छठे महीने तीन हजार के चैक एक
भेजती रही हूं जो 14 प्रतिशत सूद
तीन वर्षों में 18 हजार और फिर
पर 14 प्रतिशत ब्याज."

मुकुल आश्चर्य से उस के
ताकता रहा था, "वाकई बहुत
तुम. इतने थोड़े दिनों में इतना
लेकिन, करुणा, जो पैसा तुम ने अपनी
में से अपनी इच्छाओं पर काबू पा कर
तपस्या से जोड़ा है, उस को ले कर
अन्याय नहीं करना चाहता. मैं तो
चाहता हूं कि अपने पैसे से ही रं
शादी करूं."

एक बार करुणा का सारा उत्सा
पड़ गया, 'उफ, पुरुष में कितना अ
है.' फिर उस ने प्यार भरे स्वर में मु
सुझाव दिया था, "तुम्हारा यह
सर्वथा उचित है, लेकिन यह भी तो
रंजना की शादी के लिए उपयुक्त धन
में तो हमें वर्षों लग जाएंगे. हां,
विवाह आप की कमाई से ही होगा.
क्यों नहीं सोचते कि अब मैं इस घर
हूं, इस घर की इज्जत मेरी अपनी इज्
समय पर मेरी कमाई इस घर में का
यह मेरे लिए भी खुशी की बात हो

मुकुल ने प्रेम विह्वल हो कर
को अपनी बांहों में भर लिया था,
कंजूस करुणा का दिल इतना विशाल
मैं नहीं जानता था."

रंजना के लिए शीघ्र ही उपयु
मिल गया. सास को जब पता च
करुणा अपनी जमापूंजी में से रं
विवाह के लिए कंपनी से पैसा निकल
तो हर्ष से गदगद हो उठी थीं. रंजना
का बरताव भी एकदम बदल ग
विदाई के समय रंजना ने भाभी से
अपने कहेसुने के लिए क्षमा मांगी.
करुणा की प्रशंसा होने लगी.

करुणा को अब अंजु की शादी
रुपया जोड़ना था. घर में उस की
मान्य थी. कंजूस करुणा दी अब
करुणा भाभी कहलाने लगी हैं.

ये पति



हमारी पड़ोसन की दरवाजा खोल कर काम करने की आदत थी. इस से उस के पति बहुत परेशान रहते थे. वह उस की यह आदत छुड़ाना चाहते थे.

एक दिन उस के पति ने कहा कि वह अपने दोस्त के यहां जा रहे हैं. उन की पत्नी दरवाजा खोल कर रसोई में काम करने लगी. आधे घंटे बाद पति लौटे तो वह चुपके से स्टोर में गए और बक्से से जेवर और नकदी निकाल कर अपने पास रख कर वापस चले गए.

थोड़ी देर में पड़ोसन किसी काम से स्टोर में गई और बक्सा खुला देख कर जोर-जोर से रोने लगी, "हाय मैं लुट गई." महल्ले के काफी लोग इकट्ठा हो गए. इसी बीच उस के पति भी आ गए. उन्होंने उसे जेवर और नकदी दिखाई, तब जा कर पड़ोसन की जान में जान आई.

उस दिन के बाद उस ने कसम खा ली कि दरवाजा कभी खुला नहीं छोड़ेगी.

—राकेशकुमार

*

मेरे भाई की शादी होने वाली थी और घर में सब से बड़ी होने के कारण भाभी को ही सारा काम करना पड़ता था. लेकिन वह बहुत भुलक्कड़ स्वभाव की थीं और चाबी का गुच्छा कहीं रख कर भूल जातीं और फिर उसे खोजती रहतीं.

बड़े भाई साहब ने उन्हें सलाह दी, "चाबी मुझे दे दो और जब जरूरत पड़े तो मुझ से ले लेना." भाभी ने चाबी का गुच्छा उन्हें दे दिया. कुछ देर बाद जब फिर चाबी की जरूरत पड़ी तो भाभी भूल गईं कि वह कहां रखी है. भाई साहब भी उसे ढूंढ़ने में लगे हुए थे.

चाबी नहीं मिली तो भाई साहब चिल्लाने लगे, "औरतें एक मामूली सी चीज ठीक से नहीं रख सकतीं, जब कि हम मर्द लोग हजारों की चीज इधर से उधर नहीं होने देते." यह कह कर जब गुस्से में उन्होंने पैंट की जेब में हाथ डाला तो उन का चेहरा देखने लायक था, क्योंकि चाबी उसी में थी.

—ललितकुमार भाटिया

*

मेरी शादी हुए अभी 10-12 दिन ही हुए थे. एक दिन हमारे घर मेरे पति के कुछ मित्र अपनीअपनी पत्नी के साथ आए. बातचीत के दौरान सभी मित्र अपनीअपनी ससुराल को ले कर कहने लगे कि उन की पत्नी जब भी वहां जाती है तो वहां से उस शहर की मशहूर चीज जरूर ले कर आती है.

यह सुन कर मेरे पति एकाएक मायूस से हो कर बोले, "इस का मतलब यह कि मैं तो अपनी बीवी से सारी उमर जूते ही खाता रहूंगा."

यह सुन कर सभी हैरान रह गए और मैं रूठ कर अंदर जाने लगी तो वह मेरा हाथ पकड़ कर बोले, "भई, इस में बुरा मानने की क्या बात है? तुम आगरा में रहती हो और वहां के जूते बहुत मशहूर हैं."

—इंदु वधवा (सर्वश्रेष्ठ)●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ अनुभव पर 60 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

सुगंध

कहानी • नारायणी

जगदीश को दिन में कई बार विचार आया कि भाई को फोन कर के सूचित कर दे. एक बार उठया भी तो ब्रजेश मिला नहीं. फिर समय ही नहीं मिला. पदवृद्धि के साथसाथ जिम्मेदारियां भी तो बढ़ जाती हैं. फिर सारा दिन तो कितने ही लोगों की बधाई का उत्तर देतेदेते ही बीत गया था. वह घर पहुंचा तो वहां भी वही माहौल था– हर्ष और उल्लास का.



सुनीति की सहेलियों में बेतार की तरह खबर पहुंच गई थी. सब के घर आसपास ही थे और बधाई देने में पीछे रहने वाली नहीं तो इसी तरह की बातें सुनने में आ

"अजी, मैं ने तो सुनते ही सब दे दी थी. इतनी बड़ी खुशी की बात पेट में पचती नहीं. सुनीति बहन क्या अपनी खुशी नहीं? लेकिन सब का मन तो एक सा होता नहीं."

"शायद रमा ने सोचा होगा पति के संग आ कर बधाई देगी."

"अजी, उस के पति की बात क्या वह दोबारा पति के साथ नहीं आ थी? उस का घर कौन सा दूर है, ही तो है. यह कहो कि अपनाअपना किसी को दूसरे की खुशी से खुशी किसी को जलन."

"ठीक कहती हैं, कमलाजी. स्वभाव ही ऐसा है, दूसरे की उन्नति नहीं सकती."

"छिः, कितना छोटा दिल है"

"मैं तो कहती हूं दिखावे को ही दिल बड़ा कर लेना चाहिए. वाह, कितनी स्वादिष्ट है."

"भई, हम तो जम कर मिठाई जगदीश भाई को इतनी बड़ी तरक्की है. हमें तो इस की बेहद खुशी है, हम जरूर खुशी मनाएंगे. और फिर पति तो उन्हें भाई की तरह मानते हैं"

बस ऐसी ही बातें... सभी की कमजोरियों से परिचित... सभी में व्यवहारकुशल... एकदूसरे के संवेदना भी तो एकदूसरे से भयभीत जाने कब किस का भेद उजागर हो जाने कब कौन ओछा समझ लिया



"अंजलि को नहीं कहलवाया," जगदीश के इतना कहते ही सुनीति जलभुन गई.

जगदीश की तरक्की की खबर सुन कर उस का भाई ब्रजेश बधाई तक देने नहीं आया तो उसे लगा जैसे वह अब पराया हो गया है. लेकिन उस के घर पहुंचने पर जगदीश को लगा कि उस का सोचना कितना गलत था.

जगदीश से मिलते ही सभी ने उस की तरक्की पर बधाई दी, खुशी दिखाई. ईर्ष्या के शब्द मुंह पर न आ जाएं, इस के लिए सभी प्रयत्नशील रहीं.

उल्लसित आवाजों को सुन कर जगदीश ने कार सड़क पर ही रोक दी थी. उस ने धीरे से अंदर कमरे में आ कर झांक कर देखा, सभी सोफे, कुरसियां ही नहीं भरी हैं, सुनीति की कुछ सहेलियां कुरसियों के हत्थों पर भी बैठी हैं. जगदीश को देखते ही सब ने उसे "मुबारक हो... मुबारक हो" कहना शुरू कर दिया. थोड़ी देर बातचीत कर महिलाएं विदा लेने लगीं. जगदीश को देख कर सभी को याद आ गया था कि उन के पति भी घर पहुंच कर उन की प्रतीक्षा कर रहे होंगे.

सुनीति ने प्रफुल्ल दृष्टि से जगदीश की ओर देखा. जगदीश ने भी उस का मुसकरा कर उत्तर दिया और बोला, "अंजलि को नहीं कहलवाया?"

सुनते ही सुनीति के मधुर स्वरों में कड़वाहट घुल गई, "मैं ने किसी को कहलवाया थोड़े ही था. सब अपनेआप आई थीं, खबर सुनते ही घर के हजार काम छोड़ कर. क्या अंजलि ने नहीं सुना होगा? सुना तो

होगा ही. तुम ने ही तो कहा था कि जब दफ्तर में तुम्हारी तरक्की की चर्चा चल रही थी, तब ब्रजेश आया था."

"तब तो खाली भनक ही पड़ी थी. कई वरिष्ठ लोगों को छोड़ कर मुझे इतनी ऊंची जगह मिल जाएगी, ऐसी आशा न थी मुझे."

"तुम्हें न रही होगी, मगर उसे तो ध्यान रखना चाहिए था. 10-15 दिन हो गए, फिर पूछने आया कभी? न आता, फोन ही कर के पूछ लिया होता. तुम्हारा दिल बड़ा है, इसी लिए सब को अपने जैसा सोचते हो. लेकिन दुनिया ऐसी नहीं है. भाई है तो क्या हुआ. भाईभाई में तो ईर्ष्या पाई जाती है. अगर किसी को तरक्की मिलती है तो इस में जलने की क्या बात है."

जगदीश को भी लगा कि सुनीति का कहना गलत नहीं है. ब्रजेश से कहा तो था तरक्की के बारे में. फिर याद आया, कुछ दिन पहले कहीं से सुन कर आया था. लेकिन उस के बाद तो उस ने शक्ल भी नहीं दिखाई. सच ही है, उस के मन में खुशी होती तो कभी तो पूछने आता.

जगदीश को चुपचाप चाय पीते देख सुनीति भी चुप रही. मन में हिसाबकिताब लगाती रही कि मिठाइयां काफी रखी हैं, जगदीश का कोई संगीसाथी आ गया तो वह स्वागत कर लेगी. और भी सभी कुछ है घर में. खुशी के अवसर पर आने वाले को यों ही छूछा नहीं टरका देगी. लेकिन उस की जो सहेलियां आई थीं, उन पर जगदीश की तरक्की की क्या प्रतिक्रिया हुई, किस को वास्तव में खुशी हुई, किस को रंज, कुछ साफ तौर पर खुल नहीं पाया.

जगदीश के सामने मिठाई से भरी प्लेट रखी थी, लेकिन वह केवल चाय का ही घूंट भर रहा था. सुनीति का ध्यान गया तो बोली, "क्यों, क्या सोच रहे हो? क्या खाली चाय ही पियोगे? लगता है, आज दफ्तर में ही पेट भर गया, जो कुछ भी नहीं ले रहे हो."

फिर जगदीश को चुप देख कर उसे लगा, वह जरूर ब्रजेश के व्यवहार के बारे में सोच कर दुखी हो रहा होगा. फिर मचल कर बोली, "इस खुशी में तो की सजावट के लिए सामान लूंगी, चा लिए कुछ भी न लूं. देखो न, सोफा भी पुराना हो गया है और परदों का भी सेट है."

सुनीति अपनी योजना सामने जा रही थी, किंतु जगदीश के कंठ में का घूंट अटक सा गया था. वह जीवन की विसंगति के बारे में सोच था. ठीक है, चीफ इंजीनियर का पद इतना बड़ा नहीं, लेकिन उस के लि बहुत ऊंचा है. समय ने उस का साथ अनायास ही तरक्की होती गई है. तरफ उस का छोटा भाई ब्रजेश पढ़ाई जैसा तेज होते हुए भी जहां का तहां

जगदीश की आंखों के आगे वे दि गए, जब उस के पिता की मृत्यु हु और उस की दोदो बहनें कुंआरी बैठी पिता की अति उदार प्रवृत्ति ने उन्हें क बना दिया था. जगदीश की पढ़ाई होस्टल का खर्च था. ब्रजेश तो बी.एससी. के दूसरे वर्ष में ही था, परिवार का भार संभालने के लिए उसे छोड़ नौकरी में लग जाना पड़ा था. पि असमय मृत्यु होने पर परिवार के कि सदस्य को उन के दफ्तर में जगह मिल थी. सभी ने एक स्वर से समझाया ब्रजेश को और पढ़ाने में क्या रखा है पता पढ़ाई पूरी कर के भी झख मारनी ऐसी नौकरी न मिले. अभी मिलती चीज तिरस्कार न किया जाए.

तब ब्रजेश को, इच्छा न होते हुए कालिज की पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी जगदीश दो वर्ष बाद इंजीनियर हो ब्रजेश ने उस समय परिवार का बो उठाया होता तो जगदीश के लिए उस पढ़ाई पूरी करना संभव न होता. उस का कृतज्ञ मन इस बात को कभी भुला पाता था.

सुनीति इस तथ्य से भली



परिचित थी. जगदीश ब्रजेश के प्रति ममता रखे, इस में उसे एतराज नहीं था, किंतु स्नेह के साथसाथ भाई पर खर्च भी हो, यह वह हरगिज नहीं चाहती थी. सुनीति का बराबर यही प्रयत्न रहता कि जगदीश के हृदय में अपने भाई के लिए बहुत प्यार उत्पन्न न होने पाए.

सुनीति सदा कहा करती, "सब का जीवन एक सा तो होता नहीं. फिर ब्रजेश को ऊंची पढ़ाई के लिए भी तो मेहनत नहीं करनी पड़ी, बैठेबिठाए नौकरी मिल गई. पढ़ना चाहता तो पढ़ ही लेता, दो वर्ष की ही तो बात थी. किसी तरह घर का काम चलता ही रहता. फिर तो बड़े भैया खर्च चलाने में सक्षम हो ही जाते. ब्रजेश को करना ही क्या था. शुरुआत तो अच्छी हो गई थी. चारपांच सौ मिल रहे थे. आगे बढ़ना तो अपनी क्षमता पर होता है."

सुनीति की मनुहार सुन जगदीश का ध्यान भंग हो गया. किंतु वह उस की बात का उत्तर न दे कर बोला, "सुनो, बिरजू

"हांहां, जरूर ले आओ, सुगंध से ही मन ललचाने लगा है. ब्रजेश अभी नहीं आया क्या?" जगदीश ने अंजलि से पूछा. ▲

ने घर के पास का कोई फोन नंबर दिया है?"

बिरजू (जगदीश ब्रजेश को बिरजू कह कर ही पुकारा करता था) का नाम सुनते ही सुनीति रोष से बोली, "नहीं तो. क्यों, क्या खबर देनी है? कौन सा खुश हो जाएंगे वे लोग, जो आप इतने परेशान हैं? कल कह देना दफ्तर में फोन कर के."

"हूं," कह कर जगदीश ने चाय का घूंट भरा, उस से और चाय नहीं पी गई. कप नीचे रख दिया.

फिर वह मन ही मन सोचने लगा, बिरजू इसी शहर में है. उसे बताना तो जरूरी था. लेकिन क्या उस ने सुना नहीं होगा? छोटे से शहर में तो यों ही खबरें मिल जाती हैं. क्या सुन कर भी वह नहीं आया? क्या सचमुच उस के मन में ईर्ष्या, द्वेष है? हमेशा तो वह मेरी उन्नति से हर्षित होता आया है. फिर अब...

गैस स्टोव नं०१ है तो ज़ाहिर है वह 'सुपर' ही होगा !

कई सालों क इन्तजार के बाद आपका गैस का नम्बर आया है। इसमें कोई शक नहीं कि आप अपने लिए गैस स्टोव भी सबसे उत्तम, या यूं कहिए, 'सुपर' चाहेंगे। इंधन के कुशल उपयोग और बचत में 'सुपर'। ऐसा स्टोव जो क्वालिटी और फिनिशिंग में तथा सुरक्षा की दृष्टि से भी 'सुपर' हो, जिसकी सारी खूबियां 'सुपर' हों।

सुपरफ़्लेम

विशेषताएं :

- शानदार सिल्वर-क्रोम अथवा स्टेनलेस स्टील बॉडी।
- ज़ंग से सुरक्षित, ताप-प्रतिरोधक पैन सपोर्ट।
- अग्नि से सुरक्षित नॉब्स।
- बॉडी में ही बना मजबूत स्टैण्ड।

अनेक मॉडलों में उपलब्ध :

एक बर्नर वाला, दोहरे बर्नर वाला प्रीमियम, दोहरे बर्नर वाला डीलक्स, कैन्टीन बर्नर...आकर्षक रंगों में।

सभी एल. पी. जी. विक्रेताओं से उपलब्ध।



नं०१ सुपरफ़्लेम

भारत का सबसे अधिक बिकने वाला गैस स्टोव।

ग्लोब सुपर पार्ट्स

(सुपर पार्ट्स प्रा. लि. का एक भाग—बतरा समूह का एक सदस्य)
१४/१, मथुरा रोड, फ़रीदाबाद. दूरभाष नं० ८२२२६१-६२४

पिछली बार जब उस की तरक्की हुई थी तो सुनीति ने एक पार्टी आयोजित की थी. उस में ब्रजेश को भी बुलाया था. सभी थे– ब्रजेश, उस की पत्नी अंजलि और दोनों बच्चियां– ममता और नम्रता. जगदीश बोला था, "अंजलि आ गई, बड़ा अच्छा हुआ, पार्टी का काम वह बड़ी अच्छी तरह संभाल लेती है." तभी नम्रता ने अपनी मां से पूछा था, "मां, हमारे घर ऐसी पार्टी क्यों नहीं होती? हमारे घर इतना सामान भी तो नहीं."

"यह भी तुम्हारा ही घर है, बेटे, बड़े बाबूजी का घर."

"नहीं, यह तो अजय, विजय भैया के पिताजी का घर है."

"नहीं, उन के तो पिताजी ही हैं, तुम्हारे बड़े बाबूजी हैं. तुम्हारा भी घर है यह." अंजलि ने उन्हें समझा दिया था. वे लोग जगदीश को ताऊजी नहीं कहती थीं. अंजलि ने बड़े बाबूजी ही कहलवाया था जेठजी को.

"फिर हम लोग वहां क्यों रहते हैं, इतनी दूर गांधी नगर में? यहीं रहें तो अच्छा लगे."

"वहां से तुम्हारे पिताजी का दफ्तर पास पड़ता है न." अंजलि ने बेटी को दुलार से समझाया था.

ममता और नम्रता दोनों को अपने बड़े बाबूजी का घर अच्छा लगा था. वे कुछ देर बाद चुपचाप उठ कर उस घर से अपने घर को तौलती रहीं, जहां केवल दो छोटेछोटे कमरे थे. न खाने की ऐसी मेज, न कुरसी, न गुदगुदा सोफा, न ऐसा मुलायम कालीन, न ऐसे परदे, न मोटर. न वे अजय, विजय की तरह बस में बैठ कर स्कूल जाते थे. उन का स्कूल भी उन के स्कूल जितना बड़ा नहीं था. उन के यहां सभी चीजें मामूली थीं, फिर भी उन्हें यह सुन कर संतोष होता कि यह घर भी अपना है, उन के बड़े बाबूजी का है.

ब्रजेश शुरू में महीने में एक दिन बड़े भाई के यहां बिताने अवश्य आया करता था. सवेरेसवेरे अंजलि और दोनों लड़कियों को ले



ताल्लुक

यह ताल्लुक की भला
कौन सी मंजिल है 'अयाज'
जानतेबूझते अंजान
बना है कोई

—अयाज झांसवी

कर वह इतनी दूर बस से आता. अकसर रात को ही वे आखिरी बस से लौटते थे.

लेकिन धीरेधीरे उसे लगने लगा कि भाभी को उस का आना हर्षप्रद नहीं, बल्कि बोझिल लगने लगा है.

"छुट्टी के ही दिन कोई विशेष व्यंजन बनता है. अंजलि को तो आराम है. स्वयं बनाना नहीं पड़ता."

"काम से भी छुट्टी. खर्च वगैरह से भी बच जाती है. यहां तो कोई न कोई आया ही रहता है."

पहले सुनीति की ऐसी बातों को हंसी में ही सुन लिया जाता था. एक बार जगदीश ने सुनीति की मंशा पूरी तरह न समझते हुए कहा था, "अंजलि खाना तो बहुत अच्छा बनाती है, उस से भी हाथ बंटाने को कह दिया करो न."

"खाना तो बनता ही है, लेकिन जब कुछ विशेष बनाओ तो इतने लोगों में ही खर्च दोगुना हो जाता है."

सुनीति ने अब रविवार को कुछ विशेष बनाना छोड़ दिया था. बढ़ती महंगाई के कारण ही भाभी ऐसा नहीं कर पाती

शुध्द पॅराशुट नारियल तेल बहु उपयोगी नई प्लास्टिक बॉटल में

देखिये यह कैसे उपयोग में आये



धोने के बाद, फिर उपयोग के लिए तैयार!

इनमें रखिये—दाल, चीनी, मसाले, तेल आदि बार-बार!

यह वाटर बॉटल के रूप में—आपके बच्चों के साथ स्कूल भी जाए।

पॅराशुट, नये सजीले प्लास्टिक वाटर बॉटल में लीजिए।

पॅराशुट



बच्चों के साथ स्कूल भी जाये

होंगी, अंजलि का खयाल था.

रात को घर पहुंचने में देर हो जाती थी, इसलिए वे लोग शाम को ही चले जाते थे.

"यह क्या, शलजम की सब्जी! और यह मटर पनीर और कबाब किस के लिए रखे हैं? एक दिन अजय ने अपनी प्लेट सरकाते हुए कहा था, 'शलजम और पालक का साग मुझे नहीं अच्छा लगता."

"हां, भैया, मुझे भी नहीं अच्छा लगता," ममता ने उस की हां में हां मिलाते हुए कहा था.

"हम में से किसी को भी अच्छा नहीं लगता." विजय ने नारा लगाया था.

इस पर सुनीति ने डांट कर कहा था, "यह सब मेहमानों के लिए है, शाम को उन का खाना है."

"मां, आज कौन आएंगे?"

"माथुर साहब और उन का परिवार."

"वे लोग तो कशमीर गए हुए हैं. भोजन करने वे यहां आएंगे क्या?" अजय कहतेकहते जोर से हंस पड़ा था.

सुनीति का मुंह उतर गया था. मगर फौरन ही उस ने संभल कर कहा था, "वह माथुर नहीं, दूसरे माथुर हैं. तुम्हारे पिताजी के दफ्तर में नए आए हैं."

"क्या सचमुच आएंगे मां, या पिछली बार की तरह ही होगा, जब आप ने कहा था कि सहाय चाचाजी आने वाले हैं. तब आइसक्रीम और कोफ्ते रखे रह गए थे. पिताजी ने देखा तो रात को तुम से कहा था, "ममता और नम्रता चली गईं, तुम ने पहले क्यों नहीं दिया?"

सुनीति ने चिढ़ कर उसे एक चपत लगा दी थी. फिर उसे समझाया था, "तुम्हें चाहिए तो चुपचाप ले लेना, जब और बच्चे न देखें. सब को कहां तक दें?"

अंजलि ने सुन लिया था और समझ लिया था कि उन लोगों का आना जेठानीजी को अच्छा नहीं लगता.

अब रविवार को उन का आना बंद हो गया था. अब कभी शाम को 15-20 दिन बाद आ जाते वे लोग.



दीवाना

लोग मुझ को कहते हैं
आप ही का दीवाना,
आप ने भी लोगों का
साथ दे दिया होता.
—सबा आफगानी

जगदीश के शंका करने पर सुनीति ने कहा था, "अब उन लोगों का इतनी दूर से आनाजाना आसान तो नहीं रह गया. पैसे खर्च होते हैं, समय लगता है. बच्चे भी बड़े हो रहे हैं, उन के सौ काम रहते हैं. एक यही काम तो नहीं कि भाईभाभी के पास दिन बिताएं. अब ब्रजेश हमेशा थोड़े ही आप के लिए वही रहेगा. अपना घरपरिवार पहले है उस को." सुनीति के कथन में व्यंग्य छिपा नहीं रह गया था.

संबंध निबाहने के लिए भी पैसा चाहिए. मगर संबंधों की मिठास पैसे पर ही तो नहीं निर्भर हो जानी चाहिए. जगदीश सोचता रहा था.

"कहीं जा रहे हैं क्या?"

सुनीति के पूछने से पहले ही जगदीश कार स्टार्ट कर चुका था. घर में घुसते समय वह कार फाटक के बाहर ही छोड़ आया था. सुनीति ने उसे बाहर निकलते नहीं देखा. आवाज सुन कर ही बाहर आई थी. उस ने आश्चर्य से देखा, जगदीश बिना कुछ कहे ही चला गया था.

ममता और नम्रता ने दूर से देख कर ही आवाज लगाई, "मां, बड़े बाबूजी आए हैं."

"कहीं जाने की तैयारी है क्या?" ममता व नम्रता को बाहर जाने के लिए तैयार देख कर जगदीश ने पूछा.

"हां, बड़े बाबूजी," कह कर दोनों एकदूसरे की आंखों में देख कर मुसकराईं.

अंजलि पैर छूने को आगे बढ़ी तो जगदीश ने दूर से ही रोकते हुए पूछा, "क्या बना रही हो? बड़ी अच्छी सुगंध आ रही है."

"जी, ऐसे ही... अभी लाती हूं."

"हां... हां, जरूर ले आओ. सुगंध से ही मन ललचाने लगा है. क्या ब्रजेश नहीं आया अभी?"

"जी, दफ्तर के काम से कहीं बाहर गए हुए थे. अब बस आ ही रहे होंगे."

"हां तो नीतू, मीतू, कहां की तैयारी थी तुम लोगों की?" जगदीश प्यार से प्रायः उन्हें नीतू, मीतू कहा करता था, "क्या पिक्चर देखने जा रही हो?"

"नहीं तो." दोनों ने आंखोंआंखों में निर्णय लिया कि बड़े बाबूजी को रहस्य से अवगत कराना है या नहीं. फिर निर्णय ले कर नम्रता से कहा, "हम तो आप के पास ही आ रहे थे."

"और पता है मां ने क्या बनाया है? मालपूए. आप को अच्छे लगते हैं न?" ममता बोली.

"आप को बहुत बड़ी तरक्की मिली है न, बड़े बाबूजी. मां ने थोड़ी देर पहले ही पड़ोस में अखबार देखा था. उस में आप की फोटो भी थी. मां ने कहा था कि आज वह आप की मनपसंद चीज बनाएगी, वही सब को खिलाएगी."

जगदीश बच्चों की बातें मगन हो कर सुन रहा था. उस की आंखों में चमक बढ़ती जाती थी.

"और, बड़े बाबूजी, आलूमटर के समोसे भी बनाए हैं. मां कह रही थी कि वहां मिठाई वगैरह तो बहुत आई होगी. हम बड़े बाबूजी की पसंद की चीज बना कर ले चलेंगे."

"अच्छा! मुझे यहीं ला कर दो न, वहां तो बहुत से लोग होंगे. फिर मुझे क्या मिलेगा?"

"मां ने सब के लिए ढेर सा बनाया है. पिताजी की प्रतीक्षा कर रही हैं. वह अभी आने वाले हैं."

तभी अंजलि प्लेट में गरमगरम मालपूए और समोसे ले कर आ गई. तभी ब्रजेश भी आ गया.

"चलो, फिर जल्दी चलें, वहीं सब लोग मिल कर खाएंगे," जगदीश ने ब्रजेश की ओर देख कर कहा.

क्रोध से सुनीति का चेहरा लाल हो रहा था. जगदीश को देखते ही वह बोली, "वहां जाना था तो मुझ से कह दिया होता, क्या मेरे जाने से बुराई हो जाती? या मुझ से यही कह देते कि सब को लेने जा रहा हूं..."

सुनीति की बात खत्म होते ही जगदीश बोल उठा, "मालपुओं की महक आई कि नहीं, सुनीति? अंजलि लाई है. कहती है जीजी को बहुत पसंद हैं."

"आएगी कैसे, बड़े बाबूजी? वह तो बंद है. बंद डब्बे से महक कैसे आएगी?" ममता बोली.

"लाओ, हम डब्बा खोल देते हैं, फिर तो महक भर जाएगी." जगदीश जैसे कह उठा हो, "कटुता का ढक्कन उठा दो. तब तो प्यार की सुगंध मिलेगी."

"अरे, इतना सारा!"

"हां, जीजी, खुशी भी तो इतनी थी." ●

ईर्ष्या

ईर्ष्यायुक्त मनुष्य के हृदय में सदा जलन और दुख बने रहते हैं. उस का मुख सदा विष उगला करता है.

—'जीवन का सद्व्यवहार' से

हिंदी की बिंदी

किस के माथे पर

लेख • डा. अनिलकुमार मिश्र

आए दिन पत्रपत्रिकाओं में हिंदी के पक्षविपक्ष में रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं. किसी में हिंदी की देशव्यापी स्थिति का चित्रांकन होता है तो कोई उस के राष्ट्रीय औचित्य का डंका बजाता है. कोई उसे लोकप्रियता की बहन कहता है तो कोई उस की सामाजिक स्थिति पर घड़ियाली आंसू बहाता है. कोईकोई महानुभाव तो हिंदी के उस रूप की वकालत करने लगते हैं जो संविधानसम्मत है. यही नहीं, हिंदी दिवस पर अनेक लंबेलंबे शायराना भाषणों में राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में हिंदी का वरण किया जाता है.

पर रचनात्मक तथा व्यावहारिकता से सभी कोसों दूर हैं. इस के निमित्त आवश्यकता है आत्मालोचन और आत्मशोधन की. सो किसी के पास इस के लिए समय नहीं. लगता है हिंदी की स्थिति बहुत कुछ भारत विभाजन की तरह है. भारत के विभाजन के समय भी विभाजन के विरोध में नाना प्रकार के तर्क प्रस्तुत कर 'जनानिस्तान' सदृश लेख प्रकाशित किए गए थे. हमारे नेता वाक्युद्ध में उलझे रहे



और उन शक्तियों के विरुद्ध मोर्चा तैयार नहीं किया, जो पाकिस्तान बनाने में मनोयोग से संलग्न थीं. हमारे विद्वत्तापूर्ण समस्त लेख, व्याख्यान और तर्क व्यर्थ सिद्ध हुए. भारत का विभाजन हो कर रहा.

हिंदी प्रेमियों की हिंदी

क्या आज हिंदी की स्थिति भी ऐसी नहीं? बौद्धिक स्तर पर तो हिंदी के महत्त्व को सभी स्वीकार करते हैं. कहने को पंचों की राय सिर माथे, लेकिन व्यवहार में 'परनाला यहीं गिरेगा' वाली बात है. इसलिए पंचों की राय मनवाने के स्थान पर आवश्यकता इस बात की है कि परनाले को गिरने से रोका जाए, जिस के लिए ऐसे पंच अपेक्षित हैं, जिन की राय ठुकराने का साहस किसी में न हो सके.

यहां पंचों से तात्पर्य हिंदी प्रेमियों से है. यहां तथाकथित हिंदी प्रेमियों के हिंदी प्रेम का विश्लेषण करना अप्रासंगिक न होगा. इस संबंध में लेखक के गुरुजी ने हैदराबाद सम्मेलन का एक किस्सा सुनाया, 'हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्राण,' 'हिंदी के कर्णधार' और भी न जाने क्याक्या कह कर हम जिन पुरुषोत्तमदास टंडन का गुणगान करते नहीं अघाते, उन्हीं टंडनजी का अपमान एक साहित्यिक ने भरी सभा में कर दिया, तब हिंदी के किसी भी महारथी में इतना साहस न हुआ कि उस व्यक्ति को जवाब देता या प्रताड़ित करता. हां, इतना अवश्य हुआ कि जब तक तत्संबंधी प्रस्ताव पारित होता, तब तक जनता हिंदी वालों की उस लीला को साष्टांग दंडवत कर उस सभा मंडप को खाली कर चुकी थी.

वस्तुतः आज देश में हिंदी के अनेक विद्वान ऐसे हैं, जो अंगरेजी के माध्यम से लेखक बने हैं. यदि ऐसा न होता तो 'साहित्य अकादमी' की नहीं, 'साहित्य सभा' या 'साहित्य परिषद' की स्थापना की गई होती.

दूसरे लेखक वे हैं, जो ब्रिटेन के मानसपुत्र हैं. वे पहले अंगरेजी में सोचते हैं, तत्पश्चात हिंदी में लिखते हैं. शायद इसी लिए वे विद्यापीठ को स्त्रीलिंग में प्रयुक्त करते हैं–अंगरेजी शब्द 'यूनिवर्सिटी' की तरह.

तीसरे प्रकार के हिंदी लेखकों की मातृभाषा और पितृभाषाएं भिन्नभिन्न... 'बेसिक शिक्षा,' 'सुपर बाजार,' 'सीता मार्केट' आदि ऐसे ही लेखकों की देन है.

आइए, अब जरा सुशिक्षित और सुसंस्कृत लोगों की भाषा पर ध्यान दें: 'डाक्टर साहब, आप उस मीटिंग में ... नहीं थे. बड़ा ही इंटरेस्टिंग डिस्कशन हुआ. मैं स्पीकर के पाइंट आफ व्यू से एग्री नहीं कर सका और मैं ने फोर्सफुल स्पीच दी. आडिएंस वाज मूव्ड कंपीलीटली एंड हाउस वाज इन माई फेवर."

ये सुशिक्षित लोग 'प्रयास' नहीं 'ट्राई' करते हैं, पार्टी में कभी उपस्थित नहीं होते, उसे 'अटेंड' करते हैं. किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान को ये 'पसंद' नहीं 'लाइक' करते हैं.

यदि हिंदी प्रेमी अध्यापकों की ओर दृष्टिपात किया जाए तो कितनी सुंदर बानगी सामने आती है–"'सपोज' कीजिए ए बी सी एक 'ट्राइएंगल' है तो 'प्रूव' करना है कि इस की तीनों भुजाओं के मध्य बिंदुओं को मिलाने वाली रेखाएं एक स्थान पर काटेंगी."

अब जरा उन हिंदी अध्यापक से भी मिलिए, जो 'लाइब्रेरी' जा कर 'लाइब्रेरियन' से 'टाक' करते हैं और वहां के 'बुक्स' ले कर छात्रों को 'टीच' करते हैं.

एक पंडितजी ने एक छात्रा से पूछा, "तुम लिखते समय बिंदी क्यों नहीं लगातीं?"

अध्यापक का आशय अनुस्वार से था. छात्रा ने उत्तर दिया, "बिंदी लगाना तो दकियानूसी सभ्यता की निशानी है. अब हम हिप्पी संस्कृति की ओर बढ़ रहे हैं. अब बिंदी वगैरह नहीं लगाई जाएगी. हम एडवांस हो रहे हैं."

यह उत्तर सुन कर अर्द्धविराम आदि के बारे में पूछने का पंडितजी का साहस ही न हुआ.

शायद इसी प्रगतिशीलता का यह परिणाम है कि मां 'मम्मी' और 'मम,' पिता 'पापा' और 'डैड,' चाचा 'अंकल,' चाची 'आंटी,' बहन 'सिस्टर' हो गई है. प्रगतिशीलता की अंधी दौड़ में हम 'मां' शब्द की 'ममता,' 'पिता' का 'वात्सल्य,' 'बहन' का स्नेह सब कुछ विस्मृत करते जा रहे हैं. 'साले' को 'ब्रदर इन ला' बना कर हम ने सारा मजा किरकिरा कर दिया है.

जब हम हिंदीभाषी हिंदुस्तानियों के घरों का यह हाल है, तब बाहर के नजारे को क्या कहें.

आज के 'हिंदी अधिकारी' बैंक जा कर 'फिक्स्ड डिपाजिट' में रुपए 'डिपाजिट' करते हैं.

आज के छात्र भी बी. ए. और एम.ए. पास होते हैं, क्योंकि विश्वविद्यालयों की ओर से उन्हें 'बैचलर आफ आर्ट्स' और 'मास्टर आफ आर्ट्स' की उपाधियां दी जाती हैं, 'स्नातक' या 'परास्नातक' की नहीं.

जब छात्रों और अध्यापकों का यह हाल है, तब कविमनीषी इस आंग्ल प्रभाव से कैसे बच सकते हैं? आज की मंचीय कविता तो अंगरेजी के इंजन से ही वाहवाही लूटती है. उदाहरणार्थ:

"आजकल की तियन कौं, बहुत पियन की चाह,
मरचंटन सौं पूछतीं, है लिपटन की चाह."

श्लेष से आश्लेष का सुखानुभव करना ही आज की कविता है, जिस के लिए शायद अंगरेजी शब्दावली का प्रयोग ही रह गया है.

सच पूछ जाए तो हमारा हिंदीप्रेम उस व्यक्ति के समान है, जो जागते हुए भी सोने का बहाना बनाता है. बुलाने पर भी बोलना नहीं चाहता.

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल' के अनुसार अपनी, अपने देश की उन्नति के लिए सर्वप्रथम भाषा की उन्नति परमावश्यक है. हमारा यह कर्तव्य होना चाहिए कि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक इत्यादि सभी क्षेत्रों में हिंदी को इतने आकर्षक रूप में प्रस्तुत करें, जिसे सभी की आंख निहारे. यहां आकर्षण से तात्पर्य यह नहीं कि हिंदी में कोई आकर्षण नहीं, जैसा कि नेतागण अपनी अल्पज्ञता का परिचय देते हुए कह बैठते हैं कि हिंदी समृद्ध नहीं, प्रत्युत तात्पर्य यह है कि प्रशासनिक

"बिंदी लगाना तो दकियानूसी सभ्यता का निशानी है. अब हम हिप्पी संस्कृति की ओर बढ़ रहे हैं," छात्रा की बात सुन कर पंडितजी हैरान रह गए.



स्तर पर विभिन्न रोजगारों में हिंदी को प्राथमिकता दीं जाए, अंगरेजी को नहीं. अंगरेजी का उतना ही महत्त्व अपेक्षित है, जितना एक विदेशी भाषा का होता है. भाषा और साहित्य का अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करना तो श्रेयस्कर है, पर उसे ही सर्वोपरि मान कर अपनी भाषा को उपेक्षित कर देना उचित नहीं. अन्य शब्दों में हमें उन कारणों का निराकरण करना चाहिए, जिन के आकर्षण में हम बच्चों को अंगरेजी माध्यम से पढ़ाते हैं. ये आकर्षण हैं— पदप्रतिष्ठा और पाठ्यक्रम की सुगमता.

सभी अपने बच्चों को उच्च पदासीन देखना चाहते हैं. आज कितने उच्च पद ऐसे हैं, जिन में प्रत्याशी के हिंदीप्रेम को देखा जाता है? जिन परीक्षाओं में बड़े ही एहसान के साथ हिंदी में उत्तर देने की सुविधा प्रदान की गई है, उन में कितने हिंदी वालों का चयन हुआ है?

जहां तक पाठ्यक्रम का प्रश्न है, प्रारंभिक शिक्षा से ले कर उच्च शिक्षा पर्यंत हिंदी माध्यम से समस्त विषयों का पाठ्यक्रम अंगरेजी माध्यम के पाठ्यक्रमों से गयाबीता है. अंगरेजी माध्यम के कानवेंट स्कूलों के पाठ्यक्रमों में जो सुगमता, सरसता एवं सरलता है, वह हिंदी माध्यम के किसी भी स्कूल में नहीं.

अब यदि हम अपना पाठ्यक्रम अंगरेजी माध्यम के पाठ्यक्रम सदृश सुबोध बनाने में असमर्थ हैं तो हमें उस पाठ्यक्रम का अनुवाद ही कर लेना चाहिए. इस अनुवाद कार्य में किसी प्रकार की अप्रतिष्ठा नहीं है, क्योंकि आज के प्रगतिशील युग में पगपग पर हमारा जीवन पाश्चात्य 'फैशन' से प्रभावित है, तब अनुवाद में ही हिचक क्यों?

अंगरेजी के जो शब्द हमारे दैनिक जीवन तथा बोलचाल में घुलमिल गए हों, उन को हिंदी में स्वीकार करना ही उचित है. यथा— 'स्टेशन' का हिंदी रूपांतर यदि हम नहीं खोज पाए हैं तो 'स्टेशन' को यथावत स्वीकार करने में आपत्ति क्यों? निन्यानवे प्रतिशत लोग 'स्टेशन' का खुल कर प्रयोग करते हैं, चाहे वे अशिक्षित हों या शि... हिंदी के पक्षपाती हों या अंगरेजी के...

इसी प्रकार मारकीन, क... हैंडलूम, स्वेटर, सूट, फ्राक, ब्रश, ... पाउडर, क्रीम, बिस्कुट, बेंच, ... रिकार्ड, फिल्म, गैस, रेडियो, ट्रां... लाइसेंस, सीमेंट, स्कूटर, बस, नोट, ... बैंक, बल्ब, मशीन, इंजन, चैक, ... पायरिया, निमोनिया, बिल, जज, कल... डिप्टी, कांग्रेस, वोट, कार्ड, एम.आई... रिवाल्वर, कारतूस, पास, टि... किलोमीटर, ग्राम, हाईस्कूल, इंटर, बी... एम.ए., इंच, मेल, ब्रेक, रेल, ... कंडक्टर, जीप, टैक्सी, ट्रैक्टर, ए... हीरो, रन, क्रिकेट, आउट आदि शब्दों... बिना क्या दैनिक जीवन में गुजारा ... सकता है?

दूसरे, इन का लोकप्रिय हिंदी रूपां... एक समस्या है. फिर क्यों न इन्हें स्वी... कर इन को हिंदी का ही अंग मान लिया जा... लेकिन हमें इन का प्रयोग हिंदी के व्याक... के अनुसार ही करना पड़ेगा. यदि ह... 'स्वेटर' शब्द को बहुवचन में प्रयुक्त कर... चाहते हैं तो 'स्वेटर' या 'स्वेटरों' कह... होगा, 'स्वेटर्स' नहीं.

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि प्रत्ये... भाषा दूसरी भाषा के शब्दों को ग्रहण कर... है. अंगरेजी शब्दकोश में आप को कितने ही... हिंदी के शब्द मिल जाएंगे. लेकिन अंगरेजी... भाषी दुनिया भर की भाषाओं के शब्दों को... ग्रहण करते हुए भी हम हिंदी भाषियों की... तरह अपनी भाषा को बोलते हुए खिचड़ी... भाषा नहीं बनाते.

भिन्नता में एकता और विदेशी... संस्कृतियों को आत्मसात कर अपने रंग में... रंगने की हमारी विशेषता सदा से रही है... फिर भाषा के संबंध में ही यह विवाद क्यों?... साथ ही, जब हिंदी भाषा में अरबी, फारसी... पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के अनेक... शब्द घुलेमिले हैं, तब अंगरेजी भाषा के... लोकप्रिय शब्दों को स्वीकार करने में हिचक... क्यों?

सुरेश अपनी ही चिंता में घुला जा रहा था तो मां बाबूजी को अपना ही संशय खाए जा रहा था. मेरे अंदर भी पति के देर से घर लौटने का संशय था. अंत में मैं ने दृढ़ निश्चय के साथ ऐसा रास्ता अपनाया कि सब का एकदूसरे पर विश्वास जम गया.

कहानी

• अरुण अलबेला

संशय



जब मैं बहू बन कर आई थी, तब सास-ससुर मेरे रूपगुण की लौ से पिघलते चले गए थे पर पिंकी के जन्म लेते ही वे बर्फ सा जमने लगे.

मुझे सहसा उन के रवैए में आए परिवर्तन पर विश्वास नहीं हुआ था. लगा था, जैसे मुझ से प्यार भरे गुलदस्ते छिने जा रहे हैं. मैं चाहती थी, मेरी सेवाशुश्रूषा व कर्तव्यपरायणता से साससुर प्रसन्न रहें. बदले में वे मुझे अपना स्नेह दें. प्यार से पुकारें. मेरे कार्यों की प्रशंसा करें. मुझे खुशियों से भरते रहें. मैं सदा सास से मनुहार करती रहूं, "मांजी, आप मेरे हर काम में हाथ न बंटाया करें. आप को अब आराम की आवश्यकता है."

पर एक साल बाद दूसरी लड़की के जन्म लेते ही मेरी ये आशाएंआकांक्षाएं चकनाचूर हो गई थीं.

सास की भृकुटी तन गई थी. नथुने फूल उठे थे. स्वर में तीखापन आ गया... ससुर सिर हाथ रखे घंटों कुरसी पर बैठे... थे, मानो मैं ने कोई बड़ा सा शिलाखंड... सिर पर रख दिया हो. मुझे लगा था, मैं... ने उन दोनों को उन के प्यार, स्नेह... वात्सल्य के बदले पिंकी और पप्पी के... जहर के प्याले थमा दिए हों.

सास ने पड़ोस के माधव... भारीभरकम शरीर वाली पत्नी से... कर कहा था, "लगता है, बहू बेट... वाली नहीं."

यह सुन कर मुझे अपनी मृत...

याद हो आई थी; उन्होंने भी मेरी मां के बारे में ऐसा ही कहा था. तब मैं सात साल की थी.

मेरी छोटी बहन बेला के जन्म के बाद मेरी मां के कोई बच्चा नहीं हुआ था. तब दादी की बातों में आ कर मेरे पिता ने दूसरी शादी कर ली थी और उस से उन्हें दो लड़के हुए थे.

मेरे अंदर भी संशय व्यापने लगा था कि कहीं सुरेशजी भी अपनी मां की बातों में आ कर मुझ से रूखा व्यवहार न करने लगें और सिर्फ बेटे की चाह पूरी करने के लिए दूसरा विवाह करने की न सोच बैठें.



बड़ी होते ही मैं ने अपने कार्यों से पिताजी को दिखा दिया था कि बेटी होना कोई गुनाह नहीं है. शिक्षा समाप्त कर मैं नौकरी करने लगी थी और विमाता से हुए उन के बेटों को पढ़ने में सहायता दी थी.

पिताजी की गृहस्थी को सुचारु रूप से चलाने में भी मदद किया करती थी तथा अपनी छोटी बहन बेला का विवाह भी मैं ने ही किया था.

नतीजा यह हुआ कि पिताजी ने मेरी मां से ही नहीं, बल्कि मुझ से भी माफी मांगी थी और मां को सारे अधिकार दे दिए थे.

मां के गुजरने के बाद ही मैं ने अपनी गृहस्थी बसाने के लिए सुरेशजी से विवाह किया था और नौकरी छोड़ अपनी ससुराल चली आई थी तथा दत्तचित हो कर साससुर की सेवा में लग गई थी. पर जब मेरी कोख से भी लड़कियों ने जन्म लिया तो ससुराल का वातावरण ही बदल गया.

साससुर की बातें सुन कर मैं हीन भावना से ग्रस्त होने लगी थी. सुरेशजी की निराशा देख कर मेरे हृदय की धड़कनें बढ़ने लगी थीं और मैं बारबार यही सोचती रहती, 'कहीं वह मुझ से रूखा बरताव न करने लगें.'

सुरेशजी मुझे बहुत प्यार करते थे, पर उन्हें यदाकदा उदास, खोयाखोया सा देख कर मैं संशय में पड़ जाती थी.

ससुर पुराने विचारों के थे. एक फैक्टरी में सुपरवाइजर थे. उन की ड्यूटी सुबह छः बजे से ले कर दोपहर दो बजे तक रहती थी. सुबह चार बजे का अलार्म होते

ही वह 'बम भोलेनाथ' की आवाज लगाते हुए उठ जाते और नित्यक्रिया से निवृत्त हो फैक्टरी जाने की तैयारियां शुरू कर देते थे.

यह कहने में मुझे जरा भी संकोच नहीं कि पिंकी, पप्पी के होने से पूर्व मैं भी 'बम भोलेनाथ' की आवाज के साथ ही उठ जाया करती थी. उठते ही अंगीठी जलाती और नाश्ता तैयार कर ससुर को देती थी.

"तुम मेरा कितना खयाल रखती हो, बहू," कह कर वह खुशीखुशी नाश्ता करने लगते थे.

फैक्टरी का साढ़े पांच का सायरन होते ही वह अपनी पुरानी साइकिल निकाल कर फैक्टरी की ओर चल देते थे. छः बजते ही सुरेशजी उठते थे. वह एक दफ्तर में काम करते थे. उन्हें सुबह आठ बजे दफ्तर जाना होता था. वह शाम को पांच बजे लौटते थे. उन्हें ज्यादा वेतन नहीं मिलता था. भविष्य निधि, जीवन बीमे के प्रीमियम का रकम कटने के बाद हाथ में सातआठ सौ ही मिल पाते थे.

ससुर फैक्टरी के पुराने कर्मचारी थे. हजार से ऊपर मिलते थे. घर का खर्च ठीकठाक चल जाता था.

पर पिंकी और पप्पी के होने के बाद घरेलू परिस्थितियों में परिवर्तन आने लगा था.

पप्पी सातआठ माह की हो चली थी. वह रात में उठ जातीं. दूध के लिए रोती.

उधर से सुरेशजी अपने दांपत्य अधिकार के लिए मुझे तंग करते. कहते, "मां और बाबूजी को खुश रखने के लिए शीघ्र लड़का होना जरूरी है."

मैं चिढ़ जाती, "अगर लड़कियां ही रहें तो क्या हर्ज है?" पर मैं मन ही मन संशय से कांप जाती कि कहीं सुरेशजी भी मेरे पिता की तरह कदम न उठा बैठें.

मुझे मालूम था कि उन के दफ्तर में दीपा नाम की एक लड़की काम करती है, जो उन के साथ कालिज में पढ़ती रही है.

मैं सुरेशजी को खुश रखने का पूरा प्रयत्न करती ताकि वह मुझ से विरक्त इस तरह रात में मेरी नींद पूरी नहीं हो थी.

मैं सुबह उठना चाहती, पर पाती.

मेरी यह हालत देख सास का चढ़ने लगा. वह भी कामकाज से हाथ लगीं. यदाकदा अंटसंट बकना जारी

इस के बावजूद मैं 10 बजे तक तैयार कर देती. टिफिन ले जाने वाला व पति के लिए टिफिन ले जाता.

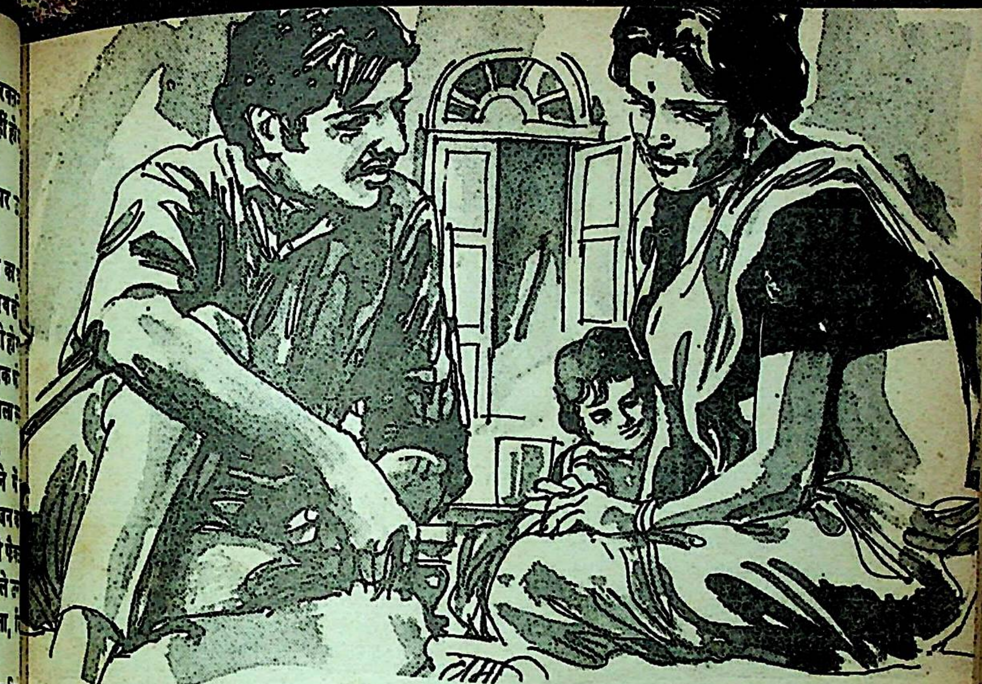
घर का कामकाज निबटाने में दोपहर बीत जाती, तब कहीं भोजन का अवसर मिलता. ससुर ढाई बजे फैक्टरी से लौटते. सुरेशजी पांच बजे. पहले लिए नाश्ता तैयार करना पड़ता, खाना.

मैं पिंकी और पप्पी की ओर ध्यान नहीं दे पाती थी. सास से इतना नहीं होता था कि वह उन दोनों का हाथ धो कर उन्हें कपड़े पहना दें. उलटे अंदर सदा असंतोष छाया रहता. उन्हें पहले वाली बहू चाहिए थी, जब बच्चियां नहीं हुई थीं, जब वह दिन भर रुके उन की सेवा में लगी रहती बच्चियों के होते ही सेवा में जब व्यवधान आया तो मैं बुरी हो गई.

मैं जब सुबह नाश्ता तैयार करने लिए नहीं उठ पाती तो ससुर झल्ला उठते "तुम तो घोड़ा बेच कर सोती रहो. फिक्र किसे है? यह भी नहीं होता कि तैयार कर दे. कैंटीन की चाय अच्छी है क्या?"

फिर संशय प्रकट करते, "अभी से हाल है. पता नहीं अवकाश प्राप्ति के कोई पूछेगा भी या नहीं."

सास मेरी स्थिति पर विशेष ध्यान दे कर ससुर का ही समर्थन करतीं, " तक कमाते हो, थोड़ाबहुत मानआदर है फिर कौन पूछेगा. मैं बूढ़ी हो गई हूं. मुझ इतनी शक्ति नहीं कि तड़के उठ कर आप लिए चायनाश्ता तैयार कर सकूं. बहू को



"तुम्हें सुबह उठ कर बाबूजी के लिए नाश्ता तैयार कर देना चाहिए. पांचछः माह उन की नौकरी रह गई है. फिर तुम मेरे लिए छः बजे उठ कर नाश्ता तैयार करना या न करना." मेरे पति सुरेश उलटे मुझे ही समझाने लगते तो मैं खीज उठती.

होते हुए भी दो बच्चियों का बहाना कर के सोई रहती है."

मैं मन ही मन उफन उठती. फिर गंभीरता धारण कर सुरेशजी की ओर देखती.

लेकिन वह मुझ से हमदर्दी जताने के स्थान पर बोल उठते, "तुम्हें सुबह उठ कर बाबूजी के लिए नाश्ता तैयार कर देना चाहिए. पांचछः माह और उन की नौकरी रह गई है. फिर तुम मेरे लिए सुबह उठ कर चाहे नाश्ता तैयार करना या न करना."

मैं मन ही मन झुंझला उठती, 'दिन भर घर के कामकाज में जूझती रहती हूं. कोई पूछने वाला भी नहीं कि कब खाती हूं, कब सोती हूं, कैसे रहती हूं. मांजी पिंकी, पप्पी को संभाल लेतीं तो क्या मुझे जरा भी आराम न मिलता?'

ससुर बातबात में 'अवकाश प्राप्ति के बाद क्या होगा' की रट लगाते रहते. मुझे यह तनिक भी अच्छा नहीं लगता था.

सुरेशजी के स्वभाव से लगता कि वह प्रत्यक्ष रूप से मातापिता का और परोक्ष रूप से मेरा समर्थन कर रहे हैं.

मुझे उन का रहनसहन, बातचीत और स्वभाव भी बनावटी लगता.

कभीकभी ऐसा भी लगता कि वह अपने हावभाव से मातापिता को खुश करना चाहते हैं ताकि पिता के रिटायर होने पर उन के फंड के रुपए उन के हाथ लग सकें.

ससुर यदाकदा झल्ला कर कहते, "मुझे समझ में नहीं आता कि मेरे अवकाश प्राप्त कर लेने के बाद सुरेश किस तरह कम वेतन में हमारा भरणपोषण कर सकेगा."

सुरेशजी कहते, "इस की चिंता आप क्यों करते हैं, बाबूजी? जो मैं खाऊंगा, सो आप को खिलाऊंगा."

सास कह देतीं, "दोदो बेटियों के लिए रुपए रखेगा या हम पर खर्च करेगा?"

सुरेशजी भन्ना कर रह जाते. मैं मन ही

मन जलभुन जाती. रूखासूखा जीवन साससमुर को पसंद नहीं था. ससुर को अच्छा खानेपहनने का शौक था. भोजन में तीन सब्जियां होनी ही चाहिए. चटनी, अचार, पापड़ भी होना चाहिए.

अच्छा खानेपहनने में सारा वेतन खर्च हो जाता था. बचत के नाम पर कुछ नहीं था.

साससमुर चाहते थे, अवकाश प्राप्ति के बाद का जीवन भी ठाट का हो.

उन के अवकाश प्राप्त मित्र माधवजी बातबात में उन्हें कहते, "मुकुंद भाई, तुम फंड के सब रुपए बैंक में जमा कर देना, तभी मानआदर होगा. जमाना ऐसा है कि कोई खाली हाथ वालों को नहीं पूछता. आजकल की बहुएं बेटों की नकेल अपने हाथ में रखती हैं. सुरेश तो तुम्हारा भार संभालने से रहा."

यह सुन कर सुरेशजी उदास हो जाते. शायद इसलिए कि उन के वेतन से इतने बड़े परिवार को ठाट से रखना आसान नहीं था. वह चाहते थे कि बाबूजी के फंड के रुपयों को किसी ऐसे मद में लगाएं जिस से आमदनी होती रहे और वह घर में बैठ कर बोर न होते रहें. पर ससुर फंड के रुपए कहीं न लगा कर बैंक में रखना चाहते थे.

साससमुर के विरुद्ध सुरेशजी से मुझे कुछ कहने की हिम्मत नहीं होती. सोचती, कहीं वह बिगड़ न उठें. कभी उन का व्यवहार बड़ा रूखा होता. वह दफ्तर से पांच बजे न आ कर रात के आठ बजे लौटते. मेरा संशय मुझे ही खाए जाता. कहीं सुरेशजी दीपा के साथ न घूमते रहें... कहीं फिल्म... रेस्तोरां... पार्क...

सास सुबह उठतीं. नित्यक्रिया से निवृत्त हो प्रतिदिन थैला उठती और माधवजी की स्थूलकाय पत्नी या दोहरे बदन वाली सरदारनी के साथ सब्जी मंडी चल देतीं.

दो घंटे बाद वह लौटतीं. स्नान कर खाना खातीं और फिर माधवजी के घर जा बैठतीं. घरेलू कामकाज से उन्हें मतलब नहीं था. मैं खीजखीज कर काम निबटाती रहती.

किंतु सुरेशजी या ससुर को देख कामकाज में यों व्यस्त हो जातीं मानो घर का सारा बोझ उन्हीं पर हो. अपनी पत्नी को व्यस्त देख कर ससुर चिढ़ जाते.

सुरेशजी कहते, "मां को कामकाज से रोकती क्यों नहीं?"

मैं सफाई में कुछ कहना चाहती, ससुरजी कहते, "मैं सब समझता हूं. लि बाल यों नहीं पकाए. फैक्टरी में यह बूढ़ा हो गया कि कौन मजदूर काम वाला है, कौन नहीं."

सास भी ताने मारतीं, "सुपरवाइजर ऐसे ही नहीं हो गए. सब की रगरग पहचानते हैं."

सुरेशजी जैसे सब देख कर भी रहना चाहते थे. मैं पूछती, "आप इतने गंभीर, मौन और खोएखोए क्यों रहते हैं?"

वह शांत स्वर में कहते, "गंभीर रह कर जमाने को देखता हूं, मौन रह कर सब की सुनता हूं और सिवा खोए रहने के क्या धरा है?"

मैं पूछती, "आप दफ्तर से छूटने पर सीधे घर क्यों नहीं आते?"

"घर के वातावरण से मन ऊब जाता है. सोचता हूं, दो पल बाहर रह कर ही गुजार लिया करूं ताकि मन को शांति मिले

सजा

सैकड़ों चरागों को
हम से अब शिकायत है,
हम ने यह सजा पाई है
एक दिया जलाने की.

—तारिक बदायूंनी



"क्या अकेले घूम कर मन बहलाया जा सकता है?" मैं जानना चाहती थी कि क्या वह सचमुच अकेले घूमते हैं? क्या दीपा उन के साथ नहीं होती? पर वह कोई जवाब न दे कर चुप रह जाते. मेरा संशय और बढ़ जाता.

घर के वातावरण को देख कर मुझे भी कभीकभी लगता, सुरेशजी का मानसिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है. मैं उन्हें उदास, पीड़ित या बौखलाया हुआ देखती तो अशांत हो जाती. मुझे लगता, वह कहीं न कहीं से टूट रहे हैं. उन का स्वभाव बदलता जा रहा है. उन का स्वर बेसुरा हो रहा है.

उन का बदलाव विस्फोटक स्थिति न धारण कर ले, इस के लिए तैयार होना जरूरी था. एक दिन मैं ने दृढ़ स्वर से पूछ ही लिया, "ऐसा कब तक चलेगा?"

"क्या?"

"आप का बुझाबुझा रहना."

वह तिलमिलाए गए, "तुम जानना चाहती हो न, तो सुनो. मैं सोचता हूं बाबूजी के अवकाश प्राप्ति के बाद कैसे संभाल सकूंगा इस परिवार को. ऊपरी आमदनी का स्रोत है नहीं. मां और बाबूजी को अपना ही संशय खाए जा रहा है. वे पहले अपनी सुविधा देखना चाहते हैं. यह सच है कि वे अपने बुढ़ापे की स्वतंत्रता में हमें विघ्न समझते हैं या डरते हैं कि फंड के रुपए मैं लेने की जिद न करूं. माधवजी जैसे लोग उन्हें आशंकाओं से भर कर गुमराह कर रहे हैं. लेकिन सच मानो, सुमन, मेरे हृदय में उन के पैसे के प्रति जरा भी लोभ नहीं है. मैं बस इतना चाहता हूं कि वे अपना धन किसी लाभकारी योजनाओं में लगाएं, जिस से आमदनी होती रहे और घर की स्थिति भी ठीक रहे."

"तो आप आमदनी की खोज के लिए ही दफ्तर से छुट्टी होने के बाद जाया करते हैं?"

वह मुसकराए, "सुमन, मैं सब



खामोशी

कभी महसूस तो कर
तर्केताल्लुक की घुटन,
खामोशी बन के
तेरी बज्म में रहता हूं मैं.

—तस्नीं फारुकी

समझता हूं. जिस तरह बाबूजी के अंदर रिटायर होने के बाद का संशय है, उसी तरह तुम्हारे अंदर भी मेरे देर से लौटने के बारे में संशय है. पर दांपत्य जीवन में एकदूसरे के प्रति विश्वास होना आवश्यक है. मैं वैसा कुछ नहीं करता जैसा तुम सोचती हो. तुम्हारा संशय निर्मूल है. मैं तुम्हारे पिता की तरह दूसरा विवाह नहीं कर सकता. मैं अपनी सीमाओं को जानता हूं. मैं तुम से अलग हो कर अपनी खुशियों में आग नहीं लगाना चाहता."

मेरे ऊपर जैसे सैकड़ों घड़े पानी गिर आया. मैं उन से क्षमा मांगने लगी. मैं ने स्वीकार कर लिया, "सच, मेरे अंदर संशय था कि आप पुत्र प्राप्ति के लिए दीपा को पत्नी..."

वह बीच में ही ठठा कर हंस पड़े, "सुमन, मुझे तो यही चिंता खाए जा रही है कि पत्नी और बच्चियों के साथ मातापिता का पालनपोषण कैसे करूं और तुम हो कि दीपा के साथ मेरे रोमांस की बातें सोचती हो. यह सब क्या इतना आसान है? क्या मैं इतना गिरा हुआ हूं?"

"तो आप आर्थिक स्थिति से चिंतित रहते हैं?"

"हां, मेरे अंदर यह संशय है कि माधवजी जैसे लोग यह न सोच लें कि मैं पत्नी के आगे मातापिता को पूछता ही नहीं. तुम से कटेकटे रहने का अर्थ यह कदापि नहीं कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता. मुझे इस बात का जरा भी गम नहीं कि मेरा कोई लड़का क्यों नहीं हुआ. आजकल तो लड़कियां लड़कों से भी बेहतर साबित हो रही हैं. तुम खुद इस बात का प्रमाण हो?"

"तो फिर एक बात कहूं?"

"क्या?"

"मुझे साससमुर का संशय दूर करने के लिए आशीर्वाद दीजिए."

"उन का संशय कैसे दूर करोगी?" उन्होंने चकित हो कर पूछा था.

रिटायर होते ही ससुर घर में बैठ गए थे. उन्होंने फंड के रुपए बैंक में डाल दिए थे. बीस हजार रुपए के तीन माह में मात्र पांच सौ सूद मिलने वाले थे. इतने में उन का खर्च चल पाना आसान नहीं था.

सास चिढ़ीचिढ़ी रहने लगी थीं. ससुर कहते, "अब मैं कहां से लाऊं? जब तक कमाता रहा मौज की जिंदगी थी. अब तो हर वेतन के दिन वेतन न मिलने की टीस सी उठती है."

घर की खराब होती स्थिति से मैं घबरा उठी थी. ससुर ने समय रहते महंगाई के विरुद्ध मोर्चाबंदी नहीं की थी. बचत के नाम पर नाक सिकोड़ते रहे थे. खानेपहनने में पूरा वेतन खर्च करने का परिणाम सामने था. समय के साथ सुरेशजी पर ऋण चढ़ने लगा था.

मातापिता बुरा न मान जाएं, अतः सुरेशजी मन ही मन बौखला कर भी शांत रह जाते थे.

अब स्थिति के विरुद्ध संघर्ष छेड़ा जाना और उस पर काबू पाना जरूरी था.

बीड़ा मुझे ही उठाना पड़ा था. मैं प्रयत्नशील हो गई थी. मैं ने पुनः उस फर्म के प्रबंधक से संपर्क स्थापित किया जिस में मैं पहले काम किया करती थी. मैं ने पुनः नौकरी पाने के लिए आवेदन किय

प्रबंधक मेरे कार्य से प्रभावि ही, अतः मुझे पुनः नौकरी पर रख लि था.

"तुम फिर से नौकरी क सुरेशजी ने चकित हो कर पूछा

"घर की आर्थिक दशा सु लिए यह जरूरी है," मैं ने क सास‌ससुर मेरा मुंह देखते रह गए

मैं ने सास से कहा था, "मां सिर्फ पिंकी और पप्पी को लीजिएगा, बाकी मैं कर लिया कर

मैं आठ बजे दफ्तर जाती. सं बजे लौट आती. फिर घरेलू कामकाज जाती.

सास की सेवा भी करती ताकि न कहें कि मैं नौकरी करते ही बदल

मेरे इस रवैए ने साससमुर के को दूर कर दिया था. ससुर अब क थे, "मैं व्यर्थ ही इस संशय में था कि होने के बाद बहूबेटा पूछेंगे भी नहीं. दूसरी ही बात देख रहा हूं."

सास को भी अपनी गलतियां हो रही थीं. वह माधवजी की पत्नी कहतीं, "बहू नौकरी में नहीं लगी थी त बहुत आराम था. अब तो लगता ही न आराम है. पिंकी, पप्पी को संभालना नहीं."

मैं प्रायः कहा करती, "आप अपनी सेहत का खयाल रखें. न दवाइयां ले लें. हमारे रहते चिंतित हों जरूरत नहीं. आखिर मैं भी तो परिवार की हूं. मैं ने नौकरी कर के पिता को सहयोग दिया था, फिर क्या को नहीं दे सकती? सिर्फ बेटे ही सहारा हुआ करते."

एक दिन शाम को मैं दफ्तर से लौट खाना बना रही थी. साससमुर पिंकी, पप्पी को खिला कर सुला दिया रात 10 बजे तक सुरेशजी नहीं लौटे खिन्न हो रहा था.

• जब कभी दफ्तर से लौटने में मुझे देर हो जाती तो मैं सोचने लगती थी, 'मेरे प्रति सुरेशजी के मन में कहीं कोई संशय तो जन्म नहीं ले रहा है?'

वह लौटे तो मैं झल्ला उठी, "आखिर आप इतनी देर तक बाहर क्यों रहते हैं?"

"तो मैं घर आ कर क्या करूं? मैं जानता हूं कि तुम दफ्तर से आ कर घरेलू कामकाज में व्यस्त हो जाती हो."

"लेकिन दफ्तर से लौटने पर मेरी इच्छा आप को देखने की होती है."

"तुम्हें घर में देख कर मुझे भी शांति मिलती है, सुमन. पर न जाने क्यों मुझे तुम्हारा नौकरी करना अच्छा नहीं लगता."

"क्यों, क्या मन में किसी संशय ने घर कर लिया है?"

"ऐसी बात नहीं. हर पति चाहता है कि पत्नी आराम से घर में रहे."

"आराम की स्थिति हो तब न."

"उसी की तलाश में रहता हूं मैं. सोचता हूं, दफ्तर से छूटने के बाद कोई ऐसा काम मिल जाए जिस से चारपांच सौ की अतिरिक्त आमदनी हो जाए. फिर तुम्हें नौकरी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी."

"सिर्फ सोचने से नहीं होता. सोची हुई बात को दृढ़ता से करना भी पड़ता है तभी सफलता मिलती है," मैं ने कहा था, "मैं आप को हजार रुपए दे रही हूं. आप भी अपने फंड से कुछ ले लीजिए और सौंदर्य प्रसाधनों की छोटी सी दुकान लगा लीजिए. तीसरे पहर चार बजे से रात आठ बजे तक उस दुकान पर बैठिए.

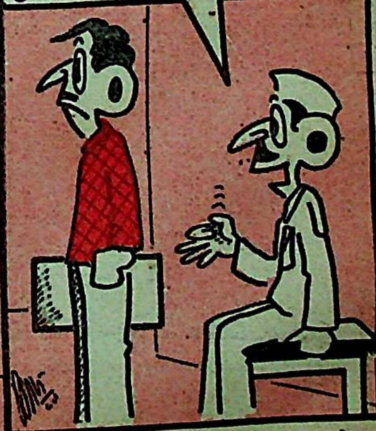
"इस से एक लाभ यह होगा कि बाबूजी को भी यदाकदा दुकान पर बैठने का अवसर मिलेगा तथा उन का मन बहल जाया करेगा. जब तक हम स्वयं उन्हें रास्ता नहीं सुझाएंगे, वे कुछ भी करने का साहस नहीं कर सकेंगे."

ऐसा ही हुआ था. सुरेशजी ने दुकान खोल ली थी. बाबूजी भी यदाकदा दुकान पर बैठने लगे थे. आमदनी देख कर उन की आंखें खुल गई थीं. उन्होंने सुरेशजी से कहा था, "बेटे, दुकान में और सामान क्यों नहीं भर लेते?"

"पिताजी, मेरे पास रुपए नहीं," सुरेशजी ने साफ कह दिया था. ससुर बैंक से पांच हजार निकाल लाए थे. सामान से दुकान भर गई थी.

ज्योंज्यों आमदनी बढ़ती गई, त्योंत्यों ससुर का मन भी दुकान में लगता गया था. सुरेशजी दफ्तर से छूटते ही उन का साथ देने आ आते थे. यदाकदा मैं भी दुकान पर चली जाती. ससुर खुश हो जाते. कहते, "बहू, तुम ने रास्ता दिखा कर बहुत ही





अच्छा किया. तुम ने सुरेश से यह क
कहा होता, तो न उस ने दुकान खोली
मैं यहां बैठने का साहस ही करता
पहले इसी संशय में था कि दुकान
या नहीं. इसी लिए फंड के रुपए
रहा था. अब तो जी चाहता है कि
दूं."

"नहीं, कुछ बैंक में भी रहने दें

"बहू, मैं चाहता हूं कि इतनी
हो कि तुम्हें नौकरी करने की जरूरत
तुम्हें हम सब के लिए घर में ही
चाहिए."

"मैं यह महसूस करती हूं,
समय आएगा तो नौकरी छोड़ने से
रहूंगी."

रात्रि के नौ बजे सुरेशजी और
दुकान से लौटते. आमदनी के
सास को थमा देते. सास मुझे दे देती.
लौटाना चाहती पर वह न मानतीं.
सब का एकदूसरे पर विश्वास जम
सब एकदूसरे के सहयोग में लग

एक दिन मैं दफ्तर से आई
भारी हो रहा था. उलटी करने को
चाहता था. मैं बेहोश सी होने लगी थी
मेरी सेवा में लग गई थीं. फौरन डाक्टर
बुला लिया गया था. डाक्टर ने बताया
मैं मां बनने वाली हूं.

मैं ने सास की ओर देख कर
प्रकट किया था, "मांजी, फिर लड़की
तो?"

"कोई बात नहीं, बहू. लड़की हो
क्या तुम किसी से कम हो?"

ससुर ने नौकरी छोड़ने के लिए
दिया था. मैं साससुर का स्नेह पा
पुलकित हो उठी थी.

प्रसव होने तक मैं संशय में पड़ी
थी. आखिर उन सब की इच्छा पूरी हो
थी, बेटे ने जन्म लिया था.

मैं सोचती हूं अगर मैं दृढ़ न हुई
तो मेरे परिवार का क्या हुआ होता.
सुंदर गृहस्थी न होती.

डाक्टर बनाने वाली जाली संस्थाओं से सावधान

लेख • डा. वीरेंद्रकुमार खुल्लर

भारत के प्रमुख शहरों से प्रकाशित होने वाले समाचारपत्रों में अकसर आप को इस प्रकार के विज्ञापन पढ़ने को मिलेंगे— "रजिस्टर्ड प्रैक्टिशनर बनिए (रजिस्ट्रेशन भारत भर में मान्यता प्राप्त)." विशेष कर दिल्ली, पटना, बंबई, मद्रास, कानपुर, जयपुर आदि में बहुत सी संस्थाएं, जिन्होंने अपने नाम सरकारी संस्थाओं से मिलतेजुलते रख लिए हैं, रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर के प्रमाणपत्र खुले रूप से बांट रही हैं. इस पर भी सरकार का स्वास्थ्य मंत्रालय यह जानते हुए भी कि पूरे भारत में किसी भी कौंसिल या बोर्ड द्वारा अनुभव के आधार पर रजिस्ट्रेशन नहीं होता, चुप बैठा है. बड़ेबड़े दैनिक पत्रों में उन के विज्ञापन छपते हैं. यह जानते हुए भी कि ऐसे विज्ञापन लोगों में भ्रम पैदा करते हैं, ये दैनिक पत्र उन्हें छाप कर केवल अपनी कमाई की ही चिंता में रहते हैं.

विभिन्न पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों के मामले में सर्वसाधारण को यह मालूम होना चाहिए कि भारतीय चिकित्सा परिषद ने प्राइवेट संस्थानों द्वारा प्रदत्त उपाधि/प्रमाणपत्र को रजिस्ट्रेशन के लिए मान्यता नहीं दे रखी है. अनुभव के आधार पर भी भारत में कहीं रजिस्ट्रेशन नहीं होता. अतः जनसाधारण को ऐसी संस्थाओं, विद्यालयों से सावधान रहना चाहिए, जो पत्राचार द्वारा या अनुभव के आधार पर रजिस्ट्रेशन कराने का दावा करती हैं.

कुछ लोगों ने सरकारी नामों से मिलतीजुलती प्राइवेट संस्थाएं बना रखी हैं. ये लोगों से 100 रुपए से 1,000 रुपए तक ले कर प्रमाणपत्र बेचती हैं. ये संस्थाएं कथित प्रमाणपत्रों पर अपना पूरा पता भी नहीं छापतीं. कुछ नकली संस्थाओं के नाम इस प्रकार हैं:

बोर्ड आफ आयुर्वेदिक एंड ऐलोपैथिक प्रैक्टिशनर्स, नई दिल्ली.

सेंट्रल कौंसिल आफ एलोपैथिक एंड आयुर्वेदिक प्रैक्टिशनर्स, नई दिल्ली.

कला संस्कृति साहित्य आयुर्वेद विद्यापीठ, दिल्ली.

बोर्ड आफ इलेक्ट्रो होमियोपैथी सिस्टम आफ मेडिसिन, पटना. (पटना में ऐसी छः संस्थाएं हैं).

सेंट्रल कौंसिल आफ ऐलोपैथिक प्रैक्टिशनर्स, बंबई.

कौंसिल आफ मेडिकल स्टडीज, बंबई, दिल्ली, मद्रास आदि.

कौंसिल आफ रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर्स, पटना (बिहार).

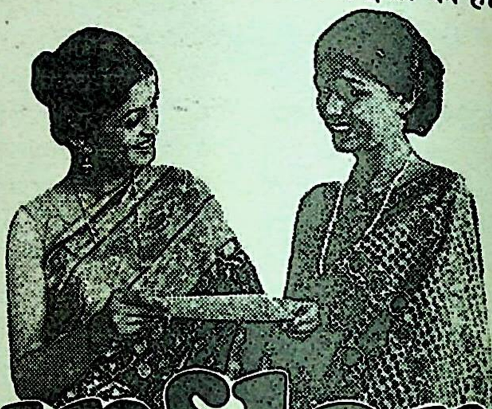
बोर्ड आफ मेडिकल प्रैक्टिशनर्स, राजस्थान, जयपुर.

बोर्ड आफ मेडिकल प्रैक्टिशनर्स, पंजाब, फाजिल्का.

पिछले वर्ष दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने ओमपाल नामक एक युवक को गिरफ्तार किया था, जिस ने भारत भर के इच्छुक खरीदारों को आयुर्वेदिक 'डिगरियां' बेची थीं. उस ने कला संस्कृति साहित्य आयुर्वेद विद्यापीठ नाम से एक संस्था बना रखी थी और वह बी.आई.एम.एस., एम.डी.बी.एस., डी.एससी.ए., बी.यू.एम.एस., आर.एम.पी. आदि 40 प्रकार की नकली उपाधियां 100 रुपए से ले कर 250 रुपए में बेचता था. ये सभी

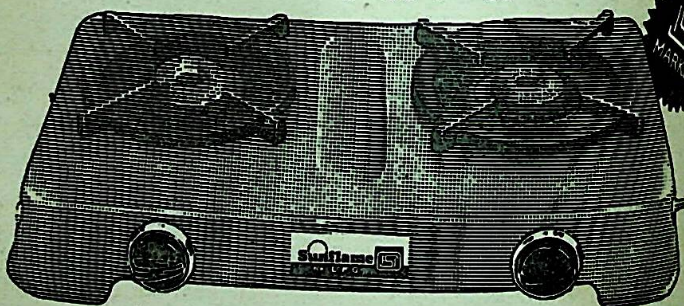
"यह देखो, मीरा!
आखिर मेरे गैस कनेक्शन
का नम्बर आ ही गया!"

"बधाई हो, माया! क्या तुम
भी सनफ्लेम गैस स्टोव ही
ले रही हो? आजकल घर-
घर में इसी की ही चर्चा है।"



Sunflame
DELUXE GAS STOVE

जाने माने विशेषज्ञों द्वारा वर्षों की खोज का परिणाम



अधिक टिकाऊपन
कड़ी निगरानी में बनी विशेष मज़बूत स्टील की बॉडी—अधिक देर तक चलने वाली।

बचत
वर्षों के परीक्षणों द्वारा विशेष डिजाइन में बनाया हुआ—कम गैस से अधिक ताप देने के लिए।

आकर्षक रूप
मन को लुभाने वाले अनेक रंगों एवं निकल क्रोम फिनिश में उपलब्ध।

सुरक्षा
'नोब' में 'स्प्रिंग-लॉक' होने से पूरी सुरक्षा निश्चित।

समय की
लिए। ... के लिए।

सनफ्लेम
इंडस्ट्रीज़
२, डी.एल.एफ इंडस्ट्रियल एरिया-II, १३/४ मील, मथुरा रोड, पो. आ. अमर नगर, फरीदाबाद

डिगरियां अच्छे मान्यता प्राप्त कालिज ही दे सकते हैं. इसी प्रकार बंबई पुलिस भी कई डिगरी विक्रेताओं को गिरफ्तार कर चुकी है.

सारा दोष सरकार का

पाश्चात्य देशों में ऐसा विधान है कि केवल मान्यता प्राप्त चिकित्सक ही चिकित्सा कार्य कर सकते हैं. लेकिन अपने देश में कोई भी व्यक्ति अपने नाम के पीछे नकली उपाधियां लिख कर बगैर रजिस्ट्रेशन करवाए बड़े मजे से डाक्टर, वैद्य या हकीम बन कर लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर सकता है. हमारी सरकार भी फर्जी डाक्टरों के प्रति कोई काररवाई तब तक नहीं करती, जब तक कि कोई पुलिस में रिपोर्ट न करे. इन नीमहकीमों के कारण सैकड़ों लोगों को अपनी आंखों से हाथ धोना पड़ा है. आज केवल बिहार में ही 20 हजार नीमहकीम लोगों के स्वास्थ्य से खेल रहे हैं.

यह स्थिति केवल बिहार राज्य की है. अन्य राज्यों की स्थिति के बारे में अभी मालूम नहीं हो सका है. लेकिन आज बिहार में जो कुछ भी हो रहा है, उस से हम मुंह नहीं मोड़ सकते. बिहार के विज्ञ सूत्रों के अनुसार बिहार में ऐसी सैकड़ों संस्थाएं बन गई हैं, जो प्रमाणपत्र जारी कर किसी भी व्यक्ति को रातोंरात डाक्टर बना देती हैं.

प्रश्न यह है कि क्या इन संस्थाओं को कोई पूछने वाला नहीं है? क्या इन संस्थाओं से प्रमाणपत्र प्राप्त कर के कोई भी चिकित्सा कार्य कर सकता है? उधर पटना मेडिकल कालिज एवं हस्पताल के सूत्रों का कहना है, "पटना मेडिकल कालिज में हर रोज कम से कम 10 ऐसे मरीज आते हैं, जो इन नीमहकीमों के चक्कर में फंस जाते हैं और इन के बचने की उम्मीद भी नहीं होती." डाक्टरों का कहना है कि इस के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकार दोनों जिम्मेदार हैं.

भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद के सूत्रों के अनुसार नीमहकीमों का पंजीकरण प्राइवेट मेडिकल प्रैक्टिशनरों के संगठनों द्वारा किया जा रहा है, जो विभिन्न नामों से काम कर रहे हैं तथा मोटी रकमें ले कर झूठे प्रमाणपत्र दे रहे हैं.

एक अन्य विश्वसनीय सूत्र के अनुसार आयुर्वेद एवं यूनानी चिकित्सा परिषद बिहार में कुछ असामाजिक तत्त्व आयुर्वेद रत्न या वैद्य बिशारद की जाली डिगरियों के आधार पर उक्त बोर्ड से 500 रुपए से ले कर 1,000 रुपए में पंजीकरण करवा रहे हैं. चाहे आप अंगूठाटेक हैं, फिर भी आप का रजिस्ट्रेशन इस बोर्ड से हो सकता है. है न आश्चर्य? योग्यताएं वाले कालम में वैद्य विशारद अवश्य लिखा जाएगा, चाहे आप के पास कोई भी प्रमाणपत्र न हो. और आप का पता बिहार के किसी ऐसे गांव का होगा, जहां कोई पहुंच ही न सकता हो.

एक समाचार के अनुसार उत्तर प्रदेश सरकार ने आयुर्वेद एवं होमियोपैथी की शिक्षण संस्थाओं का अधिग्रहण कर लिया है. इस अधिनियम के अंतर्गत सरकारी कालिजों को छोड़ कर किसी भी व्यक्ति अथवा संस्थान द्वारा मेडिकल कालिज के संचालन पर प्रतिबंध लगा दिया गया.

तू डालडाल मैं पातपात

लेकिन कहावत है—तू डालडाल मैं पातपात. आज उत्तर प्रदेश के विभिन्न नगरों—कानपुर, बरेली, लखनऊ आदि में दरजनों प्राइवेट संस्थाएं इलेक्ट्रो होमियोपैथी के नाम पर ऐसे दो वर्षीय पाठ्यक्रम चला रही हैं, जिन को सरकार ने मान्यता नहीं दी है. फिर इन इलेक्ट्रो होमियोपैथी संस्थाओं पर रोक क्यों नहीं? पटना में दरजनों इलेक्ट्रो होमियोपैथी बोर्ड बने हुए हैं, जो लोगों के बोगस रजिस्ट्रेशन कर रहे हैं और इलेक्ट्रो होमियोपैथी संस्थाओं को संरक्षण भी दे रहे हैं.

इसी प्रकार हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की वैद्य विशारद एवं आयुर्वेद रत्न परीक्षाओं के भारत के कोनेकोने में केंद्र बने हुए हैं, जो नकल करवा कर परीक्षाएं पास

करवा धन बटोर रहे हैं. चाहे परीक्षार्थी को त्रिफला का भी ज्ञान न हो, फिर भी उसे वैद्य विशारद का प्रमाणपत्र दिलवा देते हैं. वैद्य विशारद एवं आयुर्वेद रत्न परीक्षाओं को भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद अधिनियम 1970 के अंतर्गत केवल 1931 से 1967 तक मान्यता देती है. मजे की बात यह है कि भारतीय चिकित्सा परिषद उत्तर प्रदेश भी उपर्युक्त परीक्षाओं को केवल 1968 तक मान्यता देती है. फिर इन परीक्षाओं का लाभ? शायद इसी लिए कि उत्तर प्रदेश सरकार ने प्राइवेट मेडिकल कालिजों पर रोक लगा दी है.

अन्य राज्यों को भी उत्तर प्रदेश सरकार का अनुसरण कर के अपनी बौद्धिक गतिविधियों का परिचय देना चाहिए अन्यथा नीमहकीम बनते रहेंगे और लोगों को अंधा बना कर लूटते रहेंगे.

कुछ प्राइवेट संस्थाएं लोगों को मूर्ख बनाने के लिए एफ.आर.एस.एच. या एम.आर.एस.एच. या ए.आर. एस.एच. लंदन करवाती हैं, जब कि इस का कुछ भी उपयोग नहीं, और न ही इस के आधार पर डाक्टरी की जा सकती है. इस का अर्थ है फैलो या मेंबर या एफिलिएटेड टु रायल सोसाइटी आफ हेल्थ जो लंदन (इंगलैंड) में है. लेकिन आज समाचारपत्रों में अधिकांश गुप्त रोग विशेषज्ञ अपने विज्ञापनों में उपर्युक्त अक्षर लिख कर लोगों को मूर्ख बना कर लूटते हैं. है न चार अक्षरों का कमाल.

इस प्रकार आज संपूर्ण देश में बोगस चिकित्सकों को तैयार करने वाली बोगस संस्थाओं का जाल सा बिछा हुआ है. ये संस्थाएं अवैधानिक रूप से बोगस चिकित्सा रजिस्ट्रेशन प्रमाणपत्र बेचती हैं.

एक अनुमान के अनुसार भारत में एक लाख से ऊपर ऐसे व्यक्ति हैं, जिन के पास चिकित्सा या रजिस्ट्रेशन कुछ भी नहीं है. फिर भी वे नकली डिगरियों का उपभोग कर बड़े मजे से चिकित्सक बने बैठे हैं. क्यों नहीं समयसमय पर सभी डाक्टरों के रजिस्ट्रेशन प्रमाणपत्र जांचे जाते? संबंधित विभाग क्यों

Central Council of Allopathic & Ayurvedic Practitioners

NEW DELHI

(India)

1036

This is to certify that K. Kandasamy ... REGISTERED MEDICAL PRACTITIONER (R.M.P.)

This Certificate has been given under my signature and the seal of the Central Council.

REGISTRAR

सरकारी नाम से मिलतीजुलती एक प्राइवेट संस्था द्वारा जारी किया गया रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर का प्रमाणपत्र. ▲

नहीं वैद्यों, डाक्टरों के बारे में जांच करता? क्यों नहीं प्रत्येक वैद्य, डाक्टर के लिए अपनी दुकान में अपना प्रमाणपत्र एवं उपाधियां प्रदर्शित करना अनिवार्य कर दिया जाता?

भारत में आयुर्वेद एवं चिकित्सा पद्धति के 19 राज्यीय बोर्ड हैं एवं एक भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद. इसी प्रकार होमियोपैथी के भी 19 प्रादेशिक बोर्ड हैं, एकएक केंद्रीय परिषद. प्रत्येक बोर्ड पर निगरानी रखने के लिए एक और कार्यालय है, जिसे डाइरेक्टर आफ मेडिकल हैल्थ सर्विसेज कहते हैं.

अब यह स्वास्थ्य मंत्रालय पर निर्भर करता है कि वह इस समस्या को उचित ढंग से किस प्रकार हल करे. यदि नीमहकीमों को बेरोकटोक इस व्यवसाय में रहने दिया जाता है तो यह कानून की सरासर अवहेलना तो होगी ही, जनता के साथ भी अन्याय होगा.●

जब सफ़ेद-सफ़ेद डैन्ड्रफ़ आपको परेशान करे

बैनिश परेशानी ... से मिटाए



बैनिश एक हेयर लोशन डैन्ड्रफ़ की रोकथाम और डैन्ड्रफ़ मिटाने के... खुजली और परेशानी से छुटकारा पाने के लिए. बैनिश में मिला है वैन्साइड ८९ आर. ई.–डैन्ड्रफ़ मिटाने का एक विशेष सुरक्षित और प्रभावशाली एजेन्ट.

बस, सिर की त्वचा को साफ़ कीजिए और बैनिश लगाइए. न बाल ... की विशेष आवश्यकता और न मालिश की. हर बार बैनिश लगाने के ... शैम्पू करना भी आवश्यक नहीं. जब चाहें, तब ही शैम्पू का उपयोग कीं... बैनिश को आप नियमित केश-सौन्दर्य प्रसाधनों के साथ भी उपयोग ... सकते हैं; यह उनके असर को कम नहीं करता.
बालों में बैनिश लगाइए और डैन्ड्रफ़ से छुटकारा पाइए!



जग्प्रसिद्ध सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माता मैक्स फ़ैक्टर की ही देन!

पाठकों की समस्याएं

मैं 24 वर्ष की पढ़ीलिखी, सुंदर ब्याहता स्त्री हूं. मेरा विवाह तीन साल पहले हुआ था, परंतु हमारा विवाहित जीवन सुखी नहीं है. कारण है पति की विचित्र हरकतें, जिन्हें मैं समझ नहीं पाती. वह अपनी कमाई का अधिकांश भाग खराब किस्म के दोस्तों के साथ शराब, होटल व पिक्चरों में गंवा देते हैं. दफ्तर का काम छोड़ देते हैं. कई बार प्यार से समझाती हूं तो मारतेपीटते हैं. हर वक्त मुझ में ही कमी निकालते हैं. घर की चीजें तोड़फोड़ देते हैं. उन की माताजी से कहती हूं तो वह मुझे ही मनहूस कहती हैं. मैं अत्यंत दुखी हूं. मायके जाना नहीं चाहती. क्या करूं?

लगता है, आप के पति हीन भावना तथा मानसिक कुंठा से पीड़ित हैं. इस का कारण कुछ तो संस्कार और कुछ उन का त्रुटिपूर्ण लालनपालन व दोषी वातावरण है. विवेक से काम लीजिए. जब कभी ठीक मूड में हों तो उन्हें बताइए कि वह मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं तथा मनोरोग चिकित्सक से सलाह लेने में हर्ज नहीं है. किसी तरकीब से उन के दोस्तों से उन का पीछा छुड़ाने का यत्न कीजिए. आप के इन प्रयासों पर पहले तो वह बिगड़ेंगे पर धीरेधीरे शांत होने लगेंगे. उन की माताजी को बीच में मत लाइए क्योंकि लगता है कि वह स्थिति की गंभीरता को समझने में असमर्थ हैं. मायके जाने की कोई जरूरत नहीं है. अपने घर में रह कर अपना घर बनाइए.

मेरे विवाह को चार साल हो गए हैं. पत्नी गर्भवती है. वह शुरू से ही बहुत शक्की स्वभाव की है और मुझ से हर समय नाराज रहती है. अब तो और भी तंग कर रखा है. क्योंकि इस अवस्था में मैं उसे कुछ कह नहीं सकता, जिस का वह नाजायज फायदा उठाती है. मैं इस तनावपूर्ण स्थिति से परेशान हूं. क्या करूं?

कुछ लड़कियां स्वभाव से ही नखरे वाली होती हैं तथा हर समय पति का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कराते रहना चाहती हैं. हो सकता है आप की पत्नी भी ऐसी ही हो. उस से पूछ कर देखिए कि आप के किस व्यवहार के कारण वह आप पर शक करती है और उस कारण को दूर करने की कोशिश कीजिए. यदि वह अकारण ही नाराज रहती है तो कुछ समय के लिए उस की अवहेलना कीजिए. किसी बुजुर्ग महिला को घर पर बुला कर रखिए तथा बिना बात बढ़ाचढ़ा कर लाड़ करने की चेष्टा न कीजिए.

मेरे परिवार में मेरी विधवा मां तथा पत्नी है. हमारे पास केवल एक कमरा व रसोई है. मेरी मां हमारे साथ उसी कमरे में सोती है तथा गरमियों में अपने साथ हमें भी छत पर सोने को मजबूर करती है. वह मेरी पत्नी को हर समय दुत्कारती रहती है तथा कभी भी किसी काम में उस की मदद नहीं करती. मैं यह सब देख कर भी चुप हूं क्योंकि विधवा मां से कुछ कह भी नहीं सकता. यहां तक कि बिना बात पत्नी को ही डांट देता हूं. इसी गम से वह सूखती जा रही है. उस की हालत देखी नहीं जाती. अजीब संकट में पड़ गया हूं. क्या करूं?

पति को खोने के बाद आप की मां शायद आप के प्यार में किसी और को भागीदार नहीं बनाना चाहती. अपना व्यवहार संतुलित कीजिए. आप अपनी पत्नी के प्रति अपना कर्तव्य नहीं निभा रहे हैं. साथ सोने की आप की मां की जिद एकदम अनुचित है. मां से साफसाफ कह दीजिए कि वह रसोईघर या छत पर सो सकती हैं, साथ नहीं. बिना पत्नी को बीच में डाले आप ही को इस स्थिति से निबटना होगा. पत्नी को भी प्यार से समझाइए कि सास का कहासुना टालने की कोशिश करे. जब उसे अपनी परेशानी में हिस्सेदार बनाएंगे तो स्थिति अपनेआप सुधर जाएगी.

मेरी माताजी की उम्र 40 वर्ष की है. वैसे उन का दिमाग बिलकुल ठीक है, परंतु उन्हें एक विचित्र सी बीमारी है. वह हर समय अपने सिर के बाल उखाड़ा करती हैं और इधरउधर फेंकती रहती हैं. घर के सब लोग उन की इस आदत से बड़े परेशान हैं. इस का इलाज हो सकता है क्या? बाहर जाते शर्म आती है. कोई घरेलू इलाज बताइए.

आप की मां मानसिक बीमारी से पीड़ित हैं. घर पर इस का इलाज होना मुशकिल है. समझाबुझा कर देखिए पर फायदा होना जरूरी नहीं. यह भी हो सकता है कि बीमारी हद से ज्यादा बढ़ जाए. आप शर्म महसूस न कीजिए. उन्हें मनोरोग चिकित्सक को ही दिखाइए.

मेरी उम्र 27 वर्ष की व मेरी पत्नी की 20 वर्ष की है. छः साल पूर्व हमारी शादी हुई थी. एक साल का लड़का भी है. मेरी पत्नी अनपढ़ है व लड़ाईझगड़ा करती रहती है. कुछ समय के लिए मेरे संबंध किसी पराई स्त्री से हो गए थे, जिस के बारे में मैं ने अपनी पत्नी को सब कुछ बता दिया था, इस शर्त पर कि वह किसी से कुछ नहीं कहेगी. पर उस ने सब के सामने वह बात सुना कर मुझे बेइज्जत किया. मैं उस से नफरत करता हूं व तलाक चाहता हूं.

आप का पत्र पढ़ कर लगता है कि पत्नी के नासमझ होने के साथसाथ आप भी नासमझ हैं. जब इतनी छोटी लड़की आप ब्याह कर लाए थे तो उसे पढ़ाने की जिम्मेदारी आप पर भी थी. जिस बात से आप की बेइज्जती होती है, वह आचरण ही गलत था. इन हालात में तलाक की मांग नहीं की जा सकती. अब भी समय नहीं बीता. पत्नी को पढ़वाने का इंतजाम कर सकते हैं. उसे प्यार से समझाइएबुझाइए, आप का पारिवारिक जीवन अवश्य सुखी हो सकेगा.

—कंचन ●

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जा सकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.



सुंदरता ही सब कुछ नहीं

कहानी • विश्वभारती

समीर विचारों के समुद्र में डूबता उतराता अपने कमरे में बैठा था. वह अभीअभी बैंक से आया था और उस ने स्वयं ही चाय बना कर पी थी. अखबार सामने था, पर उस की आंखों के आगे अनिता का आत्मविश्वास से दीप्त चेहरा घूम रहा था. जब से उस ने अनिता को देखा था, वह बड़ी बेचैनी सी महसूस कर रहा था. अनिता उसे इस रूप में मिलेगी, वह सोच भी नहीं सकता था, लेकिन अ... उसे रोज ही उस का सामना करना पड़े... लेकिन वह कैसे ऐसा कर पाएगा. इ... अलावा वह और कुछ कर भी तो नहीं स... था. इस उम्र में उसे दूसरी जगह कहां नौ... मिलेगी.

इसी समय 'श्यामली ने उसे एक ...

और शीशी ला कर दी थी, "रजनी को दोबारा बुखार आ गया है, दवाई ला देना."

वह टकटकी लगाए श्यामली को देखने लगा था. श्यामली को समझ में नहीं आया था कि समीर उसे इस तरह क्यों देख रहा है. समीर कुछ सोचता हुआ जूते पहनने लगा था. जब वह स्कूटर ले कर बाहर निकलने ही वाला था तो श्यामली ने दवाई का एक और परचा ला कर उसे थमा दिया था, "मुझे अपनी तबीयत भी ठीक नहीं लग रही है."

"तुम्हारी दवाइयां भी लेता आऊंगा," कह कर उस ने स्कूटर स्टार्ट कर दिया था.

तभी श्यामली रजनी की आवाज सुन कर चौंक उठी थी और पानी का गिलास ले कर चल दी थी. रजनी को पानी पिला कर वह वहीं पड़ी चारपाई पर लेट गई थी. उस दिन उसे समीर कुछ खोयाखोया सा लग रहा था. उस ने सोचा, बैंक में किसी से कोई बात हो गई होगी. वैसे भी कोई भी बात वह उसे बताता नहीं था.

काफी देर के बाद समीर को खयाल आया था कि वह गलत दिशा में आ गया है. डाक्टर की दुकान दूसरी तरफ थी, पर उस ने कोई ध्यान नहीं दिया था. वह स्कूटर चलाता रहा था. फिर उसे खयाल आया था कि घर में बेटी और पत्नी बीमार पड़ी हैं और वह घूम रहा है. स्कूटर मोड़ कर वह डाक्टर की दुकान पर आ गया था और दवाइयां ले कर घर की तरफ चल पड़ा था.

रात का खाना खा कर उसे फिर अनिता के साथ हुई उस दिन की मुलाकात याद आने लगी थी. उस के बैंक मैनेजर की कुछ दिनों पहले बदली हो गई थी. उस दिन ही उस के स्थान पर नया मैनेजर आने वाला था. बैंक में उस के स्वागत की तैयारियां हो रही थीं. वह भी मनोयोग से साथ दे रहा था. उस ने अपनी मेज ठीक से साफ कराई थी. चपरासी से कह कर फूलों का गुलदस्ता बनवा कर रखवा दिया था.

जिस अनीता को असुंदर होने की वजह से समीर ने ठुकरा दिया था, उसी अनीता को देख कर आज वह ईर्ष्या से जल क्यों रहा था?



समीर चुपचाप बैठा रहा तो अनिता बोली, "समीर, तुम तो बिलकुल चुप हो, कुछ बोलते क्यों नहीं?"

दोपहर के करीब दो बजे एक कार बैंक के आगे आ कर रुक गई थी. सब लोगों को नए मैनेजर को देखने की उत्सुकता थी. तभी एक महिला, जिस का व्यक्तित्व बड़ा ही प्रभावशाली था, मुसकराती हुई अंदर दाखिल हुई. उस की बड़ीबड़ी आंखों में चश्मा लगा था. सांवला रंग, साधारण से नैननक्श में भी वह बड़ी आकर्षक लग रही थी.

लेकिन यह क्या? जैसे ही वह समीर के पास आई, उस के दिल की धड़कनें तेज होने लगी थीं. अनिता...नई बैंक मैनेजर! ऐसा नहीं हो सकता. उस ने एक बार फिर दृष्टि उठा कर देखा था. हां, सचमुच यह तो वही अनिता थी, पर कितना बदल गई थी. वह मन ही मन चाहने लगा था कि अनिता उसे न पहचाने तो कितना अच्छा हो. पर अनिता की नजर जैसे ही समीर पर पड़ी तो उस ने मुसकरा कर आश्चर्य भरे स्वर में कहा था, "अरे समीर, तुम यहां! मैं तो सोच भी नहीं सकती थी कि यहां हमारी मुलाकात होगी. कैसे हो?"

समीर को उस के प्रश्न का जवाब देना भी याद नहीं रहा था. दुख, ग्लानि, पश्चात्ताप, आश्चर्य, खुशी सभी के मिलेजुले भावों से वह अनिता को ताकता रहा था. अनिता अब आगे बढ़ चुकी थी. सब से मिल कर वह मैनेजर वाले केबिन में चली गई थी. समीर के साथी उस से तरहतरह के प्रश्न पूछ रहे थे. उस ने उन्हें तो संतुष्ट कर दिया था, पर पूरे दिन उस का काम में मन नहीं लगा था. वह अनिता के बारे में ही सोचने लगा था. अनिता अपने काम में व्यस्त थी.

कितने ही साल पहले की बात थी. एक जमाना गुजर गया था उसे अनिता से मिले. वह उस के पड़ोस में ही रहती थी. दोनों का बचपन साथ ही बीता था. खेलकूद कर दोनों ने साथसाथ जवानी में कदम रखा था. अनिता बिलकुल ही साधारण सी लड़की थी. सुंदर तो उसे किसी भी दृष्टि से नहीं कहा जा सकता था. ढीलेढाले कपड़े उस की बदसूरती को और भी बढ़ा देते थे.

पर समीर शुरू से ही बन[illegible] सलीके से कपड़े पहनता था. उस [illegible] साफ और नैननक्श तीखे थे. उस [illegible] भी पैसे वाले आदमी थे. ऊपर से [illegible] बहनों का अकेला भाई था. पढ़ने में [illegible] ठीकठाक था. उस की सभी इच्छाएं [illegible] जाती थीं. उस के पहने हुए कपड़ों [illegible] भी सलवट दिखाई नहीं देती थी.

इस के विपरीत अनिता [illegible] परिवार की थी. पांच भाईबहनों में [illegible] से बड़ी थी. वह घर के काम करते[illegible] स्कूल चली जाती थी. पढ़ाई में [illegible] होशियार थी. दोनों एक ही कक्षा [illegible] इसलिए अकसर ही दोनों को एक[illegible] मदद पड़ जाती थी. समीर उस [illegible] नोट्स वगैरह ले लेता था और अनि[illegible] वह लाइब्रेरी से किताबें ला कर दे [illegible]

एक बार की बात है. इम्तहान [illegible] वाले थे. अनिता को अंगरेजी की [illegible] किताब की जरूरत थी. वह किताब [illegible] लेखक का नाम लिख कर उस के पास [illegible] बोली थी, " समीर, जरा यह [illegible] लाइब्रेरी से ला दो."

उस समय वह पढ़ रहा था. उस [illegible] था, "मैं पढ़ रहा हूं, इस समय न[illegible] सकता, पाठ्य पुस्तक से ही पढ़ लो."

"अध्यापिका ने बताया है कि [illegible] बहुत अच्छा लिखा है. अभी नहीं [illegible] तो शाम को ले आना," उस ने [illegible] खुशामद करते हुए कहा था.

"ठीक है, शाम को ले आऊंगा, [illegible] किराया देना पड़ेगा."

"हां...हां, सारा किराया एक [illegible] चुका दूंगी." उस ने अर्थभरी निगाह [illegible] देखा था.

शाम को वह उस की किताब ले [illegible] था. इसी तरह के छोटेमोटे काम वह [illegible] के कर देता था. ठीक उसी तरह जैसे [illegible] बहनों के करता था. पर अनिता ने इसे [illegible] ही ढंग से सोचना शुरू कर दिया था. [illegible] समझती थी कि समीर को उस से [illegible]



'श्यामली की सुंदरता धीरेधीरे खत्म होती जा रही थी. वह स्वयं भी पहले जैसा कहां रह गया था. बच्चे भी आए दिन बीमार रहने लगे थे.'

समीर इन्हीं बातों में खो सा गया

इसलिए वह उस के सब काम कर देता है. वह अपने मन में समीर को ले कर कुछ और ही भ्रम पालने लगी थी. पर समीर ने इस विषय में कभी सोचा भी नहीं था.

दोनों के ही बी.ए. के इम्तहान खत्म हो गए थे. उस दिन इतफाक से दोनों के घर वाले कहीं गए हुए थे. अपने घर में बैठबैठ जब वह ऊबने लगा तो अनिता के घर कोई पत्रिका लेने चला गया था.

अनिता समीर से बहुत दिनों से कोई बात कहना चाह रही थी. वह उस समय समीर को देख कर प्रसन्न हुई थी. उसे पत्रिका देने के बाद वह बोली थी, "समीर, बैठो, एक कप चाय पी लो."

समीर को उस दिन अनिता का व्यवहार और दिनों से बहुत अलग लगा था. फिर भी वह बैठते हुए बोला था, "अच्छा, पी लेता हूं."

अनिता उसे वहीं छोड़ कर काफी बनाने चली गई थी. कुछ ही देर में वह दो कप काफी ले कर आ गई थी. एक कप उस ने समीर को पकड़ा दिया था और एक स्वयं उठा लिया था. कुछ देर तक वे दोनों चुपचाप काफी पीते रहे थे. फिर अनिता ने उस से पूछा था, "समीर, अब क्या करने का इरादा है?"

वह उस की बात का मतलब समझते हुए बोला था, "मैं एम.ए. करूंगा, साथ ही मैं ने बैंक का फार्म भी भरा है. पर तुम्हारा क्या इरादा है?"

"मैं क्या कर सकती हूं, मेरे घर वाले मेरे विवाह की बात चला रहे हैं."

"पढ़ाई के बाद लड़कियों के विवाह की बात ही सोची जाती है, कब खुशखबरी सुना रही हो?"

अनिता ने अर्थभरी मुसकान के साथ समीर को ताका था. समीर उस की दृष्टि से डर गया था. वह दूसरी तरफ देखने लगा था तो अनिता बोली थी, "समीर,

मैं..." कहतेकहते वह रुक गई थी. इस पर समीर ने कहा था, "कहो, अनिता, क्या कहना चांह रही हो? तुम्हारा शरीर क्यों कांप रहा है?"

वह उठ कर उस के पास आ गया था. उस की समझ में नहीं आया था कि वह क्या करे. उस के पास आने से अनिता को सहारा मिला था. वह उस का हाथ पकड़ कर बोली थी, "समीर, मैं तुम से प्रेम करती हूं."

समीर एकाएक घबरा गया था. वह इस के लिए तैयार नहीं था. उस ने अपना हाथ खींच लिया था और उस से कुछ दूर हट गया था. यह तो उस ने सोचा भी नहीं था. अनिता की इतनी हिम्मत! ऐसी लड़की तो उस की पत्नी कभी नहीं बन सकती, उसे तो अपने जैसी सुदंर, दुबलीपतली, स्मार्ट लड़की चाहिए.

समीर वहां से जाने लगा तो अनिता कह उठी थी, "समीर..." आगे वह कुछ नहीं कह सकी थी. उस का गला रुंध गया था.

समीर तब तक अपने घर आ चुका था. उस के दिल की धड़कनें तेज हो गई थीं. अनिता के ऊपर उसे गुस्सा भी आया था. उसे लगा था कि अनिता ने उस का अपमान किया है. मन में आया था कि अभी जा कर अनिता से कहे कि पहले अपना मुंह शीशे में देख, फिर यह बात कहना. उसे अनिता से डर भी लगने लगा था. कहीं वह उस के मांबाप से न कुछ कह दे.

इस के बाद वह अनिता के घर नहीं गया था. अपने घर में भी उसे डर लगा रहता था कि कहीं अनिता न आ जाए. इसलिए घरवालों से लाइब्रेरी का बहाना बना कर वह दिन भर घर से गायब रहता था. कभीकभार उसे अपनी बहनों से पता चलता कि फलां लोग अनिता को देखने गए थे, पर उसे पसंद नहीं किया. सभी सुंदर लड़की चाहते थे.

अनिता ने भी उस के घर आना छोड़ दियां था. उस ने सोचा था, चलो पीछा छूटा. पर वह अपने घर से कभीकभी उसे छिप कर देख लेती थी. समीर को कभीकभी अ... पर दया भी आती थी, लेकिन शीघ्र ही... भावना पर नियंत्रण पा लेता था.

एम.ए. का प्रथम वर्ष पूरा होने के बाद... की नौकरी बैंक में लग गई. अ... प्राइवेट एम.ए. कर रही थी. उस ने भी... की परीक्षा दी थी.

समीर की नौकरी लगते ही उस... रिश्ते आने लगे थे. नौकरी लगने के बाद... और भी अच्छी तरह रहने लगा था... अभी जल्दी में नहीं था. उस की मां... लड़कियों को देख कर मना कर चुकी...

एक दिन समीर की मां ने अनिता... घर से आ कर कहा था, "अनिता के पिता... बदली हो गई है."

"कब?" समीर के पिता ने अचक... कर पूछा था.

"अभी अनिता की मां बता रही... बेचारी बड़ी परेशान है. अनिता के अ... सभी बच्चे स्कूलकालिज में पढ़ रहे हैं... बीच में से ही उठना पड़ेगा. नई जगह... नए सिरे से दाखिले कराने पड़ेंगे."

"यह तो बहुत बुरी बात हुई. अ... पड़ोसी थे. हमेशा सुखदुख में साथ देते... पिता बोले थे.

अनिता के घर वालों के जाने की... से समीर के घर में सभी उदास हो गए... समीर ही ऐसा था जिसे उन के जाने की... ही मन प्रसन्नता हो रही थी.

अनिता के घर वाले दूसरे शहर... जाने की तैयारी में लगे थे. एक दिन स... बाजार गया तो रास्ते में उसे अनिता दि... दे गई थी. वह उस से बच कर निकल... चाहता था पर अनिता ने उसे देख लिया... वह उस से बोली थी, "समीर, मुझे पता... कि तुम मुझ से बचना चाहते हो. अब तो... जा ही रही हूं. चलो, आज मेरे साथ एक... काफी पी लो."

पहले तो उस के मन में आया था... मना कर दे या कोई बहाना बना दे, पर बाद... सोचा, अब तो यह जा ही रही है. अगर...

उस के साथ काफी पी लेगा तो उस का कुछ नहीं बिगड़ेगा. वह उस के साथ एक रेस्टोरेंट में चला आया था.

रेस्टोरेंट में बैठ कर अनिता ने ही बैरे को का बुला कर काफी का आर्डर दिया था. वह चुपचाप बैठा रहा था. अनिता बोली थी, "समीर, तुम तो बिलकुल चुप हो. कुछ बोलते क्यों नहीं?"

उसे समझ में नहीं आया कि वह क्या बोले. फिर एकाएक वह बोल पड़ा, "अनिता, तुम्हारे विवाह का क्या हुआ? कहीं तय हुआ?"

"कहां, समीर, आजकल सभी लड़के एक ही जैसे हैं. उन्हें सुंदर, दुबलीपतली, पढ़ीलिखी लड़की चाहिए. ऊपर से ढेर सारा दहेज. यह सब मेरे पास नहीं है."

फिर कुछ देर चुप रहने के बाद वह बोली थी, "पता नहीं, क्यों लोग सुंदरता को इतना महत्त्व देते हैं." कह कर वह उदास हो गई थी.

समीर जवाब में कुछ नहीं बोला था. वह कोई ऐसी बात नहीं कहना चाहता था, जो उसे बुरी लगे.

वह फिर बोली थी, "तुम भी तो सुंदरता को महत्त्व देते हो. तुम्हारी शादी सुंदर लड़की से हो भी जाएगी. पर कभी न कभी तुम महसूस करोगे कि सुंदरता ही सब कुछ नहीं होती.

इस पर समीर बोला था, "मैं ने यह कब कहा कि सुंदरता ही सब कुछ होती है?"

"समीर, सारी बातें मुंह से नहीं कही जातीं. कुछ बातें बिना बोले भी समझ ली जाती हैं. मैं ने फैसला किया है कि मैं विवाह नहीं करूंगी."

"क्यों?" समीर जानबूझ कर अनजान बन कर बोला था.

"क्योंकि..." वह उस की तरफ देख कर बोली थी, "तुम नहीं समझोगे, समीर."

कह कर वह उठ खड़ी हुई थी, "चलो,


"सिनेमाहाल में दर्शकों को आकर्षित करने के लिए निर्माता जब सेक्स का सहारा ले सकता है तो मैं मंदिर में भक्तों को आकर्षित करने के लिए वैसा ही क्यों नहीं कर सकता?"

समीर, तुम्हें 'शायद कहीं जाने को देर हो रही होगी."

दोनों बाहर निकल आए थे और विपरीत दिशाओं की ओर मुड़ गए थे. समीर अपने दोस्त के यहां जा रहा था. पर उस का मन अनिता की बातों से उदास हो गया था. वह ऐसे ही इधरउधर घूमता रहा था.

उस के तीसरे दिन अनिता का परिवार उस शहर से चल गया था. वह भी औपचारिकतावश उन्हें स्टेशन तक छोड़ने चला गया था.

गाड़ी छूटने के बाद भी अनिता खिड़की से उसे देखती रही थी. यही उन की आखिरी मुलाकात थी.

घर आ कर समीर ने चैन की सांस ली थी. उसे डर था कि कहीं अनिता उस की मां या बहनों से न कुछ कह गई हो, पर उस ने ऐसा कुछ भी नहीं कहा था.

कुछ ही दिनों बाद समीर की मां 'श्यामली को देखने गई थी. वह भी साथ में था. 'श्यामली को देखते ही उस ने और उस की मां ने उसे पसंद कर लिया था. वह जैसी लड़की चाहता था, 'श्यामली वैसी ही थी. उस का रंग साफ था, नैननक्श तीखे थे. वह दुबलीपतली और स्मार्ट थी.

एक महीने बाद ही उस का विवाह 'श्यामली से हो गया था. दहेज भी उसे अच्छा मिला था. 'श्यामली घर आई तो उस के जीवन में बहारें आ गई थीं. उस का वर्षों का सपना पूरा हो गया था. 'श्यामली को पा कर वह धन्य हो उठा था. वह उस के साथ घूमता, पिक्चर देखता, उसे अपने दोस्तों के पास ले जाता. उसे लगता था कि वह बहुत खुशनसीब है, जो 'श्यामली जैसी पत्नी उसे मिली है. अगर उस का विवाह अनिता से हो गया होता तो वह कभी उसे अपने साथ नहीं ले जा सकता था. जीवन बिलकुल ही नरक हो जाता.

'श्यामली दुबलीपतली नाजुक लड़की थी. उस से अधिक काम नहीं हो पाता था. वह नाजों से पली थी. वह अपने मांबाप की इकलौती लड़की थी. जरा सी भी ठंड [illegible] जाती या जरा भी अधिक काम कर[illegible] बीमार पड़ जाती थी. सप्ताहसप्ताह [illegible] खाट पर पड़ी रहती थी. घर का काम [illegible] करती थी. बहनों का भी विवाह हो गया [illegible] मां भी अब बूढ़ी हो चली थीं. इसलिए स[illegible] को ही घर के काम में हाथ बंटाना पड़ता [illegible] बाहर का काम तो वह करता ही था.

एक बार वह बैंक की किसी प्रतियो[illegible] परीक्षा में बैठना चाहता था. शीला का [illegible] हो चुका था. 'श्यामली उन दिनों बीमार [illegible] रही थी. घर के काम के लिए उस ने [illegible] मुशकिल से ढूंढ़ कर नौकर रख लिया [illegible] पर दूसरे ही दिन नौकर भाग गया [illegible] 'श्यामली अभी ठीक नहीं हो पाई थी, [illegible] दिन वह बहुत उदास था. मां उस के पास [illegible] कर बोली थीं, "क्या बात है, समीर, [illegible] उदास हो. क्या हो गया?"

वह बोला, "मां, मैं इतने दिनों से [illegible] ही हूं. कितनी बार सोचा कि [illegible] प्रतियोगी परीक्षा में बैठूं, पर कुछ न [illegible] व्यवधान पड़ता ही रहा. इस बार नौक[illegible] रखा था, पर वह भी चला गया."

"क्या किया जाए, मेरा शरीर भी [illegible] नहीं चलता. बहू भी बीमार रहती है. [illegible] तुम फिक्र मत करो, गृहस्थी तो चल ही [illegible] है."

'मां, तुम नहीं समझोगी,' वह मन [illegible] मन बोला था. फिर वह वहां से उठ कर [illegible] कमरे में आ कर किताबें पढ़ने लगा था. [illegible] ने सोचा, चाहे कुछ भी हो जाए, इस बार [illegible] जरूर परीक्षा में बैठेगा.

पर इस बार भी उस की पढ़ाई नहीं [illegible] पाई थी. कभी 'श्यासली बीमार पड़ जाती [illegible] कभी बच्ची या मां. घरबाहर के सभी का[illegible] उसी के जिम्मे थे. इम्तहान तो दे दिया [illegible] पर उत्तीर्ण नहीं हो पाया था. उस के [illegible] साथी उस से आगे बढ़ते जा रहे थे.

इस के बाद भी उस ने कोशिश की थी, [illegible] असफल रहा था. उसे कोई न को[illegible] परेशानी घेरे रहती थी. वह 'श्यामली [illegible]

कुछ कहता भी तो लड़ाई की नौबत आ जाती थी. रजनी और रोहित का जन्म हो चुका था. श्यामली की सुंदरता धीरेधीरे नष्ट होती जा रही थी. उस की आंखों के नीचे कालापन छा गया था और असमय ही झुर्रियां भी पड़ गई थीं, चेहरा भी सिकुड़ गया था.

वह स्वयं भी पहले जैसा कहां रहा था. पहले कितने सलीके से कपड़े पहनता था, पर अब जो भी सामने दिखता, पहन कर चल देता था. अपनी ओर उस ने ध्यान देना बिलकुल छोड़ दिया था. बस घर का सामान लाना, डाक्टर के पास जाना, बच्चों के कपड़े बदलवाना यही उस के काम हो गए थे. बच्चे भी दुबलेपतले थे. वे भी आए दिन बीमार रहने लगे थे. शीला बड़ी हो गई थी. थोड़ा बहुत काम संभाल लेती थी. पर अब तो उसे कुछ भी करने की इच्छा नहीं रह गई थी. वह उसी में प्रसन्न रहने लगा था.

पर अब उसे अनिता को देख कर ताज्जुब हो रहा था. उस की कही बात याद आ रही थी. वह श्यामली से कहीं अधिक सुंदर और जवान नजर आ रही थी.

इन्हीं विचारों में डूबताउतराता वह कब सो गया, उसे पता ही नहीं चला.

दूसरे दिन सुबह उठ कर वह बैंक जाने के लिए तैयार होने लगा तो उस ने अपने सारे कपड़े देख डाले. उसे अपना कोई भी कपड़ा ढंग का नहीं लग रहा था. बड़ी मुशकिल से उस ने एक कमीज और पैंट पर इस्तिरी की और बैंक जा पहुंचा. अनिता पहले से ही अपने केबिन में मौजूद थी. वह काम में व्यस्त थी. समीर चुपचाप काम करता रहा. जब भी चपरासी उस के पास आता तो उसे लगता कि अनिता ने उसे बुलाने के लिए चपरासी को भेजा है.

पर ऐसा कुछ नहीं हुआ. दोतीन दिन ऐसे ही व्यतीत हो गए.

चौथे दिन जैसे ही वह बैंक पहुंचा, चपरासी उस के पास आ कर बोला, "मेम साहब ने आप को बुलाया है."



मंजर

हुस्न भी था खिलाखिला
और इश्क भी था जवांजवां,
क्या वो मंजर था सनम
बस, कर नहीं सकता बयां.
— अदा देहलवी

वह समझ गया कि अनिता ने उसे बुलाया है. धड़कते दिल से वह अपनी कुरसी से उठ, दबे पांव उस के केबिन में पहुंचा और उस के सामने पड़ी कुरसी पर बैठ गया.

उस के बैठते ही अनिता बोली, "समीर, मुझे भूल गए क्या?"

"नहीं तो, मैं आप को कैसे भूल सकता हूं? हम लोगों ने साथ ही तो बचपन बिताया है."

"अरे, मैं तुम्हारे लिए आप कैसे हो गई?"

"पहले की बात और थी, अब बात और है."

"नहीं, समीर, मैं पहले जैसे ही हूं. यहां नई आई हूं, किसी से जानपहचान नहीं, किसी दिन अपनी पत्नी को ले कर मेरे घर आओ. वैसे भी तुम्हारी पत्नी को देखने की बहुत इच्छा है. पिताजी की बदली के बाद तो तुम्हारे घर वालों से संबंध ही खत्म हो गए."

समीर को लगा उसे भी कुछ कहना चाहिए. वह बोला, "तुम ने विवाह कर लिया? क्या करते हैं तुम्हारे पति?"

"हां, समीर, भावनाओं के साथ कब तक जिंदगी चलती है. आओ, इसी रविवार को मुलाकात हो जाएगी. अनिल इंजीनियर

है. उन का तबादला तो पहले ही यहां हो गया था, पर मेरी वजह से ही वह अब तक वहीं रुके हुए थे."

वह कुछ बोला नहीं तो अनिता बोली, "तो आ रहे हो, समीर?"

"नहीं, अनिता, मेरी पत्नी की तबीयत खराब चल रही है."

"चलो कोई बात नहीं, फिर हम ही तुम्हारे घर आ जाएंगे. अपना पता बता दो."

मजबूर हो कर समीर ने अपना पता बता दिया. हालांकि वह अनिता को अपने घर बुलाना नहीं चाहता था.

समीर लौट कर आया तो अपनी सीट पर बैठ कर काम करने लगा. पर उस का मन काम में नहीं लग रहा था. वह सोच रहा था कि वह अनिता के मातहत रह कर कैसे काम कर सकेगा. दोनों ने साथ ही बचपन बिताया, साथ ही पढ़े, पर वह अभी तक क्लर्क है और अनिता मैनेजर बन चुकी है.

रविवार को सुबह से ही उस ने अपना घर ठीक करना शुरू कर दिया. सारे घर की सफाई की. अस्तव्यस्त चीजों को ठीक से लगाया. उसे लग रहा था अनिता इस घर और श्यामली को देख कर जरूर नाकभौं सिकोड़ेगी. अब वह उसे कैसे बताता कि श्यामली पहले वास्तव में ही सुंदर थी, अब नहीं रही है. उस ने जो गलती की है, उस का प्रायश्चित्त तो हो नहीं सकता. अनिता और वह बहुत दूर जा चुके हैं.

शाम कब हो गई. उसे पता ही नहीं चला. दरवाजे पर खटखट की आवाज से उस का ध्यान भंग हुआ. अनिता आ गई थी. उस ने स्वयं ही किवाड़ खोले. अनिता और अनिल को बैठक में बिठाया और उन से बातें करने लगा.

कुछ ही देर में शीला उन के लिए नाश्ता और चाय ले कर आ गई. श्यामली इन दिनों कुछ चिड़िचिड़ी सी हो गई थी. कोई भी मेहमान घर में आए और वह जरा भी बीमार हो तो वह सामने नहीं आती थी.

चाय पी कर अनिता श्यामली से मिलने अंदर चली गई. अनिल समीर से बातें करता रहा.

"समीरजी, आप अनिता के वही पड़ोसी हैं, जिन से वह प्रेम करती थी? अनिता ने मुझे सब कुछ बता दिया था."

"हां, अनिलजी. मैं सचमुच अनिता के अंदर छिपी सुंदरता को नहीं पहचान पाया, जिस का फल अब भुगत रहा हूं. मेरी पत्नी पहले तो सुंदर थी, पर कभी ठीक नहीं रही. हमेशा ही बीमार रही. इस वजह से आप जान नहीं सकते, मुझे कितनी परेशानी उठानी पड़ी है. मैं कोई तरक्की नहीं कर सका. जिस पद से नौकरी शुरू की थी, आज भी उसी पर हूं." बहुत दिनों बाद समीर ने किसी से अपने दिल की बात की थी.

अनिल ने कहा, "कोई बात नहीं, समीरजी, जितना आदमी को मिलता है, उसी में संतोष कर लेना चहिए. मैं तो जो कुछ भी हूं, उस का श्रेय अनिता को ही है. उस ने कदमकदम पर बड़ी सूझबूझ से मेरा साथ दिया. बच्चों को संभाला तथा अपनी भी उन्नति की. कभी आप हमारे घर आइए. वैसे अनिता आप की बड़ी तारीफ करती है."

इसी समय अनिता अंदर से आई और जाने को तैयार हो गई. समीर उन दोनों को देख कर मन ही मन ईर्ष्या करने लगा. कुछ ही देर में वे दोनों घर से बाहर चले गए. वह बाहर खड़ाखड़ा उन को जाते हुए देखता रहा. ०

सुंदरता

यदि सुंदरता के साथ सद्गुण है तो वह हृदय का स्वर्ग है, यदि उस के साथ दुर्गुण है तो वह आत्मा का नरक है. वह बुद्धिमान की होली और मूर्ख की भट्ठी है.

—क्वालर्स



कहानी • क्षमा चतुर्वेदी

प्रश्नचिह्न

बात फिर लौट कर वहीं पहुंच गई थी. महिला क्लब की अध्यक्षा नीलाजी का कहना था, "भई, इस मामले में तो चारुजी के जीवन की सराहना करनी पड़ेगी. सभी को ऐसी होनहार औलाद मिले."

. अब तक अपनी लाड़ली किटी की लापरवाही और मौजमस्ती का बखान करती हुई मालतीजी एकाएक चुप हो गई थीं. आंखों में ईर्ष्या सुलभ एक चमक उभर कर लुप्त हो गई थी.

वैसे कौन सरेआम अपने बच्चों की बुराई करना पसंद करता है, पर पानी उ... सिर से गुजर जाए तो अपनी गोष्ठियों में कुछ कहसुन कर भार हलका कर लेने की स्वाभाविक लालसा महिलाएं दबा कर भी

तो नहीं रख सकतीं.

और फिर अब तो सभी को पता था कि तीन साल से किटी लगातार बी.ए. में फेल हो रही है. नकचढ़ी ऐसी कि पानी का गिलास तक भरने में हेठी समझती है. रूपरंग ही अच्छा होता तो कहीं कुछ कमी पूरी हो जाती. अब बेचारी मालतीजी मन ही मन बेटी को ले कर दुखी थीं. कैसे पार लगेगी यह लड़की?

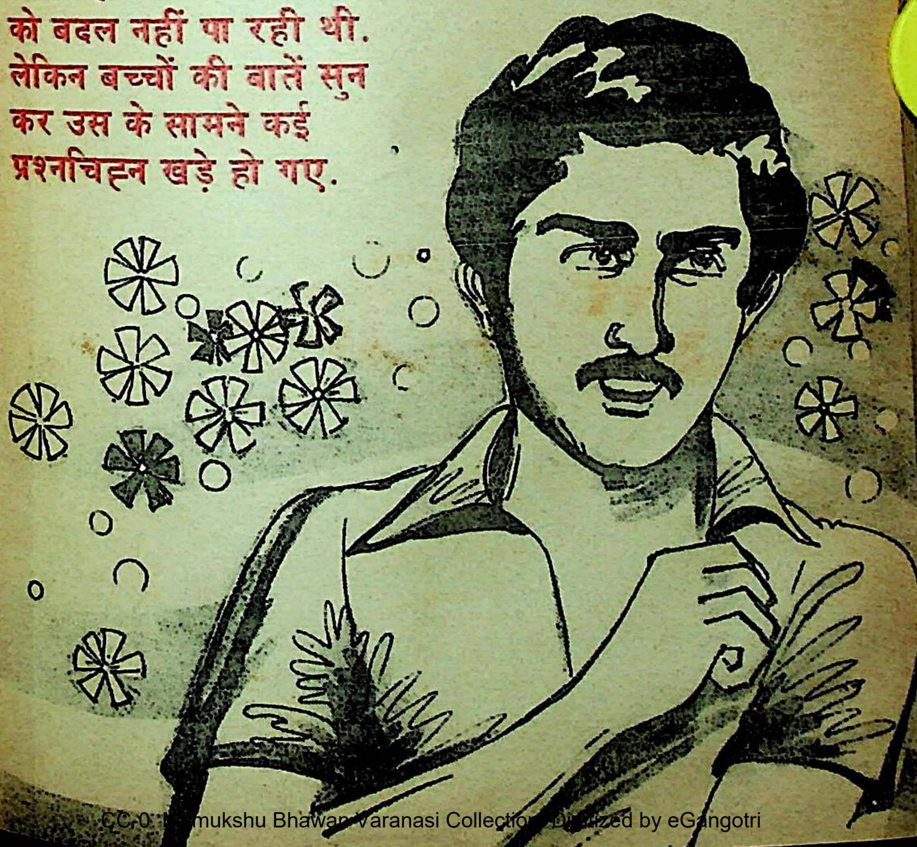
उधर उर्मिलाजी को अपने रंजीत की चिंता खाए जा रही थी. पांच साल से साहबजादे कालिज में रंगरेलियां मना रहे हैं, पर एक जमात भी आगे नहीं बढ़ पाते. उधर शौक भी ऐसे पाल रखे हैं... अफीमगांजा, डिस्को, ड्रिंक, लड़कियां, अनापशनाप खर्चे इत्यादि.

चारु के आगे सुबोध का व्यक्तित्व दब सा गया था. और वह थी कि अपनेआप को बदल नहीं पा रही थी. लेकिन बच्चों की बातें सुन कर उस के सामने कई प्रश्नचिह्न खड़े हो गए.

पर चारु इस मामले में सचमुच सुखी है. दो ही संताने हैं, पर दोनों प्रतिभाशाली. बेटी जितने दिन कालिज में रही, खेलकूद, नाटक प्रतियोगिताओं में एक से एक बढ़ कर इनाम लेती रही. पढ़लिख कर कालिज छोड़ा ही था कि आई.पी.एस. लड़का मिल गया. उस की चांद सी सूरत पर रीझ कर न जाने कितने लखपतियों के यहां के रिश्ते ठुकरा कर उस ने खुद आगे बढ़ कर रुचि को मांग लिया.

और सदा से स्वर्ण पदक जीतने वाला रोहित अभी आई.ए.एस. की तैयारी कर ही रहा था कि विदेश की किसी कंपनी ने उस के आगे कार्यकारी अधिकारी के पद का प्रस्ताव रख दिया. दस हजार रुपए महीना, कार, बंगला और विदेश भ्रमण अलग से.

सचमुच, चारु को भी यही लगा था कि उस की मेहनत सफल हो गई है. इन बच्चों को बनाने में उस ने कितनी तपस्या की है, यह वही जानती है. वर्षों से उस की यही



साध थी कि वह बच्चों का भविष्य बनाएगी और अब उस की यह साध पूरी हो गई थी.

चारु ने कभी खुद के लिए भी तो स्वप्न संजोए थे. अब भी उस की स्मृतियां हैं. कुछ धुंधली सी यादें उभर आती हैं. पिता की सिविल लाइंस की वह विशालकाय कोठी, उन का अतुलित प्यारदुलार, जिस ने उसे कभी मां की कमी महसूस नहीं होने दी. कालिज जाने वाली चारु भी पिता की नजरों में निरी बच्ची ही थी. कभी वह स्कर्टब्लाउज पहने टेनिस खेलती, तो कभी जींस कसे घोड़ा दौड़ाती. वह अपनी लाड़ली बेटी को कभी आंखों से ओझल नहीं होने देते थे. चाहे दौरे पर जाना हो या शिकार पर, चारु हमेशा अपने पिता के साथ जाती थी.

फिर वह हादसा... लान में किताब पढ़तेपढ़ते ही चारु पता नहीं कहां खो गई थी. कोई दारुण दृश्य उस की आंखों के सामने घूम रहा था. सिहर कर उस ने आंखें मूंद लीं. उस दिन पिताजी अच्छेभले अपने शयनकक्ष में सोए थे. उस ने खुद जा कर रात को उन्हें दूध का गिलास थमाया था, मगर सुबहसुबह ही रामसिंह की आवाज उसे चौंका गई थी.

"बिटिया, साहब तो उठ ही नहीं रहे हैं."

वह सुन कर सिहर गई थी. रोज तो पांच बजे ही चाय ले कर वह घूमने निकल जाते थे और छः बजे लौट कर उसे आवाज देते थे और वह कोठी के लान में पिता के साथ बैठी अखबारी चर्चाओं में डूब जाती थी.

फिर सब कुछ यंत्रचालित सा हुआ था. डाक्टर आए. पिताजी को रात में ही दिल का दौरा पड़ा था. वह सोते रह गए थे. घर भर में कुहराम मच गया था. वह तो जैसे विक्षिप्त सी हो गई थी. भाई भी विदेश से पहुंच नहीं पाए थे. सगे रिश्तेदारों में एकमात्र मौसी ही थीं, वह आ कर उसे साथ लिवा ले गई थीं.

कितना अंतर था उस घर में और यहां. मौसी का लंबाचौड़ा परिवार और सीमित आय. चारु ने फिर कालिज शुरू कर दिया था. मन लगाने का प्रयास किया, पर लगता कि भीतर ही भीतर टूटती जा रही है. कहीं कुछ अच्छा न लगता था. मौसी ने देखभाल कर उस का रिश्ता भी तय कर दिया था. शादी के नाम से ही वह चौंक उठी थी. अभी से शादी... अभी अठारह ही तो पूरे किए हैं. पिताजी कहते थे कि बेटी को खूब पढ़ाऊंगा लिखाऊंगा. अभय और अजय की तरह चारु भी विदेश पढ़ने जाए... सचमुच उसे अब अपने दोनों भाइयों पर... तरह खीज आने लगी थी. क्यों नहीं आ... वे उसे साथ ले गए? क्यों उसे औरों की द... पर छोड़ दिया? तभी उसे बगल वाले क... से कुछ सुनाई पड़ा था, मौसा कह रहे थे, "काफी भागदौड़ करनी पड़ी. ... शादीविवाह क्या आसान खेल है?"

"अच्छे खातेपीते लोग हैं. लड़का... भला है. नौकरी कर रहा है. चारु सुखी रहेगी. अभी क्लर्क है तो क्या, आगे... तरक्की कर लेगा," मौसी की आवाज... उसे साफ सुनाई पड़ रही थी.

"क्लर्क..." कहीं कुछ भीतर ही भीतर चटका था. उस के सपनों का राजकुमार खूब सुंदर... खूब बड़ा अफसर... उसे ब्याहने आएगा. यही तो अब तक सुनती आई थी. दबी रुलाई सिसकी में फूट पड़ी थी. पिता बैंक में भी तो कोई ज्यादा पैसा नहीं छोड़ गए थे. किस बूते पर वह अकड़ती. मौसी उसे देर तक समझाती रही थी. "बेटी, सुबोध बहुत अच्छा लड़का है. तुझे बहुत खुश रखेगा. फिर लड़के के भाग्य का क्या ठिकाना, कहां से कहां पहुंच जाए."

मौसी का सोचना भी ठीक था, उन्हें अपनी बेटियां भी तो ब्याहनी थीं. इतना फर्ज निभा रही थीं, यही क्या कम था. और... और क्या पता, यही सुबोध कभी उस के सपनों का राजकुमार बन जाए.

महीने भर में ही विवाह हो गया था. विदा हो कर वह ससुराल पहुंच गई थी. ननद, देवर, सास, भरीपूरी ससुराल...

घूंघट उठते ही कहा था, "चांद सी बहू है. इसी की, तो तमन्ना थी."

पर विवाह की पहली रात को ही उसे एक झटका सा लगा था, जिस के कंपन अब तक महसूस होते हैं. सुबोध को देखते ही उस के मन ने कहा था, 'यह व्यक्ति तो कभी भी उस के सपनों का राजकुमार नहीं हो सकता.'

लंबेचौड़े, आकर्षक व्यक्तित्व वाला राजकुमार, आलीशान कोठी, नौकर-चाकर– उस के भावुक, सुकुमार मन ने कितने सारे सपने संजोए थे. और उसे मिला क्या? सुबोध की बहुत मामूली सी शक्लसूरत, साधारण नौकरी. और सब से अधिक जो चीज उसे अखरी थी, वह थी ससुराल वालों के पुराने विचार.

अब तक जिस परिवेश में उस का लालनपालन होता रहा था, उस से कितनी भिन्नता थी यहां.

धीरेधीरे स्थिति बहुत कुछ सुधरी थी. छोटे भैया विदेश से लौट आए थे. शादी कर के यहीं प्रैक्टिस शुरू कर दी थी. चारु का भी वह बहुत ध्यान रखते थे. हर महीने मोटी रकम किसी न किसी बहाने आ जाती थी. बड़े भैया भी विदेश से कुछ न कुछ भेजते रहते थे. भाइयों ने भी शायद महसूस किया था कि बहन के साथ अन्याय हुआ है. सुबोध की नियुक्ति अब दिल्ली हो गई थी. छोटे भैया ने दिल्ली वाला फ्लैट चारु को दे दिया था ताकि वह आराम से रह सके. रुचि और रोहित भी अब स्कूल जाने लायक हो गए थे. चारु भी एक अंगरेजी स्कूल में पढ़ा रही थी. जाहिर तौर पर सब ठीक ही चल रहा था. पर चारु को अभी भी लगता कि उस का विवाह एक दुस्वप्न की भांति ही था. काश, मौसी ने इतनी जल्दी न की होती, भाइयों ने ही उस समय रोक दिया होता.

चारु के दबंग व्यक्तित्व के सामने सुबोध का व्यक्तित्व और दब गया था. यों भी उसे कम बोलने की आदत थी, अब उस की चुप्पी और बढ़ गई थी. घर का मसला हो या बच्चों की पढ़ाई से संबंधित



जिंदगी

इस जिंदगी की हम से
हकीकत न पूछिए,
इक चीज जिस को नाम दिया
इख्तियार का.
—बेगम मुमताज मिर्जा

कोई बात, सब चारु ही तय करती थी.

उस दिन दफ्तर में ही सुबोध को नियुक्तिपत्र मिला था, बैंक की एक नई शाखा दिल्ली के पास ही किसी छोटी जगह में खुलने जा रही थी. उस में उसे प्रबंधक बना दिया गया था. तब पहली बार सुबोध को अपने भीतर खुशी की लहर महसूस हुई थी. अब वह चारु के सामने सिर ऊंचा कर सकेगा. कम से कम वह अब क्लर्क तो नहीं रहा था.

उस ने मिठाई का डब्बा रास्ते में ही खरीद लिया था.

पर चारु... कितनी तटस्थता से उस ने सुबोध से कह दिया था, "तो... तो तुम्हें अब दिल्ली के बाहर रहना होगा?"

"तो क्या सब लोग नहीं चलेंगे?" सुबोध ने आहिस्ता से कहा था.

"कैसी बच्चों सी बातें करते हो. सब कैसे जा सकते हैं? मुशकिल से तो बच्चों के अच्छे स्कूल में दाखिले हुए हैं. फिर मेरी नौकरी.. और फिर तकलीफ भी क्या है. घर का मकान है ही, तुम हर हफ्ते आजा सकते हो."

चारु ने दो मिनट में सारी गुत्थी

सुलझा दी थी और वह चुप रह गया था. चारु यह भी तो पूछ सकती थी कि तुम वहां अकेले कैसे रहोगे.

नहीं, शायद इन सब बातों का वह हकदार नहीं था. सुबोध का सारा उत्साह बुझ सा गया था. चारु ने तैयारी शुरू कर दी थी. उस ने एकएक चीज का ध्यान रखा था. खानेपीने के डब्बे पर परची लगा दी थी और सुबोध सोचता रह गया था कि काश कभी चारु उस के मन में भी झांकने का प्रयास करती.

समय सरकता रहा था. सुबोध के दिल्ली के दिल्ली से बाहर तबादले होते रहे. चारु और बच्चे दिल्ली में ही रहे. बच्चों के साथ सचमुच बहुत मेहनत की थी चारु ने. उन की पढ़ाई से ले कर उठनाबैठना, सामान्य शिष्टाचार सभी पर उस की छाप थी. उस की मेहनत सफल हुई थी.

अब इन गरमियों में रोहित की शादी है. बहू का चयन भी चारु ने किया है. रोहित और ऋचा की जोड़ी. रोहित का ध्यान आते ही उस का मन पुलक में डूबने लगा था. कितना खयाल रखता है उस का बेटा. इतना बड़ा हो गया पर बचपना अब तक नहीं गया. अभी भी कहीं से आएगा तो 'मां' कहता हुआ सीधा लिपट जाएगा.

रोहित की न जाने कितनी ही बचपन की घटनाएं एकएक कर के उस के मस्तिष्क में घूमने लगी थीं. आंखों के सामने नन्हा सा रोहित, बड़ा हो कर स्कूल जाता रोहित, कालिज, विश्वविद्यालय में अनेक इनाम लेता रोहित एक आकर्षक युवक के रूप में आ कर सामने खड़ा हो गया था. इसी तरह के किसी व्यक्तित्व का कभी चारु ने अपने मन में स्वप्न संजोया था. आज पति रूप में न सही, बेटे के रूप में तो उसे पा ही लिया.

अब छुट्टियों में रोहित के साथ ही उस का कशमीर जाने का कार्यक्रम है. वहां गिरती बर्फ देखने की न जाने कब से मन में इच्छा थी.

यों तो सुबोध के साथ कभी भी जा सकती थी पर मन ही नहीं हुआ. अब बेटे के साथ ठाट से जाएगी. हवाई जहाज की सीटें रोहित ने पहले से ही बुक करा रखी हैं.

डाकिए की आवाज से उस का ध्यान टूटा. भारी लिफाफा... हां रोहित का ही पत्र था.

"मां, मुझे छुट्टियां मिल नहीं पा रही हैं. वैसे भी मैं ने गरमियों में ऋचा के साथ कशमीर जाना ही है. इसलिए टिकट भेज रहा हूं. आप अपना कार्यक्रम रद्द मत करना. आप और पिताजी जरूर घूम आइए. और मां, पिताजी अब अगले साल रिटायर हो रहे हैं. अब तक नौकरी की खातिर अलग रह कर उन्होंने काफी परेशानियां उठाई हैं. अब आप उन का ध्यान रखिए. वैसे भी वह भीतर से काफी टूट गए हैं. इस बार दोचार दिन के लिए उन्हीं के पास चला गया था. देख कर मन में कचोट सी लगी. लगा कि पिताजी के साथ हम लोग न्याय नहीं कर पाए हैं."

काफी लंबा पत्र था रोहित का. पर चारु के सामने अक्षर धूमिल होते जा रहे थे. जिन सचाइयों से वह अब तक अपनेआप को बचाती रही थी, किसी न किसी बहाने आज बेटे ने उन्हीं को उघाड़ कर रख दिया था.

उस की आंखों के सामने सुबोध का चेहरा कौंध गया था. आराम कुरसी पर वह निढाल सी बैठी रही. जिस पति को जीवन में कभी भी वह अपना उदात्त प्रेम, समर्पण और सहज स्नेह नहीं दे सकी, क्या अब बेटे के कहने से वह अपनेआप को बदल पाएगी?

"मां, जब आप ने हम लोगों के साथ इतनी मेहनत की तो पिताजी को भी तो आप बदल सकती थीं," पता नहीं रुचि उस दिन किस आवेश में बोल गई थी और वह चाह कर भी डपट नहीं सकी थी.

पर आज एक के बाद एक कई प्रश्नचिह्न उस के सामने खड़े थे और वह उन के उत्तर तलाशना चाह रही थी. •

लेख • सरस्वती पंडित

आंचल में दूध आंखों में पानी

नारी की यह स्थिति आखिर कब तक रहेगी?

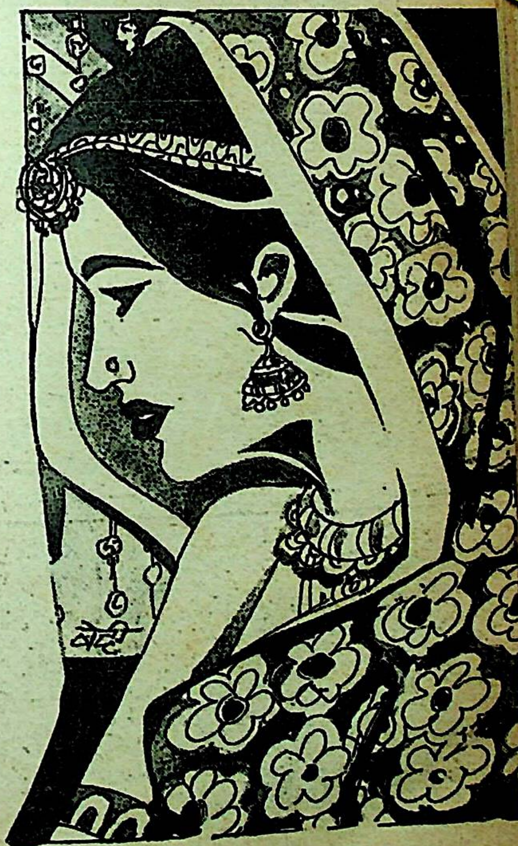
लड़की का मोहक और वास्तविक सौंदर्य बनावट में नहीं, सरलता में होता है. यही उस के साथ भी था. काले घुंघराले बाल, दो चोटियां और कपाल पर लटकती बालों की छोटी सी लट. उसे गीत गाने को कहा गया. उस ने एक गीत गाया. कंठ सुरीला था. गीत के शब्द भावपूर्ण थे. गाना समाप्त हुआ. लड़की की झुकी हुई पलकें ऊपर उठीं और अधरों के बीच श्वेत दंतपंक्ति मीठी सी मुसकान के साथ चमक उठी. सब ने गीत और गायिका की भूरिभूरि प्रशंसा की. लड़की पसंद आ गई और शादी हो गई.

शादी के बाद एक दिन कुछ मेहमान घर आए. गृहस्वामी उन के साथ बातों में लगे थे. गृहस्वामिनी शरबत के गिलास ले कर आई. माथे पर पल्ला था, पर कपाल पर बालों की छोटी सी लट नाच रही थी और होंठों पर मंद मुसकान. वह सब के सामने [illegible] गिलास रखती हुई पति के सामने आई. पलकें उठा कर उस ने शरबत की ट्रे आगे बढ़ाई. पति ने थोड़े से तनाव के साथ धीरे से पूछा, "किसे दिखाने के लिए यह लट निकाली है?"

पत्नी की समझ में नहीं आया. उस ने मुसकराते हुए पति से आंख मिलाई. पति की आंखों में कुछ क्रोध की लाली दिखाई दी. व्यंग्य भरे स्वर में उस ने फिर पूछा, "किसे दिखाने के लिए है?"

पत्नी ने सहज स्वर में पूछा, "क्या?" और असमंजस में पड़ी वह आगे बढ़ गई.

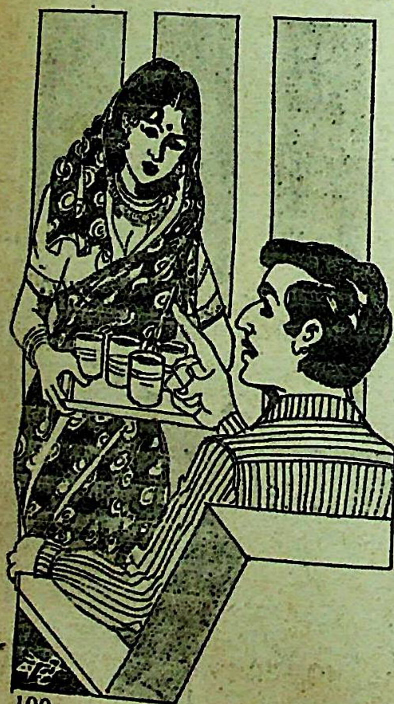
मेरा मन वितृष्णा से भर उठा. शिक्षित पति है पर मन में पुरुष का अहं और अधिकार भरा हुआ है. पत्नी जो नहीं समझ पाई, वह मैं समझ गई. शादी से पूर्व लड़की की जिस बात को प्रशंसा से देखा था, वही बात आज पुरुष के मन में संशय पैदा कर गई. ईर्ष्या और स्वामित्व की भावना ने विवेक को दबा दिया. पत्नी बन जाने पर



अतिथियों के सामने सुघड़ता से आने पर और मुसकान के साथ आतिथ्य करने पर पुरुष की ईर्ष्या और उस का अधिकार जाग उठा. अब उसे सौंदर्यपूर्ण, सुघड़ पत्नी नहीं फूहड़ दासी चाहिए, जो केवल उस की वासना तृप्त करे.

शारीरिक सुखभोग के आगे पति की सुघड़ सौंदर्य देखने की दृष्टि विलीन हो गई. जिस लावण्य को देख कर वह स्वयं आकर्षित हुआ था, ऐसा आकर्षण औरों को हो सकता है, ऐसी भावना ने उस के स्वभाव में विकृति ला दी. प्रेम और भोग में सतर्कता बरतना उस का स्वभाव बन गया. वह भूल गया कि शादी से पूर्व स्त्रीपुरुष का आकर्षण शादी के बाद समर्पण बन जाता है. जिस के मन में समर्पण की भावना आ जाती है, फिर उस स्त्री को दूसरों की प्रशंसा आनंद प्रदान करेगी, आकर्षण नहीं. वह तो तन्मयता से अपने पति में समा जाना चाहेगी, पर यदि पति का विश्वास नहीं मिला तो उस की उलझनें स्वभाव में विकृति ला देंगी.

सदाचार और पवित्रता देखने के लिए



शुद्ध मन चाहिए, उदार दृष्टिकोण ... और शुद्ध आचार चाहिए.

पत्नी बेचारी निःश्वास छोड़ ... गई. पर कुंठा ने उस के मन में घर बना...

कुछ वर्ष बाद एक दिन पति ने ... "तुम बूढ़ी दिखने लगी हो."

पत्नी ने पलकें उठाईं. वही ... मुसकान उस के अधरों पर आई और ... हो गई. उस की आंखों में थोड़ी लाली ... आई. उस ने पूछा, "अपने दफ्तर की ... का सौंदर्य मुझ में देखना चाहते हैं शायद."

"क्या मतलब?" पति ने पूछा.

"मतलब अपने मन से पूछिए. आप... मन भटकने लगा है, ऐसा लगता है," पत्नी ने शांति से कहा.

"तुम कहना क्या चाहती हो? मेरा ... किस लिए भटकेगा?"

पत्नी ने उसी शांति से कहा, "... ऐसा न होता तो आज आप तुलनात्मक ... न कहते. क्या आप ने इस से पहले युवती... वृद्धाएं नहीं देखी थीं? क्या उन की अवस्था ... का अंदाजा आप को नहीं आया ... भावनाओं का संबल टूटे, उस से पूर्व ऐसी ... प्रवृत्ति ढूंढ़ लीजिए जिस में आप को ... प्रेरणा मिले, नहीं तो हमारा यह गृह... जीवन अभिशाप बन जाएगा." पत्नी ... आंखें भीग गई थीं.

पति को जैसे आघात सा लगा. उस ... दृष्टि एक स्थान पर स्थिर हो गई. आंखें ... कर वह ध्यानस्थ हो गया. फिर वह धीरे ... उठा और समीप जा कर पत्नी के सिर ... हाथ रख कर बोला, "तुम सच कहती हो."

पत्नी ने पति का हाथ अपने हाथों में ... लिया. भीगी आंखों के आंसू मोती बन ... उन के हाथ पर चमक उठे. ... मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियां याद ... गईं:

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में है दूध और आंखों में पानी."

"किसे दिखाने के लिए यह लट निकाली है," पति ने थोड़े तनाव से पूछा.

" मेघा, उठो, चलो मेरे साथ," पति ने कहा तो वह सोच में पड़ गई कि यह कैसा स्वागत हो रहा है.



नारी की सहनशीलता एक ऐसा अद्भुत गुण है, जिसे हम 'शक्ति' नाम दे सकते हैं. पुरुष में शारीरिक शक्ति है तो स्त्री में मानसिक शक्ति है. सबल मन कठिनाइयों का सामना करता है. विषम परिस्थितियों को सुलझाने का संकल्प करने वाली नारी सांसारिक समस्याओं से घबराती नहीं है, उन का साहस से सामना करती है. कलह नहीं करती, पर सुलझाने के लिए विकल्प देती है. गिड़गिड़ाती नहीं है, पर त्याग कर के और पाती है. ताने नहीं मारती पर अधिकार से गलती का आभास कराती है.

जीवन स्वयं परीक्षा है, जो निरंतर चालू रहती है. सबला नारी कसौटियों को पार कर अपने चारों ओर सुख का घेरा बना लेती है.

लड़की बड़ी हुई, शादी हुई. लड़की के मातापिता ने खूब दिया. सास पड़ोसनों को चीजें दिखादिखा कर प्रसन्न हो रही थी.

सांझ हुई, दीए जगमगा उठे. चांदनी सी झिलमिलाती बहू को ननद और उस की सहेलियां सजे हुए कमरे में ले गईं. शरमाती हुई नववधू को फूलों की सेज पर बिठा दिया और स्वयं बहाना बना कर चली गईं. द्वार बंद कर दिया और बाहर खिलखिला कर हंसती रहीं. मित्रों से घिरा हुआ दूल्हा आया. एक ने द्वार खोला और दूल्हे को अंदर धकेल दिया. द्वार फिर बंद हो गया. वधू की धड़कनें तेज हो गईं. चाहने पर भी वह सिर ऊंचा न उठा सकी.

यह कैसा स्वागत?

पति समीप आ कर खड़ा हो गया. दोनों निस्तब्ध थे पत्नी सोच रही थी 'घूंघट अब उलटा, अब उलटा' कि खंखारते हुए पति ने कहा, "पैसों का बड़ा अभिमान है शायद. अभी से समझ लेना, यहां यह सब नहीं चलेगा."

'हाय, यह कैसी विडंबना. अरमान भरी नववधू का यह कैसा स्वागत!'

वधू ने माथा ऊंचा किया. आधे घूंघट में से दो बड़ीबड़ी आंखों को पति के मुख पर टिका दिया. वह धीरे से खड़ी हुई. झुक कर पति को प्रणाम किया और द्वार की ओर बढ़ गई. द्वार खोलने जा रही थी कि पति ने पूछा, "कहां जा रही हो?"

"दूसरे कमरे में."

"क्यों?"

"यह तो आप को सोचना है."

"तुम्हें किस बात का घमंड है?"

"स्त्री को अपने पति पर घमंड होता है... पर यह मेरी भूल थी. अब मुझे आत्मसम्मान पर घमंड है."

बौखला कर पति ने कहा, "तुम्हें अपनी प्रतिष्ठा का, हमारे घर की प्रतिष्ठा का खयाल नहीं?"

"किस के बल पर प्रतिष्ठा का खयाल करूं?"

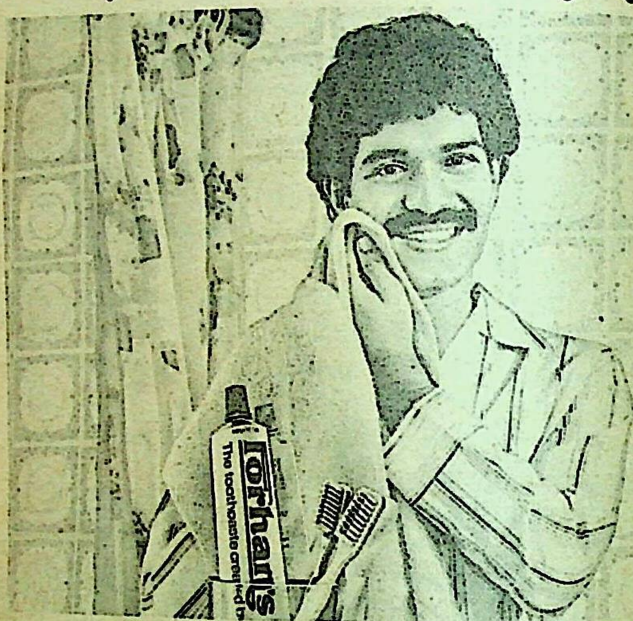
"पीहर जाओगी क्या?"

"नहीं, अब वह घर मेरा नहीं है."

"तो फिर कहां जाओगी?"

"जब तक आप का घमंड नहीं

मसूड़ों को मज़बूत बनाइये दाँतों की ज़िन्दगी बढ़ाइये



सिर्फ़ फोरहॅन्स में ही मसूड़ों को मज़बूत बनाने वाला विशेष ऐस्ट्रिंजेंट है

इसका अनोखा स्वाद ही इसके असर का सबूत है!

फोरहॅन्स का ऐस्ट्रिंजेंट मसूड़ों की विशेष तौर से देखभाल करता है. सूजन रोक कर ऐस्ट्रिंजेंट कमजोर और मुलायम मसूड़ों को संकुचित करके उन्हें स्वस्थ बनाता है. आपके दाँतों को लम्बी जिन्दगी और मजबूत आधार स्वस्थ मसूड़े ही दे सकते हैं. यहाँ तक कि मजबूत दाँतों को भी स्वस्थ मसूड़ों की जरूरत होती है. इसी लिये आपको चाहिये फोरहॅन्स-ऐस्ट्रिंजेंट वाला अनोखा टूथपेस्ट.



फोरहॅन्स पर भरोसा रखिये

ये दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट है

288 F 172 HIN

उतरेगा, नारी संरक्षण गृह में रहूंगी." वधू ने द्वार की कुंडी पर हाथ बढ़ाया.

पति ने अधीरता से कहा, "ठहरो."

वधू का हाथ नीचे आ गया. पति ने पास आ कर कहा, "सुनो."

"कहिए."

"तुम गलत समझ रही हो."

"गलती क्या है, यह समझ लेने के बाद क्षमा मांग लूंगी."

स्त्री ही स्त्री का अपमान करती है

एक क्षण पति ने वधू की ओर देखा, फिर बोला, "क्षमा तुम नहीं, मैं मांगूंगा..."

सकपका कर नववधू एक पग पीछे हट गई. पति ने आगे बढ़ कर पत्नी के दोनों हाथ पकड़ अपने माथे पर लगाए और बोला, "गलती मैं कर रहा था. दोस्तों की सलाह का उपयोग कितने गलत तरीके से किया, यह मैं समझ गया हूं. उन का कहना था, 'पगला, पहले दिन ही अपना सिक्का जमा लेना, तभी सुखी रहोगे.' मैं भावनाओं का संतुलन खो बैठा था. तुम्हारा व्यवहार और निर्णय दृढ़ता का द्योतक है, घमंड का नहीं. मुझे क्षमा कर दो."

नववधू ने अपना सिर पति के सीने पर टिका दिया. पति के भुजबंधों ने वधू को कस लिया.

गरीब परिवार की शिक्षित लड़की थी. लड़के ने खुद पसंद की थी. शादी हो गई. बरात घर आई. गातेबजाते बहू का स्वागत हुआ. सब के बीच बहू को बिठाया गया. सलज्ज, सलोना मुख था, आंखें झुकी हुई थीं. एक ने पल्ला हटा कर मुख का निरीक्षण किया. दूसरी ने भी देखा, थोड़ा पल्ला और हटा कर बोली, "सोने की चेन है, पर बड़ी हलकी है."

"चूड़ियां भी भारी नहीं हैं," दूसरी ने कहा.

तीसरी ने कहा, "पढ़ीलिखी है इसीलिए गहना पहनना पसंद नहीं होगा. पेटी में होगा. चलो देखें." सब की सब दहेज का सामान देखने मालकिन के पास पहुंच गईं.

सास चाबी का गुच्छा लिए छुमकछुमक करती आई और बहू से पूछा, "क्यों री, मांबाप ने तुम्हें कुछ नहीं दिया?"

नववधू ने संकोच के साथ कहा, "जी, मुझे कुछ नहीं मालूम. जो भी दिया है आप ने देख ही लिया है."

मुंह बना कर सासजी चली गईं. पर औरतों में कानाफूसी होने लगी, "बहू कुछ नहीं लाई."

रात हुई. खापी कर मेहमान चले गए. घर की एकदो औरतें बहू के पास बैठी रहीं. 12 बजने को आए. एक ने जम्हाई लेते हुए आवाज लगाई, "अम्मांजी, बहू को अपने कमरे में पहुंचा दीजिए. 12 बज गए हैं."

अम्मांजी ने वहीं से कहा, "तुम्हीं ले जाओ."

मुंह बना कर उस ने कहा, "चल, बहू."

बहू उठी नहीं, बैठी रही. ले जाने वाली ने फिर पुकारा, "यह तो उठती नहीं. तुम्हीं ले जाओ."

छमछम करती सासजी बाहर आईं. बहू के पास आ कर कहा, "उठो भी, कमरे में चलो."

बहू नहीं उठी. सास ने आंखें चढ़ा कर कहा, "अरी, किस चीज का घमंड है, जो इतने नखरे दिखा रही है?"

बहू चुप रही, पर पीछे से बेटे ने उत्तर दिया, "मां, हम लोग होटल में जा रहे हैं फिर तुम्हें किसी के नखरे नहीं उठाने पड़ेंगे."

उस ने वधू के पास आ कर कहा, "मेघा, उठो, चलो मेरे साथ."

नववधू सोच रही थी, 'यह कैसा स्वागत है?' उस ने साहस कर के पति से कहा, "नहीं, मैं होटल में नहीं जाऊंगी." पति लौट गया.

धीरे से किसी ने पुकारा, "बेटी."

मेघा ने चौंक कर ऊपर देखा. ससुरजी खड़े थे. वह खड़ी हो गई. उस ने हौले से कहा, "जी."

"बेटी, आओ, मेरे साथ आओ."

मेघा सकुचाती हुई ससुरजी के पीछेपीछे चली. उन्होंने पुत्र के कमरे के आगे रुक कर कहा, "बेटी, अंदर जाओ. अब यह घर तुम्हारा है. तुम ने आते ही इस घर के कुलगौरव की रक्षा की है. जाओ, सदा सुखी रहो."

ससुरजी के पांव छू कर मेघा कमरे में प्रविष्ट हुई. किसी ने दरवाजा बंद किया और मेघा को बाहुपाश में बांध लिया.

समस्याएं सर्वत्र हैं. स्त्री स्त्री का अपमान करती है. एक शासन करना चाहती है, दूसरी शासित होना नहीं चाहती, पर सीधे विद्रोह कर घरों की प्रतिष्ठा को आघात भी नहीं पहुंचाना चाहती. दोनों विरोधी व्यवहार हैं. अपमान कर के शासन करना बहादुरी नहीं है, ... बना कर शासन करना बहादुरी है. ... आत्मिक शक्ति का विवेकपूर्ण प्रयोग ... की विजय है. रावण ने सीता का हरण ... किया, पर सीता की दृढ़ता, निष्ठा ... पवित्र दृष्टि के सामने उसे झुकना पड़ा.

समस्या आने पर हम उस ... चाहते हैं, परंतु विकृत मानस ने ... समस्या खड़ी कर देते हैं और सुख, ... आनंद चाहने वाले हम इन सब से वंचित ... जाते हैं. यह कैसी विडंबना है?

विवेकपूर्ण व्यवहार और जीवन ... मूल्य को समझने की शक्ति ही हमारी ... मनोकामना पूर्ण कर सकेगी, हमें यह ... याद रखना चाहिए.

हिंदी गुलामों गंवारों जाहिलों की भाषा है न?

तभी तो आप

- हिंदी की बोलचाल में और वाक्य में दो तीन शब्द अंग्रेजी के जरूर रखते हैं. हर दूसरा वाक्य अंग्रेजी का बोलते हैं.
- अपने नाम का संक्षिप्तीकरण अंग्रेजी अक्षरों में करते हैं बी.पी. शर्मा, एस.एन. वर्मा, के.एम. गुप्ता, आई.एम. दास......
- अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक और निजी उत्सवों एवं सम्मेलनों के निमंत्रण अंग्रेजी में छपवाते हैं, चाहे आप और आपके आमंत्रित अंग्रेजी के चार वाक्य भी सही रूप में न लिख सकें और न समझ सकें.
- अपना निजी पारिवारिक पत्रव्यवहार अंग्रेजी में करते हैं.

अंग्रेजी साहबों की भाषा है. आप पूरी नहीं बोललिख सकते तो आधीअधूरी ही सही, साहबी कुछ तो दिखाई देगी ही!

खसरे से बच्चे को कैसे बचाएं?



क्या आप जानते हैं कि जिस प्रकार चेचक का टीका लगवा कर बच्चों को उस रोग से पीड़ित होने से बचाया जा सकता है, उसी प्रकार खसरे का टीका लगवा कर खसरे से पीड़ित होने से भी हमेशा के लिए बचाया जा सकता है.

खसरा बच्चों को होने वाली छूत की बीमारी है. यह बीमारी आम तौर पर डेढ़ से पांच साल तक की उम्र के बच्चों को होती है. दस साल की उम्र तक यह बीमारी 95 प्रतिशत बच्चों को हो जाती है और उन के शरीर में इस बीमारी से लड़ने की स्थायी शक्ति पैदा हो जाती है. इसलिए यह बीमारी 10 साल से अधिक उम्र में अकसर नहीं होती.

बच्चों को खसरा होने पर अधिकांश मातापिता पुराने रीतिरिवाजों का ही पालन करते देखे जाते हैं. इस बीमारी के कारणों तथा बचाव के उपायों की ठीक जानकारी न होने से अकसर वे आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं का लाभ नहीं उठा पाते.

खसरे की बीमारी एक किस्म के विषाणु से होती है. जब रोगी खांसता या छींकता है तो उस के विषाणु हवा में फैल जाते हैं. सिर्फ उस की सांस से भी ऐसा हो जाता है. ये विषाणु जब दूसरे बच्चों के पास पहुंचते हैं तो उन की आंखों या श्वासनलिका के जरिए शरीर के अंदर चले जाते हैं. इस से लगभग 10 से 14 दिनों के बाद इन बच्चों में रोग के लक्षण दिखाई देने लगते हैं.

बच्चे को दोतीन दिन बुखार रहता है. फिर ऐसा लगता है कि बच्चे को सर्दी हो रही है. आंखें लाल सी हो जाती हैं. नाक व आंखों से पानी बहता है. पलकों में हलकी सी सूजन आ जाती है. बच्चा चिड़चिड़ा हो जाता है. रोशनी में आंखें बंद कर लेता है. तीनचार दिन तक बुखार बढ़ता रहता है. हलके गुलाबी रंग के दाने कान के पीछे और माथे पर उभरते हैं. धीरेधीरे पूरा चेहरा गुलाबी या लाल दानों से भर जाता है. आंखें भी अधिक लाल हो जाती हैं. खांसी और बुखार भी बढ़ जाता है. खांसी के साथ उलटी व पतली टट्टी भी हो सकती है.

फिर कुछ घंटों के अंदर दाने छाती, पीठ व पेट पर फैल जाते हैं. इस समय बच्चे को बहुत तकलीफ रहती है. दो दिन बुखार तेज रहता है. जब दाने घुटने के नीचे उभरने शुरू हो जाते हैं तो बुखार उतर जाता है. खसरे के दाने एकदूसरे से मिलते हुए लगते हैं और पकते नहीं हैं, जब कि चिकन पाक्स के दाने अलगअलग होते हैं और उन में से पानी सा झरता है.

अधिकांश बच्चे खसरा निकलने पर

लेख • डा. बलदेव बग्गा

Gold Star



...छः से सात दिन के अंदर अच्छे हो जाते हैं.

कुछ बच्चों को खसरे की बीमारी में शरीर की प्रतिरोधक शक्ति कम हो जाने से अन्य रोग भी लग जाते हैं, जैसे निमोनिया हो जाना, कान फूट जाना व कान से पीप बहना. खसरे के एक हजार रोगियों में से एक में खसरे के विषाणु दिमाग में पहुंच कर नुकसान भी कर देते हैं. इस से बच्चे को झटके आ सकते हैं या लकवा हो सकता है. इस किस्म के 75 प्रतिशत रोगी उचित इलाज से पूर्णतया ठीक हो जाते हैं. लेकिन 25 प्रतिशत रोगियों का दिमाग कमजोर हो सकता है या मिरगी जैसी बीमारी हो सकती है.

कुछ लोगों में यह गलत धारणा है कि खसरा होने पर बच्चों को दवाई नहीं देनी चाहिए, इस से नुकसान हो जाएगा या खसरा पूरी तरह से नहीं निकलेगा. खसरा निकलने पर बुखार और खांसी के लिए आधुनिक दवाइयां डाक्टर की सलाह से दी जा सकती हैं.

यदि खसरे के दाने उभरने के तीन या चार दिन बाद भी बुखार रहता है या बुखार उतर जाने के एक या दो दिन बाद फिर से हो जाता है तो डाक्टर को अवश्य दिखाना चाहिए, क्योंकि खसरा तो अपना समय लेता है, लेकिन खसरे के साथ अन्य बीमारियां (निमोनिया, कान में पीप भर जाना) हो जाने से जो बुखार होता है, उस का इलाज आधुनिक दवाइयों से बहुत अच्छी तरह किया जा सकता है. किसीकिसी बच्चे में खसरे का बुखार छिपी हुई टी.बी. (क्षय रोग) के बढ़ जाने के कारण नहीं उतरता. इस का इलाज भी आधुनिक दवाइयों से किया जा सकता है.

जब किसी बच्चे को खसरा निकला रहता है, तब उन लोगों को जिन का गला खराब रहता है या जिन को सर्दीखांसी, फोड़े या खुजली आदि बीमारी रहती है, खसरे से पीड़ित बच्चे को देखने नहीं जाना चाहिए, क्योंकि खसरे के कीटाणु बीमार बच्चे को और अधिक बीमारी दे सकते हैं.

इस रोग में बच्चे की भूख कम हो जाती है. उन्हें दूध, फलों का रस, ग्लूकोस का पानी या तरल भोजन देते रहना चाहिए. वैसे बच्चे की इच्छा रहने पर उस को हलका भोजन दिया जा सकता है. यदि अधिक रोशनी बच्चे की आंखों को सहन नहीं होती तो कमरे में रोशनी कम करने का प्रबंध करना चाहिए. कमरे को आरामदेह रूप से गरम रखना चाहिए. बुखार कम होने के दो दिन बाद बच्चे को बिस्तर से उठने दिया जा सकता है. एक हफ्ते के बाद तबीयत ठीक रहने पर डाक्टर की सलाह से बाहर खेलने भी दिया जा सकता है.

यह रोग दाने दिखने से पहले ही अधिक संक्रामक रहता है, इसलिए खसरा निकलने के बाद रोगी को अलग रखने से भी इस का फैलाव नहीं रोका जा सकता, क्योंकि तब तक इस के विषाणु पहले ही आसपास फैल चुके होते हैं. खसरे से बच्चों को बचाने का सर्वोत्तम उपाय एक ही है— बच्चों को खसरे का टीका लगवाएं. चूंकि 12 माह से कम उम्र के बच्चों को अकसर यह बीमारी नहीं होती, अतः 12 माह के बाद जितनी जल्दी हो सके, बच्चे को खसरे का टीका लगवा देना चाहिए. यह टीका लगवाने के सात से 10 दिन बाद ही बच्चे में खसरे की



"बच्चों को हरदम सच बोलना चाहिए, किंतु जब अतिथि आए हों, तब नहीं."

बीमारी के आक्रमण को रोकने की श... आती है.

यदि घर के आसपास खसरा फै... हुआ हो, उस समय यदि बच्चे को टी... लगवाया जाए तो वह कितना प्रभावी हो... यह निश्चित नहीं रहता. इसलिए खसरा फैलने से पहले ही खसरे का टीका लग... लेना अधिक अच्छा रहता है. इस का एक... टीका बच्चे को हमेशा के लिए खसरे से र... लेता है. इस टीके से कुछ बच्चों को सात... 10 दिन बाद हलका सा बुखार सिर्फ एक... दो दिन के लिए आता है. यह असुविधा... टीके से होने वाले लाभ की तुलना में बहुत... मामूली है.

जिन बच्चों को निश्चित रूप से खसरा हो चुका है, उन्हें इस टीके की जरूरत न... रहती. यदि इस बारे में मातापिता को ठी... से याद नहीं है तो बच्चे को यह टीका दिलवाने से कोई नुकसान नहीं होता. ... खसरे का रोग फैला हुआ हो तो 12 माह... कम उम्र के बच्चों को भी टीका लगाया ... सकता है. लेकिन इस परिस्थिति में ... बच्चों को एक बार और यह टीका 15 म... की उम्र में लगवाना पड़ सकता है. चूंकि ... तय है कि जिस बच्चे को यह टीका न... लगवाया गया, उसे जीवन में एक बार खसरा होगा ही. इसलिए 12 माह या अधिक उम्र के जिन बच्चों को खसरा नहीं हुआ है, उन्हें ... टीका लगवा देना चाहिए.

अभी कुछ लोगों को यह गलतफहमी ... है कि चेचक का टीका बच्चों को लगवाने से उन्हें चिकन पाक्स या खसरा नहीं हो... पर वास्तव में ऐसा नहीं है. चेचक का टीका लगवाने पर केवल चेचक का रोग नहीं होगा, खसरे का टीका लगवाने से खसरा नहीं होगा. चिकन पाक्स का टीका अभी तक नहीं बना है. आज की स्थिति में चेचक के एक ... रोगी देखने में नहीं आते, जब कि खसरा ... चिकन पाक्स दोनों बच्चों की आम बीमारियां हैं. इसलिए बच्चों के लिए चेचक के टीके की तुलना में खसरे का टीका कहीं अधिक जरूरी है.

लाड़ले का जैकेट

लेख • रजनी वर्मा



अपने लाड़ले के लिए यह जैकेट आप भी बनाइए. यह नाप तीनचार साल के बच्चे के लिए है, पर आप अपनी जरूरत के अनुसार बड़े नाप में भी बना सकती हैं.

नाप : सीना 54 सें.मी., लंबाई पिछले हिस्से की 29 सें.मी., लंबाई सामने से 32 सें.मी.

सामग्री : 75 ग्राम चार प्लाई का ऊन या कैशमीलान, मुख्य रंग में विपरीत रंग का ऊन थोड़ा सा, 10 नंबर की सलाइयां और चार बटन विपरीत रंग के.

यह सारा जैकेट गार्टर स्टिच में बुना गया है यानी प्रत्येक सलाई में सीधी बुनाई की गई है.

पीछे का हिस्सा : मुख्य रंग में 64 फंदे डाल कर चार सलाइयां बुन कर विपरीत रंग जोड़ लीजिए. दो सलाइयां बुनने के बाद पुनः मुख्य रंग लगा कर बिना फंदे घटाएबढ़ाए 15 सें.मी. तक बुनिए. मुड्ढे के लिए कुल 13 फंदे घटाने हैं. इन्हें क्रमशः 4, 3, 2, 1, 1, 1, 1 के क्रम में घटाइए. कुल लंबाई 28 सें.मी. हो जाने पर बीच के 24 फंदे गले के लिए बंद कर दीजिए. दोनों तरफ के सातसात फंदों को क्रमशः चार और तीन फंदे कर के बंद कीजिए ताकि कंधे पर तिरछा आकार आए.

सामने का दायां हिस्सा : मुख्य रंग में तीन फंदे चढ़ाएं. हर दूसरी सलाई में दोनों ओर एकएक फंदा बढ़ाते हुए कुल 33 फंदे कर लें. लगभग पांच सें.मी. बुन जाने पर बीच के 16 फंदों पर चित्र के अनुसार तिरछा आकार देते हुए जेब बनाएं. इस के लिए चारचार के क्रम में फंदे घटाए गए हैं.

पिछले हिस्से से लंबाई नाप कर मुड्ढे घटाएं. उसी पंक्ति से प्रारंभ कर के गले का आकार देने के लिए प्रत्येक चौथी सलाई में एक फंदा घटाएं. लंबाई पूरी हो जाने पर पिछले हिस्से की तरह ही कंधे को तिरछा आकार दे कर फंदे बंद कर दें.

बायां हिस्सा भी इसी प्रकार बुन लें. जेबों पर बार्डर के लिए 16 फंदे उठा कर मुख्य रंग से दो सलाइयां बुनें. विपरीत रंग से फिर दो सलाइयां बुन कर पुनः मुख्य रंग जोड़ें. दूसरी सलाई में फंदे बंद कर दें. किनारे सफाई से सी दें. जेबों के अस्तर भी सी लें.

मुड्ढों के बार्डर के लिए पांच फंदों की पट्टी बनाएं, जिस में बीच का एक फंदा विपरीत रंग से बुना जाएगा. इस पट्टी की लंबाई मुड्ढे के घेरे से कुछ कम होनी चाहिए. इसी प्रकार एक और पट्टी बनाएं.

अब आगेपीछे के दोनों हिस्से मिला कर कंधे और बगल की सिलाई कर लें. मुड्ढों पर पट्टियों को हलका सा खींचते हुए सफाई के साथ सी लें.

सामने की पट्टी के लिए छः फंदे लें.

पहली सलाई में तीन फंदे मुख्य रंग में बुन कर चौथा विपरीत रंग में बुनें. शेष दो फंदे फिर मुख्य रंग में बुनें. इसी प्रकार बुनते हुए लंबी पट्टी तैयार करें. इसे बुनते हुए बीचबीच में नापती जाएं. अगर आप इसे कच्चे टांकों से टांकती जाएं तो और भी सुविधा होगी और सही नाप की पट्टी तैयार होगी. सामने के दाएं हिस्से से शुरू कर के निचले घेर, फिर सामने बटन आगेपीछे के समूचे गले के बाद जब बाएं हिस्से पर आएं तब बराबर दूरी बटन के लिए चार काज बनाएं. बाएं निचले हिस्से के लिए शेष लंबाई

इस पट्टी को हलका सा खींच सफाई से सी लें. बटन टांक लें. जैकेट है.

छुट्टियों का फैसला कौन करे?

अगस्त, 1982 में सरकार ने छुट्टियों के संबंध में जिस नीति की घोषणा की थी, उस में हिंदुओं के किसी त्योहार को अनिवार्य छुट्टियों की सूची में शामिल नहीं किया गया था. क्षुब्ध हो कर कई हिंदू धार्मिक संगठनों ने सरकारी नीति की आलोचना की थी.

फलस्वरूप 16 नवंबर को सरकार ने नई नीति की घोषणा की और दीवाली तथा दशहरा को भी अनिवार्य छुट्टियों में मान लिया गया. नई घोषित नीति के अनुसार सरकारी कार्यालयों में 16 छुट्टियां होंगी. इन 16 छुट्टियों में तीन राष्ट्रीय अवकाश– गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस और महात्मा गांधी का जन्मदिन– भी शामिल है.

दस छुट्टियां बुद्ध पूर्णिमा, क्रिसमस, दशहरा, दीवाली, गुड फ्राइडे, गुरु नानक जयंती, बकरीद, महावीर जयंती, मुहर्रम और ईद उल फितर के त्योहारों की होगी. शेष तीन छुट्टियां दशहरे के लिए एक अतिरिक्त दिन, होली, रामनवमी, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, वसंत पंचमी, मकर संक्रांति, महाशिवरात्रि, पोंगल, रथ यात्रा, ओणम और वैशाखी में से चुनी जाएंगी. इन 12 त्योहारों में से कौन से तीन त्योहारों की छुट्टियां रखी जानी हैं, इस का निर्धारण प्रति वर्ष किया जाएगा.

इन 12 त्योहारों में से जो तीन छुट्टियां निश्चित की जाएंगी, उन्हें छोड़कर त्योहारों या अन्य त्योहारों में से कोई प्रतिबंधित अवकाश लेने की छूट दी

औद्योगिक, वाणिज्यिक व्यापारिक प्रतिष्ठानों में तीन राष्ट्रीय पर अनिवार्य अवकाश रखने के लिए गया है. बाकी 13 छुट्टियों का प्रतिष्ठानों को स्वयं करने की घोषणा है.

हिंदुओं के त्योहार चांद्र वर्ष के अनु मनाए जाते हैं. इन त्योहारों के संबंध में भी ऐसा नहीं होता कि एक वर्ष कोई त्यो जिस तारीख को मनाया जाता हो, त्योहार अगले वर्ष भी उसी तारीख मनाया जाए. इन त्योहारों के संबंध में हर वर्ष विवाद उठता रहता है.

त्योहारों की छुट्टियां कब मनाई इस का फैसला सरकार खुद करे, इस अच्छा तो यही है कि छुट्टियों के दिन कर दिए जाएं कि कोई व्यक्ति कि छुट्टियां ले सकता है. गणतंत्र दि स्वतंत्रता दिवस और महात्मा गांधी जन्मदिन को राष्ट्रीय छुट्टी रखने अलावा दीवाली को भी राष्ट्रीय छुट्टी जा सकता है, क्योंकि यह त्योहार लग पूरे देश में मनाया जाता है. बाकी छुट्टियां कर्मचारी अपनी मर्जी अपनेअपने त्योहारों पर ले लें.

इस से लोगों को अपनी त्योहारों उपेक्षा की शिकायत भी नहीं रहेगी और कार्यालयों में भी अधिक काम हो सकेगा

क्या आप के पति देर से घर आते हैं?

लेख • कुमुद सिंह



उस दिन रात में एक बजे के लगभग अचानक दरवाजे की घंटी बजने से हम सभी जाग गए. सोचने लगे, आखिर इतनी रात में कौन हो सकता है. डर लग रहा था, इसलिए अंदर से ही पूछा. आवाज जानीपहचानी लगी. तब जा कर दरवाजा खोला. सामने रामेश्वरीजी खड़ी रो रही थीं. मैं उन के रोने से घबरा गई. कारण पूछने पर पता चला कि उन के पति अभी तक वापस लौट कर नहीं आए हैं. मैं ने उन्हें सांत्वना देते हुए पूछा, "कहां मिलने की संभावना है? फोन कर के पता कर लेते हैं. नहीं तो मेरे पति उन्हें देखने चले जाएंगे."

इस पर रामेश्वरीजी ने कहा, "क्या बताऊं, बहनजी, उन का तो रोज का ही यही हाल है. पर आज कुछ अधिक ही देर हो गई है. इसी लिए घबरा रही हूं. समय बहुत खराब है. कई बार मना कर चुकी हूं, पर क्या करूं, मानते ही नहीं हैं."

फिर उन के बताने पर मैं ने उन के एक मित्र के घर फोन किया तो उन की पत्नी ने बड़बड़ाते हुए बताया, "अभीअभी यहां से गए हैं." यह सुन कर रामेश्वरीजी की जान में जान आई और वह अपने घर चली गई. लेकिन हम लोग फिर सो नहीं पाए, नींद जो खराब हो गई थी.

रामेश्वरीजी के जाने के बाद मैं लेटेलेटे सोचने लगी, आखिर रामेश्वरीजी के पति रोजरोज आधी रात तक कहां बैठे गप्पें लड़ाया करते हैं? वह तो शिक्षित, समझदार व्यक्ति हैं. स्वभाव भी हंसमुख है और व्यवहारकुशल भी हैं. फिर वह ऐसी गलती क्यों करते हैं? उन का अपना परिवार है, बच्चे हैं. अब इन्हें घर से बाहर रहने में क्या आनंद आता है? अब तो उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए. विवाह से पूर्व आदमी पर जिम्मेदारी नहीं होती. उस का समय खाली रहता है. तब वह समय काटने के लिए यारदोस्तों के यहां देर तक बैठता है. लेकिन विवाह हो जाने के बाद तो आदमी जिम्मेदार हो जाता है. अपनी पत्नी के प्रति उस के कुछ कर्तव्य हो जाते हैं, जिन्हें निभाना एक आदर्श पति व सुखी परिवार के लिए अत्यंत आवश्यक हैं. इन सब को जानबूझ कर भी

कोई आदमी अपने दायित्वों की उपेक्षा करता है और अपना शाम का समय घर से बाहर अपने मित्रों में व्यतीत करता है, तो जाहिर है कि कहीं न कहीं उस के संवेदनशील हृदय को ठेस लगी है, जिस के कारण उस के सपने टूट गए हैं और भग्न हृदय लिए जीवन जी रहा है.

इसी लिए वह अपना शाम का समय अपनी पत्नी व बच्चों के बीच न बिता कर घर से बाहर बिताता है और रात को देर से घर लौटता है. पत्नी दिन तो काम कर के, अपने को बच्चों के साथ व्यस्त रख कर काट लेती है, पर रातें पति की प्रतीक्षा में आंखों ही आंखों में रोरो कर काटती है. उस का पति, उस का सुखदुख का साथी, उस का सुखदुख सुनने के लिए उस के पास नहीं होता. शारीरिक संबंध ही तो सब कुछ नहीं होता. लेंकिन प्रश्न तो इस बात का है कि आखिर पति देर से घर आए ही क्यों? इसलिए देखिए, कहीं आप के व्यवहार में तो कोई कमी नहीं है?

समझदारी से काम लें

अकसर देखा जाता है कि जब पति देर से घर आता है तो पत्नी आते ही उस से लड़ना प्रारंभ कर देती है और रोरो कर सारा घर सिर पर उठा लेती है. कुछ पत्नियां इस के विपरीत एकदम मौन साध लेती हैं और पति से बोलना बंद कर देती हैं. लेकिन ये दोनों ही तरीके गलत हैं. दिन भर का थकाहारा पति, जिसे उस समय आराम व स्नेह की आवश्यकता होती है. इस स्थिति से झुंझला जाता है और घर का वातावरण तनावपूर्ण हो जाता है. अतः अगर आप के पति रोज देर से घर लौटते हैं तो आप को बड़ी सूझबूझ से काम लेना चाहिए.

संभव है, वह दफ्तर में ओवरटाइम करते हों, जिस से परिवार की इच्छाएं, आवश्यकताएं पूरी होती रहें और आप को इस का पता ही न हो. एकाध दिन आप प्यार से उन से पूछ लीजिए. वह अवश्य आप को वस्तुस्थिति से अवगत करा देंगे. आखिर आप उन की जीवनसंगिनी जो हैं.

ध्यान रखिए, प्रत्येक पुरु[illegible] पत्नी के प्यार का भूखा होता है. व[illegible] साथ मिल कर केवल अपनी शारी[illegible] ही शांत नहीं करता है, वरन[illegible] परेशानियां, समस्याएं भी सुलझा[illegible] है. किंतु जब उस को अपने घर में [illegible] नहीं मिलता है, उस की उपेक्षा हो[illegible] स्नेहिल मुसकान उस का स्वागत नहीं [illegible] है, तभी वह घर से और पत्नी के सा[illegible] दूर होने लगता है और मित्रों के यहां [illegible] बैठता है, ताश खेलता है, गप्पें लड़ा[illegible] वह अपने साथसाथ दूसरे [illegible] पारिवारिक सुखचैन समाप्त कर दे[illegible] वहां भी गृहकलह जन्म ले लेती है. [illegible] पुरुष के आने पर कोई गृहिणी [illegible] सम्मान नहीं करेगी, उलटे उस से [illegible] लगेगी.

कोई पत्नी यह नहीं चाहती कि [illegible] पति रात में देर तक घर से गायब [illegible] कोई उस के यहां बैठ कर गप्पें लड़ाए [illegible] वह रसोईघर में बैठी खाना बनाती [illegible] खाना खाने की प्रतीक्षा करती रहे. [illegible] खाना खाने और सोने से स्वास्थ्य पर [illegible] प्रभाव पड़ता है और उस का प्रभाव [illegible] समय उपरांत ही देखने को मिलता है. [illegible] पति बीमार पड़ कर अपनी शामें घर [illegible] काटने को विवश हो जाता है, उस [illegible] मित्र लोग झांकने भी नहीं आते. तब [illegible] ही उस की सेवाशुश्रूषा करती है.

अगर आप के पति व्यवसायी हैं [illegible] फिर ऐसी नौकरी में हैं, जिस में देर [illegible] सकती है, रात में ड्यूटी करने जाना पड़[illegible] है, तब आप को परेशान होने [illegible] आवश्यकता नहीं है. तब आप को अपने [illegible] के साथ तालमेल बैठा लेना चाहिए. ऐ[illegible] स्थिति में आप को बच्चों को पढ़ाने-लिखा[illegible] सिलाईबुनाई करने या पत्रिका आदि पढ़ने [illegible] व्यतीत करना चाहिए. लेकिन यदि [illegible] समय से घर आते हैं और चाय पी कर फि[illegible] घर से निकल जाते हैं तो यह स्थि[illegible] कष्टदायक होती है.

बहुत से पतियों को शराब पीने, जूआ खेलने की आदत होती है. अगर आप के पति भी ऐसे हों तो अपने पति पर धीरेधीरे नियंत्रण करें. उन को घर में उन की उपस्थिति का महत्त्व समझाएं. वह अपनेआप ही बाहर जाना कम कर देंगे. एकदम से कुछ नहीं हो पाएगा. आप को संयम से काम लेना होगा. इस के लिए आप शनिवार का दिन निश्चित कर दीजिए, जिस से वह आप को अपने मित्रों के बीच में बाधा न समझने लगें.

आप को पता होगा कि पुरुष स्वभावतः अहंवादी होते हैं. वे अपनी पढ़ीलिखी, सुघड़ पत्नी का सम्मान तो कर सकते हैं, पर अपने से योग्य कभी नहीं समझ सकते और न ही पत्नी का अपने ऊपर हावी होना सहन कर सकते हैं. यह उन के पुरुषत्व को खुली चुनौती लगती है. इसलिए अगर आप अधिक पढ़ीलिखी हैं तो अपने पति को अकेले में, जब वह रोमांटिक मूड में हों, समझाइए. उन्हें परिवार के प्रति अपने उत्तरदायित्वों से अवगत कराएं. बच्चों के प्रति उन का क्या दायित्व है, यह भी उन्हें बताएं. आप के स्नेहपूर्वक समझाने से वह देर से घर लौटने की प्रवृत्ति को छोड़ने पर विवश हो जाएंगे. उन का विवेक जाग्रत हो जाएगा. आखिर वह दूसरे का भी तो समय बरबाद करते हैं. अगर पति घर में रहेंगे तो बच्चों की पढ़ाईलिखाई भी ठीक से हो पाएगी और ट्यूटर को दिया जाने वाला पैसा खर्च होने से भी बचेगा.

बहुत सी पत्नियों की आदत होती है कि वे दूसरों के सामने अपने पतियों की बुराई करती हैं, उन का इस प्रकार कहना किसी भी पति को अच्छा नहीं लगता है. जब कि पत्नी सोचती है कि दूसरों के सामने बुराई करने से उस का पति शर्मिंदा होगा और गंदी आदतें छोड़ देगा. पर होता उस के विपरीत है. इस प्रकार दूसरों के सामने अपने पति की बुराई करने से आप अपनेआप को हीन बनाती हैं और उधर पति बेशर्म हो जाता है. वह सोचने लगता है कि जब सब को उस की



पति के देर से घर लौटने पर आप प्यार से उस की परेशानी के बारे में पूछेंगी तो वह आप के और भी करीब आ जाएंगे.

बुराइयां पता ही हैं तो अब उस पर आवरण डालने की क्या आवश्यकता है. और वह पहले से भी अधिक देर से घर लौटने लगता है. इस से आप की रात बरबाद हो जाती है. वातावरण तनावपूर्ण बन जाता है. बच्चे गुमसुम रहने लगते हैं. वे जानते हैं कि पता नहीं किस बात पर मातापिता का गुस्सा उन पर उतरने लगे. ऐसे घर में बच्चों का विकास ठीक से नहीं हो पाता और वे कायर बन जाते हैं. अतः अपने पति का समस्त बुराइयों को अपने अंदर रखिए. उन से छुटकारा दिलाने का प्रयास करिए, जिस से आप के बड़े हो रहे बच्चे उस राह पर न चलें. परिवार को सुखी बनाने में पत्नी का भी बहुत बड़ा हाथ है.

पत्नी को पति की रुचियों, शौक और पसंदनापसंद का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए. अगर पति शौकीन तबीयत का है, बनावसिंगार पसंद करता है तो पत्नी को अपने पति की इच्छाओं का सम्मान करना चाहिए और अपनेआप को और बना लेना चाहिए. अपने को शाम के समय सजसंवर

उपेक्षा

ऐसे व्यक्तियों द्वारा की गई उपेक्षा अपराध है, जिन पर गंभीर विश्वास किया जाता है.

—शेक्सपियर

कर रखना चाहिए. अगर पत्नी सादगी से रहेगी तो रंगीन मिजाज पति निश्चित रूप से फैशनेबल महिलाओं की ओर आकर्षित होगा, और हो सकता है कि इसी चक्कर में फंस कर वह देर से घर भी आने लगे. इसलिए आप को बहुत सजग रहना चाहिए.

वैसे पति के के देर से घर आने या फिर दोबारा घर से निकल जाने का सब से प्रमुख कारण है– घर का नीरस वातावरण. अगर पति के दफ्तर से आते ही पत्नी अपनी दिन भर की परेशानी, बच्चों की शैतानी या सामान की कमी का रोना रोने लगती है तो पति झुंझला उठेगा. बजाए इस के अगर उस से आप उस की परेशानी पूछें तो वह आप को अपने समीप पाएगा और चाय की चुसकी के साथसाथ अपनी व्यथा सुनाने लगेगा. उस का बाहर जाना भी बंद हो जाएगा. अतः पत्नी का सब से प्रमुख कर्तव्य यह है कि वह अपने घर का वातावरण शांत व सुखद बनाए. थोड़ी सी छेड़छाड़, मजाक, प्यारदुलार पारिवारिक जीवन को अधिक मधुर बनाते हैं. आप शाम के समय उन के साथ कहीं घूमने भी निकल जाएं. खाने का चक्कर छोड़ें. उस का कोई तरीका निकालें. अगर पत्नी बीमार है, तब भी उसे दफ्तर से थकेहारे, क्लांत लौटे पति का स्वागत मधुर मुसकान से ही करना चाहिए.

जब भी आप के घर कोई परिचित या पति के मित्र आएं तो आप उन के सामने भी अपने पति से हंस कर, मुसकरा कर ही बात करें. ऐसे वाक्यों का प्रयोग कदापि न करें, जिस से उन के मानसम्मान को ठेस पहुंचे. उन की प्रतिष्ठा में ही आप की प्रतिष्ठा नि‌
है. अगर उन का सम्मान खत्म होता है
आप को भी कोई सम्मान नहीं देगा.
औरतों की यह आदत होती है कि
उन के रिश्तेदार या सहेलियां आ जाती हैं
वे अपने पति को भूल सा जाती हैं, उन
इच्छाओं का ध्यान नहीं रख पातीं, उन
रोजमर्रा की जरूरतों का ध्यान नहीं रख
उन के पति कबक्या करते हैं, इसे वे
जाती हैं. इस से पति अपने को उपेक्षि
समझने लगता है. अतः ऐसा न करें. कोई
आएजाए, पति को प्रथम पुरुष होने के
प्रथम स्थान ही दें. वे आप से प्रसन्न रहें

कोई भी बुराई आसानी से दूर नहीं
पाती. इस के लिए निरंतर प्रयास कर
पड़ता है. अगर आप के पति देर से आते
और आप उन पर देर से आने के लिए
करती हैं या सवालजवाब करती हैं
सोचिए, क्या इस से आप के पति अपने
पर आ जाएंगे? घर जल्दी लौट आने
मतलब यह न समझें कि दफ्तर से छु
मिलते ही वह घर आ जाएं. संभव है आप
पति के कुछ बचपन के मित्र हों, जिन के
कुछ समय बिताए बिना उन्हें चैन न आ
हो. अगर आप इस सत्य को समझती हैं
अपने पति के मित्रों में रुचि लीजिए. उन
साथ पारिवारिक संबंध बनाइए. अपने प
के साथ उन के घर जाएं और उन्हें
सपरिवार घर पर आमंत्रित करें. आप
ऐसा करने पर आप के पति आप
सामाजिक दायरा भी बढ़ेगा.

जब मित्रों से पारिवारिक संबंध ह
जाएंगे तो वे लोग भी एकदूसरे की पत्नि
बच्चों व दायित्वों का ध्यान रखने का प्रय
करेंगे, जिस से संबंध मधुर बने रहें और
लड़ाईझगड़ा न होने पाए. इस प्रकार आप
पति की अकेले देर रात तक घूमने की आद
समाप्त हो जाएगी और कुछ दिन बाद व
आप के बिना कहीं आनाजाना पसंद न
करेंगे, जो आप के धैर्य व निष्ठा की विज
होगी. और तब आप का रातरात भर जा
कर प्रतीक्षा करना समाप्त हो जाएगा. ●



पोर पोर पागल

क्यों मीठी धूप खिली
महकी क्यों शाम,
हवा दे रही मुझे
तुम्हारा पैगाम.

मुचमुचा रही जूही
थिरक रहा अंगना,
चुपचुप सी चूड़ियां
मुखर बड़ा कंगना.

आते ही देखो
नाराज नहीं होना तुम,
लिख देना एक गीत
प्यार का सलोना तुम.

चिड़िया कितनी गुमसुम
घहराए हैं बादल,
पर मेरी देह की
पोरपोर हैं पागल.

सार्थक हो आज रात
एक और आलिंगन,
पुनः लिखे अधरों पर
प्यार भरा अभिनंदन.

—सरल जैन

दिनदहाड़े



एक दिन मां घर पर अकेली थीं कि एक आदमी आया और अपने को बिजलीघर का आदमी बता कर मीटर दिखाने के लिए कहने लगा. मां ने मीटर दिखाया तो वह मीटर देखते हुए बोला, "इस बार तो आप का बिल बहुत ज्यादा आया है. आप बिजली का क्याक्या सामान इस्तेमाल करती हैं, जरा दिखाइए तो."

तब मां ने उसे बिजली की प्रेस और टोस्टर दिखाया. इस के बाद उस ने मां से पीने के लिए पानी मांगा. जब मां पानी लेने अंदर गईं तो वह व्यक्ति धीरे से बिजली की प्रेस और टोस्टर ले कर गायब हो गया.

—गीता आनंद

*

हमारे एक फूफाजी अजमेर में रहते हैं. उन का अपना कोई बच्चा नहीं है. एक दिन रेलवे स्टेशन पर उन्होंने 10-12 वर्ष के एक बच्चे को देखा. उन्हें पता चला कि उस बच्चे के मातापिता नहीं हैं. वह उसे घर ले आए और अपने बच्चे की तरह पालने लगे.

एक दिन छुट्टी के दिन बूआजी ने उसे बाजार से कुछ लाने को कहा. वह लड़का बाजार से जब शाम तक नहीं लौटा तो उन्हें हैरानी हुई. फिर उन्होंने उस की रिपोर्ट थाने में दर्ज कर दी. लेकिन वह कहीं नहीं मिला. बाद में पता चला कि वह घर से फूफाजी की घड़ी, नकदी आदि भी ले गया है.

—विजयकुमार कालड़ा

*

हमारे एक पड़ोसी ने नई मोटर साइकिल खरीदी थी. वह मोटर साइकिल चलाना तो जानता था, पर उसे इंजन के बारे में कोई जानकारी नहीं थी.

एक दिन मैं अपने एक मोटर मेकैनिक मित्र के पास बैठा हुआ था कि मेरा पड़ोसी मोटर साइकिल को घसीटता हुआ आया और मेरे मित्र से बोला, "मोटर साइकिल चलतेचलते बंद हो गई है. जरा देख लो."

यह कह कर वह चला गया. मोटर साइकिल के कार्बुरेटर में थोड़ा सा कचरा फंस गया था, जिसे मेरे मित्र ने साफ कर दिया.

दो घंटे बाद जब मेरा पड़ोसी आया तो मेरे मित्र ने उसे 350 रुपए का झूठा बिल पकड़ा कर उस से 350 रुपए ले लिए. मैं उस की दिनदहाड़े की गई इस लूट को देखता ही रह गया. उस मेकैनिक को तो मैं मित्रतावश कुछ नहीं कह सका, पर बाद में मैं ने उस से सारे संबंध तोड़ डाले.

—अरविंद श्रीवास्तव

*

एक दिन मेरे दवाखाने में एक व्यक्ति आया और बोला कि उस के छोटे भाई की हालत बहुत खराब है. मैं ने उस से थोड़ी देर रुकने के लिए कहा तो वह बोला, "डाक्टर साहब, फिर ऐसा कीजिए कि अपनी साइकिल दे दीजिए, मैं अपने भाई को यहीं ले आता हूं."

मैं ने उसे अपनी साइकिल दे दी, पर वह आज तक अपने भाई को ले कर नहीं लौटा.

—जयरामसिंह 'विहारी'

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

राखी का मूल्य

दिनेश ने दरवाजे की घंटी बजाई. सुधा ने दरवाजा खोला. दिनेश को सामने खड़ा देख कर वह हैरान रह गई, "भैया, तुम? अचानक कैसे?"

"बस, कुछ तो तुम से मिलने का मन था और कुछ दफ्तर का काम निकल आया."

"फिर भी, न कोई तार, न आने का समाचार..."

"अब दरवाजे पर ही सारी पूछताछ करती रहेगी या अंदर भी आने देगी?"

"ओह, आओ, भैया, मैं भी कैसी पगली हूं."

दिनेश अपना सूटकेस उठा कर भीतर आ गया.

"बहुत दिन से तेरा पत्र ही नहीं आया था. मां तो बहुत चिंता कर रही थीं."



"बस, यों ही लिखने का समय ही नहीं मिला," सुधा ने फीकी सी हंसी हंस कर कहा.

"क्या करती रहती है सारा दिन? घर के काम के लिए तो दोदो नौकरानियां रखी हुई हैं तू ने."

कहानी • आदर्श मलगूरिया

"लो, अब तुम ने तो खुफिया पुलिस का दफ्तर खोल लिया. मैं तुम्हारे खाने के लि[ए] कुछ लाती हूं," कह कर सुधा रसोईघर [में] चली गई.

दिनेश सोफे पर ही पसर गया. घर [में] चारों ओर अव्यवस्था का साम्राज्य था. [कम]रे की सेंटर टेबल धूल से अटी पड़ी थी. [कुशनों] के कवर आड़ेतिरछे पड़े थे. बाहर से ही दिख रहा था कि सोने के कमरे में भी बिस्तर ठीक से नहीं बिछे थे. बस, बेडकवर [डाल कर] फैला दिया गया था.

दिनेश हैरान रह गया.

यही घर पहले हमेशा शीशे [सा] चमकता रहता था. रवि के दफ्तर जाने के समय तक सुधा भी घर का सारा कामकाज निबटा कर रवि के साथ ही कार में बाजार चली जाती थी. वहां से रवि तो दफ्तर चला जाता और सुधा खरीदारी कर, थोड़ाबहुत इधरउधर घूमघाम कर दोपहर तक रिक्शा या स्कूटर से घर लौट आती थी.

पर आज ऐसा लगता था, जैसे सुधा अभी तक नहाई भी नहीं थी. कैसी अस्तव्यस्त लग रही थी. न बालों में ठीक से कंघी की थी, न ढंग से कपड़े पहन रखे थे. दिनेश को लगा कि उसे देख कर वह बहुत खुश भी नहीं हुई थी. बड़ी अजीब बात थी. पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था. पहले तो उसे देखते ही सुधा खुशी से उछल पड़ती थी.

तभी सुधा चाय व नाश्ता ले कर रसोई से बाहर निकली. मेज पर ट्रे रखते हुए बोली, "भैया, हाथमुंह तो धो लो."

"अरी, छोड़ भी, शेरों के हाथमुंह किस ने धोए हैं."

पहले दिनेश की इसी बात पर सुधा मुंह बिचका कर हंस देती थी, पर आज चुप

ही रही. दिनेश भी नाश्ता करने लगा. आमलेट और टोस्ट खा कर कप उठा कर मुंह से लगा लिया. एक घूंट पी कर ही कप ट्रे में वापस रख दिया.

"क्या बात है, सुधा? आज मेरे लिए चाय क्यों बना दी?"

"ओह, मुझे तो ध्यान ही नहीं रहा."

दिनेश सदा काफी ही पीता था. चाय से उसे बहुत चिढ़ थी.

"बात यह है, भैया, मैं बहुत दिनों से बाजार नहीं जा सकी और घर में काफी खत्म

मैना के साथ अपने पति रवि की शादी की बात सुन कर सुधा के पैरों तले की जमीन खिसक गई, लेकिन ऐन मौके पर उस के भाई दिनेश ने वह करिश्मा दिखाया कि वह अपने भाई के प्रति कृतज्ञ हो उठी.



हो गई थी."

"हां, वह तो मैं भी देख रहा हूं. बाजार भी तुम नहीं जातीं, घर का भी बुरा हाल बना रखा है. अपनी सूरत भी जरा शीशे में जा कर देखो. तुम किस बात से इतनी परेशान हो?"

"अब ये सब बातें छोड़ो, भैया, मैं

पड़ोसन से तुम्हारे लिए काफी मांग कर लाती हूं."

"रहने दो, सुधा, आज चाय ही पी लेता हूं. पर तुम नहीं पियोगी क्या?"

चाय तो सुधा की जान थी, वह रसोई में जा कर अपने लिए भी चाय ले आई. दोनों चुपचाप चाय पीते रहे..

कप मेज पर रखते हुए दिनेश बोला, "क्या बात है, सुधा, इतनी परेशान क्यों हो? रवि से कुछ झगड़ा हो गया है क्या?"

"अब तो झगड़ा करने की भी जरूरत नहीं रही, भैया?"

"ऐसी क्या बात हो गई?"

सुधा अपना दुख कई दिनों से मन में छिपा कर बैठी थी. आज भाई के सामने सब्र का बांध टूट गया. फूटफूट कर रोने लगी. दिनेश ने सिर पर हाथ फेर कर उसे चुप कराया. फ्रिज से पानी ला कर पिलाया. दस मिनट बाद सुधा कुछ संयत हुई. उठ कर स्नानघर में गई और मुंहहाथ धो कर वापस आई.

"अब बोलो, किस बात से इतनी दुखी हो?" दिनेश ने पूछा.

आस

टूटी जो आस जल गए
पलकों के सौ चिराग,
निखरा कुछ और हुस्न
शबे इंतजार का.

—बेगम मुमताज मिर्जा



सुधा कहना तो नहीं चाहती थी, पर इतने दिनों तक मन ही मन घुटते हुए वह तंग आ गई थी. अपने दांपत्य जीवन में आई इस दरार को वह किसी सहेली को तो दिखा सकती थी, पर दिनेश भैया की बात और थी.

"रवि की आजकल अपने दफ्तर की एक क्लर्क से बहुत घनिष्ठता हो गई है. वह उसे बहुत चाहने लगे हैं. शाम को घर भी जल्दी नहीं आते. चौरंगी या पार्क स्ट्रीट में उस के साथ घूमते रहते हैं. रविवार को भी दफ्तर के काम का बहाना कर के घर से चले जाते हैं. कई बार न्यू मार्किट में उसे खरीदारी कराने ले जाते हैं."

"तू भी बात का बतंगड़ बनाती है. चला गया होगा उस के साथ कहीं एकआध बार."

"नहीं, भैया, वे लोग आपस में महज मित्र नहीं हैं. रवि मुझ से साफसाफ कह चुका है. वह मैना के बिना नहीं रह सकता. इस के लिए वह मुझे तलाक तक देने को तैयार है. यदि मैं राजी न हुई तो भी वह मैना से चोरी से शादी कर लेगा. वह चुड़ैल इस के लिए भी तैयार है."

दिनेश सोच में पड़ गया, फिर बोला, "अच्छा, सब ठीक हो जाएगा, तू चिंता मत कर और अब चल नहाधो कर ढंग से कपड़े पहन. घर ठीकठाक कर. क्या हाल बना रखा है."

"अब क्या ठीक होगा, भैया? मैं भी तुम्हारे साथ मां के पास चलती हूं. तुम कब वापस जाओगे?"

"तुम कहीं नहीं जाओगी, जैसा मैं कहता हूं वैसा ही करो. अपने भैया पर क्या तुझे विश्वास नहीं?"

खाना खा कर दिनेश बाहर चला गया. सुधा को ताकीद कर गया कि रवि को कतई पता न चले कि दिनेश को उस के और मैना के विषय में कुछ भी जानकारी है. सुधा को कुछ तसल्ली मिली. रवि समझानेबुझाने की सीमा से बहुत दूर जा चुका था, पर फिर भी शायद भैया कुछ चमत्कार दिखा ही दें

शाम को रवि और दिनेश एक साथ घर वापस आए. दिनेश ने बताया कि वह अपना काम बड़ा बाजार में समाप्त कर सीधा रवि के दफ्तर चला गया था. पहले तो रवि उसे देख कर सकपका गया था, फिर उस ने अपनेआप को संभाल लिया था. दिनेश भी उस से पहले की तरह व्यवहार करता रहा, जैसे उसे कुछ मालूम ही न हो. रवि भी यह समझ कर कि दिनेश कुछ नहीं जानता, आश्वस्त हो गया. सुधा ने भी घर नए ढंग से सजाया था और खुद भी खूब सजधज कर बैठी थी. बना हुआ खाना फ्रिज में रखवा कर दिनेश उन्हें जबरदस्ती रेस्तोरां में खाना खिलाने ले गया. फिर रात का फिल्म 'शो देख कर एक बजे के करीब वे लोग घर लौटे.

रवि भी सहज हो गया था. वह सुधा के साथ पहले की तरह बातचीत कर रहा था. पहले की तरह दोनों सुधा की खिंचाई कर कर रहे थे. सुधा को लगा कि उस के पुराने दिन लौट आए हैं. लेकिन वह जानती थी कि यह सब ढोंग दिनेश को दिखाने के लिए है. उस ने सोचा, 'चलो, इतना ही सही कि भैया के सामने तो मेरा मान रख रहे हैं.'

और रवि सोच रहा था दिनेश तीनचार दिन के बाद चला ही जाएगा, क्यों उस के सामने अपनी बखिया उधेड़ी जाए.

तीनचार दिन बड़े अच्छे बीते. रोज शाम को दिनेश किसी फिल्म के या नाटक के टिकट ले आता. बाहर ही ये लोग खाना खाते. रात दो बजे तक घर में ठहाके गूंजते.

चार दिन बाद दिनेश ने बताया कि वह एक सप्ताह तक और यहीं ठहरेगा. सुधा को तो मनमांगी मुराद मिली. रवि को निराशा सी हुई, पर वह ऊपर से खुशी ही जाहिर करता रहा.

अगले दिन दोपहर को दिनेश रवि के दफ्तर पहुंच गया. रवि बाहर गया हुआ था. दिनेश उस के केबिन में जा बैठा. वह कार में बैठ कर रवि को दफ्तर से बाहर जाते स्वयं देख चुका था. आध घंटे बाद एक महिला केबिन में प्रविष्ट हुई, पर केवल दिनेश को वहां बैठा देख कर वह बाहर जाने लगी.



आईना

ख्वाब का रिश्ता
हकीकत से न जोड़ा जाए,
आईना है इसे
पत्थर से न तोड़ा जाए.
—मलिकजादा मंजूरअहमद

दिनेश जानता था कि वही मैना है. उस ने उसे बुला कर आदर से बैठाया. दोनों का परिचय हुआ. दिनेश ने बताया कि वह एक व्यापारिक फर्म में अधिकारी है. किसी काम से रवि से मिलने आया है. काफी देर तक दोनों गपशप करते रहे. फिर दिनेश उस से बोला, "चलिए, कहीं चल कर काफी पी आएं."

मैना को भी उस की लच्छेदार बातें बहुत पसंद आ रही थीं, सो उस ने हां भर दी. टैक्सी ले कर दोनों पार्कस्ट्रीट आए.

दिनेश उसे 'ट्रिंकाज' में ले गया. वहां के ठंडे वातावरण में बैठेबैठे दो घंटे कैसे व्यतीत हो गए, पता ही न चला. दोनों बाहर निकले तो शाम होने वाली थी. वहां से टहलतेटहलते दोनों विक्टोरिया की ओर निकल गए.

एक घंटा वहां घास पर बैठे इधरउधर की बातें करते रहे. अंधेरा घिर आया तो दोनों उठे. मैना बस की लाइन में खड़ी होने के लिए चली तो दिनेश ने टैक्सी बुलवा कर उसे भीतर बैठने का इशारा किया. मैना संकोच में पड़ गई.

शेष पृष्ठ 179 पर

उड़े चुनरिया गोरी की तो हजार बहार

कहीं आनेजाने के लिए यह गहरे लाल रंग का प्रिंटेड कुरता बहुत ही उपयुक्त रहेगा. गले और बाजू पर लाल रंग की धारियां हैं. गले की धारियां हार सी प्रतीत हो रही हैं और इस पर पीले रंग का गार्डन प्रिंट है. चूड़ीदार पाजामा सफेद है जो लाल रंग के गहरेपन को संतुलित कर रहा है.



दिन के समय हलकी धूप में पहनिए यह हरे रंग का चूड़ीदार कुरतापाजामा. कुरते में हरे रंग के शेड इस्तेमाल किए गए हैं. मोरपंखी प्रिंट इस कुरते का मुख्य आकर्षण है. दूसरा आकर्षण है– चूड़ीदार पाजामे पर तिरछी हरी धारियां, जो दुपट्टे का पूरापूरा साथ दे रही हैं.



यह मैरून रंग का सादा चूड़ीदार पाजामा लखनऊ की याद दिलाता है. इसे रात के समय पहनिए. कुरते पर लगी हरे रंग की पतली पाईपिंग और प्रिंटेड दुपट्टे के कारण सारे सूट में कुछ नयापन लग रहा है. जिस ढंग से इस रूपसी ने दुपट्टा ओढ़ा है, वह मुसलिम घराने की रूपसियों की शैली प्रस्तुत करता है.





लाल रंग का यह चैक चूड़ीदार पाजामा और कुरता इन दिनों भी पहनें. ऊपर तक बंद गले के कुरते पर क्रीम रंग की डेढ़ इंच चौड़ी पाईपिंग लगी है जो लाल रंग पर खूब जंच रही है. पाजेब की झलक देती चूड़ीदारपाजामे के नीचे जो पतली सी पाईपिंग लगाई गई है, वह कुरते के साथ संतुलन बनाती है. पोशाक के साथ क्रीम रंग का दुपट्टा है, जो इस सुंदरी की खूबसूरती में चार चांद लगा रहा है.

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए



और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं कि... फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. ... भी हजारों वर्ग मील भारतीय ... विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पूर्ति ... लिए बहुत बड़े पैमाने पर साम... सहयोग और सद्भाव की आवश्य... होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, ... पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबं... नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार ... सहायता स्वीकार करती है. यह के... एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते ... निर्भर है. और वह हैं सरिता के पाठ... इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन ... सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है.

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूं... सरकार का और देशी व विदे...

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नईदिल्ली-110055.

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

अग्रोहा तीर्थ

पृष्ठ 26 का शेषांश

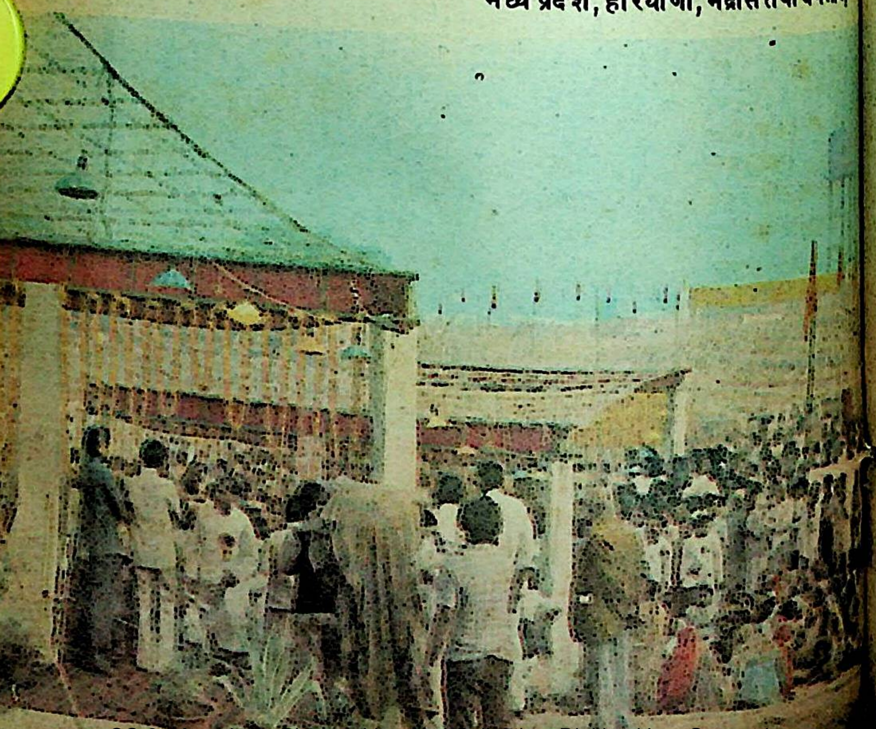
लिए 26 एकड़ जमीन प्राप्त की गई. उल्लेखनीय है कि यह जमीन सन 1965 में इंजीनियरिंग एवं टेक्निकल कालिज खोलने के लिए खरीदी गई थी. अगर यह जमीन शिक्षण संस्था के लिए काम आती और फिर उदारता की दुहाई दे कर लोगों से सहयोग मांगा जाता तब तो बात समझ में भी आती कि कोई बुराई नहीं है, लेकिन शिक्षण संस्था के लिए खरीदी गई जमीन पर तीर्थस्थल बनाने की योजना बना कर लोकोपयोगिता का उद्देश्य किनारे रख दिया गया.

अग्रोहा तीर्थ नहीं, अलगाववादी षड्यंत्र, जिस के बहाने कुछ नए पंडेपुजारी बन सकें.

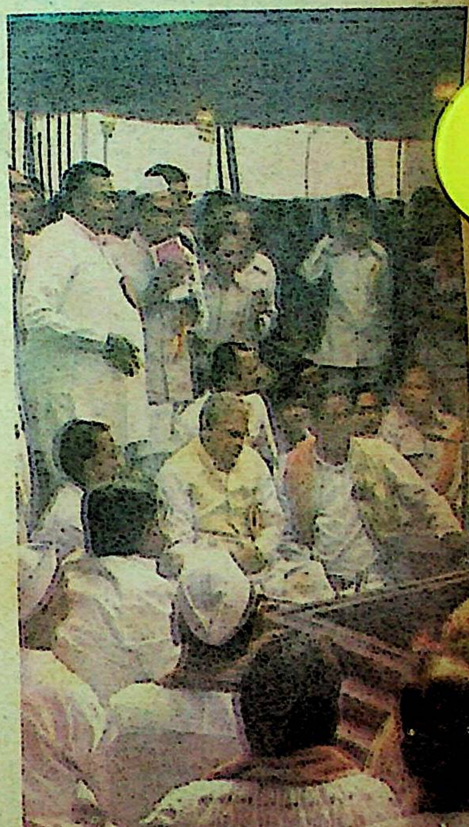
एक उपयोगी योजना को स्थगित कर धर्माडंबर जैसे व्यर्थ प्रयोजन को लक्ष्य बनाने से लोगों का क्या भला होगा? हजारों लोगों के लिए लाभदायक सिद्ध होने वाली शिक्षण संस्था बेकार समझ ली गई और एक मंदिर को उस से महत्त्वपूर्ण समझा गया, जिस की जनसाधारण के लिए कोई उपयोगिता नहीं है. सम्मेलन के आयोजकों को लोगों की भलाई का कितना खयाल है, यह इसी बात से समझा जा सकता है.

सन 1976 में इस जमीन पर मंदिर बनाना शुरू किया गया. हरियाणा के तत्कालीन मुख्य मंत्री बनारसीदास गुप्त, जो सम्मेलन के अध्यक्ष भी हैं, तथा श्री राजेश्वरदास गुप्त जिन के दिमाग में अग्रोहा को तीर्थ बनाने की कल्पना जन्मी थी और अन्य व्यक्तियों की देखरेख में मंदिर बनने लगा. मंदिर के निर्माण में पांच करोड़ रुपए खर्च करने का लक्ष्य रखा गया है.

पांच करोड़ कोई छोटीमोटी रकम नहीं होती. इसे जुटाने के लिए बनारसीदास गुप्त और बालकृष्ण गोयनका ने राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, मद्रास तथा बंगलौर,



हरियाणा के मुख्यमंत्री राजीव गांधी के साथ (ऊपर) तथा हवनकुंड के पास मंत्रोच्चार करते हुए (नीचे) : धर्म के सहारे राजनीति में घुसपैठ.



हैदराबाद आदि राज्यों तथा शहरों की यात्रा की और वहां के अग्रवालों से उन के अपने तीर्थ के लिए धन इकट्ठा किया. सन 1980 तक मंदिर के कुल बजट का 20 प्रतिशत धन भी इकट्ठा नहीं हुआ था. अतः 31 अक्तूबर, 1982 को अग्रोहा में अग्रवालों का एक विशाल सम्मेलन रखने का विचार किया गया.

इस सम्मेलन में अधिक से अधिक लोग भाग लें, इस के लिए सम्मेलन के कर्ताधर्ताओं ने दो साल तक देश के विभिन्न भागों का दौरा किया. उन स्थानों पर रहने वाले अग्रवालों को महाराज अग्रसेन, तीर्थ स्थान और उन की जाति की दुहाई देते हुए सम्मेलन में पहुंचने के लिए प्रेरित किया. दो साल तक किए गए घनघोर प्रयत्नों का ही परिणाम था कि जिन लोगों को अग्रोहा या

महाराजा अग्रसेन की राजधानी के बारे में कुछ मालूम नहीं था, वे भी अग्रोहा पहुंचे.

31 अक्तूबर को अग्रोहा में कोई डेढ़ लाख लोग थे. इन में बहुत से लोग इसी क्षेत्र के रहने वाले थे जो केवल तमाशबीन बन कर पहुंचे थे. ऐसे लोगों की संख्या 50 हजार भी समझी जाए तो कम से कम एक लाख लोग तो अग्रवाल रहे ही होंगे जो 25-50 से ले कर कई सौ मील दूर से यहां आए थे. एक लाख व्यक्तियों के पास और दूर से अग्रोहा पहुंचने का औसत खर्च प्रति व्यक्ति सौ रुपए भी माना जाए, जो बहुत कम है तो इस सम्मेलन में शामिल होने के लिए ही लोगों ने एक करोड़ रुपए स्वाहा कर दिए. इतनी बरबादी के बाद मिला क्या? कथित मूल निवास और मंदिर के लिए और अधिक खर्च करने की मांग तथा समुदाय के स्वयंभू अगुआओं और राजनेताओं के भाषण.

सुबह साढ़े नौ बजे हरियाणा के मुख्य मंत्री भजनलाल ने महाराज अग्रसेन के अधबने मंदिर का उद्घाटन किया. मंदिर के दरवाजे खोल कर अग्रसेन की मूर्ति पूजने से पहले सम्मेलन के अध्यक्ष ने अग्रवालों के लिए अलग से तैयार किए गए झंडे की डोरी खींच कर झंडा लहराया. अठारह किरणों के सूरज और एक रुपया व ईंट के प्रतीक से अंकित केसरिया झंडा लहराते हुए बनारसीदास गुप्त ने एक संक्षिप्त भाषण दिया. अग्रवालों से कहा गया कि सिखों की तरह उन का भी अपना तीर्थस्थान होना चाहिए. सिखों का तीर्थ अमृतसर है, उन का तीर्थ अग्रोहा है. सिख भावनात्मक रूप से दरबार साहिब से जुड़े हुए हैं. अग्रवालों को चाहिए कि वे अग्रसेन मंदिर को उतना ही पवित्र मानें जितना कि सिख दरबार साहिब को मानते हैं. इन प्रतीकों के आधार पर उन्हें संगठित होना चाहिए और संघर्ष करना चाहिए.

बाद में दूसरे वक्ताओं ने भी इसी तरह की बातें दोहराईं. ये बातें सुन कर शायद ही किसी ने सोचा हो कि इन भाषणों का मतलब क्या है. सिखों के नाम पर कुछ लोग अपनी राजनैतिक महत्त्वाकांक्षाएं पूरी करने के लिए आज जो उचितअनुचित हरकतें कर रहे हैं. क्या ये भाषण भी आगे चल कर इसी तरह की हरकतें करने का संकेत देते हैं.

सम्मेलन का प्रत्येक कार्यक्रम इस बात को दृष्टिगत रखते हुए तैयार किया गया था कि आगंतुक लोग प्रभावित हों और प्रस्तावित तीर्थ के लिए दान दें. उद्घाटन के बाद हरियाणा के मुख्य मंत्री से सरकार की ओर से कम से कम 10 लाख रुपए देने की मांग की गई. उपस्थित लोगों पर अग्रोहा तीर्थ की महत्त्वाकांक्षी योजनाओं का प्रभाव छोड़ने के लिए अग्रोहा को हरियाणा की राजधानी बनाने, यहां बड़ा उद्योग स्थापित करने, इंजीनियरिंग कालिज खोलने और व्यापार मंडी बनाने की मांग की गई.

अग्रोहा का विकास

इन सब मांगों का उद्देश्य लोगों को प्रभावित करना इसलिए कहा जा रहा है कि जिन पांच करोड़ रुपयों से मंदिर बनाने की योजना है, उन पांच करोड़ रुपयों से इन में से कई काम पूरे किए जा सकते हैं. यदि सम्मेलन के आयोजक वास्तव में अग्रोहा को औद्योगिक नगर तथा व्यापार मंडी बनाना चाहते हैं तो वे मंदिर के लिए पांच करोड़ रुपए बरबाद करने पर क्यों तुले हुए हैं? इतनी बड़ी रकम से यहां कोई उद्योगधंधा क्यों नहीं खोला जाता? व्यापार मंडी क्यों नहीं बनाई जाती? जाहिर है कि उद्देश्य अग्रोहा का विकास नहीं अग्रसेन का मंदिर बनाना है.

दोपहर बाद दहेज विरोधी सम्मेलन का आयोजन किया गया था. इस सम्मेलन में राजीव गांधी मुख्य अतिथि थे. निर्धारित समय से करीब दो घंटे बाद वह पहुंचे. सम्मेलन में वक्ताओं ने वही बातें दोहराईं जो सुबह भजनलाल के सामने कही गई थीं. दहेज विरोधी सम्मेलन का कुल कार्यक्रम यह रहा कि वक्ताओं ने दहेज की बात कम की और राजीव गांधी का गुणगान ज्यादा किया.

पूर्व घोषणा के अनुसार राजीव गांधी के सामने कुछ अग्रवाल युवकों को दहेज न लेने की प्रतिज्ञा करनी थी. उन युवकों के लिए बैठने की अलग व्यवस्था की गई थी. जब प्रतिज्ञा लेने की बारी आई और उन से कहा गया कि वे अपनेअपने स्थान पर खड़े हो जाएं तो कोई भी खड़ा नहीं हुआ. राजीव गांधी ने प्रतिज्ञा करने वालों से मंच के सामने आने के लिए कहा. इस के बाद आयोजकों ने कुछ लोगों को खुद वहां से उठाया और मंच के सामने ले गए. जो लोग मंच के सामने पहुंचे, उन में बहुत से ऐसे थे जो जरा भी युवक या अविवाहित नहीं लग रहे थे. दर्शकों में से कुछ ने फब्तियां भी कसीं कि "अपने बच्चों को भी साथ ले जाओ."

खैर, इस तरह कुल 40-50 लोगों ने बेमन से दहेज न लेने की प्रतिज्ञा दोहराई. राजीव गांधी ने इस के बाद हाथ में पकड़ी हुई चिट देखदेख कर दहेज की निंदा की. सरकार द्वारा इस के लिए कानून बनाने की बात कहते हुए लोगों से खुद दहेज प्रथा का अंत करने का उपदेश देने से ज्यादा उन्होंने विरोधी दलों और अखबार वालों की आलोचना की कि ये लोग बेकार हल्ला मचाते हैं जब कि देश ने पिछले 35 सालों में बहुत ज्यादा तरक्की की है. उन का भाषण किसी सामाजिक बुराई की निंदा से ज्यादा भाषण देने का पूर्वाभ्यास अधिक लग रहा था.

इंदिरा गांधी की ही शैली, उन्हीं जैसी बातें विपक्षी दलों और अखबारों की आलोचना, विदेशी ताकतों का खतरा और देश तरक्की कर रहा है, यह मनवाने की कोशिश में सम्मेलन के आयोजकों ने न जाने कैसे राजीव गांधी में महान क्रांतिकारी व्यक्तित्व और देश की आशाओं के प्रतीक की झलक देख ली. राजीव गांधी के कार्यक्रम में ही मुख्य मंत्री भजनलाल ने अग्रोहा के लिए हरियाणा सरकार की ओर से 10 लाख रुपए देने की घोषणा की.

ऊपर यहा कहा जा चुका है कि सम्मेलन का प्रत्येक कार्यक्रम लोगों को तीर्थ के लिए दान देने और देते रहने की कथित उदारता जगाने का प्रभाव पैदा करने के उद्देश्य से तैयार किया गया था. जगहजगह दानपेटियां रखीं थीं और दान की रसीदें लिए हुए कार्यकर्तागण बैठे थे. जो प्रचार साहित्य बेचा गया, उस में हर जगह अग्रवाल से कुछ प्रतिज्ञाओं के लिए कहा गया था. इन प्रतिज्ञाओं की बानगी देखिए:

हम अपने बच्चों का मुंडन और कर्णछेदन अग्रोहा में ही कराएंगे.

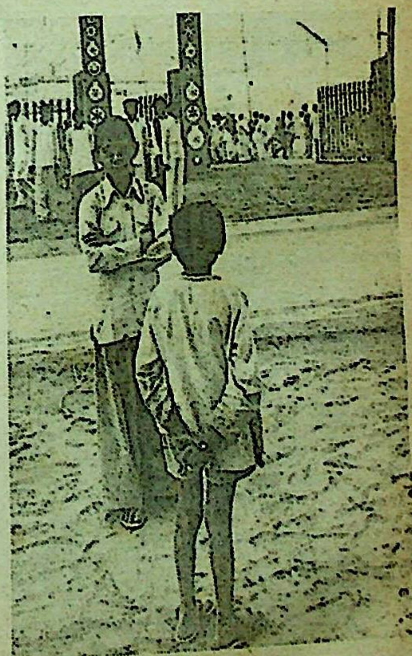
अपने यहां होने वाले प्रत्येक विवाह के अवसर पर अग्रोहा के लिए दान निकालेंगे.

परिवार के बच्चों के कर्णबेध के अवसर पर अग्रोहा के लिए दान भेजेंगे.

नया मकान बना कर गृहप्रवेश के अवसर पर, व्यापारिक प्रतिष्ठानों के अवसर पर, प्रत्येक शुभ एवं मंगलमय अवसर पर अग्रोहा के लिए दान भेजेंगे.

अपनी आय में से कुछ अंश प्रति मास

इन मासूमों को रोजगार दो, नए उद्योग लगा कर, नए व्यापार शुरू कर के. पूजा, अर्चना से बहकाओ नहीं.





मंदिर में अग्रसेन की मूर्ति का पूजन : भगवानों की भीड़ में एक और भगवान.

या प्रति वर्ष अग्रोहा के लिए दान स्वरूप अवश्य भेजेंगे. अपने प्रतिष्ठानों में से अग्रोहा के लिए धन निकालते रहेंगे.

इन कार्यक्रमों के अलावा अंधविश्वास पैदा करने के लिए सम्मेलन के कार्यकर्ता यात्रियों को मनगढ़ंत कहानियां सुना रहे थे. सतीमड़िया में मनौती मानने से मनोकामनाएं पूरी होने की बात सब से ज्यादा कही जा रही थी. कहा जा रहा था कि अग्रोहा के टीले पर सती शीला की समाधी के सामने घुटने टेक कर जो भी यात्री महाराजा अग्रसेन के नाम पर दुआएं मांगता है उस की हर इच्छा पूरी होती है.

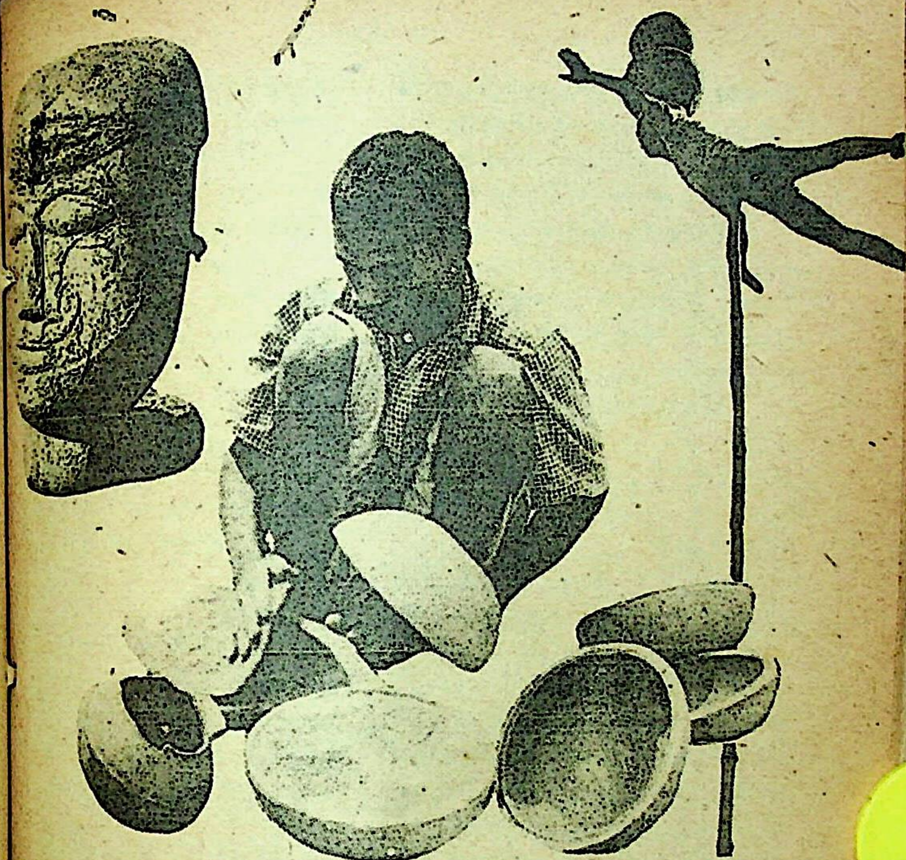
सम्मेलन के महामंत्री रामेश्वरदास गुप्त के अनुसार छतरपुर में एक लड़की की आंखें खराब हो गईं. बहुत इलाज कराया, परंतु उस का अंधापन दूर नहीं हुआ. इलाज के लिए उस के मातापिता लड़की को दिल्ली ले गए. दिल्ली पहुंचने पर उन्हें विचार आया कि पहले अग्रोहा चलें. वहां से लौट कर ही डाक्टर को दिखाएंगे. वे अग्रोहा गए और वहां पूजा की. धूलि को मस्तक पर चढ़ाया.

इस के बाद भोजन बनाया. वे लोग भोजन करने बैठे ही थे कि लड़की ने कहा, "मां, मुझे दिखाई दे रहा है." उस की आंखें ठीक हो गईं.

हम ने यह जानना चाहा कि उस लड़की के मातापिता का नाम क्या है. उन का पता क्या है तो इस का कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला. जाहिर है कि यह चमत्कारिक कहानी मनगढ़ंत है. सब से बड़ी बात तो यह कि अग्रोहा तीर्थ में मंदिर के अलावा एक बड़ा चिकित्सालय खोलने की योजना भी है. जब अग्रोहा की धूलि से ही बीमारियां दूर हो जाती हैं तो हस्पताल क्यों खोला जा रहा है? सम्मेलन के अध्यक्ष बनारसीदास गुप्त अग्रोहा तीर्थ के शिलान्यास समारोह में अस्वस्थ होने के कारण नहीं आ सके थे, जब कि शिलान्यास उन्हीं के द्वारा होना था. उन के न आ पाने की स्थित में पांच ईंटें चंडीगढ़ भेजी गई थीं. बनारसीदास गुप्त ने बीमारी की हालत में उन ईंटों की पूजा की और फिर उन्हें वापस भेज दिया. नींव में यही ईंटें पहले रखी गईं.

जब अग्रोहा की धूलि से सब रोग ठीक हो जाते हैं तो ईंटें चंडीगढ़ भेजने की वैकल्पिक व्यवस्था क्यों की गई? बेहतर था कि यहां की धूलि ही भेज दी जाती, जिसे मस्तक पर चढ़ा कर ही बनारसीदास गुप्त ठीक हो जाते और अग्रोहा पहुंच कर विधिवत शास्त्रीय ढंग से तीर्थ का शिलान्यास करते.

इन चमत्कारी विशेषताओं में कोई सचाई है या नहीं यह सोचना भी गलत है. वास्तव में अग्रवाल सम्मेलन अग्रवालों को एक नए भगवान के नाम पर संगठित करने की कोशिश रही. इस सम्मेलन में कुछ रिटायर राजनेता भी हैं. शायद उन के मन में अग्रवालों का एक अलग मंच बना कर उस का राजनैतिक इस्तेमाल करने की योजना हो. जो भी हो, सम्मेलन के ब्योरे अग्रवालों को एक नए धार्मिक झंडे तले इकट्ठा करने की योजना का आभास जरूर देते हैं. ●



प्राचीन भारत में शिल्प और शिल्पी

आलोचना और आपत्तियों के उत्तर

सरिता के फरवरी (प्रथम) अंक में छपे इस लेखक के लेख 'प्राचीन भारत में शिल्प और शिल्पी' पर अनेक पाठकों की प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं, जिन में कुछ ऐसे मुद्दे उठाए गए हैं जो यद्यपि असल में अज्ञानमूलक हैं तथापि आम लोगों, यहां तक कि पढ़ेलिखों में भी प्रचलित हैं. अतः उन पर विचार करना उचित होगा.

एक पाठक ने लिखा है कि लेख में कई तथ्यों को नजरअंदाज किया गया है. उन में से पहला है: शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार है. (देखें, यजुर्वेद 26/2).

इन पाठक महोदय ने न वेदमंत्र लिखा है और न ही उस का पूरा अनुवाद. केवल

लेख • डा. सुरेंद्रकुमार शर्मा

एक पंक्ति लिख दी, जो इस बात की सूचक है कि या तो उन्होंने वेद पढ़े नहीं या फिर उन के पास पत्र लिखते समय यजुर्वेद नहीं था.

यजुर्वेद का यह पूरा मंत्र इस प्रकार है:

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय प्रियोदेवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादो नमतु. (यजुर्वेद 26/2).

यजुर्वेद पर 11वीं और 17वीं शताब्दी के दो पुराने संस्कृतभाष्य मिलते हैं. एक उबट का है और दूसरा महीधर का. दोनों ने एक ही तरह से इस मंत्र का अर्थ किया है, जो निम्नलिखित है:

जैसे (यथा) मैं दान देने के लिए (दक्षिणायै) इस (इमां) कल्याणकारी वाणी (कल्याणी वाचं) को कि दो, भोजन करो (दीयतां, भुज्यताम्) लोगों के प्रति (जनेभ्यः) कहता हूं (आवदानि), वैसे तुम भी कहो, किन लोगों के प्रति? ब्राह्मणों और क्षत्रियों के प्रति (ब्रह्मराजन्याभ्यां) और (च) शूद्र के प्रति (शूद्राय), वैश्य के प्रति (अर्य्याय), अपने नौकर के प्रति (भृत्याय) तथा अतिशूद्र के प्रति (अरणाय) ताकि सब को देने वाले परमात्मा (दातुः) और देवताओं का (देवानाम्) प्यारा (प्रियः) मैं हो जाऊं (भूयासम्) और मेरी (मे) यह (अयं) धन पुत्र लाभ रूपी कामना (कामः) पूर्ण हो (समृध्यताम्) तथा सुखादि प्राप्त [हो] (उपनमतु).

"यदि बुद्धिहीन होने के कारण शूद्र न पढ़ सकता है और न याद रख सकता है, फिर उसे वेद पढ़ाने की 'परमात्मा' की आज्ञा ढूंढ़ लाने का क्या मतलब है? क्या परमात्मा मूर्ख था जो पढ़ने की शक्ति न रखने वाले को पढ़ाने का आदेश दे मारा?"

यही अर्थ आज तक वेदभाष्य[कार] करते आए हैं. उदाहरणार्थ नीचे [दो] आधुनिक भाष्यों को उद्धृत करते हैं:

(क) कल्याणमयी वाणी को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्वजन, शत्रुगण, [सभी] जनों के निमित्त कहता हूं जिस से मैं इस [लोक] में देवताओं का, दक्षिणा देने वालों का [प्रीति]पात्र बन सकूं. मेरी यह इच्छा पूर्ण हो [तथा] मेरा कार्य सफल हो. (यजुर्वेद, आर्य गोपालप्रसाद कौशिक कृत हिंदी अनु[वाद] सहित प्रथम संस्करण, 1968, पृ. 49[5]).

(ख) कल्याण करने वाली इस वा[णी] को ब्राह्मण, राजा, शूद्र, वैश्य, अपने [लोगों] और समस्त जनों के लिए कहता हूं. [इस] वाणी के द्वारा मैं इस यज्ञ में देवताओं [और] दक्षिणा देने वालों का प्रीतिपात्र होऊंगा. [मेरा] यह अभीष्ट सफल हो और मेरा अमुक [कार्य] सिद्ध हो जाए. (यजुर्वेद, श्रीराम शर्मा आचार्य कृत अनुवाद, पंचम संस्करण 19[..], पृ. 433).

किसी मंत्र या श्लोक का जो अ[र्थ] परंपरा से लोग मानते हैं, उसी का अनुक[रण] करते हैं, उसी के अनुसार व्यवहार कर[ते] [हैं.] इसी लिए शताब्दियों से प्रस्तुत या कि[सी] अन्य वेदमंत्र से शूद्रों को पढ़ने का कि[सी] [ने] कभी अधिकार नहीं दिया. इस के विप[रीत] ऐसे आदेश विद्यमान हैं जिन में शूद्रों को [न] केवल वेद न पढ़ने को कहा गया है, बल्कि [इस] का उल्लंघन करने पर सख्त सजा देने का [भी] विधान किया गया है. शताब्दियों से [चला आ रहा] प्रचलित एक आदेश है:

अथ हास्य वेदमुपशृण्वतस्त्रपुजतु[भ्यां] श्रोत्रप्रतिपूरणमुदाहरणे जिह्वाच्छे[दो] धारणे शरीरभेदः. (गौतमधर्मसू[त्र] 2/3/4).

अर्थात यदि शूद्र वेदमंत्रों को सुन ले [तो] उस के कानों में सीसा और रांगा पिघला [कर] डालना चाहिए. वह यदि वेद के शब्दों [का] उच्चारण करे तो उस की जीभ चीर दे[नी] [चाहिए.] [यदि वह] वेदमंत्रों को धारण कर[े तो] चाहिए. यदि यह

उन्हें याद कर ले तो उस के शरीर को कुल्हाड़े आदि से काट देना चाहिए. (देखें, हरदत्त कृत मिताक्षरावृत्ति:).

यहां यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि शूद्रों को न केवल वेदाध्ययन से वर्जित किया गया, बल्कि उन्हें सामान्य शिक्षा तक से वंचित रखा गया. स्कंद पुराण का आदेश है:

शूद्राय चोपदेष्टारं द्विजं चाण्डालवत् त्यजेत्, शूद्रं चाक्षरसंयुक्तं दूरतः परिवर्जयेत्. (वैष्णवखंड, अ. 19 और ब्रह्मखंड, अ. 10).

अर्थात यदि कोई ब्राह्मण किसी शूद्र को उपदेश करे, उसे कोई शिक्षा दे तो उसे दूसरे ब्राह्मण चांडाल के समान त्याग दें, उसे ग्राम से बाहर निकाल दें. पढ़ेलिखे शूद्र को दूर से ही त्याग दें.

मनु ने आदेश दिया है: न शूद्राय मतिं दद्यात् (मनु) अर्थात शूद्र को किसी प्रकार की शिक्षा न दें.

जब वेदों के एकाधिकारियों की व्यावहारिक परंपरा ऐसी रही हो, तब वेद के किसी मंत्र से यह कैसे सिद्ध किया जा सकता है कि शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार था?

प्रस्तुत वेदमंत्र का अर्थ शुरू से ले कर आज तक एक सा होता आया है. केवल आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद ने इस का अर्थ भिन्न ढंग से किया था. अत: उन के अनुयायी इस मंत्र के उन के द्वारा किए अर्थ को ही ठीक मानते हैं. उन्होंने जो अर्थ किया था, वह निम्नलिखित है:

"हे मनुष्यो, मैं ईश्वर जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अपने स्त्री, सेवक आदि और उत्तम लक्षणयुक्त प्राप्त हुए अंत्यज के लिए भी इन उक्त सब मनुष्यों के लिए इस संसार में इस प्रकट की हुई सुख देने वाली चारों वेदरूप वाणी का उपदेश करता हूं, वैसे आप लोग भी अच्छे प्रकार उपदेश करें. जैसे मैं दान वाले के संसर्गी विद्वानों की दक्षिणा अर्थात दान आदि के लिए मनोहर पियारा होऊं और मेरी यह कामना प्राप्त हो

"किसी मंत्र के मनमाने ढंग से अर्थ कर के, उस से बलात्कार कर के कोई बात दरशाना एक बात है और बिना खींचातानी के अर्थ कर के, उसे परंपरा और इतिहास द्वारा पुष्ट कर के किसी बात को दरशाना और बात है."

वैसे आप लोग भी होवें और वह कामना तथा सुख आप को भी प्राप्त होवे." (यजुर्वेद, दयानंद भाष्य, पृ. 100).

पाठक महोदय ने शायद इसी अर्थ के आधार पर शूद्रों के वेदों को पढ़ने के अधिकार की बात की है. यह अर्थ स्वामी दयानंद ने यही अधिकार खुद वेदों से सिद्ध करने के उद्देश्य से किया था. लेकिन दोएक शब्दों के अर्थों को तोड़मरोड़ कर यदि एक नया अर्थ उन्होंने निकाला भी, तो भी सारा मंत्रार्थ इतना अज़ीब हो गया कि साधारण बुद्धि भी इस की प्रामाणिकता पर संदेह करती है. यह अर्थ न केवल प्रकरण विरोधी और परस्पर असंबद्ध है, बल्कि स्वामीजी के अपने सिद्धांतों और सामान्य बुद्धि के भी विपरीत है.

जब स्वामी दयानंद के अनुसार परमात्मा निराकार है, शक्लसूरत रहित है, तब उस की 'स्त्री' और उस के 'सेवक' कहां से आ टपके? परमात्मा की स्त्री कौन है? कब विवाह हुआ? किस की पुत्री है? परमात्मा के सेवक कौन व कितने हैं? वैतनिक या अवैतनिक? जब परमात्मा ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अंत्यज गिन दिए हैं, फिर अलग से 'स्त्री' और 'सेवक' गिनने का मतलब क्या है? क्या स्त्रियां और सेवक उक्त वर्णों (जातियों) से बाहर के हैं? क्या स्त्री का कोई वर्ण नहीं होता? परमात्मा का यह कहना भी कि जैसे मैं उक्त लोगों को वेद

का उपदेश देता हूं, चिंत्य है. खुद स्वामी दयानंद ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में लिखा है कि अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा– इन चार मनुष्यों को सृष्टि के आदि में परमात्मा ने वेदों का ज्ञान दिया था. उन्हीं से दूसरे लोगों तक वह पहुंचा. (पृ. 20). ऐसे में परमात्मा के मुंह से यह कहलवाना कि "जैसे मैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अतिशूद्र, अपनी स्त्री, सेवक आदि को वेदोपदेश देता हूं, वैसे तुम भी करो" ठीक कैसे माना जा सकता है?

फिर परमात्मा की यह कामना करना भी कि मैं दानियों का प्रिय बनूं, मेरी यह कामना पूर्ण हो, परमात्मा को अपूर्णकाम व गिड़गिड़ाने वाला सिद्ध करता है, क्या परमात्मा (?) ऐसा कह सकता है?

ये सारे दोष इस बात के सूचक हैं कि मंत्र के शब्द, विश्लेषण और वाक्यांश परमात्मा से संबद्ध हैं ही नहीं. सारा कथन किसी भी तरह परमात्मा पर चरितार्थ नहीं होता. स्वामीजी ने एक खास बात को सिद्ध करने के आवेश में दोएक शब्दों से स्वार्थसिद्धि तो कर ली, लेकिन उन्हें यह ध्यान ही नहीं रहा कि यह भी देखें कि सारे मंत्र के साथ उन एकद्रो शब्दों के हेरफेर से मेल भी बैठता है या नहीं. ठीक ही है– स्वार्थी दोषं न पश्यति!

यहां यह बात विशेषत: उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानंद ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में लिखा है:

'यत्र शूद्रो नाध्यापनीयो न श्रावणीयश्चेत्युक्तं तत्रायमभिप्राय: शूद्रस्य प्रज्ञाविरहितत्वात् विद्यापठनं धारणविचारासमर्थत्वात् तस्याध्यापनं श्रावणं व्यर्थमेवास्ति निष्फलत्वाच्च.'

जहां यह लिखा है कि शूद्र को वेद आदि न पढ़ाना और न सुनाना चाहिए, उस का अभिप्राय यह है कि शूद्र में बुद्धि न होने के कारण न वह विद्या पढ़ सकता है और न याद कर सकता है. अत: उसे पढ़ाना व सुनाना निष्फल है.

यदि बुद्धिहीन होने के कारण शूद्र न पढ़ सकता है और न याद रख सकता है, फिर उसे वेद पढ़ाने की 'परमात्मा' की आज्ञा ढूंढ़ लाने का क्या मतलब है? क्या परमात्मा मूर्ख था जो पढ़ने की शक्ति न रखने वाले को पढ़ाने का आदेश दे मारा? जब स्वामी दयानंद स्वयं शूद्र की अयोग्यता से परिचित थे, फिर उन्होंने उस का वेद पढ़ने का अधिकार सिद्ध करने के लिए अर्थों में हेराफेरी कर के क्यों हाथपैर मारे?

वास्तविकता से इनकार क्यों?

किसी मंत्र के मनमाने ढंग से अर्थ कर के, उस से बलात्कार कर के कोई बात दरशाना एक बात है और बिना खींचातानी के अर्थ कर के, उसे परंपरा और इतिहास द्वारा पुष्ट कर के किसी बात को दरशाना और बात है. किसी शब्द या वाक्य का जो अर्थ उस के प्रयोक्ता मानते आ रहे हैं, वही उस का अर्थ है, वैसे व्याकरण की कलाबाजियां लगा कर उस से चाहे जितने अर्थ कोई निकाला करे. जब वह शब्द या वाक्य भूतकाल से संबंधित हो, तब तो उस के प्रयोक्ताओं का ऐतिहासिक जीवन हमारा असंदिग्ध मार्गदर्शक होता है. हिंदुओं के इतिहास में, उन के विभिन्न ग्रंथों में, उन के अभिलेखों में शूद्रों के वेद पढ़ने का निषेध है. उस वास्तविकता को मंत्रविशेष के अर्थों में हेरफेर कर के कैसे बदला जा सकता है?

स्पष्ट है कि वेद से और वेदों को मानने वालों की संस्कृति और इतिहास से यह सिद्ध नहीं होता कि शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार था.

वही पाठक महोदय आगे लिखते हैं: शूद्र कर्मों के बल पर ब्राह्मणत्व व उच्च वर्णों को प्राप्त कर सकते हैं– उदाहरण वाल्मीकि (?), धर्मव्याध (?), विदुर, मतंग ऋषि इत्यादि.

यह लिख कर उन्होंने यह बताना चाहा है कि ये लोग नीच वर्ण के थे, लेकिन अपने श्रेष्ठ कर्मों के आधार पर ब्राह्मण व उच्च वर्ण के हो गए. हमें देखना होगा कि क्या वास्तव में ऐसा हुआ. क्या इस बात का कोई

शास्त्रीय दस्तावेजी प्रमाण है?

सर्वप्रथम वाल्मीकि को लें, न कि वाल्मीकि को. प्रचलित विश्वास है कि वह डाकू थे. बाद में अच्छे कामों के आधार पर ऋषि बने. लेकिन यह बचकाना विश्वास है, डाकू कोई वर्ण (जाति) नहीं. डाकू तो किसी भी वर्ण का आदमी बन सकता है. अतः आम विश्वास को प्रमाण मान कर यह सिद्ध करना कि, वाल्मीकि नीच वर्ण से उच्च वर्ण के हो गए, सरासर गलत है.

अब शास्त्रीय प्रमाणों को देखें. 'वाल्मीकि रामायण' में दो स्थानों पर वाल्मीकि ने अपने विषय में लिखा है:

क. प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनंदन. (उत्तरकांड, सर्ग 96, श्लो. 19). अर्थात हे राम, मैं प्रचेता का दसवां पुत्र हूं.

ख. एतदाख्यानमायुष्यं संभविष्यं सहोत्तरम्, कृतवान् प्रचेतसः पुत्रस्तद् ब्रह्माप्यन्वमन्यत. (उत्तरकांड, सर्ग 11, श्लोक 11).

अर्थात यह आख्यान भविष्य और उत्तर सहित प्रचेता के पुत्र ने रचा है, जिस का ब्रह्मा ने भी समर्थन किया है.

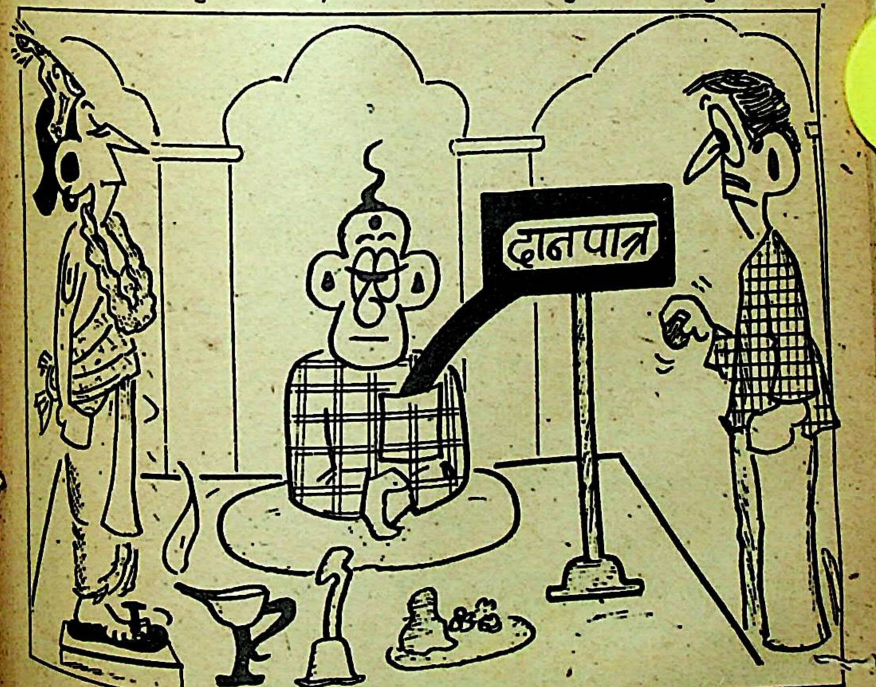
प्रचेता कौन था? मनुस्मृति में लिखा है कि वह ब्रह्मा का पुत्र था: मरीचिमत्र्यंगिरसौ पुलस्त्यं पुलहं क्रतुम्, प्रचेतसं वसिष्ठं च भृगुं नारदमेव च. (मनु. 1/35).

अर्थात ब्रह्मा ने मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेता, वसिष्ठ, भृगु और नारद– इन 10 पुत्रों को उत्पन्न किया.

स्पष्ट है कि वाल्मीकि ब्रह्मा के पुत्र प्रचेता के पुत्र थे. अतः उन्हें नीच जाति का लिखना व कहना गलत है.

वाल्मीकि के साथ डाकू आदि कैसे जुड़ा? इस का उत्तर दो स्थानों पर मिलता है. अध्यात्म रामायण में वाल्मीकि ने अपने विषय में खुद बताया है कि वह जन्म से द्विज (ब्राह्मण) थे, परंतु शूद्रों व भीलों के साथ संपर्क के कारण डाकू बन गए थे. जब डाकूपन छोड़ दिया, पुनः ब्राह्मणों के काम शुरू कर दिए.

अहं पुरा किरातेषु किरातैः



...रतः सदा 65. ततश्चौरैश्च संगम्य चौरोऽहमभवं पुरा 66. एकदा मुनयः सप्त दृष्टा महति कानने 67. ... मुनीनां दर्शनादेव शुद्धांतःकरणोऽभवम्, धनुरादीन् परित्यज्य दण्डवत् पतितोऽस्म्यहम् 76. त्वग्रे पतितं दृष्ट्वा मामूचुर्मुनिसत्तमाः 77. एकाग्रमनसात्रैव मरेति जप सर्वदा 80. आगच्छामः पुनर्यावत्तावदुक्तं सदा जप 81. एवं बहुतिथे काले गते निश्चलरूपिणः, सर्वसंगविहिनस्य वल्मीकोऽभून्ममोपरि 83. ततो युगसहस्रान्ते ऋषयः पुनरागमन्, मामूचुर्निष्क्रमस्वेति तच्छ्रुत्वा तूर्णमुत्थितः 84. वल्मीकान्निर्गतश्चाहं नीहारादिव भास्करः, मामप्याहुर्मुनिगणा वाल्मीकिस्त्वं मुनीश्वर 85. इत्युक्त्वा ते ययुर्दिव्यगतिं रघुकुलोत्तम 86. (अयोध्याकांड, सर्ग 92).

अर्थात पूर्वकाल में मैं भीलों के साथ रहता था और उन्हीं के साथ रह कर बड़ा हुआ. मैं निरंतर शूद्रों के आचरणों में रत रहता था. मैं जन्म मात्र का ब्राह्मण था. उस समय चोरों के समागम से मैं भी पक्का चोर हो गया था. एक दिन एक घोर वन में मैं ने साक्षात सप्तर्षियों को जाते देखा. उन के दर्शनमात्र से मेरा अंतःकरण शुद्ध हो गया और मैं धनुष आदि को फेंक कर दंड के समान पृथ्वी पर गिर पड़ा. मुझे अपने सामने पड़ा देख कर वे मुनि बोले, "तू इसी स्थान पर रह कर एकाग्र मन से सदा 'मरामरा' जप कर. जब तक हम लौट न आएं तब तक तू हमारे कथनानुसार इस का जाप कर." इस तरह बहुत समय तक निश्चलतापूर्वक रहने के कारण मुझ पर वल्मीक (मिट्टी का ढेर सा) बन गया. एक हजार युग बीतने पर वे मुनि वापस आए व मुझ से कहने लगे, "निकल आओ." जिस तरह कुहरे को पार कर के सूर्य निकल आता है, उसी तरह मैं वल्मीक से निकला. तब उन मुनियों ने कहा, "हे मुनि, तुम वल्मीक से निकले हो, अतः तुम वाल्मीकि हो."

इस से भी यही सिद्ध होता है कि वाल्मीकि जन्म से ब्राह्मण थे, परंतु कुछ रहे.

स्कंदपुराण में कहा गया है कि वाल्मीकि पहले जन्म में श्रीवत्सगोत्रीय ब्राह्मण थे. तब उन का नाम स्तंभ था. अगले जन्म में वह व्याध बने. तब शंख ऋषि के सत्संग से, रामनाम के जाप से अगले जन्म में अग्निशर्मा नामक ब्राह्मण बने (कुछ के मत से रत्नाकर नामक ब्राह्मण बने). पिछले जन्म के संस्कारों के कारण ब्राह्मण बन कर भी कुछ दिन व्याधकर्म में लगे रहे. फिर सप्तर्षियों के कहने पर 'मरामरा' जपते रहे और ऊपर बांबी (वल्मीक) बनने से वाल्मीकि कहलाए. (कल्याण, संक्षिप्त स्कंदपुराणांक, पृ. 381, 709 और 1024).

बंगला की कृत्तिवास रामायण, तुलसी के रामचरितमानस, आनंद रामायण (राज्यकांड 14/21-49) और भविष्यपुराण (प्रतिसर्ग 4/10) में भी यही कथा थोड़े हेरफेर से दी गई है.

शूद्र से ब्राह्मण नहीं

इस तरह स्पष्ट है कि वाल्मीकि शूद्र व अब्राह्मण से ब्राह्मण नहीं बने.

अब दूसरा उदाहरण देखिए. पाठक महोदय ने नाम लिखा है– धर्मव्याघ्र. यह नाम गलत है. असली नाम है– धर्मव्याध, अर्थात धर्मपरायण शिकारी. व्याघ्र का अर्थ है– बाघ. हमारे पाठक महोदय का हिंदी का ज्ञान जरा कम प्रतीत होता है. जो व्याध और व्याघ्र का भेद उन्हें स्पष्ट नहीं रहा.

धर्मव्याध का असली नाम पता नहीं चलता. वह इसी नाम से महाभारत में वर्णित है. उस के विषय में इतना ही आता है कि वह धर्मपरायण था. यह कहीं नहीं आता कि वह ब्राह्मण या अन्य उच्च वर्ण का कभी बना या उसे माना गया. असलियत यह है कि धर्मव्याध पिछले जन्म के उच्च वर्ण से इस जन्म में शूद्र वर्ण में गिरा. वह नीचे से ऊपर जाने की अपेक्षा ऊपर से नीचे गिरने का उदाहरण है.

महाभारत में धर्मव्याध कौशिक नामक ब्राह्मण को अपना वृत्तांत सुनाते हुए कहता है:

अहं हि ब्राह्मण: पूर्वमासं द्विजवरात्मज: 22. कश्चिद् राजा मम सखा धनुर्वेदपरायण: 23. एतस्मिन्नेव काले तु मृगयां निर्गतो नृप: 24. ततोऽभ्यहन् मृगांस्तत्र सुबहूनाश्रमं प्रति 25. अथ क्षिप्त: शरो घोरो मयापि द्विजसत्तम, ताडितश्च ऋषिस्तेन शरेणानतपर्वणा 26. तत: प्रत्यब्रवीद् वाक्यमृषिर्मां क्रोधमूर्च्छित:, व्याधस्त्वं भविता क्रूर शूद्रयोनाविति द्विज: 31 (अध्याय 215). शूद्रयोन्यां वर्तमानो धर्मज्ञो हि भविष्यसि 4. जातिस्मरश्च भविता स्वर्गं चैव गमिष्यसि 5 (अ. 216, वन पर्व).

अर्थात मैं पिछले जन्म में ब्राह्मण था. एक राजा मेरा मित्र बन गया. एक दिन राजा शिकार को निकला. मैं भी उस के साथ गया. वहां मैं ने एक तीर चलाया, जो एक ऋषि के जा लगा. उस ने गुस्से से पागल हो कर मुझे शाप दिया, "तू शूद्रयोनि में शिकारी बने." अनुनयविनय करने पर उस ने कहा, "शूद्रयोनि में उत्पन्न होने पर भी तुम धर्मज्ञ होगे. तुम्हें अपने पिछले जन्म की घटनाएं याद रहेंगी. शाप के समाप्त होने पर तुम स्वर्ग को जाओगे."

स्पष्ट है कि पिछले जन्म का ब्राह्मण उस जन्म के पाप के कारण इस जन्म में शूद्र योनि में जन्मा और जन्मांतर में नीचे से ऊंचे या ऊंचे से नीचे वर्ण में कर्मानुसार जन्मना हिंदू धर्मसम्मत ही है. प्रश्न है, एक ही जन्म में जाति परिवर्तन का. वह इस से न सिद्ध होता है और न हिंदू धर्मसम्मत है. ऐसे में धर्मव्याध (?) का उदाहरण शूद्र के ब्राह्मण बनने के समर्थन में कैसे दिया जा सकता है?

तीसरा उदाहरण है विदुर. विदुर की मां दासी (शूद्रा) थी और पिता ब्राह्मण व्यास था. दासी की संतान होने के कारण विदुर को व्यास की क्षत्रिय स्त्रियों से अपनी अन्य संतानों के बराबर तक नहीं माना गया. उस के ब्राह्मण बनने की तो बात ही छोड़ो.

शिक्षा

जो शिक्षा हमें निर्बलों को सताने के लिए तैयार करे, जो हमें धरती और धन का गुलाम बनाए, जो हमें भोगविलास में डुबोए, जो हमें दूसरों का रक्त पी कर मोटा होने का इच्छुक बनाए, वह शिक्षा नहीं भ्रष्टता है. —प्रेमचंद

व्यास का एक पुत्र धृतराष्ट्र अंधा होने के कारण राजा नहीं बन सका. दूसरा पुत्र विदुर शूद्रा के पेट से उत्पन्न होने के कारण सिंहासन प्राप्त नहीं कर सका. ऐसे में उस का तीसरा पुत्र पांडु राज्य का स्वामी बना. महाभारत में स्पष्ट तौर पर लिखा है.

धृतराष्ट्रस्त्वचक्षुष्ट्वाद् राज्यं न प्रत्यपद्यत, पारशवत्वाद् विदुरो राजा पाण्डुर्बभूवह. (आदिपर्व अ. *108*, श्लो. 25).

अर्थात धृतराष्ट्र अंधेपन के कारण और विदुर शूद्रा के गर्भ से उपजा होने के कारण सिंहासनारूढ़ न हो सका. अत: पांडु को राजा बनाया गया.

चौथा उदाहरण है– मतंग ऋषि. मतंग को क्या हुआ, इस के विषय में पाठक महोदय ने कुछ नहीं लिखा. उस की कथा विस्तार से महाभारत के अनुशासन पर्व (अ. 27 से 29) में आती है. उस में आता है कि शूद्र वर्ण में जन्मा मतंग घोर तप करता है. उस की तपस्या से प्रसन्न हो कर इंद्र उस के पास कई बार आता है और वर मांगने के लिए कहता है. मतंग का कहना है कि मैं ब्राह्मण बन जाऊं, मुझे यह वर दीजिए. इस पर इंद्र उसे इसे छोड़ कोई अन्य वर मांगने के लिए कहता है. उस का कहना है:

चण्डालयोनौ जातेन नावाप्यं वै कथंचन 4. मतंग ब्राह्मणत्वं ते विरुद्धमिह दृश्यते. ब्राह्मण्यं दुर्लभतरम् 8.

अर्थात हे मतंग, चांडालयोनि में जन्म लेने वाले को किसी भी तरह ब्राह्मणत्व नहीं मिल सकता. इस जन्म में तुम्हारे लिए ब्राह्मणत्व की प्राप्ति असंभव है.

ब्राह्मणत्व अत्यंत दुर्लभ है.

लेकिन मतंग नहीं मानता. इंद्र चला जाता है. ऐसा कई दफा होता है.

अंतिम बार इंद्र आता है. मतंग पहले आग्रह नहीं करता. वह अन्य वर मांगता है. इंद्र वह वर देते हुए कहता है.

छन्दोदेव इति ख्यातः स्त्रीणां पूज्यो भविष्यसि 24. कीर्तिश्च तेऽतुला वत्स त्रिषु लोकेषु यास्यति, एवं तस्मै वरं दत्त्वा वासवोन्तरधीयत 25. प्राणांस्त्यक्त्वा मतंगोऽपि सम्प्राप्तः स्थानमुत्तमम् 26.

अर्थात "वत्स, तुम स्त्रियों के पूजनीय होओगे. तुम्हारी 'छन्दोदेव' नाम से ख्याति होगी और तीनों लोकों में तुम्हारा यश फैलेगा." इस तरह उसे वर दे कर इंद्र वहीं अंतर्धान हो गया. मतंग भी अपने प्राणों को त्याग कर उत्तम स्थान को प्राप्त हुआ.

स्पष्ट है कि मतंग चांडाल से ब्राह्मण नहीं बना. इसी बात को 29वें अध्याय के अंतिम श्लोक में वैशंपायन ने दोहराया है.

एवमेतत् परं स्थानं ब्राह्मण्यं नाम भारत, तच्च दुष्प्रापमिह वै महेन्द्रवचनं यथा 26. अर्थात भारत, इस तरह यह ब्राह्मणत्व परम उत्तम स्थान है. वह, जैसा कि इंद्र ने कहा है, इस जीवन में दूसरे वर्ण के लोगों के लिए दुर्लभ है.

मूल मंत्र में हेराफेरी

इतनी स्पष्ट मतंगकथा के होते हुए भी पाठक महोदय भ्रांति में क्यों पड़े? इस का कारण स्वामी दयानंद का 'सत्यार्थप्रकाश' है, जिस में लिखा है— "महाभारत में..... मतंग ऋषि चांडाल कुल से ब्राह्मण हो गए थे." (चतुर्थ समुल्लास). इस बात को पुष्ट करने के लिए सत्यार्थप्रकाश के आर्यसमाज शताब्दी संस्करण (रामलाल कपूर ट्रस्ट प्रकाशन) के पृष्ठ 141 पर पादटिप्पणी में संपादकों ने महाभारत, अनुशासन पर्व (3/19) का एक श्लोक बिना अर्थ दिया है: स्थाने मातंगो ब्राह्मण्यमलभद् भरतर्षभ, चंडालयोनौ जातो हि कथं ब्राह्मण्यवाप्तवान्.

स्वामी दयानंद का कथन महाभारत के उपरिलिखित विवरण के बिलकुल विपरीत होने के कारण निराधार और कपोलकल्पित है. इसी कपोलकल्पना का यह असर है कि उन्होंने 'मतंग' को 'मातंग' बना दिया. रही बात पादटिप्पणी की. लेखक ने जब उक्त श्लोक पढ़ा तो महाभारत में उसे ढूंढ़ा. श्लोक मिला. प्रकरण देखा. श्लोक में हेराफेरी की गई मिली. मूल में 'न' शब्द था, जो पादटिप्पणी में गायब है. अर्थ वैसे ही नहीं लिखा था. टिप्पणीकारों की बौद्धिक ईमानदारी का अंदाजा पाठक स्वयं लगा सकते हैं.

प्रकरण विश्वामित्र की ब्राह्मणत्व-प्राप्ति का है. अध्याय के अंत में युधिष्ठिर का प्रश्नात्मक कथन है: स्थाने मतंगो ब्राह्मण्यं नालभद् भरतर्षभ, चांडालयोनौ जातो हि कथं ब्राह्मण्यमाप्तवान् 29.

इस का अर्थ प्रकरण में इस तरह आता है: "भरतश्रेष्ठ, मतंग को जो ब्राह्मणत्व नहीं प्राप्त हुआ, यह उचित ही था, क्योंकि उस का जन्म चांडाल की योनि में हुआ था, परंतु विश्वामित्र ने कैसे ब्राह्मणत्व प्राप्त कर लिया?" (महाभारत, हिंदी अनुवाद सहित, पृ. 5432, गीताप्रेस गोरखपुर).

टिप्पणीकारों और स्वामी दयानंद के शब्द महाभारत के विवरणों के पूर्णतः विपरीत हैं, अतः बौद्धिक ईमानदारी की दृष्टि से त्याज्य हैं.

वही पाठक महोदय आगे लिखते हैं: अति प्राचीनकाल से ले कर सिकंदर के आक्रमण के वर्षोपरांत भी वर्णव्यवस्था का अस्तित्व तो था, परंतु प्रत्येक व्यक्ति को व्यवसाय चुनने की पूरी स्वतंत्रता थी. ब्राह्मण पढ़नेपढ़ाने व यज्ञ कराने के अतिरिक्त चिकित्सा, ज्योतिष, मांस बेचने और मुर्दा ढोने इत्यादि व्यवसाय भी करते थे."

इस वाक्य से उन्होंने यह सिद्ध करना चाहा कि प्राचीनकाल में व्यवसाय चुनने की पूरी स्वतंत्रता थी, लेकिन जो उदाहरण दिए हैं, वे बिल्कुल अनुपयुक्त हैं.

सिकंदर के आक्रमण के शीघ्र बाद की स्थिति का वर्णन करते हुए यूनानी राजदूत मैगस्थनीज ने उस समय लिखा था: किसी को भी अपनी जाति के बाहर शादी करने या अपने परंपरागत व्यवसाय को छोड़ कर दूसरा व्यवसाय अपनाने की इजाजत नहीं है. उदाहरण के तौर पर, सिपाही किसान नहीं बन सकता और शिल्पकार पढ़नेपढ़ाने वाला नहीं बन सकता. (बुद्धिस्ट इंडिया, पृ. 263-64 पर उद्धृत).

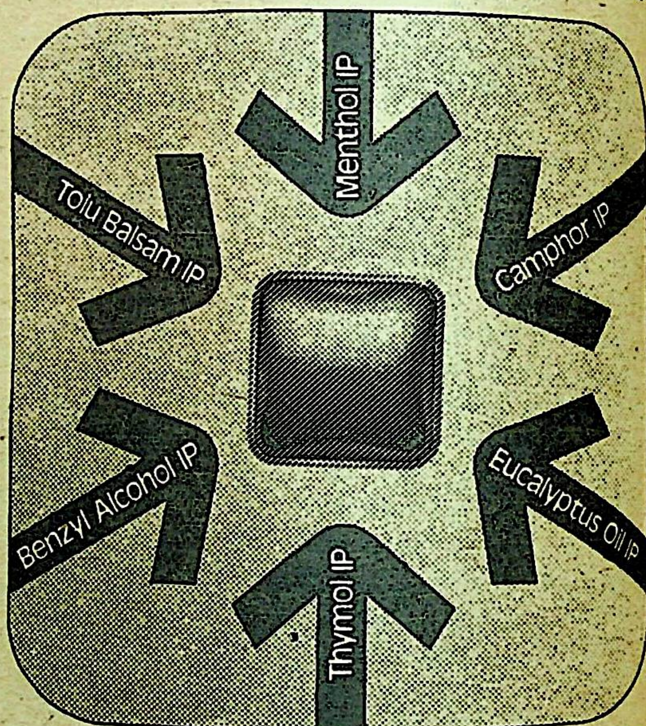
ब्राह्मण के चिकित्सा और ज्योतिष व्यवसाय उस के वेद पढ़नेपढ़ाने में अंतर्भूत हैं. उस की चिकित्सा अथर्ववेद से संबद्ध थी और ज्योतिष वेद पढ़ने के योग्य होने के लिए निश्चित पाठ्यक्रम– षड् वेदांगों का– भाग है. शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, कल्प, छंद और ज्योतिष– ये छः वेदांग हैं. अतः इन दो तथाकथित व्यवसायों को ब्राह्मण के कर्मों से पृथक सिद्ध नहीं किया जा सकता.

मांस बेचना और मुर्दा ढोना भी ब्राह्मणों के व्यवसाय थे. यह बात लेखक की समझ से बाहर है. जहां तक लेखक को मालूम है, हमारे किसी धर्म व गैर धर्मग्रंथ में ऐसा कोई उल्लेख नहीं. लेखक ने पाठक महोदय को व्यक्तिगत पत्र लिख कर यह जानना चाहा था कि वह इस बात की पुष्टि के लिए कोई शास्त्रीय व अन्य दस्तावेजी संदर्भ बताएं, लेकिन उन्होंने चुप्पी धार लेना ही उचित समझा.

लगता है, उन के ध्यान में मांस बेचने वाला धर्मव्याध और श्मशान की चौकीदारी करने वाला हरिश्चंद्र रहे होंगे. लेकिन धर्मव्याध शूद्र था, न कि ब्राह्मण, जैसा कि ऊपर महाभारत के प्रमाण से प्रतिपादित किया गया है.

हरिश्चंद्र क्षत्रिय था, न कि ब्राह्मण, फिर वह भी मुर्दे ढोने का व्यवसाय न कर के अपने को बेच चुका दास था. जो मालिक का आज्ञापालन करते हुए श्मशान की देखभाल मात्र करता था. न तो वह मुर्दे ढोता था और न यह उस का व्यवसाय था. अतः स्वतंत्र व्यवसाय वाली बात निराधार है.

बिगड़ा हुआ गला?
छः तरह से फौरन आराम के लिए



एक वोकासिल



वो का सि ल

वोकासिल लीजिए, खराश-खांसी से छुटकारा पाइए.

पारले प्रॉडक्ट्स प्रा. लि. की फार्मास्युटिकल डिविजन द्वारा निर्मित. PARLE

ULKA-VOC-82

पाठक महोदय आगे लिखते हैं: "समाज में छुआछूत एवं शूद्रों की स्थिति (?) दयनीय नहीं थी तभी विदेशी आक्रामक जातियां शनैःशनैः हिंदू धर्म में विलीन होती गईं."

वह किस समाज और काल की बात कर रहे हैं, यह उन्होंने नहीं बताया. यदि कुछ आक्रामक लोगों ने कुछ हिंदू औरतों से शादियां कर लीं या कुछ ने हिंदू धर्म को अपना लिया या कुछ हिंदुओं ने चढ़ते सूर्य को सलाम करते हुए अपनी लड़कियां आक्रामकों को दे दीं तो क्या उस से गैर हिंदू जातियां हिंदू धर्म में विलीन हो गईं? एक हजार वर्ष में मुसलमान और डेढ़दो सौ वर्षों में अंगरेज और डच हिंदू धर्म में क्यों नहीं विलीन हुए?

अनार्य आक्रामकों व शासकों को हिंदू धर्म ने हमेशा 'शूद्र' या उस के समकक्ष म्लेच्छ व यवन कहा, चाहे उन्होंने हिंदू धर्म को अपनाया हो या नहीं. जब तक वे शासक रहे, उन्हें वही सम्मान देना पड़ता था जो अन्य क्षत्रिय राजाओं को दिया जाता था. (इस का यह मतलब नहीं कि उस 'जाति' के गैरशासक लोगों से भी उच्च जाति के लोगों से किया जाने वाला व्यवहार किया जाता था) यह व्यावहारिक विवशता थी, न कि हिंदू धर्म की उदारता.

हिंदू धर्म की उदारता (?)

ऐसे आक्रामकों के पास से जब सत्ता छिन गई और उन के अपने लोग गिनती में बहुत थोड़े रह गए, तब उन के पास दो ही रास्ते थे– या तो वापस अपने देश जाते या फिर यहीं बस कर इस समाज के अंग बनते. जिन लोगों ने दूसरा विकल्प चुना, उन्हें समाज में दर्जा यहां के लोगों ने देना था और उन्हीं ने दिया. इन में से अधिकांश को 'शूद्र' घोषित किया गया और उन के विवाह आदि अपने लोगों में ही होते थे. शूद्र तो पहले ही अनार्य थे– युद्धों में जीते दास व वैसे काबू किए लोग. उन में कुछ और अनार्य अंतर्भूत कर दिए तो इस में हिंदू धर्म की क्या उदारता है? अंगरेजों ने जब 'काले लोगों' में भारतीयों को भी शामिल किया था तो क्या यह ईसाई धर्म की उदारतावश किया था? और क्या यह 'रुतबा' हमें विवश हो स्वीकार नहीं करना पड़ा था?

मनु ने स्पष्ट लिखा है: पौण्ड्रकाश्चौड्रद्रविडाः काम्बोजा यवना शकाः, पारदाः पह्लवाश्चीना किराताः दरदाः खशाः (मनुस्मृति 10/44).

अर्थात पौंड्र, चोल, द्रविड, कांबोज, यवन, शक, पारद, पह्लव, चीन, किरात, दरद और खश– ये भूतपूर्व क्षत्रिय अर्थात शासक अब शूद्र जातियां हैं.

मनु ने इन्हें क्षत्रिय केवल इस अर्थ में लिखा है कि ये कभी शासक थीं, जो क्षत्रियों का काम है, अन्यथा इन्हें क्षत्रिय सिद्ध नहीं किया जा सकता. ये जातिपांति मानने वाले आर्यों का कभी हिस्सा न थीं. ये मूलतः अनार्य हैं.

ऐसे में इन का हिंदू धर्म में विलीन हो जाना क्या अर्थ रखता है? पाकिस्तान में रह गए हिंदुओं का बहुत बड़ा भाग मुसलमान बनने को यदि कुछ ही वर्षों में विवश हो गया है तो क्या वह इसलाम की महानता और उदारता है? ऐसे ही हिंदू बहुल देश में यदि अकेली पड़ी छुटपुट विदेशी जातियां हिंदूसमाज में निम्नतम स्थान स्वीकार करने को विवश हुईं तो क्या यह हिंदू धर्म की सब को विलीन करने वाली सर्वपचा पाचनशक्ति का सुबूत है?

जो कुछ लोग क्षत्रिय वर्ण में गए, वे भी अपनी होशियारी, ब्राह्मणों की मिलीभगत और भ्रष्टाचार व रिश्वत के जरिए गए, न कि हिंदू धर्म की पाचनशक्ति के कारण. हूणों व कुछ दूसरे लोगों ने ब्राह्मणों को तगड़ी रिश्वतें दे कर उन से ऐसे विवरण बनवाए व प्रचारित करवाए जिन में उन की आदि परंपरा किसी दूर के क्षत्रिय व किसी हिंदू देवता आदि से जोड़ी गई थी. शिवाजी का उदाहरण अभी बहुत पुराना नहीं है.

क्या यह हिंदू धर्म की पाचनशक्ति का उदाहरण है या इस बात का कि कैसे हिंदू

धर्म व समस्त हिंदुओं को कुछ लोगों ने धोखा दे कर और खुद रिश्वत खा कर, मनगढ़ंत कहानियां पेश कर के अपने यजमानों की सूची को बढ़ाया?

यदि गैरहिंदू हिंदू धर्म में विलीन हो सकते होते तो खुद हिंदुओं में अनगिनत वर्णसंकर जातियां क्यों उत्पन्न होतीं? फिर ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता की संतान तक को अलग जाति में क्यों रखा जाता? हिंदू धर्म को मानने का अर्थ है किसी न किसी जाति का लेबल लगना. जो गैरहिंदू हिंदू धर्म में 'विलीन' हुए वे खुद अपने में एक जाति बनने को मजबूर हुए. उन के विवाह उन्हीं लोगों में होते थे.

रही बात छुआछूत और शूद्रों की दयनीय स्थिति की तो वेदों से ले कर 19वीं शताब्दी तक रचे गए हिंदू धर्मग्रंथों में छुआछूत विधायक और शूद्रों के प्रतिकूल इतने विधान विद्यमान हैं कि कोई भी आंखों वाला व्यक्ति उन्हें अपनी आंखों से देख सकता है जिन्हें संक्षेप में यह सब देखना हो, वे इस लेखक का 'हिंदू धर्म और शूद्र' शीर्षक लेख (सरिता, दिसंबर/द्वितीय 1981 और कैरेवान, मार्च/प्रथम, 1982) देख सकते हैं.

वह आगे कहते हैं कि प्राचीनकाल में 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना थी. यदि कहीं कोई इक्कादुक्का शूद्रद्वेषी विचारधारा थी भी तो वह उस काल में आवागमन एवं विचार संप्रेषण की कठिनाई के कारण दूरस्थ इलाकों के समाज को कैसे प्रभावित कर सकती थी? मौजूदा व्याप्त कुरीतियां विदेशी शासकों द्वारा उत्पन्न कराई गई प्रतीत होती हैं.

इस के विषय में हमारा निवेदन है कि 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का अर्थ सब के सुख की कामनामात्र है. यह किस धर्मग्रंथ का और किस काल का वाक्य है, स्पष्ट नहीं. यदि यह बहुत प्राचीन काल से प्रचलित हो तो भी कोई बात नहीं. हमारा 'सुख' का फारमूला यही रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने वर्ण (जाति) का धर्मशास्त्रों द्वारा निश्चित कर्तव्य करता रहे, चाहे वह कर्तव्य बुरे... करना ही क्यों न हो. गीता का स्पष्ट कथन है.

श्रेयान स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात्, स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् (18/47).

अर्थात यद्यपि परधर्म का आचरण सहज हो तो भी उस की अपेक्षा अपना धर्म अर्थात चातुर्वर्ण्य विहित कर्म विगुण यानी सदोष होने पर भी अधिक कल्याणकारक है. स्वभावसिद्ध अर्थात गुणस्वभावानुसार निर्मित की हुई चातुर्वर्ण्य व्यवस्था द्वारा नियत किया अपना कर्म करने में कोई पाप नहीं लगता (गीतारहस्य, पृ. 842).

फिर हम 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' कहते हुए भी यह दृढ़ता से मानते हैं: गृहे गुरहावरण्ये वा निवसन्नात्मवान् द्विजः नावेदविहितां हिंसामापद्यपि समाचरेत् 43. या वेदविहिता हिंसा नियतास्मिंश्चराचरे, अहिंसामेव तां विद्याद् वेदाद् धर्मो हि निर्बभौ 44 (मनुस्मृति, अ. 5).

अर्थात गृहस्थाश्रम, ब्रह्मचर्याश्रम या वानप्रस्थाश्रम में रहता हुआ जितेंद्रिय द्विज ऐसी हिंसा न करे जिस का वेद में विधान न हो. इस चराचर जगत में जो हिंसा वेदसम्मत है, उसे हिंसा न समझे, क्योंकि वेद से ही धर्म निकला है.

गोमेध यज्ञ : गाय की बलि

स्पष्ट है कि धर्म के नाम पर, वेद के नाम पर की गई हिंसा का हमारी 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना से कोई विरोध नहीं माना गया और न ही स्वधर्म अर्थात अपनी जाति के शास्त्र प्रतिपादित कर्तव्यों के अनुसार किया गया कोई काम बुरा व आपत्तिजनक है, चाहे वैसे वह कितना ही बुरा क्यों न हो. यही कारण है कि 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का राग अलापते हुए भी हम गोमेध में जीवित गाय को काटते रहे व अपने तथा गाय के सुख की बातें करते रहे:

गोमेधः यज्ञविशेषः, तस्य प्रयोगः सर्वोऽपि छागपशुवत् यजमानस्य स्वर्ग...

मैक्स फ़ैक्टर क्लैन्ज़िंग कोल्ड क्रीम



स्निग्ध क्रीमयुक्त. त्वचा में ऐसी
... जाए कि पता न लग पाए. आपकी
त्वचा की रक्षक. त्वचा के अन्दर
... से गहरे घुस-पैठकर, त्वचा को
... कांतिमान बनाने के कारण ही
... मैक्स फ़ैक्टर कोल्ड क्रीम आपकी
... मनपसन्द बन गयी है. दिन के
... प्रहर में आपका मेक-अप
... लगता है. प्रतिदिन के धूल-कण
और गन्दगी आपकी त्वचा के सुकोमल
रोमछिद्रों को बंद कर देती है. इससे
त्वचा चिपचिपी और म्लान हो जाती
है. इन सबसे आपकी त्वचा को बचाकर
निखारते रहने की इसकी कोमल विधि
आपकी त्वचा को सौम्य, निर्मल,
स्निग्ध और यौवनयुक्त बनाये रखती है.

आपकी त्वचा की सुकुमार प्रहरी
जगप्रसिद्ध सौन्दर्य प्रसाधनों के
निर्माता मैक्स फ़ैक्टर की देन!

Shilpi DM 13/82 Hin.

फलम, गोश्च गोलोकप्राप्तिः (शब्द कल्पद्रुम).

अर्थात गोमेध यज्ञ विशेष है. गाय का समूचा प्रयोग बकरे की तरह होना चाहिए अर्थात गाय के साथ वध आदि के सब वे ही व्यवहार होने चाहिए जो बकरे के साथ होते हैं. गोमेध का फल यह है—यजमान को स्वर्ग मिलता है और गाय को गोलोक (एक पवित्र लोक).

ऐसे में शूद्रों के साथ होते रहे व हो रहे दुर्व्यवहार को 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' से छिपाया नहीं जा सकता.

शूद्रद्वेषी वाक्य एकाध होते तो और बात थी, लेकिन यहां तो कोई भी धर्मग्रंथ इस द्वेष और घृणा से मुक्त नहीं. न केवल धर्मग्रंथ बल्कि चिकित्सा, व्याकरण, साहित्यशास्त्र, नाटक, काव्य आदि सब उन से दूषित हैं. पाणिनि ने अपने व्याकरण में लिखा है:

शूद्राणां निरवसितानाम् (2/4/10).

इस पर भाष्य करते हुए पतंजलि (150 ई. पू. के लगभग) ने लिखा है:

यैः भुक्ते पात्रं संस्कारेण शुध्यति तेऽनिरवसिताः, यैर्भुक्ते पात्रं संस्कारेण नापि शुध्यति ते निरवसिताः बहिष्कृता व्याचख्यौ.

अर्थात जिन के भोजन किए पश्चात बरतन अग्नि आदि में डालने से शुद्ध हो जाता है, उन शूद्रों को 'अनिरवसित' शूद्र कहते हैं और जिन का जूठ बरतन संस्कार (मांजने, आग में डालने आदि) से भी शुद्ध नहीं होता, वे 'निरवसित' शूद्र कहलाते हैं.

अब रही यातायात के साधनों के अभाव की बात. यह ठीक है कि यातायात के साधन कम थे, लेकिन धर्मप्रचारक, तीर्थयात्री, व्यापारी, संन्यासी आदि सर्वत्र घूमते रहते थे. लोग तीर्थस्थानों पर आतेजाते थे. फिर प्रयाग, हरिद्वार आदि में कुंभ, अर्धकुंभी आदि पर सारे भारत के धर्म के ठेकेदार एकत्र होते थे. राजाओं के दूत धार्मिक विधिविधानों की दूरदूर तक घोषणाएं करते थे. अतः यातायात की आज की तुलना में अच्छी स्थिति न होने पर भी वर्णधर्मों का हिंदुओं में सर्वत्र प्रचार था. सर्वत्र वही धर्मग्रंथ मान्य थे. वही रामायण, वही मनुस्मृति, वही गौतम धर्मसूत्र. अतः सब धर्मग्रंथों में बहुतायत से मिलने वाले शूद्र विरोधी आदेश सर्वत्र बेरोकटोक प्रचलित थे.

अपनी गलती दूसरों के मत्थे

इन आदेशों को विदेशियों के मत्थे मढ़ना वास्तविकता का सामना न करने की प्रवृत्ति का परिचायक है.

ऐसी बातें अंगरेजों के मत्थे प्रायः मढ़ी जाती हैं, लेकिन ये धर्मशास्त्रीय आदेश तो उन से भी पहले से विद्यमान हैं. यदि विदेशियों से अभिप्राय यहां मुसलमानों से है तो भी ठीक नहीं, क्योंकि ये धर्मग्रंथ तो उन से भी पहले के हैं. ये तो शकों और हूणों के हमलों से भी पहले के हैं. अतः विदेशियों का नाम ले कर बात आईगई नहीं की जा सकती.

फिर वही महोदय लिखते हैं. शूद्र राजा भी बन सकते हैं, जैसे वारंगल के काकतीय, नंद वंश, मौर्य वंश, पाल वंश आदि. यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि राजा महापद्मनंद क्षत्रिय नहीं था और उस के बाद दो हजार वर्षों तक क्षत्रिय राजाओं का कहीं पता नहीं चलता अर्थात राज्य सत्ता इस दौरान अन्य वर्ण के राजाओं के ही हाथों में रही.

इस विषय में लेखक का निवेदन है कि पाठक महोदय ने जो वंश शूद्र के रूप में गिनाए हैं, वे वास्तव में शूद्र नहीं हैं.

काकतीयों ने अपने को करिकल चोल का वंशज माना है. चोल वास्तव में अनार्य थे, जिन पर आर्यों के जातिपांति के लेबल चिपकाना अनुचित है. मनु ने कुछ समुदायों को शूद्र कहने की धृष्टता की है, जब कि उन में से एक भी आर्यों का समुदाय नहीं. उस ने चीन, किरात, यवन, शक, खश, चोल आदि को शूद्र बताते हुए कहा है कि ये पहले क्षत्रिय जातियां थीं, लेकिन इन्होंने ब्राह्मणों

से पूजापाठ न कराने की क्षत्रियों की धार्मिक क्रियाएं छोड़ दीं, अतः अब शूद्र बन गए हैं. ऐसे लालबुझक्कड़ी आधारों पर चोलों व उन के वंशज काकतीयों को शूद्र नहीं कहा जा सकता.

नंदवंश के विषय में विभिन्न मत प्रचलित हैं. पुराणों के अनुसार इस वंश का प्रथम राजा शिशुनाग राजा महानंदी की शूद्र पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, अतः इस वंश को शूद्र कहने लगे. यूनानी कथा के अनुसार प्रथम राजा का पिता शूद्र और माता व्यभिचारिणी क्षत्रिय रानी थी, जैन परंपरा के अनुसार वह गणिका और नाई की संतान था. लेकिन बौद्ध परंपरा का कहना है कि वह प्रत्यंतवासी अर्थात सीमा प्रांत का रहने वाला था और अपने भाइयों के साथ डकैती डाला करता था. उस ने मगध के राजा को जबरदस्ती निकाल बाहर किया था.

ऐसे में यदि इसे महानंदी राजा की संतान मानें या यदि बौद्ध परंपरा को मानें तो नंद वंश का शूद्र होना पूरी तरह सिद्ध नहीं होता. यूनानी कथा के अनुसार भी वह क्षत्रिय रानी का (चाहे अवैध ही सही) पुत्र सिद्ध होता है. संक्षेप में हम कह सकते हैं कि नंद वंश की उत्पत्ति के विषय में अभी विद्वानों में मतैक्य नहीं.

मौर्य वंश क्षत्रिय था. इस विषय में अनेक प्रमाण मिलते हैं. महापरिनिब्बाण सुत्त के अनुसार मौर्य क्षत्रिय थे, जिन का पिप्पलिवन में शासन था. महावंश टीका के अनुसार मौर्यों का संबंध सूर्यवंशी क्षत्रिय राजाओं से था. मध्यकालीन शिलालेखों के अनुसार भी मौर्य सूर्यवंशी ठहरते हैं. राजस्थान भौगोलिक शब्दकोश में मौर्यों को राजपूत कहा गया है. ऐसे में मौर्य वंश को शूद्र कहना नितांत अनुचित है.

पाल वंश का संस्थापक गोपाल था, जो क्षत्रिय था. यह बात 1608 में तिब्बती भाषा में लिखे गए लामा तारानाथ के 'भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास' (पृ. 108-09) से स्पष्ट है. यही मत विद्याधर महाजन ने 'प्राचीन भारत का इतिहास' (पृ. 537) में

शिल्पी

शिल्पी पत्थर या मिट्टी में से मूर्ति उत्पन्न नहीं करता. वह तो उस में है ही, सिर्फ छिपी हुई है उसे प्रकट करना उस का काम है. —रस्किन

प्रतिपादित किया है.

स्पष्ट है कि जो चार वंश शूद्र बताए हैं, उन में से एक अनार्य है, दो स्पष्टतया क्षत्रिय और एक विवादास्पद. अतः इन चार वंशों के नाम ले कर यह कहना ठीक नहीं कि हिंदू धर्मानुसार शूद्र राजा बन सकता है. हमारा मत है कि यदि कोई शूद्र राजा बना भी तो वह हिंदू धर्म की उदारता के कारण नहीं बना, बल्कि वह हिंदू धर्मग्रंथों के विरोधी आदेशों के बावजूद राजा बना. शिवाजी ऐसा ही राजा था. उस ने शस्त्रबल से काफी बड़े भूभाग पर राज्य स्थापित किया. उस का यह काम हिंदू धर्मग्रंथों के आदेशों के बिलकुल विपरीत था. यही कारण है कि जब उस ने सिंहासनारूढ़ होने और विधिवत राजा बनने की कोशिश की तो हिंदूधर्म के दावेदारों ने उस का डट कर विरोध किया.

सर यदुनाथ सरकार ने लिखा है कि ब्राह्मणों के विरोध को शांत करने में शिवाजी का 50 लाख रुपया (अन्य मत से सात करोड़) खर्च हुआ. ब्राह्मणों का कथन था कि राज्याभिषेक क्षत्रिय का हो सकता है, शूद्र का नहीं. इतना खर्च करने पर हिंदू धर्म के ठेकेदारों ने एक कल्पित वंशवृक्ष बनाया और शिवाजी को उदयपुर के एक राजपूत वंशज के रूप में पेश किया गया. तब उसे यज्ञोपवीत पहनाया गया, जिस के लिए धर्म के ठेकेदारों को बहुत बड़ी राशि दी गई. फिर उन्होंने 8,000 रुपए इसलिए लिए ताकि शिवाजी के युद्धों के दौरान हुई ब्राह्मणों की हत्याओं का पाप दूर हो सके. इतना होने के बावजूद ब्राह्मणों ने शिवाजी का राज्याभिषेक वेदमंत्रों से नहीं किया,

क्योंकि वे शूद्र को वेदमंत्र सुना कर खुद पापी नहीं बनना चाहते थे. (देखें, दि मैनेस आफ हिंदू इंपीरियलिज्म, ले. स्वामी धर्मतीर्थजी महाराज, पृ 165-66 और ल.र. बाली कृत हिंदू धर्म या कलंक, दूसरी जिल्द).

शिवाजी हिंदू धर्म का रक्षक गौ, ब्राह्मण का पूजक और पुराणपंथी था. जब ऐसे धर्मरक्षक शूद्र के साथ हिंदू धर्म का तीन साढ़े तीन सौ साल पहले यह व्यवहार रहा है, तब प्राचीन काल में अन्य शूद्रों को वे कितनी 'खुशी' से राजा स्वीकारते होंगे, यह तो आज सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है.

पाठक महोदय का यह कहना कि महापद्मनंद के बाद लगभग दो हजार वर्ष तक क्षत्रिय राजाओं का कुछ पता नहीं चलता और राजसत्ता गैर क्षत्रियों के हाथों आ गई, आधा सही है और आधा गलत.

महापद्मनंद के बाद क्षत्रिय मौर्य वंश (ई.पू. 323 से 186 ई.पू.), ब्राह्मण शुंग और कण्व वंश (185 ई.पू. – 73 ई.पू.), ब्राह्मण सातवाहन (235 ई.पू.), अनार्य नागवंश (110 ई.पू. – 315 ई.) जाट गुप्त (240 ई.–7वीं शताब्दी), ब्राह्मण वाकाटक (3री से 5वीं शताब्दी), क्षत्रियों अथवा विदेशियों के वंशज राजपूत (600 ई.– 1200 ई.), हूणों की शाखा प्रतिहार (778 ई.– 1036 ई.), क्षत्रियों अथवा अनार्य द्रविड़ों के वंशज राष्ट्रकूट (753 ई.– 975 ई.), विदेशी गुर्जरों अथवा क्षत्रियों के वंशज चालुक्य (567 ई. 1118 ई.), ब्राह्मणों अथवा अनार्य चोलों– नागों के वंशज पल्लव (350 ई.– 9वीं सदी), अनार्य चोल (850 ई.– 1262 ई.) विदेशी मुग व मुसलमान (1000 ई.– 1707 ई.) विदेशी अंगरेज (1757 से 1947) तक राज्य करते रहे हैं. इन में क्षत्रिय बहुत कम हैं, ज्यादा विदेशी व उन के वंशज हैं.

यह भी हिंदूधर्म की उदारता का प्रमाण न हो कर, उस की अनुदारता का ही परिणाम है. यदि यहां जातिपांति न होती, यदि केवल क्षत्रियों पर देशरक्षा का भार न होता, यदि बहुसंख्यक लोगों को शस्त्र... से रोक कर नपुंसक न बनाया गया होता ... शायद भारत का इतिहास ऐसा न ... क्षत्रियों के राज्यों का कम होना इस बात ... सूचक है कि वे अकेले राज्य के कायित... यह जातिपांति के सिद्धांत के मुंह ... इतिहास की चपत है.

ब्राह्मणों का राजा बनना उचित ... था, प्रायः सब हिंदू राजाओं में महा... मंत्री, परामर्शदाता ब्राह्मण थे. वे ... शस्त्रविद्या के जो कि धनुर्वेद थी, सर्व... ज्ञाता माने जाते थे, क्योंकि पढ़ाने का ... था ही उन का. अतः सेनापति भी प्रा... ब्राह्मण होता था. सत्ता के इतने निकट ... पर उन्हें राजा बनने से कौन रोक सकता ... ब्राह्मण पुष्यमित्र शुंग ने राजा वृहद्रथ ... कत्ल कर राज्य हथिया लिया. फिर धर्म... का कहना है कि धर्म की रक्षा के लि... आपत्काल में ब्राह्मण क्षत्रिय के कर्म ... अपना सकता है. आजीवंस्तु यथो... ब्राह्मणः स्वेन कर्मणा, जीवेत् क्षत्रिय धर्म... सहयस्य प्रत्यनन्तरः (मनु. 10/81).

अर्थात ब्राह्मण यदि अपनी जाति... कर्म से जीवन निर्वाह न कर सके तो क्षत्रि... का कर्म करता हुआ जीवन निर्वाह क...

मुख्यतः विदेशी व उन के वंश... अथवा अनार्य भारत के इतिहास पर छा... रहे. वे न तो खुद हिंदुओं की जातिपांति ... विश्वास करते थे, न उन में क्षत्रिय, शू... आदि थे और न ही उन्हें इस बात की परवा... थी कि हिंदू धर्मग्रंथ किस के राजा बनने ... विधान करते हैं और किस का निषेध. अ... यदि पिछले दो हजार वर्षों के इतिहास ... क्षत्रिय कहींकहीं दिखाई देते हैं तो इस ... मतलब यह नहीं कि उन्होंने या हिंदू धर्म ... उदार हो कर शूद्रों को राज्य सौंप दि... बल्कि यह है कि जातिपांति के मुताबिक ... केवल एक जाति को देशरक्षा का काम सौंपने ... से न देश की रक्षा हो सकती है, न ... अकेली जाति विदेशी आक्रमणकारियों का ... सामना कर सकती है और न उस एक जा... का प्रभुत्व अक्षुण्ण रह सकता है.

दवा खरीदने से पहले सोचिए

लक्षण बता कर दवा विक्रेता से दवा खरीद कर आप डाक्टरों व हस्पतालों के चक्कर से तो बच जाते हैं, पर साथ ही एक नई मुसीबत भी मोल ले लेते हैं.

लेख • डा. आलोक जैन



अभी कुछ ही दिन की बात है. एक मित्र अपने पांच वर्षीय पुत्र को ले कर लेखक के पास आए. उन के पुत्र को खांसी के साथसाथ बुखार भी था. पूछने पर उन्होंने बताया कि उन के पुत्र को पांचछः दिनों से खांसी चल रही है.

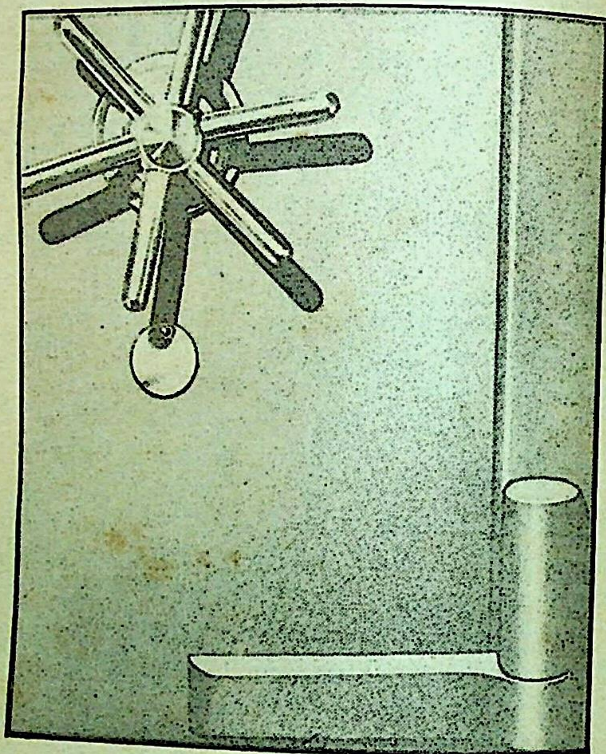
"पांचछः दिनों से खांसी है और तुम अब तक क्या कर रहे थे? मुझे पहले क्यों नहीं बताया? कोई दवाई वगैरह क्यों नहीं की?"

"अरे भाई, तुम तो जानते हो कि दुकान से समय नहीं निकाल पाता, पड़ोस में ही दवाई वाले की दुकान है. उसी से पूछ कर एक दवा पिला रहे थे. शुरू में तो काफी आराम रहा. लेकिन कल से काफी तेज बुखार भी है."

जांच करने पर पता चला कि उन के पुत्र को निमोनिया हो गया है. जो बीमारी मामूली सर्दीखांसी के रूप में प्रारंभ हुई थी, वही बढ़ कर निमोनिया का रूप धारण कर चुकी थी. उन के पड़ोसी दवा विक्रेता ने भी अपनी समझ से खांसी की दवा उन को दे दी थी. उस दवा से शुरू में खांसी के लक्षण जरूर कम हो गए, मगर रोग की जड़ें गहरी होती गईं. कहां वह सज्जन एकाध घंटे का समय बचाने के चक्कर में थे और कहां उस बच्चे को हस्पताल में भरती करवा कर हफ्तों वहां के चक्कर लगाते रहे. अगर वह शुरू से ही सही जगह पहुंच जाते तो रोग इतना ज्यादा बढ़ता ही नहीं.

मुशकिल यह है कि हमारे देश में अभी भी दवा विक्रेताओं द्वारा डाक्टर के नुसखे के बिना स्वयं ही दवा दे देने की प्रथा काफी प्रचलित है. यह न केवल कानून के विरुद्ध है

आप अपने भविष्य को सुरक्षित बनाना चाहेंगे या संयोग पर छोड़ेंगे?



सरकारी क्षेत्र के बैंको में अपनी बचत जमा करने से आपका धन सुरक्षित रहता है. और जरूरत पडने पर आप इसका इस्तेमाल भी कर सकते है.

सुरक्षा के अलावा और भी बहुत से फायदे है. बाजार के उतार चढ़ाव का आपके धन की बढोतरी पर असर नहीं पडता.

सुरक्षा के साथ अन्यलाभ. आवश्यकता पडने पर धन भी उपलब्ध. आप चाहे जिस तरह देखें बैंक में धन जमा करना निश्चय ही अधिक लाभकारी है.

आपका धन तो बैंक में ही होना चाहिए.

बैंक में धन जमा करने से आपको अनेक लाभ है.

धन की बढोतरी सुनिश्चित होती है. यद्यपि कुछ.विशिष्ट योजनाओं में ब्याज की दर 11 प्रतिशत हो सकती है किन्तु आपको वस्तुतः 19.6 प्रतिशत की बढोतरी प्राप्त होती है.

इससे आपको टैक्स में भी छूट मिलती है 6000 रुपये तक ब्याज की आय कर मुक्त है.

आपके लिये अन्य अनेक प्रकार की सेवायें और सुविधायें भी सुलभ है.

अपने सबसे नजदीक के किसी भी सरकारी क्षेत्र के बैंक में पधारें. उनके पास आपके लिये अनेक योजनायें है— जानकारी प्राप्त करें.



ज्वॉइण्ट पब्लिसिटी कमिटी पब्लिक सैक्टर बैंक्स

सरकारी क्षेत्र के बैंक

-हर दिन, हर जगह सबके जीवन में नया विश्वास जगा रहे हैं.

Imageads-JPC-82369 HIN

बल्कि खतरनाक भी है. कुछ लोग शायद डाक्टरों एवं हस्पताल के चक्कर में पड़ने से बचने के लिए ही दवा विक्रेता से सीधे ही लक्षण बता कर दवा ले लेते हैं. इस तरह शायद वे डाक्टर की फीस अथवा हस्पताल की भीड़ से तो बच जाते हैं, परंतु उस से भी बड़े किन चक्करों में फंस सकते हैं, इस का उन्हें उस वक्त अंदाजा नहीं हो पाता.

दवा विक्रेता चिकित्सक नहीं

एक सज्जन के सिर में अकसर दर्द होता था. जब पहली बार उन के सिर में दर्द हुआ तो उन्होंने पास के दवा विक्रेता से सिरदर्द की दवा मांगी. दवा विक्रेता ने उन्हें जो दवा दी, उस से उन्हें आराम मिल गया. इस के पश्चात उन्हें जब भी सिर में दर्द होता था, वह वही दवा ले लेते. कुछ दिन बाद उन्हें सिरदर्द के साथसाथ उलटी भी होने लगी. उन्होंने फिर उसी दवा विक्रेता से पूछ कर उलटी के लिए भी कोई दवाई का सेवन प्रारंभ कर दिया. आखिर में जब दशा काफी गंभीर हो गई, तब उन्होंने डाक्टर से परामर्श किया.

जांच करने पर मालूम हुआ कि उन के दिमाग में कैंसर (ब्रेन ट्यूमर) हो गया है. इलाज में देर हो जाने के कारण वह कैंसर आपरेशन तथा अन्य इलाज की स्थिति से काफी आगे निकल चुका था. सिर में दर्द तथा उलटी की शिकायत उन्हें इसी कारणवश हुआ करती थी. सिर में दर्द होना शुरू हुआ था, तभी वह दवा विक्रेता के पास न जा कर अगर किसी योग्य एवं अनुभवी चिकित्सक से परामर्श लेते तो शायद उन्हें इस स्थिति का सामना न करना पड़ता.

दवा विक्रेता कोई चिकित्सक नहीं है और न ही वह किसी चिकित्सक का विकल्प हो सकता है. उसे दवाइयों के नाम और दाम का तो ज्ञान है, लेकिन वह इन के बारे में इस के आगे और कुछ नहीं जानता. किस दवा से क्या नुकसान होने की संभावना रहती है या किस दवा का सेवन करते वक्त कौन सी विशेष सावधानियां बरतना आवश्यक हैं अथवा किसी खास लक्षण के पीछे कौन सा भयानक रोग छिपा हो सकता है, इस से वह दवा विक्रेता सर्वथा अनभिज्ञ है. वह आप को केवल एक खरीदार के रूप में देखता है.

आप का डाक्टर आप को एक खरीदार के रूप में नहीं, बल्कि एक मनुष्य, एक रोगी के रूप में देखता है. आप के शरीर की सभी क्रियाओं से वह भली भांति परिचित है. तथा किस लक्षण के पीछे कौन सा रोग छिपा हो सकता है, इस का भी उसे ज्ञान है. आप का डाक्टर आप को जो भी दवाई देता है, उस पर उसे पूरा भरोसा रहता है. क्योंकि वही दवाई आप का डाक्टर अन्य कई रोगियों को दे चुका होता है तथा उस दवा के गुणों, अवगुणों, क्रियाओं तथा किस उम्र के व्यक्ति को, किस दशा में कितनी मात्रा में दवा का सेवन करना है आदि सभी बातों से वह परिचित होता है.

एक बार एक रोगी की जांच कर के लेखक ने उसे दवाएं लिख दीं तथा एक हफ्ते बाद पुनः दिखाने को कहा. एक हफ्ते बाद जब वह आए तो बोले, "डाक्टर साहब, दवाएं तो मैं बराबर ले रहा हूं, लेकिन कोई विशेष फायदा नहीं हो रहा है." लेखक ने उन की दोबारा जांच की. लेखक को पूरा भरोसा था कि उस का निदान सही था तथा उस रोग के लिए जो दवाएं उस ने लिखी थीं, वे काफी असरदार थीं. जब लेखक ने उन से दवाएं ला कर दिखाने को कहा तब मालूम हुआ कि उन्होंने किसी और कंपनी की दवाएं खरीद रखी थीं. पूछने पर वह बोले, "डाक्टर साहब, आप की परची ले कर विक्रेता के पास गया तो वह बोला कि इस में लिखी दवाएं तो उस के पास नहीं हैं, लेकिन दूसरी कंपनी की बिलकुल यही दवाएं उस के पास हैं, जिस के दाम भी कुछ कम हैं. सो मैं ने वही ले ली."

दरअसल जो दवाएं वह रोगी ले आया था, वे निहायत ही घटिया कंपनी की थीं. तथा एकदम निकृष्ट थीं. लेकिन उस कंपनी से दवा विक्रेता को काफी ज्यादा कमीशन मिलता था. जब कि अच्छी कंपनियां उस को

उतना ज्यादा कमीशन नहीं दे सकती थीं. इसी लिए वह दवा विक्रेता अच्छी कंपनी की दवाएं उपलब्ध होने पर भी उन की जगह निकृष्ट कंपनी की दवाएं बेचने में ज्यादा रुचि लेता था. इस के पश्चात उस रोगी ने सही दवाएं खरीदीं तथा तीन दिन में ही उसे दोनों के बीच में फर्क महसूस हो गया.

दवा विक्रेता के सुझाव पर कभी भी कोई दूसरी दवाएं नहीं खरीदनी चाहिए. यदि आप के डाक्टर द्वारा लिखी गई खास दवा नहीं मिल पा रही है अथवा बाजार में उपलब्ध नहीं है तो अपने डाक्टर से पूछ कर ही अथवा डाक्टर को दिखा कर ही कोई दूसरी दवा इस्तेमाल करें. आप का डाक्टर आप को जो भी दवाई लिख कर देता है, उस के पीछे कोई विशेष कारण रहता है. उस दवाई के बदले में कोई और दवा दी जा सकती है अथवा नहीं, यह आप के डाक्टर से ज्यादा अच्छी तरह और कोई नहीं जान सकता.

एक महिला सर्दीजुकाम से पीड़ित अपनी छोटी बच्ची को ले कर आई. परची पर अन्य दवाओं के साथ एरिथ्रोमाइसिन नामक दवा भी लिखी गई. लेकिन उस महिला के घर पर एक शीशी टेट्रासाइक्लीन की रखी थी, जिसे वह कुछ समय पहले अपने बड़े बच्चे के लिए लाई थी. अपने विवेक के अनुसार उस ने वही दवाई अपनी छोटी बच्ची को भी दे दी. इस तरह उसे बड़ा फख्र महसूस हुआ कि उस ने कुछ रुपयों की बचत कर ली. लेकिन उस से सर्दीजुकाम दूर होना तो एक तरफ, उलटे बच्ची को दस्त लग गए और नौबत हस्पताल में भरती कर के सेलाइन की बोतल लगाने तक आ गई. इस तरह कुछ रुपए बचाने के चक्कर में उस महिला ने मुसीबत मोल ले ली. अब तो वह महिला बिना डाक्टर को दिखाए कोई भी दवा इस्तेमाल नहीं करती.

आप जब भी डाक्टर की लिखी हुई दवाएं बाजार से खरीदें तो यह सुनिश्चित कर लें कि आप सही दवाई ही खरीद रहे हैं. आजकल बहुत ही नकली दवाइयां भी बाजार में बिकती हैं. कई कंपनियां प्रचलित दवाओं के नामों से मिलतेजुलते नामों की दवाइयां बना कर उसी तरह की पैकिंग कर के बेचने लगे हैं. इन दवाओं को पहली नजर में देख कर धोखा होना स्वाभाविक है. आप जरा सी असावधानी से दूसरी दवा खरीद कर मुशकिल में पड़ सकते हैं.

इस के अलावा कोई भी दवा खरीदने से पहले यह अवश्य देख लें कि शीशी या डब्बे पर उस दवा का असर कब समाप्त होने की तारीख लिखी है. जो भी दवा खरीदें, उस की रसीद अवश्य प्राप्त कर लें ताकि कीमत में फर्क होने पर अथवा दवा के नकली या गलत होने की दशा में आप के पास इस बात का सबूत रहे कि आप ने उसी दवा विक्रेता के यहां से दवा खरीदी है. दवा के बारे में जरा भी शक होने पर अपने डाक्टर को अवश्य ही दिखा कर संतोष कर लें. ●

वेदों में क्या है?

अंगरेजों के जमाने से पहले वेदों का पठनपाठन केवल सवर्णों तक सीमित था और वहां ब्राह्मणों का एकाधिकार था क्योंकि संस्कृत का पठनपाठन केवल ब्राह्मणों तक ही सीमित था. शूद्रों के लिएं तो वेद सर्वथा निषिद्ध था—गौतम स्मृति के अनुसार यदि किसी शूद्र के कान में वेद का एक भी शब्द पड़ जाए तो उस के कान में पिघला सीसा भर देना चाहिए. पुरोहित व राज्य वर्ग के स्वार्थ साधन के लिए वेदों के मनमाने अर्थ कर के अनेक भ्रांतियां फैला दी गईं कि वेदों में सभी विद्याएं और संसार का समस्त ज्ञानविज्ञान मौजूद है. यहां तक कि जब पश्चिम में एटम बम और राकेट का आविष्कार हुआ तो दावा किया जाने लगा कि इन के फार्मूले तो वेदों में पहले ही से मौजूद थे.

जनसाधारण को वेदों के विषय में सही जानकारी देने के लिए सरिता में इस स्तंभ में हर बार ऋग्वेद के एक सूत्र का (सायण भाष्य पर आधारित) अविकल अनुवाद (अनुवादक डा. गंगासहाय शर्मा, एम.ए. (हिंदीसंस्कृत), पीएच.डी., व्याकरणाचार्य) प्रकाशित किया जा रहा है.

प्रथम मंडल

सूक्त-७७ देवता——अग्नि

मरणरहित, सत्ययुक्त, देवों के आह्वान करने वाले, यज्ञ पूर्ण कराने वाले एवं मनुष्यों के बीच निवास कर के भी देवों को हवियुक्त करने वाले अग्नि के अनुरूप हव्य हम कैसे दे सकेंगे? तेजस्वी अग्नि के प्रति देवोचित स्तुति किस प्रकार करेंगे. (१)

हे यजमानो! जो अग्नि यज्ञों में अतिशय सुखकारी यथार्थदर्शी और देवों का आह्वान करने वाले हैं, उन्हें स्तुतियों द्वारा हमारे अभिमुख करो. जिस समय अग्नि यजमान के निमित्त देवों के समीप जाते हैं, उस समय वह यज्ञपात्र देवों को जान कर मन से उन की पूजा करते हैं. (२)

देवों की अभिलाषा करने वाली प्रजाएं यज्ञकर्ता, विश्वसंहारक, उत्पादनकर्ता, मित्र के समान अप्राप्त धन के प्राप्त कराने वाले एवं दर्शनीय अग्नि के समीप जा कर उन्हें यज्ञ का प्रधान देव मानतीं एवं उन की स्तुति करती हैं. (३)

यज्ञ के नेताओं के मध्य अतिशय नेता एवं शत्रुओं के भक्षणकर्ता अग्नि हमारी स्तुतियों एवं हव्य से युक्त यज्ञ की कामना करें जो धनी और शक्तिशाली यजमान हव्य प्रदान कर के अग्नि के मननीय स्तोत्र को करना चाहते हैं, अग्नि भी उन की स्तुति की कामना करें. (४)

यज्ञ के स्वामी एवं सर्वज्ञाता अग्नि की गौतम आदि ऋषियों ने इसी प्रकार स्तुति की थी. अग्नि ने प्रसन्न हो कर उन ऋषियों का तेजस्वी सोम पिया था एवं अन्न भक्षण किया था. वह अग्नि हमारे द्वारा दिए हव्य को जान कर पुष्ट होते हैं. (५)

माइंड मत कीजिएगा

व्यंग्य • अजय शर्मा



महिलाओं की सभा हो और उस में हंगामा न हो, यह सरासर अविश्वसनीय बात है. कोई भी शख्स बिना हंगामे वाली महिला सभा की कल्पना नहीं कर सकता.

नेपोलियन का कहना था कि उस के शब्द कोश में 'असंभव' शब्द का कोई स्थान नहीं है, क्योंकि वह पुरुष था. अगर उस ने नारी जाति में जन्म लिया होता तो उस के शब्द कोश में लगभग प्रत्येक शब्द के आगे एक शब्द 'असंभव' भी अवश्य जुड़ा होता. महिला सभा में हंगामे के न होने की असंभावना का खयाल कर के महिलाओं ने दोनों शब्दों को एकदूसरे का पर्याय बना रखा है.

कुल मिला कर भारतीय फिल्मों में जितने क्लाइमेक्स सीन नजर आते हैं, महिला सभा उन सब से कहीं ज्यादा क्लाइमेक्स लिए हुए होती है.

दिखावा, भाषणबाजी, फैशन के नएनए आयाम, छींटाकशी, वाक युद्ध और फिर करुणा से भरपूर अत्यंत मार्मिक अंत– इन सब कार्यक्रमों में वाक युद्ध की छटा सब से निराली होती है. यह महिला सभा का सब से रोचक एवं रोमांचक कार्यक्रम समझा जाता है. महज यही एक ऐसा कार्यक्रम है जिस में महिलाएं अपने पूर्ण भाषा ज्ञान के साथ जोरशोर से भाग लेती हैं.

और फिर उन के भाषा ज्ञान के क्या कहने. पूरबपश्चिम एकता की प्रतीक उन की भाषा जहां बिना घी की खिचड़ी की तरह बेस्वाद लगती है, वहीं किसी फिल्मी गाने की पैरोडी की तरह मनोरंजक. हिंदीइंगलिश का इतना खूबसूरत मेल शायद ही किसी साहित्यकार की कलम से हो पाया हो, जितना हमारे देश की प्रतिभाशाली महिलाएं किया करती हैं.

हालांकि पुरुष होने के नाते मैं कभी महिला सभा में भाग नहीं ले पाया, मगर चूंकि मेरी श्रीमतीजी लड़ाईझगड़े के बाद बची वाक निरंतरता का प्रयोग इसी विषय पर करती हैं, अतः मैं भी इस बारे में थोड़ीबहुत जानकारी रखता हूं.

अगर पुरुष जाति होने के कारण आप भी कभी किसी महिला सभा में भाग नहीं ले पाए तो गम की कोई बात नहीं. हम आप के सामने अपनी श्रीमतीजी द्वारा सुनाई गई



दिखावा, भाषणबाजी, फैशन के नएनए आयाम, छींटाकशी, वाक्‌युद्ध और फिर करुणा से भरपूर मार्मिक अंत— सचमुच महिला सभा का कार्यक्रम रोचक एवं रोमांचक था.



एक महिला सभा के आदि से अंत तक हुए रोचक कार्यक्रम का खुलासा पेश कर रहे हैं.

खुलासा चूंकि मेरी श्रीमतीजी द्वारा पेश किया गया है, इसलिए थोड़ा नमकमिर्च मिला होना स्वाभाविक है.. अतः स्वयं मेरी श्रीमतीजी के शब्दों में 'माइंड मत कीजिएगा.'

हां तो साहब अब हम आप को एक महिला सभा में लिए चलते हैं. उस दिन 26 जनवरी अर्थात गणतंत्र दिवस था. हमारे शहर की कुछ प्रमुख महिलाओं ने शहर के प्रमुख उद्योगपति रामचंद्र भगवानदास ढोलकिया का घर सभा के लिए चुना था. सभा का वक्त रखा गया था सुबह के ठीक नौ बजे, पर इस वक्त सुबह के लगभग साढ़े दस बज रहे थे और अभी तक किसी भी आमंत्रित महिला के कदम सभागृह में नहीं पड़े थे.

ढोलकियाजी की पत्नी के मन में उथलपुथल मची हुई थी. बारबार वह बैठक से बरामदे के और बरामदे से बैठक के चक्कर लगा रही थीं.

ठीक 11 बजे पहली महिला के कदम पड़े. आगंतुका थीं श्रीमती रमा. उन के आते ही श्रीमती ढोलकिया ने अत्यंत शिकायती लहजे में कहा, "इलेवन ओ क्लोक हो गए हैं और आप अब आई हैं."

"ओह, आइ एम वेरी सारी," श्रीमती रमा ने क्षमा याचना के साथ सफाई प्रस्तुत की, "एक्चुली में मेरे हस्बैंड दफ्तर जाने में जरा लेट हो गए, सो मुझे भी मजबूरन लेट होना पड़ा."

ठीक सवा ग्यारह बजे बाकी महिलाओं ने लगभग एक साथ प्रवेश किया. श्रीमती ढोलकिया ने फिर शिकायत दोहराई. बारीबारी से हर एक की सफाई सुनने के बाद उन्होंने सिर हिलाते हुए सहज भाव से


LUNA
TFR PLUS


कभी लूना के बल पर बड़ी तेज़ी से कुछ भी कर डालने का सोचा था!


मेरी दीदी दफ़्तर में काम करती हैं और उन्हें ठीक समय पर पहुँचना पड़ता है।
शुक्र है, अब मुझे कभी लेट मार्क नहीं मिलता।


सब्ज़ी मंडी चलो।
मेरी पड़ोसिन को अपनी भरी घर-गृहस्थी देखने के लिए काफ़ी शॉपिंग करनी पड़ती है।
आजकल रोज़ गाड़ी-वाड़ी में जाना-आना बहुत भारी पड़ता है।


इसी लिए अब उसने लूना ले लिया है, जिस से पैसा भी बचता है और समय भी।


सो, मेरे डैडी ने भी मुझे कॉलेज जाने के लिए लूना ले दिया। अब मुझे बस की लाइन में समय बरबाद नहीं करना पड़ता और मैं लाइब्रेरी में ज़्यादा समय बिताती हूँ।



कहा, "खैर, कोई बात नहीं, मैं ने माइंड नहीं किया." इस के बाद उन्होंने नौकर को आवाज लगाई, "रामनारायण, प्लीज कम हियर सून."

"एस, बाईजी."

आगंतुक महिलाओं के मस्तिष्क में बिजली सी कौंधी, सर्वेंट... और इंगलिश बोलने वाला. तुरंत सभी ने मन ही मन निश्चय किया कि वे भी घर जा कर अपनेअपने सर्वेंट को इंगलिश का कोई कोर्स थमा कर उन्हें इंगलिश में ट्रेंड करेंगी.

"तुरंत जाओ और ब्रेकफास्ट ले कर आओ, सून... सून."

"ओके, बाईजी," रामनारायण ने तत्परता से कहा और अंदर चला गया.

इस के बाद जब तक नाश्ता आता, नारियों की स्वतंत्रता के बारे में बातचीत छिड़ी. इस दौरान पुरुषों को विभिन्न किस्म की उपाधियां प्रदान की गईं. फिर नाश्ते का आदानप्रदान हुआ और उस के बाद काफी का दौर चला. श्रीमती कसबेकर ने काफी का मग हाथ में लिए हुए सोफे की तरफ नजरें घुमाईं और फिर प्रभावित स्वर में बोल उठीं, "कहां से बनवाया है यह सोफा?"

"मैडरास से," श्रीमती ढोलकिया इस तरह तपाक से बोल उठीं मानो वह इस तरह के ही किसी प्रश्न का इंतजार कर रही हों, "प्योर अखरोट्स वुड का है."

"अच्छा!" श्रीमती शकुंतला ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए पूछा, "कितने रुपए में बना?"

"ओनली फाइव हजार का," श्रीमती ढोलकिया ने चारों तरफ बैठी महिलाओं के चेहरे की ओर देखते हुए हलकी सी मुसकराहट के साथ उत्तर दिया. दूसरी तरफ श्रीमती संतोष श्रीमती मर्जबान से कह रही थीं, "आजकल फैशन इतना बढ़ता जा रहा है कि मेरी जूलियट ओनली मिडी स्कीवी के और कुछ पहनती ही नहीं, नेवर."

"जूलियट!" श्रीमती मर्जबान ने हैरानी से पूछा, "मगर आप तो हिंदुस्तानी हैं न?"

"एस, आय एम इंडियन बट इंडियन नेम हमें सूट नहीं करते. आखिर रखा क्या है इंडियन नेमों में?"



उधर श्रीमती ढोलकिया सोफे की बड़ाई के बाद अब अपनी 17 सौ रुपए कीमत की विदेशी कलाई घड़ी की तारीफ कर गौरवान्वित हो रही थीं.

श्रीमती सरस्वती जिन का हृदय सोफे की कीमत सुनते ही अपनी साड़ी की कीमत सुनाने को आतुर हो रहा था, काफी देर से अपनेआप को संयत किए हुए थीं. मगर जैसे ही उन्होंने श्रीमती ढोलकिया को सोफा सेट से इंपोर्टेड रिस्ट वाच तक पहुंचते देखा तो उन के सब्र का प्याला छलक गया. वह तुरंत उठ खड़ी हुईं और अपनी साड़ी के आंचल को लगभग हवा में उछालती हुई बोलीं, "अच्छी चीजों के रेट्स भी हाई ही होते हैं, अब देखिए न मेरी इस साड़ी को, इंपोर्टेड है पूरे टू थाऊ... पूरे दो हजार की मिली."

"कहां की है यह?" श्रीमती रत्ना ने उत्सुकता दर्शाते हुए पूछा.

"जापान की." उत्तर देने के साथ श्रीमती सरस्वती ने पूर्णतया संतोष का अनुभव करते हुए अपनी गर्व भरी निगाहें सब के चेहरे पर फिराईं. श्रीमती ढोलकिया को ऐसा महसूस हुआ मानो उन के सम्मान में हिस्सा बंटाने के लिए उन की कोई सौत आ कर खड़ी हो गई हो. उन्होंने तुरंत ऐक्शन लिया और अपने जापानी टेपरिकार्डर की ओर इशारा करते हुए कहा, "हां... हां, यह रियल बात है, अब देखिए न इस टेपरिकार्डर को. पूरे साढ़े सेवन हजार का मिला. मेड इन जापान है यह."

इस पर श्रीमती सरस्वती ने मानो अपनी इनसल्ट महसूस की. उन्हें लगा कि उन्होंने साड़ी की कीमत के प्रति अपनी कल्पना शक्ति दौड़ाने में काफी कसर बाकी रहने दी है. अतः उन्होंने तुरंत अपना रांग स्टेटमेंट सुधारा.

"एक्चुली इंपोर्टेड मैटर मिलता भी काफी हाई रेट पर है. अभी कुछ ही दिन



"ओ यू शटअप. मेरे फादर का नाम टॉकिंग के बीच मत लाओ," श्रीमती सरस्वती सारी शक्ति बटोर कर चिल्लाईं. ▲

पहले मेरे वह वीडियो का आर्डर दे कर आए हैं. पूरे 55 हजार का है."

"क्या!" अब बात श्रीमती ढोलकिया की सहनशक्ति के बाहर थी. मगर कुछ क्षणों तक वह अपनेआप को संयत कर के बैठक में रखी हुई विभिन्न वस्तुओं पर अत्यंत बेचैन भाव से नजर घुमाती रहीं, लेकिन जब कोई भी वस्तु उन्हें इंपोर्टेड स्तर की नहीं दिखी तो वह सारी सभ्यता और मेजबानी को एक तरफ पटकते हुए जोरों से चिल्लाईं, "वीडियो! तेरे बाप ने भी कभी देखा है? बड़ी आई... 55 हजार का, उंह."

कुछ क्षणों तक तो श्रीमती सरस्वती सारा दिखावा भूल कर श्रीमती ढोलकिया का चेहरा ताकती रह गईं. फिर एकाएक वह भी सारी शक्ति बटोर कर चिल्लाईं, "ओ यू शटअप. मेरे फादर का नाम टॉकिंग के बीच मत लाओ."

"ओह यू ब्लडी इंपेटिड..." श्रीमती ढोलकिया चीखीं.

"ब्लडी भिखमंगी," श्रीमती सरस्वती चीखीं.

और इसी के साथ सभागृह युद्धगृह में परिवर्तित हो गया. कुछ देर तक अन्य महिलाओं ने प्रफुल्लित हृदय से वाक युद्ध का नजारा देखने के बाद बीचबचाव करना उचित समझा. काफी देर के बाद बीचबचाव कराया जा सका. बीचबचाव होने के तुरंत बाद ही युद्ध में भाग लेने वाली दोनों महिलाओं के करुण रुदन ने सभागृह को लगभग इमोशनल बना दिया. और फिर इसी के साथ सभा समाप्ति की घोषणा कर दी गई.

मेरी श्रीमतीजी के कथनानुसार इन सारे कार्यक्रमों के दौरान वह शराफत से बैठी हुई नजारा देख रही थीं, जब कि मेरी निगाह में उन का यह कृत्य नामुमकिन ही नहीं, सरासर नामुमकिन है.

मेरा खयाल है, उपर्युक्त जानकारी के बाद इस विषय में आप का सामान्य ज्ञान अवश्य वृद्धि कर गया होगा. कम से कम अब आप इस विषय में अनभिज्ञ नहीं रहे होंगे. और अगर कुछ ज्यादा ही जानकारी की इच्छा हो तो गृहयुद्ध के तुरंत बाद अपनीअपनी श्रीमतीजी को इस विषय में भड़काइए, उकसाइए और उस के बाद नजारा देखिए.

महिला सभा के बारे में आप को ऐसीऐसी जानकारियां हाथ लगेंगी कि आप को अपने छक्के छूटते नजर आएंगे. ●

बच्चों के मुख से



एक शाम मैं, मेरा मित्र एवं उस की भांजी सड़क पर जा रहे थे. मैं अपने मित्र को एक घटना सुना रहा था कि तभी सामने से कुछ लड़कियां आती दिखाई दीं.

मेरे मित्र ने मजाक में अपनी भांजी से कहा, "गुड्डी, उन में अपनी मामी पसंद कर ले."

उस समय तो बच्ची ने कुछ नहीं कहा, लेकिन घर लौटने पर जब उस की मां ने उस से पूछा कि कहां घूम आई? तब उस ने बड़े भोलेपन से जवाब दिया, "मांजी, हम तो मामी पसंद करने गए थे."

अब तो मेरे मित्र का चेहरा देखने लायक था. —वृजेशकुमार त्यागी

(सर्वश्रेष्ठ)

*

मेरा चार वर्षीय भाई बहुत नटखट है. एक दिन मेरे पिताजी घर में बालूशाही लाए. उस को वह बहुत अच्छी लगी.

थोड़ी देर बाद हम ने देखा कि वह लान के कोने में पड़े बालू के ढेर में बड़े गौर से कुछ देख रहा है और पास में स्याही की दवात खाली पड़ी है.

पिताजी ने उस के पास जा कर पूछा तो वह सहम कर धीरे से बोला, "पिताजी, मैं ने बालू में स्याही भी मिला दी, फिर भी बालूशाही नहीं बनी. क्यों नहीं बनी, पिताजी?" —शीतांशु भटनागर

*

गत वर्ष बरेली में हलका भूकंप आया. उस से अगले दिन इसी विषय पर बातचीत चल रही थी. तभी हमारी चाचीजी आ गईं जो काफी मोटी हैं. हमारी बातें सुन कर वह बोलीं, "मुझे तो भूकंप का पता ही नहीं चला."

यह सुन कर हमारा छोटा भाई तपाक से बोला, "आप को कैसे पता चलता? आप के वजन से तो आसपास की जमीन हिली ही नहीं होगी." —संजय वार्ष्णेय

*

मेरी सहेली का आठ वर्षीय पुत्र सूरज बहुत हाजिरजवाब है. उस की हिंदी की परीक्षा थी, इसलिए उस की मां ने उस से बैठ कर पढ़ने को कहा. वह बोला, "मुझे सब आता है."

लेकिन मेरी सहेली उसे रोक कर हिंदी के कठिन शब्दों के अर्थ पूछने लगी. उस ने पूछा, "'अद्भुत' शब्द का अर्थ क्या होता है?"

सूरज ने चट जवाब दिया, "आधा आदमी, आधा भूत." —राजेश्वरी शर्मा

*

बुधवार नाम के एक डाक्टर मेरे पड़ोस में रहते हैं. एक बार मैं अपनी पांच वर्षीया भतीजी के साथ उन की दुकान पर गया.

अचानक उन के फोन की घंटी बजी. उन्होंने फोन उठा कर कहा, "बुधवार."

मेरी भतीजी बोली, "डाक्टर साहब, आज बुधवार नहीं मंगलवार है."

यह सुन कर वहां बैठे सभी लोग अपनी हंसी न रोक सके." —कमलकुमार सिंघल •

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 30 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 60 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

सदुपयोग

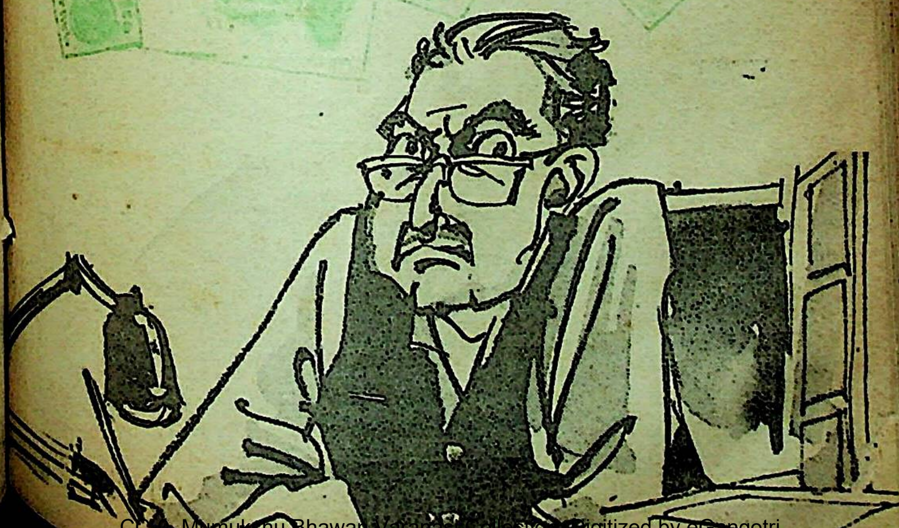
कहानी • आलोक सक्सेना

डोरोथी ने अपने पति सैम्युअल की ओर उत्सुकता भरी नजरों से देखते हुए पूछा, "कोई पत्र आया था?"

जवाब में सैम्युअल ने अपने कंधे उचकाए और 'नहीं' की मुद्रा में सिर हिलाता हुआ अंदर चला गया. डोरोथी निराश हो गई. पिछले एक माह से वह रोज इसी तरह निराश हो रही थी. उस ने अपने पति से कह रखा था कि वह दफ्तर से लौटते समय उस के पत्र के संबंध में पूछता आया करे, लेकिन अभी तक उसे निराशा ही मिली थी. उस का पत्र आज तक नहीं आया था.

डोरोथी और सैम्युअल स्वीडन के धनी परिवारों में से थे. बहुधंधी सैम्युअल के पास अपार धनसंपदा थी, परंतु उसे एक पहाड़ जैसा दुख भी था. उस की एक मात्र संतान– पुत्री– जन्म से ही अपंग थी. डोरोथी और सैम्युअल दोनों ही उम्र के उस मोड़ पर पहुंच गए थे, जहां उन्हें और संतान के होने की उम्मीद नहीं थी. डोरोथी हर रोज सुबह अपनी अपंग पुत्री को देखने विकलांग सदन जाती और वहां से लौट कर पढ़ने में डूब जाती. देशविदेश के समाचार, सूचनाएं,

स्वीडन के एक दंपती अपना सारा धन भारत में रह रहे अपंगों को दान में देना चाहते थे. मगर यहां के सरकारी कर्मचारियों ने ऐसे रोड़े अटकाए कि उन्हें अपना फैसला बदलना पड़ गया.



वर्णन इत्यादि पढ़ने के अलावा उस का न कोई शौक था, न कोई मित्र.

अपने इसी पढ़ने के शौक के कारण उसे भारत के अपंग बच्चों के संबंध में मालूम पड़ा. किसी पत्रिका ने भारत के अपंग बच्चों के संबंध में सर्वेक्षण करवाया था और उस की विस्तृत रिपोर्ट छपी थी. भारत के अपंग बच्चों के विवरण को पढ़ कर डोरोथी बहुत दुखी हुई थी. अपनी पुत्री के कारण वह यों भी बहुत भावुक हो गई थी. उस विवरण को पढ़ने के बाद डोरोथी ने कई दिनों तक चुपचाप सोचते रहने के बाद एक दिन अपने पति से कहा, "सैम्युअल, तुम्हें मालूम है न, मेरे ग्रीनकाफ कारपोरेशन के शेयर बेचने के बाद मुझे कुछ पैसा मिला था, जो मैं ने अलग बैंक में डाल रखा है?"

"हां, डोरोथी, पर आज अचानक ही उस की याद कैसे आ गई?"

"मैं अपने उस धन को भारत के अपंग बच्चों को देना चाहती हूं. उस पैसे से उन के लिए वहां कुछ किया जा सके, यह मेरी इच्छा है."

सैम्युअल ने एक क्षण सोचा और कहा, "जरूर. इस के लिए तुम्हें अपने यहां के भारतीय दूतावास को लिखना चाहिए."

डोरोथी ने भारतीय दूतावास को एक पत्र लिखा और उसी दिन से वह अपने पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा कर रही थी.

डोरोथी का वह पत्र कई दिनों से भारतीय सचिवालय में पड़ा हुआ था. महीने भर बाद फाइल में दबा वह पत्र अवर सचिव की मेज पर पहुंचा तो उसे पढ़ कर उन के माथे पर बल पड़ गए. उन्होंने फौरन संबंधित बाबू को बुलवा कर कहा, "यह क्या है?"

"साहब, स्वीडन की डोरोथी नामक एक महिला हमारे यहां के अपंग बच्चों के लिए बीस लाख क्रोना (स्वीडन की मुद्रा) देना चाहती है."

"तो इस में मुशकिल क्या है?"

"साहब, न मालूम कैसे इस धन का उपयोग किया जाना निश्चित हो? साहब, इस धन का उपयोग कैसे किया जाए? [illegible] कहीं अपना सिरदर्द न बढ़ जाए, इसी [illegible] ने इस फाइल पर लिखा कि इसे वित्त मं[illegible] की राय जानने के लिए भेज दिया जा[illegible]"

अवर सचिव ने कुछ क्षण सोचने [illegible] बाद गंभीर स्वर में कहा, "ठीक है, [illegible] जाइए, मैं इस बारे में सोचूंगा."

अवर सचिव ने वह फाइल उठ[illegible] और सरका दी और अपने वि[illegible] भ्रमण की बात सोचने लगे. कई दिनों से [illegible] तरकीब लड़ा रहे थे कि किस तरह सर[illegible] खर्चे पर वह एक बार फिर कहीं घूम [illegible] चार दिन बाद जब फाइल उन की मे[illegible] आगे बढ़ी तो उस पर टिप्पणी थी-"[illegible] विभाग को फाइल भेजने से पूर्व यह [illegible] होगा कि किसी अधिकारी को [illegible] डोरोथी सैम्युअल से चर्चा करने [illegible] जाए."

कुछ दिनों बाद फाइल जब उप [illegible] के सामने पहुंची तो उस पर लिखी टिप्[illegible] को पढ़ कर उन का चेहरा बिगड़ गया [illegible] वह मन ही मन बोले, 'लगता है यह [illegible] फिर से घूमने जाना चाहते हैं. विदेश वि[illegible] में नौकरी करने का यही तो मजा है. [illegible] खुद ही आवश्यकता बता दो, फिर [illegible] अधिकारियों की थोड़ी सी खुशामद [illegible] और मंत्रीजी या उप मंत्री की सिफारि[illegible] अपना ही नाम प्रस्तावित करवा दो.'

लेकिन स्वीडन तो अभी तक [illegible] सचिव भी नहीं गए थे. वह सोचने लगे [illegible] जाने फिर कब मौका मिले. एक [illegible] कोशिश कर देखने में क्या बुराई है? [illegible] अभी नहीं, दस दिन बाद ही सचिव मह[illegible] की लड़की की शादी है. पहले उस में [illegible] तगड़ा सा उपहार दिया जाए. फिर शादी [illegible] बाद एक दिन मौका निकाल कर घर पर [illegible] की पत्नी से मुलाकात की जाए. लेकिन [illegible] कौन सा उपहार हो सकता है, जो सब [illegible] अलग दिखे और ज्यादा महंगा भी न [illegible] वरना फिर मुफ्त विदेश यात्रा का मतलब [illegible] क्या हुआ?"

वह उपहार के बारे में एकदम कोई फैसला नहीं कर सके, इसलिए उन्होंने फिलहाल उस फाइल को रोक लेना ही बेहतर समझा. उन्होंने स्वयं उठ कर उस फाइल को अलमारी में बंद कर दिया और फिर उपहार के संबंध में विचार करने लगे.

डेढ़ महीने तक लगातार दूतावास के चक्कर काटने के बाद भी जब हर बार यही उत्तर मिला कि अभी भारत से पत्र का उत्तर नहीं आया है तो डोरोथी ने दूतावास के माध्यम से पुन: एक पत्र लिखा. इस बीच वह भारत के ऐसे बच्चों के संबंध में बराबर सोचती रहती, जो जन्म से ही अपंग थे. रोज अपनी बच्ची को हस्पताल में देख कर आने के बाद वह और भी भावुक हो जाती.

एक दिन अपने काम से लौट कर सैम्युअल डोरोथी को ढूंढ़ता हुआ उस के कमरे में पहुंचा तो वहां बिलकुल अंधेरा था. अंधेरे में सिसकियों की हलकीहलकी आवाज उठ रही थी. डोरोथी रो रही थी. कुछ देर चुपचाप खड़े रहने के बाद सैम्युअल ने बत्ती जला दी. डोरोथी अपनी बच्ची की तसवीर को हाथ में लिए रोए जा रही थी. सैम्युअल ने आगे बढ़ कर हलके से उसे छुआ तो वह उस के सहारे सिर टिका कर और भी फूटफूट कर रोने लगी. सैम्युअल काफी देर तक उस का सिर सहलाता रहा. जब वह कुछ स्थिर हुई तो सैम्युअल भर्राए हुए गले से बोला, "डोरा, अपने व्यस्त जीवन में भी यह खयाल कभीकभी मुझे बुरी तरह परेशान कर देता है कि हमारे बाद हमारी बच्ची की देखभाल इसी तरह हो पाएगी या नहीं."

डोरोथी खिड़की से बाहर फैले अंधेरे शून्य पर निगाह टिकाए हुए थी. "सैम्युअल, तुम्हारे पास बहुत धन है," वह धीरे से बोली, "तुम एक ट्रस्ट बना सकते हो और यह वसीयत कर सकते हो कि ट्रस्ट जीवन भर हमारी बच्ची की इसी तरह देखभाल करे. लेकिन तुम ने कभी यह सोचा है कि इस दुनिया में ऐसे न जाने कितने अपंग

बच्चे हैं, जिन की देखभाल करने वाला कोई नहीं और यदि उन की देखभाल करने वाला कोई है भी तो उस के पास पैसा नहीं है, खास तौर पर गरीब देशों में?"

वह घूम कर सैम्युअल के सामने आ गई और अपने आंसू पोंछ कर हौले से मुसकराई, "देखो, मैं ने एक पत्रिका में आज एक लड़की के बारे में पढ़ा है. यह लड़की बहुत ही खूबसूरत है, पर बेचारी जन्म से गूंगी और बहरी है. इस का बाप भारत में किसी दफ्तर में क्लर्क था. जब यह बच्ची अभी छोटी ही थी तभी उस का पिता चल बसा था. यह लड़की वहां एक कसबे में अपनी मां के साथ रहती है जहां गूंगेबहरों का कोई स्कूल भी नहीं है. और जानते हो, डाक्टरों की एक टीम ने इस लड़की का परीक्षण कर बताया है कि यदि बचपन में ही उस का आपरेशन हो जाता तो शायद यह लड़की बोलने में समर्थ हो जाती. मगर उस की निर्धन विधवा मां के लिए यह संभव नहीं था कि वह उसे किसी बड़े शहर में ले जा कर दिखा सकती."

डोरोथी ने एक गहरी सांस छोड़ी और छाती पर क्रास का चिह्न बनाया. सैम्युअल चकित सा उस की ओर देख रहा था. बड़ी देर के बाद वह बोला, "डोरा, मैं तो सोच रहा था कि तुम अपनी बेटी के लिए दुखी हो."

"हां, हूं तो. और साथ ही उन लोगों के लिए भी जो धन के कारण सामान्य होने से वंचित रह गए. हमारी बेटी इतना पैसा और इलाज की इतनी व्यवस्था होने पर ठीक नहीं हो सकती. पर दूसरी तरफ दुनिया में ऐसे भी बहुत से बच्चे हैं जो ठीक हो सकते थे मगर पैसे के अभाव में ठीक नहीं हो पाए."

सैम्युअल बोला, "हो सकता है ईश्वर की ऐसी ही इच्छा हो."

"नहीं, इस में ईश्वर की इच्छा की बात करना बेमानी है. दरअसल यह मनुष्य की नाकामी का प्रमाण है. समाज की इस कमजोरी को दूर करने की कोशिश हर समर्थ इनसान को करनी चाहिए और मैं भी करूंगी."

"मुझे कभीकभी लगता है कि तुम कुछ सनकी हो गई हो."

डोरा हंस पड़ी, "अच्छा बताओ, भारत से कोई पत्र आया?"

"नहीं. मगर, डोरा, मुझे यह समझ में नहीं आता कि तुम भारत के बच्चों को ही क्यों पैसा देना चाहती हो? और भी तो निर्धन देश हैं."

"हां, मगर भारत मुझे हमेशा से अच्छा लगता है. वह एक महान देश है, जो बहादुरी से अपनी कमजोरियों से लड़ रहा है."

"ठीक है, जैसा तुम उचित समझो, करो," सैम्युअल ने बात खत्म करते हुए कहा.

बीस दिन बाद जब फाइल संयुक्त सचिव के सामने आई तो उस पर उप सचिव की टिप्पणी थी– "श्रीमती डोरोथी सैम्युअल से बात करने किसी को भेजा जाना उचित होगा, किंतु यह अधिकारी उप सचिव से निम्न स्तर का नहीं होना चाहिए."

संयुक्त सचिव ने सभी टिप्पणियां पढ़ी और बुदबुदाए, "बदमाश कहीं का. खुद घूमने जाना चाहता है, इसलिए लिख दिया है कि उप सचिव से निम्न स्तर का व्यक्ति डोरोथी से बात करने न भेजा जाए. पिछली बार यह ट्रेनिंग लेने लंदन गया था, तब सब के लिए कुछ न कुछ ले कर आया था, लेकिन मुझे साफ टाल गया था. उस का बस चले तो मेरा तबादला करवा दे दूसरे मंत्रालय में. अब जा कर सचिव की बीवी की हाजिरी बजाएगा, पक्का मक्खनबाज है. लेकिन ठहरो, बेटा, मैं वहां तक फाइल ही नहीं जाने दूंगा."

उन्होंने फाइल पर लिखा– "किसी अधिकारी के जाने की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती. श्रीमती डोरोथी किन शर्तों पर धन देना चाहती हैं, इस पर विस्तृत चर्चा दूतावास के अधिकारी स्वयं कर सकते हैं." लेकिन तभी उन्हें विचार आया कि उप सचिव सचिव महोदय से कुछ भी लिखवा

...यह उन का ‍चमचा है, इसलिए बेहतर ...ही है कि फाइल कुछ दिन उन के सामने ...पहुंचे ही न. उन्होंने फौरन आगे जोड़ा— ...में ही मैं इस मत से सहमत हूं कि वित्त ...लय की राय लेना आवश्यक है. अतः इस ...प्रस्ताव को तुरंत वित्त मंत्रालय को भेजा ...जाए."

वित्त मंत्रालय की विभिन्न मेजों पर ...घूम कर फाइल जब वापस आई, तब तक ...चार माह बीत चुके थे. वित्त विभाग के अवर ...सचिव, उप सचिव, संयुक्त सचिव इत्यादि ...की विभिन्न टिप्पणियों के बाद जो अंतिम ...निष्कर्ष निकाला गया और फाइल पर लिखा ...गया वह यह था कि "इस मामले में वित्त ...मंत्रालय की राय की कोई आवश्यकता ...प्रतीत नहीं होती, अंतः फाइल वापस भेजी ...जा रही है."

तब तक संयुक्त सचिव भी बदल गए ...थे, अतः बिना किसी विशेष दिक्कत के ...फाइल ऊपर पहुंच गई. उप सचिव का ...व्यवहार और मंत्रीजी के निजी सहायक से ...उन की दोस्ती रंग लाई. उन्हीं का नाम ...प्रस्तावित हुआ और वह श्रीमती डोरोथी के ...नाम एक पत्र ले कर रवाना हो गए. पत्र में ...श्रीमती डोरोथी को अनेक साधुवाद देने के ...बाद सूचना दी गई थी कि उप सचिव... आप ...से विस्तृत चर्चा करने आ रहे हैं, जिस में यह ...तय किया जाएगा कि आप के धन का ...उपयोग भारत में किस तरह और कहांकहां ...किया जाएगा.

भारतीय दूतावास के कर्मचारी के ...साथ जब उप सचिव दीनदयाल श्रीमती ...डोरोथी के निवास पर पहुंचे तो वह स्थान ...उन्हें बहुत ही सुनसान लगा. काफी देर घंटी ...बजाने के बाद एक सज्जन ने द्वार खोला.

"कहिए?"

"श्रीमती डोरोथी यही रहती हैं? हम ...भारत से आए हैं."

"श्रीमती डोरोथी अब यहां नहीं ...रहतीं," वह कुछ रुक कर बोला, "मैं उन ...का सचिव हूं. उन की एक बच्ची की, जो ...जन्म से अपंग थी, अचानक मृत्यु हो गई. उस के बाद श्रीमती डोरोथी और उन के पति अपनी संपत्ति बेच कर और एक ट्रस्ट बना कर अफ्रीका में रहने चले गए हैं. मैं यहां उन के ट्रस्ट की देखभाल करता हूं. जाने से पहले श्रीमती डोरोथी एक पत्र दे गई थीं और कह गई थीं कि अगर आप के दूतावास से कोई आए तो उसे वह पत्र दे दिया जाए. आप यहीं ठहरिए, मैं अभी पत्र लाता हूं."

उप सचिव अनेक विदेशी वस्तुओं से लदेफंदे स्वदेश वापस आ गए और सचिव को अनेक सुंदर विदेशी उपहार देने के बाद धीरे से श्रीमती डोरोथी का पत्र उन के सामने रख दिया. पत्र छोटा सा था— सिर्फ चंद लाइनों का. उस में लिखा था:

"जो लोग अपने अपंग बच्चों के लिए धन स्वीकार करने में भी महीनों लगा सकते हैं, वे उस धन का उपयोग करने में तो शायद वर्षों ही लगा देंगे. मैं ने अपने धन का एक बेहतर उपयोग सोच लिया है. आप को जो कष्ट हुआ, उस के लिए आशा है आप मुझे क्षमा करेंगे." ●

नीम चढ़ा करेला

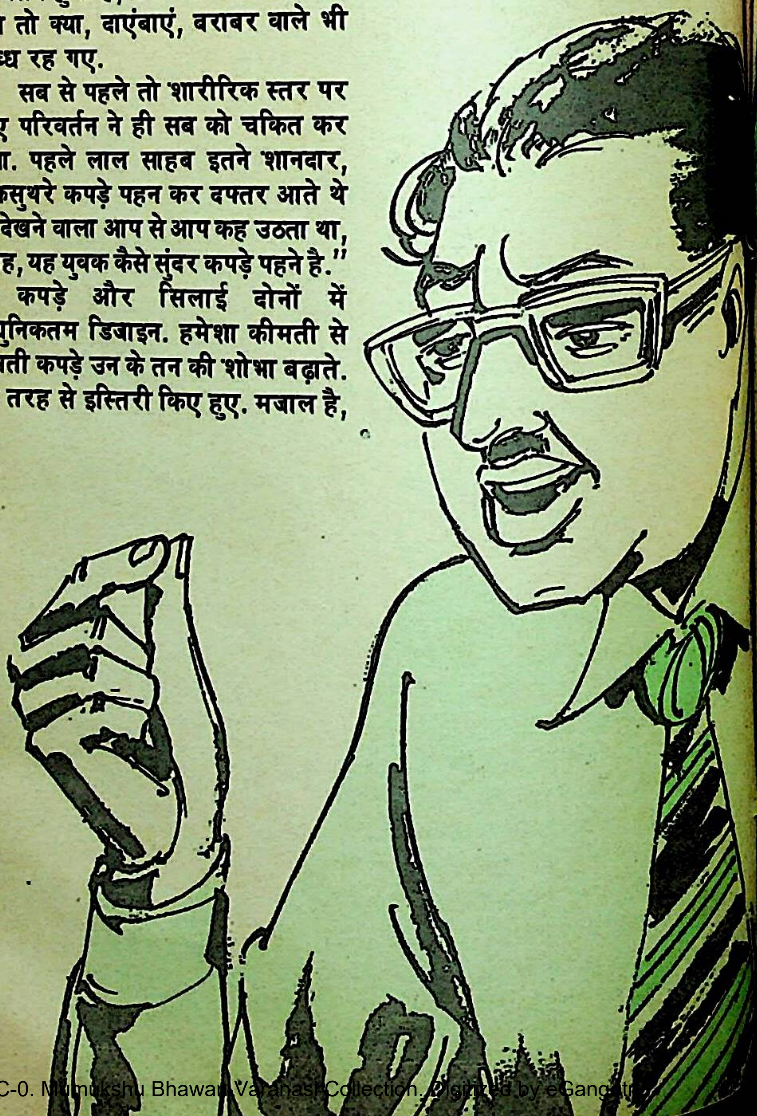
कहानी • कुसुम गुप्ता

असली नाम रवींद्रपाल लाल, किंतु सारे दफ्तर में सिर्फ लाल साहब के नाम से मशहूर मध्य स्तर के इन अफसर महोदय में पिछले कुछ दिनों से जो अभूतपूर्व, अकल्पनीय, आमूलचूल परिवर्तन हुआ है, उसे देख कर ऊपरनीचे वाले तो क्या, दाएंबाएं, बराबर वाले भी स्तब्ध रह गए.

सब से पहले तो शारीरिक स्तर पर आए परिवर्तन ने ही सब को चकित कर दिया. पहले लाल साहब इतने शानदार, साफसुथरे कपड़े पहन कर दफ्तर आते थे कि देखने वाला आप से आप कह उठता था, "वाह, यह युवक कैसे सुंदर कपड़े पहने है."

कपड़े और सिलाई दोनों में आधुनिकतम डिजाइन. हमेशा कीमती से कीमती कपड़े उन के तन की शोभा बढ़ाते. पूरी तरह से इस्तिरी किए हुए. मजाल है, कहीं भी शिकन पड़ी हो. टाई, बूट और कालर सब चमाचम. बारहों महीने चमचमाते जूते, जिन में शक्ल देखी जा सकती है.

पर अब? जो मन में आया, पहन लिया.





"अरे भई, तुम ने बड़ी खूबसूरत गलती की है, एकदम अपने जैसी," लाल साहब बोले.

सूट पर इस्तिरी हुई है या नहीं, कोई चिंता नहीं. टाई सूट से मैच नहीं कर रही तो कोई परवाह नहीं. सूट के साथ रबर की चप्पलें पहनी जा रही हैं. दफ्तर में लाल साहब के पूर्व प्रशंसकों के कलेजों पर हथौड़े से पड़ते हैं और वे एक ठंडी आह भर कर कहते हैं, "हाय, इस शानदार शख्स को यह क्या हुआ है? अजीब बात है, कल का डान ह्वान आज मजनूं बना हुआ है. आखिर क्यों?"

चाहने वालों के पास सिर्फ सवाल था, जवाब नहीं. कई बार कुछ ऐसे प्रश्नों से पाला पड़ जाता है, जिन के उत्तर नहीं होते.

कपड़े के लिहाज से ही नहीं, आचारविचार में भी लाल साहब में आमूल परिवर्तन हो चुका था. पहले किसी मातहत की यह हिम्मत नहीं होती थी कि वह लाल साहब के सामने गरदन ऊंची कर के बातें करे. जहां लाल साहब का चपरासी किसी मातहत को बुलाने आया, बस उस की छुट्टी. वह डरताकांपता उन के कमरे में पहुंचता और जैसे ही लाल साहब 'यस' का 'स' दूर तक खींच कर इस शब्द का उच्चारण करते, अधीनस्थ कर्मचारी की पैंट पेट से खिसक कर कमर तक पहुंच चुकी होती थी.

दफ्तर में लाल साहब ने एक रिकार्ड स्थापित किया हुआ था. किसी भी अधीनस्थ कर्मचारी ने— यहां तक कि उन

लाल साहब में अचानक आए परिवर्तन से दफ्तर के सभी लोग हैरान थे. वे समझ नहीं पा रहे थे कि आखिर इस शख्स को हुआ क्या है? कल का हीरो आज मजनूं क्यों बना हुआ है?

की अत्यधिक रूपवती, फिल्म अभिनेत्री रेखा जैसी निजी सहायिका तक ने उन का एक दांत तक नहीं देखा था. दूसरे शब्दों में, लाल साहब कभी भी अपने नीचे वालों के सामने नहीं हंसे थे.

पर अब? तीन दिन पहले पूरे दफ्तर में तहलका मच गया. अनुभाग अधिकारी रामप्रसाद और अपनी निजी सहायिका लता के सामने लाल साहब ने एक जोरदार छत्तफोड़ ठहाका लगाया और बोले थे, "भई प्रसाद साहब, आप ने देखा लताजी का कमाल. इन्हें गद्य लिखाइए, यह कविता बना देती हैं."

लता एकदम घबरा गई. वह घबरा कर बोली, "माफ कीजिए, साहब, अगर कोई गलती हुई हो तो..."

"अरे भई, तुम ने बड़ी खूबसूरत गलती की है, एकदम अपने जैसी. हम ने डिक्टेट किया था— "विद रेफरेंस टु योर ओ एम नंबर" (आप के कार्यालय ज्ञापन संख्या के संदर्भ में) और, लताजी, आप ने टाइप किया है— विद रेफरेंस टु योर पोइम नंबर..."

लाल साहब होहो कर के हंसे जा रहे थे. लता और रामप्रसाद साहब के कमरे से बाहर आए और अगले 10 मिनट में पूरे दफ्तर को यह पता चल गया कि आज लाल साहब दिल खोल कर हंसे हैं.

यूं ही नहीं, पिछले कुछ दिनों से लाल साहब दफ्तर के समय में अनियमित रहने लगे थे. पहले वह अपनी सीट से चिपके रहते थे. पर अब? दिन में अगर 10 बार उन का बास उन्हें याद करता तो वह दो बार सीट पर मिलते.

अपने अफसर के सामने पहले वह बिछबिछ जाते थे. जनाब... जनाब की रट. हर बात पर 'जी, जनाब.' 'नहीं, जनाब' कहना जैसे उन्होंने सीखा ही नहीं था. जितनी सख्ती वह अपने मातहतों पर करते थे, उतनी ही नरमी से वह अपने बास से पेश आते थे.

पर अब वह अपने उच्चाधिकारियों से भी बड़ी बेरुखी का व्यवहार करने लगे थे. एक दिन किसी अत्यावश्यक कार्य से उन के संयुक्त सचिव ने उन्हें चारपांच बार याद किया, पर वह एक बार भी अपनी सीट पर नहीं मिले.

दोपहर के भोजन के समय जब वह दफ्तर पहुंचे तो उन की निजी सहायिका ने कहा, "साहब, जे.एस. (संयुक्त सचिव) सुबह से कई बार बुला चुके हैं. आप फौरन..."

लाल साहब ने बेफिक्री से कहा, "डाक विभाग का आदमी है. जिंदगी भर चिट्ठियों पर ठप्पे लगाए हैं. अब जे.एस. बन गया है. बुलाने दो. उसे नीचे वालों को बुलाने की बीमारी है."

इंटरकाम पर फिर से बुलावा आया तो लाल साहब अपने बास के कमरे में पहुंचे— एकदम निश्चित, तनावरहित.

"सुबह से कहां थे आप?" संयुक्त सचिव ने भृकुटी चढ़ा कर, क्रोधित हो पूछा.

"क्या मुझे कैफियत देनी होगी? क्या आप ने मुझे क्लर्क समझा हुआ है जो सुबह से शाम तक गोंद लगा कर कुरसी से चिपक बैठा रहूं?" लाल साहब ने भड़ाक से कह दिया.

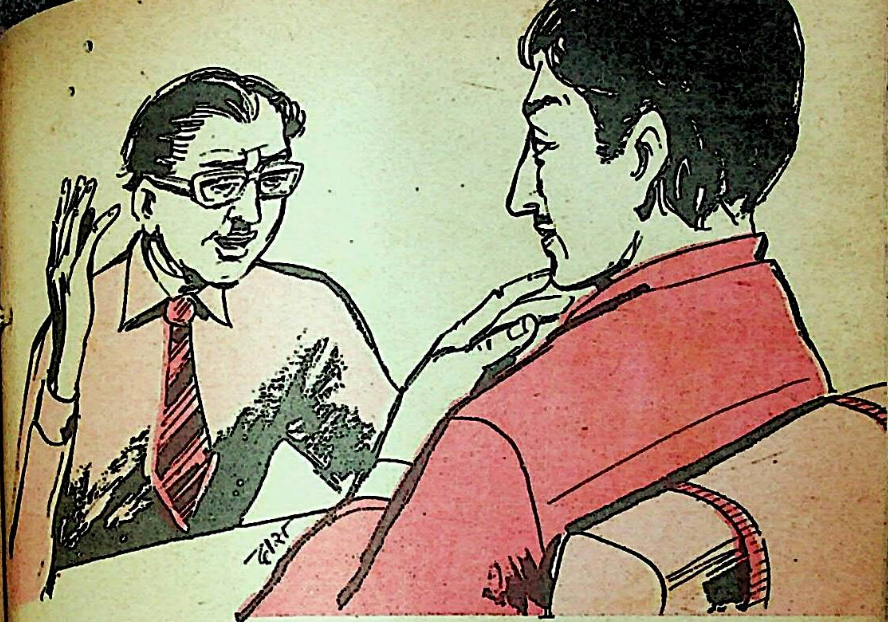
संयुक्त सचिव हतप्रभ रह गया. अवाक वह लाल साहब के बदले रूप को निहारता रहा. कल का मेमना आज शेर जैसे तेवर दिखा रहा है.

"फरमाइए, क्या आपातस्थिति उत्पन्न हो गई थी?" लाल साहब ने बास को कोंचा.

"क्या बात है? आज आप कुछ सहज नहीं लग रहे हैं," संयुक्त सचिव ने विस्मय से कहा.

"जी, मैं एकदम सौ प्रतिशत सहज और सामान्य हूं," लाल साहब ने मुसकरा कर कहा.

संयुक्त सचिव के विशाल किंतु निजी कमरे में अभिनीत होने वाले इस अभूतपूर्व बास एवं अधीनस्थ कर्मचारी मिलन के दो



"क्या मुझे कैफियत देनी होगी? क्या आप ने मुझे क्लर्क समझ रखा है, जो सुबह से शाम तक गोंद लगा कर कुरसी से चिपका रहूं," लाल साहब ने छूटते ही कहा.

दर्शक और थे. उन के सामने लाल साहब का यह व्यवहार संयुक्त सचिव को कुछ इस तरह बौखला गया कि वह यह भूल गए कि उन्होंने उन्हें किस काम से बुलाया था.

अंदर से क्रोधित, पर ऊपर से शांत रहने का नाटक. संयुक्त सचिव के रक्तचाप की ऊंचाई बढ़ती जा रही थी. पर तभी लाल साहब खड़े हो गए और बोले, "काम कोई खास नहीं था. पर शायद आप मेरी उपस्थिति के बारे में ज्यादा चिंतित थे."

बास के मुंह पर यह तमाचा मार कर लाल साहब अपने कमरे में आ गए. उधर संयुक्त सचिव के कमरे में जो दो दर्शक बैठे थे, उन में से एक स्टेनोग्राफर सरविस का सदस्य था. इस सेवा के सदस्य प्रचार के सशक्त माध्यम होते हैं. वह जब बाहर आया तो बस आधे घंटे से कम समय में ही यह समाचार पूरे संभाग में फैल गया कि लाल साहब ने डाकतार विभाग के जे.एस. की 'खाट खड़ी' कर दी.

बास और अधीनस्थ कर्मचारियों के प्रति व्यवहार में ही नहीं, लाल साहब के संपूर्ण दफ्तरीय जीवन दर्शन में आमूल परिवर्तन हो चुका था. पिछले कई दशकों से दफ्तर के समय की पाबंदी करने वाले लाल साहब अब बजाए सवा दस के साढ़े दस, पौने ग्यारह बजे दफ्तर आते हैं. पहले दोपहर के भोजन का समय पौन घंटे का होता था, अब डेढ़ की जगह सवा बजे ही निकल जाते हैं और तीन, सवा तीन बजे तक लौटते हैं. यही हाल शाम को होता है. मर्जी हुई तो सवा पांच बजे तक बैठे, वरना पांच या साढ़े चार बजे खिसक जाते हैं.

पर शायद इन सब से ज्यादा महत्त्वपूर्ण किंतु खतरनाक एक और बात हुई है. पहले लाल साहब हर फाइल को गौर से पढ़ते थे. समस्या के हर पहलू पर गौर कर के वह अपना उचित, संतुलित, सर्वांगीण निर्णय देते थे. नीचे वालों के सुझावों को वह आंखें मूंद कर स्वीकार नहीं करते थे. यदि वह उन की बात को अस्वीकार कर के अपना

निर्णय देते थे तो उस के पक्ष में तर्कसम्मत, न्यायपूर्ण नोट लिखते थे. यदि मामला नीति संबंधी होता तो वह अपने निर्णय को अनुमोदन के लिए ऊपर भेज देते थे.

ऊपर वाले– संयुक्त सचिव, सचिव तथा मंत्री– सभी उन की बुद्धिमतापूर्ण नोटिंग कला के कायल थे. दस में से नौ मामलों में वह जिस नीति का प्रतिपादन करते, वह मंत्री स्तर तक जा कर स्वीकृत हो जाती थी. यही बात व्यक्तिगत मामलों पर लागू होती थी.

पर अब? लाल साहब ने नोटिंग बंद कर दी थी. इस से लता को तो बड़ी राहत मिली थी, पर संयुक्त सचिव की मुसीबत आ गई थी. अब लाल साहब फाइल पर अपने खूबसूरत आटोग्राफ अर्थात हस्ताक्षर मारते और फाइल संयुक्त सचिव के पास धकिया देते. बेचारे संयुक्त सचिव? उन्हें सहायक के नोट से प्रारंभ कर पूरी रामायण पढ़नी पड़ती, और फिर नोट लिखवाना पड़ता. पहले नोट का मसौदा, फिर उस का अंतिम रूप.

एक दिन संयुक्त सचिव ने लाल साहब को घसीट दिया था, "भई, यह चक्कर क्या है? आजकल तो आप फाइलों पर बस घुग्घी मार कर ऊपर भेज देते हैं."

"तो क्या उन पर छायावादी कविताएं लिख कर भेजूं?" लाल साहब ने उखड़ कर कहा.

"पहले तो आप नोटिंग करते थे. पर इधर कुछ दिनों से..."

लाल साहब ने बास की बात को बीच ही में काट कर कहा, "बहुत नोटिंग कर ली. अब आप भी कुछ इस निर्णय प्रक्रिया में अपना योगदान दीजिए."

"देखिए, मुझे क्या करना है या क्या नहीं करना है, इस के बारे में मुझे आप से निर्देश नहीं लेने होंगे."

"मेरे खयाल से यही बात आप पर भी लागू होती है."

"यह क्या बक रहे हो?"

"अपने स्वर को थोड़ा हलका रखिए."

"मैं आप से तंग आ गया हूं."

"और मैं आप से," लाल साहब ने फटाक से प्रत्युत्तर दिया.

"आप बदतमीजी पर उतर आए हैं."

"इस की शुरुआत आप ने की थी."

लाल साहब का रक्तचाप सामान्य था. हां, संयुक्त सचिव के शरीर का तमाम खून उन के मुंह पर जमा हो गया था. नीचे वाला दबाव शायद सौ से ऊपर निकल गया होगा, यही सोच कर लाल साहब उस कमरे से बाहर आ गए. इस बार इस संघर्ष का दर्शक कोई नहीं था. परंतु संयुक्त सचिव ने एक महाकवि कालिदास की भांति महान मूर्खता का परिचय दे डाला. उस ने इस घटना का विस्तार से वर्णन कर के एक नोट लिख डाला. उसे सचिव के पास इस सुझाव के साथ भेज दिया कि रवींद्रपाल लाल को तत्काल उन के संभाग से स्थानांतरित कर दिया जाए.

यह संघर्ष केवल बास और अधीनस्थ कर्मचारी तक नहीं रह पाया. इस ने वर्ग संघर्ष का स्वरूप अख्तियार कर लिया. यह स्थानीय कर्मचारियों बनाम बाहर से आए हुए कर्मचारियों का झगड़ा बन गया. संयुक्त सचिव का निजी सचिव स्थानीय था. अतः



जख्मे दिल

जख्मे दिल लाख
छुपाता है गुनाहों की तरह,
खुल ही जाते हैं मगर
शोख निगाहों की तरह.

—नाजिश प्रतापगढ़ी

उस की सहानुभूति लाल साहब के साथ थी. उस ने इस मुद्दे पर उन के पक्ष में खूब प्रचार किया. दफ्तर के हर व्यक्ति की जबान पर बस एक ही बात थी, "इस बाहर से आए, ठप्पे लगाने वाले ने लाल साहब की तरफ ईंट फेंकी. लाल साहब ने भी ईंट का जवाब ऐसे पत्थर से दिया, जिस ने बच्चू को लहूलुहान कर डाला है."

कई हफ्तों के प्रयास के बावजूद संयुक्त सचिव लाल साहब का स्थानांतरण करवाने में असफल ही रहे. पता नहीं अन्य कोई संयुक्त सचिव उन्हें लेने को राजी नहीं हुआ अथवा सचिव उन्हें छोड़ने के पक्ष में नहीं थे. वैसे यह खबर बड़े जोरों से उड़ी थी कि सचिव ने संयुक्त सचिव को बुला कर एक हलकी सी झाड़ भी लगाई थी.

"इस स्तर पर ऐसे सार्वजनिक रूप से टकराव क्या आप लोगों को शोभा देता है? यदि अफसर ही इस तरह लड़ेंगे तो नीचे वालों में अनुशासन कैसे आएगा?" सचिव ने कटु स्वर में कहा था.

"पर, साहब, आजकल लाल धेले का काम नहीं करता," संयुक्त सचिव ने अपने नीचे वाले की बुराई की.

"मैं लाल को जानता हूं. अरे, वह तो 'आउटस्टैंडिंग' (असाधारण) अफसर है."

"है नहीं, साहब, था."

"देखो, मुझ से बहस मत करो. वह बहुत अच्छा काम करने वाला अफसर है. हां, उस को अच्छे व्यवहार की अपेक्षा है. उसे खुश रखो. फिर देखो, उस का काम."

"पर, साहब..."

"परवर कुछ नहीं. आगे से मेरे पास ऐसे नोट्स नहीं आने चाहिए. समझे?"

पूरे दफ्तर को इस किस्से के बारे में पता चल गया. लाल साहब के सीने की चौड़ाई काफी बढ़ गई. पर संयुक्त सचिव का मनोबल गिर गया.

यहां एक बात का स्पष्टीकरण बहुत जरूरी है. लाल साहब ने सिर्फ फाइलों पर लंबेलंबे नोट लिखना बंद कर दिया था. पर वह दोगुने उत्साह और साहस से निर्णय लेने लगे थे. अधिकांश व्यक्तिगत मामलों में वह अपने ही स्तर पर निर्णय ले लेते और उन मामलों को संयुक्त सचिव को नहीं दिखाते. यही नहीं, अब उन में इतना (दु:) साहस आ गया था कि किसी मित्र की सिफारिश पर या छोटेबड़े प्रलोभन के वशीभूत हो वह स्वयं अपने ही द्वारा पहले अस्वीकृत मामलों पर पुनर्विचार कर के उन्हें अपने ही स्तर पर स्वीकृत करने लगे.

इस सब का परिणाम साफ था. अब उन के घर और दफ्तर में मिलने-वालों का तांता लगा रहता. संयुक्त सचिव और सचिव के पास इन लोगों की संख्या बहुत कम रह गई. लाल साहब के साहस और धाकड़पन की गाथाएं दूरदूर तक पहुंच चुकी थीं. लोग जानते थे कि वास्तविक शक्ति इसी व्यक्ति के पास है.

इस शक्ति संपादन ने लोगों के अंदर ईर्ष्या के ज्वालामुखी धधकाए. वास्तविक ज्वालामुखी फटे तो लावा निकलता है. सरकारी कर्मचारियों के अंदर ईर्ष्या का ज्वालामुखी धधके तो गुमनाम और गलत नामों से शिकायती पत्र निकलते हैं.

लाल साहब के खिलाफ भी शिकायती पत्रों का तांता लग गया. हर स्तर के अधिकारी के नाम थीं ये शिकायतें. यहां तक कि मंत्रीजी को भी नहीं छोड़ा गया. पर शिकायत करने वाले जानबूझ कर भी मूर्खता करते हैं और व्यर्थ में डाक खर्च पर पैसा बरबाद करते हैं. दस अधिकारियों और मंत्रियों को लिखी गई शिकायतें अंत में केवल एक अधिकारी के पास पहुंच जाती हैं. वह है मुख्य सतर्कता अधिकारी.



लाल साहब के विरुद्ध सारी शिकायतें सतर्कता अधिकारी के पास पहुंचीं. उस ने उन का अध्ययन किया और लाल साहब पर खुली फाइल पर यह निर्णायक नोट लिख दिया, "मैं ने इन शिकायतों पर गौर किया है. ये ईर्ष्याजनित, बेबुनियाद हैं. इन पर कोई काररवाई करने की जरूरत

नहीं है. इस फाइल को बंद कर दिया जाए."

"पर, कुमार साहब, आप ने बिना जांचपड़ताल किए ही इस फाइल को क्यों बंद कर दिया?" मैं ने पूछा.

मैं भी इसी दफ्तर में काम करता हूं और मुख्य सतर्कता अधिकारी राजकुमार का मित्र हूं. शुरू से ही मैं इस लाल प्रकरण में रुचि लेता रहा हूं.

"फाइल को खुली रखने से भी क्या फायदा होना है?" राजकुमार ने वितृष्णा से कहा.

"क्यों?" अगर लाल साहब के खिलाफ कोई मामला बनता है तो उन के खिलाफ अनुशासनात्मक काररवाई..."

मेरी बात को बीच ही में काट कर राजकुमार हंसते हुए बोले, "अरे भाई, लाल कुछ ही महीनों में सेवानिवृत्त होने वाला है. रिटायर होने वाले कर्मचारी में बहुत दम आ जाता है. वह जानता है कि आप उस का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते. इसलिए जातेजाते वह जो कुछ चाहता है, कर जाता है."

मैं हतप्रभ रह गया. तो लाल साहब में आए आमूलचूल परिवर्तन का यह रहस्य है.. सेवानिवृत्ति से पूर्व के कुछ महीनों में वास्तव में सरकारी कर्मचारी एक ऐसे सुरक्षा क्षेत्र में पहुंच जाता है, जहां कोई उस का कुछ नहीं बिगाड़ सकता. न कोई तरक्की का प्रलोभन, न किसी सजा का भय. भारतीय परंपरा के अनुसार विदा होते मेहमान को गले लगाया जाता है, न कि धक्के मारे जाते हैं.

फिर भी मेरा मन एक तथ्य को स्वीकार नहीं कर पा रहा था. पेंशन नियमों के अंतर्गत दोषी सेवानिवृत्त कर्मचारी की पेंशन कम की जा सकती है. यदि लाल साहब ने भ्रष्ट आचरण शुरू कर दिया है तो इस की जांच अवश्य होनी चाहिए थी. यदि आरोप सही हैं तो फिर पेंशन नियमों के अंतर्गत काररवाई करने में क्या दिक्कत थी?

मैं ने राजकुमार के सामने अपनी शंका व्यक्त की तो वह पहले तो खिलखिला कर हंसे. फिर धीमे स्वर में बोले, "जांचपड़ताल करने से भी क्या हो जाना था. लाल अपने उप मंत्रीजी का आदमी है."

"करेला, तिस पर नीम चढ़ा." मेरे मुंह से अनायास फिसल गया. वैसे, लाल के बदले रंग का रहस्योद्घाटन हो चुका था. •

राखी का मूल्य

पृष्ठ 121 का शेषांश

"चलिए न, आप को घर छोड़ दें."

"लेकिन मेरे लिए आप टैक्सी ले कर इतनी दूर जाएंगे?"

"बैठिए न, आप को आप के घर छोड़ कर मैं चला जाऊंगा. आप का घर कहां है?"

"हाजरा रोड पर."

"तो चलिए, मुझे भी लेक एरिया में ही जाना है. वहां एक मित्र के यहां ठहरा हुआ हूं."

मैना का घर हाजरा रोड पर एक तंग सी गली में था. टैक्सी भीतर नहीं जा पाती थी. बाहर ही उसे उतार कर दिनेश ने उस से अगले दिन पांच बजे 'लाइट हाउस' पर मिलने का वचन ले लिया.

अगले दिन नियत समय पर मैना उसे वहीं मिल गई. सिनेमा के टिकट दिनेश ने पहले ही खरीद रखे थे. फिल्म के बाद वह उसे एक आलीशान होटल के रेस्तोरां में खाना खिलाने ले गया. 270 रुपए का बिल चुकाने के लिए दिनेश ने सौसौ के तीन नोट प्लेट में छोड़ दिए और बैरे के सलाम का जवाब देते हुए दोनों बाहर निकल आए.

उस रात उसे घर छोड़ने से पहले फिर दिनेश ने अगले दिन उस से मिलने का वादा ले लिया.

रवि मैना की दफ्तर से रोजरोज की अनुपस्थिति से हैरान था. शाम को दिनेश भी घर पर न मिलता. मैना रवि से मिलती भी तो अब उसे अधिक लिफ्ट न देती. वह अब रवि की परवाह क्यों करती. वह एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की थी. पिता बेकार था, भाई आवारा. घर में बच्चों की रेलपेल थी. दिन भर गरमी में बाहर से परेशान हो कर आती. बसट्राम में धक्के खाती, कठिनाई से अभी घर भी न पहुंच पाती कि गली में ही बच्चों की भीड़ चिल्लाचिल्ला कर उस का सिर खा लेती.

घर भी क्या था? दो ही कमरे थे. सामने टूटाफूटा सहन व तीनचार परिवारों में प्रयुक्त होने वाला एक ही शौचालय. पानी भी बाहर के नल से भर कर लाना पड़ता था. किसी तरह मुंहहाथ धो कर वह कमरे में आ कर बैठती कि हाथ में ताड़ का पंखा झलती मां घर का राशनपानी खत्म होने का रोना रोने आ धमकती. वही अकेली पूरे घर का खर्च चला रही थी. भाई की आवारागर्दी भी उसी के बल पर चलती थी. पर फिर भी मैना भाई के तानों से डरती थी. डर के मारे मैना उस से कुछ न कहती थी.

उस के अपने शादीब्याह का तो प्रश्न ही न उठता था. तब घर का खर्चा कौन चलाता. अपने घर के अभावों में घिरी मैना अपने सब शौक बाहर पूरे करती थी. देखने में वह काफी आकर्षक थी. स्मार्ट भी बन कर रहती. किसी भी पुरुष को लुभाने में वह सिद्धहस्त थी. उस के सांवले रंग व बड़ीबड़ी कजरारी आंखों में बला की कशिश थी. उस के स्वभाव की उच्छृंखलता पुरुषों को सहज ही आकर्षित कर लेती थी. परंतु वह जानती थी कि यह सब अस्थायी है. मौजमस्ती मारने के लिए है. वह भी इस सब का फायदा उठाती और रेस्तोरां में खानेपीने, सिनेमा देखने व कभीकभार डायमंड हारबर या बजबज तक घूम आने के अपने शौक पूरे करती रहती थी.

रवि के साथ उस की मित्रता बढ़ी तो उस ने अपने दांव खूब सोचसमझ कर खेले. वह जान गई थी कि वह एक शरीफ पारिवारिक आदमी है. किसी तरह चक्कर में फंस कर यदि शादी के लिए हां कह दे तो उस का भविष्य सुरक्षित हो जाएगा और वह अपने घर के नरक से भी छुटकारा पा जाएगी. यह जानते हुए भी कि रवि विवाहित है, उस ने उसे प्रोत्साहन ही दिया. अब कोई कुंआरा तो उस से शादी करने के लिए मिलेगा नहीं.

रवि उस की चालों से अनभिज्ञ था. वह उस के रूपजाल में अच्छी तरह फंस गया था. पांच वर्ष पुरानी पत्नी बासी लगने लगी थी और वह इतनी स्मार्ट भी तो न थी.

मैना दिनेश के संसर्ग में आने के पश्चात रवि के प्रति सावधान हो गई थी. अब वह क्यों उस की चिंता करती, जब कि दिनेश जैसा सजीला युवक उस का दीवाना हो गया था और उस के साथ झंझट भी कोई न था. वह कुंआरा जो था. रवि के साथ शादी हो पाना आसान नहीं था. पहले तो उस की पहली पत्नी से तलाक का अदालती चक्कर था जो लंबा खिंचता. और यदि तलाक न होता तो उन्हें चोरीछिपे विवाह करना पड़ता. सामाजिक सम्मान तो उसे तब भी प्राप्त न होता. एक कठिनाई से निकल कर वह दूसरी कठिनाई में फंस जाती.

और दिनेश? वह तो उस पर जान छिड़कता था. वह उस पर पैसा पानी की तरह बहा रहा था. उसे विश्वास था कि यदि वह सावधानी से पासा फेंके तो दिनेश उस से शादी भी कर लेगा. इसी लिए अब वह रवि से कतराती थी. दोपहर बाद अकसर दफ्तर से छुट्टी ले कर शामें दिनेश के साथ बिताती.

एक दिन तो वह हैरान रह गई, जब दिनेश ने उसे सोने की एक पतली सी चेन भेंट में दे दी. दस दिन बाद, अगले महीने फिर आ कर उस से मिलने का वादा कर के दिनेश चला गया. कलकत्ता वह हर महीने दौरे पर आता था.

सुधा के घर में इन आठदस दिनों में काफी परिवर्तन आ गया था. रवि दिनेश से मजाक करता, "क्यों, साले साहब, आजकल शाम को कभी घर में नहीं बैठते, किस चक्कर में हैं?"

"है एक जरूरी काम. इसे अब अगले महीने आ कर पूरा करूंगा."

जाते समय दिनेश सुधा को आश्वासन दे कर गया कि अपना वादा वह पूरा करेगा. सुधा ने भी प्रयत्न से अपनेआप को बदल लिया था. वह अब हर समय प्रसन्न रहती. बनावसिंगार भी करती. रवि को शाम को मैना का साथ न मिलता तो वह सुधा के साथ ही आकाश में कल्पनाओं के पंख लगा कर विचरता. सुधा को लगा, सुबह का भूला शाम को घर लौट आया है.

रवि सुधा के साथ रोज शाम को घूमनेफिरने जाता. दोनों में मैना के संबंध में कोई बात न होती. उसे एक भयानक स्वप्न समझ कर दोनों भुला चुके थे.

अगले महीने फिर दिनेश आया. इस बार वह 15 दिन का कार्यक्रम बना कर आया था. उस का फिर मैना के साथ पहले वाला कार्यक्रम चलने लगा. रवि और मैना का प्रेम प्रकरण समाप्त होने में यदि कोई त्रुटि रह गई थी तो इस बार उसे भी दिनेश ने ठीक करने की सोच ली थी. वह सब मैना पर अंधाधुंध पैसा बहाने से ही संभव हो पाया.

लौटने से दोतीन दिन पहले दिनेश रवि के दफ्तर पहुंचा. रवि के केबिन में बैठे हुए वह पहले तो इधरउधर की बातें करता रहा, फिर जैसे एकदम याद हो आया हो, ऐसा दिखाते हुए बोला, "आज मैं तुम्हारे पास एक जरूरी काम से आया था."

"तो घर में ही क्यों नहीं कहा, इस के लिए यहां तक आने की क्या आवश्यकता थी?"

"सुधा के सामने कैसे कहता? तुम्हारे दफ्तर में एक लड़की काम करती है, मैं उस से शादी करने वाला हूं."

रवि जैसे आसमान से गिरा, "क्या मैना की बात कर रहे हो?"

"हां... हां, वही. एक दिन तुम से मिलने यहां आया था. तुम तो यहां थे नहीं, पर उस से मुलाकात हो गई. मैं तो उस की गहरी आंखों में डूब गया हूं."

"दिमाग तो नहीं फिर गया तुम्हारा? इतनी बड़ी दुनिया में तुम्हें वही लड़की मिली इश्क फरमाने को?"

"क्यों, उस में क्या बुराई है?"

"चलो, घर चल कर बात करते हैं," कह कर रवि उसे खींचता हुआ दफ्तर से बाहर ले आया. कार में रास्ते भर वह उसे भाषण पिलाता रहा.

घर आते ही सुधा को आवाज दे कर बाहर से ही दिनेश को डांटता हुआ अंदर लाया.

सुधा के आते ही वह बोला, "सुनी अपने भाई साहब की बात? शादी करना चाहते हैं."

"पर इस में बुरा क्या है? समय तो है ही शादी करने का."

"जानती हो किस से शादी करना चाहते हैं? हमारे दफ्तर की क्लर्क मैना से."

सुधा सिर पकड़ कर सोफे पर धम्म से बैठ गई, "भैया, कोई और लड़की पसंद कर लेते."

क्या उस का घर संवारने के लिए दिनेश अपना जीवन नष्ट करने जा रहा था.

"आखिर बुराई क्या है उस में?" दिनेश ने बनावटी झल्लाहट दिखाते हुए पूछा.

"अरे, घाटघाट का पानी पिए है वह. हर महीने नया दोस्त बना कर उस के पैसों से गुलछर्रे उड़ाती है. तुम बाहर से आए हो, तुम क्या जानो, हर समय नया मुर्गा फंसाने के चक्कर में रहती हैं."

"अच्छा," दिनेश ने हैरान होने का अभिनय किया, "तब तो मैं बालबाल बचा."

"और क्या. अब कोई अच्छी सी लड़की ढूंढ़ कर तुम्हारा इंतजाम करना पड़ेगा, नहीं तो अगले दौरे में फिर यही सब चक्कर चलाओगे."

दूसरे दिन राखी थी. सुधा ने पूजा का थाल सजाया. दिनेश को राखी बांधी.

दिनेश थाली में सौ का नोट रखने लगा तो सुधा ने हाथ पकड़ लिया.

"राखी का मूल्य तो तुम चुका चुके हो, भैया. अब यह कागज का टुकड़ा दे कर भाईबहन के प्यार भरे संबंधों का अपमान तो मत करो."

"अच्छा, तो एक काम तुम भी मेरा करो. आज दही वाले चावल बना कर खिलाओ. इतने दिन होटलों में खातेखाते मेरा पेट खराब हो गया है." ●

राष्ट्र की सुखसमृद्धि के लिए तालाबंदियां

निस्संदेह, हर कर्मचारी का यह मूलभूत अधिकार है कि यदि वह कहीं काम करना पसंद नहीं करता तो न करे. इसी प्रकार किसी भी कारखाने के मालिक का यह अधिकार है कि वह अपना कारखाना चालू रखना नहीं चाहता तो न रखे, किंतु आधुनिक समाज का मिश्रित और जटिल ढांचा इस प्रकार के मनमाने व्यवहार की अनुमति नहीं देता.

अतीत काल में किसी एक कारखाने में मुट्ठी भर लोग काम किया करते थे. तब उस कारखाने के चालू रहने अथवा बंद हो जाने से उस कारखाने के कर्मचारियों अथवा मालिक के अतिरिक्त अन्य किसी पर प्रभाव नहीं पड़ता था. आज उत्पादन का हर भाग एक व्यापक जालसूत्र में एकदूसरे से इतना अधिक संबद्ध है कि चाहे किसी कारखाने में कुछ सौ कर्मचारी ही काम करते हों, किंतु यदि वह कारखाना बंद हो जाता है तो उस से बहुत से अन्य प्रतिष्ठान और व्यापारगृह भी बंद हो जाते हैं. इस प्रकार न केवल हजारों कर्मचारी बेकार हो जाते हैं, अपितु बहुत से लोगों को उपभोग्य वस्तुओं से भी वंचित होना पड़ता है.

उदाहरण के लिए, यदि कोई कपड़ा मिल बंद हो जाए तो कपास ओटने और धुनने वाले कारखानों, मिल तक माल लाने ले जाने वाले लोगों, रंग आदि कच्चे माल की आपूर्ति करने वालों, छपाई और पैकिंग का काम करने वालों एवं बिजली तथा पानी के सप्लायरों के पास काम नहीं रहेगा. इस का बैंकों, डाकघरों तथा देश भर में कपड़ों के वितरकों तथा दुकानदारों पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा. कपड़े की कमी से बाजार में इस के मूल्य बढ़ जाएंगे और उस का सब से बुरा असर पड़ेगा खरीदार पर.

यही नहीं, सरकार को भी उत्पादन शुल्क, बिक्री कर और आय कर में हानि होगी. और यह कोई छोटीमोटी राशि नहीं होगी, बल्कि कुल लाभ के लगभग 80 से 90 प्रतिशत के बराबर होगी. सरकार इस हानि को या तो और अधिक टैक्स लगा कर पूरा कर सकती है अथवा किन्हीं सेवाओं में कमी कर के. श्रमिकों के वेतन में जो हानि होगी, उस से माल की मांग अथवा बिक्री में कमी हो जाएगी. कारखाने के मालिक को होने वाली क्षति से उद्योग को धन मिलने में रुकावट पड़ेगी.

रेलों, बंदरगाहों, जहाजों, डाकघरों, विद्युत तथा जल प्रदाय संस्थानों, हवाई कंपनियों, बस सेवाओं और तेलशोधक कारखानों आदि किसी भी सार्वजनिक उपयोग के क्षेत्र में हड़ताल होने से और भी अधिक हानि होती है, इस से राष्ट्र के जीवन में गतिरोध आ जाता है. श्रमिकों, श्रमदाताओं, उपभोक्ताओं, प्रशासन और किसकिस को नुकसान नहीं उठाना पड़ता?

भारत में आज श्रमिकों और श्रमदाताओं के आपसी झगड़ों को न्यायालय द्वारा निपटाने की एक सुगठित और निष्पक्ष व्यवस्था मौजूद है. फिर व्यर्थ में हड़तालों और तालाबंदियों की क्या आवश्यकता?

आखिर, श्रमिकों के झगड़े किस लिए होते हैं? अधिक लाभ तथा सुविधाएं प्राप्त करने के लिए ही तो. उचित (अन्य लोगों को मिलने वाले वेतनों की दृष्टि से) वेतनों और स्वास्थ्य बीमा, भविष्य निधि तथा सेवा पुरस्कार आदि आधारभूत सुरक्षाओं समेत आवश्यक सुविधा की फैक्टरी कानूनों में पहले से ही व्यवस्था है. लड़ाई तो और अधिक लाभ, और अधिक सुविधाएं, और वास्तव में और अधिक पैसा हासिल करने के लिए है.

और हड़तालों पर रोक लगाओ

अधिकतर हड़तालें मजदूर नेताओं के आपसी विरोध के कारण होती हैं. ये प्राय: बाहर के राजनीतिक व्यक्ति होते हैं और यह सिद्ध करने के प्रयत्न में रहते हैं कि किस का अधिक बड़ा साम्राज्य, अधिक बड़े समूह पर नियंत्रण है और कौन उन्हें अपने इशारे पर नचा सकता है. अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे श्रमिकों एवं समाज को होने वाले भारी नुकसानों तथा कष्टों की भी परवा नहीं करते.

किसी भी आधुनिक समाज में आर्थिक विवादों को हल करने के लिए बलप्रयोग, हिंसा अथवा जोरजबरदस्ती का सहारा नहीं लिया जा सकता. न्याय पाने के लिए कानूनी व्यवस्था का ही सहारा लिया जाना चाहिए. इसी प्रकार श्रमिकों और श्रमदाताओं के आपसी झगड़ों को हड़तालों, मोर्चों, धरनों, घेरावों, प्रबंधकों पर हमलों अथवा जवाबी कार्यवाही के रूप में तालाबंदियों के जरिए नहीं, बल्कि अदालती अथवा पंच फैसले द्वारा ही निपटाया जाना चाहिए.

निस्संदेह, श्रमिकों को अपना श्रम न बेचने का मूलभूत अधिकार है, किंतु क्या इस अधिकार से उसे कारखाने के मालिक को केवल श्रमिकों द्वारा निश्चित की गई शर्तों पर ही अपना कारखाना चलाने के लिए बाध्य करने का अधिकार भी प्राप्त हो जाता है?

यह सही है कि पश्चिम के किसी भी लोकतंत्री देश में अभी तक इस विषय में न्यायालय अथवा पंच द्वारा फैसला कराने की व्यवस्था को लाजिमी नहीं ठहराया गया और न समाजवादी देशों की तरह हड़तालों और तालाबंदियों पर रोक लगाई गई है; किंतु स्थिति तेजी से बदल रही है. औपनिवेशिक साम्राज्यों में आवश्यकताओं से अधिक उत्पादन होने और सस्ता तेल मिलने की वजह से ही वहां हड़तालों और तालाबंदियों की छूट दी जाती है मानो ये बातें कारखानों में रोजरोज की ऊबाऊ मेहनतमजदूरी और काम से हट कर मनबहलाव का कोई स्वस्थ साधन हों.

किंतु आज आसमान को छूने वाली कीमतों पर निरंतर बढ़ती हुई बेरोजगारी ने पश्चिमी देशों को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सामूहिक सौदेबाजी, हड़तालों और तालाबंदियों की भूमिका और औचित्य पर फिर से विचार करने के लिए बाध्य कर दिया है. वह दिन दूर नहीं जब उन्हें उत्पादन और रहनसहन के स्तर को बनाए रखने के लिए हड़तालों और तालाबंदियों का खात्मा करना होगा.

न्यायालय का कार्य साधारणत: मंद गति से चलता है, किंतु जल्दी ही फैसले करवाने के लिए काफी संख्या में नई अदालतें और नए जज भी तो नियुक्त किए जा सकते हैं. इस देश में कानूनी प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है. हड़तालों और तालाबंदियों से होने वाली हानियों के मुकाबले इन नई अदालतों पर बैठने वाला खर्च बहुत कम होगा.

किसी भी कारखाना मालिक को तालाबंदी कर के अपने माल का उत्पादन और सेवाएं रोकने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए.

किसी भी श्रमिक को अपने श्रम से इनकार कर के उत्पादन को भंग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए.

• न हड़तालें, न तालाबंदी ○ अदालती फैसला लाजिमी



★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ पत्थर की लकीर

निर्माता: परमहंस चित्र
लेखक व निर्देशक: दीनदयाल शर्मा
मुख्य कलाकार: अशोककुमार, सारिका, दीपक पाराशर, बिंदु, मदन पुरी, जयश्री तलपदे, सुरेश ओबराय, श्रीराम लागू.

फिल्म 'पत्थर की लकीर' को दो पक्षों से देखा जा सकता है. प्रथम उन अभिभावकों की दृष्टि से जो धन बनाने की दौड़ में अपनी संतान के प्रति लापरवाह हो कर अपनी जिम्मेदारियां भूल जाते हैं और उन की आंख तब खुलती है जब संतान तबाही के कगार पर पहुंच जाती है. दूसरे, उस युवा पीढ़ी की दृष्टि से जो अपने अभिभावकों के लाड़प्यार और विश्वास का नाजायज फायदा उठा कर जीवन को रसमय बनाने के चक्कर में गलत रास्तों पर चल पड़ते हैं.

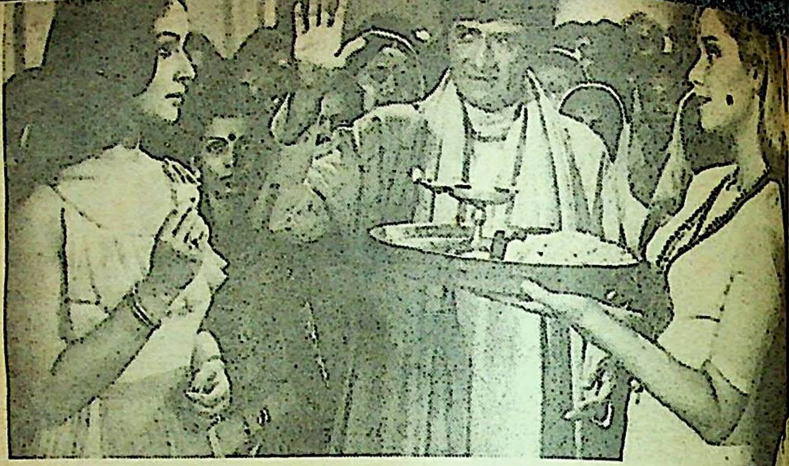
अमीर बाप के घर जन्मी मधु (सारिका) बुरी संगत में पड़ कर बिगड़ जाती है. बाप (मदन पुरी) पर पैसे की धुन सवार है और मां (बिंदु) अपने जिस्म की देखभाल में लगी रहती है. मधु और प्रकाश (दीपक) में प्रेम होता है तो उन की शादी भी हो जाती है. तभी मधु का अतीत भयंकर रूप धारण कर के उस के सामने आ जाता है और उस के वैवाहिक जीवन में जहर घोल जाता है, जिस का अंत एक लंबे संघर्ष के बाद होता है.

विषय एवं चित्रण दोनों पक्षों से फिल्मों को दो भागों में बांटा जा सकता है. आरंभ में यह एक बिगड़ी हुई लड़की की कहानी है. फिल्म के पूर्वार्ध में अधिकतर यही दिखाया है कि मधु किस प्रकार बिगड़ती चली जाती है. जाहिर है कि उस के ये सभी कारनामे फिल्म में अधिक से अधिक सेक्स भरते चले गए हैं. रहीसही कसर मधु की मां (बिंदु) पूरी कर देती है जो जिस्म को सुडौल बनाने के चक्कर में तरहतरह से अपने शरीर का प्रदर्शन करती है. इन सब दृश्यों ने फिल्म के पहले भाग को सेक्स का एक गंदा पिटारा बना दिया है.

फिल्म का उत्तरार्ध विषय एवं चित्रण दोनों पक्षों से जानदार है. प्रकाश को मधु के अतीत का पता चलता है तो उसे उस से घृणा हो जाती है. वैवाहिक जीवन नरक बन जाता है. निर्देशक दीनदयाल शर्मा ने वैवाहिक जीवन में आई दरार का आंखें खोल देने की सीमा तक प्रभावपूर्ण चित्रण किया है.

मधु के रूप में सारिका ने बड़ा सुंदर अभिनय किया है. अन्य सभी कलाकार बेजान हैं, पर फिल्म की मुख्य भूमिका फिल्म को बेजान होने से बचा गई है. दीपक पाराशर काम भर चला गया है. अनजान के गीत व उषा खन्ना का संगीत भी बुरा नहीं है. अगर फिल्म के पहले भाग में उकता देने की सीमा तक गंदगी न होती तो 'पत्थर की लकीर' एक अच्छी फिल्म बन सकती थी.

अंत में फिल्म के एक चरित्र (श्रीराम लागू) के ये शब्द कानों में गूंजने लगते हैं—"एक बेटी, एक बहू, एक बहन घर की



फिल्म 'स्वामी दादा' के एक दृश्य में रति अग्निहोत्री, देव आनंद व क्रिस्टीन.

इज्जत होती है और जब इस इज्जत पे दाग लगता है तो सारा घर जल के राख हो जाता है. फिर इस आग में घर का हर छोटाबड़ा जलता है, लेकिन मरता नहीं. यह बात पत्थर की लकीर है." निर्देशक दीनदयाल शर्मा ने फिल्म के उत्तरार्ध में इन शब्दों को अक्षरशः साकार कर दिया है.

O स्वामी दादा

निर्माता: नवकेतन फिल्म्स
लेखक : सोमनाथ रंगरू
निर्देशक : देव आंनद
मुख्य कलाकार : देव आनंद, रति अग्निहोत्री, मिथुन चक्रवर्ती, कुलभूषण खरबंदा व क्रिस्टीन ओ'नील.

धर्म अब विदेश में ऐसा धंधा बन गया है, जिसे आर्थिक लाभ के लिए काफी भुनाया जा सकता है. यूरोपीय जीवन पद्धति में पूरी तरह लीन रहने वाले देव आनंद ने अपनी नई फिल्म भारतीय धर्मदर्शन पर इसलिए नहीं बनाई है कि उसे यकायक इस में कोई दिलचस्पी पैदा हो गई, बल्कि इसलिए कि अब यह बिकाऊ माल हो गया है.

फिल्म आज के समय में लोगों को दकियानूसी बनाने की साजिश से ज्यादा कुछ नहीं है. पश्चिम में लोग भौतिकवाद से ऊब कर भले ही भारत के रहस्यमयी अध्यात्मवाद की तरफ मुड़ रहे हों, लेकिन भारतीयों के लिए मूल समस्या अभी भी अपने लिए रोजमर्रा की जरूरत उपलब्ध कराना है. जरूरत इस बात की है कि धर्म के फंदे से अलग कर उन्हें कर्मठ बनाया जाए जब कि 'स्वामी दादा' धर्म की अफीम देकर लोगों को अकर्मण्य बनने की सीख देती है.

फिल्म के कुछ खास पात्र हैं–हरे मोहन (देव आनंद) बचपन में जिसे चोरों के गिरोह से छुड़ा कर स्वामीजी (हंगल) अमरीका ले जाते हैं. अमरीकी लड़की जेन (क्रिस्टीन), जिसे एक कार दुर्घटना के बाद भृगु संहिता दिखा कर एक पंडित यह विश्वास दिला देता है कि वह पूर्व जन्म की जानकी है और उस की शादी हरे मोहन से होगी.

हरे मोहन उस से शारीरिक संबंध तो कायम कर लेता है, लेकिन किसी भी कमजोर व ढोंगी साधु की तरह उसे छोड़ कर भारत आ जाता है. यहां वह दादा बन कर अपराध प्रवृत्ति में लगे लोगों को धर्म की तरफ मोड़ता है. धर्म से उस का मतलब है—मंदिरों में जाना व कीर्तनों में हिस्सा लेना.

फिल्म का यह भाग बेहद लचर है. लोग क्यों हरे मोहन की बात से प्रभावित हो जाते हैं, यह पता ही नहीं चल पाता. सीमा

(रति) व सुरेश (मिथुन) का प्रसंग सिर्फ फिल्म की लंबाई बढ़ाने के लिए डाला गया है.

पूरी दुनिया में लोगों के भूत व भविष्य का हाल बताने वाली भृगु संहिता को सौ सवा सौ पन्नों की छोटी सी किताब के रूप में दिखाया गया है. दादा बनने के बाद एक जगह बिना मूंछें लगाए ही वह दादा बना चला जाता है, लेकिन लोग अचकचाते नहीं.

देव आनंद अपनी पुरानी स्टाइल का शिकार रहा है. क्रिस्टीन का चरित्र स्वाभाविक है. उस से धर्म के नाम पर की जाने वाली भारतीयों की धूर्तता ही उजागर होती है. हंगल बारबार स्वप्न को सवपन बोलते हैं. रति और मिथुन बेहद सामान्य रहे हैं. बाकी पात्र भी नौटंकी से ज्यादा नहीं हैं.

गीतसंगीत में इतना दम नहीं है कि फिल्म को खींच सके. तकनीकी पहलू श्रेष्ठ है, पहली बार प्रगाढ़ चुंबन का दृश्य है, न्यूयार्क की सैर है, लेकिन फिल्म कुल मिला कर निहायत बकवास है.

O विधाता

निर्माता : त्रिमूर्ति फिल्म्स
निर्देशक : सुभाष घई
मुख्य कलाकार : दिलीपकुमार, शम्मी कपूर, संजीवकुमार, संजय दत्त, पद्मिनी कोल्हापुरे, सारिका, अमरीश पुरी, श्रीराम लागू, सुरेश ओबराय.

मानव अपने भाग्य का विधाता स्वयं है या कोई अदृश्य शक्ति मानव के भाग्य का नियंत्रण करती है, निर्मातानिर्देशक गुलशन राय ने इस खोखले सिद्धांत को ले कर एक खोखली सी कहानी में कुछ संघर्ष पैदा कर के 'विधाता' बना दी है. पर उस का अपना सिद्धांत क्या है, यह फिल्म के अंत तक स्पष्ट नहीं होता. वास्तविकता यह है कि उपर्युक्त सिद्धांत का सहारा ले कर वह फिल्म में तरहतरह के मसाले भरता चला गया है और लेखिका मुक्ता घई मकड़ी की तरह इस

पिछले बारह महीनों में

★★★★ निकाह.

★★★ उमराव जान, ये नजदीकियां.

★★ मेरी आवाज सुनो, राजपूत, जीवनधारा, अंगूर, बाजार, हमकदम, बाल शिवाजी, शक्ति.

★ इतनी सी बात, कालिया, दिले नादान, नई इमारत, श्रद्धांजलि, सत्ते पे सत्ता, जमाने को दिखाना है, अपना बना लो, श्रीमान श्रीमती, बेमिसाल, देशप्रेमी, तुम्हारे बिना, दासी, नमक हलाल, सवाल, शौकीन, आधारशिला, सितारा, तेरी कसम, मेहंदी रंग लाएगी, फर्ज और कानून, सुन सजना, भीगी पलकें, जियो और जीने दो, चोरनी, गंगा मेरी मां, जानी, आई लव यू.

O नागिन और सुहागिन, मैं और मेरा हाथी, कोबरा, गहरा जख्म, गर्भज्ञान, दौलत, कहानी एक चोर की, आमने सामने, कच्चे हीरे, जोश, धन दौलत, गोपीचंद जासूस, रास्ते प्यार के, रक्षा, शमा, प्यारा तराना, प्रेम रहस्य, जियो तो ऐसे जियो, उस्तादी उस्ताद से, दो दिल दीवाने, प्यारा दोस्त, हीरों का चोर, तीसरी आंख, अशांती, दो उस्ताद, दिल का साथी दिल, बदले की आग, इनसान, ईंट का जवाब पत्थर, मैं इंतकाम लूंगा, गजब, मेहरबानी, बेगुनाह कैदी, आदत से मजबूर, पांच कैदी, सनम तेरी कसम, डायल 100, आपस की बात, घमंडी, बगावत, प्रेम रोग, खुद्दार, धर्मकांटा, संबंध, राजमहल, गंगाधाम, अपराधी कौन?, वक्त के शहजादे, दहशत, गंगा मांग रही बलिदान, टैक्सी चोर, कसम दुर्गा की, यह कैसा नशा है, खुशनसीब.

सिद्धांत के जाले में फंसती चली जाती है.

गरीब शमशेरसिंह (दिलीपकुमार) काले धंधों द्वारा इतना अमीर बन जाता है कि मीजिया गिरोह का चेयरमैन बन जाता है. उस का विश्वास है कि अपने भाग्य का विधाता वह खुद है और अपने पोते कुणाल (संजय दत्त) का भाग्य भी अपनी इच्छानुसार बनाएगा. वह कुणाल को अबू बाबा (संजीवकुमार) की देखरेख में छोड़ देता है, जहां कुणाल गरीबी में पल कर सचाई की शिक्षा ग्रहण करता है. कुणाल लौटता है तो दादा और पोते में संघर्ष आरंभ होता है, जिस का अंत पूरे गिरोह सहित शमशेरसिंह की मृत्यु के साथ होता है.

फिल्म विषय की दृष्टि से लचर है तो चित्रण की दृष्टि से कहानी में जगहजगह पर कमजोरियां भरी पड़ी हैं. शमशेरसिंह गलत मार्ग पर चल कर अपने भाग्य का निर्माण करता है तो उस की यह सफलता दर्शकों को गुमराह करती है और अंत में जब वह हार मान लेता है तो फिल्म दर्शक को भाग्यवादी बनाती है. इस प्रकार भाग्य के दोनों पक्षों से ही फिल्म बेकार है. विधाता केवल एक सामान्य अपराध फिल्म है.

फिल्म का सराहनीय पक्ष कलाकारों का अभिनय है. दिलीपकुमार और संजीवकुमार दोनों एकदूसरे से बढ़चढ़ कर परदे पर आते हैं और कादर खान के चुस्त संवादों और अपने सशक्त अभिनय के बल पर दर्शकों को बांधे रखते हैं. शम्मी कपूर एक हास्य पात्र के रूप में आया है, बजाए उस के, उस का थुलथुल शरीर अधिक हंसाता है. संजय दत्त ने एक बार फिर बुरी तरह निराश किया है. ऊंचा बोलने पर उस की आवाज बांस की तरह फट जाती है. पद्मिनी कोल्हापुरे 'सात सहेलियों की कहानी' वाले गीत में दर्शकों का घटिया स्तर पर मनोरंजन करती है.

एक लंबे अरसे के बाद कल्याणजी और आनंदजी तथा आनंद बख्शी ने मिल कर लोकप्रिय संगीत दिया है. गीत लचर हैं, पर धुनें मधुर हैं. •

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

21 वर्षीया, ग्रेजुएट, गोरी, अति सुंदर, गृहकार्य दक्ष, 160 सें.मी. कद कन्या हेतु सुंदर, सुयोग्य, इंजीनियर अथवा समकक्ष वर चाहिए, जातिबंधन नहीं, विवाह अति उत्तम. विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4751, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, बी.ए., एलएल.बी., सरकारी सेवारत, स्मार्ट, कद 165 सें.मी., कला व गृहकार्य में कुशल, मंगली कन्या हेतु योग्य वर की आवश्यकता है. पूर्ण विवरण सहित शीघ्र लिखें : 4842, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, ब्राह्मण, 152 सें.मी., एम.ए., बी.एड., मध्य प्रदेश में सरकारी कार्यरत (मूल वेतन 740/-) हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4843, सरिता, नई दिल्ली-110055.

केंद्रीय सेवारत, श्रीवास्तव, एम.ए., 24, 150 सें.मी. हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4844, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुशिक्षित, माहेश्वरी कन्या हेतु दहेज विरोधी, प्रगतिशील वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4845, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, 22 वर्षीया, 153 सें.मी., एम.ए., आई.टी.डी., गौरवर्ण, आकर्षक कन्या हेतु शाकाहारी परिवार, कार्यरत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4846, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, पंजाबी अरोड़ा, अंडर ग्रेजुएट, 157 सें.मी., रंग साफ, शरीर पतला, मध्यमवर्गीय, पिता का निजी व्यवसाय, निजी मकान दिल्ली में, कन्या के लिए योग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4847, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, कुर्मि क्षत्रिय, एम.ए., गृहकार्य में दक्ष, गोरी, 152 सें.मी., सुशिक्षित परिवार की कन्या हेतु शिक्षित, नौकरीशुदा वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4848, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 155 सें.मी., वैश्य अग्रवाल, सुंदर, सुशील, गृहकार्य दक्ष, विधवा, जिस के 3, 4½ साल के दो लड़के हैं, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4849, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, विदेशों में व्यवसाय, परिवार दिगंबर जैन अग्रवाल (मंगल), 23 वर्षीया, सुंदर, स्लिम, पोस्ट ग्रेजुएट कन्या हेतु जैन अग्रवाल, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4850, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, वैश्य, अंडरग्रेजुएट, 152 सें.मी., रंग गेहुआं, सुशील, इकहरा बदन, कार्यदक्ष कन्या हेतु सरकारी कार्यरत वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4851, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, दिगंबर जैन, 152 सें.मी., मैट्रिक, प्रभाकर, साफ रंग, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु बारोजगार वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4852, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, अग्रवाल गोयल गोत्र की, मैट्रिक उत्तीर्ण, घरेलू कार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य सजातीय वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4853, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाउनी ब्राह्मण उपमन्यु गोत्र, एम.ए., बी.एड., कद 168 सें.मी., रंग गेहुआं हेतु कुमाउनी या गढ़वाली ब्राह्मण, 30-35 साल उम्र का, सरकारी नौकरी या 10 साल की प्रैक्टिस वाला वकील वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4854, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय की स्नातक व डिप्लोमा प्रशिक्षित एवं इंटर व डिप्लोमा की छात्रा 24, 19 वर्षीया क्रमशः सुंदर, महत्त्वाकांक्षिणी कन्याओं हेतु उदार विचार, दहेज विरोधी, स्वावलंबी वर चाहिए. शादी शीघ्र. लिखें : वि.नं. 4855, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, गौरवर्ण, निगम कायस्थ, एम.ए. कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. प्रशासनिक अधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर को प्राथमिकता. उत्तम विवाह व्यवस्था. लिखें : वि.नं. 4856, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 22 वर्षीया, कुर्मि क्षत्रिय, एम.एससी. व एम.ए. कन्याओं, गृहकार्य में दक्ष, गोरा रंग बहनों हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. विवाह उत्तम. शीघ्र लिखें : वि.नं. 4857, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, मारवाड़ी अग्रवाल बंसल गोत्र, बी.काम. फाइनल में अध्ययनरत, 157 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्य दक्ष कन्या के लिए सजातीय, सुशिक्षित वर चाहिए. विज्ञापन चयन हेतु, प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4858, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, ग्रेजुएट, श्रीवास्तव (दूसरे) कन्या के लिए सजातीय योग्य वर की आवश्यकता है. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 4859, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय चमार, 23, 20 वर्षीया, सुंदर, सुशील, बी.ए., इंटर पास कन्याओं हेतु दहेज विरोधी योग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4860, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, (धोबी), एम.ए., सुंदर, गृहकार्य में निपुण कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर या अन्य अधिकारी, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4861, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, सुंदर, पीएच.डी., गवर्नमेंट कालिज में लेक्चरार के पद पर सेवारत हिंदू कन्या के लिए आई.ए.एस., इंजीनियर अथवा डाक्टर वर चाहिए.

जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4862, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, सुन्नी मुसलिम, सुंदर, सुशील, एम.ए., 162 सें.मी. कन्या हेतु सेवारत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4863, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, प्रशिक्षित, एम.एससी., सनाढ्य ब्राह्मण कन्या हेतु नानपंजाबी ब्राह्मण वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4864, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, मंगली, एम.ए., सुंदर, स्मार्ट कन्या के लिए अग्रवाल वैश्य परिवार का लड़का चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 4865, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुसंस्कृत एवं संभ्रांत माहेश्वरी परिवार की 23 वर्षीया, गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, ऊंचाई 160 सें.मी., एम.बी.बी.एस. डाक्टर कन्या हेतु सुंदर, सुशील, डाक्टर या अन्य सुशिक्षित, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4867, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित गुजराती वैश्य परिवार की सुंदर, स्लिम, 172 सें.मी., 29 वर्षीया, कलाकार कन्या हेतु वर चाहिए. ओसवाल अग्रवाल, गुजराती, इंजीनियर, डाक्टर, उच्च व्यवसायी, वरिष्ठ अधिकारी को प्राथमिकता. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 4868, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, जैन (पोरवाल), बी.ए. में अध्ययनरत, सुंदर, गृहकार्य दक्ष, विधवा हेतु जैन वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4869, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, 168 सें.मी., एम.ए., भारतीय जीवन बीमा निगम में असिस्टेंट कन्या के लिए सुयोग्य वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. भाई सेना में कप्तान. लिखें : वि.नं. 4870, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, 154 सें.मी., बी.ए., गेहुआं रंग, स्लिम, गृहकार्य में दक्ष, सुंदर कन्या हेतु दहेज विरोधी, अंतरजातीय विवाह में विश्वास रखने वाले कार्यरत, आत्मनिर्भर, चरित्रवान वर की आवश्यकता है. लिखें : वि.नं. 4871, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, 165 सें.मी., एम.ए., बी.ए., अध्यापिका, विवाह के तुरंत बाद कानूनी तलाक प्राप्त प्रतिभासंपन्न कन्या के लिए सुयोग्य वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. सेना के अफसरों को प्राथमिकता. भाई सेना में कप्तान. लिखें : वि.नं. 4872, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 155 सें.मी., राजस्थानी मैढ़ क्षत्रिय, स्नातकोत्तर कन्या हेतु शिक्षित, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4873, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुसंपन्न, 31 वर्षीया, आंध्र परिवार, बंबई निवासी, सुशील, सुंदर, लंबी, स्लिम, कार्यदक्ष कन्या हेतु बंबई, विदेश में कार्यदक्ष योग्य डाक्टर, इंजीनियर, उच्च सेवारत या व्यवसायरत आत्मनिर्भर हिंदू वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. जाति, प्रांत बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4874, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, एम.ए., एम.एड., गौरवर्ण, अत्यंत सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, प्रवक्ता, 1,000/-, कन्या हेतु माहेश्वरी, अग्रवाल वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4914, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, वार्ष्णेय, 155 सें.मी., डबल एम.ए., सुंदर, स्लिम कन्या हेतु वैश्य वर्णीय योग्य वर चाहिए. शीघ्र विवाह लिखें : वि.नं. 4915, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीया, अग्रवाल, अध्यापिका के लिए सुयोग्य वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. प्रत्यक्ता या विधुर भी स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 4916, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संभ्रांत प्रतिष्ठित कोरी परिवार की 21 वर्षीया, गौरवर्णीय, सुंदर कन्या हेतु सजातीय उच्चपदाधिकारी वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4917, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, मारवाड़ी बंसल, सुंदर, एम.ए. (संस्कृत), मध्यम वर्गीय परिवार की 158 सें.मी. कन्या हेतु सजातीय एवं सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4918, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, अरोड़ा सिख, एम.ए., बी.एड., केंद्रीय विद्यालय, राजस्थान, टीचर, वेतन 1,050/- रु., गेहुआं रंग, 158 सें.मी., 38 कि.ग्रा. कन्या के लिए सुयोग्य, कार्यरत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4919, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, गोरी, अति सुंदर, 157 सें.मी., एम.ए., बी.एड. अध्ययनरत कन्या हेतु योग्य वर चाहिए, दहेज नहीं. लिखें : वि.नं. 4920, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, श्रीवास्तव, बी.काम., 152.5 सें.मी., इकहरी, गौरवर्ण, गृहकार्यों में निपुण, शिक्षिका कन्या हेतु योग्य कायस्थ वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4921, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खानदानी सुसंस्कृत जमींदार परिवार की आकर्षक, सुंदर, स्लिम, 25, 162 सें.मी., एम.ए., बी.एड., साहित्यरत्न हेतु निर्व्यसनी, राजपत्रित, बैंक अधिकारी, इंजीनियर, डाक्टर, व्यवसायी वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4922, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28/160 सें.मी., एम.ए., सुंदर, गौरवर्ण, अग्रवाल कन्या हेतु शिक्षित वर चाहिए. विवाह उच्च कोटि. लिखें : वि.नं. 4933, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, साहू वैश्य, 155 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, पोस्ट ग्रेजुएट, डिप्लोमा इलेक्ट्रोनिक्स, रेडियो, इंजीनियरिंग, कंप्यूटर, कन्या के लिए सजातीय, उच्च शिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. गुजरात में प्रथम पसंदगी. लिखें : वि.नं. 4934, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी अरोड़ा, घरेलू, आकर्षक, डबल एम.ए., बी.एड. पोस्ट ग्रेजुएट, टीचर, 155 सें.मी., 29 वर्षीया कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4935, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 153 सें.मी., स्लिम, सुंदर, गोरी, एम.ए., कौशिक गोत्रीय गौड़ ब्राह्मण कन्या, भाई बैंक अधिकारी, पिता रिटायर्ड हेतु सजातीय, सुव्यवस्थित योग्य वर की आवश्यकता है. उत्तम शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 4940, सरिता, नई दिल्ली-110055.



वधू चाहिए

24 वर्षीय, पुरी खत्री, 170 सें.मी., निजी व्यवसाय, बी.काम., मासिक आय 1,500/- रुपए युवक हेतु आकर्षक वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4767, सरिता, नई दिल्ली-110055.

46 वर्षीय, विधुर (हिंदू), मैट्रिक, सेवारत (बिहार), 1,200/- वेतन (तीन आत्मनिर्भर बच्चे) हेतु गृहणी चाहिए. विधवा, तलाकशुदा, आंशिकविकलांग स्वीकार्य. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4777, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीय, 160 सें.मी., कोली, सीनियर क्लास प्रथम, ओ.एन.जी.सी. युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सजातीय, गृहकार्य में निपुण कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण प्रथम बार में लिखें : वि.नं. 4778, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, 170 सें.मी., गोरा, स्वस्थ, क्षत्रिय, सपरिवार, बी.एससी., एलएल.बी. फर्स्ट क्लास, मेरिट से पास, आई.ए.एस. ट्रेनिंग कर रहे युवक के लिए उपयुक्त कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4793, सरिता, नई दिल्ली-110055

संभ्रांत, माहेश्वरी परिवार के 24 वर्षीय, ऊंचाई 170 सें.मी., एम.एससी. कैमिस्ट्री प्रथम श्रेणी, पब्लिक लिमिटेड कंपनी में बिजनेस एक्जीक्यूटिव पोस्ट पर कार्यरत, मासिक आय चार अंकों में युवक के लिए सुंदर, सुशील एवं सुशिक्षित सजातीय वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4866, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चिकित्सा हेतु विदेश गामी उद्योगपति (उत्तर प्रदेशीय वर्तमान कलकत्ता निवासी) पिता के उत्तराधिकारी पुत्र जो अपनी इंडस्ट्री चलाता है, 22 वर्षीय, कद 170 सें.मी., गेहुआं रंग, अंडर ग्रेजुएट, स्वस्थ, अच्छे व्यक्तित्व वाले चरित्रवान युवक हेतु अति सुंदर, गोरी, शिक्षित, गृहकार्य निपुण, मृदुभाषी, क्षत्रियवंशी कन्या के अभिभावक विवाह हेतु जन्मपत्री सहित पत्र व्यवहार करें. दहेज मुक्त अति उत्तम तथा अति शीघ्र विवाह. आर्यसमाजी अलगगराय. लिखें : वि.नं. 4875, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, भटिया, 163 सें.मी., मासिक आय चार अंकीय युवक हेतु सुंदर वधू चाहिए. सरकारी कार्यरत को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 4876, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, सनाढ्य ब्राह्मण, एम.ए., 170 सें.मी., मासिक आय 800/-, स्टेट बैंक सेवारत, मंगली युवक हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित, गृहकार्य में दक्ष कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4877, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय. एस.एससी. पास, उत्तरप्रदेशीय (ओझा) परिवार, हांगकांग में सेवारत, सुंदर, स्वस्थ युवक हेतु सुंदर, सुशील, कन्या चाहिए. दहेज बंधन नहीं. प्रथम बार में पूर्ण विवरण के साथ लिखें : S.R. Oza, 59, Wyndham Street 4th Floor, Central Hong Kong.

27 वर्षीय, राजपूत तंवर, 175 सें.मी., सरकारी कर्मचारी, आय 700/- मासिक (शादी के 3 मास पश्चात पूर्व पत्नी के चारित्रिक कारणों से संबंध विच्छेद) युवक हेतु सच्चा प्यार देने वाली सेवारत कुंआरी कन्या या विधवा चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4878, सरिता, नई दिल्ली-110055.

43 वर्षीय, 172 सें.मी., 75 कि.ग्रा., स्वस्थ, पांच से छः अंकीय वार्षिक आय, अग्रवाल विधुर हेतु स्वस्थ, सुंदर, शिक्षित जीवनसाथी की आवश्यकता है. आदर्श विवाह, विधवा, परित्यक्ता भी विचारणीय, जाति-बंधन नहीं. सविवरण लिखें : वि.नं. 4879, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24½ वर्षीय, पंजाबी, मांगलिक, खत्री, सिविल इंजीनियर राजपत्रित अधिकारी, 172 सें.मी., पिता क्लास वन आफिसर हेतु सुंदर स्लिम वधू चाहिए. कुंडली सहित पूर्ण विवरण दें. लिखें : वि.नं. 4880, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23½ वर्षीय, 163 सें.मी., गर्ग गोत्रीय, तृतीय वर्ष एम.बी.बी.एस. छात्र हेतु सजातीय, सरिता मुक्ता जैसे विचारों वाली वधू चाहिए. अंशकालीन व्यवसायी, मासिक आय चार अंकों में, राजस्थान या दिल्ली निवासी ही पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4881, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, अग्रवाल, 170 सें.मी., स्मार्ट, राष्ट्रीयकृत बैंक में कार्यरत, आय 1,250/- मासिक हेतु अति सुंदर वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4882, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 165 सें.मी., गेहुआं रंग, सनाढ्य ब्राह्मण, अच्छी आय वाले, विधि व्यवसाय अधिवक्ता के लिए सुंदर, शिक्षित, ब्राह्मण वधू चाहिए. समस्त विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4883, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, जूनियर इंजीनियर (सिविल), 170 सें.मी. हेतु सुंदर, गौरवर्ण, सुशील वधू चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4884, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 165 सें.मी., खंडेलवाल, पोस्ट ग्रेजुएट, डाक्टर हेतु खंडेलवाल, अग्रवाल, जैन, माहेश्वरी, ब्राह्मण डाक्टर, सुंदर वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4885, सरिता, नई दिल्ली-110055.

43 वर्षीय, बैंक सेवारत, मासिक आय 2,500/- तलाकशुदा को जीवनसंगिनी चाहिए. विधवा, तलाकशुदा को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 4886, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, 174 सें.मी., बी.एससी., गोयल, स्मार्ट, 700/- मासिक, राजकीय सेवारत युवक हेतु ग्रेजुएट, केवल सजातीय, गृहकार्य दक्ष, सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4887, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, खत्री, सुंदर, स्वस्थ, व्यवसायरत, संपन्न युवक के लिए सजातीय, सुंदर, स्मार्ट कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4888, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, राजपूत, शासकीय सेवारत, आफीसर ग्रेड, वेतन चार अंकीय, सुंदर, गौरवर्ण, आकर्षक, सुशिक्षित, सजातीय कन्या 23 तक चाहिए. लिखें : वि.नं. 4889, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीय, तलाकशुदा, केंद्रीय कर्मचारी सीनियर क्लर्क के लिए अविवाहित निस्संतान विधवा, तलाकशुदा, गृहकार्य दक्ष जीवनसाथी चाहिए. जाति एवं कोई बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4890, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 175 सें.मी., बी.ए., एलएल.बी., मैढ़ क्षत्रिय, स्वर्णकार, इंडियन एअरलाइंस में स्थायी सेवारत पाइलट, मासिक आय 4,500 हेतु प्रतिष्ठित परिवार की सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4891, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, 165 सें.मी., रंग सांवला, सुडौल शरीर, मैट्रिक युवक हेतु हिंदुस्तानी, सुंदर वधू चाहिए, जो अच्छा निजी व्यवसाय तथा संपूर्ण मदद दे सके. वधू एक हाथ या पैर से कमजोर भी स्वीकार्य. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4892, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, कुंआरे, फील्ड आफिसर युवक हेतु वधू चाहिए. सेवारत को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 4893, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42 वर्षीय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, कानूनन तलाकशुदा, 72 कि.ग्रा. 165 सें.मी., चश्मारहित, गौरवर्ण, विद्वान लेखक, सरल, विनोदी, सत्यप्रेमी, प्रगतिशील, संभाव्य, प्रोफेसर को दहेज बिन बेरोजगार, कुमारी अनाथ, तलाकशुदा, विधवा, गोरी, सुंदर, सुशील वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4894, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, जाति नाई, यूरोप में सुप्रतिष्ठित पिता, केंद्रीय कर्मचारी हेतु वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 4895, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, माहेश्वरी, 160 सें.मी., चार्टर्ड एकाउंटेंसी फाइनल में तथा कार्यरत युवक हेतु सुंदर वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 4896, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25½ वर्षीय, 175 सें.मी., स्मार्ट, गौड़ ब्राह्मण, इंजीनियर, मासिक वेतन 1,835/- हेतु सुशिक्षित, अति सुंदर, 22 वर्ष तक की कन्या चाहिए. दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4897, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तलाकशुदा, 44 वर्षीय, निस्संतान, आय 1,500/-, अपना मांटेसरी स्कूल हेतु ग्रेजुएट बेसहारा वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4898, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उड़ीसा निवासी, अग्रवाल गर्ग गोत्र, 22 वर्षीय, सुंदर, स्वस्थ, व्यवसायी, आय चार अंकों में युवक हेतु गोरी, पतली, सुंदर, स्वस्थ कन्या चाहिए. उड़ीसा निवासी को प्राथमिकता, दहेज नहीं. लिखें : वि.नं. 4899, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, पंजाबी खत्री, व्यवसायी, आय चार अंकों में, सुंदर, स्मार्ट युवक हेतु गौरवर्ण, गृहकार्य दक्ष पंजाबी वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4900, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, अरोड़ा, डाक्टर युवक हेतु सजातीय डाक्टर वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4901, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 168 सें.मी., ग्रेजुएट, बीसा अग्रवाल (तायल) चार अंकीय आय, व्यवसायी हेतु सुंदर, सुशिक्षित, प्रतिष्ठित परिवार कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4902, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैधानिक अलग हुए, राजकीय महाविद्यालय प्रोफेसर, 36 वर्षीय हेतु नौकरीशुदा, टाइप, सिलाई दक्ष, घरेलू जीवनसाथी चाहिए. जाति, धर्म, भाषा बंधन नहीं. एकाकी, बेसहारा, संतानहीन विधवा, तलाकशुदा मान्य. लिखें : वि.नं. 4903, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 29 वर्षीय (दिल्ली निवासी) निजी व्यवसाय, आय चार अंकीय में, तलाकशुदा के लिए सुशील स्वभाव वाली योग्य जीवनसंगिनी चाहिए. बिना दहेज, साधारण शादी, 22 से 27 वर्षीया विधवा भी विचारणीय. लिखें : वि.नं. 4904, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रेलवे सर्विस नवयुवक, 32,640., ग्रेजुएट, संपन्न परिवार, कानूनन तलाकशुदा के लिए सुशील वधू चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं, शीघ्र लिखें : वि.नं. 4905, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कानपुर वासी, 25 वर्षीय, सुंदर, अव्यसनी, जैन, नाक रोगों में परास्नातक छात्र, डाक्टर हेतु गौरवर्ण, विशेष सुंदर, शाकाहारी, प्रगतिशील, प्रबुद्ध, शहरी कन्या चाहिए. जातिबंधन मुक्त. लिखें : वि.नं. 4906, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज, 30, 157 सें.मी., एम.काम., सुंदर, स्मार्ट, 1,100/- मासिक, सीनियर आडीटर हेतु शिक्षित, सजातीय कन्या चाहिए, जन्मपत्र सहित लिखें : वि.नं. 4907, सरिता, नई दिल्ली-110055.

55 वर्षीय, रेल सेवारत, मासिक आय 1,400/-, जाति अग्रवाल, विधुर को निस्संतान जीवनसाथी चाहिए. लिखें : वि.नं. 4908, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, 163 सें.मी., अग्रवाल गर्ग, प्रतिष्ठित, व्यवसाय युवक हेतु अति सुंदर, दहेज विरोधी कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4909, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 170 सें.मी., कान्यकुब्ज ब्राह्मण, सब इंजीनियर हेतु सजातीय कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4910, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, ग्रेजुएट, अति सुंदर, सदाचारी व्यापाररत, कलकत्तावासी, शांडिल्य गोत्रीय (बुंदेलखंडीय) जुझौतिया ब्राह्मण हेतु सजातीय उपयुक्त कन्या चाहिए. संपूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 4911, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 180 सें.मी., गौरवर्ण, कुर्मि क्षत्रिय, उ.प्र. निवासी, संपन्न जमींदार परिवार, इंडियन एअरलाइंस में सेवारत, बी.ई. पास युवक हेतु सजातीय, स्वस्थ, सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्य में दक्ष, शाकाहारी वधू चाहिए. भाई डाक्टर व जज. मेडिको तथा इंजीनियर को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 4912, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, मंगलीक, बंसल अग्रवाल, ग्रेजुएट, 165 सें.मी., अच्छा कारोबार, आय चार अंकों में युवक हेतु सजातीय घरेलू वधू चाहिए. कुंडली सहित लिखें : वि.नं. 4913, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, अग्रवाल, आंशिक विकलांग, बैंक कर्मचारी, 1,200/- रुपए युवक के लिए जीवनसाथी

व्यक्तिगत विज्ञापन उत्तरदाताओं के लिए सूचना

सरिता में वैवाहिक विज्ञापन पाठकों की सेवा के लिए प्रकाशित किए जाते हैं. इन विज्ञापनों से आप अपने सीमित क्षेत्र में ही नहीं, पूरे देश में वैवाहिक संबंध स्थापित कर सकते हैं.

वैवाहिक विज्ञापनों का उत्तर देते हुए यदि आप निम्न बातों का ध्यान रखेंगे तो आप को, हमें और विज्ञापनदाताओं को काफी सुविधा रहेगी :

1. वैवाहिक पत्रव्यवहार बंद लिफाफे में करें.

2. पहली बार में ही लड़की व लड़के की आयु, शिक्षा, रंग, ऊंचाई, वजन, व्यवसाय, आय आदि पूरा विवरण लिखें.

3. विज्ञापनदाताओं के पास भेजे जाने वाले लिफाफे पर "विज्ञापन विभाग" "संपादक, सरिता" आदि न लिखें. केवल "वि.नं.– सरिता, नई दिल्ली-110055." पते के रूप में लिख देने पर पत्र हम तक पहुंच जाएंगे.

4. यदि आप कई विज्ञापनदाताओं से पत्रव्यवहार करना चाहते हैं तो सब विज्ञापनदाताओं के लिए विज्ञापन नं. लिखे लिफाफे एक ही बड़े लिफाफे में रख कर "वैवाहिक विज्ञापन विभाग, सरिता, नई दिल्ली-110055" के पते पर भेज दीजिए. विज्ञापन विभाग द्वारा आप के पत्र संबंधित विज्ञापनदाताओं को अलगअलग भेज दिए जाएंगे. इस से आप को सब लिफाफों पर टिकट नहीं लगाने पड़ेंगे और पत्र भेजने में सुविधा भी रहेगी.

5. वैवाहिक विज्ञापन केवल पत्रव्यवहार के लिए संपर्क सूत्र का काम करते हैं. विवाह तय करने से पहले संबंधित व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त किए बिना और आवश्यक जांचपड़ताल किए बिना कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए.

चाहिए. लिखें: वि.नं. 4936, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, बीसा अग्रवाल, कद 173 सें.मी., सरकारी ठेकेदार, आय 1,500/- मासिक युवक हेतु सजातीय वधू चाहिए. सेवारत कन्या को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 4937, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 28, आयुर्वेदाचार्य, गौरवर्ण डाक्टर हेतु सुंदर, शिक्षित कन्या चाहिए. जाति/कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 4938, सरिता, नई दिल्ली-110055.



वरवधू चाहिए



बी.ए. फाइनल में अध्ययनरत, 20, 10 वर्षीया, सुंदर, गृहकार्य दक्ष, श्रीमाली ब्राह्मण बहनों एवं 26 वर्षीय प्रवक्ता भाई हेतु सुंदर व योग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4803, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½ वर्षीय, कहार, लड़की, 150 सें.मी., सर्वगुणवती तथा इकलौता भाई, 25 वर्षीय बिजनेस द्वारा आय 1,500/- मासिक, दोनों अंडरग्रेजुएट, साफ रंग, अति सुंदर, दिल्ली निवासी, अपना मकान हेतु वरवधू चाहिए, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 4923, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (गर्ग), 26 वर्षीय, एम.एस. कर रहे, कद 178 सें.मी., अच्छे व्यक्तित्व वाले युवक हेतु गौरवर्ण, आकर्षक नाकनक्श वाली कन्या चाहिए. डाक्टर को वरीयता तथा अग्रवाल (र.नं.), 20 वर्षीया एम.एससी., कद 163 सें.मी., स्लिम, सुंदर, आकर्षक कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4924, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, क्रिश्चयन, जूनियर इंजीनियर, [illegible] वर्षीया, अध्यापिका एवं 22 वर्षीया, अंगरेजी, एम.ए. के लिए उच्चशिक्षित वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4925, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वर्णकार, मध्यप्रदेशीय, 23 वर्षीय, गोरे, ऊंचाई 157 सें.मी., मैट्रिक, निजी व्यवसाय, मांगलिक युवक हेतु वधू एवं 19 व 18 वर्षीया क्रमशः गोरी एवं सांवले रंग की 155 सें.मी., 151 सें.मी., इंटर, आठवीं, मांगलिक बहनों हेतु वर चाहिए. उत्तम चयन, उत्तम शादी. लिखें: वि.नं. 4926, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, कुर्मि क्षत्रिय, सुंदर, ग्रेजुएट कन्या तथा 26 वर्षीय, ग्रेजुएट, निजी व्यवसाय में संलग्न युवक हेतु वर तथा वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4927, सरिता, नई दिल्ली-110055.



गोद विज्ञापन

14 वर्षीय, इंटरमीडिएट, मुसलिम लड़का, मातृवात्सल्य हेतु धर्म भेद रहित किसी निसंतान दंपती का गोदपुत्र बनने का इच्छुक. लिखें: वि.नं. 4928, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एक 12 वर्षीया कन्या के संपन्न सरदार मातापिता को 6 माह तक की [illegible] गोद चाहिए. लिखें: वि.नं. 4939, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

बुनाईकढ़ाई में दक्ष, शिक्षित, दिल्ली निवासी महिलाओं की पार्ट टाइम कार्य के लिए आवश्यकता है. आवेदन करें. सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्या आप बच्चों का प्रेम से मां के रूप में पालन करने में समर्थ, साक्षर तथा स्वस्थ हैं? क्या घरेलू कार्य में निपुण और आप की आयु 30-40 वर्ष है? यदि ऐसा है तो आप को बाल ग्राम में अवसर मिल सकता है. यहां प्रत्येक घर में 8-9 बच्चों की देखरेख 'मां' द्वारा की जाती है.

एक वर्ष के प्रशिक्षण के उपरांत वेतनक्रम रु. 250-15-400 इबी./20-500. प्रशिक्षण के दौरान निःशुल्क भोजन तथा आवास की सुविधा और रु. 100/- मासिक भत्ता मिलेगा.

कृपया अपना संपूर्ण विवरण निम्न पते पर भेजें: श्री ज.न. कौल, सेकेट्री जनरल, एस.ओ.एस. भारतीय बालग्राम, 507, विशाल भवन, 95 नेहरू प्लेस, नई दिल्ली.

व्यक्तिगत विज्ञापन दरें

सरिता : 2.50 रु. प्रति शब्द
मुक्ता : 50 पैसे प्रति शब्द
सरिता व मुक्ता : 2.75 रु. प्रति शब्द

मूल विज्ञापन के साथ लिखें: "वि.नं.– सरिता, नई दिल्ली-110055" इन 6 शब्दों का मूल्य आवश्यक है. विज्ञापनदाता के "निजी पते वाले" (विदेशों को छोड़ कर) व "फोटो सहित" शब्द वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते.

विशेष छूट : लगातार दो अंकों में एक ही विज्ञापन छपवाने पर 20 प्रतिशत अतिरिक्त छूट दी जाएगी.

पूर्ण विवरण के लिए लिखें:

मुख्य विज्ञापन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस पत्रिका विभाग,
ई-3, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-110001.
फोन नं.- 351313.





अक्तूबर (प्रथम) 1982
अंक 659

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

कथा साहित्य

धारावाहिक उपन्यास

लेख

संपादक व प्रकाशक विश्वनाथ

... प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ ... दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स. प. प्रा. ..., ...बाद में मुद्रित.

..., प्रकाशन, एजेंसी व ग्राहक विभाग: 3-ई, ... एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.
... कार्यालय : 79 ए. मित्तल चैंबर, नरीमन पाइंट, ... फोन नं. 232409.
... कार्यालय : 6 एस्स, खलील शीराज एस्टेट, ... रोड, मद्रास. फोन नं. 88138.
... विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
...: एक प्रति 3.25 रु., वार्षिक : 78 रु., ... में (समुद्री डाक से) : 160 रु. यूरोप में (हवाई ... से) : ... रु. तथा अमरीका में (हवाई डाक से) : ... रु.

कविताएं



स्तंभ

आवरण : अनंत देसाई

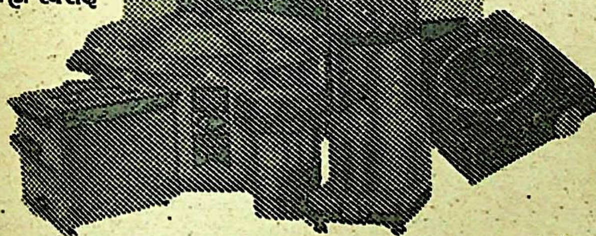
रसोईघर में बिजली की बचत के ४ कमखर्चीले उपाय

बजाज सुझाए



आज ही खरीदें

बजाज ही खरीदें



जहां बिजली की बरबादी की सबसे ज्यादा संभावना है, वहीं बजाज बिजली की बचत के साधन आप को देता है—जी हाँ, आपके रसोईघर में। बजाज के स्टोव, टोस्टर, मिक्सर, कुकर आदि, आपकी मेहनत भी बचाते हैं। सबके सब आई.एस.आई. के मानदंडों के अनुसार बने यानी क्वालिटी की गारंटी। और फिर देशभर में फैले ३५०० विक्रेताओं के जरिए तत्पर सेवा भी आपको मिलती है; ये बात अलग है कि आपको उसकी जरूरत ही न पड़े।



प्रेशर कुकर, मिक्सर, ओवन, इस्त्री, पंखे, वाटर-फिल्टर, गैस स्टोव, टोस्टर, वाटर हीटर

Heros'-BE-682 HN



प्रेस विधेयक और केंद्र सरकार

बिहार के मुख्य मंत्री जगन्नाथ मिश्र के संबंध में आप के विचार (सरित प्रवाह/सितंबर/प्रथम) सचाई के प्रतीक हैं. बिहार में हरिजनों की हत्याओं, कोयला खानों में होने वाले घोटालों, दमन, गुंडागर्दी, भागलपुर जेल में बंदी कैदियों को अंधा किए जाने की घटनाओं की प्रेस द्वारा पोल खोलने से बिहार सरकार बौखला गई है. इसी लिए सरकार नएनए कानूनों से प्रेस की आजादी को समाप्त कर देने को उतारू है.

बिहार सरकार ने प्रेस विरोधी विधेयक को पत्रकारिता के हित में बताया है, किंतु ऐसा कहना वास्तव में लोगों को धोखा देना है. देश के समाचारपत्रों, पत्रिकाओं, पत्रकार संगठनों ने इस विधेयक को काले कानून की संज्ञा दी है, जो उचित ही है.

केंद्र सरकार का कहना है कि इस विधेयक के बारे में उस की सलाह नहीं ली गई. अगर केंद्र सरकार की बिना सहमति के यह विधेयक पास हुआ है तो केंद्र सरकार को चाहिए कि वह राष्ट्रपति को यह परामर्श दे कि वह इस विधेयक को अपनी स्वीकृति न दें.

—मलूकचंद गौतम

*

यह कैसा उपकार?

तमिलनाडु सरकार की स्कूली बच्चों को मुफ्त भोजन बांटने की योजना तथा उत्तर प्रदेश की खेतिहर मजदूरों की दुर्घटनाओं का मुआवजा देने की योजना पर आप के विचार (सरित प्रवाह/अगस्त/प्रथम) ठीक हैं.

वास्तव में हमारे राजनीतिबाजों के दिमाग की दाद देनी होगी. वे ऐसी योजनाएं बनाते हैं जिन से होने वाले लाभहानि को आम जनता नहीं समझ पाती. ऊपर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो इन योजनाओं को बना कर इन नेताओं ने गरीबों पर बड़ा उपकार किया है, परंतु आप की इस टिप्पणी से इन का फरेब आसानी से समझ में आ गया. गरीबों का पैसा ले कर उन्हीं के बच्चों को भोजन कराना ही इन की योजना है. वाह साहब, मान गए इन्हें भी. क्या खूबसूरत फरेब है.

—नितिनकुमार बक्षी

*

'जब शंकराचार्य बौखला उठे': कुछ प्रतिक्रियाएं

शंकराचार्य ने अपनी भेंटवार्ता (सितंबर/प्रथम) के दौरान सरिता के प्रतिनिधि पर खीज उतारी और बाद में प्रश्नों के उत्तर देने में टालमटोल कर गए.

ये मठाधीश अपने अंधविश्वासी अनुयायियों के सहयोग से वर्षों से हिंदुओं को गुमराह कर के अपनी गद्दी सुरक्षित बनाए हुए हैं. सभी शंकराचार्यों की कारगुजारियां तो इसी से स्पष्ट हो जाती हैं कि इन्होंने गो हत्या के विरुद्ध तो देश में खूब शोर मचाया, लेकिन शूद्र कहे जाने वाले मानवों के साथ समानता का व्यवहार किए जाने के बारे में बोलते समय इन की जीभ में कांटा चुभता है. इन्हीं के कारनामों से हमारे समाज में बिखराव आता रहा है, जिस का जीताजागता रूप हैं पाकिस्तान एवं बंगला देश के मुसलमान और भारत में पनप रहे ईसाई मिशनरी. इन्हीं की ऊंचनीच भावनाओं के कारण आज भी मीनाक्षीपुरम जैसे स्थानों में हरिजनों को सामूहिक रूप से धर्म परिवर्तन करने पर विवश होना पड़ता है.

—श्यामसिंह राजोरा

*

शंकराचार्य की बौखलाहट स्वाभाविक ही थी. सरिता संपादक के व्यक्तित्व को भले ही वह खीज या क्रोध के कारण साक्षात्कार में लाए हों, पर इस से तो संपादक की कार्यक्षमता और सफलता ही उभर कर आई है. हां, शंकराचार्य का यह प्रश्न अवश्य तर्कसंगत था कि सरिता में हिंदू धर्म की त्रुटियों पर ही प्रहार किया जाता है, अन्य धर्मों की त्रुटियों या भ्रांतियों पर क्यों नहीं. परंतु संभवतः पूर्वाग्रह के कारण वह इस पर उचित जोर नहीं डाल सके.

—ब्रह्मप्रकाश गुप्त

*

लेख 'जब शंकराचार्य बौखला उठे' से स्पष्ट हो जाता है कि हमारे तथाकथित धर्मगुरु कितने धार्मिक (नैतिक) हैं. लेखक से बातचीत के दौरान बारबार सरिता के संपादक के लिए अशोभनीय बातें कहने से लगा कि इन की दुकानदारी के बारे में कुछ कहने से उन्हें कितना बुरा लगता है.

—गोवर्धन कोठारी

*

मन को छू गई

कहानी 'चिराग जल उठे' (सितंबर/प्रथम) मन की गहराइयों को छू गई. मूनिस जैसे न जाने कितने अबोध बच्चे अपनी सौतेली मां के व्यवहार से तंग आ कर घर से भाग जाते हैं और दरदर की ठोकरें खाते फिरते हैं. जिस नारी को दया व ममता की मूर्ति माना गया है, वह इतनी क्रूर भी हो सकती है, इस पर सहज ही विश्वास नहीं हो पाता. प्रेम, वात्सल्य की मूर्ति कही जाने वाली नारी भी बच्चों पर अत्याचार कर सकती है, यह पढ़ कर कुछ आश्चर्य सा होता है. क्या बच्चों पर अत्याचार करते वक्त उस की ममता उसे नहीं धिक्कारती?

—बृजबाला अग्रवाल

*

शिक्षाप्रद लेख

लेख 'कंवलजीत' (अगस्त/ द्वितीय) ने उन व्यक्तियों को सोचने पर जरूर मजबूर किया होगा जो देवदेवताओं में अटूट विश्वास रखते हैं और यह

कंवलजीत की ही तरह पागलपन कर बैठते हैं. इस लेख को पढ़ने के बाद शायद वे ऐसा गलत कदम कभी नहीं उठाएंगे.

सरिता की एक अन्य विशेषता यह भी है कि इस में हमें सामाजिक, पारिवारिक व ऐतिहासिक सभी प्रकार की कहानियां पढ़ने को मिलती हैं. —बृजवाला

*

'ईश्वर कैसा है': कुछ प्रतिक्रियाएं

लेख 'ईश्वर कैसा है' (अगस्त/द्वितीय) धर्म के ठेकेदारों द्वारा भोलीभाली जनता में ईश्वर के संबंध में फैलाई गई भ्रांतियों व अंधविश्वासों को उजागर करता है. सचमुच यह लेख जनमानस के लिए बहुत ही उपयोगी है.

यह कटु सत्य है कि ईश्वर के नाम पर जितने अधिक अत्याचार, अपराध और खूनखराबे हुए हैं, उतने शायद दूसरे किसी कारण से नहीं हुए हैं. हमारे मुल्क का सांप्रदायिक सूत्र इतना निर्बल रहा है कि झगड़े जातिवाद का रूप धारण कर के हत्याकांड बन जाते हैं. यह इसी जातिवाद का परिणाम है कि आज 35 वर्ष की आजादी के बाद भी देश के पददलित, शोषित व सर्वहारा समाज के लोगों को स्वाभिमान से जीना नसीब नहीं हो पाया है. —मलूकचंद

*

ईश्वर संबंधी लेख में व्यक्त विचार विचारोत्तेजक और सटीक हैं. बचपन से ही हर हिंदू को पट्टी पढ़ाई जाती है कि दान करो, स्नान करो, हवन करो, तीर्थयात्रा करो तो सब पाप धुल जाएंगे, इस से भगवान प्रसन्न होंगे, तुम मालामाल हो जाओगे. परंतु देखने की बात है कि इन सब में धर्म के धंधेबाज स्वयं विश्वास नहीं करते अन्यथा वे स्वयं इन के द्वारा मालामाल क्यों नहीं हो जाते? भगवान को क्यों खुशामदपसंद, द्वेषी, लालची और अन्य मानवीय कमजोरियों से युक्त समझा जाए? क्या सिर्फ अपना नाम सुनने, कुछ पैसों या चीजों के चढ़ने या कहीं स्नान करने या माथा टेकने से वह प्रसन्न हो जाएगा और दूसरों का माल छीन कर आप को दे देगा? —भूपेश पांडे

*

वास्तव में यह कोई नहीं जानता कि ईश्वर कैसा है. यदि ईश्वर है भी तो उसे किसी ने देखा ही नहीं है.

धर्म के धंधेबाजों ने किसी भी पाप से उबरने का उपाय यह बताया है कि पूजापाठ करो या चढ़ावा चढ़ाओ व मठ और मंदिर बनवाओ. इन्हीं उपायों के बल पर ये धंधेबाज अपनी दुकानदारी चलाते रहे हैं. इन उपायों के प्रचार ने ही हिंदुओं को आदि काल से अंधविश्वासी बनाया है. —श्यामसिंह

*

बधाई की पात्रा

लेख 'रूढ़ियों के घेरे में विश्नोई समाज' (अगस्त/प्रथम) लेखिका का एक साहसिक कदम है. आज अपनी जाति या अपने समाज के बारे में कोई भी न तो बुराई करना चाहेगा और न ही सुननापढ़ना पसंद करेगा. पर लेखिका ने अपनी जाति एवं समाज की कुरीतियों एवं दुष्प्रभावों को सरिता के माध्यम से लाखों पाठकों के समक्ष जिस तरह खुले दिल से रखा है, उस के लिए वह बधाई की पात्रा है. —शिवदंगोले मूंडे

*

उचित मार्गदर्शन

उदयपुर पर दी गई जानकारी (अगस्त/द्वितीय) काफी हद तक पर्यटकों का उचित मार्गदर्शन करती है.

उदयपुर में कठपुतलियों के कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाला भारत प्रसिद्ध संस्थान भारतीय लोक कला मंडल तथा हिंदुस्तान जिंक स्मेल्टर भी पर्यटन की दृष्टि से प्रमुख हैं. —चांदमल तोपनीवाल

*

'नई जमींदारी' : कुछ प्रतिक्रियाएं

व्यंग्य 'नई जमींदारी' (अगस्त/द्वितीय) में सरकारी कार्यालयों का चित्रण किया गया है, परंतु लेखिका दो स्थानों पर चूक गई है. कहानी के आरंभ में उल्लिखित कार्यालय के बारे में बताया गया है कि वहां कर्मचारी वेतन लेने के लिए कतारें लगाते हैं. परंतु इस के ठीक बाद रामनाथ नामक पात्र उपनिदेशक के पास वेतन लेने जाता है तो वह रजिस्टर से रसीदी टिकट चिपका कर उस के हस्ताक्षर लेते हैं. मैं नहीं समझता कि किसी कार्यालय में खजांची के स्थान पर उपनिदेशक जैसे अधिकारी वेतन वितरित करते होंगे.

दूसरी चूक उपनिदेशक के व्यक्तित्व के गठन में की गई है जो अपने संयुक्त निदेशक के मौखिक आदेश पर रामनाथ का रोका वेतन तथा उस के विरुद्ध काररवाइयां स्थगित करने पर विवश हो जाता है. यहां उपनिदेशक की भूमिका पलायनवादी है और ऐसे ही पलायनवादियों एवं भयातुरों के कारण आज हमारा सरकारी तंत्र निरंतर चौपट होता जा रहा है. —विनय कुमार

*

'नई जमींदारी' व्यंग्य पढ़ कर ऐसा लगा कि यह व्यंग्य नहीं बल्कि वास्तविक कहानी है. —अवधेशकुमार वर्मा

*

मुझे ही दोषी ठहराया

लेख 'घर में ही बलात्कार' (जुलाई/द्वितीय) पढ़ा. इसी संदर्भ में मेरा हाल ही का यह अनुभव है कि जब मेरी पत्नी ने मेरे छोटे भाई से अनुचित संबंध स्थापित किए तो मैं ने यह लेख पढ़ कर अपने मातापिता के सामने उन की पोल खोल दी. इस पर मेरे मातापिता ने मेरी पत्नी और छोटे भाई को कुछ न कहते हुए घर की मर्यादा और इज्जत का सवाल उठा कर मुझे ही समय पर उन्हें स्थिति से अवगत न कराने के लिए दोषी ठहराया. कभीकभी घरों में देवरभाभी के संबंध भी विश्वास को धक्का पहुंचाते हैं. —सत्यव्रत


Sumeet

संपादकीय
अक्तूबर (प्रथम) 1982



अरित प्रवाह

श्रीमती इंदिरा गांधी ने केंद्रीय मंत्रिमंडल में फिर उलटफेर की है. कुछ मंत्रियों के मंत्रालय बदल दिए गए हैं. संजय गांधी के तीन मित्रों को राज्य मंत्री बना दिया गया है ताकि मेनका गांधी के संजय विचार मंच' का विस्तार रोका जा सके. एक नई महिला मंत्री बनाई गई है—श्रीमती मोहसिना किदवई को उत्तर प्रदेश से दिल्ली ले आया गया है.

इस रद्दोबदल का राजनीतिक महत्त्व कुछ भी नहीं है, न इस से सरकारी कार्यकुशलता बढ़ेगी. जब एक मामूली लिपिक को अपना काम समझनेसीखने में साल दो साल लग जाते हैं, तब एकदम नए व्यक्तियों को इतने बड़े देश की समस्याएं समझने में दोतीन वर्ष लग जाना मामूली बात है. पर जहां कोई मंत्री अपने मंत्रालय के कामकाज के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करने लगता है कि उसे दूसरे मंत्रालय का अध्यक्ष बना दिया जाता है. इस प्रकार वह न यहां का रहता है, न वहां का, और सारे काम सचिव लोग चलाते हैं.

अब मंत्रियों का काम केवल संसद में सचिवों द्वारा लिखे गए भाषण और सवालों के जवाब पढ़ना मात्र रह गया है.

इस प्रकार की उखपटक के पीछे इंदिराजी को अपनी गद्दी और शक्ति को बचाने की धुन है— कोई व्यक्ति जनता की निगाह में महत्वपूर्ण न हो सके और उन को चुनौती न दे सके.

पर इस प्रकार न तो देश की गरीबी हट सकती है, न सरकार काम कर सकती है. पर उन्हें इस से क्या? जब तक बेवकूफ जनता उन्हें वोट देती रहेगी, तब तक कौन कुछ कह सकता है?

*

कशमीर के मुख्य मंत्री शेख मुहम्मद अब्दुल्लाह का 7 सितंबर, 1982 को लंबी बीमारी के बाद देहांत हो गया. वह निस्संदेह कशमीरी जनता के बहुत निकट थे और उन के हटने के कारण कशमीर की राजनीति में काफी परिवर्तन होगा. इस परिवर्तन को रोकने के लिए शेख अब्दुल्लाह ने अपने जीतेजी अपने पुत्र डा. फारूख अब्दुल्लाह को अपने राजनीतिक दल नेशनल कानफ्रेंस का नेता चुनवा दिया था और मरने से तीनचार दिन पहले ही श्रीमती इंदिरा गांधी को बुलवा कर यह वचन ले लिया था कि वह डा. फारूख को कशमीर का मुख्य मंत्री बना रहने देंगी.

शेख अब्दुल्लाह ने यह पेशबंदी इसलिए की कि उत्तराधिकार के मामले में उन के कुनबे में ही सिर फुटौवल होने लगी थी. उन के दामाद गुलाम मुहम्मद शाह स्वयं मुख्य मंत्री बनना चाहते थे और साले बहनोई में झगड़ा होना अवश्यंभावी था. जब शेख ने अपने बेटे के पक्ष में फैसला कर लिया तो दामाद ने गुस्से में आ कर मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया.

शेख के मरने से कुछ उथलपुथल न हो सके, इसलिए शेख अब्दुल्लाह की मृत्यु की खबर को फैलने से रोक दिया गया जब तक कि राजभवन में बुला कर डा. फारूख अब्दुल्लाह को चुपचाप कार्यकारी मुख्य मंत्री की शपथ नहीं दिला दी गई.

बाद में डा. फारूख विधान सभा में

नेशनल कानफ्रेंस दल के नेता चुन लिए गए और उन्होंने नया मंत्रिमंडल भी बना लिया. पर इस से यह मान लेना कि कशमीर की राजनीतिक हलचल में स्थिरता आ गई है, गलत होगा.

शेख की बात तो और थी. वह राजनीति के मंजे हुए खिलाड़ी थे और कशमीरी मुसलमान जनता को बहुत प्रभावित किए हुए थे– इस का एक कारण जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा उन के साथ दोस्ती का दावा करते हुए भी शेख को 10 बरस कैद रखना था. फारूख अब्दुल्लाह के साथ ऐसी कोई बात नहीं है. नेशनल कानफ्रेंस के अन्य नेता लोग अपनी शक्ति व आमदनी पर आंच आते देख कर चुप कैसे बैठ सकते हैं?

*

मरने के बाद तो सभी की तारीफ की जाती है. शेख अब्दुल्लाह की भी की जा रही है. यह भी बढ़ाचढ़ा कर कहा जा रहा है कि वह धर्मनिरपेक्षता में बहुत विश्वास करते थे, इस मत के एक विशेष उदाहरण थे. पर यह बात गलत है. शेख अब्दुल्लाह एक स्थानीय धार्मिक नेता थे– कशमीरी मुसलमानों के. न उन्हें कशमीरी हिंदुओं का समर्थन प्राप्त था, न कशमीर के बाहर के भारतीय मुसलमानों का.

हिंदुओं द्वारा उन के समर्थन का तो कोई प्रश्न ही नहीं था, इंदिरा कांग्रेस व उन के कांग्रेसी चाहे कुछ कहते रहें. अगर वास्तव में शेख अब्दुल्लाह मजहब से ऊंचे उठ गए थे और एक व्यापक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण रखते थे तो पंडित जवाहरलाल नेहरू ने, जिन के साथ उन की दोस्ती का काफी बखान किया गया था, शेख को इतने लंबे अरसे तक कशमीर से हटा कर भारत के जेलखाने में क्यों डाला था?

कहा जाता है शेख के कारण ही कशमीर पाकिस्तान के कब्जे में नहीं गया. पर यह गलत है. कशमीर तो भारतीय फौज के कारण भारत में है. और यदि जवाहरलाल नेहरू ने युद्ध विराम कर के और संयुक्त राष्ट्र संघ में मामले को भेजने की मूर्खता न की होती तो आज पाकिस्तान अधिकृत कशमीर भी भारत में होता.

बाद में जब जवाहरलाल नेहरू ने देखा कि शेख पाकिस्तान व अन्य देशों से सांठगांठ कर के कशमीर को स्वतंत्र बनाने और उस के बादशाह बनने के सपने देख रहे हैं तो तत्काल उन्हें गिरफ्तार कर के जेल में डाल दिया गया.

अपने मरने से कुछ दिन पहले ही शेख अब्दुल्लाह ने कशमीर विधान सभा में एक कानून पास कराया था, जिस के अंतर्गत पाकिस्तान में बसे हुए कशमीरी लोगों को कशमीर में आने और अपनी संपत्ति वापस लेने की खुली छूट दी गई थी, जब कि भारतीय नागरिक कशमीरी हिंदुओं को ऐसा कोई अधिकार नहीं है– कोई भारतीय हिंदू कशमीर में जमीनजायदाद नहीं खरीद सकता.

जब सारे देश में इस कानून पर होहल्ला मचा तब भी शेख अब्दुल्लाह ने कोई चिंता नहीं की, और यह कानून अभी तक इसलिए लागू नहीं हो सका है कि कशमीर के राज्यपाल ने इसे भारत सरकार के आदेशानुसार स्वीकृति नहीं दी.

*

बिहार के प्रेस स्वतंत्रता हरण विधेयक पर बोलते हुए श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा है कि इस के विरुद्ध देश भर में जो आंदोलन या विरोध हो रहा है, वह 'बोगस' है.

इस से साफ है कि यह विधेयक श्रीमती इंदिरा गांधी की मर्जी और इशारे पर पास कराया गया है और अंतिम उद्देश्य यही है कि सारे देश में अलगअलग राज्यों में ऐसा कानून बन जाए जिस से जब चाहे जनता की आवाज को दबा दिया जाए और विदेशों में यह चर्चा भी न हो कि भारत में प्रेस की स्वतंत्रता को मृत्युदंड दे दिया गया है.

इस सिलसिले में यह भी कहना पड़ेगा कि जहां 1977 में इमरजेंसी के दौरान देश

का कामकाज चलना कठिन हो गया था और जनविरोध उभरने लगा था. और इस कारण इमरजेंसी के शिकंजे को ढीला करना आवश्यक हो गया था, वहां जनस्वतंत्रता हरण की विदेशों में जो आलोचना हो रही थी, उस से भी श्रीमती इंदिरा गांधी को चोट पहुंच रही थी. वह संसार में अपने को तानाशाह, जनतंत्र की गलाघोंटू नहीं कहलाना चाहतीं. इसी लिए उन्होंने 1977 में चुनाव कराए, यह साबित करने के लिए कि उन्हें पूर्ण जनसमर्थन प्राप्त है. पर पासा पलट गया, यह बात दूसरी है.

अब भी वह चाहती हैं कि देशविदेश में उन की आलोचना न हो, वे चाहे कुछ करें. इसी लिए यह 'आलोचना दबाओ' योजना बनाई गई है. पहले तो 'गरीबी हटाओ' का नारा उछाला गया. गरीबी हट गई. फिर कहा गया : 'सरकार वह बनाओ जो काम करे.' सरकार काम भी खूब कर रही है. अब 'आलोचना दबाओ' की बारी है. देखना है कि आलोचना दबती है कि नहीं.

*

वैज्ञानिकों ने एक ऐसी विधि खोज निकाली है जिस के द्वारा स्त्री के गर्भ में भ्रूण की जांच की जा सकती है और यह मालूम किया जा सकता है कि उस का लिंग क्या है.

इस परीक्षण में गर्भवती स्त्री के गर्भाशय में एक सूई डाली जाती है और वहां से एमनियोटिक नामक तरल पदार्थ निकाला जाता है. उस से 24 घंटे में भ्रूण का लिंग पता चल जाता है.

इस परीक्षा का, जिस का असली उद्देश्य यह जानना था कि भ्रूण को कोई बीमारी तो नहीं है, वह विकलांग तो नहीं है, आजकल इसलिए प्रयोग किया जा रहा है कि भ्रूण के लिंग की पहचान हो जाए और अधिकांश मामलों में यदि वह लड़की हो तो तत्काल गर्भपात करा दिया जाए.

अब इस पर नारी मुक्ति आंदोलन की चौधरानियों ने शोर मचाना शुरू किया है कि इस से तो बालिका वध होता है और यदि यह परीक्षण अधिक चल पड़ा तो लड़कियां पैदा होना बंद हो जाएंगी. इन महिलाओं ने समाचारपत्रों व संसद में भी शोर मचाया और सरकार पर दबाव डाला कि ये परीक्षण कानूनी तौर पर बंद कर दिए जाएं. सरकार ने ऐसा कोई प्रतिबंध लगाने से इनकार कर दिया.

हमारे देश में लड़के का जो महत्त्व है उसे, चाहे वह सही हो या गलत, अनदेखा नहीं किया जा सकता. लड़कियों की उपेक्षा होती है, लड़कों का आदर. लड़का अंतिम संस्कार और फिर श्राद्ध तर्पण कर के मातापिता को स्वर्ग पहुंचाता है. लड़की का जन्म अभिशाप है. पहले उस के विवाह की मुसीबत, फिर जन्म भर उस की ससुराल को भरते रहो ताकि लड़की खुश रहे. लड़की विधवा हो जाए तो भी जन्म भर की मुसीबत इत्यादि.

परंतु यह गलत सोचविचार हटतेहटते तो बीसियों वर्ष लग जाएंगे. तब तक लड़के की लालसा में लड़कियां पैदा करते जाना कहां तक उचित है? इसी चक्कर में लाखों परिवारों में बच्चे हर साल पैदा किए जाते हैं कि अब की बार तो लड़का ही हो जाए. जब लड़की पैदा हो जाती है तो हर तरह से उस की उपेक्षा, अनादर किया जाता है, जन्म भर उसे ताने, झिड़कियां और दुख मिलता है. इस से तो यह कहीं अच्छा है कि उस का जन्म ही न हो..

वैसे जहां लड़के के बारे में अंधविश्वास है. वहां यह भी है कि कन्यादान जैसा पुण्य भी कोई नहीं है. इसलिए जिस परिवार में लड़के ही होते हैं, वहां लड़की की भी चाह होती है, और अकसर यदि अपने यहां न हो तो दूसरे की लड़की ले कर उस का विवाह किया जाता है और उसे अपनी बेटी की तरह लियादिया जाता है.

फिर यदि मान भी लिया जाए कि यदि लिंग निर्धारण मातापिता के हाथ में आ गया और लड़कियां कम हो गईं तो क्या? इस से तो लड़कियों का 'बाजार भाव' बढ़ जाएगा. दहेज उलटा हो जाएगा— बजाए लड़कों के

मिलने के लड़कियों को मिलेगा— जैसा अफ्रीका व अरब देशों में होता है.

*

पिछले अंक में भारत व महाशक्ति रूस जैसे देशों की अमरीका पर निर्भरता का जिक्र किया गया था. अब भारत सरकार ने बतलाया है कि इस वर्ष वह अमरीका से 15 लाख टन गेहूं खरीद रही है ताकि देश में गेहूं के दाम अत्यधिक न बढ़ें और भुखमरी न हो. यह गेहूं भारत में आ कर लगभग 220 रुपए क्विंटल पड़ेगा, जब कि देशी गेहूं का बाजार भाव लगभग 142 रुपए क्विंटल है.

इस वर्ष के प्रारंभ से सरकार दावा कर रही है कि उस ने कीमतों को बढ़ने से रोक दिया है. पर आंकड़े और बाजार भाव कुछ और ही कहानी सुना रहे हैं. जब इतना महंगा गेहूं बाजार में बेचा जाएगा तो भाव गिरेंगे या और बढ़ेंगे? अगर सरकार को इसे सस्ते दाम पर बेचा तो घाटा टैक्स लगा कर या नए नोट छाप कर ही पूरा करना पड़ेगा, जिस से भी और कीमतें बढ़ेंगी.

अभी कुछ दिन हुए योजना आयोग की बैठक में कहा गया कि मूल्यों के बढ़ने से छठी योजना की सारी योजनाएं खटाई में पड़ गई हैं. या तो योजनाएं काटनीछांटनी पड़ेंगी या नए भारी टैक्स लगाने पड़ेंगे (जिस से फिर मूल्य बढ़ेंगे और बाकी बची योजनाएं असंभव हो जाएंगी).

अच्छा तो यही रहेगा कि सरकार अपना खर्च घटाए, नए नोट बिलकुल न छापे और टैक्स घटाए. योजनाएं उतनी ही बनाए जितना पैसा पास हो. पर न सरकारी अर्थशास्त्री इसे स्वीकार करेंगे, न सरकारी अमला. इन का लाभ तो सरकारी खर्च और सरकार की व्यापकता की बढ़ोतरी में ही है.

*

पश्चिमी बेरूत की इजराइल द्वारा दस सप्ताह की घेराबंदी, बमबारी और लड़ाई के बाद 21 अगस्त को फिलस्तीनी मुक्ति संगठन ने अपनी छापामार फौज को बेरूत से बाहर भेजना शुरू कर दिया. यह छापामार फौज लगभग 7,000 थी और 12 बरस से लेबनान पर कब्जा किए हुए थी. इस का राज्य के भीतर एक राज्य था. पर अभी इन के साथसाथ सीरिया के भी 60,000 सिपाही लेबनान में डेरा जमाए हुए हैं.

बेरूत की इस लड़ाई में इजराइल के 300 से अधिक सिपाही काम आए और 200 करोड़ डालर का खर्च हुआ. फिलस्तीनी मुक्ति संगठन को क्या क्षति पहुंची, अभी नहीं कहा जा सकता. पर लगता है बेरूत में गोलाबारी से जो भी हानि हुई वह लेबनानियों की ही हुई— उन की जानें गईं, उन्हीं के इतने सुंदर व समृद्ध शहर की बरबादी हुई. पर लेबनानी बेबस थे— सीरिया व फिलस्तीनी मुक्ति संगठन ने देश पर आधिपत्य जमा रखा था. पिछले कई वर्षों से वहां मुसलमान और ईसाइयों में गृहयुद्ध भी चल रहा था. सरकार नाम मात्र की थी—फिलस्तीनी मुक्ति संगठन या सीरिया ही देश पर काबिज थे.

अब प्रश्न है कि क्या बेरूत को खाली करने से फिलस्तीनी मुक्ति संगठन समाप्त हो जाएगा और फिलस्तीनी समस्या हल हो जाएगी? यद्यपि इजराइलियों का खयाल है कि जो जानमाल उन्होंने इस आक्रमण पर लगाया, उस से उन की सुरक्षा बढ़ गई है और फिलस्तीनी मुक्ति संगठन अब इजराइल पर हर रोज आक्रमण करने की स्थिति में नहीं रहेगा. पर अन्य लोगों का खयाल है कि फिलस्तीनी समस्या का हल तो राजनीतिक स्तर पर ही होगा, जिस में फिलस्तीन के मूल निवासियों को अपनी भूमि पर अपना राज्य बनाने की स्वतंत्रता होगी.

इस दिशा में जो सब से बड़ी बाधा थी वह अब दूर हो गई है— फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के अध्यक्ष यासर अराफात ने यह स्वीकार कर लिया है कि इजराइल का पश्चिम एशिया में स्थान है. अब तक अरब देश इजराइल के अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं कर रहे थे. उन का दावा था कि वे सारे यहूदियों को भूमध्य सागर में डुबो कर ही दम लेंगे.

ईरान : धर्म के नाम पर नरसंहार

लेख • विवेक सक्सेना



आयतुल्लाह खुमैनी : खुदा के नाम पर अत्याचार.

"मैं खुदा का बेटा हूं. जो मुझे खुदा का बेटा नहीं मानेगा, उसे मैं जिंदा नहीं रहने दूंगा." ये शब्द हैं ईरान के धार्मिक नेता आयतुल्लाह खुमैनी के, जो फरवरी, 1979 में वहां की सत्ता हथियाने के बाद अब तक अपने ही देश के 15,000 से अधिक लोगों को सिर्फ इसलिए मरवा चुका है, क्योंकि वे उसे खुदा का बेटा स्वीकार करने को तैयार नहीं थे अथवा जिन का ऐसे लोगों से किसी प्रकार का कोई संबंध था.

आयतुल्लाह खुमैनी ने अपने ही देशवासियों पर इतने अधिक अत्याचार किए हैं कि उन को सुन कर दिल कांप उठता है. आठ साल के बच्चों से ले कर 70 साल के बूढ़ों तक को मौत के घाट उतरवा दिया गया. सैकड़ों युवतियों के साथ खुदा के बेटे के सैनिकों ने बलात्कार कर के उन्हें गोली मार दी. और आज भी खुमैनी खुदा के नाम पर न जाने क्याक्या अत्याचार करवा रहा है.

फरवरी, 1979 में ईरान के तत्कालीन शासक शाह मुहम्मद रजा पहलवी का

तख्ता पलट देने के बाद लोगों के मन में शाह के प्रति उत्पन्न नफरत व उन की धार्मिक भावनाओं का लाभ उठाते हुए आयतुल्लाह खुमैनी ने वहां की सत्ता पर अपना कब्जा कर लिया. सत्ता हथियाते ही खुमैनी ने लोगों की स्वतंत्रता व उन के लोकतांत्रिक अधिकारों पर अंकुश लगा दिया.

दिनोंदिन उस के अत्याचार बढ़ते गए. अंत में 20 जून, 1981 को तेहरान में उस के खिलाफ पांच लाख लोगों ने प्रदर्शन किया. खुमैनी की सरकार ने प्रदर्शनकारियों को निर्ममतापूर्वक गोलियों से भून डाला. भारी संख्या में प्रदर्शनकारी मारे गए. और फिर इस के बाद जो खुल कर सामूहिक हत्याओं का दौर चला, वह अभी तक जारी है.

जो भी व्यक्ति खुमैनी सरकार द्वारा किए जा रहे अत्याचारों का जरा सा भी विरोध करने की कोशिश करता है, उसे मौत के घाट उतार दिया जाता है. दिखावे के

20 जून, 1981 के खुमैनी विरोधी प्रदर्शन में न जाने कितने लोग अपनी जान से हाथ धो बैठे.

हर रोज ईरान में न जाने कितने परिवार अपने सदस्यों को खो बैठते हैं. अपने साथी की लाश ले जाते हुए ईरानी युवक.

धर्म के नाम पर खुमैनी तथा उस के समर्थक अपने देशवासियों को किस प्रकार यातनाएं देदे कर मौत के घाट उतार रहे हैं—दिल दहला देने वाली दास्तान.

लिए उन पर अदालत में मुकदमा चलाया जाता है. ऐसे मुकदमों की सारी कारररवाई मुशकिल से पांच मिनट में पूरी हो जाती है और उस के बाद उस व्यक्ति को गोली चलाने वाले दस्ते को सौंप दिया जाता है, जो अपनी गोलियों से उसे भून डालता है. प्रायः हर रोज ही लगभग 50-60 आदमी इस तरह मौत के घाट उतारे जाते हैं.

इन पर किन अपराधों में मुकदमा चलाया जाता है, इस का भी एक उदाहरण प्रस्तुत है. 8 फरवरी, 1982 को ओमिड घाटिब नामक एक ऐसे बुद्धिजीवी को मौत के घाट उतार दिया गया जो फ्रांस के ला





इस 11 वर्षीया छात्रा मेरिम को मारने से पहले उस के साथ खुदा के बेटों ने बलात्कार भी किया था.

सारबोन विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर के आया था और जिस का किसी भी राजनीतिक दल से कोई संबंध नहीं था.

उसे 9 जून, 1980 को इसलिए गिरफ्तार किया गया था, क्योंकि उस ने फ्रांस में रहने वाले अपने एक दोस्त को पत्र में ईरान की वर्तमान हालत के बारे में लिखा था. इस पत्र को ईरानी अधिकारियों ने पढ़ लिया. उस के खिलाफ ये आरोप लगाए गए कि उस के सिर पर पश्चिमी सभ्यता का भूत सवार है, वह विस्टन सिगरेट पीता है व वामपंथी विचारधारा का है. बस, इसी आधार पर उसे मौत की सजा सुना दी गई.

खुमैनी द्वारा किए जा रहे अत्याचारों का प्रतिरोध करने के लिए 20 जून, 1981 को ईरान की अवामी मुजाहिदीन जमात के नेतृत्व में सभी प्रगतिवादी तथा प्रजातंत्र में विश्वास रखने वाले संगठनों व लोगों ने मिल कर 'राष्ट्रीय प्रतिरोध परिषद' का गठन किया व इस का अध्यक्ष मुजाहिदीन जमात के एक वरिष्ठ सदस्य मसूद रजवी को बनाया गया.

इस परिषद के सदस्यों में डाक्टर, छात्र, मजदूर, महिलाएं, अध्यापक, न्यायविद आदि हर क्षेत्र के लोग शामिल हैं. यह परिषद खुमैनी सरकार को हटाने के लिए न केवल अपने देश में, बल्कि विश्व के दूसरे भागों में भी प्रयत्नशील है. इस का मुख्यालय पेरिस में है.

ईरान में मुजाहिदीन जमात से किसी भी प्रकार का संबंध रखने वालों को मौत के घाट उतार दिया जाता है. यह एक प्रकार का छापामार संगठन है जो खुमैनी सरकार के विरुद्ध हथियार उठा चुका है. इस संगठन को फिलस्तीनी मुक्ति संगठन द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है और हथियारों की व्यवस्था ये लोग सरकारी शस्त्रागारों व पुलिस स्टेशनों को लूट कर करते हैं.

इस संगठन में किशोर, महिलाएं, वृद्ध आदि भी शामिल हैं. इस संगठन को लोग छिपे तौर पर आर्थिक सहायता भी दे रहे हैं. खुमैनी सरकार ने सब से ज्यादा हत्याएं मुजाहिदीन जमात से संबंध रखने वाले लोगों की ही की हैं.

इस साल फरवरी में 11 दिनों के अंदर ही 800 लोगों को खुमैनी के आदमियों ने मौत के घाट उतार दिया. उन्हें सामूहिक रूप से चुपचाप दफना दिया गया. इन में 11 से 17 साल तक के किशोर भी शामिल थे.

ईरान सरकार ने खुद यह बात स्वीकार की है कि ईरान में हर रोज सैकड़ों लोगों को विशेष सैनिक दस्ते द्वारा गोली मार कर हमेशा के लिए सुला दिया जाता है. यद्यपि सरकार द्वारा प्रकाशित आंकड़े बहुत कम हैं, फिर भी उन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वहां किस तेजी से विरोधियों को खत्म किया जा रहा है. पिछले 10 महीनों में सरकार ने 2,200 लोगों को मौत की सजा देने की बात स्वीकार की है.

तेहरान की ईविन जेल हत्याओं के लिए कुख्यात हो चुकी है. यहां जो भी कैदी आता है, वह जिंदा नहीं लौट पाता.

इस जेल से निकल भागे 28 वर्षीय अकबर नामक एक युवक ने जेल में दी जाने वाली यातनाओं का जो वर्णन किया है, उसे सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं. अकबर मुजाहिदीन जमात समर्थक पोस्टर प्रकाशित किया करता था. एक दिन रात को पांच सशस्त्र सैनिकों ने उस के घर पर छापा

सरिता

था और उसे सब से पहली चेतावनी यह दी कि वह पोटासियम सायनाइड की गोली खाने की कोशिश न करे.

आम तौर पर ईरान में जब भी मुजाहिदीन जमात के सदस्यों को गिरफ्तार किया जाता है तो वे ईरानी सैनिकों की यातनाएं सह कर मरने की अपेक्षा पोटासियम सायनाइड नामक तीव्र जहर खा कर मर जाना बेहतर समझते हैं.

अकबर की आंखों पर पट्टी बांध कर पूछताछ के लिए उसे ईविन जेल ले जाया गया. वहां एक छोटी सी कोठरी में जहां 10 लोग ठीक से बैठ भी नहीं सकते थे, 50-60 कैदियों के साथ उसे बंद कर दिया गया. उस के पास ओढ़ने के लिए पर्याप्त कंबल तक नहीं थे. जब कुछ कैदियों ने ठंड लगने के कारण कंबल मांगे तो उन की सैनिकों ने कस कर पिटाई की.

कुछ समय बाद अकबर को यातना कक्ष में ले जाया गया. वहां 24 सैनिक व 100 कैदी थे. वहां उस से कहा गया कि वह सब कुछ बता दे वरना उस की बहुत बुरी हालत हो जाएगी. अकबर ने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया. इस पर उस के ऊपर घूंसोंलातों के साथ गालियों की बौछार भी शुरू हो गई. इसलाम की आचार संहिता में गाली देने पर पाबंदी है, पर वे सैनिक अपने क्रांतिकारी धार्मिक नेता खुमैनी की क्रांति को सफल बनाने के लिए गाली पर गाली दिए जा रहे थे.

अमानवीय कृत्य

उन लोगों ने अकबर को एक बेंच पर लिटा कर उस के हाथों व घुटनों को जंजीरों से जकड़ दिया और दोनों ओर से जंजीरें खींचने लगे. इस से उस को असहनीय दर्द होने लगा. एक सैनिक उस के घुटनों पर कूदने लगा. उसे लग रहा था कि उस के हाथपैर टूट कर अलग हो जाएंगे.

जब अकबर चीखता तो वे उस के मुंह को कंबल से दबा देते. जब वह बेहोश हो जाता तो ठंडा पानी डाल कर उसे फिर होश में ले आते और यातना देना शुरू कर देते. उस के हाथपैरों को सैनिकों ने तार से कस दिया व उस के चेहरे को छोड़ कर पूरे शरीर पर मार लगानी शुरू कर दी. इस पर भी जब वह कबूलने को तैयार नहीं हुआ तो उन्होंने उसे काफी ऊंचाई से नीचे फेंक दिया.

दोपहर में जब सैनिकों का खाना खाने का समय हुआ तो कुछ देर के लिए यह क्रम

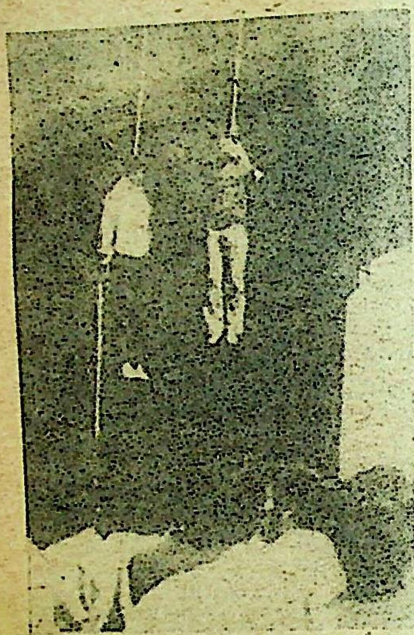
यातना के बाद मेरिम की लाश.



जब उस के हाथ खोले गए तो वह उन्हें नीचे नहीं कर सका. वहां एक सैनिक ने उसे बताया कि तीन दिन बाद उसे गोली मार दी जाएगी. किसी तरह वह जेल से फरार हो कर स्वीडन जा पहुंचा और इस तरह उस की जान बच गई.

इस जेल की दीवारें, फर्श, दरवाजे सभी कुछ खून से सने रहते हैं. कुछ समय पहले एक मुजाहिद युवती को मार कर उस की लाश को कई दिनों तक जेल में लटकाए रखा गया, जिस से दूसरे कैदी उस की हालत से सबक ले सकें.

ईरान के गोरगन शहर में मौत के घाट उतारे जाने के बाद जब लड़कियों की लाशों का पोस्टमार्टम किया गया तो पता चला कि



ईविन जेल में कैदियों को मारने के बाद उन की लाश को लटका दिया जाता है, जिस से उन की इस हालत से दूसरे कैदी सबक ले सकें.

बंद हुआ, पर जाते समय वे लोग उस के हाथों को भारी वजन से बांध कर लटका गए. खाना खा कर आने के बाद यातना का सिलसिला फिर शुरू हो गया, जो शाम को पांच बजे तब रुका जब सैनिकों को नमाज पढ़ने जाना था.

अकबर ने शौचालय जाना चाहा तो उस की आंखों की पट्टी खोल दी गई. उस ने देखा, उस के पूरे शरीर से खून बह रहा है. यहां तक कि पेशाब में भी खून आ रहा था. सैनिक उसे ठोकरें मारते हुए शौचालय तक ले गए.

वहां से वापस आने पर उसे एक कुरसी पर बैठा कर उस के दोनों हाथों को पीछे कर के बांध दिया. फिर हाथों को जंजीर से बांध कर उस का दूसरा सिरा छत से बांध दिया गया. इस के बाद अकबर के नीचे से कुरसी हटा दी गई. वह अगले दिन सुबह पांच बजे तक उसी हालत में लटका रहा. इस दौरान वह जिस यंत्रणा से गुजरा, उस का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है.

उन के साथ सामूहिक रूप से बलात्कार किया गया था.

वहां की आम जनता में वर्तमान सरकार के प्रति इतनी अधिक नफरत पैदा हो चुकी है व आक्रोश उमड़ रहा है कि सभी बड़े सरकारी अधिकारी, मंत्री व मुल्ला हमेशा ऐसी गाड़ियों में चलते हैं जिन पर गोली का कोई असर नहीं होता. वे अपने साथ अंगरक्षकों की फौज रखते हैं. उन के घरों पर भी सैनिकों द्वारा चौबीसों घंटे कड़ा पहरा रहता है.

पिछले दिनों हुए ईरानइराक युद्ध में भी ईरान को भारी नुकसान उठाना पड़ा. वहां के नागरिकों में इस युद्ध के कारण काफी असंतोष पैदा हो गया, क्योंकि इस में 30,000 से अधिक ईरानी नागरिक मारे गए. इन में भारी संख्या में किशोर व युवक भी थे.

इस युद्ध के कारण 25 लाख लोग बेघर हो गए व 50 लाख लोगों को बेरोजगारी का शिकार होना पड़ा, क्योंकि वहां तेल व ...

उत्पादन कार्य एकदम ठप पड़ गए हैं. इन में से आधे लोग ऐसे हैं जिन्हें केवल इसलिए नौकरी से निकाल दिया गया, क्योंकि उन्होंने खुमैनी को अल्लाह का बेटा नहीं माना था.

भारत सहित अनेक देशों में अध्ययन कर रहे खुमैनी विरोधी ईरानी छात्रों को उन की सरकार द्वारा भेजी जाने वाली आर्थिक सहायता अगस्त, 1981 से ही बंद की जा चुकी है. ये छात्र अपने देश वापस नहीं जाना चाहते. उधर खुमैनी इस बात का पूरा प्रयत्न कर रहा है कि किसी तरह से ये छात्र ईरान वापस भेज दिए जाएं, जिस से उन को सजा दी जा सके.

यही नहीं, पिछले दिनों पश्चिम जरमनी के मिट्स शहर स्थित युवकों के एक होस्टल में खुमैनी सरकार के आतंकवादियों ने खुमैनी विरोधी ईरानी छात्रों पर चाकुओं, लोहे की जंजीरों व कुल्हाड़ियों से हमला बोल दिया. इस हमले में एक जरमन युवती मारी गई. ये आतंकवादी पर्यटकों के रूप में वहां गए थे.

लोगों की हत्या किए जाने से पहले उन्हें बुरी तरह से यातना दी जाती है. उन के शरीर में से खून निकाल लिया जाता है, जो युद्ध में घायल होने वाले ईरानी सैनिकों को चढ़ाने के काम आता है. यही कारण है कि लोग यातना के कारण ही मर जाते हैं. उन के मरने के बाद दिखावे के लिए उन्हें गोली मार दी जाती है. उन की लाशों पर गोलियों के निशान तो मिलते हैं, पर उन से बहने वाला खून कहीं नजर नहीं आता है.

ईरान की अर्थव्यवस्था बहुत ही जर्जर हो चुकी है. आज हालात इतने खराब हो चुके हैं कि वह अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए, राजस्व जुटाने के लिए अपने तेल के दामों में कटौती करने पर खुद मजबूर हो गया है. पिछले दिनों उस ने 30 डालर प्रति बैरल की दर से लाइट आयल की बिक्री के समझौते किए हैं व इस में भी सरकारी तौर से तीन डालर प्रति बैरल की दर से छूट दी है.

दिवालिया खुमैनी सरकार

इराक से युद्ध समाप्त हो जाने के बाद कच्चे तेल के उत्पादन में बढ़ोतरी हो जाने के बावजूद ईरान केवल इसलिए सस्ते दामों पर

खुमैनी के विरुद्ध खुला मुंह कभी बंद नहीं हो पाता है.



तेल बेचने को मजबूर है, क्योंकि खुमैनी सरकार की आर्थिक स्थिति दिवालिया होती जा रही है. पिछले तीन सालों में ईरान की अर्थव्यवस्था बुरी तरह चौपट हुई है.

जुलाई, 1981 से ईरान के विदेशी मुद्रा कोष में बड़ी तेजी से गिरावट आई है. पिछले साल जुलाई से सितंबर के मध्य तक ईरान के विदेशी मुद्रा कोष में 80 करोड़ डालर की कमी आई है. इस दौरान तेल से देश को 55 करोड़ डालर प्रति माह की कमाई हुई, जब कि 90 से 100 करोड़ प्रति माह की दर से सरकार को खर्चा करना पड़ा. यह हालत बंदार, महशार व खर्क समूह को इराक द्वारा बरबाद करने से पहले की है. यहां पर समुद्री जहाज से तेल ले जाने वाले टैंकरों में तेल भरा जाता है.

इस युद्ध के कारण ईरान की आर्थिक स्थिति को और भी धक्का पहुंचा. इस का परिणाम यह हुआ कि वहां आयात लाइसेंस केवल कुछ चुने हुए खुमैनी समर्थक व्यापारियों के लिए ही सीमित कर दिए गए हैं. ईरान की बिगड़ती अर्थव्यवस्था का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि वहां 200 करोड़ डालर की ऐसी मुद्रा जारी की जा चुकी है जिस के पीछे सोने आदि का कोई सुरक्षित भंडार नहीं है.

खुमैनी सरकार भारी विदेशी कर्ज में दबी हुई है. ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जब विदेशों से ईरान को निर्यात किए जाने वाले सामान को निर्यातकों ने इसलिए वापस मंगवा लिया, क्योंकि खुमैनी सरकार उस का भुगतान नहीं कर सकी. उदाहरण के लिए आस्ट्रेलिया से डब्बाबंद मांस से भरा एक जहाज ईरान भेजा गया. इस जहाज को वापस उस पर लदा सामान ले कर लौटना पड़ा, क्योंकि खुमैनी सरकार उस का भुगतान कर सकने में असमर्थ रही.

ईरान के उद्योगों की हालत तो और भी बुरी है. वहां श्रमिक असंतोष व कच्चे माल की कमी के कारण उस की क्षमता का 50 प्रतिशत उत्पादन भी नहीं हो पा रहा है. पिछले कुछ समय से सरकार ने अपने कर्मचारियों को वेतन देने के लिए अपने कार्यालयों का महंगा फर्नीचर व कालीन बेचने शुरू कर दिए हैं. इराक के साथ हुए युद्ध के कारण ईरान में आर्थिक व सामाजिक समस्याएं पैदा हो गई हैं.

दक्षिणी ईरान में स्थित बहुत सारे तेल क्षेत्र व पेट्रोरसायन क्षेत्र इस युद्ध में पूरी तरह या आंशिक रूप से तबाह हो गए हैं. ईरान को इस युद्ध के कारण हथियारों की खरीद पर काफी पैसा खर्च करना पड़ा है. इस बढ़ते खर्च का बोझ वहां के आम आदमी पर सब से ज्यादा पड़ा है.

अपने अधिकारियों को बचाने के लिए सरकार ने ऐसी कारें खरीदने में न जाने कितना पैसा खर्च कर दिया है, जिन पर गोली का कोई असर नहीं होता. दूसरी ओर श्रमिकों व कर्मचारियों को न जाने कितने महीनों से वेतन नहीं मिल पाया है. एक ओर सरकार अपने कर्मचारियों को वेतन दे सकने में असमर्थ है और दूसरी ओर वह उन से जन का पैसा भी वसूल लेना चाहती है.

वहां यातायात संबंधी छोटेमोटे अपराधों के लिए जुरमाने में अंधाधुंध बढ़ोतरी कर दी गई है. यह बढ़ोतरी 15 गुना तक है. इसी तरह वहां किराए में भी पांच गुना वृद्धि की गई है.

आयतुल्लाह खुमैनी किस तरह धर्म के नाम पर लोगों को बेवकूफ बना रहा है, इस का एक ज्वलंत उदाहरण पिछले ईरानइराक युद्ध में देखने को मिला. खुमैनी ने स्कूली छात्रों को इस युद्ध में यह कह कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया कि जो लोग इस युद्ध में मारे जाएंगे, उन्हें स्वर्ग में हजरत मुहम्मद के साथ बैठने की जगह दी जाएगी. खुमैनी इस बात को जानबूझ कर छिपा गया कि इस युद्ध में उन्हें काफिरों की नहीं, बल्कि मुसलमानों की ही हत्या करनी थी.

क्रूरता का नया कीर्तिमान

इन छात्रों के मांबाप को जबरन इस बात के लिए मजबूर किया गया कि वे इस जेहाद पर भेजने के लिए स्वीकृति दे दें.

ईरान के दक्षिणपश्चिमी प्रांत डेजफुल में इराक के साथ हुए युद्ध में 12 से 18 साल तक के 3,000 से अधिक छात्र मारे गए.

इस युद्ध में 15 लाख लोग बेघरबार हो गए. 50,000 लोग घायल हुए व युद्ध के कारण उत्पादन ठप पड़ जाने से लगभग एक करोड़ लोग बेरोजगार हो गए. ईरान में युद्ध के दौरान मुद्रास्फीति में 60 फीसदी बढ़ोतरी हो गई थी. सिगरेट का पैकेट 35 रुपए का बिकने लगा था. इस युद्ध को जारी रखने के पीछे, खुमैनी का उद्देश्य यही था कि लोगों का ध्यान देश की आंतरिक हालत से हटाया जा सके.

एक ओर ईरान में धार्मिक नेता मजहब की आड़ में निर्दोष लोगों पर अत्याचार कर रहे हैं और दूसरी ओर वे खुद सब से ज्यादा धर्म विरोधी गतिविधियों में संलग्न हैं. ईरान में शराब के प्रयोग पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया है, पर यह प्रतिबंध केवल आम नागरिकों पर ही लागू होता है.

वहां की सेना व पुलिस अगर किसी व्यक्ति को शराब का सेवन करते हुए या शराब रखने के आरोप में पकड़ लेती है तो उस व्यक्ति को कोड़े लगाए जाते हैं. जब्त की गई शराब को वहां के तथाकथित खुदा के बेटों, मुल्लाओं के पास उपहारस्वरूप भेज दिया जाता है.

पुलिस व सेना के अधिकारी खुद भी जम कर शराब पीते हैं. यही लोग ईरान में शराब का धंधा भी करवा रहे हैं. ये लोग 25 रुपए कीमत वाली बोतल 1,000 रुपए में बेचते हैं और उसे बेचने के बाद अपने ही साथियों से फिर खरीदने वाले को पकड़वा कर उस को सजा भी देते हैं और उस की शराब भी जब्त कर लेते हैं.

वहां किस बुरी तरह भ्रष्टाचार व्याप्त है और लोगों पर अत्याचार किया जा रहा है, इस का अंदाजा केवल इस बात से लगाया जा सकता है कि जिन लोगों को वहां की अदालतों द्वारा मौत की सजा सुनाई जाती है, उन के घर वालों से सजा देने वाले अधिकारी

क्रोध

क्रोध मूर्खता से प्रारंभ होता है और पश्चात्ताप पर समाप्त होता है.

—पैथागोरस

इस बात के लिए रिश्वत लेते हैं कि उन्हें ज्यादा सताया नहीं जाएगा, वरना गोली मारने से पहले आंखों में संगीनें घुसेड़ना, उन के लिंग को बिजली छुआना, लाल गरम सलाखों से दागना आम बात है.

गोली मार देने के बाद भी मामला खत्म नहीं होता. मृतकों की लाश देने के लिए उन के घर वालों से भारी रकमें वसूल की जाती हैं, वरना लाश की भी दुर्गति की जाती है. ईरान के धार्मिक नेता इतने अधिक रूढ़िवादी विचारधारा के हैं कि वहां औरतों को द्वितीय श्रेणी का नागरिक माना जाता है.

मुजाहिदीन, जो शुरू से ही शाह के विरोधी थे, आज यह बात खुल कर स्वीकार करते हैं कि शाह मुहम्मद रजा पहलवी क्रूर अवश्य था, पर अयतुल्लाह खुमैनी ने तो क्रूरता में उसे भी पीछे छोड़ दिया है. उन का यह मानना है कि शाह प्रगतिशील विचारधारा का था और उस ने महिलाओं को काफी आजादी दे रखी थी.

शाह व खुमैनी के अत्याचारों में अंतर केवल इतना है कि शाह ने हत्याएं करवाने में कभी धर्म का सहारा नहीं लिया, जब कि खुमैनी धर्म की आड़ में अपने ही देश के नागरिकों को मौत के घाट उतार रहा है.

ईरान में कोई भी महिला बिना बुरका पहने हुए घर से बाहर नहीं निकल सकती, जब कि शाह के शासन काल में वहां विश्वविद्यालयों में लड़कियां मिडी व हाट पैंट तक पहन कर जाती थीं. जब खुमैनी के हाथों में सत्ता आई तो उस ने न केवल इन कपड़ों पर रोक लगा दी, बल्कि बहुत सारे विश्वविद्यालय बंद ही करवा दिए.

अगर कोई टैक्सी ड्राइवर किसी ऐसी

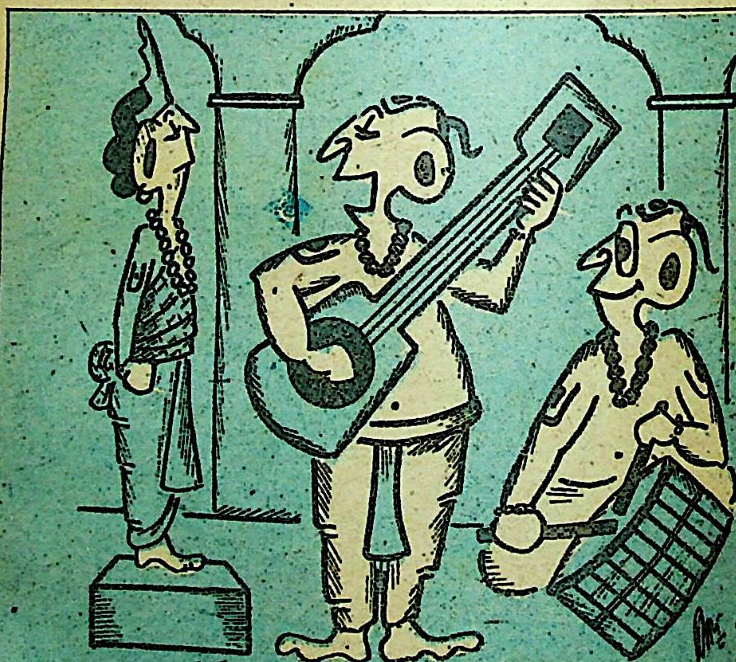
महिला को ले जा रहा हो जिस ने बुरका न पहना हो अथवा अपना चेहरा न ढका हुआ हो तो उस महिला के साथ उसे भी सजा दी जाती है. इसी तरह खरीदारी करते समय महिलाओं का बुरका पहनना बहुत जरूरी है, वरना उसे व सामान बेचने वाले दुकानदार को सजा दी जा सकती है.

खुदा का बेटा हत्यारा क्यों

सवाल यह उठता है कि अगर ईरान में इतने अत्याचार हो रहे हैं तो उतनी ही शक्ति से उन का विरोध क्यों नहीं किया जा रहा है. इस के पीछे कई कारण हैं. ईरान की जनसंख्या लगभग 3.5 करोड़ है. वहां के 75 प्रतिशत लोग अशिक्षित हैं. यहां की राजनीति में शुरू से ही धर्म का प्रभुत्व रहा है.

आयतुल्लाह खुमैनी वहां की धर्मांध एवं अशिक्षित जनता को यह कह कर बेवकूफ बनाता है कि वह खुदा का बेटा है. उसे खुदा ने पृथ्वी पर भेजा है. वह जो कुछ भी कर रहा है, उस के पीछे खुदा की मर्जी है. पर सवाल यह है कि अगर खुदा ने उसे इस धरती पर अपने ही द्वारा बनाए गए लोगों की हत्या करवाने के लिए भेजा है तो उस को उन लोगों को पैदा करने की जरूरत ही क्या थी.

ईरान में धर्म की आड़ में जो कुछ भी हो रहा है, वह कोई नई बात नहीं है. मुसलिम देशों का यह इतिहास रहा है कि वहां हमेशा सत्ता हथियाने के लिए खूनखराबा होता आया है. भाई ने भाई की हत्या कर के गद्दी पर कब्जा किया है. ऐसी हालत में अगर आयतुल्लाह खुमैनी धर्म के नाम पर सत्ता को अपने हाथ में रखने के लिए निर्दोष लोगों को मरवा रहा है तो इस में आश्चर्य की क्या बात है? अब देखना यह है कि ईरान में अगली खूनी क्रांति कब होती है.


"प्रभु, कीर्तन सुनतेसुनते तुम्हारा मन ऊब गया होगा, इसलिए आज से हम डिस्को सुनाएंगे."



लेख • ब्रजगोपाल राय 'चंचल'

भक्ति

धर्म के धंधेबाजों द्वारा फैलाया गया धार्मिक स्टंट

हिंदू समाज में भगवान की भक्ति पर बड़ा जोर दिया गया है. आम हिंदुओं में यह भावना बुरी तरह ठेकठेक कर भर दी गई है कि भगवान की भक्ति से ही उन का जीवन सफल हो सकता है. पर यह 'भक्ति' है क्या चीज और होगी कैसे, इसे कहीं नहीं बताया गया है. कुछ मंदिरों, मठों, आश्रमों में जो चौबीसों घंटे भजन या कीर्तन होता है, जिस में चीखचीख कर, नाच कर या कूद कर घंटेघड़ियाल, ढोल, मंजीरा, शंख और चिमटा बजा कर जो उछलकूद मचाई जाती है, हिंदू उसे ही भक्ति समझते हैं. समझ में नहीं आता कि अगर कोई भगवान है तो वह इन सब बातों से कैसे खुश हो जाता है.

पर हमारे धर्मग्रंथों में इन सभी कामों को ही न केवल 'भक्ति' कहा गया है, बल्कि इन्हें करने के आदेश भी दिए गए हैं और इस उछलकूद, चीखचिल्लाहट से भरी 'भक्ति' के बाद इस से ज़ो मिलने वाला 'पुण्य' या 'फल' है, वह तो हिंदुओं में कोरा पाखंड, अंधविश्वास, अकर्मण्यता, दरिद्रता, व्यभिचार, अपराधभावना और धर्मांधता का ही बीजारोपण करता है. ये सभी बुराइयां आज हिंदू समाज में देखी जा सकती हैं.

सच बात तो यह है कि यह 'भक्ति' उस कथित भगवान के लिए है ही नहीं. बल्कि धर्म के मुफ्तखोर धंधेबाजों, पंडों, पुजारियों, पुरोहितों और स्वार्थी ब्राह्मणों द्वारा लोगों को बेवकूफ बना कर स्वयं में 'भक्ति' पैदा कराना है, ताकि लोग इन्हें

दानदक्षिणा देते रहें, इन से भजनकीर्तन करवाते रहें, इन के पांवों में पड़े रहें, और ये लोग मुफ्त की कमाई खाते रहें. इसलिए इन्होंने ही धर्मग्रंथों में भक्ति के गुण गागा कर सैकड़ों वर्षों से लोगों को बेवकूफ बनाए रखा है और आज तक बना रहे हैं.

नारद पुराण में लिखा है– "कलियुग में केवल श्री हरि का नाम ही परम कल्याण करने वाला है. इस को छोड़ कर अन्य कोई उपाय नहीं है." (नारद.1/4/1/115). यह भावना अगर लोगों को निकम्मा नहीं बनाती है तो फिर किस बात का उपदेश करती है?

कहा जा सकता है कि भक्ति का संबंध भावना से है. पर धर्मग्रंथों का कहना तो यह है कि भावना की भी जरूरत नहीं–" जो मनुष्य गिरते समय, फिसल जाने पर, अंगभंग होने पर, सांप से डसे जाने पर, बुखार से पीड़ित होने पर, युद्ध में घायल होने पर या विवश होने पर केवल 'हरि' ही कहता है तो उसे नरक की यातना नहीं मिलती."-(श्रीमद्भागवत 6/2/14/15). अब आप ही बताइए कि इस बिना भावना की भक्ति को कर के कोई क्यों न नरक की यातना से छुट्टी पा लेना चाहेगा? इसी भावना के कारण वह किसी भी गलत काम को करने से नहीं डरता, दिल खोल कर अपराध करता है और फिर मजे से 'हरि' का नाम ले लेता है.

अकर्मण्यता को बढ़ावा

बुद्धिमान व्यक्ति अगर धर्म के धंधेबाजों की इस 'भक्ति' की आलोचना या वास्तविकता लोगों के समक्ष रखें तो उन का व्यापार ठप हो सकता है, इसलिए कहा गया है–"जो भगवान या भक्तों की निंदा सुन कर वहां से नहीं हटते, वे शुभ कर्मों से च्युत हो कर अधोगति को जाते हैं." श्रीमद्भागवत (10/74/–40).

अगर आप लखपति बनना चाहते हैं, नौकरी पाना चाहते हैं या राजनीति में मंत्री पद पाना चाहते हैं तो आप को न तो मेहनत करने की जरूरत है, न योग्यता की, बस कीर्तन कीजिए. "जो इस लोक या परलोक की किसी भी वस्तु की इच्छा रखते हैं, मोक्ष पद चाहते हैं तो समस्त शास्त्रों के निर्णय के अनुसार हरि के नाम का कीर्तन करना चाहिए." (श्रीम.भा. 2/1/11).

चाहे आप की भावनाओं में निरा पाप भरा हुआ हो, पर अगर एक बार भी आप अनजाने में भी 'संकीर्तन' कर लें तो पाप खत्म हो जाएंगे. पापों से डरने की रत्ती भर भी जरूरत नहीं– "जानबूझ कर या अनजाने में भी भगवान के नामों का संकीर्तन करने से सारे पाप भस्म हो जाते हैं. जिस प्रकार अमृत को जानेंअनजाने कैसे भी पी लिया जाए." (श्रीम.भा. 6/2/18-19).

धर्म के व्यापारियों ने इस तथाकथित 'भक्ति' में लोगों की अंधभक्ति पैदा करने के लिए कृष्ण के मुख से कहलवाया है–"जैसे आग लकड़ी के ढेर को जला देती है, उसी तरह मेरी भक्ति भी पापों को जला देती है, भक्ति के अलावा मुझे योग, साधना, ज्ञान, विज्ञान, धर्म, अनुष्ठान जपपाठ और तपत्याग भी पाने में उतने समर्थ नहीं." (श्रीमद्.भा. 11/14/19-20).

और भक्ति न करने वालों के प्रति उपेक्षा भी प्रदर्शित की गई है–"भक्ति से वंचित लोगों के चित्त को सत्य, दया, धर्म और तपस्या से युक्त विद्या भी पवित्र नहीं कर सकती." (श्रीम.भा. 11/14/21-22).

उछलकूद, चीखचिल्लाहट की इस विचित्र भक्ति में अंधभक्ति जाग्रत कराने का एक और स्टंट देखिए–"भगवान के गुणों का गान करने वाली वाणी ही सच्ची वाणी है. इसी प्रकार भगवान की सेवा करने वाले हाथ, भगवान का स्मरण करने वाला मन, भगवान की कथा सुनने वाले कान, भगवान की मूर्ति के आगे झुकने वाला सिर, दर्शन करने वाले नेत्र, और चरणोदक सेवन करने वाले अंग ही सच्चे अंग हैं." (श्रीमद्.भा. 10/80/3-4).

आप गरीब हैं तो मेहनत कर के धनवान मत बनिए, क्योंकि गरीबी तो बड़ी तपस्या है– "गरीबों में घमंड और हेकड़ी

नहीं होती: वह सभी मदों से बचा रहता है. बल्कि उसे जो भी कष्ट मिलते हैं, वे भी तपस्या ही हैं." (श्रीमद्भा. 10/10/15). भारत इस समय संसार के सब से गरीब देशों में गिना जाता है तो इस में लज्जा की क्या बात है? भारत के लोग 'तपस्वी' तो हैं ही.

गरीब और गरीबी को आप समझें न समझें, हिंदूधर्म तो अपनी शान समझता है. दरिद्र और दरिद्रता हिंदूधर्म के मुख की शोभा हैं, गरीबों को गरीब ही रहने देने के लिए कैसी जहरीली भावना ये धर्मग्रंथ भरते हैं, देखिए–"जो प्रतिदिन अन्न जुटाता है, भूख से जिस का शरीर दुबलापतला हो गया है, उस दरिद्र की इंद्रियां अधिक विषयभोग नहीं कर सकतीं, सूख जाती हैं, वह अपने भोगों के लिए दूसरों को सताता नहीं, हिंसा नहीं करता. (श्रीमद्भा. 10/10/16).

प्राय: लोगों में यह भावना भरी होती है कि पूंजीपति गरीबों का शोषण करते हैं, पर धर्म के धंधेबाज किस प्रकार गरीबों का खून पीते हैं, देखिए–"यद्यपि 'साधु व्यक्ति' (धंधेबाज) सब को समान देखते हैं, फिर भी उन का समागम दरिद्र के लिए ही सुलभ है, क्योंकि गरीब के भोग तो पहले ही छूटे हुए हैं. अब 'संतों' के 'संग' से उन की 'लालसा,' 'तृष्णा' भी 'मिट' जाती है, और शीघ्र ही उन का अंत:करण 'शुद्ध' हो जाता है." (श्रीमद्भा. 10/10/17). लालसा और तृष्णा (धन कमाने की भावना) को तो खत्म कर ही देते हैं और 'अत:करण की शुद्धि' तो बेचारे गरीब को बिलकुल लूट कर ही हो सकती है.. दूसरे शब्दों में, यह 'अंत:करण की शुद्धि' दरिद्र का दाहसंस्कार है.

कहते हैं कि झूठा व्यक्ति एक झूठ को छिपाने के लिए और सौ झूठ बोलता है, फिर भी उस की चालाकी पकड़ ली जाती है. धर्मध्वजियों ने अपनी बेसिरपैर की बातों में कहीं कुछ कहा है, कहीं कुछ. धर्मग्रंथों में कलियुग की बड़ी निंदा की गई है (देखें रामचरित मानस), पर व्यथित में अंधभक्ति पैदा करने के लिए देखिए क्या लिखा है–"कलियुग में केवल संकीर्तन से ही सारे स्वार्थ परमार्थ बन जाते हैं (इसी लिए 'श्रेष्ठ पुरुष' कलियुग की बड़ी प्रशंसा करते हैं, इस से बड़ा प्रेम करते हैं.) (11/5/36).

भारत के धूर्त राजनीतिबाज गरीबी मिटाने के लिए झूठे ही सही, वादे तो करते ही हैं, पर हमारे धर्मग्रंथ तो गरीबी को बहुत बड़ा आभूषण समझते हैं. क्योंकि गरीब ही इस तथाकथित 'भक्ति' के जल्दी शिकार बन सकते हैं, "जो दुष्ट धन से अंधे हो रहे हैं, उन की आंखों में ज्योति डालने के लिए दरिद्रता ही सब से बड़ा अंजन (काजल) है, क्योंकि दरिद्र यह देख सकता है कि दूसरे प्राणी भी मेरे जैसे ही हैं." (10/10/13). लोग सर्वदा गरीब ही बने रह कर धर्म के मुफ्तखोर व्यापारियों की चरणवंदना करते रहें, इस के लिए कितनी विषाक्त धार्मिक भावना अगले ही श्लोक में भरी गई है. देखिए–"जिस के कभी कांटा ही नहीं गड़ा, वह उस का अनुमान नहीं कर सकता." (10/10/14).

जिम्मेदारियों से पलायन

इस भक्ति में न तो भूखप्यास की चिंता करनी चाहिए और न ही किसी प्रियजन के लिए शोक करना चाहिए. अपने बीवीबच्चों से मोह करना भी 'नपुंसकता' है. आप पर जो भी जिम्मेदारियां हैं, उन्हें भी छोड़िए–"जिन्होंने भूखप्यास, शोक, मोह, बुढ़ापा, मृत्यु–इन विचारों को छोड़ दिया है. वे भगवान के भक्त ही पुरुषार्थी हैं, क्योंकि भंगी आदि नीच व्यक्ति भी भगवान के नाम का एक बार उच्चारण करते ही संसार की जिम्मेदारियों से मुक्त हो सकता है." (5/1/35).

अगर आप अपनी बीवी को बीवी समझते हैं तो भारी मूर्खता कर रहे हैं. अपने शरीर को भी अपना समझने की जरूरत नहीं. अगर अपने बच्चों को अपना समझते हैं तो आप नीच हैं और गधे हैं. माफ कीजिए, यह बात हमारी नहीं, श्रीमद्भागवत के निम्न श्लोक में कही गई है–" जो मनुष्य

वात, पित्त, कफ से बने इस 'मुर्दा' शरीर को ही अपनी आत्मामय (अपना) समझता है, स्त्री, पुत्र आदि को अपना, मिट्टी, पत्थर, लकड़ी की मूर्ति को भगवान, तथा ज्ञानी महापुरुषों को छोड़ कर जल को तीर्थ समझता है तो वह पशुओं में भी नीच गधा है." (10/84/12-13). यानी इन मुफ्तखोरों को ही अपना समझिए.

आप के ऊपर जो भी कर्मबंधन (जिम्मेदारियां) हैं, उन से तुरंत त्यागपत्र लीजिए और छींकते समय, गिरते समय, कहीं से फिसलते समय या विवश हो कर भी एक बार भगवान का नाम जरूर लीजिए. (5/24/20).

दुनिया में जो मेहनत और ईमानदारी से पैसा कमा कर अमीर बने हैं, वे सब के सब चोर हैं और इन्हें सजा मिलनी चाहिए. अगर आप भी ज्यादा पैसा कमाना चाहते हैं तो आप भी चोर हैं. हां, गरीब बन कर घुटघुट कर मरते रहिए और भगवान की भक्ति के नाम पर उछलकूद मचाते रहिए तो कोई बात नहीं, "मनुष्यों का अधिकार केवल इतने ही धन पर है, जितने से उस की भूख मिट जाए. इस से अधिक संपत्ति जो अपनी मानता है, वह चोर है और उसे सजा मिलनी चाहिए." (7/14/8).

"अजगर करै न चाकरी" यह निठल्ले और कायर लोगों का आदर्श वाक्य है. हिंदूधर्म के ध्वजारोही भी यही चाहते हैं कि लोग गरीब तो बने ही रहें, निठल्ले भी बने रहें. "निर्धन होने पर भी धर्म अथवा शरीर– निर्वाह के लिए ही धन कमाने का प्रयत्न करे, क्योंकि जिस पर अजगर की जीविका चलती है, उसी पर उस की भी चल जाएगी." (7/15/15).

आप की वाणी मीठे वचन बोलने के लिए नहीं है, आप के कान मधुर संगीत सुनने के लिए नहीं हैं, आप के हाथ मेहनत करने के लिए नहीं हैं और न ही मन शुद्ध विचारों के लिए है. बल्कि वाणी भगवान के गुणगान के लिए, कान कथा सुनने के लिए, हाथ भगवान का कीर्तन करने के लिए, मन भगवान के लिए, सिर मूर्ति के आगे झुकाने के लिए है. संपूर्ण जगत भगवानमय है. संत साक्षात भगवान हैं, इसलिए आंखें उन्हें ही देखें (10/10/38). धर्म के व्यापारियों ने अपना धार्मिक नाम 'संत' रख कर लोगों को कैसा उल्लू बनाया है.

अगर आप स्वयं संकीर्तन, भजन या भक्ति करेंगे तो निश्चित रूप से आप आलसी और अकर्मण्य बनेंगे और धर्म के व्यापारियों से कराएंगे तो उन्हें भेंट व दक्षिणा देनी होगी. दोनों ही भावनाएं घातक हैं, पर धर्मध्वजियों को इस से क्या? उन्होंने तो लिख दिया है–"श्रीकृष्ण का संकीर्तन करने से आसक्तियां छूट जाती हैं, परमात्मा की प्राप्ति होती है, कलियुग में भगवान का कीर्तन करने से ही सारे फल मिलते हैं." (10/3/51-52).

ब्राह्मणों का षड्यंत्र

ब्राह्मण समाज धर्म का सब से बड़ा व्यापारी है. यह समाज शुरू से ही मुफ्तखोर रहा है. धर्मांध यजमानों से अपने पेटपूजा कराने के लिए ये कैसी बढ़िया चाल चलते हैं. देखिए–"ब्राह्मण के मुख में अन्न देने से जैसे उस की तृप्ति होती है, वैसी हवन से नहीं, क्योंकि सभी प्राणियों में भगवान का निवास है, पर उस में प्रधानता तो ब्राह्मणों की है." (7/14/17-18).

इस तथाकथित भक्ति में कितनी घातक भावनाएं हैं, यह आप ऊपर देख ही चुके हैं, पर यह कितनी घिनौनी बात है, इस का अंदाजा इस श्लोक से लग जाएगा.

"आश्वाद्यान्तेऽवसायिभ्यः कामान् संविभजेद् यथा।
अप्येवं कामात्मनो दारां नृणां स्वत्वग्रहो यतः (श्रीमद्:7/14/11).

अर्थात अपनी समस्त सामग्री को कुत्ते, पतित, चांडाल पर्यंत सब प्राणियों को बांट कर के अपने काम में लाना चाहिए और तो क्या अपनी स्त्री को भी अतिथि आदि की सेवा में नियुक्त रखे.

ऐसी 'सेवा' का अर्थ क्या होगा? •

बात प्यार की

…ने लगी हवा क़ुआर की.
…जाए कुछ बात प्यार की.
…सम सरसाया,
…सत मदमाया,
…लने लगी कली कचनार की.
…जाए कुछ बात प्यार की.

…नों के सुंदर क्रम,
…ने लगे हैं भ्रम,
…राई शाम जीतहार की.
…जाए कुछ बात प्यार की.

…वन निखराया,
…सा मन भरमाया,
…ने लगी अब रात सार की.
…जाए कुछ बात प्यार की.

…प शबनम के कटरे,
…न के फूलों पर बिखरे,
…तयाई पवन आंगनद्वार की.
…जाए कुछ बात प्यार की.

—अर्जुन अरविंद

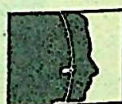
क्लिअरेसिल अब

नई क्लिअरेसिल वैनिशिंग मेडिकेशन. जो आपकी त्वचा में घुलमिल जाए, असर दिखाए

मतलब आपकी चहेती क्लिअरेसिल अब वैनिशिंग क्रीम के रूप में भी मिलती है. ये चेहरे पर दिखाई नहीं देती. कील – मुंहासों की प्रभावशाली दवा की दवा और सौंदर्य प्रसाधन भी.

दोनों, कील-मुंहासे साफ़ करें, काबू में र

अपनी अनोखी ३-तरफ़ा क्रिया से



१. मुंहासे खोलती है।



२. मुंहासे साफ़ करती हैं



३. मुंहासे छुपा दिखा देती है



क्लिअरेसिल कील मुंहासे साफ़ करे, क़ाबू में रखे

दुनिया की नं. १ कील-मुंहासों की दवा


निमंत्रण पत्र


देखो श्रीमतीजी, आज शाम के चारचार निमंत्रणपत्र आए हैं.


ओह! हम एक ही समय सब की पार्टी में कैसे जा पाएंगे?
तुम ठीक कह रही हो.


एक के जाएं तो दूसरा नाराज. दूसरे के जाते हैं तो तीसरा.


छोड़ो, हम किसी के भी नहीं जाते.


ठीक है. रमेश पूछेगा तो कह दूंगा कि हम सुरेश के गए थे. सुरेश ने पूछा तो कहेंगे कि हम रमेश के गए थे.


मैं ने भी अपने डायलाग याद कर लिए हैं. महेश आएगा तो...


अगले दिन
?
ट्रिंग-
ट्रिंग-


मारे गए! ये तो चारों एक साथ आ धमके. अब हम इन को कैसे बहकाएंगे?
हाय! मुझे तो सारे डायलाग ही भूल गए.

वेदों में क्या है?

सूक्त-७३ प्रथम मंडल देवता—अग्नि

अग्नि पैतृक धन के समान अन्न दान करते हैं. वह धर्मशास्त्र के विद्वान व्यक्ति के समान सरल नेता हैं. वह सुखासन से बैठे हुए अतिथि के समान तर्पणीय एवं होम-कर्ता के समान यजमान के घर की उन्नति करते हैं. (१)

जो अग्नि प्रकाशयुक्त सूर्य के समान यथार्थदर्शी हो कर अपने कर्मों से लोगों को सब दुखों से बचाते हैं, यजमानों से प्रशंसित हो कर रूप के समान परिवर्तनहीन हैं एवं आत्मा के समान सुखदायक हैं, ऐसे अग्नि को सब यजमान धारण करते हैं.(२)

जो अग्नि प्रकाशवान सूर्य के समान सारे जगत को धारण करते हैं, अनुकूल मित्रों वाले राजा के समान धरती पर निवास करते हैं एवं जिस अग्नि के सामने संसार इस प्रकार बैठता है, जैसे पुत्र पिता के सम्मुख, वह अग्नि अनिंदिता एवं पति द्वारा स्वीकृत नारी के समान शुद्ध कर्म वाले हैं. (३)

हे अग्नि! यजमान उपद्रव रहित गांवों में बने अपने यज्ञगृहों में निरंतर काष्ठ जला कर सामने बैठे तुम्हारी सेवा करते हैं एवं अनेक प्रकार का हव्य अन्न देते हैं. तुम सब अन्न के स्वामी बन कर हमें देने के लिए धन धारण करो. (४)

हे अग्नि! हवि रूप धन से युक्त यजमान अन्न प्राप्त करें एवं तुम्हारी स्तुति करने वाले तथा तुम्हें हवि देने वाले विद्वान संपूर्ण जीवन प्राप्त करें. हम संग्राम में शत्रु के अन्न पर अधिकार करने के पश्चात यश के लिए देवों को हवि का भाग दें. (५)

अग्नि की बारबार अभिलाषा करती हुई नित्य दुग्धशालिनी एवं तेजस्विनी गाएं यज्ञ देश में प्राप्त अग्नि को दूध पिलाती हैं. बहती हुई सरिताएं अग्नि से अनुग्रह की याचना करती हुई पर्वत के समीप से दूर देश को बहती हैं. (६)

हे द्योतमान अग्नि! यज्ञ के स्वामी देवों ने तुम्हारे अनुग्रह की याचना करते हुए तुम में हवि स्थापित किया. इस के पश्चात इसी अनुष्ठान के निमित्त उषा और रात्रि को भिन्नभिन्न रूप वाला बनाया. अर्थात निशा को काला और उषा को श्वेत बनाया. (७)

हे अग्नि! तुम जिन लोगों को धन प्राप्त करने के लिए यज्ञकर्म के प्रति प्रेरित करते हो, वे और हम यज्ञ प्राप्त करें. तुम ने आकाश, धरती और अंतरिक्ष को अपने तेज से भर दिया है तथा छाया के समान सारे संसार की रक्षा करते हो. (८)

हे अग्नि! तुम्हारे द्वारा रक्षित हो कर हम अपने अश्वों से शत्रु के अश्वों का, अपने भटों द्वारा शत्रु के भटों का एवं अपने पुत्रों की सहायता से शत्रु के पुत्रों का वध करेंगे. परंपरा से प्राप्त धन के स्वामी एवं विद्वान हमारे पुत्र सौ वर्ष जीवित रह कर सुख भोगें. (९)

हे अग्नि! हमारे समस्त स्तोत्र तुम्हारे मन और अंतःकरण को प्रिय हों. हम देवों के भोग करने योग्य धन तुम में स्थापित कर के तुम्हारे उस धन की रक्षा करना चाहते हैं, जो हमारी दरिद्रता मिटा सके. (१०)

क्या आपका मुन्ना ३ महीने का हो गया?

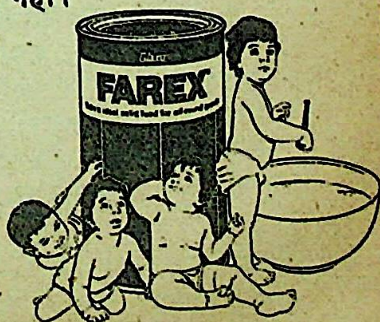
अब सिर्फ़ दूध उसकी आयरन की ज़रूरत नहीं पूरी कर सकता



उसे दीजिये आयरन से भरपूर-फ़ैरेक्स

"जन्म के समय बच्चे को माँ से जो आयरन-भंडार प्राप्त होता है वह जन्म के बाद धीरे-धीरे घटने लगता है। हालाँकि दूध एक अच्छा आहार है फिर भी आयरन की कमी के कारण यह अपने आप में पूर्ण आहार नहीं। इसीलिए बच्चे को आयरन वाले ठोस आहार चाहिए।"

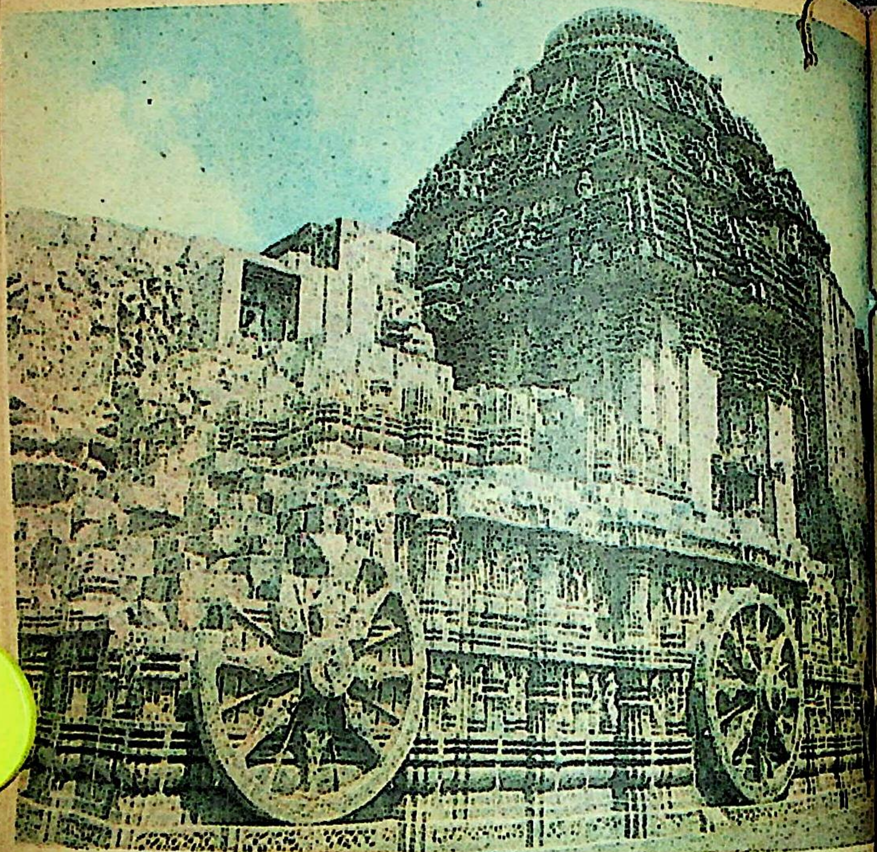
—डॉ. सुभाष सी. आर्य:



डॉक्टरों की सिफ़ारिश है

फ़ैरेक्स

CASGLF-32-183 HN



कोणार्क का सूर्य मंदिर

लेख • उदयशंकर सिन्हा

भारत में मध्यकालीन मंदिरों को देख कर प्रमुख धार्मिक पंथों की जानकारी हमें होती हो अथवा नहीं, लेकिन इन मंदिरों में प्राणहीन पत्थरों को बोलते जरूर महसूस किया जा सकता है. दक्षिण के मंदिरों की तरह ही उड़ीसा के मंदिर भी भारतीय स्थापत्य कला के सुंदर नमूने हैं.

उड़ीसा को मंदिरों का देश भी कहा जा सकता है. अकेले भुवनेश्वर में ही 99 बड़ेबड़े मंदिर हैं. कोणार्क के सूर्य मंदिर की धार्मिक प्रामाणिकता अलग प्रश्न है, लेकिन शिल्पकला के इतिहास में इस मंदिर ने निश्चित ही कई नए पृष्ठ जोड़े हैं. इस मंदिर की एकएक दीवार व प्रतिमा में जीवन के लक्षण हैं. प्राणहीन पत्थरों से बनी नृत्यांगनाएं सचमुच नृत्य करती सी प्रतीत होती हैं. पराक्रमी अश्व सूर्य के रथ को निरंतर खींचते से लगते हैं. मंदिर की दीवारों पर खुदी हुई फूलपत्तियां, पक्षी,

पशु, मनुष्य सभी मानो बांहें फैला कर यात्रियों का स्वागत करते हैं. बड़े यत्न से खोदी तराशी गई नृत्यांगनाओं की मूर्तियों को देखने से ऐसा लगता है, जैसे उन के नूपुरों की झंकार अभीअभी ही रुकी हो.

उड़ीसावासियों ने अपने 'देश' को पांच विशेष तीर्थ क्षेत्रों में बांटा था— शिव, दुर्गा, विष्णु, गणेश और आदित्य इन में से कोणार्क को 'आदित्य' या अर्क क्षेत्र कहा जाता है. भुवनेश्वर शिव का एकाग्र क्षेत्र है. पुरी की चक्र क्षेत्र, कटक में महाविनायक क्षेत्र तथा यज्ञपुर में दुर्गा क्षेत्र है. चक्र क्षेत्र 'पुरी' के उत्तरपूर्व कोण पर बसे होने के कारण संभवतः 'कोण' और 'अर्क' (सूर्य) ने इस स्थान का नामकरण कोणार्क होने में योग दिया. कोणार्क का सूर्यमंदिर पुरी से लगभग 29 किलोमीटर उत्तरपूर्व में स्थित है.

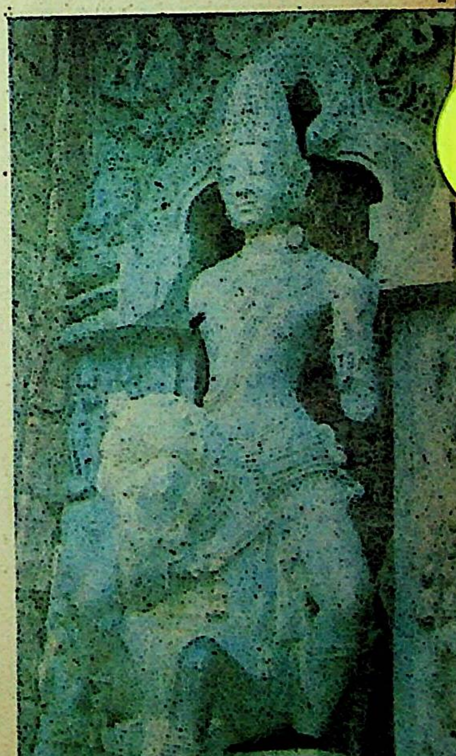
मंदिर की स्थापना का इतिहास

11वीं और 12वीं शताब्दी में अन्य राज्यों की तरह उड़ीसा पर भी विदेशी लुटेरों द्वारा कई आक्रमण किए गए. 1236 ईसवी में दिल्ली के तत्कालीन गुलाम वंश के शासक सुलतान अल्तमश की मृत्यु के उपरांत दिल्ली का सिंहासन कुछ दिनों तक दुर्बल रहा. इन्हीं दिनों में नासिरुद्दीन महमूद तख्त पर बैठा और उस ने तूतन खां को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया. तूतन खां ने 1243 में उड़ीसा के शक्तिशाली राजा नरसिंहदेव (प्रथम) के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया. काटासीन नामक स्थान पर तूतन खां की सेना बुरी तरह परास्त हुई. इस विजय के कारण नरसिंहदेव की विजयपताका आसपास के राज्यों में फहराने लगी और उन्होंने एक ऐसा कीर्तिस्तंभ निर्माण करने का विचार किया, जो उन की इस महान विजय को चिरस्मरणीय कर सके.

समुद्र का गर्जन और सूर्योदय का अपूर्व सौंदर्य नरसिंहदेव को हमेशा ही मुग्ध किया करता था. कीर्तिस्तंभ के रूप में उन्होंने एक विशाल मंदिर की स्थापना की बात सोची, ताकि 'देवालय' तथा 'कीर्तिस्तंभ' दोनों कार्य एक में ही हो सकें. स्थान के तौर पर उन्होंने इसी स्थान को चुना, क्योंकि यह समुद्र के बिलकुल किनारे पर था.

जिस स्थान पर इस मंदिर का निर्माण हुआ है, वह समुद्र के एकदम किनारे पर होने से कीचड़ से भरे हुए एक गहरे गड्ढे के रूप में था. विशु महाराणा नामक एक कुशल कारीगर को मंदिर का निर्माणकार्य सौंपा गया. 1,200 कारीगरों की सहायता से 12

शिल्पकला की दृष्टि से बेजोड़ इस मंदिर की दीवारों पर खुदी फूलपत्तियां, पशु, पक्षी, मनुष्य मानो बांहें फैला कर पर्यटकों का स्वागत करते हैं.



ही वर्ष में इस मंदिर का निर्माणकार्य पूरा हुआ. राजा नरसिंहदेव ने मंदिर के निर्माण के पूर्व कारीगरों को आदेश दिया था कि जब तक मंदिर तैयार नहीं हो जाता, कोई भी निर्माणस्थल को छोड़ कर नहीं जाएगा.

मंदिर की रूपरेखा

उड़ीसा के मंदिर उन दिनों एक विशेष रीति के अनुसार बनते थे. सब से पीछे प्रधान मंदिर 'विमान' बनता था. उस के सामने दर्शकों के बैठने का स्थान 'जगमोहन' होता था. 'जगमोहन' के सामने नृत्य मंडप (आरती के समय देवदासियों द्वारा नृत्य करने का स्थान) तथा सब से आगे 'भोग मंडप' (देवता के लिए भक्तगण जो कुछ लाते थे उसे वहीं प्रस्तुत करते थे) बनता था. उड़ीसा के ज्यादातर मंदिर इसी नमूने के आधार पर बने हुए हैं.

विमान से ले कर भोग मंडप तक का अंश इस तरीके से बनाया जाता था कि किसी एक स्थान पर बैठ कर भी दर्शक सीधे देवता के दर्शन कर सकें. प्रधान मंदिर की ऊंचाई, 'जगमोहन' की ऊंचाई से लगभग दोगुनी हुआ करती थी. नृत्य मंडप की छत जगमोहन की छत जैसी होती थी. कोणार्क मंदिर में 'भोग मंडप' अलग नहीं होने के कारण 'भोग' और 'नृत्य' के एक ही स्थान पर होने की संभावना की जाती है. यह भी हो सकता है कि नीचे के बरामदे में नृत्यादि होता हो और ऊपर 'भोग' की सामग्री रखी जाती हो.

नरसिंहदेव की कल्पना के अनुसार इस मंदिर को सात घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले विशाल रथ का आकार दिया गया है. इस विशाल रथ में 12 जोड़े (24) पहिए लगे हुए हैं. जो शिल्पकला के खूबसूरत नमूने हैं. विशेषज्ञों ने ऐसी संभावना व्यक्त की है कि ये 12 जोड़े चक्के सूर्य द्वारा बारह राशियों में प्रवेश करने के प्रतीक स्वरूप हैं. हर चक्के में आठ तीलियां (आरे) बनाई गई हैं, जो कि आठ प्रहरों के प्रतीक स्वरूप हैं. रथ के सात घोड़े, सात दिनों को जाहिर करते हैं.

इन पहियों की गोलाई करीब 1.8 मीटर है. बीच में निकला हुआ चक्के का धुरा प्रायः 30 सेंटीमीटर का है और उसे एक कील से अटका हुआ दिखाया गया है.

मंदिर की लंबाई लगभग 68 मीटर (22 फुट) है. इस के भीतर का अंश क्रमशः कम हो कर ऊपर की ओर उठ गया है, घर की लंबाई और चौड़ाई 10 मीटर समचतुष्कोण है.

गर्भगृह के बीच में मूल्यवान क्लोराइट पत्थर से बना सिंहासन आज भी पड़ा है. इस वेदी के निचले भाग में बहुत निपुणता के साथ असंख्य श्रेणीबद्ध हाथियों की मूर्तियां खुदी हुई हैं, पूजन सामग्री लिए स्त्रियां खड़ी हैं. इन में राजा और रानी की उपस्थिति भी दिखलाई गई है.

लोगों का ऐसा अनुमान है कि इस मंदिर की बनावट न कभी खत्म हुई और न कभी इस में देवता की प्रतिष्ठा हो पाई थी, क्योंकि एक कहावत के अनुसार मंदिर के ऊपर 'कलश' स्थापना के बाद विशु महाराणा के पुत्र ने मंदिर के बुर्ज से नीचे कूद कर 'आत्महत्या' कर ली थी, जिस से मंदिर अपवित्र हो गया और पूजन के लिए परित्यक्त कर दिया गया. गर्भगृह के प्रवेश स्थान पर भी दोनों तरफ 'कारुकार्य' किए हुए 155 सेंटीमीटर (5 फुट) चौड़े क्लोराइट पत्थर लगे हुए हैं. मंदिर की दीवारों की चौड़ाई लगभग 5.50 मीटर (18 फुट) की है.

जगमोहन के चारों तरफ चार दरवाजे हैं. पूर्व की ओर प्रधान प्रवेश पथ, पश्चिम की तरफ गर्भगृह में जाने का रास्ता तथा उत्तर और दक्षिण के बरामदों में जाने के लिए दोनों तरफ दरवाजे बने हुए हैं.

उत्तर, दक्षिण और पूर्व की तरफ तीन चौड़ी सीढ़ियां हैं. पूर्व की तरफ की सीढ़ी के दोनों ओर सात घोड़े लगे हुए हैं. दक्षिण और उत्तर की सीढियों के दोनों तरफ दो हाथी और दो घोड़े लगे हुए हैं जो अपनी जगह से गिर पड़ने के बाद फिर से ठीक जगह पर नहीं बैठाए जा सके हैं. इन घोड़ों पर चढ़े

योद्धाओं का शत्रु संहारक के रूप में दिखलाया गया है. दोनों हाथियों ने भी अपनीअपनी सूंड से दो आदमियों को पकड़ रखा है.

जगमोहन के प्रधान प्रवेश पथ के ऊपर एक विशाल क्लोराइट पत्थर पर नौ ग्रहों की मूर्तियां खोदी गई हैं. इस क्लोराइट पत्थर की लंबाई सात मीटर (22 फीट), चौड़ाई दो मीटर से कुछ ऊपर (सात फीट) एवं ऊंचाई 1.33 मीटर (चार फीट) है.

मंदिर की शिल्पकला

कोणार्क मंदिर की दीवारों पर जितनी भी आकृतियां बनी हैं, उन में अश्लीलता ही अधिक है. इस का कारण समझना यद्यपि कठिन है, फिर भी कुछ आम कहावतें ज्यादा प्रचलित हैं. सरल और सहज विश्वासी लोगों का कहना है कि आध्यात्म और सांसारिकता के समन्वय से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है. कुछ लोगों का मानना है कि ऐसा केवल यौन शिक्षा को ध्यान में रख कर किया गया था. कुछ लोग यह भी मानते हैं कि ऐसा तांत्रिक साधना के प्रयोजन से किया गया था. सब से ज्यादा मान्य कहावत के अनुसार– "मनुष्य द्वारा वासना में लिप्त रहने पर मोक्ष लाभ नहीं होता. इस कारण धर्म, अर्थ, काम की वासना से मुक्त होने के लिए 'भोग' का प्रदर्शन किया गया है. मनुष्य की जब भोग से वितृष्णा हो जाएगी, तभी वह मोक्ष लाभ की चिंता कर सकेगा. यहां एक साधु को स्त्री समागम करते दिखाया गया है. ऐसा मानना है कि इसे 'मेनका-विश्वमित्र' की कथा को आधार मान कर बनाया गया होगा.

मंदिर के निचले हिस्से में विभिन्न भंगिमाओं में पंक्तियों में लगभग 1,452 हाथियों की मूर्तियां बनी हुई हैं. कहीं राजा स्वयं हाथी पर सवार है, और अनुचर हाथी के ऊपर चंवर झुला रहे हैं. कहींकहीं 'वीरभाव' में सेना चल रही है, कहीं हाथी समूह अपने बच्चों के साथ जंगल में पेड़ों को पैरों से रौंद कर खा रहा है.

ऊपर के हिस्से में विभिन्न प्रकार के काल्पनिक जीव बनाए गए हैं. तीसरी पंक्ति की मूर्तियों में स्त्री और पुरुष के प्रेममिलन ही मुख्य विषय हैं. इन में से किसीकिसी मूर्ति की वीभत्सता इतनी अधिक है कि कामसूत्र में भी उस का कोई विवरण प्राप्त नहीं होता. मंदिर के चारों ओर बड़ेबड़े बरामदे बने हैं, जिन पर खुदी हुई कुछ मूर्तियां काफी बड़ी हैं. इन मूर्तियों को देखने से कारीगर की निपुणता की सराहना करनी पड़ती है.

शेष पृष्ठ 149 पर

खाने के रंग कितने बदरंग

लेख • कपिला कांत

त्योहारों के नाम से ही मुंह में पानी आ जाता है और जब दशहरा, दीवाली आ रहे हैं तो रंगबिरंगी मिठाइयां भी बनेंगी और मजे ले कर खाई भी जाएंगी.

अलगअलग थालों में सजी मिठाइयां और पकवान देख कर सचमुच ही कितना जी ललचाता है, बिना सोचेसमझे ही मुंह में पानी आ जाता है. जरा सोचिए, अगर ये मिठाइयां या पकवान रंगीन होते तो क्या आप लोग इन्हें उसी चाव से खरीद कर खाते,





जिस चाव से अब खा रहे हैं?

जरा ठहरिए, मुंह में रखने से पहले जरा यह तो सोच लीजिए कि ये रंग जो आप मिठाइयों, पकवानों तथा मसालों के रूप में खा रहे हैं, खाने लायक हैं भी या नहीं.

खाने के विभिन्न रंगों को अलगअलग श्रेणियों में रखा जा सकता है :

• कोलतार डाई: मेटानिल यैलो (बड़ मार्का पीला रंग), नारंगी, औरामिन, रोडामिन बी. ब्लू. वी. आर. एस. तथा

सीरिज



जरा ठहरिए, पहले देख लें, त्योहारों के मौकों पर आप जो रंगबिरंगी स्वादिष्ट मिठाइयां खाते हैं, वह खाने लायक हैं भी या नहीं?

मैलाकाइट ग्रीन आदि इस श्रेणी के रंग हैं. इन का अधिक प्रयोग गुरदे, तिल्ली तथा जिगर में विकार उत्पन्न करता है. गऊ मार्का पीला रंग अधिक मात्रा में उपयोग करने से आदमियों में प्रजनन की क्षमता भी क्षीण पड़ जाती है.

एजो डाई: इस श्रेणी के रंगों का असर धीरेधीरे प्रकट होता है. इन रंगों का प्रयोग करने से रक्त में लाल रक्त कोशिकाएं कम हो जाती हैं. सनसेट यैलो जो बर्फी, आइसक्रीम तथा दूध से बनी अन्य मिठाइयों में इस्तेमाल होता है, जब कुत्तों को खिलाया गया तो देखा गया कि उन की आंखों की रोशनी कम हो गई या वे पूर्णतया अंधे हो गए. यही रंग चूहों को देने पर देखा गया कि उन का अच्छी तरह से विकास नहीं हुआ तथा कुछ को दस्त लग गए.

जैनथीन डाई: इरिथ्रोसिन रंग भी अपना असर धीरेधीरे दिखाता है. इस का प्रयोग भी बर्फी इत्यादि बनाने के लिए होता है. इस रंग का प्रयोग अधिक मात्रा में करने से 'जीन' के क्रम में बदलाव आ जाता है.

इनडिगोकारमिन: यह एक नीला रंग है, जो कुछ खाद्य पदार्थों से मिल कर दूसरा रंग बना देता है. इस रंग का अधिक मात्रा में प्रयोग कैंसर जैसे घातक रोग को जन्म देता है. इन श्रेणियों के ज्यादा प्रयोग में आने वाले रंग निम्नलिखित हैं:

आरेंज II (नारंगी), औरामिन (नारंगी), सुदाना III, रोजमिन बी.(लाल), ब्लू.वी. आर. एस. (नीला), मैलाकाइट ग्रीन (हरा).

इन सभी रंगों से शरीर के विभिन्न अंग जैसे गुरदा, जिगर, तिल्ली इत्यादि खराब हो जाते हैं.

मैलाकाइट ग्रीन (हरा): इस का प्रयोग फेफड़ों, स्तनों, अंडकोष तथा जिगर में गिलटी (ट्यूमर) पैदा कर देता है. इस के अलावा इस रंग से आंखों, हड्डियों, त्वचा तथा फेफड़ों में विकार भी उत्पन्न हो जाते हैं.

आरेंज प्रथम (नारंगी): इस से कैथारसिस हो जाता है.

कोनगो रेड (लाल): इस रंग का प्रयोग करने से आंखों में विकार उत्पन्न हो जाता है.

मेटानिल यैलो (गऊ मार्का पीला रंग): आदमियों में प्रजनन की शक्ति क्षीण कर देता है.

लेड क्रोमेट (नारंगी): बच्चों का मस्तिष्क खराब करता है. खून की कमी, गर्भपात, लकवा, मंदबुद्धि तथा रक्त में सीसा इकट्ठा करता है, जो हानिकारक है.

अमरंथ (लाल): कैंसर पैदा करता है, प्रजनन शक्ति क्षीण करता है, गर्भ में शिशु की मृत्यु तथा विकार युक्त बच्चों का जन्म होता है.

सनसेट यैलो (पीला): इस के कारण आंखों में विकार उत्पन्न होता है तथा असंतुलित विकास होता है.

शायद ही कोई खाद्य पदार्थ ऐसा हो, जिस में इन रंगों की मिलावट न हो. दूध, आइसक्रीम, तेल, हलदी में लेड क्रोमेट तथा पिसी हलदी में गऊ मार्का पीला रंग अथवा पीली मिट्टी मिलाए जाते हैं. गरम मसालों व मिर्ची में भी इन की मिलावट होती है. साबुत धनिए को ताजा दिखाने के लिए हरे रंग का लेप किया जाता है. साबुत लाल मिर्च पर लाल रंग (रोडामिन बी.) की पालिश की जाती है. कुटी मिर्च में गेरुआ पिसी ईंट मिलाई जाती है. हींग की जगह कोई और चीज रंग कर बेची जाती है. चने, मूंग तथा अरहर की दाल को और पीला दिखाने के लिए गऊ मार्का पीले रंग से रंग दिया जाता है. बेसन तथा गुड़ में पीले रंग की तथा चाय की पत्ती व चूरे में भी खूब मिलावट की जाती है.

इन्हें छोड़िए, लोग तो सिरके, सुपारी इत्यादि में भी रंग मिलाने से बाज नहीं आते.

लीजिए, घंटी बजाता [illegible] पीले और हरे रंग में केले, संतरे, अमरूद तथा तरबूज इत्यादि बेचता हुआ बच्चों का मिठाई वाला आ गया. इस ने इन मिठाइयों में जो रंग मिलाए हैं, क्या वे अच्छे हैं? जी नहीं, अच्छे रंग तो बेहद महंगे हैं, जब कि चीनी तथा रंगों से बने इन फलों को वह केवल पांच पैसे में दे रहा है. ओह, यह फेरी वाला तो यह भी नहीं सोचता कि अपने जरा से स्वार्थ के पीछे वह कितने मासूम बच्चों के जीवन से खिलवाड़ कर रहा है.

जरा सोचिए तो, अगर ये रंग इतने जानलेवा हैं तो इन का प्रयोग ही क्यों किया जाता है? हम सभी जानते हैं कि ये रंग किसी भी प्रकार से खाने लायक नहीं हैं. फिर सिर्फ आंखों की तृप्ति के लिए क्यों ये जहर खाद्यान्नों में घोले जाएं?

आज भी जो शिकायतें मिलावट के लिए आती हैं, उन में प्रति वर्ष 30,000 से भी अधिक शिकायतें रंग की मिलावट की होती हैं.

खाद्य में मिलावट रोकने के कानून के अनुसार प्राकृतिक रंग जैसे टेसू, हलदी, केसर, पत्तों का हरा रंग अर्थात 'क्लोरोफिल' के अलावा ग्यारह कोलतार रंग खाद्य पदार्थों में मिलाए जा सकते हैं. ये कोलतार रंग आइसक्रीम, दूध तथा उस से बनी मिठाइयों, अंडे से बनी चीजों, बिस्कुट, पेस्ट्री, टाफी, गोलियों, फलों से बने अचारमुरब्बे, कस्टर्ड पाउडर, सूप पाउडर इत्यादि में प्रयोग में लाए जा सकते हैं.

रंग की मिलावट गैर कानूनी

1 जून, 1975 से सरकार ने यह कानून बना दिया कि खानेपीने की कोई वस्तु जिस पर भारतीय मानक संस्थान की मुहर न लगी हो, बाज़ार में नहीं बिक सकती. इस कानून के अनुसार किसी भी खाद्य में रंग की मिलावट गैरकानूनी है, यदि:

उस में कोई भी रंग कानूनन सरकार द्वारा उपयुक्त न हो.

कोई भी खाद्य पदार्थ जिस को

भारतीय मानक संस्थान द्वारा मान्यता प्राप्त न हो.

दालों, मसालों, चाय, काफी इत्यादि में रंग का प्रयोग हो:

किसी भी पदार्थ में 0.2 ग्राम प्रति एक किलो से ज्यादा रंग मिला हो.

भविष्य में आप वही खाद्य पदार्थ खरीदें जो भारतीय मानक संस्थान (आई.एस.आई.) द्वारा मान्यता प्राप्त हों.

जहां पर जरा सी भी शंका हो कि रंग की मिलावट हुई है, आप कानून की सहायता लेना न भूलें.

निर्माता को कम से कम रंग प्रयोग करने के लिए उत्साहित करें.

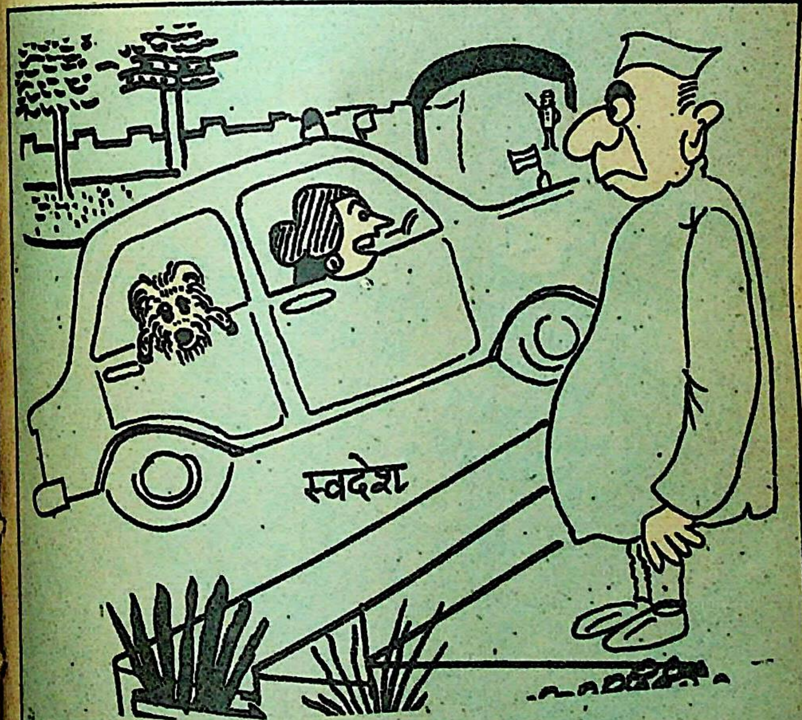
उपभोक्ता को रंगों के प्रयोग द्वारा होने वाली हानियों के बारे में उचित जानकारी देनी चाहिए, ताकि वे इन रंगों का प्रयोग कम से कम करें.

गृहिणियों को प्राकृतिक रंगों का जो फलों, सब्जियों तथा मसालों से प्राप्त हों, प्रयोग करना चाहिए.

निर्माता तथा वितरकों को यह समझाना चाहिए कि सस्ते रंग की जगह अच्छे रंगों का प्रयोग करें.

ऐसे स्थान से सामान खरीदें, जहां वस्तुएं किस्म की जांच के बाद बेची जाती हैं.

देश का पढ़ालिखा वर्ग यदि इस ओर थोड़ा सा भी ध्यान दे तथा छोटीछोटी प्रयोगशालाएं खोल ले, जिन में इन मिलावट युक्त रंगों को परखा जा सके, तो इस समस्या का सामना आसानी से किया जा सकता है. ●



"भले ही तुम्हारे संसद में 'सरकारी वाहनों के दुरुपयोग' पर विपक्षियों ने होहल्ला मचाया हो पर कान खोल कर सुन लो, मैं अपने टामी को गाड़ी में सैर कराने की आदत नहीं छोड़ सकती."

एक और संग्रहणीय अंक

सरिता दीवाली विशेषांक



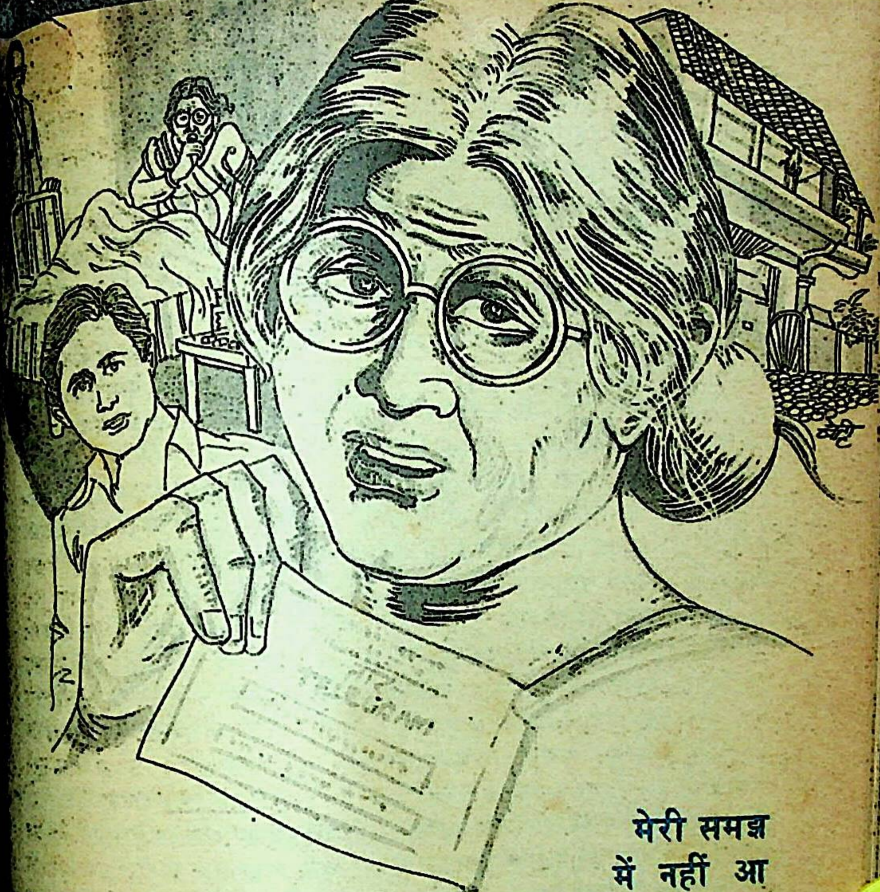
फुलझड़ियों की जगमगाहट, दीपों की झिलमिलाहट,
पटाखों की रंगीनियों जैसा सरिता का 'दीवाली विशेषांक'
पूरे परिवार के लिए इतनी अधिक सामग्री कि घंटों
पढ़ें और दीवाली का आनंद कई गुना उठाएं.

जगमग साजसज्जा,
दीवाली के खट्टेमीठे,
वातावरण पर
दस कहानियां,
धारावाहिक उपन्यास
की एक नई किस्त,
दीवाली के लिए विशेष
पकवानों की विधियां,

दीपमालिकाओं
सी सजी कविताएं,
नया मार्ग दिखाने वाले
कई ज्योतिर्मय लेख.
इतनी अधिक
इतनी विविध सामग्री
और कहीं नहीं मिलेगी.
मूल्य 3·75 रुपए.

भारत में सबसे
अधिक पढ़ी जाने वाली
पाक्षिक पत्रिका.

अपनी प्रति
सुरक्षित कराना
न भूलें.



मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि जिस मां ने अपनी ममता के खातिर इतना बलिदान किया, वही बेटे आज जीते जी अपनी मां को वनवास क्यों दे रहे हैं?

कौशल्या का वनवास

पब्लिक स्कूल में नौकरी मिलने के कारण मैं बहुत खुश था. एम.ए. करने के बाद पूरे सात महीने ...पत्र बगल में दबाए जहां कहीं से भी ...करी मिलने की आस होती, पहुंच जाता ... बड़ी मुशकिल होती थी असफल होने ... घर वापस लौटने में. मां तो बिना कुछ ...ही मुझे दिलासा देना शुरू कर देती थीं, ...किन उन्हें खुद कितना दुख और चिंता रहती थी, इस का कुछ अनुमान तो लगा ही सकता था.

इस स्कूल के मालिक शिवचंद ने बिना ज्यादा हीलहुज्जत के मुझे चार सौ रुपए माहवार पर रख लिया था. साथ में यह भी कहा कि शाम को घंटा दो घंटा मैं उन के बच्चों को अलग से पढ़ा दिया करूं. मुझे नौकरी की इतनी सख्त जरूरत थी कि बिना

कहानी • प्रमिला कौशल

ज्यादा सोचविचार किए मैं ने उन की सब शर्तें स्वीकार कर लीं. मां को जब पता चला कि मैं गांव में नहीं रह सकूंगा, मुझे शहर में ही अकेले रहना पड़ेगा तो उन्हें बहुत बुरा लगा. लेकिन नौकरी तो करनी ही थी, रहना जहां भी पड़े.

मुझे शहर में आए 15 दिन हो गए थे. एक दिन कक्षा में पढ़ा रहा था कि चपरासी ने आ कर कहा, "आप को साहब ने अपने दफ्तर में बुलाया है."

मैं कक्षा बीच में ही छोड़ कर साइकिल उठा उन के दफ्तर गया. उन का दफ्तर स्कूल से थोड़ी ही दूरी पर था. असल में शिवचंद का काफी बड़ा कारोबार था. मैं उन के बच्चों को पढ़ाने उन के घर तो हर रोज जाता था, लेकिन उन से कभी मुलाकात नहीं हो पाती थी. उन की कोठी नई ही बनी लगती थी. काफी नौकरचाकर थे घर पर. मैं कुछ घबराया सा उन के कमरे में दाखिल हुआ तो उन्हें आरामकुरसी पर सिगार पीते पाया. मुझे देखते ही बोले, "सुना है तुम्हें मकान की जरूरत है?"

उन की बात सुन कर मेरी घबराहट कुछ दूर हुई. मैं बोला, "जी हां, ढूंढ़ रहा हूं, शायद जल्दी ही मिल जाए."

"कहां रह रहे हो आजकल?"

"जी, एक धर्मशाला में ठहरा हुआ हूं."

"हम ने तुम्हारे लिए मकान का बंदोबस्त कर दिया है."

"मैं कै...से आप का...धन्यवाद करूं."

"ठीक है, ठीक है. मेरा मुनीम तुम्हें मकान दिखा देगा. तनख्वाह में से 50 रुपए काट लिए जाएंगे."

"जी अच्छा," कह कर मैं बाहर निकल आया. मुनीम दीनानाथ मुझे शहर के पुराने चौक के एक किनारे पर बने एक बड़े से मकान के भीतर ले गया. मुझे ड्योढी पर ही खड़ा कर के वह खुद भीतर चला गया. थोड़ी देर बाद आ कर मुझे भी बुला ले गया. अंदर आंगन में चारपाई पर 70-75 वर्ष की एक महिला बैठी थी. पास ही जमीन पर एक और औरत जिस की उम्र कोई 40-45 वर्ष की होगी, बैठी कोई धार्मिक पुस्तक पढ़ सुना रही थी. मैं ने उस महिला को नमस्ते की तो उस ने भी मेरी नमस्ते का जवाब दे

दीनानाथ मुझे ऊपर की मंजिल पर गया. मेरा कमरा क्या था पूरा हाल था. घर भी बहुत बड़ा और सुंदर बना हुआ लेकिन उस में अकेली वह बुढ़िया अप नौकरानी के साथ रहती थी. मैं सुबह बजे घर से निकल कर रात का खाना से खा कर ही घर लौटता था. घर लौटने में कोई आकर्षण भी तो नहीं था

एक दिन लौट कर ऊपर जाने को सीढ़ी पर पांव रखा ही था कि पारो (उन नौकरानी) ने पास आ कर कहा, "मांजी को बुला रही हैं."

मैं उन के कमरे में गया तो वह चार पर लेटी हुई थीं. शायद तबीयत खराब

"आप ने मुझे बुलाया है?"

"हां, मेरा एक काम कर दो."

"कहिए."

उन्होंने सिरहाने से एक परचा पचास का नोट निकाल कर मेरे हाथ थमा दिया और बोलीं, "इस में लिखी ला दो बाजार से."

बाजार से लौटा तो उन्हें खांसी दौरा शुरू हो चुका था. हालत काफी लग रही थी. मैं ने दवाई बना कर पिलाई थोड़ी देर बाद वह सो गईं. मैं पारो से यह कर कि रात को तबीयत ज्यादा खराब हो तो मुझे बुला लेना, ऊपर आ गया.

सुबह उठ कर उन से हालचाल पूछने तो वह काफी स्वस्थ दिख रही थी. देखते ही बोलीं, "तुम्हें कल काफी परेशान किया."

"इस में परेशानी की क्या बात है लेकिन आप अके...ली?" मैं कुछ पूछते पूछते चुप हो गया.

"अकेली कहां हूं? पारो है. और तो शिवचंद ने तुम्हें भी मेरे लिए भेज दिया है."



"आप शिवचंदजी की..."

"हां, तुम ठीक समझे. शिवचंद मेरा बेटा है."

"आप उन की माताजी हैं?" मुझे बहुत हैरानी हो रही थी.

"हांहां, वही तो. दीनानाथ कह रहा था शिवचंद ने तुम्हें मेरी देखरेख के लिए यहां रहने के लिए भेजा है. तभी तो तुम से किराया नहीं ले रहा."

"लेकिन किराया तो..." मैं आगे कुछ बोलने ही जा रहा था कि कुछ सोच कर चुप हो गया. लेकिन अब जब भी उन से मिलता, उन का हालचाल पूछ लेता. यह काम भी मेरी नौकरी में शामिल हो गया था.

एक रविवार को मैं खाना खाने बाहर जा रहा था कि माताजी ने पुकार लिया, "सरसों का साग बनाया है, खाएगा?"

"आप खिलाएंगी तो जरूर खाऊंगा." मैं भी शायद बाजार का खाना मजबूरी में ही खाता था.

"तो आ बैठ."

मैं शिवचंद की मां के साथ उन के घर गया तो चौकीदार बोला, "वे सब लोग तो सुबह ही शिमला चले गए हैं, छुट्टियों के बाद ही वापस आने को कह गए हैं."

उन्होंने रसोई में ही चटाई बिछा दी और खुद रोटियां सेंकने लगीं. नहीं तो अकसर पारो ही उन का खाना बनाती थी. मैं न जाने कितनी रोटियां खा गया. जब पेट भर गया और हाथ धोने के लिए उठने को हुआ तो माताजी को साड़ी के पल्लू से आंसू पोंछते पाया. मुझे अपनी ओर देखते हुए पा कर वह थोड़ा हंस कर बोलीं, "शंकर को भी साग बहुत पसंद था. मक्का की रोटी तो वह मेरे अलावा किसी और के हाथ की खाता ही न था."

"यह शं...क...र कौन है?"

"तू नहीं जानता? जानेगा भी कैसे. कभी बात ही नहीं हुई. वह मेरा छोटा बेटा है. विलायत में रहता है." फिर जैसे पिछली यादों में खोई हुई सी बोलीं, "शंकर बहुत

शैतान था. कभी टिक कर बैठता ही नहीं था.. वह तो सारी दुनिया से अनोखा निकला."

"अनोखा कैसे?"

"अरे, अनोखा नहीं तो और क्या! मेम से शादी की है. दूध की धुली है वह. नीलीनीली आंखें हैं."

"आप ने देखा है उसे?"

"हां, एक दफा शंकर के साथ आई थी. पूरे आठ दिन रही मेरे पास. सारा दिन हंसती रहती थी. शंकर भी खूब खुश रहता है उस के साथ," वह हंसती हुई बोलीं.

"कब आए थे यहां?"

"इस माघ में तीन साल हो जाएंगे. उस की बहू को यहां गरमी बहुत लगती है, इसलिए शंकर नहीं आ पाता जल्दीजल्दी."

मां को क्या लगता है, शायद यह सोचने की बेटे को फुरसत नहीं है. अलबत्ता विलायती मेम को गरमी लगती है, इसलिए बेटा मां से मिलने नहीं आता. खैर, मुझे क्या लेना? यह सोच कर मैं ने यों ही पूछा, "आप क्यों नहीं चली जातीं वहां?"

"गई थी एक दफा, पर जी नहीं लगा."

"क्यों?"

आंसू

देख सकता है भला
कौन ये प्यारे आंसू,
मेरी आंखों में न आ जाए
तुम्हारे आंसू.

—अख्तर शीराज



"शंकर और बहू तो सुबह के गए शाम ही को घर लौटते थे. बहू भी नौकरी करती है न. मैं अकेली जान, न कोई मेरी बोली समझे, न मैं किसी की. मुंह को तो जैसे ताला ही लग गया था. अब यहां तुम से ही दो घंटे...अरे...रे, कितनी रात हो गई. जाओ, हाथ धो लो और सो जाओ ऊपर जा कर." इतना कह कर वह भी उठ गईं. मैं भी उठ गया.

शिवचंद महीने बीस दिन बाद आ कर मां से पूछ जाते थे कि उन्हें किसी चीज की जरूरत तो नहीं है. मां के पास घड़ी दो घड़ी ही बैठते थे, शायद बहुत व्यस्त आदमी थे. वह अपने कर्तव्य की इति यहां तक ही पूछने में समझते थे, "मां, तुम्हें किसी चीज की जरूरत हो तो बता देना." उन्हें शायद इस बात का एहसास नहीं हो पाया था कि मां को सब से ज्यादा किस चीज की जरूरत होती है. मैं उन की मां को अकसर अकेले बैठे घंटों आसमान की ओर निहारते हुए देखता था.

एक दफा मैं ने माताजी से यों ही पूछा कि वह इस घर में अकेली क्यों रहती हैं, अपने बेटे के पास क्यों नहीं रहतीं. इस पर उन्होंने कहा था, "यहां कौन सी मैं दूर हूं, जब चाहूं जिसे बुला लूं. दरअसल वहां मेरी खांसी के कारण बहू रात भर सो नहीं पाती थी." फिर वह कुछ रुक कर बोलीं, "उन की रसोई में मांसमछली पकता है न. मेरे तो पुराने संस्कार ठहरे. हम तो जानवरों को पालना जानते हैं, मार कर उन को खाना नहीं. अब तू ही बता, वहां कैसे रहूं?"

मैं क्या कहता, चुप रहना ही बेहतर समझा. हम मां को छोड़ सकते हैं लेकिन...

एक दिन स्कूल से लौटा तो घर में कुछ चहलपहल सी लगी. माताजी दीनानाथ को कुछ सामान लिखवा रही थीं. मुझे देखते ही बोलीं, "देख रे, शंकर की चिट्ठी आई है. वह इस महीने की 25 तारीख को आ रहा है."

मैं अभी कुछ बोलता कि वह फिर बोलीं, "कुल 12 दिन रह गए हैं. इतने दिनों

ने सब तैयारी करनी होगी. पुताई वालों को बुलवाया है. अभी तक आए ही नहीं हैं." वह बहुत खुश नजर आ रही थीं.

पांच दिन हो गए थे शंकर की चिट्ठी को आए. माताजी को तो बात करने की भी फुरसत नहीं थी. तरहतरह की खाने की चीजें बनाबना कर डब्बे भरभर कर रख रही थीं. एक दफा मन में आया कि कहूं, इतना काम न करें, कहीं उस के आने तक बीमार हो कर न पड़ जाएं. पर उन का जोश देख कर उन को रोकने को मन नहीं किया.

25 तारीख में कुल तीन दिन रह गए थे कि अचानक शंकर का तार आया कि छुट्टी रद्द हो गई है, नहीं आ सकेगा. तार पढ़ कर माताजी कुछ नहीं बोलीं. धीमे से कुरसी पर से उठ कर अपने कमरे में चली गईं और दरवाजा बंद कर लिया. मुझे कुछ अजीब सा लगा. मैं ने दरवाजा खटखटाना चाहा तो पारो ने इशारे से मुझे रोक दिया और एक ओर ले जा कर बोली, "मैं ने तो पहले ही मांजी से कहा था कि पहले लल्ला आ जाएं तभी सब खुशियां कर लेना, पर मांजी ने तो मेरी बात कभी सुनी ही नहीं. पहले की तरह सब धरा का धरा रह गया न."

"क्या पहले भी ऐसा कभी हुआ है?" मैं ने पूछा.

"बाबूजी, पिछले तीन बरस से यही हो रहा है. जब मांजी चिट्ठियों में ज्यादा बुलाती हैं तो लल्ला ऐसे ही आने को लिख देते हैं. फिर बाद में इसी तरह तार आ जाता है कि नहीं आ सकता," पारो बोली.

"पर माताजी ने किवाड़ क्यों बंद कर लिए हैं?"

"रो जो रही होंगी." फिर एकदम से भावुक हो कर वह भरे गले से बोली, "रो लेने दो बाबूजी, नहीं तो छाती पर बोझ बैठ जाएगा. जब माताजी बहुत रोई थीं तो लल्ला ने जाते वक्त कहा था..."

"क्या कहा था?"

"यही कि रामजी भी तो 14 बरस के लिए वनवास गए थे. समझ लो मैं भी वन को ही जा रहा हूं."



देखा होता

अपनी आंखों ही से
तू ने उसे देखा है,
मेरी आंखों से भी
उसे देखा होता.

—जोश मलिहाबादी

मुझे लगा, मुझ से और कुछ नहीं सुना जाएगा. मैं चुपचाप ऊपर जा कर बिस्तर पर पड़ गया.

कैसे लोग इतनी आसानी से अपनी तुलना राम या कृष्ण से कर लेते हैं. वनवास किसे कहते हैं, शायद उन्हें नहीं मालूम. विलायत में ऐशोआराम की जिंदगी बिताना वनवास कब से हो गया? अपने स्वार्थ के लिए कैसा रूप धारण करना चाहता है इनसान? राम ने कितने कष्ट सहे थे, इस का अनुमान तक नहीं लगाया जा सकता. और यहां तो लगता है राम को नहीं बल्कि कौशल्या को वनवास मिला है. वही सब से अलगथलग, इस घर की चारदीवारी में कैद हो कर रह गई है. उन की सांसें पिछली यादों के सहारे ही चल रही हैं. शंकर को इस बात का एहसास होता तो शायद...

सुबह उठ कर देखा, माताजी का चेहरा तूफान के बाद की शांति का सा लग रहा था. मैं ने पास जा कर कहा, "आप कुछ दिनों के लिए शिवचंदजी के घर क्यों नहीं रह आतीं? मन बहल जाएगा. बच्चे भी अकसर आप को पूछते रहते हैं." मैं न जाने क्यों झूठ ही कह गया.

"मैं भी यही सोच रही थी. तुम भी

…जा रहे हो छुट्टियों में. अकेले अच्छा …ीं लगेगा. उधर ही दोचार दिन रह आऊं. …पहले भी कईकई दिन रह आती थी. जितने …दिन रहूंगी, बहू को कह दूंगी कि मांस वगैरह …न पकाए रसोई में," वह अपनेआप को …संभालती हुई सी बोलीं. दस दिन जो उन्होंने …श्रम किया था उस की थकान जो न जाने …कहां छिपी बैठी थी, अब अचानक एकदम से …आ कर चेहरे पर बैठ गई थी.

"चलिए, मैं आज ही आप को उधर …छोड़ आता हूं." मुझे खुशी हुई कि वह उधर …जाने के लिए मान गई हैं.

दो जोड़ा कपड़ा हाथ में ले कर और …कुछ डब्बे जिन में शायद शंकर के लिए …बनाए गए पकवान थे, रखवा कर वह …रिक्शा में आ कर बैठ गईं. शिवचंद के घर …पहुंच कर बाहर का फाटक खोल कर भीतर …गए तो सन्नाटा सा लगा. तभी चौकीदार ने …आ कर माताजी को प्रणाम किया और …प्रश्नात्मक दृष्टि से देखने लगा तो मैं ने कहा, "माताजी आई हैं. साहब को भीतर जा कर …बता दो."

"लेकिन साहब तो घर पर नहीं हैं."

"कहां गए हैं?".

"वे सब लोग तो सुबह ही शिमला चले गए. छुट्टियों के बाद ही वापस आने को कह गए हैं."

मैं माताजी को कुछ कहने के लिए पीछे की ओर मुड़ा तो उन्हें धीरेधीरे फाटक खोल कर बाहर जाते हुए देखा. मेरी तरफ उन की पीठ थी, इसलिए उन के चेहरे के भाव नहीं जान सका. रास्ते भर हम दोनों में से कोई नहीं बोला. घर आ कर मैं चुपचाप कुरसी पर बैठ गया. सोच रहा था कि ऐसी हालत में उन्हें छोड़ कर गांव जाऊं या न जाऊं. वह मेरे पास आ कर मेरे कंधे पर हाथ रख कर बोलीं, "जा, अपने घर जा. छुट्टियां शुरू हो चुकी हैं. तुम्हारी मां तुम्हारा इंतजार कर रही होगी. फिर तुम्हारी पत्नी भी इस हाल में है."

मैं ने बिना कुछ कहे उठ कर उन के पांव छुए और अटैची उठा कर बाहर जाने को मुड़ा तो कानों में आवाज आई, "तुझे चांद सा बेटा दे." 'वाह री ममता. बेटों द्वारा इतना मानसिक कष्ट सहने पर भी मनुष्य के मन में बेटे की ही लालसा रहती है,' मेरा मन कह उठा. ●

स्कूल तक किताबों का 5 किलो बोझ उठाना उसके लिए आज का सबसे आसान काम होगा.



कितना कठिन है आज के बच्चों का बचपन.

इसीलिए आपके बच्चे को अच्छी से अच्छी देखभाल की ज़रूरत है।

तभी तो उसके लिए बूस्ट बनाया गया है।

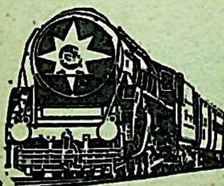
उसे हर सुबह एक कप मज़ेदार बूस्ट दीजिए। बूस्ट—शक्ति का ईंधन जो उसे दिन-भर चुस्त और फुर्तीला रखेगा।

क्योंकि बूस्ट में उत्तम क्वालिटी के पोषक-तत्वों—क्रीम युक्त दूध, गेहूँ, जौ मॉल्ट और कोको—के सभी गुण हैं।

उत्तमता की अपनी कीमत होती है।

बूस्ट की उत्तमता भी कीमती है।

क्या आप अपने बच्चे के लिए इससे कम सोच भी सकते है?



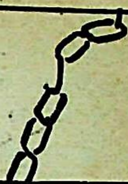




चुस्ती और फुर्ती के लिए शक्ति का ईंधन

HTD-HMM-3321A

हमारी बेड़ियां



एक दिन मैं किसी काम से अपने दोस्त के घर गया. उस के घर में बहुत भीड़ थी और एक कोने में मेरा दोस्त उखड़ेउखड़े भाव में खड़ा था. मैं घबरा गया और उस के करीब जा कर पूछा, "यार, बात क्या है? ये लोगों की भीड़ कैसी है?"

दोस्त बोला, "मेरे चाचाजी चल बसे हैं."

"मगर कैसे?" मैं ने आश्चर्य से पूछा.

उस ने कहा "मैं खाना खा रहा था, तभी मेरी छोटी बहन चिल्लाती, भागती हुई आई, 'सांपसांप, गुसलखाने में काला सांप.'

"हाथमुंह धो कर लाठी हाथ में ले मैं गुसलखाने की ओर भागा, तब तक आसपास लोगों की भीड़ लग गई. सब ने दूर से ही काले सांप पर ईंटपत्थर बरसाए.

"मेरे चाचाजी हाथ में दूध की कटोरी ले कर भागते हुए हमारे करीब आ कर बोले, 'कोई भी नाग पर पत्थर न बरसाए. यह शिवजी भगवान हैं और आज नागपंचमी का दिन है.' उस के बाद मेरे चाचाजी मना करने के बावजूद उस नाग की ओर बढ़ने लगे.

"जब चाचाजी ने दूध की कटोरी काले नाग की ओर बढ़ाई तो ईंटों से जख्मी नाग ने चाचाजी के हाथ पर ही फन मार दिया और चाचाजी चल बसे."

—उत्तम शाक्य

*

रायपुर शहर में बूढ़ातालाब के किनारे शीतला माता के मंदिर में एक दिन मैं ने देखा कि एक सभ्य और सुशिक्षित औरत पूजापाठ समाप्त कर के मंदिर में उलटे पैर चल रही है.

उत्सुकतावश मैं ने उस से पूछा, "आप देवी की ओर सामने देख रही हैं और उलटे पैरों चल रही हैं. यदि पीछे किसी से टकरा गईं तो?"

उस ने हाथ के इशारे से मुझे चुप हो जाने के लिए कहा.

परंतु दूसरे ही क्षण वह औरत पीछे खंभे से टकरा कर गिर गई और लगभग बेहोश हो गई. उस के सिर पर गहरी चोट लगी थी. तुरंत उसे हस्पताल पहुंचाया गया.

हस्पताल में होश में आने पर उस ने बताया कि भगवान को पीठ दिखाने से व्रत, उपवास, पूजाउपासना सब व्यर्थ हो जाते हैं.

—प्रकाश पतंगीवार

*

मेरी सहेली के परिवार में अगर बच्चे के पैर की चप्पल उस के जन्म के एक वर्ष के अंदर नहीं ली जाती तो फिर अगले तीन वर्ष तक वह पैर में कुछ नहीं पहन सकता. किसी कारणवश वह अपने बच्चे के लिए चप्पल नहीं ले पाई. अगले तीन वर्ष तक बच्चे को चप्पल, जूता पहनने को नहीं मिला.

पैर में चप्पल न होने के कारण बच्चे का चलनाफिरना बंद सा हो गया. धीरेधीरे उस के पैर कमजोर होने लगे और देखतेदेखते ही उस के दोनों पैर बेकार हो गए.

परिवार के रूढ़िवादी विचारों ने एक स्वस्थ बच्चे को जिंदगी भर के लिए अपाहिज बना दिया. —वीना बंसल ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

फिर भी

कहानी • दर्शना महेश पंडया

कोशा दूरदूर तक देख रही थी. समुंदर की लहरें उस के पांव पर आ कर वापस अपने में ही समा जाती थीं. 'क्या वह भी उस अथाह पानी में समा जांए? नहीं,' उस के मन ने जवाब दिया. अपनी बच्ची की जिम्मेदारी से वह कैसे मुंह मोड़ सकती है? उसे जिंदा रहना ही होगा. अपने लिए नहीं तो अपनी बच्ची के लिए ही सही. तो क्या वह अपने पति को छोड़ दे? छोड़ सकती है? जिस से एक बार प्यार किया, उस से प्यार न करना भी तो दिल के बस की बात नहीं होती.

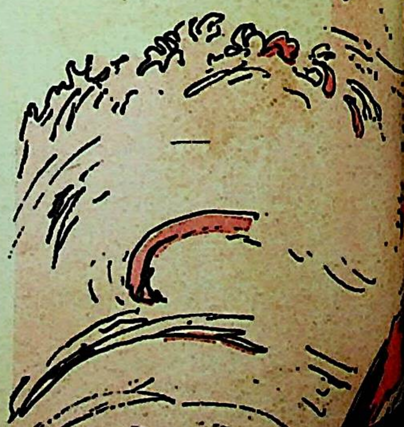
कितनी आशाओं और अरमानों को ले कर उस ने ब्याह किया था. सोचा था, गरीब ही सही, है तो इंजीनियर. देखनेसुनने में भी अच्छा ही लगता है. उसे पैसे से मोह नहीं है. वह जितना भी कमाएगा, उस से ही गुजारा कर लेगी. शादी के वक्त वह कितनी खुश थी. उस का पति भी एक अच्छीभली, इतनी पढ़ीलिखी लड़की पा कर फूला नहीं समा रहा था.

कोशा के पति ने दहेज की कोई मांग नहीं की थी, फिर भी उस के मातापिता ने यथाशक्ति दिया था. तभी उस ने सोचा था, कितनी भाग्यशालिनी है वह. दहेज का जो राक्षस कितनी ही लड़कियों का बलिदान ले लेता है, उस से वह साफ बच निकली थी. पर वही राक्षस अब मायावी की तरह रूप बदल कर फिर आ गया था.

उस की शादी को तीन साल हो गए थे. उस के जीवन में एक मासूम बच्ची भी आ गई थी. पर इन तीन सालों में कितना बदलाव आ गया था. उस के जीवन में पतझड़ इतनी जल्दी आ जाएगा, इस की उस ने कल्पना तक न की थी.

कोशा को याद आ रहा था वह दिन जब उस ने खुद नौकरी करने का निश्चय किया था. उस ने सोचा था, वह भी घरगृहस्थी की जिम्मेदारियों का बोझ उठाने में अपने पति का हाथ बंटाएगी. पति और साससुसुर की स्वीकृति तुरंत ही मिल गई थी. शायद वे लोग मन से यही चाहते थे, पर

कोशा को उम्मीद नहीं थी कि उस के सपने इतने जल्दी चूरचूर हो जाएंगे. पति से मिली निराशा ने उसे कहीं का न छोड़ा. पर सही समय पर लिए निर्णय ने उस के जीवन में नया मोड़ ला दिया.



खुद कह नहीं पाते थे. बेरोजगारी के इस जमाने में नौकरी मिलना आसान नहीं था. पर उस के पिताजी के दोस्त की जानपहचान ने उस के लिए नौकरी जुटा दी थी.

एकदो महीने तो बड़े मजे से गुजरे, पर उस के बाद उस का पति अपनी पत्नी और नौकरी दोनों के प्रति लापरवाह होता चला गया. घर की वह बिलकुल ही चिंता न करता. दफ्तर में देर से जाना और छोटी सी बात पर अपने सहयोगियों से झगड़ बैठना उस की आदत बन गई थी.

शादी के बाद कोशा को मालूम हो गया था कि उस के पति को बीअर पीने की आदत है. इस जमाने में ऐसे कितने हैं जो पीतेपिलाते न हों. यही सोच कर वह चुप्पी साध गई थी. पर अब उस के पति ने शराब को पानी की तरह पीना शुरू कर दिया था. कोशा के प्यार से समझाने का उस के पति पर कुछ भी असर दिखाई नहीं पड़ता था.

एक दिन वह इतनी अधिक शराब पी

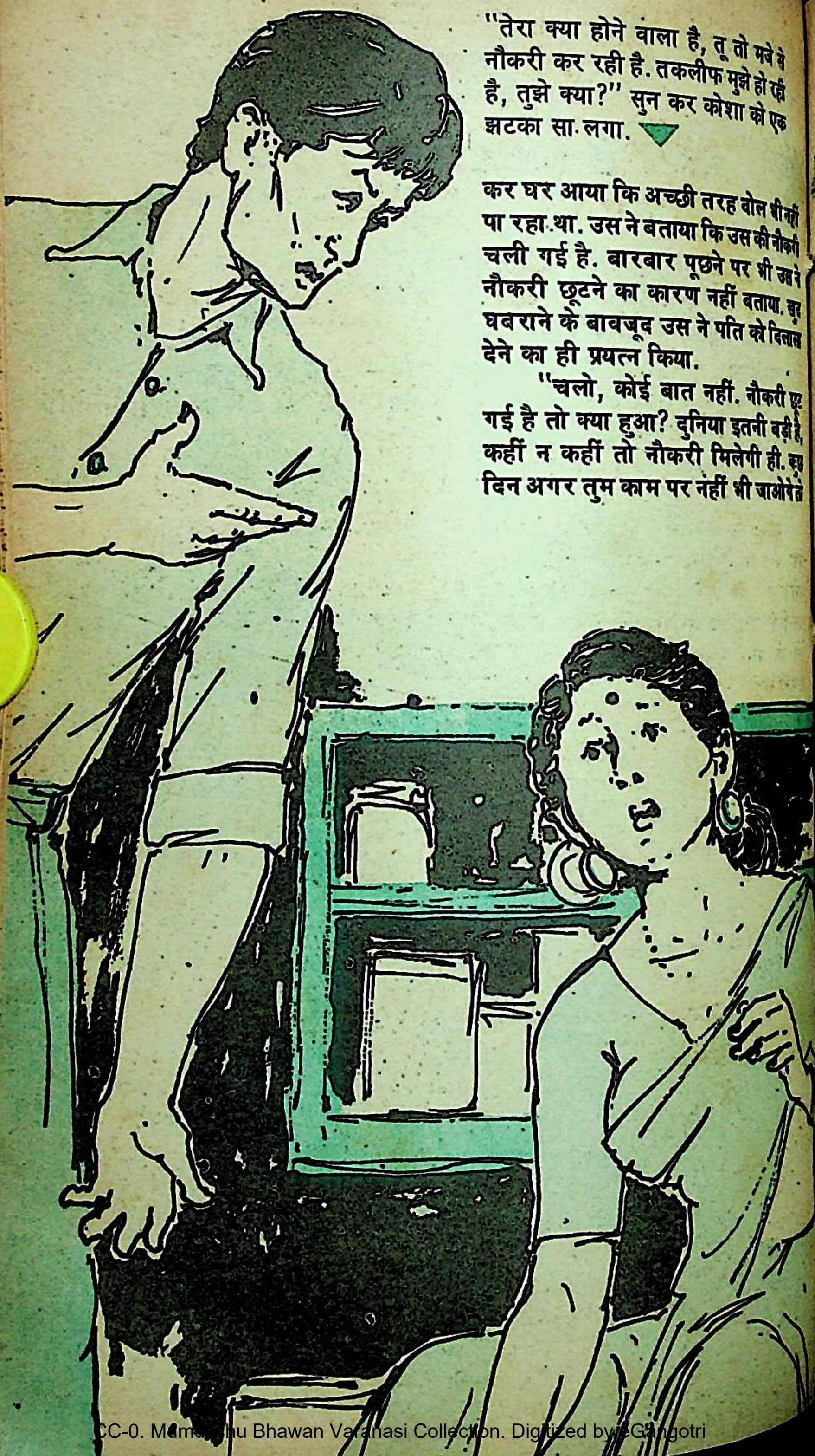
क्या वह भी इस अथाह पानी में समा जाए? नहीं, उसे जिंदा रहना ही होगा? कोशा के मन ने जवाब दिया.



"तेरा क्या होने वाला है, तू तो मजे से नौकरी कर रही है. तकलीफ मुझे हो रही है, तुझे क्या?" सुन कर कोशा को एक झटका सा लगा.

कर घर आया कि अच्छी तरह बोल भी नहीं पा रहा था. उस ने बताया कि उस की नौकरी चली गई है. बारबार पूछने पर भी उस ने नौकरी छूटने का कारण नहीं बताया. खुद घबराने के बावजूद उस ने पति को दिलासा देने का ही प्रयत्न किया.

"चलो, कोई बात नहीं. नौकरी छूट गई है तो क्या हुआ? दुनिया इतनी बड़ी है, कहीं न कहीं तो नौकरी मिलेगी ही. कुछ दिन अगर तुम काम पर नहीं भी जाओगे तो



हम लोग भूखे नहीं मर जाएंगे. मैं जितना कमा रही हूं, उस से हम दो जून की रोटी तो खा ही सकते हैं.

एक हफ्ते के बाद उस ने अपने पति से कहा, "आप बीती बातों को भूल जाइए. बंबई इतना बड़ा शहर है. यहां आने वाले हर नए इनसान को भी कुछ न कुछ काम अवश्य मिल जाता है. फिर आप की तो यहां काफी जानपहचान है. आप को अवश्य नौकरी मिल जाएगी. आप हिम्मत हार जाएंगे तो मेरा क्या होगा?"

"तुझे क्या होने वाला है? तू तो मजे से नौकरी कर रही है, अच्छाखासा कमा लेती है. तकलीफ तो मुझे हो रही है, तुझे क्या पता?"

कोशा के मस्तिष्क को एक झटका सा लगा. क्या अपने पति की नौकरी से उसे कोई सरोकार नहीं है? क्या अपने पति की तकलीफ उस की अपनी तकलीफ नहीं है? उस के पति ने लापरवाही बरती और नौकरी चली गई, इस में कोशा का क्या दोष था? उस की आंखों से अश्रुधारा फूट पड़ी.

उस दिन के बाद से तो उस के जीवन में विष ही फैलता चला गया. जीना दिन ब दिन दूभर होता गया. कोशा का पति पूरे दिन बाहर रहता था और उस से बराबर पैसे मांगता रहता था. पति की वजह से अब कोशा को घर का खर्च चलाना भी मुशकिल होता जा रहा था. पर वह अपने पति से कुछ कहने का साहस नहीं कर पाती थी. वह डरती थी कि कहीं उस का पति यह न समझ बैठे कि चूंकि वह खुद नहीं कमा रहा है, इसलिए वह उस को पैसे के लिए तंग करती है? पर इतनी महंगाई में पति की शराबखोरी के कारण घर चलाना मुशकिल ही नहीं, असंभव भी था. आखिर एक दिन उस ने हिम्मत कर के कह ही दिया, "मैं घर कैसे चलाऊंगी? मेरी आधी तनख्वाह तो आप ही ले जाते हैं."

उस ने कोशा को घूर कर ऐसे देखा, मानो उसे कच्चा ही चबा जाएगा. "तुम कमा रही हो तो क्या मुझ पर उपकार कर रही हो? मुझ पर रोब क्यों झाड़ रही हो? मैं नौकरी ढूंढ़ तो रहा हूं. इस के लिए इधरउधर घूमना पड़ता है, सौ अर्जियां देनी पड़ती हैं, उस में पैसे लगते हैं. कोई घर में बैठेबैठे तो नौकरी देगा नहीं."

"वह तो ठीक है, पर जब तक आप को अपनी इच्छानुसार अच्छी नौकरी नहीं मिल जाती, तब तक कुछ छोटीमोटी नौकरी ही कर लीजिए. जब अच्छी नौकरी मिल जाए तब वह छोड़ दीजिएगा. उस से थोड़ाबहुत सहारा तो मिल जाएगा. आर्थिक कठिनाइयां कुछ तो कम होंगी," कोशा डरतेडरते बोली.

"नहीं, छोटी नौकरी करने से मेरी इज्जत क्या रह जाएगी? नौकरी देने वालों को मेरी छोटी नौकरी के बारे में पता चलेगा तो वे मुझे अच्छी नौकरी देंगे क्या? और फिर मैं तुम से कम तनख्वाह वाली नौकरी ले कर अपना अपमान नहीं करवाना चाहता."

उस का यह साफ जवाब सुन कर कोशा की आशाओं पर पानी फिर गया.

धीरेधीरे दिन गुजरते गए. दिन हफ्तों में, हफ्ते महीनों में और महीने सालों में बदलते गए. कोशा के पति की नौकरी छूटे दो साल हो गए थे. इस दरमियान कोशा के नीरस और यंत्रवत जीवन को एक बच्ची के आगमन ने हरेभरे बाग में परिवर्तित कर दिया था. उस दिन के बाद कोशा ने अपने पति के साथ नौकरी या पैसे के विषय में कभी जिक्र नहीं किया. वह अतिरिक्त समय काम कर के, अपने खर्चे कम कर के बड़ी मुशकिल से घर चलाती रही.

कोशा को लगता था, उस का पति बैठेबैठे आराम से खाने का आदी होता जा रहा है या फिर उस में हीन भावना पनपती जा रही है. इन दो सालों में उस ने कोशा से इतना भी नहीं पूछा था कि वह घर का खर्चा कैसे चलाती है. बच्ची होने के बाद भी उस में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, जैसे बच्ची की जिम्मेदारी भी सिर्फ कोशा की थी. जबजब उस ने इस विषय में बात करनी चाही, उस

के पति ने चट से सुना दिया कि उसे अपनी कमाई का अभिमान हो गया है, इसी लिए पिछले दो सालों से उस ने चुप रहना ही बेहतर समझा था.

एक दिन उस के पति ने आ कर खुशखबरी सुनाई कि उसे एक अच्छी नौकरी मिल गई है और तनख्वाह भी कोशा से ज्यादा है. वह इतनी खुश हुई थी, मानो उस को कोई खजाना मिल गया हो. उस ने सोचा था, चलो अब उन में दीमक की तरह लगा गम और हीन भावना खतम हो जाएगी. दुख के बादल छंट गए और सुख का सूरज फिर से चमकने लगा. पर उस की ये खुशियां बहुत दिन टिक नहीं पाईं.

पहली तारीख आते ही उस का भ्रम टूट कर चूर हो गया. उस के पति ने अपनी तनख्वाह के पैसे कोशा के हाथ में रखने के स्थान पर उलटे उस से ही पैसे मांगे. तब वह स्तब्ध हो कर उसे देखने लगी. वह बोली, "क्यों, आप की तनख्वाह कहां गई? मैं तो अभी आप से मांगने वाली थी. अब तक दो साल तो जैसेतैसे निकल गए. अब घर के लिए कुछ सामान खरीदना है. इस घर को सजाना है. वह आप की तनख्वाह में से ही हो सकेगा. मेरे पैसे से तो घर का खर्च ही मुश्किल से चल पाता है."

उस के पति ने बेरुखी से जवाब दिया, "क्यों, अभी तक तो खर्च चलता ही था, अब क्या हुआ? मेरे पैसों का मैं जो मर्जी में आए करूं, तुम कौन होती हो पूछने वाली? तुम्हें देना हो तो दो वरना रहने दो. अपने पैसे मैं तुम्हें देने वाला नहीं. इस घर को सजाओ या खंडहर बना दो. तुम्हारी मर्जी में जो आए करो. मेरा इस घर से कोई संबंध नहीं है."

कोशा यह सब सुन कर दंग रह गई. क्या यही उस का पति है, जिस से तीन साल पहले उस ने शादी की थी? वह सोचती रही और देखती रही. उस का पति अपनी पूरी तनख्वाह अपने कपड़ों, बाहर खानेपीने और शराब में ही खर्च कर देता था. अगर पैसे कम पड़ते तो कोशा से मांगने लगता. और अगर कोशा पैसे न देती तो वह न तो घर वक्त से लौटता और न ही कोशा से या उस की बच्ची से बात ही करता.

कोशा बहुत दिनों से सोच रही थी, पर उसे कुछ सूझता नहीं था. आखिर उस का कुसूर क्या था? उस को किस गुनाह की सजा दी जा रही थी? स्त्री स्वातंत्र्य और आर्थिक स्वातंत्र्य के आंदोलन वाले तो आर्थिक स्वातंत्र्य को ही स्त्री स्वातंत्र्य और स्त्रियों के सुख की चाबी बता रहे हैं. जैसे स्त्रियों के नौकरी कर लेने भर से ही सब प्रकार के सुख उस के आगे नतमस्तक हो कर खड़े हो जाएंगे. पर कोशा को आर्थिक स्वातंत्र्य पा लेने से भी क्या मिला? और अधिक परेशानियां और जिम्मेदारियां ही तो? क्या अपने ही हाथों और पांवों में एक बेड़ी और डाल लेने से स्त्री स्वतंत्र हो जाएगी?

पहले पैसे कमा सकने की क्षमता स्त्री की विशिष्ट योग्यता समझी जाती थी. अब दहेज के अलावा घर की संपूर्ण जिम्मेदारी निभाने के साथसाथ हर महीने घर में पैसे लाना भी स्त्री के लिए जरूरी हो गया है, चाहे उस की मर्जी नौकरी करने की हो या न हो. घर में पैसों का आना किस को अच्छा नहीं लगता? पर सिर्फ पैसा ही सुख का आधार नहीं है. अगर ऐसा होता तो श्रमजीवी वर्ग की सब स्त्रियां सुखी होतीं. स्त्री को स्वतंत्र और सुखी करने के लिए पूरे समाज का मानस बदलना होगा. पर यह सब स्त्री अकेली नहीं कर सकती. इस के लिए बहुत वक्त लगेगा. आज तो प्रश्न यह है कि उस के और उस की बच्ची के सुख के लिए समाज क्या करेगा? वह खुद क्या कर सकती है?

कोशा उठ कर वापस चल दी. उस ने निश्चय कर लिया, वह आत्महत्या नहीं करेगी. वह जिएगी, अपनी बेटी के लिए. वह भी बड़ी हो कर एक स्त्री बनेगी और उसे भी वही सहना होगा, जिस को सह न पाने से वह टूट कर बिखर रही है. पर टूटने से काम नहीं चलेगा. जब तक जीवन है, तब तक संघर्ष करते रहना होगा. तो क्या वह तलाक लेले? नहींनहीं, तलाक लेने के बाद

वह फिर अकेली हो जाएगी. बच्ची के सिर से पिता का नाममात्र का साया भी उठ जाएगा. तनहाई का सूनापन वह सह नहीं पाएगी. तलाक के लिए समाज हमेशा स्त्री को दोषी समझता है, उस पर उंगली उठता है. पुरुष को कुछ नहीं कहता.

वह एक से तलाक ले कर दूसरी शादी कर के भी सुखी नहीं हो सकती, क्योंकि वह दूसरे पति को विश्वास और प्यार नहीं दे पाएगी. उस को रक्षक या भरणपोषण करने वाला नहीं चाहिए. उसे चाहिए एक ऐसा साथी जो उस के मन की गहराइयों में झांक सके. एक ऐसा व्यक्ति, जो मित्र होने के नाते उचित सम्मान दे सके, और उस की प्रगति में सहायक हो सके. वह अब सिर्फ स्त्री बन कर नहीं, बल्कि व्यक्ति बन कर जिएगी.

•

[illegible]शा सोचतेसोचते आगे बढ़ रही थी. एक तरह से देखा जाए तो कौन व्यक्ति, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, स्वतंत्र है? स्वतंत्र व्यक्ति वही हो सकता है जिस के मन, बुद्धि और विचार स्वतंत्र हों. हमारा पूरा समाज जातिवाद, पुराने रीतिरिवाजों, रूढ़ मान्यताओं और अपने पालकों से मिले पूर्वाग्रहों का गुलाम है. इस से कोई मुक्त होना नहीं चाहता. जिसे स्वयं मुक्त होने की चाह नहीं, उसे कौन मुक्त कर सकता है? फिर स्त्री तो समाज का पिछड़ा हुआ अंग है. जब समाज ही स्वतंत्र नहीं तो स्त्री कैसे स्वतंत्र हो सकती है? आर्थिक रूप से स्वतंत्र होते हुए भी वह समाज से अलग रह कर जी नहीं सकती. और स्त्री जैसा निरीह प्राणी स्वतंत्र होते हुए भी अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकता, चाहे वह युवा हो या वृद्धा या बच्ची.

खैर, हालात कुछ भी हों, वह लड़ाई का मैदान छोड़ कर नहीं भागेगी. वह हार कर टूटने वाली नहीं है. वह अपनी बेटी को एक ऐसा व्यक्ति बनाएगी जो हर तरह से सामाजिक, धार्मिक और मानसिक बंधनों से मुक्त हो और मुक्त स्त्री होने के नाते उस का अपमान या बहुमान दोनों में से कुछ भी न हो. सच्चा संघर्ष तो अब शुरू हो रहा है और वह जीजान से लड़ेगी, चाहे उस में निश्चित रूप से हार ही मिलनी हो. फिर भी वह अपने मार्ग से हटेगी नहीं, बराबर बढ़ने का प्रयत्न करती ही रहेगी. •

अपराध का त्रिकोण



अपराधी, पुलिस और नेता





लेख • गुंजेश्वरीप्रसाद

गोरखपुर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक का ऋण वितरण समारोह था. समारोह में उत्तर प्रदेश सरकार की संस्थाओं से संबंधित वित्त सचिव वेंकटरमन, जिलाधिकारी बृजमोहन वोहरा, मुख्य विकास अधिकारी श्रवणकुमार मिश्र और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के अध्यक्ष वी.पी. अग्रवाल के अतिरिक्त अनेक पत्रकार, आकाशवाणी के संवाददाता और नागरिकों की भारी भीड़ उपस्थित थी. समारोह पुलिस चौकी की बगल में हो रहा था. इस अवसर पर पुलिस वाले भी काफी संख्या में तैनात थे. कुछ सिपाही पुलिस चौकी पर भी थे.

समारोह में अधिकारियों के भाषण हो रहे थे. वहीं बगल में ही कुछ उद्दंड छात्र एक इक्केवाले को पुलिस चौकी के सामने मार रहे थे. वह इक्केवाला मार खा कर दौड़ कर पुलिस चौकी में पहुंचा. पुलिस चौकी में बैठा सिपाही ने जो स्वयं इस घटना को देख रहा था, शरण में आए उस इक्केवाले को घूंसा

पुलिस और राजनेताओं से सांठगांठ कर अपराधियों ने आज सामान्य नागरिक का जीवन दूभर कर दिया है. आए दिन होने वाले ये अपराध क्या राज्य सरकार की ढीली व्यवस्था के सुबूत नहीं देते?



गोरखपुर के आयुक्त रमेशचंद्र : "अप्रत्यक्ष अपराधों की चर्चा नहीं होती."

मार कर पुलिस चौकी से बाहर कर दिया. इस बीच उद्दंड छात्र उस का इक्का ले कर चले गए. बात चौकी के दारोगा तक पहुंची तो दीवान ने कहा, "घटना हमारे थाना क्षेत्र की नहीं है, गगहा थाना क्षेत्र की है."

मार खाया हुआ इक्केवाला सड़क पर खड़ा रो रहा था. मार खाने का दुख उसे इतना नहीं था जितना कि इक्का गायब होने और पुलिस के दुर्व्यवहार का. उस की आंखों के आंसू बता रहे थे कि पुलिस गरीब और कमजोर लोगों की मदद न कर अपराध करने वालों का साथ देती है. ऐसी घटना अकेले उस इक्केवाले के साथ ही नहीं, औरों के साथ भी अकसर घटती है.

अपराधी और पुलिस के बीच रिश्ता

गोरखपुर जिले के पिपराइच थाना क्षेत्र का एक आदमी बता रहा था, "मैं अपने घर के दरवाजे पर बैठा हुआ था. कुछ लोग आए. जमीन के मामले में उन के साथ हमारा मुकदमा चल रहा था. वे सभी लोग मुझ से बगैर कुछ पूछताछ किए ही मुझे तड़ातड़ मारने लगे. शोर हुआ. गांव वाले आ गए. वे लोग मुझे मारपीट कर और मेरी घड़ी, चादर और अंगूठी ले कर गाली देते हुए चले गए. मैं पिपराइच थाने पर रपट दर्ज कराने गया तो देखा कि वे सभी लोग थानेदार की बगल में कुरसी पर बैठे हुए थे और चाय पी रहे थे. बिना रपट दर्ज कराए ही मैं लौट आया. सोचा, अभी तो इतना ही हुआ है. कहीं रपट दर्ज कराने के बाद पुलिस और दारोगा कुछ और न करें."

वह आदमी घटना का इस तरह से जिक्र कर रहा था जैसे पुलिस और अपराधी दोनों सहोदर भाई हों. उस आदमी की बात में वजन था, क्योंकि ऐसी घटनाएं इतनी बढ़ गई हैं कि अविश्वास का प्रश्न ही नहीं उठता.

कोठीभार थाना क्षेत्र के सिसवा कसबे में सिसवा दरबार के अहाते में 11 जुलाई की शाम को करीब पांच बजे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का एक 'कार्यकर्ता 18 वर्षीय अरविंदकुमार जायसवाल आग की लपटों में घिरा हुआ था. सिसवा पुलिस चौकी के दारोगा और सिपाही तथा कसबे के नागरिक अहाते के बाहर से यह कारुणिक दृश्य देख रहे थे. दरबार के भय से एक भी आदमी अहाते में नहीं गया और पुलिस के सामने वह युवक आग की लपटों में छटपटाता रहा. जब तक उस का बड़ा भाई शिवकुमार जायसवाल अहाते में घुसा, तब तक अरविंदकुमार बेहोश हो कर धरती पर गिर चुका था.

उस जख्मी युवक को ले कर उस के परिवार के लोग कोठीभार थाने पर गए. परिवार वालों ने प्राथमिक सूचना रपट दर्ज करने के लिए निवेदन किया. उपस्थित पुलिस अधिकारी ने रपट दर्ज करने से इनकार कर दिया.

पुलिस अधिकारी ने कहा, "यह हत्या नहीं, आत्महत्या है."

वह युवक गोरखपुर पहुंचने से पूर्व ही मर गया. परिवार वाले रपट भी दर्ज नहीं करा सके. उस मृत युवक की मां ने उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री और प्रधान मंत्री को पत्र

सरिता

लिखा और उस पत्र के आधार पर 53 दिन बाद कोठीभार थाना में हत्या की रपट दर्ज हुई. लेकिन यह मुकदमा उस समय थाने में लिखा गया, जब हत्या के सारे प्रमाण लुप्त कर दिए गए थे. मृतक की लाश का शव-परीक्षण भी नहीं हो पाया था. जाब्ता फौजदारी में स्पष्ट लिखा हुआ है कि हत्या, आत्महत्या और दुर्घटना की स्थिति में पुलिस को शव परीक्षण कराना ज़रूरी है. लेकिन पुलिस जब अपराधियों से मिली हो तो भारतीय दंड संहिता का क्या अर्थ रह जाता है?

और अपराधों की यह बाढ़

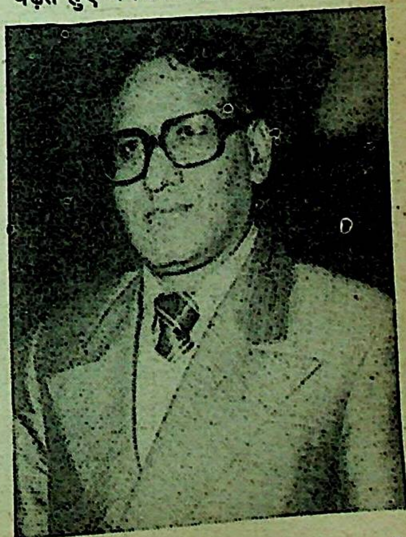
13 अक्टूबर, 1981 को गोरखपुर के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश के न्यायालय में एक युवक ने अदालत के कठघरे में खड़े हत्या के एक अभियुक्त के ऊपर गोली चला दी. गोली अभियुक्त की कमर को छीलती हुई निकल गई. अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश तुरंत अपने कक्ष में चले गए. दूसरी अदालतों के न्यायाधीश और मुनसिफ मजिस्ट्रेट भी तुरंत उठकर अपनेअपने कक्षों में चले गए. कचहरी में आए लोगों ने अदालत में गोली चलाने वाले युवा को पकड़ लिया और पुलिस को सौंप दिया. पुलिस के समक्ष उस युवक ने कुबूल किया, "अभियुक्त ने मेरे मित्र की हत्या की है. मैं जानता हूं कि अदालत जैसे अन्य मुकदमों में अभियुक्तों को छोड़ती जा रही है, उसी प्रकार उसे भी इस मुकदमे में छोड़ देगी. अब अदालत के ऊपर मेरा विश्वास नहीं रह गया है."

अभी अदालत में हुई घटना की चर्चा शुरु ही हुई थी कि अकस्मात नाटक का दृश्य ही बदल गया. गोरखपुर की जिला जेल के मुख्य द्वार पर गुल्हरिया के थानाध्यक्ष और नायब दारोगा अन्य नागरिकों की तरह किसी की प्रतीक्षा में खड़े थे. जेल का संतरी कंधे पर राइफल लिए सावधान खड़ा था. शाम के पांच बज चुके थे. कुछ बंदियों की रिहाई हो रही थी. जमानत पर एक अभियुक्त जेल से रिहा हो कर दरवाजे के बाहर निकला. अभी वह अपने लोगों से मिला भी नहीं था कि थानाध्यक्ष ने उसे दबोच लिया और उसे अपनी मोटर साइकिल पर अपने पीछे बैठा लिया. उस अभियुक्त के पीछे नायब दारोगा बैठ गया.

अभी मोटर साइकिल चल भी नहीं पाई थी कि उस अभियुक्त के एक मित्र ने पीछे से नायब दारोगा को छुरा मार दिया. नायब दारोगा मोटर साइकिल से नीचे गिर गया. जेल संतरी की बंदूक हाथ में ही रह गई और थानाध्यक्ष की पिस्तौल पेटी से बाहर नहीं आ पाई. हत्यारा वहां से नौ दो ग्यारह हो गया. दूसरे दिन नायब दारोगा का मातमी जलूस पुलिस लाइन से निकला.

पुलिस द्वारा सामान्य नागरिकों की पिटाई तो आम बात है. इस तथ्य को जानने के बाद भी विधान सभाओं और लोकसभा में मंत्री इस बात से स्पष्ट इनकार कर जाते हैं. लेकिन कुछ घटनाएं ऐसी भी होती हैं, जो विभाग के समूचे चरित्र को उजागर कर देती हैं. पीपीगंज के थानाध्यक्ष ने अक्तूबर की एक रात को गश्त के समय पीपीगंज कसबे के पास गोरखपुर नगर के एक सिपाही को संदिग्धावस्था में गिरफ्तार

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महेंद्र लालका : बढ़ते हुए अपराधों से चिंतित.



किया. उस सिपाही के पास से थानाध्यक्ष ने एक देशी तमंचा मय कारतूस बरामद किया. उस सिपाही को थाने पर ले जा कर थानाध्यक्ष ने बड़ी निर्ममता से पीटा और इतना मारा कि उस सिपाही के पैर की हड्डियां टूट गईं. उस का चालान भी कर दिया गया.

कसबे वालों ने इस घटना पर रोशनी डालते हुए कहा, "गिरफ्तार सिपाही पीपीगंज थाने पर पहले नियुक्त था. उस की मित्रता एक नर्स से थी. शहर से तबादला हो जाने के बाद भी वह वहां आताजाता था. इधर थानेदार की मित्रता भी उसी नर्स से थी. थानेदार को सिपाही का वहां आनाजाना अच्छा नहीं लगा और उन्होंने उसे पकड़ कर मारापीटा. समूचा मामला गोरखपुर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महेंद्र लालका के पास गया. मामले को समझने के बाद उन्हें काफी दुख हुआ. वह कर भी क्या सकते थे. पीपीगंज के थानाध्यक्ष को उन्होंने निलंबित कर दिया.

पूरा गोरखपुर शहर छोटी दीपावली की तैयारी कर रहा था. सड़कों, गलियों तथा चौराहों पर बच्चे पटाखे छोड़ रहे थे. फुलझड़ियां जला रहे थे. रात ज्यादा होती जा रही थी. उसी समय सदर हस्पताल के अहाते में एक विधायक अपने मित्रों और परिचितों से बात कर रहा था, तभी मकानों की आड़ ले कर कुछ आततायियों ने गोली चलानी शुरू कर दी. उस गोलीबारी में विधायक तो बच गया, लेकिन उस के साथ बातचीत में मशगूल नगरपालिका का एक निरीक्षक वहीं ढेर हो गया और एक प्रोफेसर का कान ही उड़ गया.

हस्पताल के अहाते में गोली चलाने के बाद आततायी भाग गए. पुलिस उप महानिरीक्षक, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, नगर पुलिस अधीक्षक और जिलाधिकारी सभी सदलबल वहां पहुंचे, पर आततायी को गिरफ्तार नहीं किया जा सका.

इस घटना के कुछ दिन बाद गोरखपुर नगर में रेलवे गुमटी के पास सेतु निगम कार्यालय में कुछ बदमाशों ने गोली चला कर एक इंजीनियर और उस विभाग के एक ड्राइवर की हत्या कर दी. हत्या कर के हत्यारे फरार हो गए.

गोरखपुर जिले और शहर में अपराधों की घटनाएं इतनी बढ़ रही हैं कि ऐसी एक भी जगह नहीं बची है, जहां अपराधियों ने कोई न कोई वारदात न की हो.

ठेकेदारी का काम अब कोई भला आदमी नहीं करता है. बंदूक के बल पर दूसरे लोगों को टेंडर नहीं भरने दिया जाता. बंदूकधारियों को ठेका मिल जाता है और जितना भी घटिया काम हो, बंदूकधारी उसे पास करा ही लेता है. किसी भी अधिकारी की मजाल नहीं जो काम में नुक्स निकाल सके. बंदूकधारियों की ताकत से विधायक, सांसद, नेता और मंत्री भी परिचित हैं. देश और समाज को बनाने की बात मंच से नेता लोग गला फाड़फाड़ कर करते हैं, लेकिन व्यावहारिक जीवन में ऐसा लगता है कि शासन के नेताओं के समक्ष कोई आदर्श नहीं है.

नेता और अपराधी

सन 1977 में विधान सभाओं के चुनाव में जनता पार्टी के घटकवादी नेताओं ने ऐसेऐसे लोगों को उम्मीदवार बनाया था, जो पुलिस के रजिस्टर में काली सूची में दर्ज थे. कुछ तो मंत्रिपरिषद के भी सदस्य बन बैठे थे. ऐसे लोग जिन्हें पुलिस ने विधायक और मंत्री होने से पूर्व संगीन जुर्मों में पकड़ कर मारापीटा था, शासन में चले गए. पुलिस अधिकारियों को मजबूर हो कर उन्हें सलाम करना पड़ा. जिस समय पुलिस अधिकारियों को ऐसे लोगों का स्वागत करना पड़ता है, उस समय अपराध करने वालों के ऊपर कैसा असर पड़ता है?

जनता पार्टी के विघटन के पश्चात इंदिरा कांग्रेस ने भी ऐसेऐसे लोगों को उम्मीदवार बनाया, जिन की उम्मीदवारी की कल्पना नहीं की जा सकती थी. इंदिरा लहर पर चढ़ कर वे लोग चुनाव भी जीते

सरिता


Pond's
Dreamflower talc

और उन में से कुछ मंत्री भी बने. अपराध रोकने वाली पुलिस को ऐसे लोगों की अब आज्ञा माननी पड़ती है, जिन्हें पुलिस ने कभी कैद कर अपमानित किया था.

मेरठ जिले के एक गांव में ग्रामीणों और डकैतों की मुठभेड़ में एक ऐसा डकैत मारा गया, जिस की जेब से एक मंत्री के हाथ का लिखा हुआ पत्र पुलिस ने बरामद किया और एक अन्य विधायक की बंदूक भी डाकुओं से प्राप्त हुई. उत्तर प्रदेश की विधान सभा में बड़ा शोर हुआ, लेकिन कुछ नहीं हुआ.

ऐसे ही बलिया जिले में एक मंत्री की एक व्यक्ति के घर दावत थी. दावत के समय मंत्रीजी पुलिस अधिकारियों और अन्य लोगों के साथ उस व्यक्ति के घर पहुंचे. पुलिस अधिकारियों से मंत्रीजी ने कहा, "यह मेरा आदमी है और बहुत ही भला है. आप लोग इसे नाहक परेशान करते हैं."

मंत्रीजी के साथ पुलिस अधिकारियों ने भी दावत में भाग लिया और निरीक्षण भवन लौट आए. सुबह होते ही जंगल की आग की तरह यह खबर फैल गई कि रात को जिस व्यक्ति के घर पुलिस वालों के साथ में मंत्रीजी ने दावत खाई थी, वह व्यक्ति दो मील दूर ही एक गांव में डकैती डालते समय ग्रामीणों के साथ मुठभेड़ में मार डाला गया.

इस प्रकार ऐसी अनेक घटनाएं हैं, जो बताती हैं कि नेताओं और अपराधियों के बीच '६३' का संबंध है.

बढ़ते अपराध और कारण

सन 1948 से पूर्व उत्तर प्रदेश (तब संयुक्त प्रांत आगरा व अवध) की पुलिस पर अंगरेज सरकार ढाई करोड़ रुपया व्यय करती थी और पुलिस की संख्या भी कम थी, लेकिन अपराध आज जितने नहीं थे. हत्या और डकैती की घटनाएं बहुत ही कम होती थीं. नकबजनी, चोरी और बलवे की घटनाएं उन दिनों बड़ी घटनाएं समझी जाती थीं और जो लोग इन घटनाओं में अभियुक्त होते थे, उन से समाज के बहुसंख्यक लोग घृणा करते थे. पुलिस ऐसे लोगों पर निगरानी रखती थी. अपराधियों को संरक्षण देने वाले कम थे.

उत्तर प्रदेश में पुलिस की संख्या में वृद्धि

पद	अंगरेजी राज में	आजादी के बाद	
	1946	1973	1981
महा निदेशक	–	–	1
महा निरीक्षक	1	1	2
अतिरिक्त महा निरीक्षक		1	3
उप महा निरीक्षक	5	20	41
अधीक्षक	55	160	205
उप अधीक्षक	185	557	731
निरीक्षक	166	498	976
उप निरीक्षक	2107	6322	9989
सहायक निरीक्षक	–	602	602
हैडकांस्टेबल (दीवान)	4040	12120	16338
सिपाही	24098	72285	86448
थानों की संख्या	641	751	1063

आज देश की सब से बड़ी आवश्यकता :

सीमाबंदी

• व्यक्ति के लिए—परिवार की सीमा

बच्चे उतने ही पैदा कीजिए, जितने आप भली भांति पाल सकें. जब तक आप का बच्चा स्वयं कमाने लायक होता है तब तक वह आप की लगभग एक चौथाई आमदनी खा जाता है. इसलिए अपने हित में, बच्चे के हित में और देश के हित में बच्चे सीमित संख्या में ही पैदा कीजिए. यह आप के अपने हाथ में है कि कितने बच्चे हों. भगवान इस विषय में बिलकुल शक्तिहीन है. नसबंदी के बाद भगवान लाख चाहे और अपनी सारी शक्ति भी लगा दे तो आप के बच्चा नहीं हो सकता.

• सरकार के लिए—कानूनों की सीमा

जितने अधिक कानून बनते हैं, उतना ही कानूनों का महत्त्व और उपयोगिता कम होती जाती है. जिस कानून का पालन नहीं कराया जा सकता, वह कानून, कानून न हो कर समाज का कलंक बन जाता है.

आज केंद्रीय व राज्य सरकारें, संसद और विधानसभाओं से नित नए कानून पास कराती हैं और नतीजा यह होता है कि रोज नए जुर्म उत्पन्न होते जाते हैं. जो काम कल तक वैध था, वह आज एकाएक जुर्म बन जाता है. इस से अदालतों में लाखों मुकदमे जमा होते हैं और वे बिना फैसले के बरसों पड़े रहते हैं. जो इन कानूनों की अवहेलना करते हुए सरकार की नजरों से बच जाते हैं, उन की तो गिनती ही नहीं.

ज्यादा कानून बनते हैं तो न वे ठीक तरह सोचसमझ कर लिखे जा सकते हैं, न उन पर पूरा गौर हो पाता है और न वे पूरी तरह मनवाए जा सकते हैं.

जितने अधिक कानून बनेंगे, उतना ही अधिक सरकारी अमला बढ़ेगा. उतनी ही अधिक अदालतें भी बनानी होंगी और इन सब का खर्च पूरा करने के लिए नित नए टैक्स लगाने पड़ेंगे.

जिस शक्ति और समय का उपयोग अधिक उत्पादन में होना चाहिए, वह कागजी कार्यवाही में, सरकारी अमले को संतुष्ट करने में, और कानून से बचने में लग जाता है. इस से अकसर ईमानदार नागरिक भी कानून तोड़ने वाला और अपराधी बन जाता है.

- व्यक्ति जीवन भर में दो या तीन बच्चे पैदा करे.
- संसद और विधान सभाएं साल में केवल दो या तीन कानून बनाएं.
- बच्चे कम तो गरीबी कम, कानून कम तो नए अपराध, नए अपराधी कम.

आज उत्तर प्रदेश की पुलिस व्यवस्था पर लगभग 100 करोड़ रुपया खर्च हो रहा है. हर थाने में जीप की व्यवस्था है. वायरलेस सेट है और पुलिस की संख्या भी ज्यादा है, लेकिन अपराधों की बाढ़ सी आई हुई है. नकबजनी, चोरी, लूट और बलवे की घटनाएं तो आम बात हो गई हैं. हत्या, डकैती और बलात्कार की घटनाएं भी तेजी से बढ़ती जा रही हैं. मजे की बात यह है कि इन घटनाओं के ऊपर कोई प्रतिक्रिया भी नहीं होती. समाज प्रतिक्रियाहीन होता जा रहा है, क्योंकि अब इस प्रकार के अभियुक्तों का आसन ऊंचा हो गया है. अब अपराधियों के दरबार में नेता, अफसर और सेठ सभी जाते हैं.

प्रश्न उठता है कि इतना बड़ा परिवर्तन आया कैसे? अंगरेजी राज में बंदूकें सिर्फ उन्हें मिलती थीं, जो राज के फरमांबरदार थे. फौजदारी के मुकदमों का निबटारा 42 दिन के अंदर हो जाता था. अपराधियों की जमानत देने की क्षमता बहुत ही कम लोगों में होती थी. सन 1863 में बने जाब्ता फौजदारी में चोरी की जमानत राशि 500 रुपया है और हत्या की जमानत राशि 10,000 रुपया. अंगरेजी राज में 500 रुपए की जमानत देने की क्षमता भी कम लोगों में थी और हत्या के अभियुक्तों की जमानत देने की क्षमता तो विरले लोगों में ही होती थी. जो जेल जाता था, वह सजा भोग कर ही बाहर आता था.

अंगरेजी राज जाने के बाद मुद्रा की कीमत में बेइंतहा गिरावट आई. लेकिन अवमूल्यन के अनुपात में जमानत की राशि में वृद्धि नहीं हुई. इस का परिणाम यह हुआ है कि हर झोंपड़ी में चोरी की जमानत देने वाले और हर गांव में हत्या की जमानत देने वालों की संख्या बढ़ गई है. जमानतियों की बढ़ती हुई संख्या से अभियुक्त जेल में नहीं रह पाते. जैसे ही जेल में अभियुक्त दाखिल होते हैं, वैसे ही उन का रिहाई का परवाना भी पहुंच जाता है. जमानत से वापस आने के बाद अभियुक्त उन प्रमाणों को नष्ट कर देते हैं, जिन के बल पर पुलिस उन पर मुकदमा चलाती है.

न्याय में तेजी नहीं

दूसरी ओर अदालतों के न्याय में अब पहले जैसी तेजी भी नहीं रही है. अंगरेजी राज में 42 दिन के भीतर मुकदमे का फैसला होता था, अब 60 दिन से अधिक का तो रिमांड ही होता है. न्यायिक प्रक्रिया में विलंब के कारण भी सबूत टूट जाते हैं और गुस्सा भी मर जाता है. इस के साथ ही साथ आजादी के बाद बंदूकों के लाइसेंस इतने ज्यादा दे दिए गए हैं कि जहां लाठी से काम हो जाता था, वहां अब बंदूकों से काम लिया जा रहा है. फलस्वरूप सरकार की अदूरदर्शिता पूर्ण नीति से अपराध बढ़ते जा रहे हैं. पुलिस की संख्या बढ़ाने से अपराध कम न हो कर उल्टे बढ़ रहे हैं.

पृष्ठ 75 पर दी गई तालिका को देख कर यह बात आसानी से समझ में आ जाती है कि आजादी के बाद पुलिस की संख्या और सुविधाएं काफी बढ़ गई हैं, लेकिन अपराधों की संख्या में गिरावट नहीं आई. इस से यह मालूम होता है कि नीतियों में ही कहीं न कहीं खोट है और नीतियों में खोट होने का ही यह परिणाम है कि अपराध बढ़ते जा रहे हैं. पृष्ठ 79 पर दी गई तालिका से तसवीर साफ हो जाएगी.

इस तालिका से यह बात सामने आ जाती है कि बढ़ती हुई बंदूकों के कारण नकबजनी और मारपीट की घटनाएं तो उत्तरोत्तर कम हो रही हैं और हत्या तथा डकैती की घटनाओं में वृद्धि होती जा रही है. हथियारों का भय पैदा कर के अपराधी वर्ग नगरों और कसबों में राह चलती हुई औरतों का शील भी हरण कर रहा है. कानपुर जैसे शहरों में औरतों का सड़कों पर निकलना मुशकिल होता जा रहा है. इस में अकेले पुलिस को दोष देना तथ्यों को झुठलाना होगा. आंकड़े और अपराध की प्रवृत्तियां चिल्लाचिल्ला कर यह संकेत देती हैं कि अपराध वृद्धि के पीछे शासन की आर्थिक,

उत्तर प्रदेश में अपराध स्थिति

अंगरेजी राज में

सन	हत्या	डकैती	राहजनी	नकबजनी	बलवा
1946	1050	5341	2213	112701	73814

आजादी के बाद

सन	हत्या	डकैती	राहजनी	नकबजनी	बलवा
1960	4342	19851	8751	155314	93231
1970	6231	35235	12335	145307	76414
1975	8451	61331	18231	85815	74815
1980	11831	73454	25441	65451	69816

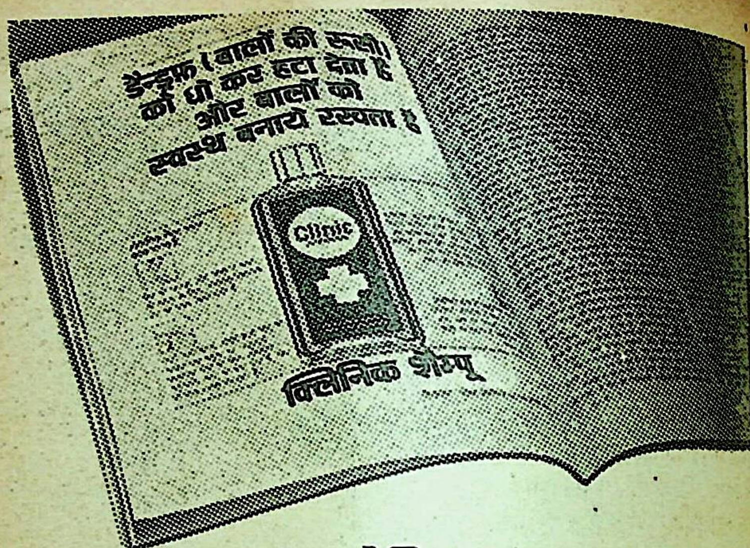
सामाजिक और राजनीतिक नीतियां उत्तरदायी हैं.

अपराधों को रोका जा सकता है

बढ़ते हुए अपराधों से समाज का निर्बल वर्ग जहां भयभीत हुआ है, वहीं समाज के बुद्धिजीवी वर्ग में चिंता पैदा हुई है. इस संबंध में गोरखपुर के साहित्यसेवी अधिवक्ता श्री रमेशचंद्र ने चर्चा चलने पर बताया, "प्रत्यक्ष अपराधों की चर्चा तो खूब होती है, मगर अप्रत्यक्ष अपराधों की चर्चा प्रायः नहीं होती. हत्या, चोरी, डकैती, मारपीट और बलात्कार जैसे अपराध प्रत्यक्ष हैं और रिश्वत, कर चोरी, कालाबाजारी वगैरह अपराध अप्रत्यक्ष हैं. प्रत्यक्ष अपराध करने वाले आसानी से पकड़े जाते हैं, पर अप्रत्यक्ष अपराध करने वाले बच जाते हैं. सच बात यह है कि अपराध के बारे में हमारी धारणा में काफी परिवर्तन आया है. 20 वर्ष पहले लोग अपने रिश्वतखोर बेटे से घृणा करते थे, अब रिश्वतखोर दामाद की तलाश होती है. इसी से भारतीय प्रशासनिक सेवा व पुलिस अधिकारी, डाक्टर और इंजीनियर का भाव बढ़ता जा रहा है. लोग यह समझ बैठे हैं कि इस वर्ग के लोग ऊपर की अच्छी आमदनी करते हैं.

"पहले अपराधी की भर्त्सना होती थी और लोग घृणा के भाव से उसे देखते थे. अब उस की इज्जत बढ़ रही है. इस का जो असर पड़ रहा है, उस से अपराध बढ़ रहा है. रिश्वत लेना और देना दोनों अपराध हैं. हर सरकारी कर्मचारी का भी परिवार है. बाजार में उपभोक्ता वस्तुओं के दाम रोज बढ़ रहे हैं. उन का उपयोग भी बढ़ता जा रहा है. जो सरकारी कर्मचारी अपने परिवार में उपभोक्ता वस्तुएं नहीं ला पाता है और ईमानदारी से रहता है, उसे परिवार और समाज वाले निकम्मा समझते हैं. अब ईमानदारी निकम्मेपन का पर्याय बनती जा रही है. समाज में जो इस प्रकार की अनैतिकता बढ़ती जा रही है, उस से अपराध बढ़ रहे हैं."

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा, "राजनीतिक व्यवस्था भी इस प्रकार की है जो अपराध को रोक नहीं पा रही है. विधान सभा और लोकसभा चुनाव के लिए अधिकतम जितना खर्च करने का प्रावधान है, उस से कहीं ज्यादा खर्च होता है और यह रकम लाखों में होती है. चुनाव के



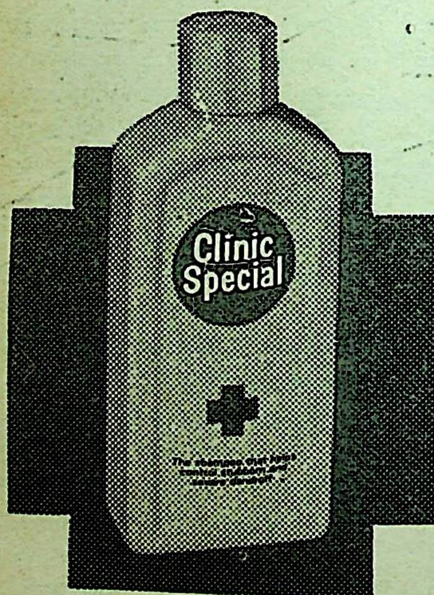
लेकिन हठी और ज़ोरदार डैन्ड्रफ़ के लिए आपको चाहिए क्लिनिक से भी अधिक शक्तिशाली शैम्पू

नया

क्लिनिक स्पेशल

हम जानते हैं कि क्लिनिक आपका मनपसंद शैम्पू है, क्योंकि अपने डैन्ड्रफ़ पर इसका असर आपने देखा है. लेकिन हम यह भी जानते हैं कि कुछ लोगों के डैन्ड्रफ़ बहुत ही ज़ोरदार और हठी किस्म के होते हैं. इसके लिए ही हमने एक ऐसा ख़ास नुसख़ा तैयार किया है जो ज़ोरदार और हठी क़िस्म के डैन्ड्रफ़ को भी रोकने में सहायता करता है. क्लिनिक से भी ज़्यादा प्रभावशाली —क्लिनिक स्पेशल.

यानी कि दो तरह के क्लिनिक. सामान्य क़िस्म के डैन्ड्रफ़ के लिए क्लिनिक. ज़ोरदार और हठी क़िस्म के डैन्ड्रफ़ के लिए क्लिनिक स्पेशल. इन दोनों की मदद से आप किसी भी प्रकार के डैन्ड्रफ़ पर क़ाबू पा सकते हैं.



हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पादन

मौके पर जो रुपया राजनीतिक दलों के लोग और चुनाव लड़ने वाले खर्च करते हैं, वह व्यापार का रूप ले लेता है. चुनाव लड़ने वाले इतना रुपया कहां से लाते हैं और क्यों खर्च करते हैं? उन्हें यह रुपया कौन देता है? ये सब ऐसे प्रश्न हैं जो भ्रष्टाचार के साथ जुड़ जाते हैं.

"राजनीति, व्यापार नहीं व्यवस्था है. हर वर्ग इस प्रकार की राजनीति में अपनी जगह बनाता है. सांसदों और विधायकों के बीच औद्योगिक व्यवसायियों की लाबी बन जाती है, अध्यापकों की लाबी बन जाती है, नौकरशाहों की लाबी होती है और किसानों की लाबी भी होती है. हर लाबी के सांसद और विधायक संसद और विधान सभा में आवाज उठाते हैं. इस से होता यह है कि अपराधी वर्ग बच जाता है. उस की लाबी कवच का काम करती है.

"सब से बड़ी बात तो यहां की जातीय व्यवस्था है जो अपराध को बढ़ाने में मदद करती है. जातीय व्यवस्था ने लोगों के दिमाग को सड़ा दिया है. बड़ेबड़े अपराधी जातियों के अगुआ हो रहे हैं. शिक्षा भी ऐसी है जो रोजगार दिलाने वाली नहीं होती. हर साल 55 हजार स्नातक विश्वविद्यालयों से निकल कर सड़कों पर आ रहे हैं. लोग अध्यापकों की हड़ताल और उन की जेलयात्रा देख रहे हैं. जाहिर है कि युवा मानस पर इस का क्या असर पड़ता है."

गोरखपुर जिले के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महेंद्र लालका कर्नाटक राज्य के हैं. वह गोरखपुर आने से पहले देवरिया और गाजीपुर में पुलिस अधीक्षक रह चुके हैं. उन्होंने बढ़ते हुए अपराधों के सिलसिले में कहा, "इस समय गोरखपुर जिले की अदालतों में 25 हजार मुकदमे विचाराधीन हैं. लगभग 47 हजार अभियुक्त जमानत पर जेलों से बाहर हैं. इन अभियुक्तों में पांच सौ हत्याओं के और 8,000 डकैतियों के अभियुक्त हैं. इस समय जिले में कुल 28 थाने और 2,200 पुलिस कर्मचारी हैं. जिले की कुल आबादी 40 लाख है. पुलिस के ऊपर

काफी बोझ बढ़ता जा रहा है. सरकार ने आबकारी विभाग स्थापित किया है. आबकारी विभाग अवैध शराब का बनना नहीं पकड़ता और गांजा की तस्करी भी नहीं रोकता. पुलिस को ही अवैध शराब की भट्ठियां पकड़नी पड़ती हैं, गांजा की तस्करी रोकनी पड़ती है.

"ऐसे ही परिवहन विभाग है. उस का काम अवैध वाहनों का चलना रोकना है, लेकिन यह काम भी पुलिस को ही करना पड़ रहा है. मिलावट के काम को रोकने के लिए स्वास्थ्य विभाग है, लेकिन यह काम भी पुलिस को ही देखना पड़ता है. इस के साथ ही छात्र आंदोलन, कर्मचारियों की हड़ताल और राजनीतिक दलों के आंदोलनों से भी हमें ही निबटना पड़ता है. इस से पुलिस की शक्ति का बंटवारा हो जाता है. पुलिस की जो शक्ति संगठित रूप में अपराधियों के उन्मूलन में लगनी चाहिए, वह बंट जाती है. अभी तक गोरखपुर जिले में 20 यातायात पुलिस सिपाही हैं. यातायात बढ़ता जा रहा है. सवारियां बढ़ रही हैं और यातायात पुलिस की संख्या वही पुरानी है. ऐसी स्थिति में तस्करी का माल जरूर निकल जाता होगा.

"यदि पुलिस द्वारा किसी अच्छे आदमी के साथ दुर्व्यवहार हो जाता है तो पुलिस का विरोध जायज है. मगर जब किसी अपराधी को पुलिस पकड़ती है तो उस का विरोध कहां तक जायज है? संगीन जुर्म के अपराधियों को पकड़ने में पुलिस को विरोध का सामना करना पड़ता है. अखबार वाले तिल का ताड़ बना देते हैं.

"इस के साथ ही युवा पीढ़ी के सामने कोई आदर्श नहीं है. परीक्षाओं के समय नकल रोकने के लिए पुलिस को लगाना पड़ता है. संरक्षक और अध्यापक दोनों नकल कराते हैं. इस तरह पुलिस के सामने तमाम परेशानियां हैं. इन तमाम परेशानियों के बीच रह कर पुलिस को काम करना पड़ता है. बुरा काम होने पर पुलिस का सब विरोध करते हैं, लेकिन अच्छा काम करने पर कोई भी मदद नहीं करता."

संक्षेप में असल बात यह है कि अब पुलिस अधिकारियों पर कोई अंकुश नहीं रह गया है. उन के पास अधिकार तो असीमित हैं, पर वेतन कम. जो राजनीतिबाज उन के काम की देखरेख के लिए नियुक्त हैं, वे स्वयं अपराधियों को संरक्षण देते हैं. इसलिए पुलिस कर्मचारी व अधिकारी डरें तो किस से डरें?

इस का मुख्य कारण है, सरकार का कानून व्यवस्था के अतिरिक्त दूसरे क्षेत्रों में दखल. यदि मुख्य मंत्री का मुख्य उत्तरदायित्व व्यवस्था बनाए रखना होता तो वह कभी भी हालात को इतना बिगड़ने न देते. अब तो उन्हें परिवार नियोजन, बिजली उत्पादन, गेहूं की वसूली और चीनी के वितरण जैसे काम भी देखने होते हैं, जिन में पैसा भी बनता है और कष्ट भी नहीं होता.

जब तक चुनावों में मुख्य मुद्दा कानून व्यवस्था न होगी, पुलिस और प्रशासन की हालत इसी तरह बदतर होती जाएगी. •

सुखद भूल

कहानी • मुकारब खान 'आजाद'

अनजाने में हुई भूल से इरफाना घबरा रही थी और जब खाला ने भी घर में तूफान खड़ा कर दिया तो वह रुआंसी हो उठी. लेकिन अपने अम्मीअब्बा का फैसला सुन कर तो वह खुशी से पागल हो उठी.

उसने किताबें उठाईं और कालिज जाने के लिए ज्यों ही घूमी कि दरवाजे पर आ खड़ी हुई नसीम ने उसे टोक दिया, "आपा, कालिज जाने से पहले मां से मिल लें, वह आप को अभी बुला रही हैं."

"अच्छा, मैं आ रही हूं."

इरफाना सहन में निकल आई. उसे बड़ा अजीब लगा, क्योंकि नसीम, गुलू और नफीसा उसे तिरछी दृष्टि से देख रही थीं. वे





शायद शरारत से मुसकरा भी रही थीं.

वह तब खाला के कमरे में आ गई थी. नेकू ने जो दूर के रिश्ते में उस की खाला लगती थी, उसे खा जाने वाली नजरों से देखा. सिर से पांव और पांव से सिर तक. नेकू खाला की इस दृष्टि में आश्चर्य के साथसाथ घोर अविश्वास भी झलक रहा था. वह छूटते ही बोली, "इरफाना, कैसी गुजर रही है? खैरियत तो है?"

"जी!" अटपटे सवाल पर वह अचकचा गई.

"हूं," एक लंबा हुंकारा और फिर इरफाना की अवहेलना करते हुए खालाजान ने पानदान को खोल कर पान लगाया. सरौते से छालियां काटी और मुंह में गिलौरी दबा कर डिबिया बंद कर दी. तब रेशमी रूमाल से हाथ व होंठ पोंछ डाले. फिर तकिए के सहारे आड़ीतिरछी हो कर एक खत निकाल कर उसे दिखलाया, "यह क्या है? पहचानती हो यह खत?"

उस खत को देखते ही इरफाना चौंकी. यह रंगीन खत उस का ही लिखा हुआ था—जुबेर के नाम. वह प्रेमपत्र था.

"यह तुम्हारा लिखा हुआ ही है न? गलत लिफाफे में बंद हो गया क्यों?" नेकू खाला ने पीक में रंगे अधरों पर एक कुटिल मुसकान ला कर जब घुड़का तो सहमी आवाज में उस ने जवाब दिया, "जी."

"बहुत खूब! क्या शानदार बी.एड. कर रही हो. क्या कमाल के कारनामे हैं तुम पढ़नेवालियों के. इरफाना, तुम से तो मेरी बेपढ़ी बेटियां लाख भली." खाला ने दरवाजे से लगी खड़ी नसीम, गुलू और नफीसा की ओर इशारा कर दिया. फिर पलट कर चीखीं, "तुम लाख धूल झोंकने की कोशिश करो, पर इश्क नहीं छिपता."

नेकू बहुत गुस्से में थी. पर उस के चेहरे को इरफाना ने नहीं देखा. वह खामोश खड़ी फर्श ताकती रही, बस.

"अपनी किताबें इधर लाओ."

खाला ने उसी अंदाज में किताबें जब्त कर ली और कड़े शब्दों में हिदायत दे "आज से कालिज नहीं जाओगी, समझीं"

इरफाना रुआंसी हो कर जब अ कमरे में लौटी तो उस के पीछे नसीम भी नसीम ने देखा, आपा की बड़ीबड़ी आंखों आंसू भर आए थे. वह उस के पास पलंग पर बैठ कर हमदर्दी जताते हुए बोली, "आ यह क्या किया? आप तो पढ़ाई में हो होशियार थीं. संगीत, खेलकूद नेकनामी में आप का डंका बजता है. फिर भूल कैसे हो गई. कौन है जुबेर?"

इरफाना ने कोई जवाब नहीं दिया. बड़ी ग्लानि हुई, क्योंकि हमेशा नसीह सुनने वाली नसीम आज उसे नसीहत दे रही थी. उसे अपनी लापरवाही पर रोना रहा था. उस ने इस गली के डाकिए से अनुनयविनय की थी कि एक रंगीन खत जो खाला को न दे कर उसे दे दिया जाए. अकरम साहब के तो हरगिज हाथ न लगे. लेकिन दाढ़ी वाला वह डाकिया बड़ा कां है. वह खत आखिर खाला को दे ही गया- दुश्मन कहीं का.

वैसे पिछले दिन से ही इस खत को कर वह काफी परेशान थी, जब से जुबेर का उसे कालिज में फोन मिला था. जुबेर ने बताया था, "मेरे लिफाफे में तुम अपने अब्बा को लिखा खत शायद भूल से कर दिया. उसे पा कर मुझे हंसी छूट रही क्योंकि अब्बा के पते वाला लिफाफा शीघ्र में निकला है."

लेकिन इस खबर के साथ ही इरफाना को तो पसीने छूटने लगे थे. उस ने तीन लिफाफों पर पते लिखे— एक पर जुबेर का दूसरे पर अपने अब्बा का और तीसरा अब्बावाले लिफाफे में डालने के लिए जवाबी, जिस पर अपने खालू अकरम का पता लिखा था.

फिर उस ने खत लिखे और लिफाफों में बंद कर तुरंत लेटरबाक्स में छोड़ आ जुबेर वाले लिफाफे में अब्बाजान को लिखा पत्र और वहां के ठिकाने वाला लिफाफा हो गए और जवाबी लिफाफे में अपने

जुबेर के लिखा खत बंद हो गया, जो खाला के हाथ में पड़ गया.

इरफाना के मांबाप नागौर में सरकारी नौकरी में थे और वह उन की इकलौती लाड़ली बेटी थी. नागौर के मुसलमान बड़े रूढ़िवादी हैं, मगर इरफाना के अब्बा और अम्मी उदार दिल रहे हैं. उन्होंने बेटी को बावजूद मुल्लेमौलवियों के विरोध के बी.ए. तक पढ़ाया और वही बेटी अब जोधपुर में बी.एड. कर रही थी.

इरफाना को होस्टल में न रख कर उन्होंने उसे एक दूर के रिश्ते की खाला (मौसी) के घर रखा और बराबर खर्चा भेजते रहे. इस नेक खाला का घर बंबा मोहल्ले में स्टेडियम के करीब ही था. खाला के पति अकरम मियां की साइकिलों की दुकान थी और वह उसी में मस्तव्यस्त रहता था. उस ने तीनों बेटियों को न तो कभी मुंह लगाया और न प्राथमिक से आगे पढ़ाया, पर तीनों बेटियां बावजूद कड़े परदे के काफी तेजतर्रार और फैशनपरस्त थीं.

अकरम मियां के घर से कोई जवान लड़की किसी गैर को प्रेमपत्र लिखे, यह डूब मरने की बात थी. अकरम ने उस दिन अपनी साइकिलों की दुकान ही न खोली. उस ने तीनों बेटियों के बयान लिए और फिर उन का किसी तरह का दखल न पा कर पड़ोस वाले हाजीजी की बेटी से पूछताछ की गई थी.

हाजी की पुत्री आबेदा पर इरफाना का राज जाहिर था. फिर जुबेर और इरफाना ने कभी कोई गलत कदम भी न उठाया था.

सांस्कृतिक सप्ताह के आयोजन के दौरान जुबेर इरफाना के करीब आया और दोनों में घनिष्ठता बढ़ गई. ▼



अतः उस ने सब कुछ इतमीनान से बता दिया. अब तो अकरम और कथित खाला के तनबदन में आग लग गई.

पर लड़की युवा, पढ़ीलिखी और पराई थी, सो तनिक पूछताछ कर के उस के मांबाप को बुलवा लेना ही उचित समझा गया. उन्हें डर था कि कहीं इरफाना का असर उन की बेटियां न ग्रहण कर लें.

दोपहर में नेकू खाला इरफाना के कमरे में आई, "तुम ने आज खाना नहीं खाया?"

"जी, मेरे सिर में दर्द है."

"दर्द है!" नेकू की पेशानी में बल पड़ गए और त्योरियां चढ़ गईं, "देखो, मैं तुम्हें बाहर तो हरगिज न निकलने दूंगी, चाहे तू खाना खा या न खा. तेरा क्या भरोसा, ऐसे में तू उस कम्बख्त के साथ कहीं भाग जाए तो हमारी तो नाक ही कट जाएगी. पता है, हमारे घर तू किसी की अमानत है?"

इरफाना ने कोई जवाब नहीं दिया. वह नतमस्तक किताब के पन्ने उलटती रही.

"अच्छा, बता यह जुबेर कौन है?"

"डाक्टर है, खालाजान."

"भाड़ में जाए डाक्टर. मैं पूछती हूं किस बिरादारी से है?"

"शिया मुसलमान है."

"शिया!" खाला को एकाएक पसीने छूट गए, "तोबा, ऐसे काफिर से इश्क लड़ाती है. बेगैरत, शर्म नहीं आती तुझे? तू सुन्नी, तेरा बाप सुन्नी और हम सब सुन्नी मुसलमान. खैर खाना खा."

"कहा न, मुझे भूख नहीं है."

"ठीक है. तेरे अम्मीअब्बा आ जाएं तो खा लेना." और नेकू खाला पांव पटकती हुई वहां से चली गई. उस ने अपनी बेटियों को पुकार कर हिदायत दी, "खबरदार, जो किसी ने इरफाना से कोई बात की."

'तो इस ने अम्मीअब्बा को भी यहां से बुला लिया है.' इरफाना सोच कर कांप उठी. अब खैर नहीं. बाप का स्वभाव उस से छिपा नहीं था. या अल्लाह... "कहां जाऊंगी मैं?" वह बुदबुदाई.

जुबेर मंडोर में डाक्टर था. वह सप्ताह पंदरह दिन बाद इरफाना से मिलता था. इस बीच वे पत्रों द्वारा ही एकदूसरे से संपर्क बनाए रखते थे. वे अकसर अपने भविष्य को सुनियोजित करने की सोचते. उन का प्रेम सात्त्विक और गंभीर था. जुबेर इरफाना को बी.एड. कालिज के पते पर पत्र डालता और कभीकभी फोन भी कर देता.

अगस्त में सांस्कृतिक सप्ताह के आयोजन के दौरान संगीत में रुचि होने के कारण जुबेर इरफाना के करीब आया. परिचय हुआ, घनिष्ठता बढ़ी और फिर युवा मनों में प्रेम की कोकिला कूकने लगी जिस की रागिनी उन्हें भा गई.

इरफाना के अम्मीअब्बा जोधपुर पहुंच गए. नेकू खाला अम्मी को एक तरफ अपने कमरे में ले गई और बहन को अचानक बुलावे का सबब सबूत सहित बयान करने लगी.

खालू उस वक्त अपनी साइकिलों की दुकान पर थे. नसीम सिलाई की मशीन छोड़ कर दीवार से लग चुकी थी. गुलू रसोई में और नफीसा कपड़े धो कर सुखा रही थी.

हसरतें

एक हालत में न रहने पाईं
दिल की हसरतें,
तुम ने जब देखा
नए अंदाज से देखा मुझे.

—वली आसी



इन सबों की निगाहें चाहे जिधर रही हों, मन उस कमरे की ओर ही लगे थे, जहां इरफाना के मामले की सुनवाई हो रही थी.

अब्बा बाहर बैठक में तनहा बैठे सिगरेट पी रहे थे. इरफाना ने चाहा कि बाप से मिल ले. अभी मौका है. मगर उस के पांव न उठे. अपराध भावना ने उसे दबोच रखा था.

अब वह खिड़की का पल्ला कुछ भिड़ा कर अपनी अम्मी का चेहरा देखती रही. केवल इस वास्ते कि इस ख़त की अम्मी पर देखें क्या प्रतिक्रिया होती है.

किंतु अम्मी तो खामोश बैठी खाला की बकतकरी सुन रही थीं. अम्मी ने खाला के हाथ से खत ले कर पढ़ा था. फिर भी वह शांत दिखीं. लगा, कहीं गहरे खो गई हैं. खाला के नाचते हाथ, चढ़ती नाक, सिकुड़ती भौंहें, परेशान पेशानी और विवर्ण होता रंग यह साबित कर रहा था कि इरफाना ने अक्षम्य अपराध कर दिया है. अम्मी ने धीमे पुकारा, "इरफाना, यहां आओ तो."

पुकार सुनते ही इरफाना की घिग्घी बंध गई. भयभीत हिरणी सी वह अपनी मां के सामने आ कर खड़ी हो गई.

कुछ देर के लिए उस कमरे में खेलने वाली खामोशी पसर गई. नीची गरदन किए इरफाना ने महसूस किया, अम्मी अपनी इकलौती औलाद को ऊपर से नीचे तक देख रही हैं. फिर वह धीरे से बोलीं, "इरफाना, यह खत तुम्हारा ही लिखा हुआ है न?"

"हां," उस ने स्वीकृति में गरदन हिलाई. वह खाला और अम्मी के मध्य खड़ी पसीनापसीना हो रही थी कि एकाएक अम्मी कुरसी से उठीं. इरफाना सहम गई. लगा, अब पिटाई होगी.

किंतु ऐसा कुछ न हुआ. अम्मी ने उस की खाला से कहा, "हम हाजीजी की बेटी रेहाना से बात करने बी.एड. कालिज जा रहे हैं." और जब वह बाहर निकलीं तो बीबी ने कहा, "लेकिन खाना खा कर जाएं. कुंआर न, सब तैयार ही है."

"नहीं, खाना ऐसे में कैसे खा लें? लौट कर सोचेंगे." और अम्मी बैठक से अब्बाजी को साथ ले कर स्टेडियम वाली सड़क पर निकल गईं.



निगाह

कैसा नजारा किस का इशारा
कैसी बात,
सब कुछ है और कुछ नहीं
नीची निगाह में.

—दाग

वे कालिज नहीं, पब्लिक पार्क में पहुंच कर एक लान में बैठ गए. कुछ देर की चुप्पी के बाद अब्बा ने पूछा, "इन लोगों ने अचानक हमें क्यों बुलवाया है?"

खयालों में खोई अम्मी चौंकी, "अ... वो अपनी इरफाना को इन लोगों ने कालिज नहीं जाने दिया, पिछले तीन दिनों से."

"भला क्यों?" अब्बा चकित हो रहे थे.

"उस का एक लड़के से प्रेम हो गया है. देखो, यह खत इन्होंने सबूत में मुझे दिखाया है."

अम्मी ने बेटी का लिखा प्रेमपत्र उन्हें थमा दिया और पूरी कहानी कह सुनाई.

अब्बा ने हैरान हो कर वह खत कई बार पढ़ा और फिर वह स्वयं भी कहीं गहरे खो से गए. फिर सूनी हवेली में अपने जोड़े के साथ बैठे अनुभवी कपोत की तरह धीर-गंभीर स्वर में बोले, "यह किस्सा इरफाना

और जुबेर का है या हमारातुम्हारा?" अब्बा ने अम्मी की आंखों में आंखें डाल दीं.

"इसी उलझन में मैं हूं." अम्मी भी उसी भावना में बह रही थीं.

उन की आंखों में अपना 22 साल पहले का जमाना घूम गया. वे दोनों एकसाथ कालिज में पढ़ते थे और उन के प्रेमपत्र भी तब पकड़े गए थे. अम्मी लखनऊ की शिया मुसलमान थीं, जब कि अब्बा सुन्नी और राजस्थान के रहने वाले.

उन दोनों ने हिम्मत और सूझ से काम लिया और परस्पर शादी कर डाली. वे भले ही शियासुन्नी का झमेला पसंद न करते हों पर घरवाले तो दकियानूसी ही थे. अतः अम्मी ने सब को छोड़ा और राजस्थान आ गईं.

"खैर यह बताओ, यह लड़का कौन है?"

"जो मैं हूं," अम्मी थोड़ा मुसकराईं, "यानी शिया."

"अच्छा है. हमें यही उम्मीद थी कि हमारी बेटी शियासुन्नी का फर्क मिटाने की कोशिश करेगी."

और दोनों को लगा, उन का भोगा हुआ अतीत परदा हटा कर सामने आ खड़ा हुआ है. अब तो वे परस्पर नजरें चुराने लगे. इस के बाद कुछ इधरउधर की बातें करने के बाद एक निश्चय के साथ वे कालिज की तरफ चले गए और काफी देर बाद घर लौटे.

घर में घुसते ही दोनों की दृष्टि कमरे में बैठी इरफाना पर टिकी. वह उदास, निराश, भविष्य के प्रति आशंकित अन्यमनस्क सी निढाल हुई कुरसी पर बैठी थी.

दोपहर में साइकिलों की दुकान बंद कर अकरम मियां भी घर आ गए. इन्होंने भी इरफाना के अब्बा को भारी उलाहना दिया. खाना खाते वक्त हर निवाले पर इरफाना की बुराई करते जा रहे थे, जिसे सुन कर अब्बा बेचैन से हो गए. उन्होंने बहुत कम खाया. लगा, गले में कुछ फंसता जा रहा है. आखिर उन्होंने हाथ धो लिए और बाहर बैठक में आ कर सिगरेट सुलगा ली.

उन्होंने आबेदा से हुई बात, इरफाना के शिक्षकों से हुई बात और जुबेर से संबंधित पूछताछ सब पर बारीबारी से विचार किया और आश्वस्त हो कर बेटी को आवाज दे दी, "इरफाना, जरा बाहर बैठक में आओ, बेटी."

'अब आई शामत.' इरफाना का कलेजा कांप गया. वह बाप के पास आ खड़ी हुई, "जी, अब्बाजी."

"अपना सामान बांधो. हम यहां से अभी चलेंगे."

"मगर अब्बाजी..." वह कुछ कहना चाह रही थी कि बाप ने बात काट दी, "मगर क्या? हमें इन दकियानूसों के बीच नहीं रहना. मैं ने पहले ही कहा था, होस्टल में रह लो. अब भी तो रहना पड़ेगा. यह रसीद देखो, मैं तुम्हारी होस्टल की फीस जमा करा आया हूं. वह तुम्हारा प्रिंसिपल काफी नेक इनसान है. जाओ सामान बांधो."

इरफाना अवाक रह गई. आग लगी दुनिया में यह बाग—उस की रुलाई फूट पड़ी, "अब्बा, आप मुझे पीटेंगे तो नहीं? मैं ने बड़ी गलती कर दी." बेटी बाप के कदमों में बैठ गई.

"हमारी समझदार बेटी कभी गलती नहीं करेगी. जुबेर को मैं 'तय' करता या तुम्हारी अम्मी. फिर जब तुम ने खुद ही उसे तय कर लिया तो सोने में सुहागा. तुम्हारा खाला, खालू रूढिवादी हैं. इन के सलूक का बुरा न मानना. ऐसों को नजरअंदाज कर देना ही समझदारी है. आओ, हम इन्हें छोड़ दें."

अब्बा तनिक रुक कर फिर बोले, "उठो, अपनी अम्मी और सामान को ले कर बाहर आ जाओ. खाना बाहर ही खाएंगे. तुम भूखी हो न? खैर, मैं टैक्सी ला रहा हूं."

और इरफाना जब उठ खड़ी हुई तो लगा, समझदार बाप ने सयानी बेटी के प्यार को सम्मान दे कर आसमान तक ऊंचा उठा दिया था.

दूसरा उत्तरदायित्व

"कल आओगे न? मैं तुम्हारी राह देखूंगी." रोजी ने दरवाजा बंद करने से पहले उस से अंतिम बार पूछा था, जिस के उत्तर में वह "कह नहीं सकता" कह कर चला आया था.

तब से राबर्ट अभी तक रोजी के प्रश्नों के भंवरजाल में ही फंसा हुआ था. वह सोच रहा था कि वह उस के पास जाए अथवा नहीं. वहां जा कर वह करेगा भी क्या? फिर ऐसी लड़की से वह क्या उम्मीद रखे, जिसने एक बार भी उस की भावनाओं की अहमियत नहीं समझी? तब उस ने क्या क्या नहीं करना चाहा था रोजी की खातिर. लेकिन रोजी ने तब उस को दो टूक उत्तर दे दिया था कि अभी वह इस झंझट में नहीं पड़ना चाहती, उस के ऊपर बहुत सारी



जिस रोजी से खिन्न हो कर रावर्ट ने अभी तक विवाह नहीं किया था, उसी की मजबूरियां जान कर उस के पैरों तले जमीन खिसक गई और तभी उस ने एक फैसला कर लिया.



जिम्मेदारियां हैं. उस ने तो यहां तक कह दिया था कि 'यदि उस को बहुत ही जल्दी है तो वह अपना संबंध कहीं और कर सकता है, उस के भरोसे न बैठे.' कितनी स्पष्टवादिता थी तब उस के स्वरों में. किसी के दिलदिमाग पर क्या गुजरी होगी, तब उस ने सोचा था? यह वही रोजी तो है जो आज उस की राह देख रही होगी.

कितना अधिक परिवर्तन आ गया था रोजी में. किसी भी प्रौढ़ महिला से कम नहीं दिखती थी वह अब. पहले कितनी सुंदर और गुड़िया सी थी. हालांकि अब भी उस का चेहरा वैसा ही था, परंतु आंखों में जैसे जीवन के प्रति घोर निराशा और एक उदासी कैद हो चुकी थी. 32 वर्ष की उम्र में ही उस के लंबे बालों में रेशम के सफेद तार

झांकने लगे थे. शरीर से भी वह काफी स्थूल हो गई थी, जब कि वह स्वयं भी 35 वर्ष का हो चुका था, लेकिन उस का तो एक भी बाल सफेद नहीं हुआ था. साथ में उस का इकहरा शरीर होने के कारण कोई भी उसे 26-27 वर्ष से अधिक का नहीं कह सकता था.

कल अचानक ही एक अरसे के बाद उस की रोजी से भेंट हो गई थी. शाम गहरा गई थी. आकाश में बादल गड़गड़ाते हुए होने वाली वर्षा की पूर्व सूचना दे रहे थे. जब वह अपने बास का आरक्षण करवा कर रेलवे स्टेशन से वापस आ रहा था, क्रिश्चियन हस्पताल के पास से गुजरते हुए ईसानगरी तक आतेआते वर्षा होने लगी थी. उस ने शीघ्र ही साइकिल तेज कर दी थी, परंतु शरण लेतेलेते वह खूब अच्छी तरह भीग चुका था. फिर उस ने तुरंत सड़क के किनारे बने एक मकान के बरामदे में जा कर शरण ले ली थी.

वह अभी खड़ाखड़ा अपने बालों, मुंह और कपड़ों पर से पानी की बूंदें साफ कर ही रहा था कि अचानक बरामदे के पास बने कमरे में किसी ने अंदर से बत्ती जला दी थी. उसे समझते देर नहीं लगी थी कि मकान मालिक को उस की उपस्थिति का आभास हो चुका है. इसी लिए जब उस ने घूम कर अंदर की ओर निहारा था तो उसे ऐसा लगा था कि किसी महिला ने उसे खिड़की का परदा हटा कर खूब अच्छी तरह देखा था. इस कारण वह चुपचाप खड़ाखड़ा सोचने लगा था कि कब वर्षा थमे और वह वहां से सरके. क्या पता कि मकान मालिक उस के यों खड़े होने पर मन ही मन खिन्न हो रहा हो.

राबर्ट खड़ाखड़ा इसी सोच में था कि अचानक बरामदे की भी बत्ती जल उठी थी. जैसे ही उस ने अंदर की ओर देखा था, अंदर खड़ी महिला ने दरवाजे की ओट से झांकते हुए उस से कहा था, "अंदर आ कर बैठ जाओ, बाहर बहुत सर्दी है."

राबर्ट सुन कर हैरान हो उठा था, लेकिन फिर वह चुपचाप अंदर जा कर सोफे पर बैठ गया था.

अंदर से कहने वाली महिला तब तक दूसरे कमरे में प्रविष्ट हो चुकी थी.

राबर्ट चुपचाप कमरे की वस्तुओं का निरीक्षण सा करने लगा था. पूरा कमरा बड़े करीने से सजा हुआ था. दीवारों पर मरियम और ईसा की तसवीरें फ्रेम में मढ़ी हुई लटकी हुई थीं. कोने में एक स्टूल पर कागज के फूलों का गुलदस्ता सजा हुआ था. बीच में सोफासेट और छोटी मेज थी. दूसरे कोने में एक बड़ी मेज के सामने कुरसी और ऊपर एक बड़े फ्रेम में कई लोगों की तसवीरें लटकी थीं, जो दूर से देखने में पहचान में नहीं आ रही थीं. मेज के पास ही एक बाइबिल भी रखी हुई थी. कमरा और वहां की संपूर्ण खामोशी देख कर कोई भी आसानी से यह अनुमान लगा सकता था कि उस घर में केवल एक ही व्यक्ति रह रहा है.

फिर थोड़ी ही देर में वह महिला चाय बना कर ले आई थी. राबर्ट फटफटी आंखों से उसे देखता रह गया था. वह कभी महिला को तो कभी चाय की केतली को घूरने लगता था. वह महिला भी उस की मन:स्थिति को भांप गई थी, इसलिए उसे चाय देते हुए बोली थी, "मुझे देख कर इतना घबरा क्यों रहे हो? क्या मुझ से मिल कर तुम्हें खुशी नहीं हुई?"

राबर्ट के मन में आया था कि वह कह दे, बिलकुल नहीं. परंतु अपने अंदर की भभक को वह भी दबा गया था.

"घर पर सब कैसे हैं?"

"बेबी तो काफी बड़ी हो गई होगी?"

"जार्ज अमरीका चले गए कि नहीं?"

"तुम ने तो कोई खबर ही नहीं दी, इतने पत्र तुम्हें लिखे, कम से कम एक का तो उत्तर दे दिया होता."

रोजी के ढेर सारे प्रश्नों में उस के प्रति मुख्यत: शिकायत ही थी.

राबर्ट ने कहा था, "पिताजी दो वर्ष पूर्व गुजर गए."

"अच्छा!" रोजी ने एक गहरी सांस ली थी.



राबर्ट चुपचाप उस के चेहरे के भावों को पढ़ने लगा था. उसे लगा था कि रोजी के संपूर्ण चेहरे पर उस के अतीत के चलचित्र उभरने लगे हैं.

"मां ठीक हैं. बेबी घर पर ही है और एक प्राइमरी स्कूल में ही पढ़ा रही है. जार्ज भैया पिछले दिसंबर में अमरीका चले गए हैं."

"और तुम?" रोजी का अगला प्रश्न था.

"मैं अभी भी कहानियां ही लिखता हूं. वैसे अब काफी कोशिशों के बाद एक प्राइवेट फर्म में 300 रुपए पर सहायक का काम मिल गया है. जार्ज भैया के कोई हिंदू मित्र हैं, जो अमरीका में इंजीनियर हैं. उन्हीं की सिफारिश से मुझे यह नौकरी मिली है. वैसे एम.ए. करने के बाद भी कहीं ढंग की नौकरी नहीं मिली, इसलिए सोचता हूं कि मैं भी अमरीका ही चला जाऊं तो बेहतर रहेगा."

"तुम तो उपन्यास भी लिखते थे?" रोजी ने पूछा था.

"वे सारे के सारे वैसे ही रखे हुए हैं. सभी प्रकाशक उन्हें ट्रेडमार्क में छापना चाहते हैं. कोई भी मेरा नाम उन पर देने को राजी नहीं है."

रोजी यह सब सुन कर मौन हो गई थी. राबर्ट ने तब तक चाय पी कर प्याला मेज पर रख दिया था और बाहर की ओर देखने लगा था. वर्षा अभी भी हो रही थी, लेकिन पहले से मंद पड़ गई थी.

"मैं तो समझ रही थी कि तुम ने अब तक अपनी शादी कर ली होगी," रोजी ने बात आगे बढ़ाई थी.

"हूं. क्या तुम समझती हो कि संसार के प्रत्येक मनुष्य को खुशियां मिल जाती हैं?"

रोजी ने महसूस किया था कि उस की यह बात राबर्ट की छाती में किसी तेज नश्तर के समान उतर गई थी, इसलिए वह एकाएक चुप हो गई थी.

दोनों कुछेक क्षणों तक चुप बैठे रहे थे.

राबर्ट का ध्यान जब कोने में स्टूल पर रखे गुलदस्ते की ओर गया तो वह उधर ही देखने लगा था. इस पर रोजी उसे टोक कर बोली थी, "उन फूलों में क्या देख रहे हो?"

"देख नहीं सोच रहा था."

"क्या?"

"यही कि कागज के फूलों में खुशबू नहीं होती तो कांटे भी तो नहीं होते." राबर्ट का स्वर जैसे किसी अनकहे दर्द में डूब चुका था.

रोजी को लगा था जैसे राबर्ट ने उस के मुख पर जोरदार तमाचा जड़ दिया हो. पल भर को वह भीतर ही भीतर छिन्नभिन्न सी हो गई थी. फिर संयमित हो कर बोली थी, "तुम तो सारा दोष मुझ को ही दोगे. तुम क्या जानो कि मेरी क्या मजबूरियां थीं."

राबर्ट चुपचाप उस के चेहरे के भावों को पढ़ने लगा था. उसे लगा था कि रोजी के संपूर्ण चेहरे पर उस के अतीत के चलचित्र उभरने लगे हैं. तभी वह बोली थी, "तुम समझते हो कि मैं ने तुम से शादी न कर के तुम्हें कहीं का नहीं छोड़ा है. ठीक है, गलती मेरी है. लेकिन मेरे आगे भी कितनी ही जिम्मेदारियां थीं. तुम यदि मेरी जगह पर होते तो तुम भी शायद वही करते जो मैं ने किया.

"तुम्हें तो मालूम ही है कि जब विदेशी मिशनरियों ने आर्थिक सहायता देना एकदम बंद कर दिया तो मेरे पिता की नौकरी भी चली गई. उस समय मुझे छोड़ कर मेरे पांचों भाईबहन अभी स्कूल में ही पढ़ रहे थे. मैं भी हाईस्कूल करने के बाद नर्सिंग का प्रशिक्षण ले रही थी. मेरे मातापिता ने मुझे इसी लिए नर्स का प्रशिक्षण दिलाने का निश्चय किया था कि मैं शीघ्र ही इस लायक हो जाऊं कि अपने छोटे भाईबहनों का बोझ उठा सकूं. सब से बड़ी होने के कारण मेरा कर्तव्य था कि मैं इस जिम्मेदारी को पूरा करूं.

"पिताजी ने नौकरी समाप्त होने के बाद कैंटीन खोल ली थी, परंतु वह चल नहीं सकी थी, क्योंकि छोटा शहर और लोगों के संकीर्ण मनोवृत्ति वाला होने के कारण लोग ईसाइयों को नीची जाति का समझते थे. यह जातिवाद उन की कैंटीन को ले डूबा. इस का सब से बड़ा कारण यही था कि मिशनरियों ने जब ईसाई धर्म का प्रचार आरंभ किया था तो अधिकतर हरिजन ही धर्म परिवर्तन कर ईसाई बने थे.

"नतीजा यह हुआ कि पिताजी की सारी जमापूंजी कैंटीन में ही समाप्त हो गई. यह गनीमत थी कि मिशन की ओर से पढ़ने वाले होशियार बच्चों को वजीफा अच्छा मिलता था. इसी लिए सब भाईबहनों की पढ़ाई पूरी हो गई, वरना आज कोई भी इस लायक न होता कि दो पैसे भी कमा सकता, सिवा इस के कि वे मेहनतमजदूरी करते और सब के सब मेरा प्रशिक्षण समाप्त होने से पहले ही बैठ जाते.

"उस के बाद घर की आर्थिक स्थिति इतनी डांवांडोल हो गई थी कि घर में दो वक्त का खाना भी ढंग से नहीं बन पाता था. मेरे पांचों भाईबहनों के पास पहनने को ढंग के वस्त्र भी नहीं रहे थे. डेविड की पैंट काट कर जान को, तो जान की पैंट छोटी कर के सैमसन को पहनाती थी. घर में बड़े दिन

नजर

तुम्हारी नजर वज्म में
कह रही है,
जो कुछ पूछना है
इशारों से पूछो.

—साजन पेशावरी



ईस्टर पर ही अच्छा खाना नसीब होता था. तभी एकएक जोड़ा कपड़ा भी किसी तरह बन पाता था, जिसे मां दूसरे दिन ही वक्स में बंद कर देती थीं.

"गरमियों की छुट्टियों में जब घर के आसपास वाले खेला करते, तब मां अपने सारे बच्चों को ले कर भरी दोपहरी में कागज के थैले बनाया करती थीं. उस से जो पैसे मिलते उन से जौ या ज्वार की रोटी और आलू या अरहर की दाल ही खाने को मिल पाती थी. पिताजी तो आए दिन बीमार ही रहते थे, दूध खरीदने की हिम्मत नहीं थी, इसलिए गुड़ की काली चाय पीनी पड़ती थी.

"मां जब कभी घर की आर्थिक तंगी से परेशान हो कर खीजतीं तो वह पिताजी के आगे उलटासीधा बकने भी लगती थीं.

"पिताजी की नौकरी छूटने के डेढ़ वर्ष बाद मेरा प्रशिक्षण पूरा हुआ था और मुझे वेतन मिलने लगा था, लेकिन तब तक एकएक पैसा कर पिताजी की सारी जमापूंजी समाप्त हो चुकी थी. घर में कभी एक समय चूल्हा जलता तो कभी बिलकुल ही नहीं जलता था. उस समय मुझ से छोटा डेविड बी.एससी. प्रथम वर्ष में था. उस से छोटा इंटर में और ऐस्टर, मरियम तथा सैमसन क्रमशः आठवीं और छठी कक्षा में थे. इन सब का खर्चा केवल मुझ पर आ गया था, ऊपर से मांबाप का खर्चा अलग. मैं घर में सब से बड़ी थी, इसलिए मेरा यह फर्ज था कि मैं अपने भाईबहनों को कम से कम इस लायक तो कर दूं कि वे अपनाअपना खर्च उठा सकें. इसी बीच तुम ने विवाह का प्रस्ताव रखा जो मेरे लिए स्वीकार करना अत्यंत दुष्कर था. मेरा उस समय विवाह की स्वीकृति देने का अर्थ था— पांच जिंदगियों की बरबादी.

"मैं सोचती थी कि एकदो वर्ष के बाद डेविड अपनी शिक्षा पूरी कर के कहीं नौकरी की कोशिश करेगा और घर के खर्च में मेरा हाथ बंटाएगा. परंतु उस के मस्तिष्क में हमारे चाचा ने, जो अमरीका में रहते हैं, वहां के ठाटबाट, कार, संपन्नता के ख्वाब इस



रूप

रूप का इतना गुमां
अच्छा नहीं है,
पास ठहरी हैं सदा
किस के बहारें.

—सोमदत्त 'सोमेंद्र'

कदर भर दिए थे कि वह भी वहां जाने के सपने देखने लगा था. वैसे चाचा उस को यह आश्वासन देते रहते थे कि वह उसे अमरीका बुला लेंगे, लेकिन हुआ वही जो मैं सोच रही थी. न चाचा उसे वहां बुला सके और न वह कहीं नौकरी ही कर पाया. धीरेधीरे उस की सरकारी नौकरी में लगने की उम्र ही पार हो गई. आखिर विवश हो कर मैं ने उसे किसी प्रकार टेक्नीशियन की ट्रेनिंग दिलवाई. आज वह लुधियाना मेडिकल हस्पताल में टेक्नीशियन है.

जान इंटर में दो बार फेल हुआ. जब मैं ने उसे बहुत समझाया तो उस ने कड़ी मेहनत की और बी.ए. के बाद एम.ए. कर लिया. बाद में उस ने एल.टी. भी किया. इस प्रकार वह भी आज कानपुर के क्रिश्चियन इंटर कालिज में पढ़ा रहा है.

"ऐस्टर अध्यापिका बनना चाहती थी, इसलिए उसे बी.एड. कराया और लखनऊ के आई.टी. कालिज में प्रवेश दिलवाया. मगर वहां वह एक लड़के के प्रेमजाल में उलझ गई. इस कारण मैं ने उस का विवाह कर देना ही उचित समझा.

आजकल वह श्रीनगर में है और दो बच्चों की मां भी है. उस का पति जीवन बीमा निगम में कार्य करता है.

"मरियम मेरी तरह नर्स बनना चाह रही थी, उस को भी पूरे चार वर्षों का प्रशिक्षण दिलवाया. वह भी आज अपने पैरों पर खड़ी है. रही सैमसन की बात, तो वह अभी एम.एससी. द्वितीय वर्ष में है. वह पढ़ने में तेज है, इसलिए मैं चाहती हूं कि वह खूब पढ़ ले. वह जीव विज्ञान में पीएच.डी. करना चाहता है. वह मांबाप के पास रह कर ही पढ़ रहा है.

"इस प्रकार आज वे सब कम से कम इस लायक हो गए हैं कि किसी के ऊपर बोझ नहीं बन सकते. समय आने पर वे अपना ब्याह भी कर सकते हैं." कह कर वह कुछ क्षण चुप रही.



फिर अपनी कहानी जारी रखते हुए उस ने कहा, "मैं तो समझ रही थी कि तुम ने अब तक अपनी शादी कर ली होगी और दोएक बच्चों के पिता भी बन चुके होगे, क्योंकि जिस समय तुम अपनी शादी का प्रस्ताव ले कर मेरे पास आए थे, उस समय मैं ने महसूस किया था कि तुम अपने विवाह के लिए काफी उतावले हो. मैं ने तुम्हें इस कारण मना कर दिया था, क्योंकि मुझ पर उस समय अपने पांच भाईबहनों की जिम्मेदारी थी. उन का सारा भविष्य मेरे ऊपर निर्भर था.

"लेकिन मेरी मनाही का तुम ने गलत अर्थ लिया. तुम ने समझा कि रोजी किसी लेखक और अच्छी नौकरी पर न लगे लड़के से विवाह नहीं करना चाहती, क्योंकि उस समय तुम कपड़े की एक दुकान में नौकर थे. लेकिन जरा सोचो, यदि ऐसा ही होता तो क्या मैं आज ऐसे ही बैठी रहती? मैं भी मौज उड़ाने अमरीका जा सकती थी. नर्स होने के कारण मेरे आगे भी विदेशों में काम के कई प्रस्ताव आए, मेरे साथ की कई लड़कियां विदेशों में जा कर बस चुकी हैं.

"बाद में जब मरियम का भी प्रशिक्षण पूरा हो गया तो मांबाप ने चाहा कि मेरी भी कहीं शादी हो जाए. तब मैं ने तुम्हें कई पत्र भी लिखे थे, लेकिन तुम ने मेरे एक भी पत्र का उत्तर नहीं दिया. मैं जानती थी कि तुम मुझ से बहुत नाराज हो. बाद में मैं ने तुम्हारी चुप्पी का यह अर्थ भी लगाया कि हो सकता है कि तुम्हारा विवाह हो चुका हो.

"इस के बाद मैं ने कभी अपने विवाह के लिए नहीं सोचा. मांबाप ने मेरे विवाह के लिए दोएक जगह बात भी चलाई. तो मेरी बढ़ती हुई उम्र अड़चन बन गई. 32 वर्ष की लड़की से कोई भी लड़का आसानी से विवाह नहीं करना चाहता या जिन लोगों ने हां भी की तो वे या तो दोतीन बच्चों के पिता और विधुर थे अथवा तलाकशुदा थे. इसलिए कहीं भी बात बन नहीं सकी. उस के बाद समय इतनी जल्दी गुजरा कि कुछ भी पता नहीं चला.

"बीच में ऐस्टर के पति की स्कूटर से दुर्घटना हो गई. वह पूरे एक वर्ष तक छुट्टी पर रहा. इसलिए उस के परिवार का भी आर्थिक खर्च मुझ पर आ पड़ा. ऐस्टर पूरे वर्ष भर मुझ से पैसे मंगाती रही.

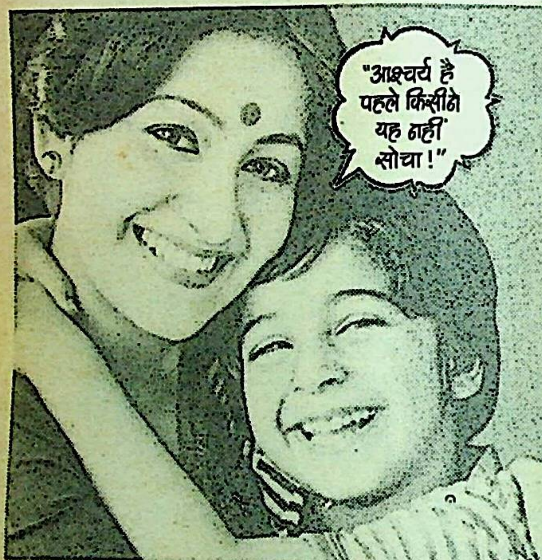
"और जब एक दिन मैं ने अपनेआप को आईने में गौर से देखा तो मेरे बालों की बढ़ती हुई सफेदी ने जाहिर कर दिया कि मैं उम्र के उस मोड़ पर आ गई हूं, जहां पर दुनिया का कोई भी युवक मेरा हाथ थामने से हिचकिचाएगा.

"उस के बाद मुझे एक दिन यहां के हस्पताल में प्रधान नर्स की नौकरी मिल गई तो मैं यहां चली आई. यहां आए मुझे तीन वर्ष हो चुके हैं और अब तो बस उम्र पूरी करनी है. जीने की आस तो जाती रही. सपने देखने के दिन तो चले गए हैं. मैं तो उस स्थान पर आ चुकी हूं जहां पर रह कर न जी सकती हूं और न ही मर सकती हूं. केवल पैसा है जो कमाकमा कर रख रही हूं. वह भी किस के लिए, कुछ पता नहीं. मेरे सामने तो दूर तक सपाट नीला सागर सा है, जिस के छोर का भी कोई पता नहीं है."

हज़ारों परिवार सदियों से आज़माये
लौंग के तेल के गुणों को प्रॉमिस में पा रहे हैं–

प्रॉमिस
लौंग तेल युक्त
एक अनोखा टूथ पेस्ट

क्या आप भी इसका लाभ उठाना नहीं चाहेंगे?



प्रॉमिस

**दाँतों का क्षय रोकने में सहायक है,
मुँह में ताज़गी लाता है और
साँस की दुर्गंध रोकता है।**



बलसारा उत्पादन



Monde Selection
Gold Medal Winner

**स्वस्थ दाँत और मसूढ़े,
साँसों में ताज़गी!
यही तो प्रॉमिस है!**

CHAITRA-BLS-453 HIN R

खाली ट्यूब वापस करने की तिथि अंतिम रूप से 31 दिसंबर, 1982 तक बढ़ा दी गई है.

राबर्ट ने महसूस किया था कि रोजी कहतेकहते काफी उदास हो गई थी. वर्षा पूरी तरह बंद हो चुकी थी. आकाश में तारे झिलमिला उठे थे और दूर कहीं बदली में से चंद्रमा भी झांकने लगा था.

फिर राबर्ट उस से नमस्कार कह कर जब लौटने लगा था तो रोजी ने बड़ी आस से उस से पूछा था, "कल आओगे?"

तब से राबर्ट के मस्तिष्क में यही बातें थीं. बारबार उस के दिमाग में रोजी एक प्रश्नचिह्न बन कर खड़ी हो जाती थी. राबर्ट को इस शहर में आए अभी दो माह ही हुए थे. इस से पहले वह दूसरे शहर में था. फिर जब उस का स्थानांतरण यहां हो गया तो वह यहां चला आया था. उसे क्या पता था कि रोजी से उस की यों अचानक भेंट होगी.

राबर्ट काफी देर तक इसी उधेड़बुन में लगा रहा कि वह रोजी के पास जाए अथवा नहीं. यह वही रोजी तो है, जिस से खिन्न हो कर उस ने आज तक अपना विवाह नहीं किया. फिर उस ने सोचा, इस में रोजी का क्या दोष? यदि रोजी के स्थान पर वह स्वयं होता तो क्या वह खुद ये सब जिम्मेदारियां न उठाता, जिन को रोजी ने उठाया है? रोजी को इस से खुद क्या प्राप्त हुआ है? यही न कि उस के सब भाईबहन आज अपने पैरों पर खड़े हैं. वे किसी के मुहताज नहीं हैं. चार पैसे खुद कमाने लायक तो हैं. रोजी की इस से बड़ी सफलता और क्या हो सकती है कि उस ने अपना कर्तव्य, अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह निभाई है.

अंत में राबर्ट के अंतःकरण ने यही कहा कि रोजी के यहां जाना और उस को स्वीकार करना ही उचित होगा, क्योंकि अगर वह स्वयं रोजी के स्थान पर होता तो वह भी वही करता जो रोजी ने किया है. आज रोजी एक उत्तरदायित्व पूरा कर चुकी है, और दूसरा...? राबर्ट के सामने तुरंत रोजी का भविष्य और उस का उदासी से घिरा चेहरा घूम गया.

फिर उस ने तुरंत उस के पास जाने का निश्चय कर लिया. ●



यू.ई. चौधरी : जो महिलाएं इंजीनियरी के काम को समझ सकती हैं, वे इस क्षेत्र में आगे आ सकती हैं.

पिछले 10-15 वर्षों से लोग वास्तुशिल्प को कुछ अधिक महत्त्व देने लगे हैं. इस की लोकप्रियता बढ़ने लगी है. फलतः महिलाएं भी इस क्षेत्र में आगे आई हैं. भारतीय महिलाएं भी इस दृष्टि से पीछे नहीं हैं. लाख दावों के बावजूद पुरुष और स्त्री के बीच की विभाजक रेखा कायम है. इसी रेखा के एक तरफ सिमटी इस लेखिका ने महिला वास्तुशिल्पियों की स्थिति और उन की समस्याओं का अध्ययन करने की कोशिश की है.

पंजाब की मुख्य वास्तुशिल्पी श्रीमती यू.ई. चौधरी संभवतः इस क्षेत्र की महिलाओं में वरिष्ठतम महिला शिल्पी हैं. इन के पिता उच्च पद पर आसीन थे. इसलिए इन के मन में भी औरों से कुछ विशिष्ट बनने की इच्छा जाग्रत हुई. छोटी अवस्था में ही इन्होंने निश्चय कर लिया कि अपनी यह आकांक्षा वास्तुशिल्पी बन कर पूरी करेंगी. इसी लिए

समस्याएं महिला वास्तुशिल्पियों की

जंगलों में कंदमूल, फल आदि खा कर पेड़ों पर बसर करने की आदिम प्रवृत्ति धीरेधीरे सभ्यता की ओर अग्रसर हुई. मानव मस्तिष्क का विकास होता गया. उस की प्रथम आवास परिकल्पना पेड़ों की डालियां व बड़े पत्तों से बनी छोटीछोटी झोंपड़ियां रही होंगी. धीरेधीरे मानव की जंगल में रहने की प्रवृत्ति पर उस की नईनई अभिरुचियां व कोमल कलात्मकता ने हावी हो कर उसे कलाप्रेमी बनाया होगा. उसी आदिम झोंपड़ी से संसार की आधुनिकतम गगनचुंबी अट्टालिकाओं व सुंदर भवनों तक पहुंचने का इतिहास ही स्थापत्य कला अथवा वास्तुशिल्प का इतिहास है.

उन्होंने बी. आर्किटेक्चर (वास्तुशिल्प में स्नातक डिगरी) सिडनी से किया.

"आप को सिडनी में पढ़ाई करते समय कुछ समस्याओं का सामना तो अवश्य करना पड़ा होगा?" लेखिका के इस प्रश्न के जवाब में उन्होंने कहा, "पढ़ाई में तो कुछ विशेष समस्याएं नहीं आईं, हां, दूसरे देश के वातावरण में अपने को ढालने में थोड़ी परेशानी जरूर हुई."

"क्या वास्तुशिल्पी का काम भारतीय महिला की प्रवृत्ति से मेल खाता है?"

"जो महिलाएं कलात्मक अभिरुचि की हैं और जो इंजीनियरी के काम को समझ

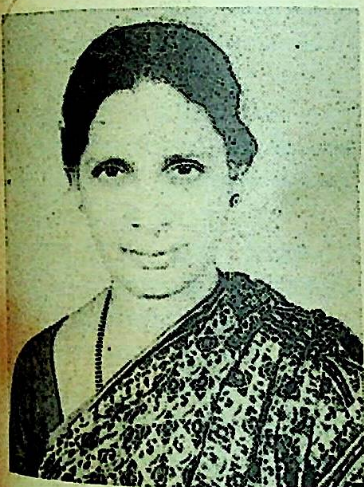
लेख • नीलम कुलश्रेष्ठ

सकती हैं, ऐसी महिलाएं इस क्षेत्र में आगे आ सकती हैं. मुझे तो कोई भी क्षेत्र ऐसा नजर नहीं आता जहां भारतीय महिलाओं ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का उपयोग न किया हो."

"महिला वास्तुशिल्पी होने के कारण आप के सामने विशेष समस्या तो नहीं आई?"

"ऐसा तो कभी नहीं हुआ. हां, उन समस्याओं का सामना तो अभी भी करना पड़ता है जो कि किसी पुरुष के सामने भी आ सकती हैं."

श्रीमती शैला एन. गुप्ते वड़ोदरा के सियाजी राव विश्वविद्यालय में वास्तुशिल्प



शैला एन. गुप्ते : सीमित क्षमता के कारण केवल अपने ही बूते पर भी स्त्री इस क्षेत्र में स्वतंत्र कार्य नहीं कर सकती.

की प्राध्यापिका हैं. वह बताती हैं, "मैं जब छोटी थी, तभी से म्यूजिक कालिज, लक्ष्मी विलास पैलेस, कला भवन व अन्य सुंदरसुंदर इमारतों की सुंदरता मुझे अभिभूत कर देती थी. मैं तभी से सोचा करती थी कि काश, मैं भी इसी तरह की सुंदर इमारतों का डिजाइन बना सकती. मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद आगे के विषयों के चुनाव का प्रश्न मेरे लिए कोई

आज वास्तुशिल्प के क्षेत्र में महिलाएं भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलने का प्रयास कर रही हैं. लेकिन उन्हें कुछ समस्याओं का सामना भी करना पड़ रहा है. कैसी हैं उन की समस्याएं?

समस्या नहीं बना, क्योंकि मैं बचपन से ही वास्तुशिल्पी बनने का निर्णय ले चुकी थी."

"पढ़ते समय कुछ समस्याएं तो आई होंगी?"

"जब मैं वास्तुशिल्प का अध्ययन कर रही थी, तब पूरी कक्षा में मैं ही एकमात्र लड़की थी. शुरू से लड़कियों के स्कूल में पढ़ी थी, फिर स्वभाव से शरमीली भी थी. इसलिए कालिज की दुनिया मेरे लिए दूसरी ही तरह की दुनिया थी. धीरेधीरे मैं ने अपनेआप को इस नए वातावरण का अभ्यस्त बना लिया. अध्ययन व सर्वेक्षण के लिए बाहर जाने में भी कुछ कठिनाइयां आती थीं, लेकिन मैं ने इस तरह की किसी भी दूसरे शहर की यात्रा को नहीं छोड़ा. अब तो इस क्षेत्र में बहुत सी लड़कियां आ गई हैं. इसलिए उन के सामने वे समस्याएं नहीं हैं, जिन का सामना मुझे करना पड़ा था."

"वास्तुशिल्पी होने के कारण समाज में भी आप को एक विशिष्ट महिला की तरह देखा जाता होगा?"

"हां, लोग कुछ तो महत्त्व देते ही हैं," एक सलज्ज, शालीन मुसकान उन के चेहरे पर खिल उठी.

"आप शुरू से ही बड़ोदरा में प्राध्यापिका हैं?"

"बी. आर्किटेक्चर करने के बाद मैं वहीं पर प्राध्यापिका बन गई. शादी के बाद मुझे कलकत्ता में रहना पड़ा. पर मैं वहां कुछ नहीं कर सकी, क्योंकि वहां उन दिनों

नक्सलवादियों का बहुत आतंक था. फिर बिहार में कुछ समय तक समाज सेवा की, कई सालों तक दिल्ली में एक प्राइवेट फर्म में काम किया. उसी फर्म के द्वारा मैं ने डेरी प्रोजेक्ट, दफ्तरों, मकानों व होटलों के डिजाइन तैयार किए. पति जब रेलवे विद्युतीकरण परियोजना के प्रबंधक हो कर बड़ोदरा आए, तो मैं भी यहां आ गई. एक वर्ष से यहीं विश्वविद्यालय में काम कर रही हूं. पति के बारबार तबादले के कारण एक ही स्थान पर जम नहीं पाई."

"यह क्षेत्र क्या महिलाओं की क्षमताओं के अनुरूप है?"

"सुंदरसुंदर कलात्मक भवनों का निर्माण सुंदर परिकल्पनाओं की मांग करता है. मेरे खयाल से नारी में कल्पनाशक्ति पुरुषों से अधिक होती है, इसलिए वह पुरुष से अधिक कलात्मक व सुंदर भवनों का डिजाइन तैयार कर सकती है. किंतु, दूसरी तरफ जब बाहर जा कर सर्वेक्षण व प्रशासन की बात आती है तो पुरुष आगे निकल जाता है. सीमित क्षमता के कारण केवल अपने ही बूते पर कोई भी स्त्री इस क्षेत्र में स्वतंत्र कार्य नहीं कर सकती."

"आप के देखतेदेखते इस क्षेत्र में क्या परिवर्तन आया है?"

"पहले हम लोग कार्ड पेपर के ही माडल बनाते थे. किंतु अब तो हमारे छात्र प्लास्टिक, थर्मोकोल के माडल बना कर लाते हैं. इधर कुछ वर्षों से लोग वास्तुशिल्प में रुचि दिखाने लगे हैं. बंगाल में लोग अभी इस के प्रति उतने आकर्षित नहीं हैं, जितने पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित बंबई, बड़ोदरा व अहमदाबाद के लोग हैं."

"आप के जीवन की कोई अविस्मरणीय घटना है?"

"मैं उस चांदनी रात को कभी नहीं भूल पाऊंगी, जिस में मैं ने ताजमहल की खूबसूरती को देखा था. वह हमारा एक अध्ययन दौरा था. हमारे प्रोफेसर उन दिनों ताज के वास्तुशिल्प पर शोध कर रहे थे. उन्होंने इतनी बारीकी से ताज का वर्णन किया था कि मैं ताज की सुंदरता आज भी नहीं भूल पाई हूं."

"क्या आप अपने जीवन के उतार-चढ़ाव से प्राप्त अनुभवों को किसी योजना का रूप देना चाहती हैं?"

"सोच तो रही हूं कि अपने अनुभवों का फायदा निजी रूप से स्वतंत्र कार्य (प्रैक्टिस) कर के उठाऊं."

एक निर्माणाधीन बहुमंजिली विंग इमारत की पहली मंजिल पर श्री सूर्यकांत पटेल की प्राइवेट फर्म स्थापत्य केंद्र, बड़ोदरा का सुरुचिपूर्ण वातानुकूलित दफ्तर है. इसी दफ्तर के वास्तुशिल्प कक्ष में कुछ वास्तुशिल्पी व्यस्त हैं. कुछ डिजाइन बनाने में लगे हुए हैं, तो कुछ माडल बनाने में व्यस्त हैं. कमरे में मेजों पर कार्कशीट, हार्डबोर्ड, फाइल कवर्स, बालू व बुरादा से बनी इमारतों के छोटेछोटे माडल रखे हुए हैं. श्रीमती पूनम कुलश्रेष्ठ कुछ समानांतर रेखाएं खींचने में व्यस्त हैं. वह किसी बड़े मकान का डिजाइन बना रही हैं.

उन से बातचीत स्वागत कक्ष में होती है. वह बताती हैं, "दो वास्तुशिल्पी लड़कियां मेरे बचपन की आदर्श थीं. वे सुंदर



पूनम कुलश्रेष्ठ : नवीं कक्षा से ही वास्तु-शिल्पी बनने का इरादा पक्का हो गया.



ज्योति परमार : कलात्मक रुचि के कारण वास्तुशिल्पी बन गई.

तो थी हीं, हमेशा सजीसंवरी भी रहती थीं. अपनी कंपनी के काम से हवाई जहाज में ही सफर करती थीं. उन में से एक की शादी एक संसद सदस्य के लड़के के साथ हो गई. बस उन को देख कर मैं भी इतनी प्रभावित हुई कि सोच लिया, बनूंगी तो वास्तुशिल्पी ही. नवीं कक्षा से तो वास्तुशिल्पी बनने का इरादा बिलकुल पक्का हो गया. इस के लिए मैं ने अध्ययन भी बहुत किया."

शायद इसी लगन के कारण पूनमजी ने चंडीगढ़ से बी. आर्किटेक्चर में स्वर्णपदक प्राप्त किया.

"लड़की होने के कारण पढ़ते समय कभी कोई समस्या सामने आई?"

"कुछ समस्याओं का सामना तो करना ही पड़ा, जैसे कार्यशाला में आरी चलाने में और खराद (डाई तैयार करने वाली मशीन) पर काम करने में मुश्किल होती ही थी. साल में तीन हफ्ते बाहर दौरे पर भी जाना पड़ता था. दौरे पर अकसर लड़केलड़कियों में लड़ाई हो जाती थी."

"अब कोई समस्या?"

"एक तो मेरी बिलकुल निजी समस्या है. पति रेलवे में इंजीनियर हैं. इसलिए उन का तबादला होता रहता है. इस से मेरा कोई स्थायी ठिकाना नहीं है. खैर, अभी तो हम दोनों के जीवन की यह शुरुआत ही है."

"क्या सरकारी महिला कर्मचारी और निजी फर्म में काम करने वाली महिलाओं के काम में कुछ अंतर होता है?"

"सरकारी कर्मचारियों को एक से कामों की एकरसता उबाती है, जब कि निजी कंपनियों में तरहतरह के काम करने पड़ते हैं. इस से नया काम सीखने को मिलता है. वातावरण भी अधिक अच्छा होता है, क्योंकि जिस वास्तुशिल्पी की फर्म होती है वह तो पैसे वाला होता ही है व उस के ग्राहक भी पैसे वाले ही होंगे. निजी फर्म में तरहतरह के काम कर के कल्पनाशक्ति का अच्छा विकास होता है. कभीकभी जब हमारे ग्राहक नई साजसज्जा व नए रंग संयोजनों की मांग करते हैं तो महिला होने के कारण अपनी कल्पनाओं से किसी घर को सुसज्जित करने में बहुत मजा आता है."

इसी दफ्तर की वास्तुशिल्पी कुमारी ज्योति परमार के विचार अपने इस जीवन के विषय में कुछ निश्चित नहीं थे. वह डाक्टर बनना चाहती थीं, लेकिन अपनी कलात्मक रुचि के कारण बन गई वास्तुशिल्पी.

"क्या यह क्षेत्र महिलाओं के लिए उपयुक्त है?"

"बिलकुल उपयुक्त है, बशर्ते कि वह शारीरिक रूप से स्वस्थ हो. मेरे साथ तो पढ़ाई के समय से ही समस्या है. पीठ में 'लुंबर स्पानडायलायसिस' होने के कारण कुछ परेशानी उठानी पड़ी. सिमेस्टर पाठ्यक्रम होने के कारण बराबर पढ़ना होता था. एक बार तो सोचा कि पढ़ाई बीच में ही छोड़ दूं. लेकिन फिर हिम्मत कर के बी. आर्किटेक्चर कर ही डाला. पहले वर्ष तो अपने सीनियर विद्यार्थियों की रैगिंग का सामना जरूर करना पड़ा, पर बाद में तो किसी ने तंग नहीं किया."

"सुंदर इमारतों का डिजाइन बना कर आप को कैसा लगता है?"

"अपनी कल्पना को किसी इमारत के रूप में सजीव पा कर मुझे कितना आंतरिक संतोष मिलता है, मैं बता नहीं सकती."

आधुनिक विचारों वाली कुमारी भारती शाह भी इसी फर्म में वास्तुशिल्पी हैं. उन की शिकायत है, "प्राइवेट फर्म में काम करने में सीखने को तो बहुत कुछ मिलता है, लेकिन तनख्वाह कुछ नहीं मिलती, विशेष रूप में बड़ोदरा में. अन्य प्रदेशों में स्थिति बेहतर है. कभीकभी रात के आठ बजे तक भी काम करना होता है."

"घर वाले आपत्ति नहीं करते?"

"नहीं, मेरे परिवार वाले स्वतंत्र विचारों के हैं, इसलिए कोई आपत्ति नहीं करता. मेरे दो भाई इंजीनियर हैं. उन्होंने ही मुझे राय दी थी कि जब मेरी कला व गणित अच्छे हैं तो क्यों न मैं वास्तुशिल्पी बनूं."

"क्या यह काम स्त्रियों के लिए रुचिकर है?"

"देखिए, यह तो हर स्त्री की अपनी रुचि पर निर्भर है."

"आप यहां चार वर्ष से काम कर रही हैं. कभी भवन के निर्माणस्थल पर भी जाना होता होगा. ऐसे में आप के सामने कौन सी समस्याएं आईं?"

"निर्माणस्थल पर जा कर कार्य देखने के लिए मैं इंदौर वगैरह गई हूं. वहां मजदूरों से निबटना एक बड़ी समस्या होती है. कुछ ग्राहकों को स्त्री होने के कारण हम पर पूरा विश्वास नहीं हो पाता. कुछ तो स्वयं ही हम से बात करते समय हीनभावना से ग्रस्त रहते हैं, हालांकि मुझे हमेशा अच्छे ग्राहक मिले. बाहर जा कर होटलों में रहना व पुरुष वास्तुशिल्पी के साथ ठहरना भी, कभीकभी उलझन पैदा करता है."

"आप की भविष्य के लिए क्या योजना है?"

"शादी के बाद का जीवन तो पति पर निर्भर करता है. यदि दोनों ही सारेसारे दिन बाहर रहें, तो घर कैसे संभलेगा? हो सकता है तब घर पर रह कर ही काम करूं."

श्रीमती देवयानी त्रिवेदी अपने पति के साथ स्वतंत्र कार्य कर रही हैं. उन का कहना है, इस क्षेत्र में स्वतंत्र काम करना



भारती शाह : निर्माणस्थल पर कार्य देखने के लिए जाना और वहां मजदूरों से निबटना एक बहुत बड़ी समस्या होती है.



"भवन के निर्माणस्थल पर जाने में आप को परेशानी तो होती होगी?"

"निर्माणस्थल का काम, ग्राहक से फीस निश्चित करना, ठेकेदार को समझाना, मजदूरों से बातचीत– ये सब काम मेरे पति ही करते हैं. ड्राइंग व डिजाइन का काम अधिकतर इन से विचारविमर्श करने के

देवयानी त्रिवेदी : इस क्षेत्र में स्वतंत्र काम करना व अपनेआप को स्थापित करना बहुत कठिन है.

बाद मैं देखती हूं. कुछ अच्छी कंपनियों का जब काम मिलता है तब तो मैं अकेले भी निर्माणस्थल पर चली जाती हूं. वहां के शिक्षित लोग सम्मानपूर्वक बातचीत करते हैं."

"क्या आप के जीवन की कोई अविस्मरणीय घटना है?"

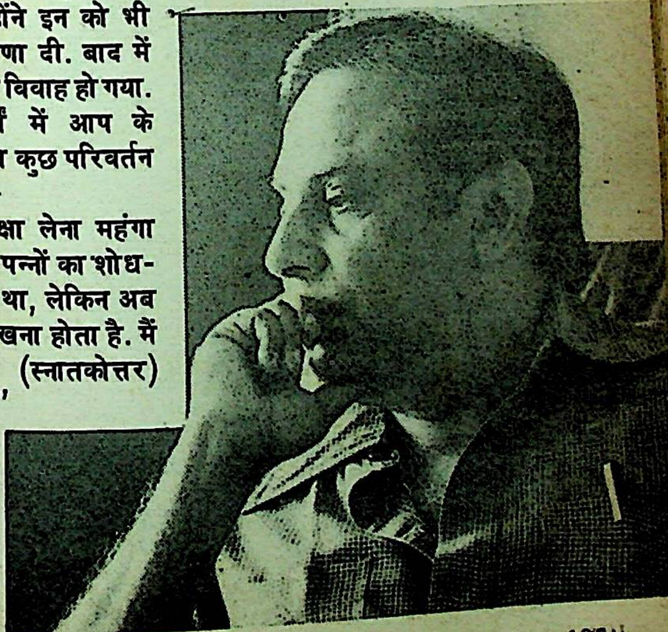
"मैं ने नयानया काम शुरू किया था. पिताजी के कहने पर मैं ने अपने घर का डिजाइन (परिकल्पना) तैयार किया. बरसात के दिन थे. ठेकेदार ने मेरे निर्देशों का ठीक से पालन नहीं किया, उस की गलती के

अपनेआप को स्थापित करना बहुत कठिन है. और क्षेत्रों के लोग तो आराम से अखबारों में विज्ञापन दे देते हैं या जगहजगह बोर्ड लगा देते हैं, लेकिन हम ऐसा नहीं करते, शुरूशुरू में हम लोगों को केवल अपने संपर्क से ही काम मिलता है. जब काम बढ़िया कर के देते हैं, तब कहीं जा कर नए संपर्क बनते हैं. मैं ने शादी से पहले भी दो वर्ष तक स्वतंत्र कार्य किया था, तब भी मेरे पति मंगेतर के रूप में मुझे सहयोग देते रहे थे."

श्रीमती देवयानी के भाई होस्टल में एक वास्तुशिल्पी लड़के के साथ एक कमरे में रहते थे. तभी से उन्होंने इन को भी वास्तुशिल्पी बनने की प्रेरणा दी. बाद में भाई के इन्हीं मित्र से इन का विवाह हो गया.

"इन चारपांच वर्षों में आप के देखतेदेखते इस क्षेत्र में क्या कुछ परिवर्तन आया है?"

"पहले इस की शिक्षा लेना महंगा पड़ता था. तीनचार हजार पन्नों का शोध-प्रबंध तैयार करना पड़ता था, लेकिन अब 15 पन्नों का ही निबंध लिखना होता है. मैं आज कल पोस्टग्रेजुएट (स्नातकोत्तर) डिप्लोमा भी कर रही हूं."



सूर्यकांत पटेल : बड़ोदरा के वास्तुशिल्पियों में जाना-पहचाना नाम.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण पड़ोसियों के घर की दीवार गिर गई. हालांकि गलती ठेकेदार की थी, दंड भी उसी ने दिया, किंतु तब मेरा आत्मविश्वास अंदर तक हिल गया था. लेकिन अब हमारे पास बहुत काम है व बढ़ता ही जा रहा है."

श्री सूर्यकांत पटेल बड़ोदरा के वास्तुशिल्पियों में बहुत जानापहचाना नाम है. उन्होंने अपने जीवन का आरंभ प्राध्यापक के रूप में किया, किंतु अब उन्होंने 'स्थापत्य केंद्र' व 'स्थापत्य कालिज' भी बना लिया है. बहुत से वास्तुशिल्पी संगठनों के वह सदस्य हैं. हर वर्ष विदेश यात्रा पर जाने के कारण देशविदेश की महिला वास्तुशिल्पियों से उन का अच्छाखासा संपर्क है. वह अपनी दो टूक राय देते हैं. "यह व्यवसाय पूरी तरह से पुरुषोचित व्यवसाय है. मुख्य रूप से दो बातों पर निर्भर करता है—पहला मेज पर बैठ कर कार्य यानी डिजाइनिंग व दूसरा कार्यस्थल पर जा कर निर्माणकार्य की देखभाल करना. पहला काम तो महिलाएं आसानी से कर लेती हैं, लेकिन दूसरे में अपनी क्षमताओं की सीमा के कारण पिछड़ जाती हैं. वैसे भी औद्योगिक क्षेत्रों में पुरुषों का ही प्रभुत्व है. इस क्षेत्र के लोग स्त्री का प्रभुत्व पसंद भी नहीं करते, यह बात भारत के लिए ही सच नहीं है, सभी देशों में ऐसा है."

"फिर आप ने अपने दफ्तर में महिलाओं को क्यों काम दे रखा है?"

"महिलाओं के प्रति मेरे मन में सहानुभूति है," वह धीमे से मुसकरा कर कहते हैं. "फिर मेरी दृष्टि में पुरुष व महिला एक से ही हैं. महिलाएं शादी होने के कारण व पुरुष बेहतर नौकरी पा जाने के कारण या अपना स्वतंत्र काम शुरू करने के कारण नौकरी छोड़ जाते हैं."

"आप की नजर में देशी या विदेशी महिला वास्तुशिल्पियों में क्या अंतर है?"

"कोई खास नहीं है. दोनों ही दोतीन बच्चे होने के बाद वास्तुशिल्प भूल जाती हैं. यदि कोई स्त्री चित्रकार, मूर्तिकार व डिजाइनर हो तो घर पर रह कर भी अपना काम कर सकती है, जब कि वास्तुशिल्प तभी घर पर रह कर किया जा सकता है, जब कि दूसरे व्यक्ति भी सहायक हों. अमरीका तक में भी पुरुष की मरजी न हो तो पत्नी बाहर काम नहीं कर सकती. यह एक अमरीकी महिला ने ही मुझ से कहा था. मैं तो कहता हूं कि महिलाओं को इस क्षेत्र में शिक्षित करना सरकारी पैसे का एक तरह से अपव्यय ही है. कुछ ही बुद्धिमान व मेहनती महिलाएं अपना कैरियर बना पाती हैं."

"क्या महिला वास्तुशिल्पी घर में रह कर सुखी रह पाती है?"

"यही तो दुख है. मेरे ही दफ्तर की कई लड़कियां शादी के बाद काम छोड़ कर चली गईं. बाद में मेरे पास आईं. न तो उन की परिस्थितियां उन्हें बाहर काम करने दे पाती हैं और न ही उन्हें घर मानसिक संतोष दे पाता है. वे विचित्र ऊहापोह की स्थिति में कुंठग्रस्त हो कर जीती हैं. इस से तो मैं विदेशी स्त्रियों से अधिक प्रभावित हूं. यदि उन्होंने अपना जीवन छोड़ दिया तो छोड़ दिया." ●

बच्चों के मुख से



हमारे एक परिचित अपने छः वर्षीय बेटे के साथ किसी रिश्तेदार के घर गए. सुबह उन से पूछा गया, "आप नाश्ते में परांठे लेंगे या कुछ और?"

वह अपनी शान दिखाते हुए बोले, "भई, चपातीपरांठे तो हम कम ही लेते हैं, ज्यादातर फल या आमलेट ही लेते हैं."

इस पर उन का बेटा तपाक से बोला, "पिताजी, घर में तो आप सुबह हर रोज मां से बासी रोटी गरम करवा कर खाते हैं." उन सज्जन ने दोबारा नाश्ते की मांग नहीं की.

— राकेश गोयल

*

एक बार मैं अपने पुत्र के स्कूल में उस की अध्यापिका से मिलने गई. उस समय ड्राइंग का पीरियड चल रहा था. उन्होंने बच्चों से पानी में तैरती हुई मछली बनाने के लिए कहा. सभी बच्चे मछली बना कर उस में रंग भर रहे थे.

अचानक हम ने देखा, एक बच्चा पानी में नीचे की जगह काला रंग भर रहा था. अध्यापिका ने उस को डांटते हुए कहा, "तुम्हें यह नहीं पता कि पानी का रंग नीला होता है?"

इस पर बच्चे ने कहा, "दीदी, यह तो गंदी नाली का पानी है."

— इंदू व निशा

*

मेरे डाक्टर भाई एक दिन किसी मरीज की इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम की रिपोर्ट देख रहे थे. इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम ट्रेसिंग कागज की एक काफी लंबी पट्टी पर होता है. मेरे भाई के पास ही मेरा पांच वर्षीय भतीजा और चार वर्षीया भतीजी भी खड़ी थी.

भाई के उस रील को देखने पर मेरे भतीजे ने उन से पूछा, "यह आप क्या देख रहे हैं?"

उस को समझाने के लिए वह बोले, "यह एक मरीज के दिल का हाल है."

मेरे भाई के यह कहने पर मेरी भतीजी छूटते ही बोली, "ओह, कितना लंबा है इस मरीज के दिल का हाल."

—सविता रायजादे

*

मेरा छः वर्षीय भाई अपने दोस्त के साथ पतंग उड़ा रहा था, परंतु उसे पतंग उड़ानी नहीं आती थी. उस का दोस्त राजू बोला, "यार, तुम बिलकुल कच्चे हो." इस पर मेरे भाई ने कहा, "ठीक है, तुम पक्के हो, परंतु जब तक मैं पकूंगा तब तक तुम सड़गल जाओगे."

—सुलोचना चोपड़ा

*

हमेशा की तरह मेरी लड़की अपनी पहली कक्षा का परीक्षा परिणाम लाई, जिस में वह तृतीय आई थी. इस से पहले तिमाही परीक्षा में वह प्रथम व छमाई में द्वितीय आई थी.

इस पर मैं ने कहा, "वाह, बेटे, तुम तो बहुत तरक्की कर रही हो."

उस ने समझा शायद मैं उस की तारीफ कर रही हूं. इस पर वह झट से बोली, "मां, पहले मैं प्रथम, फिर द्वितीय, अब तृतीय आई हूं. इस बार मैं मेहनत करूंगी तो चतुर्थ आऊंगी."

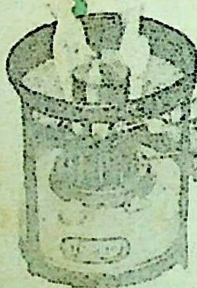
—पुष्पा भगवान

(सर्वश्रेष्ठ) •

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 30 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 60 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

लड़कों को घरेलू कामों की शिक्षा क्यों न दी जाए?





लेख • विभागीय लेखक •

पड़ोस की शकुंतला मौसी का लड़का संजय जिस स्कूल में पढ़ता है, वहां लड़कों के लिए भी छठी से ले कर आठवीं कक्षा तक गृह विज्ञान की शिक्षा अनिवार्य है. छठी कक्षा में उसे चाय, काफी, नींबू पानी आदि विभिन्न पेय तैयार करने तथा उन्हें परोसने का तरीका सिखाया गया. कपड़ों में बटन टांकने और छोटीमोटी मरम्मत करना भी उन्हें सिखाया गया. अन्य स्कूलों में पढ़ने वाले उस के मित्रों तथा उस के चचेरे, ममेरे भाइयों ने उस का खूब मजाक उड़ाया.

एक बार शकुंतला मौसी बुरी तरह बीमार हो गईं. उठनेबैठने से भी लाचार. मौसी के घर में कोई अन्य लड़की या स्त्री तो थी नहीं जो उन का खयाल रख सकती. ऐसे आड़े समय में संजय की गृह विज्ञान की शिक्षा काम आई. वह चाय बनाने, उन की चादर बदलने तथा उन का तापमान लेने का काम लड़कियों जैसी कुशलता से कर लेता था. मौसी को देखने जो परिचित आते, उन का सत्कार भी वह चाय आदि बना कर करता था.

तीन साल तक गृह विज्ञान की शिक्षा पाने के बाद संजय थोड़ाबहुत खाना बनाना, कपड़ों की मरम्मत और धुलाई करना तथा बटन टांकना आदि सीख गया है. अब उसे अपने कामों के लिए मौसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता. कई बार अकेले होने पर वह अपने लिए थोड़ाबहुत खाना भी बना लेता है. मौसी को भी थोड़ा आराम मिल जाता है.

संजय को देखने के बाद मन में यह भावना जड़ पकड़ने लगती है कि क्यों न सभी लड़कों को गृह विज्ञान की शिक्षा अनिवार्य

रूप से दी जाए.

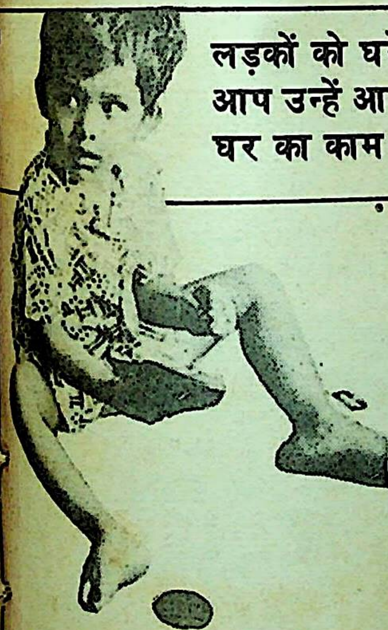
भारतीय समाज में लड़कों का अपने हाथ से पानी पीना भी बुरा समझा जाता है, अन्य कामों की तो बात ही दूसरी है. लड़के अपने जराजरा से कामों के लिए बहनों, भाभियों और मां पर निर्भर होते हैं. उन्हें न तो घर का कोई काम आता है और न ही उन्हें ये काम सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है. इन सब बातों के पीछे पहले बाहर से थकेहारे आए पुरुषों को आराम देने की भावना रही होगी. आगे चल कर उस ने कायदे और परंपरा का रूप धारण कर लिया होगा.

पुरुषों को रसोईघर में प्रवेश न करने देने की वजह एक बड़ी दिलचस्प मान्यता है. भारतीय परंपरा में माना जाता है कि पुरुषों का पांव रसोईघर में पड़ने से देवता रुष्ट हो जाते हैं. अत: कभी पुरुष उत्सुकतावश भी रसोई में चले जाते हैं तो घर की स्त्रियां तुरंत उन्हें वहां से भगाने लगती हैं

ऐसे वातावरण में पले लड़के अपने आप को श्रेष्ठ और घर के कामकाज को साधारण तथा हीन समझते हैं. दूसरे शहर में नौकरी लगने पर अपनी असमर्थता के कारण उन्हें तरहतरह के कष्ट उठाने पड़ते हैं. वे या तो होटल में खाना खा कर अपना स्वास्थ्य खराब कर लेते हैं या फिर कोई नौकर रख लेते हैं. घरेलू कामकाज से सर्वथा अनभिज्ञ होने के कारण वे पूरी तरह उस नौकर पर निर्भर हो जाते हैं. नौकर उन की अनभिज्ञता का अनुचित लाभ उठाते हैं.

एक लड़के की पहली नियुक्ति भोपाल में हुई. उसे खाना बनाना आदि काम बिलकुल नहीं आते थे. कुछ दिन तक तो वह कपड़े लांड्री में धुलवाता रहा और खाना होटल में खाता रहा. खर्च भी बहुत होता था और उसे पेट में थोड़ी तकलीफ भी हो गई. उस के बाद उस ने नौकर रखा. नौकर मनमाना सामान मंगाता था और उस में से आधा अपने घर ले जाता था. लड़का इन सब बातों से बेखबर था. छुट्टियों में जब वह घर आया तो उस की मां ने उसे महीने भर के सामान की मापतौल बताई और उसे खिचड़ी, दाल, चावल, परांठे आदि आसान चीजें बनानी सिखा दीं. उस ने जाते ही अपना खाना स्वयं बनाना शुरू कर दिया और उस की बचत पहले से दोगुनी हो गई.

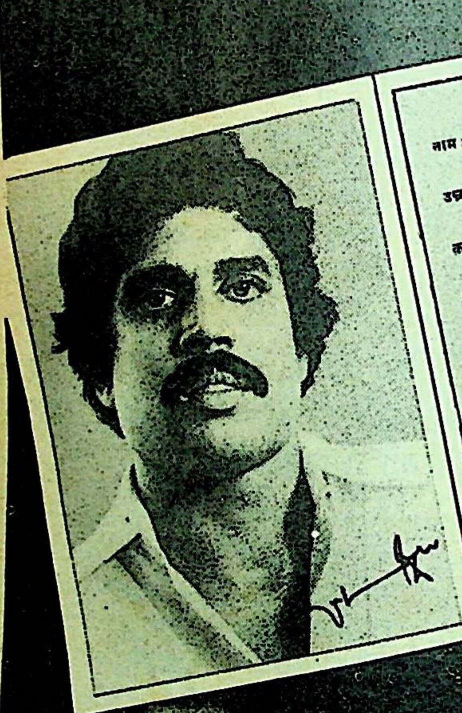
लड़कों को घरेलू कामों की शिक्षा दे कर जहां आप उन्हें आत्मनिर्भर बनाती हैं, वहीं आप का घर का काम भी कम हो जाता है.



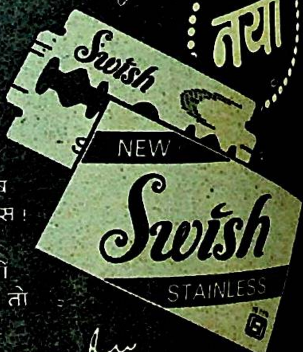
यदि उसे खाना बनाने का थोड़ाबहुत ज्ञान होता तथा घर के सामान की खरीद-फरोख्त उसे करने दी गई होती तो उस का इतना बुरा हाल नहीं हुआ होता.

बहुत बार घर में स्त्रियों की अनुपस्थिति में दूर से आए मेहमान भी बिना चायपानी के लौट जाते हैं, क्योंकि लड़कों को चाय तक बनानी नहीं आती. कभी घर की स्त्रियों को किसी कार्यवश कुछ दिनों के लिए बाहर जाना पड़ जाता है तो घर के पुरुषों के

जो स्विश से दाढ़ी बनाए उसकी टक्कर में कौन आए !



नाम : कपिल देव
उम्र : २३ साल
क़द : १८३ सें.मी. (६')
राष्ट्रीयता : भारतीय
खेल : क्रिकेट
दर्जा : भारत का सबसे तेज़ बोलर
ब्लेड : नया स्विश स्टेनलेस



नया स्विश स्टेनलॅस- विजेताओं का ब्लेड. ज़्यादा शेव... ज़्यादा साफ़ और ज़्यादा मुलायम शेव के लिए बनाया गया ब्लेड। साथ ही आपको एक और विशेष चीज़ मिलती है- आत्मविश्वास।

इस लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं जो कपिल देव का कहना है— 'मुझे तो कोई दूसरा ब्लेड पसंद ही नहीं'।

Vision/BB/822/H

सामने होटल में खाना खाने के अलावा कोई और रास्ता नहीं रह जाता. इस में समय व पैसे दोनों ही बरबाद होते हैं.

वैसे भी पुरुष आजकल सिलाई आदि को व्यवसाय के रूप में अपनाए हुए हैं और इस क्षेत्र में वे काफी कुशल भी हैं. बड़ेबड़े होटलों में कुक पुरुष ही होते हैं. व्यावसायिक दर्जी का काम तो प्रायः पुरुष ही करते हैं. जब पुरुष व्यवसाय के रूप में इन कलाओं को अपनाए हुए हैं तो घर में थोड़ाबहुत अपना काम अपनेआप करने में झिझक क्यों?

अब समय बदल गया है. स्त्रियां भी घर से बाहर निकल कर नौकरी करने लगी हैं. संयुक्त परिवार भी टूट गए हैं. अतः स्त्रियों के लिए घर का पूरा काम अकेले निबटाना बहुत कठिन हो गया है. नौकरचाकरों तथा ज्यादा सदस्यों के अभाव में उन्हें बाहर के काम जैसे खरीदारी, बैंक आदि के काम भी करने पड़ते हैं. ऐसे में अगर घर के लड़के और पुरुष अपने छोटेछोटे कामों के लिए उन पर निर्भर रहें तो उन की परेशानियां और बढ़ जाती हैं.

इन सब बातों को देखते हुए इस बात की जरूरत बहुत तेजी से महसूस होती है कि लड़कों को गृह विज्ञान की थोड़ीबहुत शिक्षा दी जाए. महात्मा गांधी भी इस बात का समर्थन करते थे. उन का कहना था कि लड़कों को चाय बनाना, आटा गूंधना, कपड़ों की थोड़ीबहुत मरम्मत करना आदि काम आने चाहिए.

ऐसी शिक्षा प्राप्त करने के बाद लड़कों को अपने छोटेमोटे कामों के लिए दूसरों का मुंह नहीं देखना पड़ता. कभी अकेले रहने की स्थिति आ जाने पर उन्हें होटल और लांड्री के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं पड़ती.

तेजी से बदलते समय का यह तकाजा है कि पुरानी रूढियों और मान्यताओं को तोड़ा जाए और लड़कों को घरेलू काम थोड़ेबहुत सिखाए जाएं. इस के लिए उन्हें गृह विज्ञान की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए. ●

जीवन की मुसकान



मेरे पड़ोस में एक लड़के की किडनी में कुछ खराबी होने के कारण उसे सेंट्रल हस्पताल, वेलूर ले जाया गया. फिर भी उस के स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा. डाक्टरों ने अखबार में विज्ञापन छपवाया— "कोई भी सज्जन अपनी एक किडनी दान देना चाहें तो उन्हें उस के बदले 20,000 रु. दिए जाएंगे."

कुछ दिनों बाद एक दंपती वहां आए. पति महोदय ने अपनी किडनी दान देने का फैसला किया, जिस से उस गरीब नौजवान की जान बच गई. उन सज्जन से पूछने पर पता चला कि उन्हें कैंसर है और आयु अधिक नहीं है, इसलिए उन्होंने अपनी किडनी दे दी, जिस से इस युवक की जान बच जाए. साथ ही उन्होंने उस गरीब नौजवान के आपरेशन का पूरा खर्चा दिया.

—संदीप घोष

*

मैं जयपुर के सवाई मानसिंह मेडिकल कालिज में पढ़ता हूं. कुछ दिन पहले हम तीनचार मित्र कालिज के होस्टल जा रहे थे कि रास्ते में एक बूढ़ा आदमी मिला. वह गिड़गिड़ाते हुए बोला, "मेरा बच्चा बहुत सख्त बीमार है. उसे खून की आवश्यकता है. मैं खून नहीं दे सकता हूं और हस्पताल वाले भी ख़ून नहीं दे रहे."

यह सुन कर मेरा एक मित्र उस के साथ चल दिया और उस के बच्चे के लिए एक यूनिट (280 ग्रा.) खून दे आया.

—महेश गोयल

*

पिछले दिनों मेरी बहन मुझ से मिलने पहली बार गाजियाबाद से आई हुई थी. तीसरेचौथे दिन ही उस की सोने की जंजीर जो लगभग डेढ़ तोले की थी, अचानक खो गई. उस का जोड़ खराब था. बहन कुछ कह तो न सकी, किंतु रोने को हो गई. हम ने सारा घर छान मारा, किंतु जंजीर न मिली.

दूसरे दिन हमारी महरी ने अचानक हमें वह जंजीर ला कर दी और कहा कि यह बाहर लान की बजरी में पड़ी थी.

—राजरानी राठौर

*

व्यापार और आफिस का काम करने के बाद मामाजी सिरोही से दिल्ली के लिए बस में बैठे. बस में काफी भीड़ थी. जब वे उतरे तो जल्दी में अपना ब्रीफकेस बस में भूल गए. जिस में कुछ रुपए, चेक बुक और खाली चेक साइन किए हुए तथा कुछ व्यापारिक कागज थे. जब मामाजी को भूल का एहसास हुआ तो बहुत देर हो चुकी थी.

घर से कुछ समय पश्चात मामाजी रिपोर्ट लिखवाने के लिए निकले. कुछ दूर ही गए होंगे कि एक व्यक्ति ने मामाजी से एक पता पूछा जो उन के घर का ही था. जब मामाजी ने पूछा कि क्यों, क्या बात है? तो उस ने बताया, "सुबह बस में किसी का यह ब्रीफकेस रह गया था. उस पर पता लिखा होने के कारण मैं यहां तक पहुंचा हूं. मैं बस का परिचालक हूं और इस ब्रीफकेस को उस के मालिक तक पहुंचाना मेरा कर्तव्य है."

—निर्मल महता (सर्वश्रेष्ठ)

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ अनुभव पर 60 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

शहर फूलों का

एक शहर
मिल गया
हमें भी फूलों का.

कांटों की पगडंडी
चल कर आए हैं,
मौसम ने
कितने ही
जाल बिछाए हैं.
लेकिन
दांव नहीं चल पाया भूलों का.

बांहों में बांहें
सांसों में
सांसों की,
साधें पूरी हुईं
अधूरी प्यासों की.
शुरू हुआ सिलसिला
सावनी झूलों का.

खुशबू में
जी लेंगे
खुशबू गाएंगे,
आंखों की झीलों में
कमल उगाएंगे.
लौट नहीं पाएगा
दर्द बबूलों का.

—हरीश निगम

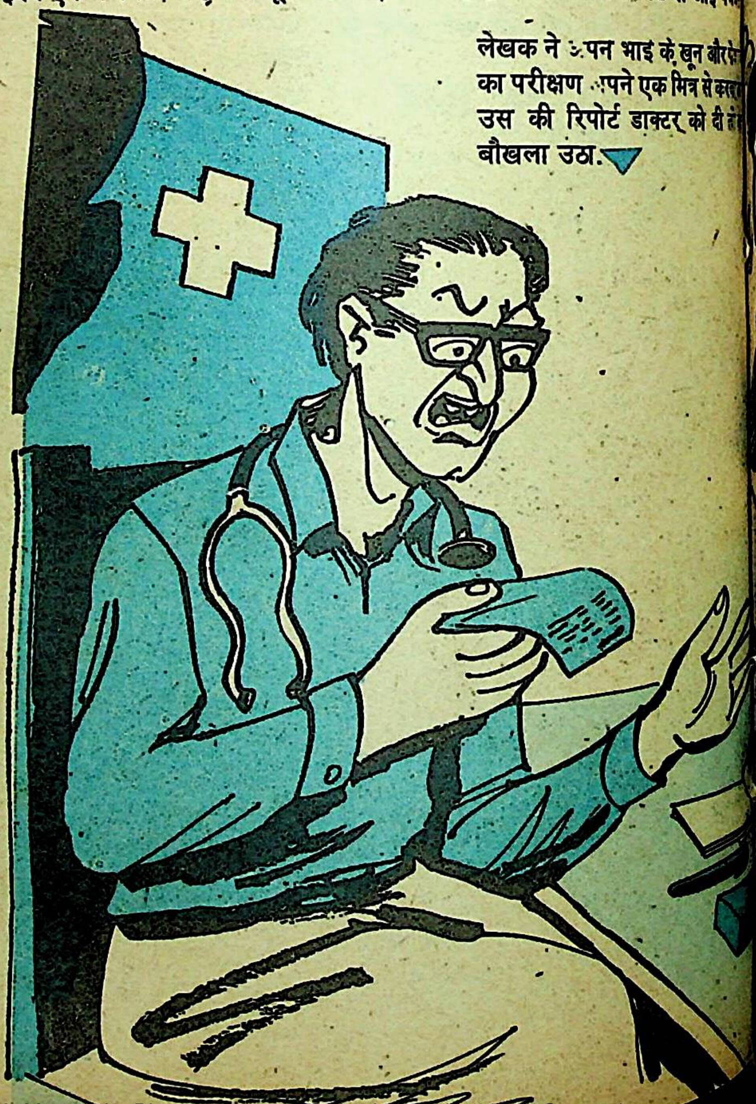


डाक्टर बनाम दलाल

लेख • चंद्रकुमार मिश्र

कुछ वर्ष पूर्व लंदन के 'दि टाइम्स' नामक अखबार में एक कार्टून छपा था. उस कार्टून में एक सिख टैक्सी ड्राइवर एक गर्भवती महिला से पूछ रहा था, "क्या आप को परिवार नियोजन केंद्र... है?" उसी अखबार में अन्यत्र छपे समा... के अनुसार लंदन के टैक्सी ड्राइवर... महाद्वीप तथा आयरलैंड से आई...

लेखक ने अपने भाई के खून और... का परीक्षण अपने एक मित्र से करा... उस की रिपोर्ट डाक्टर को दी... बौखला उठा.



डाक्टरी जैसा सम्मानित पेशा भी अब बदनाम हो चला है. कुछ डाक्टर अपनी कमीशन बनाने के लिए किस प्रकार मरीजों की जान से खेलते हैं?



नवयुवतियों को निजी परिवार नियोजन केंद्रों तक पहुंचाने का कार्य बखूबी करते थे. इस कार्य के लिए उन्हें युवतियों से तो किराया मिलता ही था, उन केंद्रों से कमीशन भी मिलता था. उन दिनों यूरोप के अनेक देशों में गर्भपात गैरकानूनी था, अतः धनाढ्य परिवारों की युवतियां लंदन जा कर गर्भपात करवाती थीं. इस कार्य में लगभग 1,000 पौंड का व्यय आता था और टैक्सी ड्राइवर को उस का 25 प्रतिशत कमीशन मिलता था. उन्हीं दिनों यह भी सुनने में आया था कि कुछ निजी हवाई कंपनियां गर्भपात की इच्छुक युवतियों को लंदन लाने ले जाने के अलावा उन के गर्भपात की व्यवस्था भी स्वयं करती थीं.

उस समय यह समाचार पढ़ कर बड़ा विचित्र लगा था, लेकिन यह जानते हुए कि पश्चिमी देशों में व्यापार की कोई सीमा नहीं है, बहुत आश्चर्य नहीं हुआ था. किंतु जब अपने ही देश में एक महिला मित्र के साथ ऐसी घटना घटी तो लगा, वास्तव में भारत भी प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है.

वह महिला मित्र एक स्त्रीरोग से पीड़ित थी, अतः वह कानपुर के एक मिशनरी हस्पताल में अपने को दिखलाने गई. जब वह डाक्टर की प्रतीक्षा में कक्ष के बाहर बैठी थी तो एक प्रौढ महिला ने अपनापन जताते हुए उस महिला से उस के रोग के बारे में पूछा. महिला ने अपना रोग बतलाया तो वह बोली, "बीबी, यह रोग तो बड़ा भीषण है और यह डाक्टर ठीक न कर पाएगी. यह तो कुछ जानती भी नहीं. अब मुझे ही देखो, मुझे भी यही हुआ था. महीनों इस डाक्टर ने दवाई की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ. आखिर में दूसरे डाक्टर से इलाज कराना पड़ा."

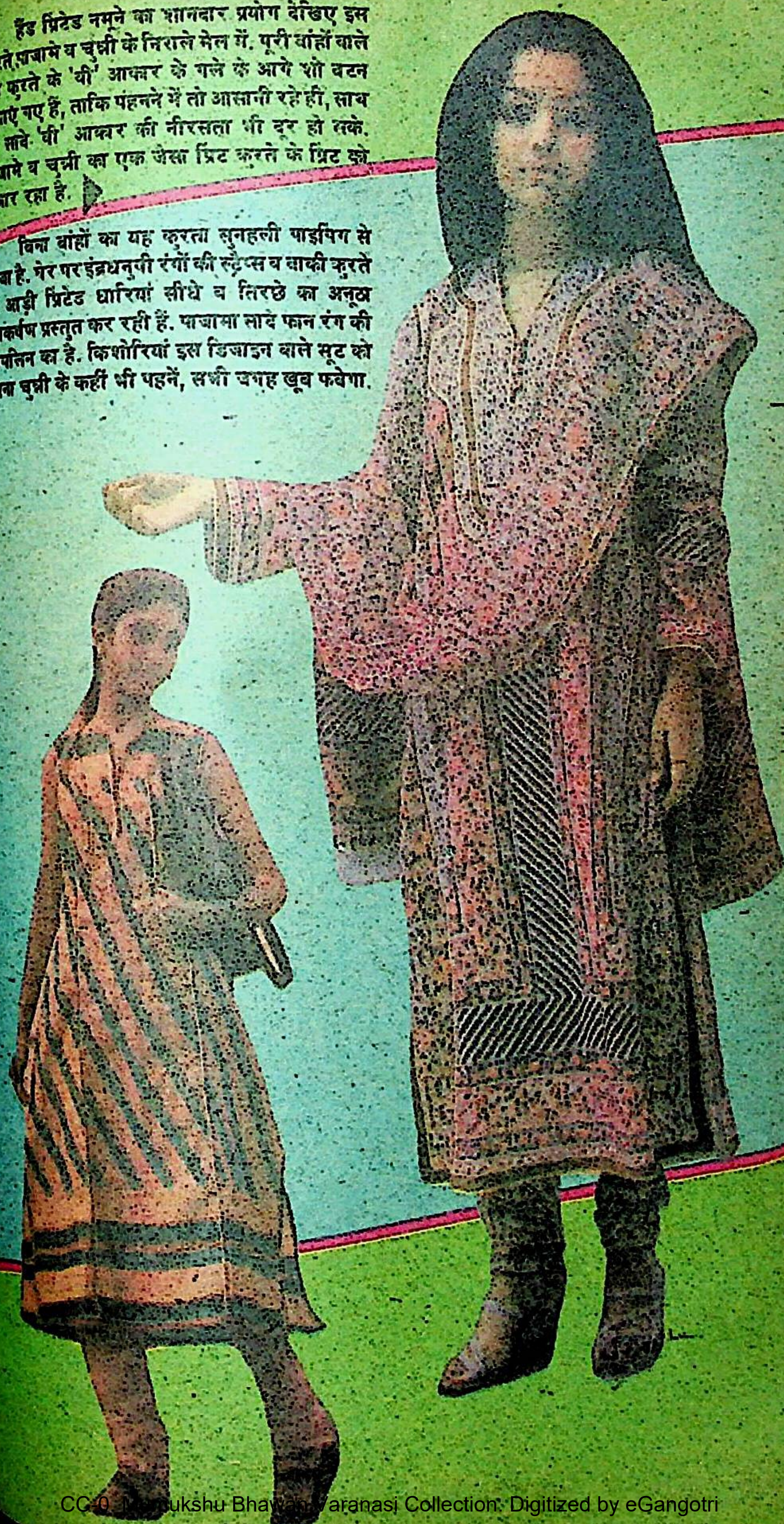
बात कुछ इतनी आत्मीयता से कही गई थी कि वह रोगी महिला पूछ बैठी, "कौन था वह डाक्टर?"

उस प्रौढा को मौका मिल गया. उस ने हस्पताल की दोतीन और बुराइयां कीं तथा

आगे पृष्ठ 120 पर



चूड़ीदार पाजामे कुरते
सुविधा भी फैशन भी
अंबेता
बांहों का गुलाबी
पाजामा सूट
रूपसी को देखिए,
मासूम लग रही है.
'वी' आकार
'वी' आकार के
सेंटीमीटर चौड़ी हलके
की प्रिंटेड पट्टी लगाई गई है.
इसी प्रकार कमर से
ऐ से कमर तक भी तीन
आकार में ही प्रिंटेड पट्टियां
गई हैं. घेर के बिलकुल नीचे एक ऐसी ही सीधी
और लगाई गई है.
दुपट्टे में प्रिंट की वही सीधीसीधी
जिनका प्रयोग कुरते में किया गया है.
सादा गुलाबी है. शायद यही वजह है कि
युवती विशेष रूप से चमक रहे हैं.



हैंड प्रिंटेड नमूने का शानदार प्रयोग देखिए इस कुरते, पजामे व चुन्नी के निराले मेल में. पूरी बांहों वाले इस कुरते के 'वी' आकार के गले के आगे शो बटन लगाए गए हैं, ताकि पहनने में तो आसानी रहे ही, साथ ही सादे 'वी' आकार की नीरसता भी दूर हो सके. पजामे व चुन्नी का एक जैसा प्रिंट कुरते के प्रिंट को उभार रहा है.

बिना बांहों का यह कुरता सुनहली पाइपिंग से सजा है. घेर पर इंद्रधनुषी रंगों की स्ट्रैप्स व बाकी कुरते में आड़ी प्रिंटेड धारियां सीधे व तिरछे का अनूठा आकर्षण प्रस्तुत कर रही हैं. पाजामा सादे फान रंग की पापलिन का है. किशोरियां इस डिजाइन वाले सूट को बिना चुन्नी के कहीं भी पहनें, सभी जगह खूब फबेगा.

पृष्ठ 117 से आगे

उस डाक्टर का नाम तथा पता बतला दिया. वह डाक्टर एक सरकारी हस्पताल का था तथा कानपुर में कुछ समय पूर्व ही स्थानांतरित हो कर आया था. महिला उस के बहकावे में आ गई तथा बाहर निकल कर एक रिक्शा में बैठ गई. प्रौढा भी साथ ही उस के साथ बाहर निकल आई.

रिक्शा वाला कुछ बेवकूफ था. उस ने रास्ते में शेखी बघारते हुए सब कुछ बतला दिया. उस का कहना था कि उस डाक्टर की फीस 20 रुपए है. डाक्टर उसे अपने पास से प्रति रोगी दो रुपए देता है और प्रौढा उस डाक्टर की दलाल है, उसे भी रुपए मिलते हैं. रिक्शा वाले ने अपने और कारनामे भी बतलाए. जैसे वह गर्भ गिराने वाले को भी जानता है तथा सुबह से वह तीन रोगियों को वहां पहुंचा चुका है.

यह सच है कि रिक्शा तथा टैक्सी वाले होटलों की दलाली करते हैं. आगरा के बारे में सुना गया है कि वहां इन कथित दलालों के कारण यात्रियों को सामान्य दर का लगभग डेढ़ गुना व्यय करना पड़ता है. कुछ रिक्शे तथा टैक्सी वाले अनैतिक व्यापार में भी लिप्त होते हैं, किंतु वे डाक्टरों की भी दलाली करते हैं, यह उस महिला के लिए एक नई जानकारी थी. किसी प्रकार वह महिला रिक्शा वाले को बेवकूफ बना कर वापस आ गई.

एक ऐसा ही अनुभव इन पंक्तियों के लेखक को भी हुआ. वह लखनऊ के किंग जार्ज मेडिकल कालिज के पास अपने एक डाक्टर मित्र के मकान के बारे में पूछ रहा था. जब उस ने एक रिक्शा वाले से उस का घर पूछा तो वह बोला, "उस डाक्टर ने तो अपना मकान बदल लिया है." फिर वह बड़े आत्मीय ढंग से बोला, "आप परेशान न हों, मैं आप को उस से बढ़िया डाक्टर के यहां पहुंचा दूंगा."

डाक्टर की दलाली की एक घटना लेखक के परिवार के साथ भी घटी. लेखक के बड़े भाई का आपरेशन कुछ मास पूर्व हुआ. आपरेशन के पश्चात उन्हें कुछ तकलीफ हो गई. इस तकलीफ का लाभ उठा कर एक वृद्ध महाशय भाई साहब के बेटे से बोले, "आप के पिता का आपरेशन सही नहीं हुआ है." यही बात इस ने उस लेखक से भी कही. जब लेखक ने उन से पूछा कि उन को कैसे मालूम तो उन्होंने बतलाया कि सर्जन उन के भाई का दामाद है और उस ने स्वयं उन्हें यह बतलाया है. लेखक फौरन ही उस सर्जन के कैबिन में पहुंचा और उन से इस बारे में पूछा तो उन का उत्तर था, "आप घबराइए नहीं, आप के भाई का आपरेशन सही हुआ है और वह बुड्ढा किसी सर्जन का दलाल है."

डाक्टरों के सब से बड़े दलाल स्वयं डाक्टर होते हैं. हर डाक्टर के कुछ विशेषज्ञ डाक्टर, पैथालाजिस्ट, एक्सरे विशेषज्ञ निश्चित होते हैं. सरकारी हस्पतालों का तो हाल और भी बुरा है. यदि डाक्टर के बतलाए पैथालाजिस्ट या एक्सरे केंद्र से आप ने अपने रोगी का परीक्षण नहीं करवाया तो डाक्टर न केवल उस परीक्षण को ठीक मानने से इनकार कर देगा, वरन आप को भलाबुरा भी कहेगा.

जब लेखक ने अपने भाई के खून और पेशाब का परीक्षण अपने ही एक मित्र डाक्टर से करवा कर उस की रिपोर्ट डाक्टर को दी तो वह रिपोर्ट को देख कर नाराज हो कर बोला, "मैं ने तो आप से अमुक पैथालाजिस्ट से जांच करवाने को कहा था. आप को फिर परीक्षण करवाने पड़ेंगे."

वास्तव में दलाली तो व्यापार का मूल आधार है, लेकिन व्यापार की दलाली निश्चित नियमों के अनुरूप होती है. लेखक को स्मरण है कि एक बार जब उस ने वाराणसी में एक दलाल मित्र के साथ जा कर कुछ साड़ियां खरीदीं तो उसे तो सही मूल्य पर साड़ियां मिलीं ही, उस के मित्र को भी दलाली मिली. लेकिन जहां तक किसी डाक्टर का सवाल है, वह आप के रोग के बारे में चाहे जितना भी अनभिज्ञ क्यों न हो, वह आप पर प्रयोग करता ही रहेगा और

दूसरे डाक्टर के पास नहीं जाने देगा और यह क्रिया तब तक चलेगी जब तक या तो रोगी मर नहीं जाता अथवा वह स्वयं ही भाग खड़ा नहीं होता. हर डाक्टर मरीज को केवल अपने विशेषज्ञ मित्र के पास भेजेगा और बारबार अपने ही एक्सरे विशेषज्ञ अथवा पैथालाजिस्ट से परीक्षण करवाएगा, ताकि वह उन से दलाली प्राप्त करता रहे.

नर्सिंग होम

नर्सिंग होम डाक्टरों की दलाली का एक नया नमूना हैं. हर छोटेबड़े शहर में अब पलीक्लीनिक या नर्सिंग होम के नाम पर डाक्टरी की दुकानें चलने लगी हैं. कुछ डाक्टर मिल कर या एक धनवान डाक्टर कुछ कमरे किराए पर ले कर अथवा बैंकों से ऋण प्राप्त कर नर्सिंग होम या पलीक्लीनिक खोल लेते हैं तथा उन में सामान्य चिकित्सा सुविधाएं, एक्सरे मशीन, पैथालाजी लैब इत्यादि की व्यवस्था कर देते हैं. कुछ पूर्णकालिक नर्सें तथा एकआध डाक्टर की भी व्यवस्था रखते हैं. विशेष उपचार शल्यचिकित्सा तथा प्लास्टर इत्यादि के लिए शहर के सरकारी हस्पताल या मेडिकल कालिज के डाक्टरों को बांध लेते हैं जिन्हें वे 'रिटेंशन फी' तो देते ही हैं, साथ ही प्रति विजिट 60 रुपए से 80 रुपए तक भी देते हैं. इसी प्रकार आपरेशन इत्यादि के लिए भी तीन गुना फीस देते हैं.

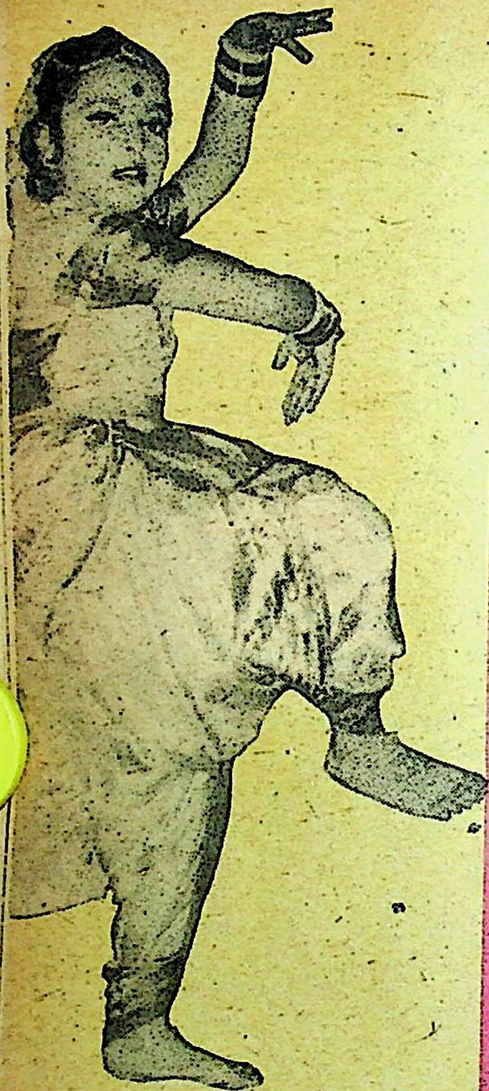
इन हस्पतालों में औषधि वे स्वयं देते हैं तथा मशहूर दवाओं के दाम भी बाजार से अधिक लेते हैं, क्योंकि उन के कथनानुसार उन की दवाएं 'शुद्ध' होती हैं. इन हस्पतालों का मुख्य कार्य रोगियों को बिस्तर तथा सामान्य चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करना मात्र होता है. यदि किसी रोगी की हालत उन के बस के बाहर हो जाती है तो वे तुरंत उसे बड़े सरकारी हस्पताल में भरती करवा देते हैं.

नर्सिंग होम का कुचक्र वास्तव में बड़ा भयानक है. रोगी के सामने सरकारी हस्पताल के नर्सिंग होम से संबद्ध डाक्टर ऐसा वातावरण तैयार कर देते हैं कि उसे डाक्टर की बात मानने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रह जाता है और वह नर्सिंग होम में सामान्य व्यय का तीन से चार गुना व्यय कर चिकित्सा पाता है. नर्सिंग होम की दलाली का कार्य सामान्य डाक्टर भी करते हैं. सरकारी हस्पतालों में व्याप्त लापरवाही तथा रूखा व्यवहार भी रोगियों को नर्सिंग होम की ओर धकेलता है. आश्चर्य की बात यह है कि वही सर्जन, जो सरकारी हस्पताल में प्राइवेट वार्ड के रोगियों का 300 रुपए में आपरेशन करता है, नर्सिंग होम में कम से कम एक हजार रुपए लेता है.

यही हाल मैटरनिटी होम का है. हां, इतना अवश्य है कि इन में रोगी की देखभाल सरकारी हस्पतालों की तुलना में अवश्य अच्छी होती है. फिर भी यदि आवश्यकता पड़ती है तो वे भी रोगियों को बड़े हस्पताल में भरती करवा देते हैं. कुछ मैटरनिटी होम गैरकानूनी गर्भपात कराने के लिए भी बदनाम हैं. तब भी मैटरनिटी होम नर्सिंग होम की तुलना में अच्छे हैं. ●

क्या आपका बच्चा किसी कार्यक्रम में भाग नहीं लेता है?

लेख • कुमुद सिंह



अकसर मातापिता को अपने बच्चों से यह कहते सुना जाता है, "देखो, सामने वाला सोनू हमेशा जमात में अव्वल आता है. पढ़ने में तो तेज है ही, खेलकूद में भी आगे रहता है. कितने ही इनाम जीत चुका है. और एक तुम हो—न पढ़ने में तेज हो और न ही खेलकूद में." क्या आप भी अपने बच्चों से उठतेबैठते; सोतेजागते इसी प्रकार की बातें कहा करती हैं? अगर आप कहती हैं तो आप को ऐसा कदापि नहीं कहना चाहिए, क्योंकि इस प्रकार की बातों से बच्चे के कोमल मन में निराशा की भावना घर कर जाती है और वह अपने को दूसरों से हीन समझने लगता है. वह अंतर्मुखी होता जाता है और बड़े हो कर ऐसे बच्चे चिड़चिड़े, गुस्सैल स्वभाव वाले बन जाते हैं. उन का पूरा विकास नहीं हो पाता.

यह बात सच है कि प्रत्येक मातापिता की यह हार्दिक इच्छा होती है कि उन का लाड़ला बच्चा जीवन के हर क्षेत्र में आगे रहे और इसी कारण जब उन के बच्चे स्कूल में पीछे रहते हैं तो उन्हें बराबर चिंता बनी रहती है और यही चिंता गुस्से के रूप में समयअसमय बच्चों पर प्रकट हुआ करती है. किंतु क्या कभी आप ने बच्चे के पीछे रहने का कारण जानने का प्रयास किया है? शायद नहीं. तो आइए, कुछ साधारण किंतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर गौर करें. शायद आप की इस समस्या का समाधान हो जाए और आप का बच्चा भी सही दिशा की ओर अग्रसर हो सके.

पहली बात तो यह कि सब बच्चे शारीरिक व मानसिक दृष्टि से एक जैसे नहीं होते. किसी का शारीरिक विकास बहुत ही अच्छा होता है और कोई बच्चा औसत से भी कमजोर होता है. इसी तरह किसी का मानसिक स्तर काफी ऊंचा होता है तो किसी को दस बार समझाने पर भी को

बात समझ में नहीं आती है. इस अंतर से बच्चे बच्चे में उस की कार्यकुशलता में बहुत अंतर आ जाता है. हो सकता है कि आप का बच्चा भी शारीरिक व मानसिक दृष्टि से अन्य बच्चों की अपेक्षा कमजोर हो या फिर कोई लंबी बीमारी पा गया हो और उसे अपना पिछला काम पूरा करने में काफी समय लग जाए. यह मानी हुई बात है कि जो बच्चा काफी समय तक बीमार रह चुका होता है, वह अन्य बच्चों से शारीरिक व मानसिक दृष्टि से कुछ समय के लिए पिछड़ जाता है. अतः अपने बच्चे की शारीरिक व मानसिक योग्यता का सही अनुमान अवश्य लगाएं और तभी उस से कुछ अपेक्षा करें.

आजकल नौकरी करने वाले मातापिता अपने बच्चों का नाम बहुत छोटी अवस्था में ही लिखा देते हैं. बच्चे को इतनी जल्दी स्कूल भेजना उस के शारीरिक व मानसिक दृष्टि से बहुत ही हानिकारक है. छोटा बच्चा कुछ समय के लिए अपनी इच्छाओं का राजा होता है. उसे इस प्रकार बंधन में बांधने से उस का स्वाभाविक विकास रुक जाता है. उसे इतनी कम उम्र से ही समय से खाना व समय से सोना पड़ता है. स्कूल में उसे अपने से कुछ बड़ी उम्र के बच्चों का सामना करना पड़ता है और इस स्थिति का वह मुकाबला करने में अपने को असमर्थ पाता है. वहां उस से प्यार से बोलने वाला कोई नहीं होता. यही कारण है कि बहुत से बच्चों को आगे चल कर स्कूल से चिढ़ हो जाती है और वे स्कूल से भागने लगते हैं.

कई बार बच्चों को ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिन का मातापिता सहज ही अनुमान नहीं लगा सकते. जैसे

कुछ साधारण, पर महत्वपूर्ण बातें जिन पर गौर करने से आप का बच्चा सही दिशा पा कर जीवन में आगे बढ़ सकेगा.



कभीकभी किसी बच्चे को आगे की सीट पर बैठने पर ब्लैकबोर्ड पर लिखा स्पष्ट दिखाई देता है या फिर आगे बैठने पर ही अध्यापक की आवाज स्पष्ट सुनाई देती हैं. ऐसा होने के कई कारण हो सकते हैं. जन्मजात भी ऐसा हो सकता है या फिर लंबी बीमारी आदि के कारण भी ऐसी बात हो सकती है. बच्चा अगर ऐसी बात अपने मातापिता या अध्यापक को बताता है तो बहुत से मातापिता और अध्यापक वास्तविकता जाने बिना ही कह देते हैं, "बहाना करता है, पढ़ने से जी चुराता है."

मातापिता और अध्यापक वास्तविकता को जानने का जरा भी प्रयास नहीं करते हैं. और जब तक जान पाते है तब तक बच्चा इन कमियों का गहरा शिकार हो चुका होता है और काफी समय गुजर चुका होता है.

ट्यूशन की आदत न डालें

कभीकभी बच्चों को घर में अपने स्कूल का दिया हुआ काम करने में कठिनाई होती है या उन्हें ऐसा काम करने को दिया जाता है जो उन की समझ से परे होता है. ऐसे में मातापिता का यह कर्त्तव्य है कि बच्चे जितनी देर स्कूल का काम करें उन के पास बैठें और उन की कठिनाइयों का समाधान करते जाएं. ऐसा करने से बच्चे में स्कूल के कार्यों के प्रति रुचि जाग्रत होगी. साथ ही वह यह भी समझेगा कि आप उस की पढ़ाई के प्रति पूरी तरह से सजग हैं. अतः जो मातापिता यह कह कर टाल देते हैं कि समय ही नहीं मिलता, वे अपने कर्तव्यों से विमुख होते हैं. छोटी उम्र से ही बच्चों को ट्यूशन की आदत डालने से आप का पैसा बरबाद होता है और फिर अच्छे और जिम्मेदार शिक्षक मिलते ही कहां हैं? पिता को अगर समय नहीं मिलता तो फिर मां को ही थोड़ा समय निकालना चाहिए.

बच्चों का स्कूल में किसी भी प्रकार की अतिरिक्त कार्यकुशलता का परिचय न देने का एक सब से बड़ा कारण बच्चों के घर का वातावरण है. जिन परिवारों में कई बच्चे होते हैं या जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होती, वहां बच्चे जीवन की दौड़ में साधारणतः पीछे ही रहते हैं. अधिक बच्चे होने से हर बच्चे पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता और इस का प्रभाव भी बच्चे की कार्यकुशलता पर पड़ता है.

कई परिवारों में मातापिता के आपसी संबंधों में दरार होती है, जिस के कारण वे आपस में हर समय लड़ाईझगड़ा किया करते हैं. ऐसे परिवार के बच्चे डरपोक, दब्बू और कायर होत्ते हैं और वे किसी भी कार्य को पूरी तत्परता से नहीं कर पाते. किंतु जिन परिवारों का वातावरण सुखद होता है, मातापिता के आपसी संबंध मधुर होते हैं, बच्चे कम होते हैं, उन घरों के बच्चे स्कूल के प्रत्येक कार्यक्रम में भाग लेते हैं और आगे चल कर जीवन की हर दौड़ में प्रथम आते हैं. अतः बच्चों के हित के लिए घर का वातावरण सुखद व शांत बनाना चाहिए.

किंतु इन समस्त सुविधाओं के बावजूद अगर आप का बच्चा पढ़ने में सामान्य है और वह स्कूल में किसी भी अतिरिक्त कार्यक्रम में भाग नहीं लेता या लेता है पर इनाम नहीं जीत पाता तो इस में चिंता करने की कोई बात नहीं है. इनाम कोई योग्यता का मानदंड नहीं है. मातापिता को अपने बच्चों से कभी भी आवश्यकता से अधिक आशा नहीं करनी चाहिए. जो मातापिता जरूरत से ज्यादा अपने बच्चों से आशा करते हैं, वे बहुत बड़ी भूल करते हैं और उन्हें इस का भयंकर परिणाम भोगना पड़ता है.

जरा सोचिए, कक्षा में प्रथम तो केवल एक ही बच्चा आएगा, सब तो आ नहीं सकते. हो सकता है, आप का बच्चा प्रथम न आता हो, पर उस का किसी एक विषय में जैसे गणित, विज्ञान, चित्रकला, संगीत आदि में अच्छा ज्ञान हो या उस की इन में से किसी एक में अधिक रुचि हो या फिर आप के बच्चे की पढ़ने में अधिक रुचि नहीं, पर खेलकूद में विशेष रुचि हो. आप अपने बच्चे की रुचि को जानने का प्रयास करें और फिर

जिधर उस का झुकाव हो उधर ही उसे मोड़े. हो सकता है, मनचाहा मार्ग पा कर आप का बच्चा उस विषय में विशेष योग्यता प्राप्त कर ले और बड़ा हो कर कुछ ऐसा बने, जिस के कारण आप का भी नाम हो जाए. इसी लिए बच्चों को कभी भी अपनी रुचि के विषय लेने पर जोर नहीं देना चाहिए.

बहुत से मातापिता अपने बच्चों को डाक्टर, इंजीनियर बनाने के चक्कर में जबरन अपनी रुचि के विषय दिला देते हैं. ऐसा करने से उन की पढ़ाई से रुचि हट जाती है और उन्हें स्कूल के किसी भी काम में दिलचस्पी नहीं रहती है. इसी लिए वे स्कूल में मार खाते हैं और उन में स्कूल से भागने की आदत पड़ जाती है.

मातापिता को चाहिए कि बच्चे के सामने जब भी स्कूल संबंधी कोई समस्या आए, उस का समाधान अवश्य करना चाहिए और इस के लिए उन्हें बच्चे की स्कूल संबंधी प्रत्येक गतिविधियां, उस के मित्रों, स्कूल और वहां के अध्यापकों के बारे में उस की राय जाननी चाहिए. कई अध्यापक बहुत कठोर होते हैं और डंडे के बल पर पढ़ाते हैं. ऐसे अध्यापकों से मातापिता को मिलते रहना चाहिए. स्कूल केवल पढ़ने का स्थान ही नहीं है, वह एक ऐसा स्थान है जहां बच्चे एकदूसरे के साथ मिल कर बैठना, सहयोग करना और अच्छी आदतें सीखते हैं, जो उन के जीवन को संचालित करने में सक्रिय भूमिका निभाती हैं.

अंत में सब से महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बच्चों के पढ़ाई को बोझ नहीं बनने देना चाहिए. उन्हें दिन भर पढ़ने के लिए मना करना चाहिए. कुछ समय खेलकूद के लिए भी निकलने को अवश्य कहिए. बच्चों के लिए खेलकूद भी उतना ही जरूरी है जितना शिक्षा ग्रहण करना. पढ़ाई में आप उन की रुचि जाग्रत करें. इस के लिए आप को उन का मार्गदर्शक बनना है. यही आप का उत्तरदायित्व है, जिस का आप को बच्चे के सुनहरे भविष्य के लिए निर्वाह करना है. ●



पासा पलट गया



एक बार मैं, मेरे भाई साहब व भाभीजी फिल्म देखने गए. हमारी आगे की एक खाली सीट पर भाभीजी ने अपना पैर रख दिया. उस के बराबर की सीट पर एक सज्जन बैठे हुए थे. अचानक कुछ ही देर बाद भाभी ने भाई साहब से कहा कि वह सामने वाली सीट पर बैठा व्यक्ति उन के पांव दबा रहा है और इतना कहते ही उन्होंने अपने पांव खींच लिए.

मुझे कुछ कहते देख भाई साहब ने मेरा हाथ पकड़ कर धीरे से बैठा दिया और इस के साथ ही अपना पांव उठा कर उसी सामने की सीट पर रख दिया. वह व्यक्ति फिर अपनी पुरानी क्रिया दोहराने लगा. थोड़ी देर बाद उन्होंने बदल कर दूसरा पांव भी उसी जगह पर रख दिया. वह व्यक्ति अपने कार्य में पूर्ववत लगा रहा.

कुछ देर बाद मध्यांतर होने पर हाल में प्रकाश हुआ. तभी भाई साहब ने उस व्यक्ति से अपने पांव की ओर इंगित करते हुए पूछा, "भाई साहब, अगर और पांव दबाने का विचार हो तो बताइए."

इतना कहना था कि वह व्यक्ति शर्म से पानीपानी हो गया. —प्रदीपकुमार

*

मेरा लड़का चौथी श्रेणी में पढ़ता है. कक्षा में वह हमेशा द्वितीय या तृतीय आता रहा है. फिर भी उस की अध्यापिका से जब भी मैं मिलती हूं तो वह कहती हैं, "तुम्हारा लड़का कक्षा में बहुत शरारत करता है, पढ़ता बिलकुल नहीं."

दरअसल वह अध्यापिका कक्षा में पढ़ाने की अपेक्षा ट्यूशन पर ज्यादा महत्त्व देती हैं. अगली बार जब मैं उन से मिली तो उन के कुछ कहने से पहले ही मैं ने कहा, "मेरा लड़का आप की ट्यूशन लगाना चाहता है क्योंकि उस का कहना है कि स्कूल के सब शरारती व बुद्धू लड़के आप से ट्यूशन लेते हैं."

इतना कहना था कि उन का चेहरा उतर गया. इस के बाद मुझे उन से मेरे बेटे की कोई शिकायत नहीं मिली.

—कांता संगारी

*

मेरा एक मित्र अपने कुछ संबंधियों के साथ लड़की देखने गया. लड़की उस के सब संबंधियों को पसंद आ गई. अब अंतिम फैसला लड़के को देना था.

कुछ समय बाद लड़का अपने दोस्तों के साथ लड़की देखने पहुंचा, दोस्तों के कहने पर उस ने अपना फैसला उस समय न दे कर कुछ दिन बाद देने को कहा.

उसी शाम को लड़के ने बुद्धि से काम ले कर परची उठा कर उस लड़की से विवाह करने का निर्णय लिया. लड़की वालों को यह सूचना देने मुझे ही जाना पड़ा. किंतु वहां पर मामला ही कुछ और नजर आया.

लड़की ने यह कह कर रिश्ता अस्वीकार कर दिया, "जो व्यक्ति जीवन का इतना महत्त्वपूर्ण फैसला स्वयं नहीं कर सका, जिस ने दोस्तों की राय पर ही चलना स्वीकार किया और जिस ने अपने परिवार वालों की बात भी नहीं मानी, वह अपने मित्रों के मुकाबले मेरा क्या सम्मान करेगा?"

— राजकुमार श्रीवास्तव (सर्वश्रेष्ठ)

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 15 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ अनुभव पर 65 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

माँ का दूध शिशु के लिये सर्वोत्तम है।

लेकिन जब बोतल का दूध पिलाना ही पड़े तो ज़रूरी है कि आप पूरी सावधानी बरतें।

इन ६ बातों का हमेशा ध्यान रखें।

१. दूध की बोतल, निपल और जो भी बर्तन साथ में इस्तेमाल होते हों उन्हें अच्छी तरह धो कर किटाणुरहित कर लें वरना दूध बहुत आसानी से दूषित हो सकता है।

२. पानी को दस मिनट तक उबालने के बाद उसे शरीर से थोड़े अधिक तापमान तक ठंडा होने दें, तब पाउडर मिलायें।

३. दूध को (डाक्टर की सलाह के बिना) अधिक पतला न बनायें वरना शिशु का पर्याप्त पोषण नहीं होगा। दूध बनाने के लिये डिब्बे पर दिये गये निर्देशन का पालन करें।

४. जब शिशु को माँ के दूध के साथ-साथ बोतल का दूध भी पिलाना पड़े तो भरोसा करलें कि दोनों तरह से-मिलकर शिशु को उपयुक्त मात्रा में दूध मिल रहा है।

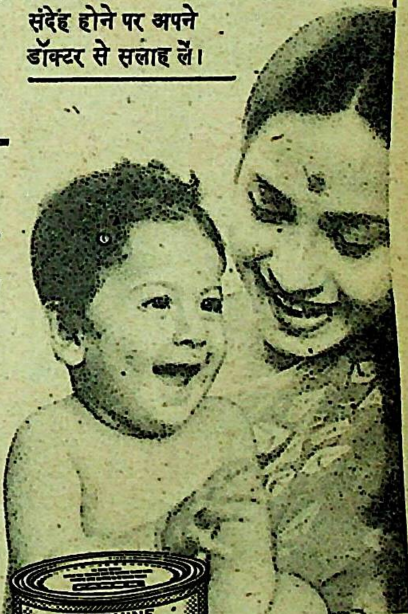
५. शिशु के लिये हर बार ताजा दूध बनायें। रखा हुआ दूध शिशु को न दें क्योंकि वह दूषित हो चुका होता है।

६. दूध के डिब्बे पर दिये गये सभी निर्देशों का पालन करें। किसी तरह का संदेह होने पर अपने डॉक्टर से सलाह लें।

विश्वसनीय शिशु दुग्ध-आहार, ग्लैक्सो सनशाइन

• ग्लैक्सो सनशाइन में प्रोटीन, फ़ैट, कार्बोहाइड्रेट्स, विटामिन, खनिज पदार्थ और आयरन की संतुलित मात्रा का आदर्श योग है। यह सफ़ाई से बनाया और पैक किया गया है और नाज़ुक शिशु के लिये भी अनुकूल रहता है।

कोई आश्चर्य नहीं कि वर्षों से ग्लैक्सो सनशाइन माताओं का विश्वासपात्र रहा है।



माताओं का विश्वसनीय

ग्लैक्सो





CASGLS-1-182 HIN

ननमुन - पंकज गोस्वामी











पाठकों की समस्याएं

मेरी 23 वर्षीया सुंदर पत्नी के बहुत आजाद ख्यालात हैं. विवाह से पूर्व प्रेमजाल में फंस कर दसवीं कक्षा में तीन बार फेल हो चुकी है. पर अफसोस की बात यह है कि अपनी हरकतों से अब भी बाज नहीं आती. दो बच्चे हैं. पत्नी से छुटकारा पाना चाहता हूं. क्या करूं?

आप की पत्नी शायद अपनी सुंदरता पर मोहर लगवाने की गरज से तथा आप को यह दिखाने के लिए कि उन के कई कद्रदान हैं, ऐसा बरताव करती है. यह उस की नादानी है. पत्नी को प्यार से व धमका कर समझाइए तथा जिन पुरुषों से उस की मित्रता है, उन्हें घर में मत आने दीजिए. किसी बड़ी महिला को घर में रख सकें तो अच्छा होगा. यदि स्थिति में सुधार न हो तो आप तलाक की मांग कर सकते हैं. मगर इस के लिए आप को यह सिद्ध करना होगा कि वह व्यभिचारिणी है.

मेरी उम्र 15 वर्ष की है. मैं क्रोधी स्वभाव की हूं और गुस्से में अपनी मां को कुछ भी बोल देती हूं, जिस के कारण वह मुझे पिताजी से पिटवाती हैं. मेरी दूसरी समस्या यह है कि मां मुझ पर यह इलजाम लगाती हैं कि जिस मास्टर से मैं पढ़ती हूं, उस से मेरा अनुचित संबंध है, पर यह बात बिलकुल गलत है. मेरा मरने को जी चाहता है.

आप की मां अपरिपक्व बुद्धि की स्त्री प्रतीत होती हैं. ऐसे में आप को अधिक समझदारी से काम लेना होगा. पहली बात तो यह कि आप उस मास्टर से पढ़ना बिलकुल बंद कर दें. अपने क्रोध पर काबू पाने का प्रयास करें व बेहतर होगा कि आप अपनी मां के साथ किसी तरह बहस में न उलझें. जहां तक हो सके, आप अपने को पढ़नेलिखने, खेलने आदि में व्यस्त रखें.

मेरे बड़े भाई की आयु 26 वर्ष है. उन के तीन लड़कियां हैं. आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण उन्होंने अपनी नसबंदी करवा ली थी. अब लड़का न होने से बहुत दुखी हैं. नसबंदी खुलवाने की सुविधा कहां है? इस में खतरा तो नहीं है?

नसबंदी खुलवाने की सुविधा बड़े हस्पतालों में होती है. इस आपरेशन में खतरा तो नहीं है, परंतु सफलता बहुत ही कम मिलती है. आप के भाई को समझदारी से काम लेना चाहिए. आज के युग की महंगाई में तीन लड़कियों का लालनपालन, शादीब्याह कोई आसान काम नहीं है. फिर क्या गारंटी है कि चौथी संतान लड़का ही होगा, लड़की नहीं? अगर लड़का भी हो गया तो वह क्या बड़ा हो कर उन के घर का बोझ उठाने में मदद करेगा? उन से कहिए कि नादानी न करें, प्रसन्नचित व संतोषी रहें.

मैं 24 वर्ष की सुंदर महिला हूं. मेरा छः वर्ष का बच्चा भी है. मेरे पति मुझ से बहुत प्यार करते हैं. एक बात मैं ने उन से छिपा कर रखी है जो मेरे मन को बारबार कचोटती है. वह यह कि पति के रिश्तेदार का एक लड़का हमारे घर आ कर रहा था. पता नहीं क्या बात हुई कि हम दोनों एकदूसरे की ओर खिंच गए और हमारा संबंध हो गया. वह कहीं और शादी करना नहीं चाहता और जहां से भी रिश्ता आता है, मना कर देता है. क्या पति को सब कुछ बतला दूं?

पति को सब कुछ बतलाने की आवश्यकता नहीं है. हां उस लड़के से संबंध एकदम तोड़ लीजिए. आप के समझाने से वह अपना विवाह करने को तैयार हो जाएगा. यदि आप ऐसा नहीं करेंगी तो आप का सर्वनाश हो जाएगा.

मैं 32 वर्ष का हूं. बैंक में नौकरी करता हूं. मेरी शादी को तीन वर्ष हो गए हैं. पिछले दो वर्षों से मेरी पत्नी ने मुझे छोड़ दिया है और अपने मायके में रहती है. इसलिए मैं बहुत उदास रहता हूं तथा नौकरी कर पाने में भी दिक्कत महसूस करता हूं पिछले आठ वर्षों से मनोरोग चिकित्सक का इलाज करवा रहा हूं. कुछ फायदा नहीं है. क्या करूं?

आप की पत्नी आप को छोड़ कर क्यों गई, इस का कारण जानने की कोशिश कीजिए. यदि वह आप के साथ रहना नहीं चाहती तो तलाक ले कर दूसरी शादी करने की बात भी सोच सकते हैं. शायद आप की दिमागी हालत बहुत अच्छी नहीं है. पहले किसी अन्य मनोरोग चिकित्सक को दिखला कर कुछ दिन और इलाज करवाएं.

मेरी आठ वर्ष की लड़की है. वैसे उस का खानपान, स्वास्थ्य सब ठीक है, परंतु उसे पसीना बहुत आता है तथा उस से बदबू भी आती है. बड़ी होने पर यह परेशानी और भी बढ़ जाएगी. क्या करें?

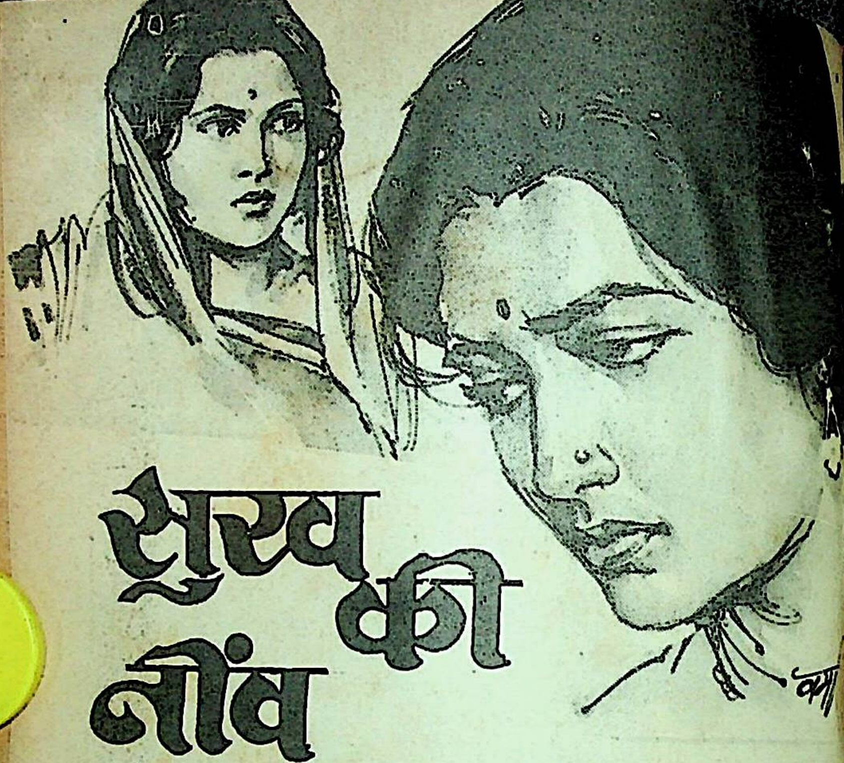
संभव है कि आप की लड़की के हारमोंस का संतुलन बिगड़ा हुआ हो. आप किसी अच्छे एंडोक्राइन स्पेशलिस्ट से उस का इलाज करवाइए.

मेरी आयु 23 वर्ष की है. तीन वर्ष पूर्व मेरा विवाह हुआ था. एक साल की बच्ची भी है. बच्ची होने के बाद से मेरी संभोग की इच्छा बिलकुल खत्म हो गई है. इसी कारण हम पतिपत्नी में अनबन रहती है. क्या मुझे इलाज की जरूरत है?

वैसे तो आप स्वयं समझदार हैं, अपने मन को समझाइए तथा पति के साथ बाहर घूमनेफिरने जाया कीजिए. किसी स्त्रीरोग विशेषज्ञ को दिखला लें कि सब ठीक है या नहीं. यदि वह आप को सलाह दें तो मैरिज काउंसलर या मनोरोग चिकित्सक को भी दिखा सकती हैं. कहीं ऐसा तो नहीं कि बच्ची के साथ आप बहुत व्यस्त रहती हों व थक जाती हों.

—कंचन ●

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जा सकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.



सुख की नींव

एक तो वैसे ही अप्रैल के महीने की बढ़ती तपन और ऊपर से बिजली के न आने के कारण शरीर के पसीने से नहा जाने से मन बुरी तरह घबरा रहा था, दूसरे मन अतीत में अपने घोड़े दौड़ाता और ज्यादा बेचैन हो रहा था.

इधरउधर बेचैनी से घूमती वह कभी बरामदे में जा कर बैठ जाती तो कभी किसी पत्रिका के पन्ने उलटनेपलटने लगती. पर उसे किसी भी तरह चैन नहीं मिल रहा था.

गृहस्थी के पचड़ों के रोज के एक जैसे ढर्रे से ऊब कर कुछ दिन दूसरे वातावरण में बिताने के लिए जहां हर साल गरमी की छुट्टियां आते ही वह 25-30 दिनों के लिए आगरा जाने की तैयारियों में लग जाती थी,वहां आज छोटे भाई सुनील के मिले इस छोटे से पत्र को पा कर न वह तैयार ही हुई और न ही उस के चेहरे की रंगत बदली. वह सहसा ही पुरानी बातों के जाल में उ[illegible] थी.

कहानी • पुष्पा अग्रवाल

उंह! एकाएक वह अपने म[illegible] समझाने लगी कि इन छोटीमोटी बा[illegible] तूल क्यों दिया जाए. बेकार अपने[illegible] अशांत करने से क्या फायदा? मेरा [illegible] उस घर में अधिकार है. सब से बड़ी [illegible] होने के नाते उस के मांबाप ने आज [illegible] सिर्फ उसे लाड़प्यार ही दिया, बल्कि [illegible] बात में उस का ही स्थान ऊंचा रहा. [illegible] भी बारे में सलाह लेनी होती तो शानू [illegible] पूछा जाता. छोटे भाईबहन भी हर [illegible] लिए शानू दीदी से पूछते और अगर [illegible] कोई झगड़ा होता तो उसी से अपना [illegible] करवाते.

तो फिर अब यह टकराहट क्यों? [illegible] का मन उस से पूछ रहा था कि क्यों [illegible] पिछले साल ऐसा महसूस हुआ जैसे उस [illegible] में उस के आधिपत्य की नींव हिल गई [illegible] पत्र उसे चार बजे मिला था. [illegible]

सुनील के पत्र ने 'शानू को अतीत की यादों में ला दिया. वह निर्णय नहीं कर पाई कि इस बार उसे क्या करना चाहिए, पर विनय ने ऐन वक्त पर उसे जो सलाह दी उस से वह चकित रह गई.

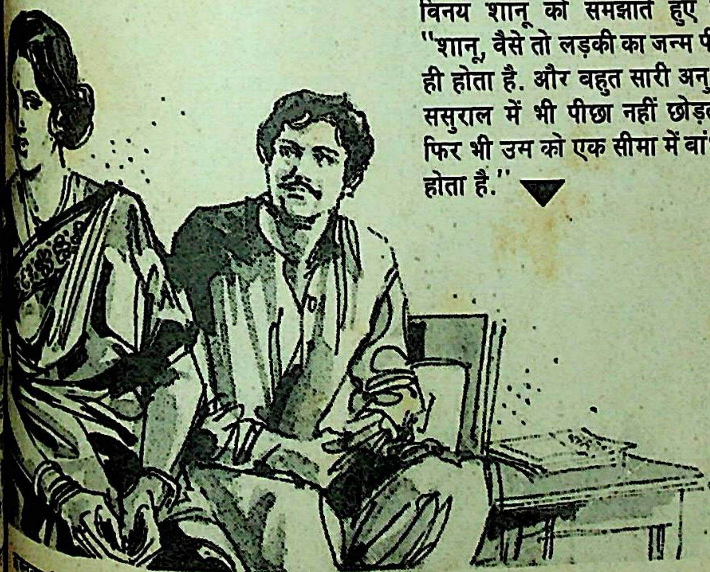


वह अपने मन को दुविधा में डाले इधर से उधर घूम रही थी. चीटू, नीटू पड़ोस में खेलने चले गए थे. वह अपने को दूसरी बातों में उलझाने की कोशिश करती, पर दो मिनट बाद ही उस का मन घूम फिर कर फिर उसी बात को सोचने लगता.

अतीत से बंधी डोरी की गांठों को अब वह धीरेधीरे सहलाने लगी. पिछले साल चीटू, नीटू के साथ जब वह आगरा गई थी तो दोतीन दिन बाद ही किसी काम से क्षेमा के कमरे में चली गई थी. वहां उस ने जगहजगह कपड़े, जूते बिखरे देखे थे. क्षेमा की इस आदत से उस का जी बड़ा घबराता था. हमेशा की तरह उस दिन भी उस ने क्षेमा को टोक दिया था, "क्षेमा, यह क्या, सारे कमरे में कपड़े ही कपड़े बिखेर रखे हैं? पता नहीं, ऐसी हालत में तुम कैसे चैन से रह लेती हो. मुझ से तो एक मिनट भी न रहा जाए."

हमेशा हंस कर टालने वाली क्षेमा यह सुन कर एकदम खिन्न सी हो गई थी. शानू को लगा था कि क्षेमा का मुंह एकदम बिगड़ गया है. फिर कुछ क्षण बाद वह रुखाई से

विनय शानू को समझाते हुए बोला, "शानू, वैसे तो लड़की का जन्म पीहर में ही होता है. और बहुत सारी अनुभूतियां ससुराल में भी पीछा नहीं छोड़तीं. पर फिर भी उस को एक सीमा में बांधना ही होता है."



बोली थी, "दीदी, अब जैसी आदत पड़ गई है वह इस गृहस्थी के पचड़े में क्या छूटेगी."

ऐसा रूखा जवाब सुन कर शानू एकदम सन्न रह गई थी. आज तक उस के पिताजी ने भी उसे कुछ नहीं कहा था. पर फिर कुछ सोच कर वह वहां से दूसरे कमरे में चली गई थी और अपने मन को शांत करने के लिए चुपचाप काफी समय तक उपन्यास में अपनी आंखें गड़ाए रही थी.

उस के मानसपटल पर कोई एक ही घटना नहीं थी. ऐसी अनेक घटनाएं उस के मन को मथे जा रही थीं. उस दिन की ही बात लीजिए, मंडी से आया सामान बरामदे में पड़ा था. जब दूसरे दिन भी उसे वहां से नहीं उठाया गया तो उस के मुंह से निकल ही गया था, "क्षेमा, ये दालें थैलों में ही पड़ी रहेंगी या इन को उठा कर ठीक तरह से संभालोगी भी? अरे, अगर तुम नहीं रख सकती थीं तो कम से कम नौकर को ही कह दिया होता. वह ही उठा कर ठिकाने रख देता."

बात को हरदम निगलने वाली क्षेमा उस दिन भी पलट कर बोली थी, "दीदी, इस घर के काम से मरने की तो फुरसत मिलती नहीं. अब ये थैले एक दिन नहीं उठ पाए तो क्या करूं?"

क्षेमा का यह उत्तर सुन कर शानू को बहुत ही बुरा लगा था. वह जानती थी कि एक दिन पहले जब वह सामान आया था, उसी दिन दोपहर को क्षेमा अपनी सहेली के संग दो घंटे गपशप लगाती रही थी. फिर भी काम का बोझ बता कर कैसे बात को टालना चाहा था.

उसे लगा था, क्षेमा ने यह बात सिर्फ यह जताने के लिए कही है कि ससुर तो पहले से रह ही रहे थे, अब शानू और उस के दोनों बच्चों के भी आ जाने से उस का काम बहुत बढ़ गया है.

वैसे शानू के पिताजी अपना सारा काम स्वयं ही करने की कोशिश करते थे. पर जब वह उस घर में अपने बेटे के पास रह रहे थे तो उन की देखभाल तो क्षेमा को ही करनी पड़ती थी.

एक दिन शानू के पिता को बुखार
था. सारे दिन बड़ी व्यस्तता रही
शाम को खाना खाते समय शानू पिता
पास ही बैठी थी. गेहूं का दलिया और
की दाल बनाई थी. खाने के बीच
धीरे से बोले थे, "मूंग की दाल थोड़ी
बनाई है. घुली नहीं. इस के खाने से
आंतों को तकलीफ होती है. दलिया
नमक थोड़ा ज्यादा पड़ गया है."

शानू बाद में क्षेमा को ये बातें
से नहीं चूकी थी. उस ने गुस्से के स्वर
दिया था, "कम से कम अपने ससुर का
ध्यान रखा करो."

बस, क्षेमा बोल पड़ी थी, "
ध्यान रखो, उतना ही सुनो. आज कौन
अपने साससुर का ध्यान रख रही है
चार साल तक तो सास की सेवा की
पिताजी का भी ध्यान मैं ही रख रही हूं
भी जराजरा सी बात पर उलाहने सुन
मिलते हैं."

क्षेमा की यह बात भी शानू को
तक तिलमिला गई थी. वह समझ गई
क्षेमा ने अपनी तीनों ननदों पर ही
किया है. उस की सब से बड़ी ननद
स्वयं है. वह गांव में रह रहे अपने सास
और जेठजेठानी के पास सिवा दीवाली
चार दिनों के अलावा कभी नहीं जाती
बीच वाली सुधा शादी होते ही अमरीका
स्वतंत्र वातावरण में जा बसी. कभी
साल में आती भी है तो महीना भर
सास के पास ही रहती है.

और सब से छोटी सरला के
साससुर ही नहीं हैं. चार जेठ और देवर
सो सब अलग रहते हैं.

पिछली बार क्षेमा के इन कटाक्ष
शब्दों के प्रहार से शानू मन ही मन टूट
गई थी. उसे लगता, जैसे अम्मां का
और पिताजी की दिन पर दिन टूटती
उसे भी अब इस घर में कमजोर बना रही
करीब डेढ़ साल पहले गुजरी अम्मां
की याद उसे अंदर तक झंझोड़ गई. आज
कभी क्षेमा ने अम्मां और उस के

...नहीं खोली थी. अम्मां की एक आवाज ...घर थरथर कांपने लगता था. पर ...उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे ...जी का सारा कारोबार सुनील के हाथ में ...तेही क्षेमा ने भी घर की कमान अपने हाथ ...ले ली है और अब उसे किसी का भी ...क्षेप पसंद नहीं है.

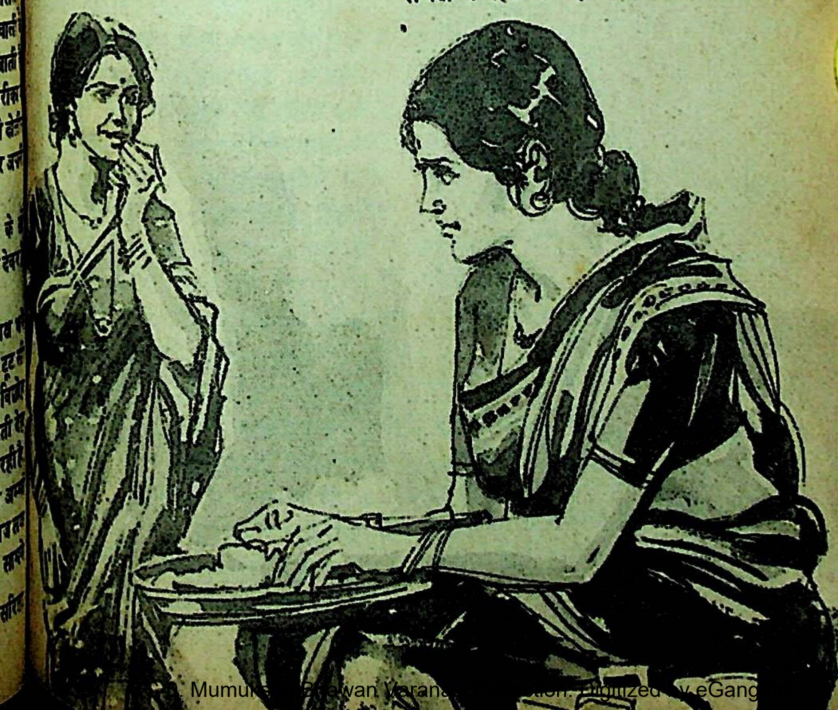
अम्मां के सामने साल भर के लिए ...चार, पापड़ बनवा कर वह अपने संग ले ...ती थी. पिछले साल भी उस ने जब क्षेमा ...अचार डालने को कहा तो उस समय तो ...कुछ नहीं बोली थी और बाजार से ...बियां मंगवा कर अचार डाल दिया था. पर ...तीन दिन बाद ही बातों ही बातों में बोल ...दी थी. "गृहस्थी के खर्चे इस महंगाई के जमाने में आदमी की कमर ही तोड़ देते हैं."

सुन कर वह एकदम हतप्रभ रह गई थी और उसे लगा था जैसे सामने रखा अचार का डब्बा उस का मुंह चिढ़ा रहा है. पर आंखों में आ रहे आंसुओं का वेग उस ने किसी तरह होंठ दबा कर रोक लिया था. जाहिर था, कहनेसुनने और बहस में पड़ने का कोई फायदा नहीं था.

बाद में घर आ कर उस ने विनय से इन छोटीमोटी बातों का जिक्र नहीं किया था. वह सोचती थी, अगर उस ने विनय से कुछ कहा तो कहीं वह उस की हंसी की पात्र न बन जाए. इस से उसे विनय की नजरों में मायके की छवि के बिगड़ने का भी डर था. वह खुद ही अकेले में कभीकभी अपनेआप ही मन के इस अंतर्द्वंद्व से जूझ लिया करती थी और धीरेधीरे इन बातों को भूलने का प्रयत्न करती.

पर अब जब सुनील ने अपने पत्र में उसे आने के लिए लिखा तो पिछले साल के जख्मों में जैसे फिर मवाद भर आया. उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे,

...दीदी के डर से राशन बीनने लगी कि ...शानू उसे देखते ही बोली, "अरे, ...तो खाना बनाने का समय हो रहा ...उठें. मैं यह सब सामान बीन कर ...दूंगी." ▼



क्या नहीं. एक तरफ पिताजी से मिलने की असीम इच्छा उसे सब बातें भुला कर वहां जाने को कहती, दूसरी तरफ परिवर्तित परिस्थितियां उसे कोई भी निश्चय करने में रुकावट डाल देतीं.

वह इन्हीं खयालों में खोई हुई थी कि विनय दफ्तर से आ गया और बच्चे भी बाहर खेल कर वापस आ गए. उन्होंने आते ही पिताजी को बताया कि आज मामाजी की चिट्ठी आई है. उन्होंने हम सब को बुलाया है. पर शानू खामोश थी. विनय की समझ में नहीं आया कि इस साल शानू आगरा जाने को उत्सुक क्यों नहीं है. उस के होंठों पर न ललाई फूट रही है और न ही मुसकराहट.

उस समय विनय कुछ नहीं बोला, पर खाना खाने के बाद एकांत के क्षणों में इस उदासी की वजह पूछ ही बैठा.

शानू तो चार घंटों से पिछले साल की घटनाओं को ले कर परेशान हो रही थी, जरा सी सहानुभूति पाते ही उस के भरे घाव फिर हरे हो उठे.

कुछ देर तक विनय चुप रहा. फिर बोला, "शानू, वैसे तो हर लड़की का जन्म पीहर में ही होता है. उस का उस घर से एक खास लगाव होता है. पर शुरू से परंपरा यही है कि शादी होते ही उसे अपना वह घर छोड़ देना पड़ता है और अपनेआप को पूरी तरह अपने नए घर से जोड़ना पड़ता है. अपना बचपन उसे धीरेधीरे भूल जाना पड़ता है.

"पर तुम्हारा अहं और बचपन का लाड़प्यार तुम्हें इस बात को भूलने नहीं देता. तुम अपने अधिकारों की भावना को मन में रख कर ही दुखी होती हो.

"मैं यह मानता हूं कि मांबाप के प्रति जो स्नेह होता है वह छूटता नहीं है. फिर भी उस को एक सीमा में तो बांधना ही पड़ता है. मेरी राय मानो तो इस बार तुम अपने को दूसरे रूप में ढालने का प्रयत्न करो. तुम्हें वहां जरूर जाना चाहिए, पर ज्यादा दिनों के लिए नहीं, बल्कि आठदस दिनों के लिए. इस से रोजमर्रा के जीवन में कुछ परिवर्तन भी आ जाएगा और तुम किसी पर भारी भी नहीं पड़ोगी. साथ ही यह ध्यान रखना कि [illegible] अपने अधिकारों को जताने के [illegible] अनुसार अपने कर्तव्यों को निभाना. [illegible] देखो, सुनील भैया और क्षेमा भाभी [illegible] आगेपीछे घूमते हैं कि नहीं."

फिर एक मिनट बाद मौका देख [illegible] विनय आगे बोला, "यदि तुम्हारा मन [illegible] तो इस बार दसपांच दिनों के लिए [illegible] भी चलें चलेंगे. मेरे मातापिता भी [illegible] जाएंगे, बच्चों को भी दादादादी का [illegible] मिल जाएगा."

साल भर बाद सुनील और क्षेमा [illegible] लिपटलिपट कर मिल रहे थे. [illegible] ओर का प्यार इस तरह उमड़ रहा [illegible] शानू को लगा कि मैल की पुरानी [illegible] बिलकुल धुल गई हैं और अब उस ने [illegible] मन दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह [illegible] आपसी संबंधों में फिर से मैल की [illegible] नहीं चढ़ने देगी.

शानू के पिता भी बड़े खुश नजर [illegible] रहे थे.

दूसरे दिन सुबह शानू नहा कर [illegible] आई तो देखा, क्षेमा का मुंह उतरा हुआ [illegible] और वह बड़ी घबराई हुई सी नौकर [illegible] कह रही है, "तुझे भी इसी समय [illegible] चाहिए थी? हरदम बहाने बनाता है."

दीनू लाचारी प्रकट कर रहा [illegible] "नहीं, बीबीजी, मैं बस एक बार अपनी [illegible] को देख आऊं. कल ही समाचार मिला है [illegible] मां बहुत बीमार रहती हैं. परसों [illegible] वापस आ जाऊंगा."

क्षेमा के मुंह पर अनमनापन देख [illegible] शानू उसे तसल्ली बंधाते हुए बोली, "[illegible] दे, क्षेमा, घबरा मत. हम दो हैं. आपस [illegible] सब काम निबट जाएगा." उसे लगा, [illegible] शब्दों से क्षेमा के चेहरे पर संतोष [illegible] आया है.

दोनों ने मिल कर खाना बनाया. [illegible] बारबार मना कर रही थी और शानू [illegible] करतेकरते भी मदद कर रही थी. शानू [illegible]

मन में एक नया लुत्फ नजर आ रहा था. पिताजी के खाने का समय हुआ तो 'शानू बोली, "क्षेमा, तुम फुलके संको, मैं पिताजी को खाना खिला दूंगी."

दोतीन दिन बाद बाजार से राशन का सामान आ गया. दीनू कपड़े धो रहा था. क्षेमा इस डर से कि कहीं दीदी नाराज न हो जाए, सब सामान समेटने लगी. पर दो मिनट बाद ही जब शानू पिताजी के सिर की मालिश कर के आई तो देखते ही बोली, "अरे, तुम्हारा तो खाना बनाने का समय हो रहा है. तुम उठो, यह सब सामान मैं समेट कर रख दूंगी."

यह कह कर 'शानू ने क्षेमा के बहुत रोकने के बावजूद सब सामान उठा कर व्यवस्थित ढंग से रख दिया था. 'शानू ने देखा, क्षेमा की आंखें सजल हो उठीं हैं.

"दीदी, अब अंबियां अच्छी आने लगी हैं. आप के लिए अचार डाल दूं?" प्रफुल्ल मन से क्षेमा ने पूछा.

"नहींनहीं, क्षेमा, इस बार तो मैं स्वयं अचार डाल कर आई हूं. हमारे यहां जो सब्जी बेचने आता है, वह एक दिन अच्छी अंबियां लाया था, सो मैं ने खरीद कर अचार डाल लिया." सहज भाव से 'शानू ने जवाब दिया.

अपने आने के एक हफ्ते बाद ही 'शानू ने सुनील को अपने जाने की बात कह दी. पतिपत्नी दोनों चौंक उठे. क्षेमा ने कहा, "इतनी जल्दी क्या है, दीदी, थोड़े दिन और रुको न."

शानू को इस बार क्षेमा के मुंह से निकले शब्दों में अपनापन लग रहा था. वह बोली, "नहीं, क्षेमा, आजकल मेरी सासजी की तबीयत ठीक नहीं रहती है. 4 जून को तो वहां जाने के लिए गाड़ी में आरक्षण करा रखा है और आज 30 मई हो गई है."

दूसरे दिन जब 'शानू वापस लौट रही थी तो क्षेमा के दोनों बच्चे—चार वर्षीय अरविंद और नन्हा अतुल "बूआ...बूआ" कह कर उस से चिपट रहे थे. पिताजी, सुनील और क्षेमा की आंखें नम हो रही थीं. क्षेमा बारबार कह रही थी, "दीदी, बहुत ही कम दिनों के लिए आई हो. अब दशहरे की छुट्टियों में जरूर आना."

'शानू को लग रहा था, इस घर की दीवारों में अभी भी स्नेह रूपी फूल की वही महक फैल रही है, जिस का पौधा वर्षों पहले से रोपा गया था.

'शानू विनय और बच्चों सहित अंबाला भी गई.

विनय के मां और पिताजी बहुत ही खुश नजर आ रहे थे. कुछ दिन उन के पास रह कर 'शानू ने जेठानी के काम में हाथ बंटाया और सासससुर की सेवा की, जिस से खुश हो कर उन का मुंह 'शानू की तारीफ करते नहीं अघाता था.

बच्चों को भी खूब मजा आ रहा था. और सब से बड़ी खुशी उसे इस बात की थी कि विनय के चेहरे पर भी एक अपूर्व संतोष दिखाई देता था. ●

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए



और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं. जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. आ भी हजारों वर्ग मील भारतीय ... विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पूर्ति ... लिए बहुत बड़े पैमाने पर सार्व... सहयोग और सद्भाव की आवश्यकता होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, ... पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबद्ध नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार की सहायता स्वीकार करती है. यह केवल एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते पर निर्भर है. और वह हैं सरिता के पाठक. इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन से सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है.

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूंजी, सरकार का और देशी व विदेशी ...

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

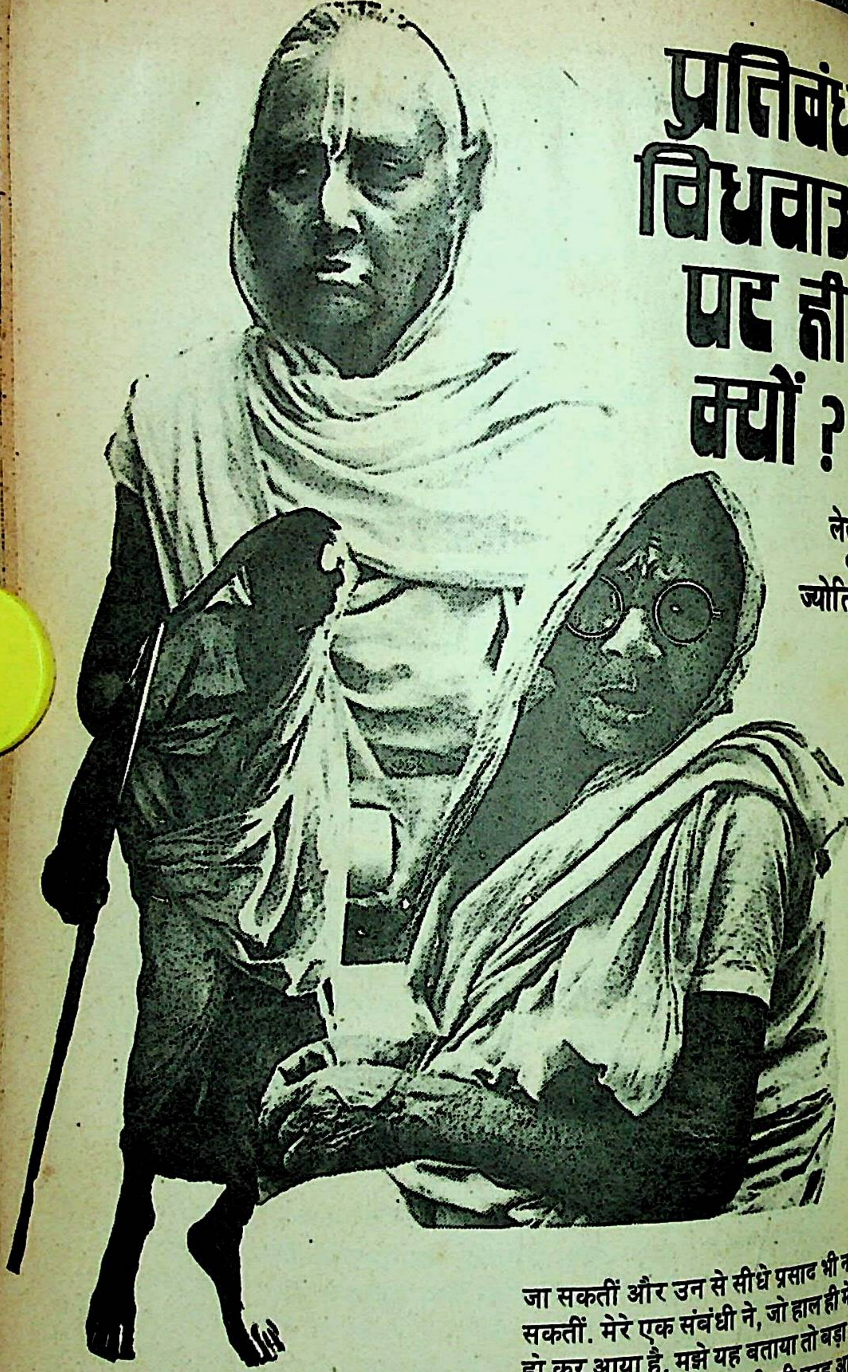
अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

प्रतिबंध विधवाओं पर ही क्यों ?

लेख • ज्योतिर्मय



महोदय, कुंभकोणम (दक्षिण भारत का एक प्रमुख तीर्थ) के आचार्यों का दर्शन विधवा स्त्री के लिए निषिद्ध है. ऐसा नियम है कि विधवा औरतें उन के पास नहीं जा सकतीं और उन से सीधे प्रसाद भी नहीं ले सकतीं. मेरे एक संबंधी ने, जो हाल ही में वहां हो कर आया है, मुझे यह बताया तो बड़ा क्षोभ हुआ. अगर कोई विधवा किसी तरह आचार्य के दर्शन कर लेती है तो आचार्य को दिन भर उपवास रखना पड़ता है.

केवल सुमंगली विधवा (लग्न मंडप में

आज भी विधवा होने वाली हिंदू स्त्रियों पर इतने प्रतिबंध लगे हुए हैं कि उन का जीना मुशकिल हो गया है, लेकिन विधुर पुरुषों के लिए कोई ऐसा प्रतिबंध नहीं है. ऐसा क्यों?

ही जिस के वर की मृत्यु हो गई हो) आचार्य के दर्शन कर सकती हैं, लेकिन उन्हें इस के लिए अपना सिर घुटाना पड़ता है. क्या यह परंपरा हमारे समाज में औरतों की हेय स्थिति की परिचायक नहीं है? क्या पति की मृत्यु में औरतों का हाथ होता है?

इस तरह की परंपराओं का मतलब तो यह है कि पति के न रहने पर औरतों की जिंदगी ही व्यर्थ हो जाती है. अगर वे जिंदा रहती हैं तो परंपरा के अनुसार उन्हें अमंगली (जिसे देखना अशुभ हो) के रूप में रहना चाहिए.

आश्चर्य की बात तो यह है कि एक अर्मंडित विधवा स्त्री को जब आचार्य के दर्शन नहीं करने दिए गए तो वह बोली, "यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं विधवा हूं और आचार्य के दर्शन नहीं कर सकती." लेकिन वह औरत इस तरह क्यों नहीं सोचती कि यह आचार्य का दुर्भाग्य है जो विधवा स्त्रियों को नहीं देख सकता?

मेरी दृष्टि में इस सब के लिए हमारे समाज की महिलाएं ही ज्यादा दोषी हैं. परंपरागत संस्कारों में पली अनपढ़ और रूढिग्रस्त स्त्रियों की बात छोड़िए, सुशिक्षित और आधुनिक स्त्रियां भी इस तरह के रिवाजों का अंध समर्थन करती हैं. वे यह क्यों नहीं सोचतीं कि उन की जिंदगी स्वयं की अपनी है? क्या स्त्रियों का जीवन केवल पतियों के लिए ही है. प्रत्येक व्यक्ति को, खास तौर से महिलाओं को यह सोचना चाहिए कि वे मनुष्य हैं, उन्हें एक जीवन मिला है जो उन का अपना है और उन्हें उस जीवन को जीने का



पूरा हक है. अभिभावकों के मरने पर क्या हम जिंदा नहीं रहते? यदि अभिभावकों के न रहने पर जीवित रहा जा सकता है और आत्मसम्मान की जिंदगी बिताई जा सकती है तो पति के मरने पर सुमंगली (सधवा) स्त्रियों की तरह रहने में क्या हर्ज है? प्रत्येक शादीशुदा औरत को, चाहे उस का पति जिंदा हो या मर चुका हो, सुमंगली औरतों की तरह रहना चाहिए.

—के. मीनाक्षी (तंजावर)



◀ वृंदावन में भजनकीर्तन के सहारे अपना जीवन काटती हुई एक विधवा : अब तो यही सहारा है.

मद्रास से प्रकाशित होने वाले समाचारपत्र 'हिंदू' के 18 जून के अंक में यह पत्र 'संपादक के नाम' स्तंभ में छपा था. 'हिंदू' एक ऐसा पत्र है जिस में नियमित रूप से धर्म का महत्त्व और उपयोगिता सिद्ध करने वाले समाचार प्रकाशित होते हैं. इस पत्र की प्रतिक्रिया में पाठकों ने अनेक पत्र लिखे. बहुतों ने इस परंपरा की आलोचना की और बहुतों ने इस परंपरा तथा विधवाओं के लिए निर्धारित विधि निषेध के नियमों को उचित बताया. इन्हें उचित बताने वाले लोगों ने जो विचित्र तर्क दिए हैं, उन से शिक्षित कहे जाने वाले लोगों की परंपराओं के प्रति अंधभक्ति की मानसिकता का पता चलता है. एक पाठक ने अपने पत्र में लिखा है कि विधवा होने के बाद स्त्रियां आकर्षक दिखाई न दें, इसलिए उन्हें सिर घुटा कर सफेद कपड़े पहने रहना चाहिए. यदि वे आकर्षक दिखाई देंगी तो कई लोगों की दृष्टि उन पर पड़ेगी. उन में विकार पैदा होगा और वे लोगों की कामुकता का शिकार बन सकती हैं.

विधवा स्त्रियां सुंदर दिखाई दें तो ही लोगों में विकार पैदा होता है? सधवा औरतें सुंदर और आकर्षक दिखाई देती हैं तो लोगों में कामविकार पैदा नहीं होता? यदि सुंदर और आकर्षक दीखने से ही कामुकता पैदा होती है तो सधवा और विधवा दोनों के कारण ही लोगों में कामुक प्रवृत्ति भड़कती है. स्त्रियों के सुंदर दीखने से पुरुष में कामुक भावनाएं भड़कती हैं तो पुरुषों के सुंदर और आकर्षक दीखने से स्त्रियों में भी कामुकता भड़कनी चाहिए. फिर पुरुष क्यों सुंदर और आकर्षक दीखने की कोशिश करते हैं? थोड़ी देर के लिए पाठक का यह तर्क मान भी लें कि विधवा औरतों को अपनी पवित्रता और गरिमा का ध्यान रखते हुए बनावसिंगार से दूर रहना चाहिए तो सवाल उठता है कि केवल स्त्रियों के लिए ही पवित्र और गरिमामय रहने पर क्यों जोर दिया जाए. पुरुषों को भी पवित्रता और गरिमा और विधुरों पर उतना ही जोर देना चाहिए

को भी सिर घुटा कर सफेद कपड़ों में ही रहना चाहिए.

एक अन्य पाठक ने विधवा स्त्री द्वारा कुमकुम, माला आदि सुहागचिह्न धारण करना छोड़ने को वैधव्य की घोषणा बताया है. स्त्रियां तो सुहागचिह्न छोड़ कर वैधव्य की घोषणा करती हैं. पुरुष के विधुर होने की घोषणा के लिए इस तरह की कोई व्यवस्था क्यों नहीं है? सही बात तो यह है कि कुमकुम, माला आदि शृंगार साधन हैं, न कि सुहागचिह्न. सुहागचिह्न के रूप में उन्हें मान लिया गया, यह अलग बात है. और इस बात का प्रमाण भी कि हिंदुओं ने किस प्रकार स्त्री सौंदर्य को पुरुष की संपत्ति बना लिया, जिसे उस के मालिक के जिंदा रहने तक ही संवारना चाहिए. अगर ऐसा नहीं है तो पुरुषों को भी तेल, कंघी, रंगीन कपड़े, फैशन आदि करना छोड़ कर विधुर स्थिति की घोषणा करनी चाहिए. औरतों के लिए शृंगार साधन सुहागचिह्न है तो पुरुषों के लिए भी फैशन आदि शृंगार साधन पत्नी के जीवित होने का प्रमाण होना चाहिए और पत्नी के मर जाने पर इन्हें छोड़ कर विधुर होने की घोषणा करनी चाहिए.

एक और लचर दलील उल्लेखनीय है कि हिंदू मान्यता के अनुसार कोई भी स्त्री कभी विधवा नहीं होती. स्त्रियां सदैव सधवा रहती हैं, क्योंकि सब का परम पति एक ही है–ईश्वर. ईश्वर अमर है, इसलिए प्रत्येक स्त्री नित्य सुमंगली है. यह दलील स्त्रियों की शीलरक्षा के लिए लौकिक पति का देहांत हो जाने पर सादगी अपनाने के रूप में दी गई है. वही सवाल यहां भी उठता है कि स्त्रियों की शीलरक्षा के लिए कथित सादगी अपनाना जरूरी है तो विधुर पुरुषों को क्या अधिकार है कि वे आवारा सांड की तरह घूमते रहें?

ईश्वर को एकमात्र पुरुष और सभी स्त्रियों को उस की पत्नी मान लिया जाए तो मनुष्य के रूप में दिखाई देने वाले पुरुष क्या कहे जाएंगे? हिंदू दर्शन में ईश्वर को पुरुष माना गया है, यह बात ठीक है, किंतु उस में ईश्वर पुरुष की तरह प्रकृति (माया) के रूप में स्त्री की भी धारणा है. केवल सखी संप्रदाय को छोड़ कर कहीं भी ईश्वर को एकमात्र पुरुष और शेष प्राणियों को स्त्री नहीं माना गया है. सखी संप्रदाय के अनुयायी ही अपने को कृष्ण की प्रेयसी मानते हैं और उस के साधक स्त्रियों की तरह रहते हैं. मासिक धर्म और बातचीत में स्त्रीलिंगी संबोधन का ढोंग करने से पुरुष स्त्री नहीं हो जाते.

एक अन्य पत्र लेखक ने कहा है कि परंपरागत ढंग से कुमकुम, माला, चूड़ी आदि छोड़ कर वैधव्य की घोषणा करना अनुचित है तो पति का वेतन, पेंशन, फंड आदि पाने के लिए यह क्यों घोषित किया जाता है कि उस ने दोबारा विवाह नहीं किया है? कहा जा चुका है कि कुमकुम, माला आदि चीजें सुहागचिह्न नहीं शृंगार साधन हैं. विधवा होने पर इन का त्याग इसलिए कर दिया जाता है कि स्त्री का जीवन शुष्क, नीरस और ऊबाऊ हो जाए. बाद में स्त्रियां इस ढंग को सहज मानने लगीं, पर आरंभ में इस सब के कारण उन्हें अपनी असहाय, विवश और पुरुष आश्रित स्थिति कांटे की तरह चुभी होगी. यह समाज में स्त्रियों के दूसरे दर्जे की स्थिति का ही द्योतक है.

शृंगार साधन छोड़ कर विधवा होने की घोषणा का लाभ भी क्या है? पति का वेतन, फंड, पेंशन आदि पाने के लिए घोषणा इस उद्देश्य से की जाती है कि वह अभी तक निराश्रित है. तथाकथित सुहागचिह्न छोड़ने से क्या फायदा है? इस से तो लोगों को यही पता चलता है कि स्त्री का संरक्षक कोई नहीं है. पति ही नहीं है. पति न होने की बात पता चलने पर लोग उसे ज्यादा ललचाई नजरों से ही देख सकते हैं, क्योंकि वे समझते हैं कि इस औरत को आसानी से फंसा जा सकता है. उस में शीलरक्षा कम पथभ्रष्ट होने का ही खतरा ज्यादा है.

विधवा स्त्रियों को जिन बंदिशों में रहना पड़ता है और उन बंदिशों को धार्मिक आधार पर उचित सिद्ध किया जाता है तो

हार का यही निष्कर्ष है कि हिंदू धर्म ने स्त्री को मनुष्य के रूप में कभी भी मान्यता नहीं दी है. सीधी सी बात है, जीवनसाथी का बिछुड़ जाना वास्तव में खलने योग्य घटना है तो वही मर्यादाएं पुरुष के लिए भी तय होनी चाहिए. पति मर जाए तो स्त्री का दुर्भाग्य और स्त्री मर जाए तो पुरुष का दुर्भाग्य क्यों नहीं?

यह स्थिति हिंदू धर्म के गुणगायकों द्वारा हिंदू धर्म की गाई जाने वाली महानता की सचाई सामने रख देती है. कहा जाता है कि हिंदू धर्म में सब को बराबरी का स्थान प्राप्त है. यह लंबी चर्चा का विषय है. प्रासंगिक दृष्टि से इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि स्त्रियों को पुरुषों की बराबरी तो दूर उन के पांवों की धूल जितना भी महत्त्व प्राप्त नहीं है. महापुरुषों और कथित धर्माचार्यों के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए उन के पांवों की धूल सिर पर लगाई जाती है, किंतु पति मर जाता है तो उस के लिए उस की पत्नी को कोसा जाता है. उस की उपेक्षा, तिरस्कार और उत्पीड़न किया जाता है. ऐसे कई उदाहरण हैं जिन में शादी के कुछ ही समय बाद पति की मृत्यु के लिए नववधू को डायन, चुड़ैल जैसे संबोधनों से अपमानित किया गया और उसे मरने के लिए विवश कर दिया गया या मार ही दिया गया.

महापुरुषों की चरणधूलि पूजी जाती है, किंतु उन की पत्नियां उपेक्षित रहती हैं. उन्हें तरहतरह के दबाव सहने पड़ते हैं. इस संदर्भ में एक धार्मिक उदाहरण देना ज्यादा उपयुक्त रहेगा. सन 1866 में स्वामी रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु हुई तो उन की पत्नी उन की सांस रहते ही विधवाओं का वेश विन्यास धारण करने लगी. स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा, "तुम यह क्या कर रही हो? मैं कोई मर थोड़े ही रहा हूं? यह घटना तो ऐसी है जैसे कोई एक कमरे से दूसरे कमरे में जाता है."

उन की पत्नी शारदा देवी ने अपने पति की बात मान कर विधवाओं का वेश विन्यास

दुर्जन

दुर्जन को अच्छीअच्छी शिक्षा दी जाए, तब भी वह साधु नहीं हो सकता, जैसे नीम के पेड़ को यदि घी और दूध से सींचा जाए, तो भी वह मधुर नहीं होगा.

—मेनका

रखने का इरादा छोड़ दिया, किंतु कुछ समय बाद उन्होंने अपने गांव में रहते हुए लोकापवाद से बचने के लिए लाल किनारे की सफेद साड़ी पहननी शुरू कर दी और हाथ में कंगन पहनना छोड़ दिया.

हिंदू धर्म में स्त्रियों को कभी उचित आदर दिया ही नहीं गया है. उसे कुछ मानसम्मान मिला भी तो पति के कारण. पति की ओट में उस का अपना व्यक्तित्व गौण हो गया. सामान्यतः तो उस का स्वंतत्र अस्तित्व स्वीकार किया ही नहीं गया. अब शिक्षा का प्रसार होने के बाद भी उन के प्रति परंपरागत मान्यताओं में कोई फर्क नहीं आया है.

स्वामी दयानंद जैसे समाज सुधारक ने विधवाओं की स्थिति में सुधार के लिए कोई प्रयास नहीं किए. राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर आदि सामाजिक नेता जब विधवा विवाह को उचित बता रहे थे तब स्वामी दयानंद ने विधवा विवाह को अनुचित बताया था और उन के लिए परंपरागत ढंग से कष्टपूर्ण जीवन बिताने की ही बात कही थी.

शिक्षित कहे जाने वाले लोग यदि विधवाओं के लिए कष्टपूर्ण जीवन बिताने का औचित्य सिद्ध करने के लिए कुतर्कों का सहारा लेते हैं तो आश्चर्य होता है. लेकिन यह अस्वाभाविक भी नहीं है. सैकड़ों साल से चली आ रही परंपराओं और धर्म की बेड़ियों से मुक्त होने के लिए साहस चाहिए. उस साहस के अभाव में न स्त्रियों की दशा सुधर सकती है, न स्वतंत्र विचारशीलता उत्पन्न हो सकती है. ●

दिन दहाड़े



कुछ दिन पहले मैं दिल्ली परिवहन निगम की एक बस में यात्रा कर रहा था कि एक स्टाप से एक अपंग व्यक्ति, जिस की दोनों टांगें आधी कटी हुई थीं, बस के अगले दरवाजे से चढ़ा. सहानुभूतिवश एक युवक ने उस अपंग व्यक्ति को अपनी जगह दे दी. एक व्यक्ति के पूछने पर उस अपंग व्यक्ति ने बताया कि उस की दोनों टांगें चीन के युद्ध में कट गई थीं.

उस अपंग व्यक्ति ने एक दस का नोट निकाला और एक व्यक्ति को टिकट लाने को दिया. कुछ क्षण बातें करने के पश्चात उस अपंग व्यक्ति का ध्यान टिकट लेने के लिए भेजे युवक पर गया. जब हम लोगों ने पीछे मुड़ कर देखा तो पाया कि वह युवक दस रुपए का नोट ले कर चंपत हो चुका है.

— केवलकुमार मनोचा

*

दिन के 12 बजे थे. मेरे जीजाजी आफिस जा चुके थे तथा दीदी के सभी बच्चे स्कूल गए हुए थे. फ्लैट में दीदी अकेली थी तथा नौकर घर का काम कर रहा था. दीदी जब स्नानगृह में गई तो नौकर ने मौका देख कर अपने एक बदमाश साथी को फ्लैट में घुसा लिया और दरवाजा बंद कर लिया. जब दीदी नहा कर निकलीं तो दोनों सामने ही खड़े थे. उन्होंने दीदी से चाबियां मांगी. एक बार तो दीदी ने साफ इनकार कर दिया कि वह चाबियां नहीं देंगी, लेकिन जब उन्होंने चाकू दिखाया तो दीदी ने डर के मारे उन्हें चाबियां दे दीं.

उस के बाद दोनों ने मिल कर पहले तो दीदी के हाथ, पैर व मुंह बांधा. फिर अलमारी खोल कर गहने, नकदी व रुपए एक कनस्तर में डाले, उस के ऊपर गेहूं डाल कर कंधे पर रख लिया और दीदी को [illegible] अवस्था में छोड़ कर बाहर निक[illegible] दरवाजा बाहर से बंद कर दिया. थोड़[illegible] बाद दीदी ने किसी तरह अपने हाथ पैर [illegible] और बाहर आ कर दरबान से नौकर के [illegible] में पूछा. तब तक काफी देर हो चुकी थी [illegible] वे जा चुके थे.

— [illegible]

*

पिछले दिनों मैं रुड़की से सहार[illegible] रहा था, बस स्टैंड पर काफी [illegible] पुरुषों की लाइन अधिक लंबी [illegible] महिलाओं की लाइन छोटी. मैं ने परे[illegible] बचने के लिए एक महिला से अपने [illegible] एक टिकट लेने की प्रार्थना की त[illegible] रुपए का एक नोट दे दिया.

महिला ने टिकट ले कर मुझे [illegible] टिकट दे दिया तथा चलने लगी. ज[illegible] बाकी पैसे लौटाने को कहा तो वह ए[illegible] तेज आवाज में बोली, "कैसे पैसे? ए[illegible] टिकट ले कर दिया, ऊपर से पैसे मांग[illegible] तुम ने कुल चार रुपए ही तो दिए हैं."

मेरे दोबारा यह कहने पर कि [illegible] 50 रुपए का नोट दिया था, वह जोर[illegible] बोलने लगी. इस पर मैं ने चुपचाप [illegible] कर बैठ जाना ही उचित समझा. वह [illegible] मेरे बाकी के 46 रुपए ले कर रास्ते में [illegible] उतर गई और मैं देखता रह गया.

—प्रदीपकुमार गुप्[illegible]

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के [illegible] अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर [illegible] रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अ[illegible] अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

अपने बालों को दीजिये स्वास्थ्य और सौन्दर्य की सौगात.

टियारा एग क्रीम शैम्पू
कमज़ोर बालों के लिये
टियारा ब्यूटी ट्रीटमेंट शैम्पू
बेजान, रूखे बालों के लिये.
टियारा शिकाकाई हर्बल
कॉन्सन्ट्रेट शैम्पू
लंबे, मुश्किल से सँवरनेवाले
बालों के लिये. साथ ही, तेलयुक्त
बालों के लिये टियारा लेमन
कान्सेन्ट्रेटेड शैम्पू भी उपलब्ध.
और रूखे बालों के लिए
टियारा लैनोलिन कंडिशनिंग.

टियारा शैम्पू
बालों के स्वास्थ्य
और
सौंदर्य के लिये.





बाल संभाल के लिये दुनियाभर में मशहूर.

everest/82/JKH/304-hn

कोणार्क का सूर्य मंदिर

पृष्ठ 45 का शेषांश

जगमोहन की छत के ऊपर वाले बरामदे में विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों सहित नृत्यभंगिमा में खड़ी हुई नायिकाओं का सौंदर्य अतुलनीय है. इन मूर्तियों के पूरे शरीर में चूने का प्लास्टर लगा कर ऊपर से अनेक प्रकार के रंग भरे गए थे. किसीकिसी मूर्ति के शरीर पर ये रंग आज भी देखे जा सकते हैं.

मंदिर के बाहरी तरफ तीनों दीवारों में तीन पार्श्व देवताओं की मूर्तियां लगी हुई हैं. ये सूर्य के तीन विशेष रूपों के प्रकाश हैं. ब्राह्मण युग में सूर्य को ब्रह्मा, विष्णु और महेश का समन्वय कहा गया है. वेदों में सूर्य को प्रातःकाल में ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता), मध्याह्न में महेश्वर (ध्वंसकर्ता) और सायंकाल में विष्णु (पालनकर्ता) के रूप में वर्णन किया गया है :

उदये ब्रह्मा रूपे, मध्याह्न तु महेश्वर,

अस्त काले स्वयं विष्णु, त्रयो मूर्ति दिवाकर.

लोगों का ऐसा कहना है कि सूर्योदय की प्रथम रश्मि नृत्य मंडप और जगमोहन के दरवाजे से होती हुई सीधी सिंहासन पर खड़ी हुई सूर्यमूर्ति के मुख के उपर पड़ती थी. दोपहर में मध्याह्न सूर्य की मूर्ति के ऊपर तथा शाम को अस्ताचल सूर्य की मूर्ति के ऊपर आ कर पड़ती थी. वेशभूषा के दृष्टिकोण से ये तीनों ही मूर्तियां एक समान हैं. ध्यान से देखने पर प्रभात सूर्य के मुख पर शांतसौम्य भाव और मध्याह्न सूर्य के मुख पर कठोरता का ही आभास मिलता है. अस्ताचल सूर्य के मुख पर थकावट का भाव दिखलाया गया है.

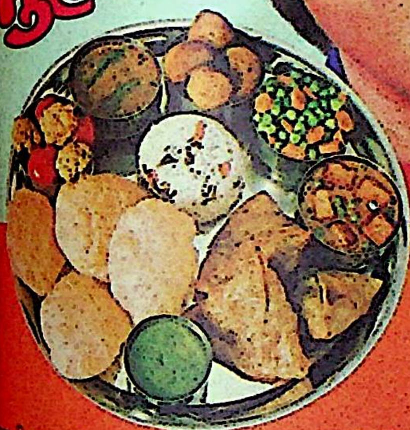
प्रभात और मध्याह्न सूर्य के माथे पर 'किरीट,' दोनों हाथों में कमल के फूल तथा गले और कमर में मुक्ता की माला है. घुटनों के उपर तक सूक्ष्म कारुकार्य किया हुआ वस्त्र, दोनों बांहों में अलंकार, पैरों में खड़ाऊं तथा वक्षःस्थल पर 'उपवीत' मूर्ति के सौंदर्य को और अधिक बढ़ा रहे हैं.

दीवारों पर सिलसिलेवार रूप में स्त्रीपुरुष की मिथुन मूर्तियां हैं. 'काम' के क्षणों के आनंद को इन मूर्तियों द्वारा चित्रण में कारीगरों की निपुणता की दाद देनी पड़ती है. संभवतः इन शिल्पियों को शरीर विज्ञान की अच्छी जानकारी रही होगी. एक स्थान पर एक पुरुष ने एक स्त्री को अपनी दोनों बांहों में उठा रखा है. और स्त्री ने अपनी दोनों बांहों को कस कर पुरुष की गरदन में लपेट रखा है. दोनों हाथों के ऊपर भार उठने से पुरुष मूर्ति की एकएक पेशी पर जितना जोर पड़ना चाहिए, उतना ही अत्यंत दक्षता के साथ दिखलाया गया है. हालांकि कोणार्क के सूर्यमंदिर की मिथुन मूर्तियों में वे विशेषताएं नहीं हैं जो खजुराहो की मूर्तियों में हैं, फिर भी 'कामकला' की मूर्तियों की कलात्मकता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता.

यह मंदिर तैयार होने के 500 वर्षों के अंदर ही बालू और पत्थरों के ढेर में बदल गया है. काफी दिनों तक मंदिर के थोड़े से ऊपर के अंश को छोड़ कर और कुछ भी दिखलाई नहीं पड़ता था. इस के पीछे ऐसी भी किंवदंती है कि इस मंदिर के ऊपर एक विशाल चुंबक लगा था, जो आनेजाने वाले जहाजों को अपनी तरफ आकर्षित किया करता था. वैज्ञानिक दृष्टि से यह बात असंभव है. तंग आ कर नाविकों ने इस मंदिर को तोड़ दिया. काफी दिनों तक बालू में दबे रहने के पश्चात इसे साफ करवा कर आम यात्रियों के देखने लायक बनाया गया.

अगर रात में चंद्रमा की रोशनी में इस मंदिर को देखा जाए तो मंदिर के बरामदे के ऊपर लगी नृत्यरत देवदासियों की मूर्तियों की भव्यता मन को मोह लेती हैं. कोणार्क की जलवायु समशीतोष्ण है, क्योंकि यह समुद्र के किनारे पर बसा है. ●

मुंह में पानी!



...रिफ़ाइन्ड तेल. कितना शुद्ध है यह: इससे भोजन का
...स्वाद बना रहता है. इसमें पकाइए और खाइए.
...भोजन का तो मज़ा ही निराला है. देखते ही बच्चों से
...न जाय, और पतिदेव के मुंह में भी पानी आ जाय!

डालडा रिफ़ाइन्ड तेल

मज़ेदार भोजन का राज़



...का ...उत्पादन

लिंटास-DGNO. 10-2013 H

इलाज

कहानी • कुसुम गुप्ता

'शादीलाल ने महसूस किया कि एक सीमा के पश्चात धैर्य गुण नहीं रहता, बल्कि अवगुण बन जाता है.

एक दिन हो, दो दिन हो, पर यह तो रोज का ही क्रम बन गया था. सुबह पौने छः बजे उठना और दूध की खाली बोतलें और पैसे ले कर दूध के डिपो पर जाना. हड्डियों तक को कंपकंपाने वाली सर्दी. वह और उस क्षेत्र के निवासी खड़े हैं कड़कड़ाती, बरफीली सर्दी में. सब की निगाहें मुख्य सड़क से चिपकी हैं और प्रतीक्षा कर रही हैं दूध वितरण करने वाले दो नवयुवकों क प्रकट होने की.

डिपो को सुबह छः बजे खुल ज चाहिए. पर नहीं, साढ़े छः, पौने सात पहले ये लड़के नहीं आएंगे. दो काउंटर और इन दोनों को अलगअलग काउंटर दूध का वितरण करना चाहिए. पर इन्होंने दोनों में से एक काउंटर तोड़ दिय इसलिए दूध एक ही काउंटर से बांटा ज है. दोनों में से एक ही नवयुवक ड्यूटी आता है—बारीबारी से. तनख्वाह दोनों महीने की लेते हैं, पर काम करते हैं



दूध के डिपो पर होने वाली धांधलियों की शिकायत शादीलाल ने उच्च अधिकारियों तक से कर डाली, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ. फिर उस ने एक ऐसी योजना बनाई कि सारे लोग दंग रह गए.

पंद्रह दिन.

दो काउंटरों में से सिर्फ एक खुलता है और वह भी आधापौना घंटा देरी से. परिणामस्वरूप खिड़की के बाहर काफी भीड़ हो जाती है. दूध लेने वालों की दोदो कतारें लग जाती हैं. आगेपीछे के चक्कर में दूध लेने वालों में आपस में झगड़ा होने लगता है. लोगबाग अधीर होने लगते हैं और उन की अधीरता निर्मूल नहीं है. चारपाई से उठते ही सरकारी माल की खरीद के लिए कतार और दिन की शुरुआत ही आधेपौन घंटे की देरी से. उधर बच्चों को सुबह ही सुबह स्कूल जाना होता है. सारा कार्यक्रम अस्तव्यस्त हो जाता है.

"तुम क्या जनता के प्रतिनिधि एम.एल.ए. या एम.पी. या प्रेजीडेंट लगे हो जो मुझ से देर से आने का कारण पूछ रहे हो," दूध बांटने वाला युवक शादीलाल से बोला.



दूध बांटने वाले ये नवयुवक देरी से ही नहीं आते, बल्कि दूध के वितरण में भारी अनियमितताएं भी बरतते हैं. किसी को पांच बोतलों की जरूरत है तो उसे तीन बोतलें देंगे. कोई परिचित आ गया तो वह चाहे कितनी ही बोतलें ले जाए. यही नहीं, कुछ नौकर टाइप के व्यक्ति आते हैं, वे थैले के थैले बोतलें भर के ले जाते हैं.

शादीलाल अपनी बोतलों को लाइन में रख कर सड़क पर चहलकदमी कर रहे थे और इस समस्या के बारे में सोच रहे थे. पिछले कई दिनों से बच्चों को स्कूल की बस पकड़ने के लिए भागना पड़ता था. दो दिन तो बस निकल भी गई थी और उन्हें इतनी भयंकर सर्दी में अपने दोनों बच्चों को स्कूटर पर बैठा कर स्कूल छोड़ने जाना पड़ा था.

आखिर दूध के डिपो समय पर क्यों नहीं खुलते? अगर इस के खुलने का समय छः बजे है तो इसे छः बजे ही खुलना चाहिए. पर यह नहीं खुलता. क्यों? क्या इसी लिए कि यह सरकारी दुकान है और ये दूध बांटने वाले तथाकथित सरकारी कर्मचारी हैं, चाहे अंशकालिक ही सही? दूध के डिपो को ही क्या, किसी भी सरकारी दफ्तर या दुकान को देख लो. काउंटर सेवा इतनी खराब होती है कि जनता को बेहद परेशानी उठानी पड़ती है.

अखिर जनता जनसेवकों की इस लापरवाही, गैरजिम्मेदारी और भ्रष्टता को आंखें मूंद कर स्वीकार क्यों कर लेती है? शादीलाल ने सोचा और उन्हें महसूस हुआ

आगे पृष्ठ 156 पर

पृष्ठ 153 से आगे

जैसे उन के अंतर में कुछ विशेष सा उमड़घुमड़ रहा है. वह आक्रोश और आवेग में आने लगे थे.

छः बज कर 40 मिनट हो गए थे. तभी एक दूध बांटने वाला साइकिल पर प्रकट हुआ. भीड़ में हलचल मच गई और लोग—पुरुष तथा महिलाएं—एकदम इस तरह कतार में खड़े हो गए जैसे कमांडर के सामने सैनिक.

शादीलाल बेहद उखड़े हुए थे. अतः वह डिपो के द्वार के पास जा कर खड़े हो गए. जैसे ही वह नवयुवक साइकिल से उतरा और डिपो का ताला खोलने को हुआ, शादीलाल ने बड़े ही संयत स्वर में पूछा, "अरे बेटा, तुम रोजरोज देर से क्यों आते हो? इस से जनता को बड़ी परेशानी होती है."

वह नवयुवक पुलिस कमिश्नर की तरह तन कर खड़ा हो गया. उस के होंठों में सिगरेट लटक रही थी. आंखें तरेर कर उन्हें देखता हुआ बोला, "तुम क्या जनता के प्रतिनिधि—एम. एल. ए. या एम. पी. या प्रेजिडेंट लगे हो जो मुझ से देरी से आने की वजह पूछ रहे हो?"

"अरे, मैं ने तुम से शांति से पूछा है. इस में इतना ऐंठने की क्या बात है?"

"ऐंठ मैं रहा हूं या तुम? दस मिनट देर हो गई तो क्या आसमान फट गया?"

लड़के ने सिगरेट का एक गहरा कश खींच कर शादीलाल के मुंह पर उगलते हुए बड़ी बदतमीजी से उत्तर दिया.

शादीलाल बेहद उखड़ गए. कितनी अस्वास्थ्यकर स्थिति है. दूध भी यह इन्हीं हाथों से बांटेगा. सिगरेट पीते जाना और दूध बांटते रहना. उफ! शादीलाल ने चिल्ला कर कहा, "जो मर्जी में आए करो, ...



शादीलाल ने उस लड़के को चांटा मारा तो भीड़ में से आवाज आई, "सालों की हड्डीपसली तोड़ कर रख दो."

बदतमीजी से पेश मत आओ."

"बड़ा तमीज सिखाने आया है. उधर जा कर लाइन में खड़ा हो जा, वरना बिना दूध बांटे चला जाऊंगा."

"बदतमीजी करोगे तो मैं तुम्हारी शिकायत कर दूंगा."

"कर दो. तोप से उड़वा देना. चले जाओ, मिल्क स्कीम के चेयरमैन के पास."

इस तूतू, मैंमैं में जनता का कोई व्यक्ति उन के साथ नहीं था. उलटे भीड़ में से आवाजें आ रही थीं, "अरे भाई साहब, आगे देर हो गई है. क्यों बहस कर रहे हैं? उसे दूध बांटने दो."

अपमानित और लज्जित से शादीलाल कतार में आ कर खड़े हो गए. उन्होंने इस लड़के की शिकायत करने का पक्का फैसला कर लिया. उन्हें लगा, सरकारी कर्मचारियों की काहिली और अकुशलता के लिए काफी हद तक जनता की उदासीनता भी जिम्मेदार है. सब कुछ सह लेंगे, पर विरोध नहीं करेंगे.

जब दूध लेने के लिए शादीलाल का नंबर आया और उन्होंने अपनी पांचों खाली बोतलों को काउंटर पर रखा तो दूध बांटने वाला छोकरा ऐंठ कर बोला, "दूध नहीं मिलेगा."

"क्यों?" शादीलाल ने शांतिपूर्वक पूछा.

"बोतलें गंदी हैं."

"तुम्हारी खोपड़ी गंदी है." शादीलाल को क्रोध आ गया.

पीछे से तीनचार व्यक्ति एक साथ बोले, "दूध क्यों नहीं देते? बोतलें साफ हैं. बेकार की बातें मत करो."

लड़का सहमा. उस ने तीन बोतलें उठाईं और बोला, "सिर्फ तीन मिलेंगी. आज दूध कम आया है."

शादीलाल ने दूध में यह कटौती स्वीकार कर ली. वह जानते थे कि यह कटौती दूध कम आने के कारण नहीं, उन के विरोधप्रदर्शन का परिणाम है.

दूध ले कर शादीलाल घर पहुंचे. पत्नी ने कम दूध मिलने का कारण सुना तो वह भी बोली, "जब महल्ले का कोई भी आदमी नहीं बोलता तो तुम क्यों व्यर्थ में झगड़ा मोल लेते हो?"

शादीलाल पत्नी से बहस के मूड में

नहीं थे, क्योंकि उन को दफ्तर जाने के लिए तैयार होना था. पौन घंटा देरी पहले ही हो चुकी थी. वह एक प्राइवेट कंपनी में नौकर थे. अतः वहां के अनुशासन से बंधे होने के कारण उन्हें ठीक समय पर दफ्तर पहुंचना होता था.

दफ्तर पहुंच कर शादीलाल अपने काम में व्यस्त हो गए. परंतु उन का अंतर्मन अभी भी दुखी था. एक जरा से छोकरे ने उन का व्यर्थ में अपमान कर डाला था. यह तो एकदम ऐसा ही हुआ कि उलटा चोर कोतवाल को डांटे.

दोपहर के भोजन के समय तक वह अपने को संयत किए रहे. फिर उन्होंने टेलीफोन डाइरेक्टरी उठाई. दिल्ली मिल्क स्कीम का जनरल नंबर देख कर उसे मिलाया. संयोगवश नंबर मिल गया. उन्होंने शिकायत लिखवाने की इच्छा व्यक्त की. टेलीफोन आपरेटर ने एक विशेष नंबर मिला दिया.

शादीलाल ने उस नंबर पर शिकायत लिखा दी. उन की शिकायत का मुख्य आधार था— अमुक नंबर के दूध डिपो के कर्मचारियों द्वारा जनता के साथ अभद्र तथा अशिष्ट व्यवहार. साथ ही उन्होंने डिपो की दुर्दशा और वहां के कर्मचारियों की कामचोरी का भी विस्तृत वर्णन कर दिया.

रिपोर्ट लिख ली गई. जांच का कोई आश्वासन नहीं दिया गया, न ही शिकायत लिखने वाले ने उन का नामपता आदि पूछा.

शादीलाल चारपांच दिन तक प्रतीक्षा करते रहे. उस शिकायत के पश्चात होने वाले घटनाक्रम की आतुरता से बाट जोहते रहे. परंतु कहीं भी, कुछ नहीं हुआ. दूध बांटने वाले पूर्ववत देरी से आते रहे, जनता से बदतमीजी करते रहे और लोगों के पैसे मारने लगे. किसी का एक रुपया रख लेते तो किसी को रेजगारी में 10 पैसे कम देते.

एक सप्ताह के पश्चात शादीलाल ने दोबारा फोन किया और स्कीम के शिकायत दर्ज करने वाले कर्मचारी से पूछा कि उन के द्वारा लिखाई गई शिकायत पर क्या कारवाई हुई है. संबंधित कर्मचारी ने तत्काल उत्तर दिया, "जांच की जा रही है."

अगले तीन सप्ताह तक कुछ नहीं हुआ. जब भी शादीलाल फोन करते, उन्हें यही उत्तर मिलता, "जांच की जा रही है." वह समझ गए कि इस दफ्तर का यही रटा उत्तर है. हर शिकायत को ये लोग कोल्ड स्टोरेज में फेंक देते हैं. दोबारा चिट्ठी आने पर या फोन करने वाले को ये लोग इसी तरह से चुप कर देते हैं.

शादीलाल हतोत्साहित नहीं हुए. उस घटना को बीते कई हफ्ते गुजर गए थे. दूध बांटने वाले छोकरों के मुंह पर कुछ व्यंग्य भाव उभरे रहते थे—क्या कर लिया हमारा.

शादीलाल ने टेलीफोन डाइरेक्टरी का अध्ययन किया. दुग्ध वितरण अधिकारी के फोन नंबर पर उन की निगाह टिक गई. उन्होंने वह नंबर मिलाया. अधिकारी उपलब्ध था. शादीलाल ने संक्षेप में उसे सारी स्थिति बता दी तो वह बोला, "आप एक लिखित शिकायत भेज दीजिए. मैं पूरे मामले की जांच करा के आप को सूचित करूंगा."

शादीलाल बड़े प्रभावित हुए. उन्होंने तुरंत शिकायती पत्र टाइप किया और उसे 35 पैसे वाले लिफाफे में बंद कर उस अधिकारी के नाम डाक से भेज दिया.

इस बार सरकार के एक और विभाग ने शादीलाल के काम में अड़ंगा लगाया. डाक विभाग ने वह पत्र. स्कीम से संबंधित अधिकारी के पास नहीं पहुंचाया. शादीलाल को एक सप्ताह बाद फोन करने के बाद इस तथ्य का पता चला. अतः उन्होंने एक बार फिर शिकायती पत्र टाइप किया और उसे स्वयं दोपहर के भोजन के समय जा कर संबंधित अधिकारी के निजी सहायक को दे आए.

कोई तीन सप्ताह बाद उन्हें अपने घर के पते पर एक खाकी रंग का सरकारी लिफाफा मिला. बड़ी उत्सुकतापूर्वक उन्होंने उसे खोला, उस में एक संक्षिप्त सा पत्र

उस में लिखा था:

प्रिय महोदय,

आप का दिनांक 2.12.81 का पत्र प्राप्त हुआ. इस संबंध में जांच करने तथा उस महल्ले के अन्य व्यक्तियों से पूछताछ करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि आप की शिकायतें निराधार हैं. दूध का डिपो सुचारु रूप से काम कर रहा है.

भवदीय

.

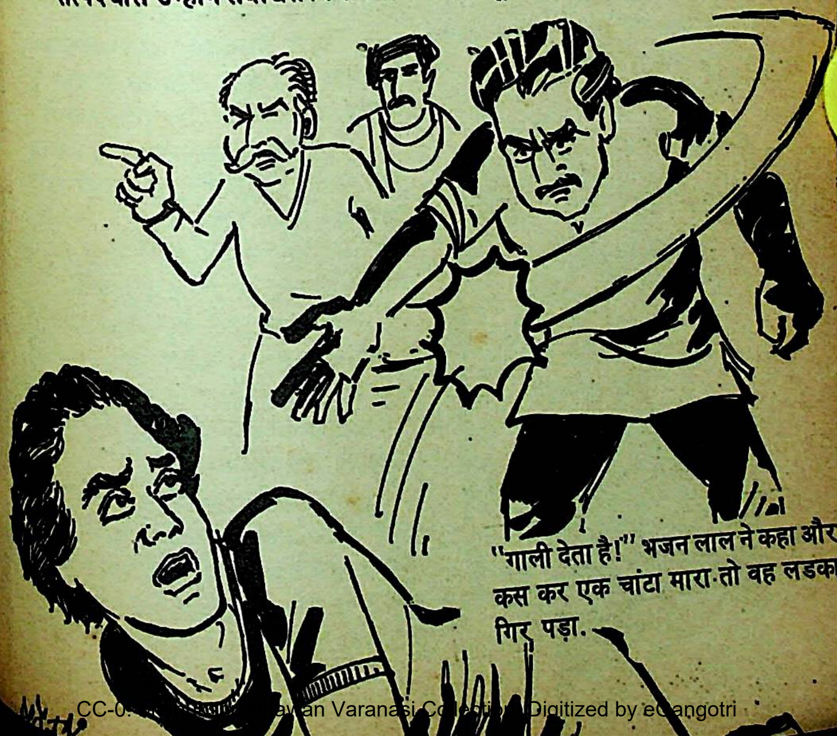
शादीलाल ने पत्र पढ़ा तो उन का खून उबल गया. इधर दूध बांटने वाले छोकरों की बदतमीजी दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी. जब भी वह दूध लेने जाते, वे व्यंग्य कसते, "हमारे खिलाफ शिकायत करेंगे. उंह! हमें नौकरी से निकलवा देंगे."

शादीलाल ने अपने को एक बड़ी विषम स्थिति में पाया. पहले उन्होंने प्रेम और शांति से इन जनसेवकों के कर्तव्यबोध को जाग्रत करने का प्रयास किया, पर असफल रहे.

तत्पश्चात उन्होंने संबंधित विभाग से शिकायत की, पर वह विभाग भी अपने कामचोर और बदतमीज कर्मचारियों को दंड नहीं देना चाहता था.

फिर कौन सा विकल्प शेष है? इस समस्या का समाधान कैसे होगा? अचानक उन के मन में एक बिजली सी कौंधी. समस्या सुलझ गई थी. यदि सरकार अपने कर्मचारियों को सुधारने या दोषी व्यक्तियों को दंड देने में असमर्थ रहती है तो फिर यह उत्तरदायित्व भी जनता को ही उठाना होगा.

उस दिन शनिवार था. शाम को शादीलाल तीनचार पड़ोसियों से मिले. ब्रह्मदत्तजी एक स्कूल में अध्यापक थे. तीन दिन पहले दूध बांटने वाले एक छोकरे ने उन की पत्नी का अपमान कर दिया था. रामस्वरूप स्वयं एक सरकारी कर्मचारी थे. एक दिन पहले उन का पांच का नोट हड़प कर गए थे ये दूध डिपो के छोकरे. रामस्वरूपजी ने दस का नोट दिया और वह छोकरा कहने लगा कि उसे पांच का नोट दिया गया है. भजनलाल भी इन छोकरों के देरी से आने से परेशान थे, क्योंकि उन के बच्चों की स्कूल बस साढ़े छः बजे आती थी. बेचारे



"गाली देता है!" भजन लाल ने कहा और कस कर एक चांटा मारा तो वह लड़का गिर पड़ा.

बच्चों को रात का बासी दूध पीने को मिलता था.

इसी तरह शादीलाल ने उस महल्ले के लगभग पांचसात व्यक्तियों को अपने यहां घर पर बुलाया, चाय पिलाई और फिर इस समस्या पर जनमत बनाया. काफी देर के विचारविमर्श के बाद यही तय किया गया कि अगले दिन सुबह इन दूध बांटने वाले छोकरों की तबीयत साफ की जाए. अगर सीधी उंगली से घी न निकले तो उंगली को टेढ़ा करना ही श्रेयस्कर है.

अगली सुबह ये छःसात व्यक्ति दूध के डिपो के द्वार के पास खड़े हो गए. लड़के रोज की तरह अभी तक नहीं पहुंचे थे. भीड़ इकट्ठी हो गई थी और बेचैनी से लड़के के आने की प्रतीक्षा कर रही थी.

करीब छः बज कर 35 मिनट पर वे दोनों सड़क पर प्रकट हुए. यह भी बड़ी विचित्र बात थी कि आज वे दोनों ही आए थे. जैसे ही दोनों ने साइकिलें रखीं और वे डिपो के द्वार की तरफ बढ़े, शादीलाल ने चेतावनी भरे स्वर में कहा, "कहो, भई, क्या यह जनता तुम्हारी नौकर है जो तुम इसे रोज घंटों प्रतीक्षा करवाते हो? तुम लोग ठीक समय से डिपो क्यों नहीं खोलते?"

"हम क्या इन के बाप के नौकर हैं?"

रात ढले

चांद साकित है
रुक गए तारे
अब वह आएं तो
गम की रात ढले.
— एहसान दानिश



पहला बोला.

"दूध लेना है तो इंतजार तो करना ही पड़ेगा," दूसरे ने कहा.

"बेटा, तुम इन के और इन के बाप दोनों के ही नौकर हो. दो टके के नौकर और अपने बाप जैसे शादीलाल से बदतमीजी करते हो?" भजनलाल पहले वाले लड़के के कोट का कालर पकड़ कर जोर से चीखे.

"तुम कौन होते हो बीच में दखल देने वाले? नामाकूल कहीं का."

"गाली देता है!" भजनलाल ने कहा और कस कर एक चांटा मारा और वह लड़का जमीन पर गिर पड़ा. शादीलाल ने एक चांटा मारा दूसरे लड़के को.

"सालों की हड्डीपसली तोड़ कर रख दो. बड़े दादा बनते हैं."

सारी भीड़ वहां इकट्ठी हो गई. वे दोनों भीड़ के घेरे में कुछ देर तक घिरे पड़े रहे. फिर वे खड़े हो गए.

"इन कामचोरों को डिपो में मत घुसने दो. आज से हम लोग खुद दूध बांटेंगे. अगर ये दोनों इस महल्ले में कभी दिखाई दिए तो इन की टांगें तोड़ कर रख दी जाएंगी," मास्टरजी ने जोश में भर कर कहा.

"मारो, सालों को." कल तक की शांत निष्क्रिय भीड़ बेहद उत्तेजित हो चली थी. शायद उसे उचित नेतृत्व मिल गया हो.

"चलिए. आप लोग लाइन लगाइए. आज से हम दूध बांटेंगे. इस महल्ले का हर जिम्मेदार व्यक्ति बारीबारी से निःशुल्क दूध का वितरण करेगा," शादीलाल ने विजय की खुशी से घूमते हुए कहा.

शायद उन दोनों लड़कों को स्थिति की गंभीरता तथा भयावहता का आभास हो गया था. उन दोनों ने सारे बुजुर्गों से हाथ जोड़ कर क्षमा मांगी और भविष्य में ठीक से काम करने का आश्वासन दिया.

अगले दिन से डिपो ठीक छः बजे खुलने लगा. दोनों काउंटर काम करने लगे. न भीड़, न देरी, न चखचख. सब कुछ सुचारु रूप से होने लगा. दिन की शुरुआत तनावपूर्ण न हो कर बड़ी सुविधाजनक हो गई थी. •

लेख • कमला सपोलिया

करवा चौथ

पति की मंगलकामना तो हर स्त्री करती है. पति की आयु लंबी हो, इस से अच्छी बात पत्नी के लिए और हो भी क्या सकती है. लेकिन व्रत रख कर पति की आयु बढ़ाई जा सकती तो एक करवा चौथ ही क्यों मैं तो सारा साल व्रत रखती. हकीकत में ऐसा नहीं होता. इसलिए मेरा खयाल तो यही है कि करवा चौथ के व्रत के बजाए पति के सुख और आराम का ध्यान रखा जाए तो उसे खुश रख कर घर का वातावरण और सुखद बनाया जा सकता है. जब सारे वर्ष पति से लड़नाझगड़ना ही है तो वर्ष में एक दिन उस के नाम पर व्रत रख कर उस की पूजा करने से क्या लाभ है?

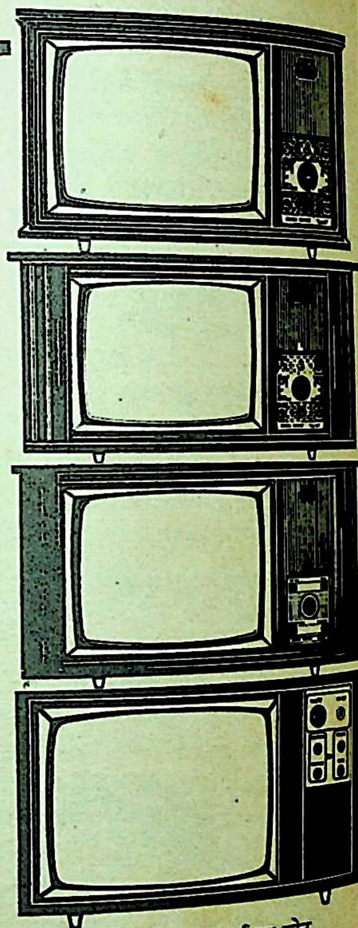
मैं आम महिलाओं की तरह करवा चौथ का व्रत रखने में विश्वास नहीं रखती. इस बात को ले कर मुझे कइयों की तरहतरह की बातें भी सुननी पड़ती हैं, लेकिन मुझे उस से कोई फर्क नहीं पड़ता. मेरी नजर में यह व्रत कोई माने नहीं रखता, सिवा इस के कि उस दिन औरतों को रंगबिरंगी साड़ियां और ढेर सारे गहने पहन कर फिर से दुलहन की तरह सजधज कर बैठने का मौका मिल जाता है. सूर्योदय से पहले और शाम को चांद निकलने के बाद वे नाना प्रकार के बढ़िया पकवान और फलादि खा सकती हैं. बाजार जा कर सिंदूर, मेहंदी और चूड़ियां खरीद सकती हैं, जिन्हें वे सुहाग की निशानी मानती हैं.

सारे वर्ष तो पति से लड़ाईझगड़ा और करवा चौथ वाले दिन उस की मंगलकामना के लिए व्रतउपवास करने से क्या लाभ?



इसिटीवी हमारा लक्ष्य

श्रेष्ठता



हमारा लक्ष्य था और आज भी है—श्रेष्ठता ECtv के हर एक टी वी में उत्तमता प्रदान करना । 'रिसर्च और डेवलपमेन्ट विंग' के निरंतर प्रयास और 'क्वालिटी कन्ट्रोल' के कड़े परिक्षण की बदौलत आज ECtv, टी वी टेक्नोलोजी के क्षेत्र में एक विश्वसनीय नाम है ।

उत्कृष्ट कार्यकारिता : विना किसी नुक्स के चलनेवाला आपका मनोरंजन का साधन । इसकी स्पष्ट आवाज़ और साफ चित्रों का प्रसारण, ECtv की बेजोड़ टेक्नोलोजी का प्रमाण हैं ।

सर्विस: ECtv के सर्विस केन्द्र सारे देश में फैले हुए हैं । यह ही नहीं ECtv फैक्टरी में प्रशिक्षित सर्विस इंजीनियर ही आपके टी वी की सर्विस करेंगे, आपके घर में या सर्विस केन्द्र में । ECtv सर्विस विश्वसनीय और जल्द

विशेषताएँ : • ऑल सालिड स्टेट • मल्टी चैनल • डयूएल-कोन हाई-फाई स्पीकर • अधिक एम-टी वी-एफ।



इका ECIL

इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

हैदराबाद—५०० ७६२

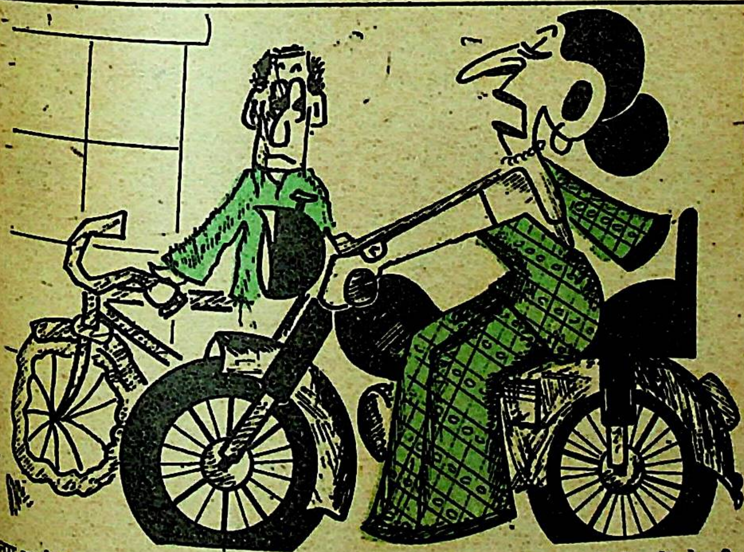
मोना को देखती हूं तो मेरा यह विश्वास और भी अटल हो जाता है. वह बड़ी तेजतर्रार है. सदा मौजमस्ती में रहती है और खूब घूमतीफिरती है. कभी जालंधर जा रही है तो कभी लुधियाना. कभी मन किया तो बंबई चले गए. रास्ते में दिल्ली उतरे तो वहीं आठ दिन लगा दिए. लेकिन यह सारा घूमनाफिरना मोना अपने पति के साथ नहीं करती. जहां जाती है अकेली ही जाती है. पति तो बेचारा सरकारी अधिकारी है. वह नहीं कमाएगा तो मोना के खर्च के लिए पैसा कहां से आएगा?

वैसे भी मोना को अपने पति की ज्यादा परवाह नहीं है. सारा दिन ताश खेलती है. रात को खेल के बाद देर से सोती है, इसलिए थकावट के मारे सुबह जल्दी नहीं उठ पाती. पति बेचारा स्वयं ही अपने और दोनों बच्चों के नाश्ते का प्रबंध नौकर के साथ मिल कर कर के दफ्तर चला जाता है. शाम को आता है तो कभी मोना घर में होती है और कभी क्लब में. जो उलटासीधा नौकर (12 साल का लड़का) बना कर खिला देता है, वही खा कर सो जाता है. इस बारे में मोना को कुछ भी कहना बेकार है. मोना ने तो सुबह भी ताश खेलनी है, दोपहर और शाम को भी. घर के कामों के लिए उस के पास न तो समय है और न कोई इच्छा. पति की कमीज में बटन तक नहीं होते. वह कुछ कहता है तो मोना खाने को पड़ती है. बेचारा अपना सा मुंह ले कर चुप रह जाता है.

लेकिन करवा चौथ पर मोना को खूब जोश आता है. शादी वाली लाल साड़ी पहन कर, जेवरों से सजधज कर वह सुबह ही बैठ जाती है. व्रत की प्रथा के अनुसार महिलाओं को उस दिन कपड़े नहीं धोने होते, न ही सिलाई का कोई काम करना होता है. खाना बनाने की तरफ मोना ने पहले ही कभी कोई दिलचस्पी नहीं ली, इसलिए अपने पति से कह देती है, "तुम ने जो खाना है बनवा लो. मैं ने तो तुम्हारे लिए व्रत रखा हुआ है."

एक बार मोना मुझ से कहने लगी, "तुम बिलकुल नास्तिक हो कमला, करवा चौथ का व्रत भी नहीं रखती."

मुझे मोना की बात पर हंसी आ गई. मैं ने कहा, "इस में नास्तिक या आस्तिक होने का क्या सवाल है, मोना. यह व्रत तो पतियों



"तुम अपने रिटायरमेंट तक साइकिल घसीटते रह गए और यह देखो, मुझे बैंक में नौकरी मिलते ही यह मोटरसाइकिल मिल गई."

के लिए रखा जाता है?"

"तो तुम कौन सा व्रत रखती हो? तुम्हें अपने पति की कोई चिंता नहीं है क्या?" मोना ने कहा.

"व्रत नहीं रखती तो क्या हुआ, अपने पति का तो मैं पूरा खयाल रखती हूं. उन के खाने की, कपड़ों की, हर चीज की चिंता रहती है मुझे. वह घर में अकेले बैठे हों और मैं ताश खेलती फिरूं, ऐसा तो कभी नहीं होता हमारे घर में."

मेरी बात सुन कर मोना ने मुंह बना लिया और बोली, "मुझे सुना रही हो क्या?"

"नहीं, मैं तो यह कह रही थी कि वर्ष में सिर्फ एक बार पति की मंगलकामना करना और उस की लंबी आयु के लिए पूजा करना काफी नहीं होता. इस से तो बेहतर यह है कि नित्य पति के सुख और आराम का ध्यान रखा जाए, उस में पति को ज्यादा खुशी होगी."

कुछ वर्ष पहले की बात है, उन दिनों हम झांसी में थे. करवा चौथ ... गुरप्रीत ने हमें दोपहर के भोजन पर ...

गुरप्रीत के घर पहुंचे तो 13-1... वहां मौजूद थे, जिन में पांचछः महि... थीं. सब ने व्रत रखा हुआ था. उन के ... उतरे हुए और होंठ सूखे हुए थे. ... सब ही बहुत थकी हुई हैं. दूसरी तरफ ... के पति आपस में खूब हंसबोल रहे ... वीअर पी रहा था तो कोई जिन ... बीचबीच में कबाब, काजू और ... रहे थे. खाना मेज पर लगाया गया तो ... एक पति ने भी मुड़ कर अपनी पत्नी ... तरफ नहीं देखा. सब के सब मेज ... भोजन पर टूट पड़े. उस दिन का नजारा ... कर मुझे करवा चौथ के व्रत का बेमत... होने का फिर से एक बार यकीन हो ...

अब तो बहुत से आधुनिक लोग ... लग गए हैं कि अगर पत्नियां अपने पति ... लिए व्रत रखती हैं तो पतियों को भी ... कि वे भी अपनी पत्नियों की सहा... व्रत रखें. मैं इस तर्क से भी सहमत ... क्योंकि इस से किसी की उम्र में कोई ... नहीं पड़ने वाला. एकदूसरे की खुशी ... सुख चाहने और उस के लिए यत्न ... और भी बहुत से तरीके हैं. वैसे भी ... चौथ का व्रत रखना आजकल के ... लोगों के विचारों के अनुकूल नहीं है. ... तरफ तो हम शिक्षा की रोशनी में ... बढ़ना चाहते हैं, दूसरी तरफ इस तरह ... अंधविश्वास के अंधेरों में भटके हुए ...

औरतें तो हमेशा से करवा चौथ ... व्रत रखने में विश्वास करती आई हैं, ... आश्चर्य तो उन के पतियों पर होता है ... बेमतलब के रिवाज से उन्हें नहीं ... शिक्षित, आधुनिक और उदार ... वाले पुरुषों को चाहिए कि वे ... जिंदगी की राह पर आगे बढ़ें और ... पत्नियों को भी अपने कंधे के साथ ... मिला कर चलने का प्रोत्साहन दें. दोनों ... कर चलेंगे तब ही वे अंधविश्वास की ... जंजीरों को, जिन में हम बुरी तरह जकड़े ... हैं, तोड़ने में सफल होंगे.

सरिता के
स्तंभों के बारे में सूचना

सरिता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजते समय स्पष्ट और सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. भेजी गई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में, किंतु रोचकता लिए होनी चाहिए.

रेत के महल

धारावाहिक उपन्यास • नारायणी

छठी कि[illegible]

पिछले अंकों में आप ने पढ़ा :

प्रशांत के साथ ब्याह कर शुभ्रा अपनी ससुराल आ तो गई, पर ससुराल आते ही [illegible] ने जाना कि ससुराल में उस की मनमरजी से काम होना बेहद मुशकिल है और इस हालत [illegible] प्रशांत उस का साथ नहीं देता. तभी सुरेश उस परिवार से जुड़ता चला गया. प्रशांत [illegible] शुभ्रा के बीच संदेह की दीवार यहीं से खड़ी हो गई. अपमानित हो कर शुभ्रा मायके जाती [illegible] कुछ दिनों बाद उसे दूसरे शहर के एक स्कूल में नौकरी मिल गई. वहीं एक कमरा कि[illegible] पर ले कर रहने लगी. एक दिन सुरेश वहां भी पहुंच जाता है. शुभ्रा उस की नीयत भांप क[illegible] मकान मालकिन के साथ सो जाती है. सुरेश खुद को अपमानित महसूस कर एक पत्र [illegible] लिख कर रात में ही चला जाता है. शुभ्रा तय नहीं कर पाती है कि उस का निर्णय उचित [illegible] या नहीं. छुट्टियों में मायके जाने पर उसे उपेक्षा ही मिलती है. उधर अदालत में शुभ्रा [illegible] अपने पति से तलाक हो जाता है. अब आगे पढ़ें...

कमरा वैसे ही अस्तव्यस्त पड़ा था. सरस्वती ने कभी भी कमरे को ऐसे बिखराबिखरा नहीं देखा था. शुभ्रा कुरसी पर हाथों में सिर दिए बैठी थी. बेबी चुपचाप किताब के पन्ने पलटते हुए खिड़की के पास बैठी थी. सवेरे भी शायद कुछ बना नहीं था. उस की रसोई में डबल रोटी का डब्बा पड़ा था और एक खाली प्लेट. बेबी ने कुछ खाया होगा, शुभ्रा ने कुछ खाया होगा, ऐसा नहीं लग रहा था.

"शुभ्रा, चाय वगैरह बनाई?" कुछ देर की खामोशी के बाद सरस्वती ने पूछा था.

कुछ उत्तर देने से पूर्व शुभ्रा ने अपना मुख दूसरी ओर करना चाहा था. फिर भीगीभीगी वाणी में प्रयत्नपूर्वक बोली थी, "अभी नहीं, इच्छा ही नहीं हो रही है."

"खाना मैं ले आती हूं, तू थकी हो[illegible] कहां बनाएगी. खा कर सो जा तो थ[illegible] उतरे."

"मौसी, बस अब खाने के लिए [illegible] कहना. बिलकुल भी खाया नहीं जाए[illegible] बस, अब तो खूब सोने की इच्छा हो रही [illegible] जी चाहता है बस गहरी नींद में सो जाऊं [illegible]

"मां के घर गहरी नींद नहीं सोई क्या[illegible] वहां तो निश्चिंत हो कर सो सकती थी. हां, [illegible] तेरी एक चिट्ठी आई है."

शुभ्रा ने थरथराते हाथों से चिट्ठी [illegible] ली थी. भेजने वाले का नाम न होने पर [illegible] वह जान गई थी कि किस की है. खोल [illegible] पढ़ने का जैसे साहस ही नहीं हुआ था. [illegible] पर रख कर सामान ठीक करने लगी [illegible] चाबी वह मौसी को दे ही गई थी. उ[illegible]

आज सवेरे ही कमरे में झाड़ू लगवा दी थी.

बेबी उत्सुकता से पत्र की ओर देख रही थी. किस का पत्र है? मां खोल कर पढ़ेंगी नहीं क्या? मां की तो आदत है कि पत्र देखते ही उस पर टूट पड़ती हैं, चाहे कुछ भी काम कर रही हों.

"किस की चिट्ठी है, मां? पढ़ोगी नहीं?"

"तुझे क्या, किसी की भी हो. तुम सोने की तैयारी करो. हाथपैर धो कर कपड़े बदलो." चिढ़े स्वर में उस ने आदेश दिया था.

बेबी एकाएक सहम सी गई थी, 'इलाहाबाद में तो वह कितना मीठा बोलती थी. कभी भी उस को डांटा नहीं था. यहां आते ही पता नहीं क्या हो गया. रास्ते भर भी कुछ नहीं खाया. शायद उन की तबीयत ठीक न हो.' नन्हा सा मन कहां तक आगे बढ़ पाता?

बेबी ने मौन आंखों से मां की ओर देखा

"कुछ खास काम कर रही होंगी," आशा ने कहा तो शुभ्रा बोली, "हां, एम.ए. करने की सोच रही हूं."

शुभ्रा को अपनी बहन क्षिप्रा की शादी के मौके पर कठिन दौर से गुजरना था, यह जानते हुए भी वह चट्टान की तरह सब कुछ झेलने को तैयार हो गई.



और झटपट कपड़े उठा कर स्नानगृह की ओर चल दी थी. हमेशा दुलराने वाली मां को जाने क्या हो जाता है कभीकभी, बस बिना मतलब डांटने लगती हैं.

सरस्वती ने बेटे से ऐसे ही पूछा था, "किस की चिट्ठी होगी?" उस ने मुहर देखी तो लखनऊ की थी और भेजने वाले के नाम की जगह अंगरेजी में 'एस' अक्षर ही लिखा था. वह व्यंग्य से हंसा था, "होगी किसी यारदोस्त..."अंतिम शब्द धीरे से कहा गया था. ऐसे में बहू ने ही कहा था, "उसी सुरेश की होगी. कोई रिश्तेनाते का होता तो नाम क्यों छिपाता?"

"नाम तो उस ने भी नहीं छिपाया. वह तो यहां तक आया ही था. छिपाना होता तो ऐसे सरेआम मिलनेरहने को क्यों आता?" कहने को तो वह कह गई थी, मगर यथार्थ को समझने में वह भूल नहीं कर पा रही थी.

"अम्मांजी, अब आप कितना ही शुभ्रा का पक्ष लो, सच तो सच ही है. एक तरफ तलाक मिल जाएगा तो दूसरी तरफ कोई रहा ही होगा, जिस के कारण पति बुरा लगने लगा होगा."

"कौन जाने, बहू, क्या बात है. पराए हों या अपने, किसी के दुख पर हंसना नहीं चाहिए."

शुभ्रा के घृणा और आतंक के बदलते भावों को पढ़ने में सरस्वती को देर नहीं लगी थी. उस का चेहरा भी तो ऐसा शीशे का सा है कि मन का सुखदुख सब प्रकट हो जाता है.

सरस्वती ने यह सोच कर कि कौन जाने वह अकेले में बैठ कर चिट्ठी पढ़ना चाहती हो, उस का यहां रहना उसे भला न लगे, वह बाहर जाने को उठी ही थी कि शुभ्रा ने उस का हाथ पकड़ कर कहा था, "यह क्या, मां, तुम जा रही हो? बैठो न."

"नहीं तो, जा कहां रही हूं." उस ने कहना चाहा था, मगर वाणी जैसे अवरुद्ध हो गई थी. भरीभरी आंखों से शुभ्रा को देखते हुए उस ने अपने कांपते हाथ उस के गले में डाल दिए थे, जैसे कोई डाल से टूटी [illegible] जुड़ी टहनी लटक रही हो.

शुभ्रा को अपने से चिपटाते हुए [illegible] कहा था, "मेरे लिए तू बेटी ही [illegible] शुभ्रा."

पत्र सुरेश का ही था, जिस में लि[illegible] था कि किसी भी पेशी पर उस के हाजि[illegible] होने के कारण प्रशांत की तलाक की अ[illegible] मंजूर कर ली गई है. और यद्यपि शुभ्रा [illegible] अपने व्यवहार द्वारा सुरेश के प्यार को [illegible] ठुकरा दिया है, फिर भी वह उस का [illegible] थामने को तैयार है.

सुरेश ने सोचा था, शायद अब [illegible] शुभ्रा को कुछ चमत्कार होने और प्रशांत [illegible] उस के आगे समर्पण करने की आशा [illegible] हो, इसी से यथार्थ से दूर भागने की कोशि[illegible] करती रही है. अब जब वह प्रसंग [illegible] समाप्त हो गया, तब तो विश्वास [illegible] ही. सुरेश का पत्र पढ़ कर शुभ्रा के मुख [illegible] कई भाव आएगए. उस से घृणा करे [illegible] प्यार? प्यार तो अपनेआप हो जाता है. [illegible] के मन में तो कभी भी सुरेश के प्रति प्[illegible] हुआ ही नहीं. वैसे भी अभी दोएक वर्ष [illegible] विवाह का प्रश्न ही नहीं उठता.

सरस्वती एकटक उसे देखती [illegible] थी. शुभ्रा ने उन आंखों में प्रेम और वात्स[illegible] की जिस अजस्र धारा का प्रवाह देखा, उस [illegible] आगे उस की संकोच और गोपनीयता [illegible] दीवार ढह गई थी.

"मां बैठो न," कह कर शुभ्रा चाय [illegible] लाई थी—अपने लिए एक कप और मांजी [illegible] लिए स्टील के गिलास में. धीरेधीरे होंठों [illegible] लगाते हुए शुभ्रा ने अपना सब कुछ कह दि[illegible] था.

"ठीक किया तू ने. यह भी कोई [illegible] हुआ. मान लिया कि औरत से कोई गलती [illegible] गई, अपराध हो गया, पर ऐसा भी क्या [illegible] कि चुप्पी साध ले. एक लाइन तक [illegible] लिखी. तो इस का मतलब तो यही हुआ [illegible] खुद घर के दरवाजे बंद कर दिए. आता और [illegible] दो बात कह कर हाथ भी धर देता तो औरत [illegible] उस के आगे पानी हो जाती. लेकिन, बेटी, [illegible]

ने मुंह से क्यों नहीं कहा इतने दिन? मैं यह नौबत ही न आने देती. कुछ भी हो, औरत तो सहनशील होती है, मर्द के चार अपराध भी भूल जाती है. अपना आदमी अपना ही होता है. बिगड़ेगा, बनेगा, फिर भी अपना ही रहेगा. उस की जगह कोई नहीं भर सकता."

शुभ्रा होंठों से दांतों को दबाए मौन बैठी रही थी.

"छोड़ दे, तेरी चाय तो ठंडी हो गई है. मैं अभी गरम बना कर भेजती हूं. यह चिट्ठी सुरेश की है?"

"हां." शुभ्रा को आश्चर्य हुआ था, बिना कुछ कहे ही मौसी ने यह कैसे जान लिया था. फिर सोचा था, इस पर 'एस' लिखा है, शायद इसी से अंदाजा लगाया होगा.

शुभ्रा के मुख पर विरक्ति के वही भाव हो आए थे जो सुरेश को देख कर हुए थे. शुभ्रा ने मौसी को पत्र का सार कह सुनाया था. लेकिन सरस्वती के मन में संदेह उठा था, "वह तुम को अपना लेगा?"

"कहा तो था और लिखा भी है,"

शुभ्रा ने एकांत में अपनी मां से कहा, "अच्छा हो कि मुझे कुछ दिन के लिए बाहर हो आने दो. शादी के बाद फिर आ जाऊंगी"



शुभ्रा ने उसी विरक्त भाव से कहा था.

"तब मैं ने उसे गलत समझा, बेटी, मुझे माफ कर दे, मैं ने तो समझा था वह ऐसे ही छिछले चरित्र का आदमी है. अगर ऐसी बात है तो तू उसे आने को लिख दे. हम भी देखसमझ लेंगे."

"अच्छा, "शुभ्रा ने हामी भरी थी, "लेकिन अभी नहीं."

"हांहां, अभी नहीं. मगर दोएक महीने में आ जाए, वचन देदे तो ब्याह तो कभी भी होता रहेगा. एक आड़ तो बनी रहे."

ब्याह! शुभ्रा को लगा था जैसे किसी ने कलेजे में नशतर चुभो दिया हो. बेबी नहा कर आई तो सरस्वती ने उसे अपने घर भेज दिया था और कहा था, "वहीं खाना खा कर खेलती रहना."

बेबी ने कोई प्रतिवाद नहीं किया था. मां की गंभीरता जैसे उस का बचपन छीनती जा रही थी. शुभ्रा खोईखोई सी रहने लगी थी. अब तक स्वभाव में रोष और तने रहने की जो प्रकृति थी, उस से वह टूटती जा रही थी. जहां वह दो जनों को बात करते देखती तो सिहर उठती थी, जैसे सब उसी की आलोचना में लगे हों. कभीकभी स्कूल की साथ की अध्यापिकाएं कहीं आनेजाने को कहतीं तो वह चट से बहाना बना कर टाल जाती थी. कक्षा में पढ़ाने के बाद खाली समय में भी वह अपने को व्यस्त दिखाने का प्रयत्न करती रहती थी.

चार बच्चों की मां श्रीमती आशाशरण ने जब उसे स्टाफ रूम में अकेले कापियों का ढेर फैला कर सोचते देखा तो कहा था, "आप तो स्कूल ही में सब काम निबटाने की सोचती हैं, जैसे घर में बहुत काम हो."

इस से पहले कि वह कुछ उत्तर दे, उस ने सुना था, "अरे, आप को घर में कौन सा काम है? लेदेकर एक ही तो बच्ची है, वह भी समझदार हो गई है. यह काम तो घर के लिए बचा कर रखना चाहिए, ताकि घर में जी लग सके. हमारी बात दूसरी है. हम लोग जरूर यह सोचते हैं कि घर में घर के लोगों के साथ बैठनेउठने को कुछ समय मिल जाए."

"शरण साहब तो एक दिन घर में रहें तो मैं कितना भी व्यस्त रहूं, फिर भी लगता है जैसे कुछ काम ही नहीं है."

"पति के घर रहने की बात ही और होती है. काम हो या न हो, आदमी वैसे ही व्यस्त रहता है. फिर चार जनों का आनाजाना."

शुभ्रा ऐसे समय, होठों में बुदबुदाते हुए. नीची दृष्टि से अपनेआप से ही कुछ कहने का प्रयत्न करने लगती.

"कुछ खास काम कर रही होंगी." आशा ने उपमा की ओर रहस्यपूर्ण दृष्टि डाली थी.

शुभ्रा ने देख कर भी अनजान बनते हुए कहा था, "हां, एम. ए. करने की सोच रही हूं."

"अच्छा, जरूर करिए, दिल लगा रहेगा," आशा ने जबरन हंस दिया था.

"हम तो सोचते ही रहे, मगर एक के बाद एक आती फौज के आगे कुछ नहीं कर सके."

"मैं ने भी सोचा था, किसी दूसरे विषय में एम. ए. कर डालूं, लेकिन हमेशा

इश्क

जख्म पै जख्म खा के जी,
अपने लहू के घूंट पी,
आह न कर, लबों को सी,
इश्क है, दिल्लगी नहीं.

— एहसान दानिश



देखता जाता है. अब शुभ्राजी से प्रेरणा ले कर हम भी कुछ करेंगे."

दोनों कमरे से बाहर आ चुकी थीं. शुभ्रा ने आशा को उपमा से कहते सुना था, "भई, अधिक प्रेरणा न लेना, नहीं तो तुम्हारे वह क्या करेंगे फिर?"

खिलखिलाहट इतनी कर्णकटु भी हो सकती है, शुभ्रा कापी पर उंगलियां फेरती सोचती रही थी.

उस समय तो शुभ्रा ने यों ही कह दिया था, किंतु घर आ कर गंभीरतापूर्वक सोचा था, बेबी के लिए उस ने ही जिम्मेदारी ली है, प्रशांत को यह अधिकार उस ने नहीं दिया. अब अपने को आगे बढ़ाना उस का कर्तव्य है ताकि बेबी को तुच्छता का एहसास न हो. मां को योग्य देख कर वह शायद और कमियों पर ध्यान नहीं दे.

उसे पढ़ना तो प्राइवेट ही था, परीक्षा भी प्राइवेट ही देनी थी. वह वहां के दो वयोवृद्ध प्राध्यापकों—रामसहाय और मधुसूदन से मिली. डिगरी कालिज वहां था ही एम. ए. करने के लिए. जो वहां से बैठना चाहते, ये लोग उन की सहायता कर देते थे.

रामसहाय वहां के डिगरी कालिज में पढ़ाते थे. हिंदी, इंगलिश दोनों में एम. ए. के पीएच. डी. भी कर रखी थी. शुभ्रा ने सोचा, उन से अद्यतन साहित्य को समझने में सहायता मिलेगी.

मधुसूदन संस्कृत के प्रकांड पंडित थे. काशी में पढ़े थे, वहीं शिक्षक रहे थे. रिटायर हुए तो अपने पुराने घर में चले आए थे.

शुभ्रा सोचती थी कि पंडितों को काशी से बढ़ कर कोई स्थान न लगता होगा. फिर यह यहां क्यों चले आए? वहीं क्यों नहीं रहे? एक दिन उस ने पूछ ही लिया था.

"तुम्हारा कहना ठीक है. काशी के माहात्म्य से इनकार नहीं. किंतु ऐसा खुलाखुला वातावरण मुझे वहां कहां मिलता? अपने पास धनसंपत्ति तो थी नहीं कि कहीं ऐसी जगह खरीद कर रह सकता.

जवाब नहीं

चमन का रंग नहीं है
गुहर की आब नहीं,
मगर वह क्या है कि जिस का
यहां जवाब नहीं?

— डा. नासीर

फिर यह भी सोचा, काशी में तो गलीगली में पंडित हैं, जो कुछ विद्या मुझे प्राप्त हुई है, उसे अपने नगर में ही चल कर लुटाऊं. वैसे हमारी पंडिताइन तो आने के नाम पर मुंह सुजाए बैठी थीं."

काकी ने आंचल से आधा मुंह ढक लिया था.

"हटो, हम ने क्या कहा था? जहां तुम ले आए, वहीं चले आए."

तुम्हारा अपना मन भी तो था, भला कह दो, नहीं? कैसे कह रही थीं, "चलो, गलीकूचे में रहने से छुट्टी मिले. अपना इतना बड़ा घर, खुला आंगन, पीछे बहती गंगा... यह दूसरी बात है कि घरआंगन कच्चा ही है."

पंडिताइन ने बात काटते हुए कहा था, "अब कुछ भी कहो तुम, सीता वहीं रहेगी, जहां उस के राम रहेंगे," कहतेकहते खट से जैसे सांस रुक गई थी, पसीनेपसीने हो गई थी काकी.

शुभ्रा को उन की बातें सुन कर लगा था, कितना सुखी दांपत्य जीवन है इन का. एक वह है...और उस के राम.

मधुसूदनजी ने उस से कुछ भी नहीं पूछा था, किंतु उस के विषय में सब जान गए थे. सप्ताह में दोएक दिन शुभ्रा उन के घर

जाती और उस के दोएक घंटे अत्यंत मधुर वातावरण में बीतने लगे थे.

मार्च शुरू भी नहीं हुआ था कि मां के पत्र आने लगे कि छुट्टियां होते ही इलाहाबाद चली आना. जैसे ही माधुरी ने सुना कि शायद परीक्षा स्थगित हो रही है, उसे चिंता होने लगी थी कि कहीं ऐसा न हो कि शुभ्रा परीक्षा की तैयारियों की बात कह कर वहीं रह जाए.

शुभ्रा का जब पत्र मिला कि परीक्षा अपने समय से ही हो रही है और वह परीक्षा देने के लिए वाराणसी में सरस्वती मौसी के रिश्तेदार के घर में ठहरेगी और मौसी भी उस के साथ जाएगी, तब कहीं जा कर उस की चिंता दूर हुई थी. एक तलाकशुदा लड़की के मांबाप के घर से बाहर रहने के कारण उसे हमेशा यह डर लगा रहता था कि कहीं कोई ऊंचनीच न हो जाए, पर साथ ही उसे संतोष भी था कि अब तक ऐसीवैसी कोई बात सुनने को नहीं मिली है और अब शुभ्रा परीक्षा के लिए वाराणसी भी जा रही है तो अपनी मकान मालकिन के साथ.

शुभ्रा को इलाहाबाद गए वर्ष भर हो गया था. बीच में चारछः दिन की छुट्टी भी मिली, लेकिन वह पाती कि उस में वहां जाने का उत्साह ही नहीं रहा है. जहां एक ओर उस के मन में मांबाप के स्नेहपूर्ण क्षणों को जीने की इच्छा होती थी, भाईबहन के चुलबुले स्वभाव में अपने को खो देने का मन होता था, भतीजे के शैशव के कलरव को देखने की चाह होती थी, वहीं कुछ चुभते व्यंग्यबाण, कुछ चुभती दृष्टियां उसे हतोत्साहित कर देती थीं. पढ़ने का बहाना कर के वह न शरदकालीन छुट्टियों में आई, न जाड़े में. मां की अकुलाहट बढ़ती ही जा रही थी.

सरस्वती हमेशा जोर देती थी कि छुट्टियों में वह घर हो आए. वह कहा करती थी, "मां का दिल दुखता होगा. बेटी ससुराल में सौ सुखों के बीच रहे, तब भी मां की ममता उसे देखने को बेचैन रहती है. और तू समझती है कि मां तेरा दुख नहीं पहचानती. फिर बेबी की भी तो सोच, यहां रहतेरहते घर में बंधी रहती है. कहीं भी बाहर आनाजाना नहीं होता. कैसी अनमनी रहती है. बारबार इलाहाबाद की याद करती है."

शुभ्रा सरस्वती मौसी की बातों का कोई जवाब नहीं देती थी. बस, इस प्रसंग के छिड़ते ही उस की आंखें भीग जाती थीं.

"मां, दीदी आई हैं," क्षिप्रा और मुकुल मां को खबर देने जब उत्साह से चीखतेचिल्लाते अंदर को भागे तो क्षण भर को शुभ्रा स्वयं को भूल गई कि वह आठ वर्ष पहले वाली दीदी है, जब वह ब्याह के बाद महावर, टीका, सिंदूर, बिछुए, हाथ भर चूड़ियां पहने ससुराल से प्रथम बार लौटी थी या परित्यक्ता शुभ्रा जिस का शृंगार भी अब दूसरों की दृष्टि में चुभने लगा है.

मां ने आते ही उसे अंक में भर लिया था. ठुमकता हुआ दो वर्ष का मनु अचरज से शुभ्रा को देख रहा था. निशि ने उस से कहा था, "बूआजी को नमस्ते करो. जल्दी से हाथ जोड़ो."

"बूआ नहीं," मनु ने दौड़ कर क्षिप्रा को पकड़ लिया था, "यह बूआ नहीं."

"अरे, यह भी तेरी बूआ हैं...बड़ी बूआजी." क्षिप्रा मनु को सिखाने की कोशिश कर रही थी, "जिन की फोटो है न... वहां कमरे में, यह वही बूआजी हैं."

शुभ्रा भतीजे के हावभाव को देख मुग्ध हो ही रही थी कि माधुरी ने उस से कहा था, "अच्छा हुआ, शुभ्रा, तुम ठीक मौके पर आ गई हो. क्षिप्रा को मिर्जापुर से कुछ लोग देखने आ रहे हैं. वह तो सुनती ही नहीं. भई, कोई आए तो कुछ बनावसिंगार कर के तो जाना चाहिए. अब तुम ही इसे समझाओ."

शुभ्रा का शिशुलीला को देख कर उत्फुल्ल हुआ चेहरा एकाएक विवर्ण हो उठा था, "इधर कोई आया था देखने?"

"कोई क्या, कितने ही लोग आए.

उत्तर दिया था निशि नें.

पर कितने ही लोगों के आने के बावजूद बात क्यों नहीं बनी, यह सोचते ही क्षिप्रा मर्माहत हो उठी थी और माधुरी संकुचित.

"लेकिन असल बात यह है कि..." निशि ने आगे कहना चाहा था कि बीच में माधुरी बोल उठी थी, "शक्लसूरत को ले कर तो किसी ने कुछ नहीं कहा."

"फिर?" शुभ्रा शंकित मन से पूछ बैठी थी. उसे लगा था, अवश्य ही इन सब लोगों से उस के ही कारण संबंध बनतेबनते रह गया होगा.

"बात यह है, बेटी, कि जितना ही लड़की की शक्लसूरत और गुणों पर जोर दिया जाने लगा है, उतना ही कोई अच्छा लड़का होने पर रुपए की मांग भी बढ़ती जा रही है."

निशि ने व्यंग्यपूर्वक कहा था, "जानती हो, एक लड़के वाले 60 हजार मांग रहे थे. तुम्हारे पिताजी चालीस तक देने को तैयार हो गए थे. बोले, मोटर बेच देंगे, नहीं तो मकान का एक हिस्सा. एक लड़की है शादी हो जाए, बस."

"लेकिन क्षिप्रा में कौन सी कमी है या लड़के में कौन से सुरखाब के पर लगे थे?"

"यही तो बात है, शुभ्रा रानी, क्षिप्रा में तो कोई कमी नहीं, चार में पहचानी जाती है, अच्छी लगती है मगर...".

तभी रामेंद्रकुमार आ गए थे. शुभ्रा के सिर पर हाथ रखने के बाद उन्होंने उस की बिटिया को गोद में उठा लिया था. निशि की बात अधूरी ही रह गई थी. किंतु शुभ्रा सब समझ गई थी. क्षणक्षण में कटाक्ष को झेलती वह अपने को संयत किए हुए थी.

शुभ्रा ने अपनी कसम खिला कर क्षिप्रा को किसी तरह बनावसिंगार के लिए तैयार कर लिया था. वह उस से बोली थी, "क्षिप्रा, मेरे साथ जो होना था सो हो गया. मगर तेरा सुख देख कर मुझे सुख होगा, मां और पिताजी की चिंता मिटेगी."

"मेरा कौन सा अपराध है, दीदी? जब कोई देखने आता है, शो पीस बन कर बैठ जाती हूं. लोग जो कहतेपूछते हैं, उत्तर दे देती हूं. जानती तो हैं आप हमारे समाज को. अभी तो पिताजी ने उन लोगों को कुछ नहीं बताया होगा, लेकिन रिश्तों के रिश्तों की टोह लेने के बाद कोई तैयार होगा भला? जब वे सुनेंगे बहन..."



शुभ्रा ने अब तक अपने को संभाला हुआ था. निशि के कटाक्षों, व्यंग्यबाणों की वह आदी हो चुकी थी. मातापिता की दयनीय दृष्टि को भी वह झेल जाती थी. मगर बहन... उस की ही सहोदरा का कथन उसे छील गया था. वह थरथराते हाथों से साड़ी की भांज ठीक करते हुए बोली थी, "मैं उन से कह दूंगी कि जरूरी थोड़े है कि बहन जैसी ही हो, परिस्थितियां भी तो कुछ होती हैं. फिर... एक बहन का आचरण अच्छा न हुआ तो क्या, दूसरी सीतासावित्री भी तो हो सकती है."

"दीदी, मेरा यह मतलब नहीं था," क्षिप्रा सकुचा गई थी, "लोग जाने क्यों उलटीसीधी बातें सोचते हैं. पुरातनपंथी लोग अभी भी नहीं समझते कि केवल आचरण की ही बात नहीं, आपसी तालमेल की बात भी होती है. आज औरत कोई पैर की जूती नहीं कि सब सहती जाए. उसे भी बराबर के अधिकार हैं."

"जरा शीशे में देख, क्षिप्रा, पाउडर तो मैं ने एकदम हलका लगाया है कि पता भी न चले."

क्षिप्रा दीदी पर कातर दृष्टि डाल कर सोचने लगी थी, 'कैसी है दीदी? कभी कुछ बात ही नहीं करती कि आखिर क्यों नहीं पटी जीजाजी से. हमेशा ही टाल जाती है.'

"ठीक ही होगा, दीदी, वैसे अच्छा है वे लोग पसंद न करें. मुझे नौकरी मिल रही है, कर लूंगी. भाभी भी कहती हैं कि नौकरी कर लो."

"क्यों?"

"यही कि जब नौकरी मिल रही है तो कर लो. एम.ए. कर हीं चुकी हो, बाद में जरूरत पड़े तो अनुभव तो रहे."

"फिर तू ने क्या कहा?"

"कहती क्या, जीजी जब परिस्थितियों ने झुकाया है तो झुक कर ही रहना होगा."

लेकिन शुभ्रा में यही तो कमी थी शायद. अगर वह झुकना ही जानती तो क्या कभी ऐसा हुआ होता? क्षिप्रा के कथन पर पल भर वह चुप रही थी. फिर अनायास ही शेरनी की तरह बिफर उठी थी, "पता नहीं इस में झुकने की कौन सी बात है. दूसरे की इच्छा को अपने ऊपर लादे रहो, ऐसा जीवन मुझे पसंद नहीं था तो इस में किसी का क्या आताजाता है?"

"देख तो रही हो, दीदी, आप क्या जानती नहीं कि लड़की के अच्छेबुरे का असर उस के परिवार पर भी पड़ता है. मां और पिताजी तो सिर उठाने लायक भी नहीं रहे. कहीं कैसा भी समारोह हो, वे जाने से कतराते हैं. वे भाभी की तरह आप को बुरा कह कर यह भी नहीं कह सकते कि आप से उन का कोई मतलब नहीं, कोई संबंध नहीं. वह तो आप का ही पक्ष लेते हैं. तब सीधेसीधे यही सुनना पड़ता है कि औरत को सहनशील होना चाहिए, तभी परिवार जुड़े रह सकते हैं. वैसे देखनेसुनने में, घरबार, नौकरी सभी लिहाज से जीजाजी तो अच्छे ही थे."

क्षिप्रा की बात सुन कर शुभ्रा एकदम सकते में आ गई थी. उस पर परिवार वालों को इतना रोष है, इस की उस ने कल्पना भी न की थी. वह तो इसी मुगालते में थी कि उस की स्थिति से उन लोगों के मन में करुणा ही उपजी है.

क्षिप्रा को उस ने तैयार कर ही दिया था. लड़के वालों के स्वागतसत्कार में उसे कोई भाग नहीं लेना था. वह शिथिल मन से उठी और मां से जा कर बोली थी, "मैं जरा दुर्गा से मिलने जा रही हूं."

"दुर्गा के घर...अभी... आज ही?" सहेली के घर जाने की बात सुन कर मां को कुछ अजीब सा लगा था, विशेषकर यह सोच कर कि शुभ्रा तो किसी के कहने पर भी घर से बाहर नहीं जाती थी.

पर शुभ्रा ने मां के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया था. वह बेबी को ले कर तेजी से बाहर निकल गई थी.

इतने में निशि हाथ में आइसक्रीम का पैकेट लिए वहां आ गई थी और उसे फ्रिज में रखते हुए माधुर्य से बोली थी,

"भाभी, शुभ्रा रानी कहीं चली गई, अच्छा ही हुआ. वह उन के सामने होतीं और वे लोग कोई सवाल कर बैठते तो मुशकिल हो जाती."

"ओह!" सूखे होंठों को जीभ से तर करते हुए माधुरी के मुंह से एक आह सी निकल पड़ी थी.

शुभ्रा रात नौ बजे लौटी थी. माधुरी प्रतीक्षा में चिंतित थी, कहीं कुछ कर न ले. उसे लौट आया देख कर एक बोझ सा उस के सिर से उतरा हुआ लग रहा था, मगर दूसरी चिंता उसे बोझिल किए जा रही थी.

घर में पहुंचते ही मुकुल ने उस से कहा था, "दीदी, क्षिप्रा दीदी ने पानीपत का मैदान मार लिया."

"अच्छा, कैसे थे वे लोग? क्षिप्रा को पसंद कर लिया न?"

"हां, उन्होंने तो पसंद कर लिया, लेकिन मैं ने नहीं."

"ओहो, आप किसे पसंद कर रहे थे? अभी आप का नंबर आने में देर है, मुकुलजी."

शरमीली सी मुसकान दिखा कर मुकुल बोला था, "मेरा मतलब यह है कि जीजाजी मुझे कोई खास पसंद नहीं आए."

एकाएक सन्नाटा सा खिंच गया था कुछ देर के लिए.

"बकवास मत करो... लड़के के गुण देखे जाते हैं, सूरत नहीं." माधुरी ने घुड़की दी थी.

मुकुल खिसियाता सा वहां से हट गया था. फिर शुभ्रा को अकेले में देख कर उस ने कहा था, "प्रशांत जीजाजी के आगे वह बिलकुल नहीं जंचते."

दिन भर की उदासी, तनाव छंट सा गया था. शुभ्रा की आंखों में जाने क्यों एक पारे सी चमक झिलमिला गई थी.

"मिकी, तुझे वह इतने अच्छे लगते हैं?" कहते हुए उस का स्वर आर्द्र हो उठा था.

"हां, दीदी, कहो तो मैं उन से मिलने चला जाऊं? देखूं क्या कहते हैं वह."

छुआछूत

जिस प्रकार एक स्त्री संखिया से लोटा भर दूध बिगड़जाता है, उसी प्रकार छुआछूत से हिंदू धर्म चौपट हो रहा है. —महात्मा गांधी

"नहीं, अब नहीं," अंतर से फूटते स्वरों पर पूर्ण विराम लगा कर वह बोली थी. फिर जल्दी से बिजली बुझा कर वह ऊपर छत पर सोने चली गई थी.

टूटते स्वरों में कहा था रामेंद्रकुमार ने, "आज गांव से नाता टूट गया." दहेज की भारी मांग पूरी करने के लिए उन्होंने गांव की जमीन बेच दी थी.

माधुरी ने सहारा सा दिया था, "था ही कहां नाता, सिवा यह कहने को कि फलां गांव में हमारी भी कुछ जमीन है. अच्छा ही है, अब जोतनेबोने वालों के पास रहेगी."

माधुरी ने सदा ही पति का दुख बंटाने का प्रयत्न किया था. उस ने कभी भी रामेंद्रकुमार को दोष नहीं दिया था, न कभी दुखी रहने दिया था. उस ने कभी शुभ्रा को भी भलाबुरा नहीं कहा था. हमेशा समझाने की ही चेष्टा की थी. उस के मन को किसी व्यवहार से चोट न लगे, इस का हमेशा ध्यान रखा था. लेकिन जो कुछ हुआ था, उसे उस का संस्कारशील मातृहृदय स्वीकार नहीं कर पाया था. किंतु यह चोट मांबाप दोनों के लिए ही इतनी गहरी थी कि वे उसे झेल नहीं पा रहे थे. फिर वह चोट रह ही कहां गई थी. वह तो नासूर बन चुकी थी जिस से मवाद रहरह कर टपकने लगता था.

नातेरिश्तेदारों से घर भरने लगा था. छुट्टियों के दिन थे. बंगले में खुली जगह थी. कामधाम के लिए नौकर, महाराज थे. सो तिलक के दिन से ही भीड़ जुट गई थी. शादी होने में पांच दिन का ही तो अंतर था. इसलिए लोगों ने सोचा, कौन बारबार

आएजाए. बुआएं, चाचियां, रिश्ते की मौसियां, भाई सभी लोग आ गए थे. भीड़ के पहले रेले में चाची सपरिवार आई थीं. शुभ्रा उन्हें देखते ही अंदर के कमरे में चली गई थी. एकांत पा कर उस ने मां से कहा था, "अच्छा हो कि मुझे कुछ दिन के लिए बाहर हो आने दो. शादी के बाद फिर आ जाऊंगी."

"बाहर! कहां?"

"वहीं, सरस्वती मौसी के यहां शादी है. बहुत कहा था कि इन दिनों वहीं रहूं."

"क्षिप्रा की शादी छोड़ कर वहां जाएगी?" माधुरी विस्मय से कह उठी थी. लेकिन बेटी की झुकीझुकी आंखें और उतरा हुआ मुंह भी बहुत कुछ कह रहा था. रिश्तेदारों की झूठी सहानुभूति, सीख के व्यंग्यबाणों से बचने के लिए जाने को कह रही है, नहीं तो क्या क्षिप्रा को वधू रूप में न देख जाने को कहती!

अपने दिल पर पत्थर रखते हुए उस ने कहा था, "बेबी को भी ले जाओगी क्या? उसे तो यहां अच्छा लगेगा."

"ठीक है, उसे यहीं छोड़ दूंगी, मैं अकेली ही चली जाऊंगी."

"सोचा था, तबीयत ठीक नहीं है, तू रहेगी तो सब संभाल लेगी. अच्छा, जैसा ठीक समझो."

माधुरी ने एकएक शब्द सोचसोच कर कहा था. बोलतेबोलते उस की आंखें भीग गई थीं. मां की आंखों में आंसू देख कर शुभ्रा का मन पसीज उठा था.

शुभ्रा का मन कह रहा था, 'जब फुरसत में रिश्तेदार इकट्ठे हो रहे हैं तो व्यंग्यबाण तो छूटेंगे ही. तू उन्हें स्वयं ही चट्टान की तरह अडिग हो कर झेल. लेकिन इस समय मां का कहना मत टाल.'

"अच्छी बात है, मां, मैं नहीं जाऊंगी."

माधुरी पुलकित हो उठी थी. 'इतनी भावुक और संवेदनशील मेरी बेटी... नहीं, वह दोषी नहीं हो सकती?' उस का मन पुकार कर कह रहा था. —क्रमशः

फिल्म नगरी: बंबई का हालीवुड

लेख • सतीशचंद्र धींगड़ा

भारत में आज प्रति वर्ष लगभग 700-800 फिल्में बनती हैं. इन में आधे से अधिक का निर्माण स्थल बंबई है और इन में भी 75 प्रतिशत से अधिक का निर्माण स्टूडियो में होता है. इस तरह बंबई फिल्मों की एक ऐसी मंडी है, जहां सपनों की दुनिया बिकती है. शुद्ध भाषा में कहें तो बंबई भारत की फिल्मी राजधानी है.

बंबई के अधिकांश स्टूडियो काफी पुराने ढर्रे के हो चुके हैं, इसलिए वे घुड़साल अधिक लगते हैं, स्टूडियो कम. बहुत दिनों से अधिकांश निर्माता, निर्देशक इस अवसर की तलाश में थे कि इन स्टूडियो का कोई विकल्प मिले, जिस से इस दमघोंटू वातावरण से मुक्ति मिले. इस विकल्प की उन की परिकल्पना थी—एक ऐसा रमणीय स्थल, जहां इनडोर, आउटडोर शूटिंग दोनों की सुविधाएं हों, बैकग्राउंड के लिए प्रकृति का नैसर्गिक सौंदर्य बिखरा हो आदि.

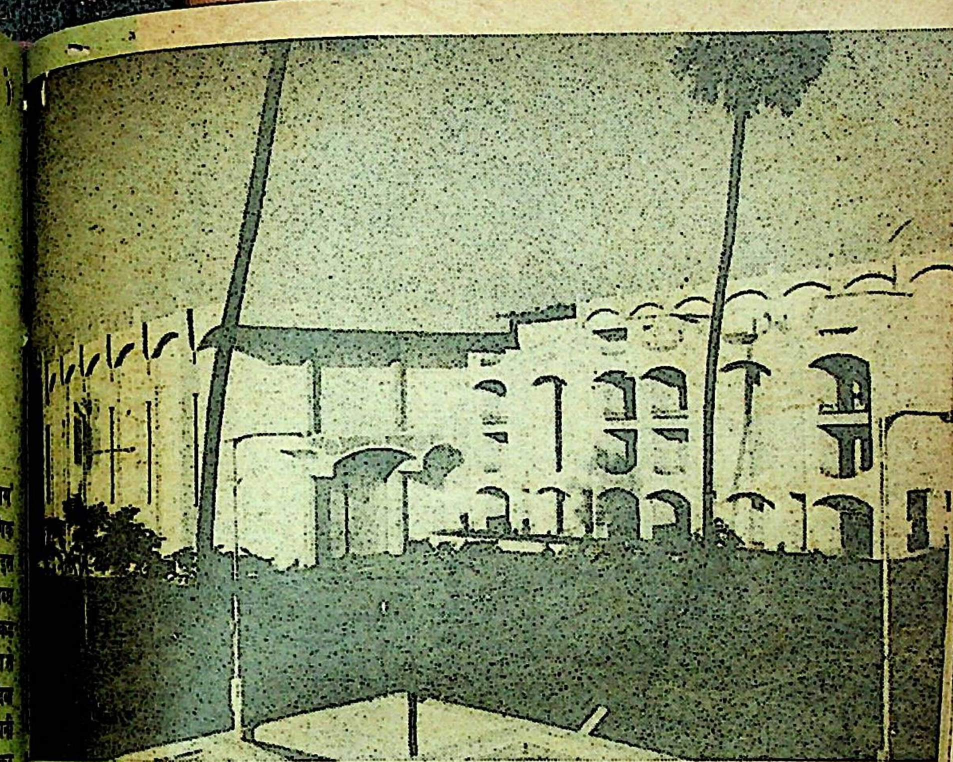
ये सब अपेक्षाएं अब बंबई की फिल्म नगरी (फिल्म सिटी) से पूरी होने की आशा है. बंबई के एक उपनगर गोरेगांव के पूर्व में आरे मिल्क कालोनी है. बस, उस से थोड़ा सा आगे प्रकृति के सुरम्य वातावरण में फिल्म नगरी स्थित है. माहिम से कार या टैक्सी द्वारा 15-20 मिनट और बांद्रा से लगभग आधे घंटे में यहां पहुंचा जा सकता है. यों बंबई परिवहन की बसें भी उपलब्ध हैं.

फिल्म नगरी का निर्माण 'महाराष्ट्र फिल्म मंच एवं सांस्कृतिक विकास निगम' के तत्त्वावधान में 'महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम' द्वारा किया गया है. इस प्रयोजन के लिए 392 एकड़ भूमि उपलब्ध कराई गई है, इसी में से लगभग 100 एकड़ जमीन के 50-55 प्लाटों को फिल्म उद्योग से संबंधित लोगों को 95 वर्ष के पट्टे पर दिया गया है, जिस से वे इस का अपनी आवश्यकताओं के अनुसार विकास कर सकें.

वर्तमान में फिल्म नगरी स्टूडियो का पूरा परिवार लगभग 10.5 एकड़ है, पर इस के साथसाथ पांच एकड़ भूमि में भविष्य में कई चीजें बनाने की योजना है. शेष लगभग 200 एकड़ भूमि को यथास्थिति रखा जाएगा, जिस से इस का प्राकृतिक स्वरूप बरकरार रह सके.

फिल्म नगरी के निर्माण में किस का सर्वाधिक और सक्रिय योगदान रहा, यह

बंबई के दर्शनीय स्थलों में जुड़ा एक और नाम—फिल्म नगरी, जहां इनडोर और आउटडोर शूटिंग की सुविधाओं के साथसाथ प्रकृति ने भी अपना नैसर्गिक सौंदर्य बिखेर रखा है.



फ़िल्म नगरी में बना स्टूडियो नं. 1 तथा साथ ही बने फ्लैट्स.

कहना जरा मुश्किल है, क्योंकि समयसमय पर फिल्म उद्योग से संबंधित लोग इस तरह के एक अलग स्थान की मांग करते रहे हैं, वहां उन की सारी आवश्यकताएं एक साथ पूरी हो सकें. जिस तरह अमरीका में लासएंजेलेस के पास हालीवुड है, उसी तरह फिल्म नगरी भी बंबई का हालीवुड बन गई है, क्योंकि यहां अब स्टूडियो के साथसाथ कई फिल्म निर्माण संस्थाओं के कार्यालय भी बन गए हैं.

प्रमुख निर्माता एवं निर्देशक शांताराम का इस फिल्म नगरी के निर्माण से गहरा संबंध रहा है. एक दिलचस्प घटना उन की फिल्म 'स्त्री' के जमाने की है. अपनी फिल्म की आउटडोर शूटिंग के लिए जब वह स्थान की तलाश में थे तो वह यहां भी आ धमके और उन्हें यह जगह बहुत पसंद आई. उन्हें खयाल आया, यदि प्रस्तावित फिल्म नगरी यहीं बने तो क्या ही अच्छा हो. उन दिनों दिलीपकुमार 'फिल्म प्रोड्यूसर्स गिल्ड आफ इंडिया' के अध्यक्ष थे. वह भी इस से पहले कई बार बंबई के पास एक अलग फिल्म नगरी के निर्माण की वकालत कर चुके थे. अब शांताराम और दिलीपकुमार दोनों ने जोरदार ढंग से फिल्म नगरी के निर्माण की परियोजना पर बल दिया और इस बार सरकार मान गई.

पर सरकारी तंत्र की मान्यताओं के अनुसार उस का निर्माण कार्य 1974 के आसपास शुरू हुआ और 1977 तक चला. यों कुछ निर्माण तो अब भी चल रहा है. 19 नवंबर, 1977 को श्री यशवंतराव बलवंतराव चव्हाण ने इस का उद्घाटन किया, पर स्टूडियो आदि में वास्तविक शूटिंग 1 फरवरी, 1978 को ही शुरू हो पाई.

फिल्म नगरी के पीछे एक और प्रमुख प्रेरणा स्रोत श्रीराम गाबले हैं. वह मराठी के

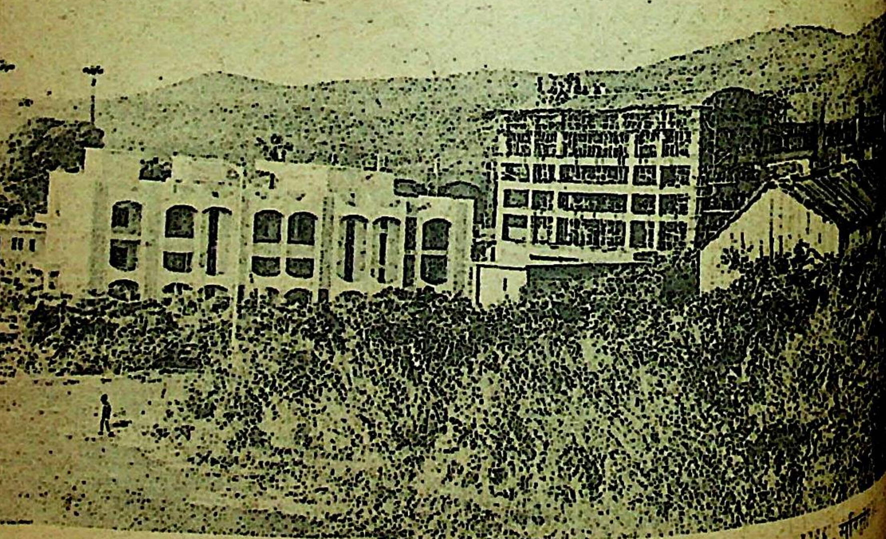
प्रसिद्ध फिल्मकार हैं, जिन्होंने 'देव बाप्पा 'दूधभात,' 'छोटा जवान,' 'जा शासतासे' जैसी चर्चित फिल्में बनाई हैं.

आजकल वह निगम के संयुक्त प्रबंध निदेशक हैं और फिल्म नगरी के विकास के लिए जिम्मेदार हैं. उन का कहना है, "पुराने जमाने में प्रभात, बंबई टाकीज़, न्यू थिएटर्स, रणजीत आदि फिल्म स्टूडियो हुआ करते थे. ये स्टूडियो न हो कर अच्छे सिनेमा के महत्त्वपूर्ण निर्माता भी थे. इन की समाप्ति के बाद समय काफी बदल गया है और लगता था कि इन की कभी क्षतिपूर्ति नहीं होगी. पर आज फिल्म नगरी जिस रूप में विकसित हो रही है, उसे देख कर अब मेरा दृढ़ विश्वास है कि यह उन की कमी को पूरी तरह दूर कर के रहेगी. मैं इस नगरी को इस परिप्रेक्ष्य में देखता हूं, जहां न केवल श्रेष्ठ फिल्में बनेंगी वरन वे देखी भी जाएंगी और चर्चित भी होंगी. एक फिल्म लाइब्रेरी, एक छात्र प्रयोगशाला बनाने का भी विचार है. जहां लोग फिल्म निर्माण सीखेंगे और हम इस ओर अग्रसर हैं."

आइए, आप को फिल्म नगरी की सैर कराएं : प्रवेश करते ही दाईं तरफ लंबी इमारत है. जिस में इस का कार्यालय है. पर ऊपर सितारों आदि के लिए वातानुकूलित विश्राम कक्ष हैं. एक रेस्तोरां भी है. बाईं तरफ दो विशाल स्टूडियो फ्लोर हैं. इन का आकार क्रमशः 90'x140'x55' तथा 80'x120'x45' हैं. इस से पहला वाला भारत का सब से बड़ा स्टूडियो फ्लोर है. यहां प्रत्येक तरह की लाइटिंग की सुविधाएं उपलब्ध हैं. कैमरे, टेपरिकार्डर तथा अन्य आवश्यक उपकरण प्रचुर मात्रा में हैं. साथ ही संपादन कक्ष भी है.

इसी क्रम में फिल्मी सितारों के लिए 12 वातानुकूलित मेकअप रूम हैं, जिन का प्रयोग शूटिंग के समय होता है. यों जूनियर कलाकार (पुरुष एवं स्त्री) के लिए भी दो मेकअप रूम हैं. इस तरह फिल्म नगरी के

फिल्म नगरी में फिल्म 'काला पत्थर' का एक सेट.





फिल्म नगरी में बाएं से दाएं श्रीराम गावले, व्ही. शांताराम, रामदास पाहवा, गजानन जागीरदार और गुलजार.

बारे में यह कथन काफी सीमा तक सही है कि यदि कोई फिल्म निर्माता इस में सिर्फ फिल्म की पटकथा ले कर ही प्रवेश करे और चाहे तो फिल्म की सेंसर प्रति के साथ वापस हो सकता है. (हां, रुपया भी साथ होना चाहिए.)

फिल्म नगरी के अंदर जहां आउटडोर शूटिंग के लिए स्थान है, वहीं बागबगीचे भी हैं. फिल्म नगरी में एक सजासंवरा बाग हैं. इस की पृष्ठभूमि में सुरम्य पहाड़ियां है और पीछे महानगर का विशालकाय स्वरूप. इस से थोड़ा आगे जा कर एक कृत्रिम झील और छोटा सा बांध भी है, जिस में शूटिंग के समय आवश्यकतानुसार पानी में वृद्धि और कमी की जा सकती है. साथ में कुछ घाट भी बने हैं. यदाकदा इस में नाव भी चलती है तथा पीछे बहते हुए झरनों की पृष्ठभूमि है. संध्या के समय ये सब बड़ा नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत करते हैं. आजकल यहां सूर्यास्त के भी दृश्य फिल्माए जाते हैं. इस के अतिरिक्त फिल्म नगरी में तैरने का तालाब है, जहां स्नान तथा अन्य प्रेमप्रसंग फिल्माए जाते हैं.

फिल्मों में आप अकसर हेलीकोप्टर आदि का उड़नाउतरना देखते हैं. साथ ही कभीकभी लड़ाई के दृश्य भी नजर आते हैं. इस सब के लिए एक हेलीपेड बनाया गया है. जहां वास्तव में हेलीकोप्टर उतर सकता है और जहां से उड़ भी सकता है. यों फिल्मों की शूटिंग के लिए एक नकली हेलीकोप्टर भी बनाया गया है, जो असली का आभास देता है और सुविधानुसार इधरउधर लाया जा सकता है.

इस के अतिरिक्त हस्पताल, स्कूल आदि के दृश्यों के लिए कुछ प्लाट भी हैं. फिल्म नगरी में फिल्म उद्योग की सक्रिय दिलचस्पी बनी रहे, इसलिए 100 एकड़ भूमि में फैले लगभग 50-55 छोटे भूखंड फिल्मोद्योग को उपलब्ध कराए गए हैं. जिस का प्रयोग वे छोटेछोटे सेटों या अन्य किसी काम के लिए कर सकें.

आजकल पी.एल. राव फिल्म नगरी के विकास प्रबंधक हैं. यों पेशे से श्री राव एक

वरिष्ठ ध्वनि इंजीनियर रहे हैं. और यहां उन के तकनीकी ज्ञान का भी प्रयोग किया जा रहा है. श्री राव से जब इस बारे में बातचीत हुई तो उन्होंने बताया कि फिल्म नगरी के निर्माण एवं विकास में अब तक लगभग दो करोड़ 70 लाख रुपए खर्च हुए हैं. इस तरह इस का प्रथम चरण पूरा हो चुका है. दूसरे चरण में फिल्म लेबोरेटरी (रंगीन एवं श्वेत श्याम), फिल्म संग्रहालय तथा अन्य कई स्थायी सेट जैसे रेलवे स्टेशन, छोटा जलप्रपात (इलैक्ट्रोनिक कंट्रोल) आदि के निर्माण की योजना है. यह चरण 1985 तक पूरा होने की आशा है.

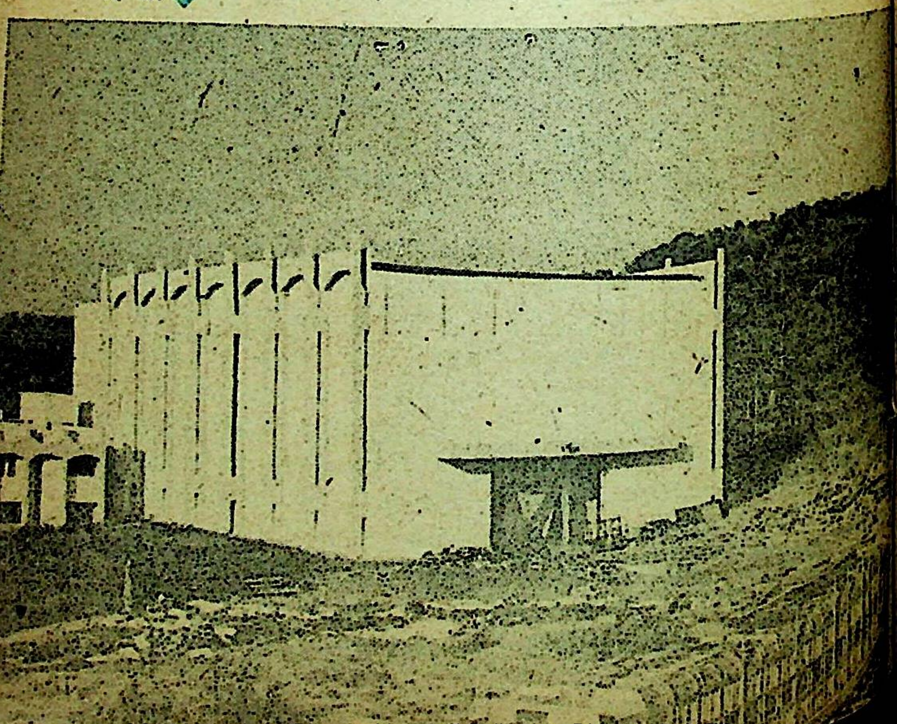
इस की आय के बारे में पूछने पर श्री राव ने बताया कि पहले वर्ष सितंबर, 1977 से 1978 के शुरू तक लगभग 10 लाख रुपए की आय हुई. फिर 1978-79 और 1979-1980 में क्रमशः कुल आमदनी 35 लाख रुपए और 56 लाख रुपए हुई. 1980-81 में यह बढ़ कर एक करोड़ से ऊपर हो गई.

यों छठी पंचवर्षीय योजना में सरकार ने इस के विकास के लिए सात करोड़ रुपए का प्रावधान किया है. श्री राव के अनुसार यह काफी लाभप्रद उपक्रम है.

फिल्म नगरी में शूटिंग के समारंभ के बाद अब तक काफी चर्चित फिल्मों की शूटिंग की जा चुकी है. फिल्म 'बर्निंग ट्रेन' में बंबई सेंट्रल का मिनिएचर सेट लगाया गया था. एक नकली रेलगाड़ी खड़ी की गई थी तथा इस फिल्म की अधिकांश शूटिंग यहीं की गई थी. रमेश सिप्पी की 'शान', मनोजकुमार की 'क्रांति' विजय आनंद की 'राजपूत,' यश चोपड़ा की 'सिलसिला', गुलजार की 'नमकीन' आदि की अधिकांश शूटिंग यहीं हुई थी.

पिछले दिनों मनमोहन देसाई की 'कुली', रमेश तलवार की 'दुनिया', देव आनन्द की 'स्वामी दादा,' बलदेवराज चोपड़ा की 'तलाक, तलाक, तलाक' आदि की शूटिंग चल रही थी. स्टूडियो के प्रबंधक के अनुसार औसतन नौदस फिल्मों की यहां

फिल्म नगरी में फिल्म 'बर्निंग ट्रेन' का एक सेट. इस फिल्म की अधिकांश शूटिंग यहीं की गई थी.



फिल्म नगरी : कुछ तथ्य

फिल्म नगरी का कुल क्षेत्र	392 एकड़
फिल्मोद्योग के विकास के लिए दिया गया क्षेत्र	100 एकड़
फिल्म नगरी के स्टूडियो परिसर का पूरा क्षेत्र	10.5 एकड़
भावी विकास के लिए आरक्षित क्षेत्र	5 एकड़

स्टूडियो	क्षेत्र	किराया (प्रति 8 घंटे की शिफ्ट)
1. फ्लोर-1	95'X180'X 55'	2,000 रुपए
2. फ्लोर-2	80'X120'X85'	1,750 रुपए

(किरायों में बढ़ोतरी पर विचार चल रहा है.)

	संख्या
1. मेकअप रूम (वातानुकूलित)	12
2. संपादन कक्ष	4
3. विद्युत आपूर्ति	305 मेगावाट
4. जल आपूर्ति	25 घन मीटर प्रतिदिन

उपलब्ध उपकरण : लाइट्स (10 कि.वाट, 5 कि.वाट आदि) कैमरा, लैंस, ध्वनि रिकार्डर, प्रिव्यू कम डबिंग संयंत्र (प्रोजेक्टर आदि), ट्रिपोड, फिल्टर आदि.

उपर्युक्त मदों में विभिन्न डिजाइन और साइज में ये सब उपकरण किराए पर उपलब्ध हैं.

शूटिंग होती रहती है. और आउटडोर फिल्मों का रिवाज बढ़ रहा है.

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, फिल्म नगरी का निर्माण 'महाराष्ट्र फिल्म मंच एवं सांस्कृतिक विकास निगम' के तत्वावधान में हुआ है, इसलिए वहां क्षेत्रीय भाषाओं जैसे मराठी, कोंकणी आदि की फिल्मों को अधिकाधिक सुविधाएं देने का प्रस्ताव है.

फिल्म नगरी में स्टूडियो फ्लोर तथा अन्य स्थलों पर मराठी फिल्मों की शूटिंग करने पर वर्तमान दरों में 50 प्रतिशत तक छूट दी जाती है. इस के अतिरिक्त उन्हें कुछ अन्य सुविधाएं भी उपलब्ध हैं, जिस से वे हिंदी सिनेमा के मुकाबले अपनी अलग पहचान तथा अस्तित्व बनाए रखने में समर्थ हो सकें.

महाराष्ट्र सरकार कोल्हापुर में भी एक फिल्म नगरी बनाने का विचार कर रही है. वस्तुतः कोल्हापुर मराठी फिल्मों का काफी समय से गढ़ रहा है, इसलिए वहां फिल्म नगरी बनाने का विचार पूरी तरह व्यावहारिक है. इस दिशा में कुछ काम भी हो चुका है. यह कमोबेश फिल्म नगरी के ही आधार पर होगी.

फिल्म नगरी के निर्माण के बाद बंबई के दर्शनीय स्थलों की सूची में यह नाम और जुड़ गया है. देश तथा विदेश के कोनेकोने से यहां लोग आते हैं. इस की दर्शक पुस्तिका में कई चर्चित लोगों की दिलचस्प प्रतिक्रियाएं अंकित हैं. इस में जहां अमिताभ, धर्मेंद्र, हेमा, राजेश जैसे फिल्मी सितारे हैं, वहां मनोज, यश चोपड़ा, रमेश सिप्पी जैसे चुने हुए निर्देशक भी हैं. इस के अतिरिक्त कई केंद्रीय मंत्रियों, विभिन्न राज्यों के मंत्रियों और विदेशी मेहमानों की भी दिलचस्प टिप्पणियां हैं..

. यह तो रहा फिल्म नगरी का वर्तमान

स्वरूप. पर अभी इस में क़ाफ़ी सुधार की अपेक्षाएं हैं, खास तौर पर प्रशासनिक तकनीकी स्तर पर. आजकल फिल्म नगरी में लगभग 250 लोग काम करते हैं.

यहां निजी क्षेत्र में ट्रांबे के ऐसल स्टूडियो की चर्चा करना अप्रासंगिक न होगा, जिसे ऐसल आउटडोर लोकेशन कहते हैं. इस का क्षेत्र मात्र छः एकड़ है, पर उस में लगभग 21 स्थायी लोकेशन और सेट हैं. इस में जेल, हस्पताल, अदालत कक्ष, झील, मुजरा कक्ष, बंगला, एक बड़ी हवेली, पनघट, तैरने का तालाब, बाग, गांव, मंदिर, शौचालय, डाकघर आदि हैं. इस के अतिरिक्त इस की पृष्ठभूमि भी काफी सुरम्य है तथा टूटने पर लगभग एक दरजन अन्य सुंदर स्थल मिल जाते हैं. समुद्र भी सामने है.

इस का निर्माण शाहानी बंधुओं ने 1972 में किया था. नवंबर, 1973 से यहां बराबर फिल्मों की शूटिंग हो रही है. शाहानी बंधुओं को इस लोकेशन से शुरू के सालों में जो भी आमदनी हुई, वह उन्होंने सब की सब इस के विकास पर खर्च कर दी. और अब जब फिल्म नगरी का भी निर्माण हो गया है तो प्रतिस्पर्धा में काफी कुछ नया जोड़ा गया है.

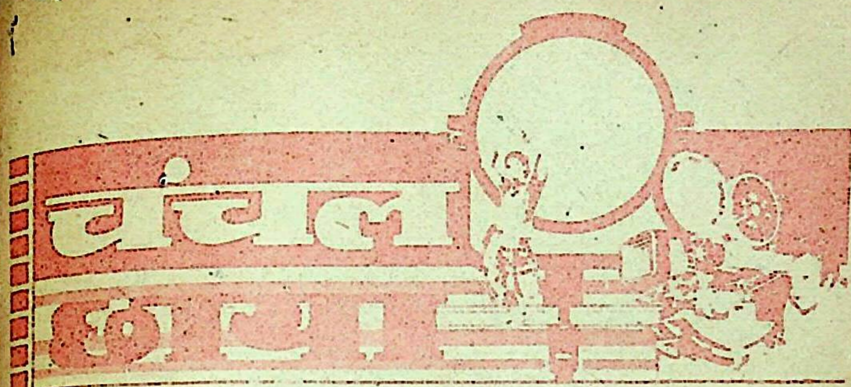
यहां भी कलाकारों के लिए वातानुकूलित मेकअप रूम हैं, साथ ही शूटिंग आदि के लिए लगभग वही सुविधाएं हैं, जो फिल्म नगरी में उपलब्ध हैं. यद्यपि यह स्थान काफी छोटा है पर इस का भरपूर उपयोग किया गया है. किराए आदि भी फिल्म नगरी जैसे ही हैं.

इस के प्रबंधक रामचंद्रन ने बताया कि यहां प्रत्येक कलाकार की व्यक्तिगत पसंद का खयाल रखा जाता है. यानी यदि आज राजेश खन्ना की शूटिंग है तो मेकअप रूम, विश्राम कक्ष में उस की पसंद की चादर, तकिया, फूल आदि होंगे, जिन पर उस का नाम आदि खुदा होगा. साथ ही इस के बाहर उस के नाम की तख्ती भी लग जाएगी. प्रत्येक कमरे में फोन की सुविधा है और इन सब का कोई अतिरिक्त पैसा नहीं लिया जाता.

रामचंद्रन ने यह भी बताया कि कुछ सेटों जैसे अदालत, जेल, हवेली आदि को वातानुकूलित करने की योजना है. साथ ही कुछ नए स्थलों जैसे रेलवे स्टेशन, वसतियों आदि के निर्माण की भी योजना है.

यहां इस का उल्लेख करने का तात्पर्य यह भी है कि सरकारी और नागरिक यानी निजी क्षेत्र में एक ही उपक्रम कितने रूप बदलता है, यह स्पष्ट हो जाए.

ऐसल स्टूडियो के होने से फिल्म नगरी का आकर्षण खत्म तो नहीं होता, पर दर्शक की अपेक्षाएं अवश्य बढ़ जाती हैं. आशा की जानी चाहिए कि फिल्म नगरी के प्रबंधक इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए हर संभव प्रयत्न करेंगे. ●



★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ फर्ज और कानून

निर्माता : रोजा पिक्चर्स
निर्देशक : राघवेंद्र राव
मुख्य कलाकार : जितेंद्र, हेमा मालिनी, रति अग्निहोत्री, प्रेम चोपड़ा, कादर खान व शक्ति कपूर.

अगर कहानी के लिहाज से देखा जाए तो 'फर्ज और कानून' में कोई विशेष बात नहीं है. पिता का पुलिस अधिकारी व बेटे का अपराधी होना, दोनों का टकराव और फिर बेटे का हृदय परिवर्तन— यह सारा विषय ही हिंदी फिल्मों के लिए काफी पुराना रहा है.

लेकिन इस फिल्म में नई बात यह है कि अपराधियों के बीच फंसे ईमानदार पुलिस अधिकारी के संघर्ष को इस में उठाया गया है. यही बात 'मेरी आवाज सुनो' में भी कही गई थी. इस फिल्म में बात इतने तीखे ढंग से नहीं की गई है. फिर भी आभास यही दिलाया गया है कि आजकल भ्रष्ट लोग ज्यादा हो गए हैं और ईमानदार पुलिस कर्मचारी कम रह गए हैं.

'मेरी आवाज सुनो' की तरह ही यह फिल्म भी सवालिया निशान छोड़ती है कि क्या पुलिस विभाग में ईमानदारी का मतलब सिर्फ मौत है.

जितेंद्र ने इस फिल्म में दोहरी भूमिकाएं की हैं— बाप की व बचपन में बाप द्वारा ही दुत्कार दिए गए बेटे की. पुलिस अधिकारी रणजीतकुमार की भूमिका में वह बेहद नाटकीय लगता है. इस असरदार भूमिका को निर्जीव करने की काफी जिम्मेदारी उसी पर है. हां, जहां उसे दूसरी भूमिका में उछलनेकूदने का मौका मिला है. वहां वह काम चला जाता है.

हेमा मालिनी व्यक्तित्व के लिहाज से इस भूमिका में उपयुक्त रही. उसे रोमांटिक भूमिकाओं से परहेज करना चाहिए.

राजकिरण का संवाद बोलने का ढंग ठीक है, लेकिन चेहरे पर वह उस के अनुरूप भाव नहीं ला पाता. शक्ति कपूर व कादर खान खलनायकी में काफी जमे हैं. प्रेम चोपड़ा ने इस फिल्म में अलग तरह की भूमिका की है.

रणजीतकुमार द्वारा अपने पहले लड़के को घर से बाहर भिजवा देने का प्रसंग जहां उस की भूमिका को कमजोर कर गया है, वहीं निर्देशक की गलती का भी सूचक है.

आनंद बख्शी के गीतों में तुकबंदी ज्यादा है और उस में लक्ष्मीकांत प्यारेलाल का संगीत विशेष कुछ नहीं कर सका है.

खुद्दार

निर्माता : योकोहामा प्रोडक्शंस
निर्देशक : रवि टंडन
मुख्य कलाकार : अमिताभ, संजीवकुमार, परवीन बाबी, विनोद मेहरा, तनूजा, बिंदिया गोस्वामी, महमूद, प्रेम चोपड़ा.

हमारी फिल्मों के अधिकतर दर्शक गरीब तबके के होते हैं और उन्हीं के बल पर फिल्में चलती हैं. हमारे निर्माता फिल्म निर्माण में इस तबके को अधिक से अधिक ध्यान में रखते हैं. इसी लिए अमीरों को इस रूप में दिखाएंगे मानो वे देश के लिए बहुत बड़ा अभिशाप हों और गरीबी को गौरवशाली रूप में पेश करेंगे एवं अमीर को पग पग पर गरीब के हाथों जलील होता दिखाएंगे. खुद्दार भी एक ऐसे ही गरीब टैक्सी ड्राइवर की तथाकथित खुद्दारी की कहानी है.

टैक्सी ड्राइवर छोटू उस्ताद (अमिताभ) परिश्रम कर के छोटे भाई राजा (विनोद मेहरा) को पढ़ाता है, पर एक अमीर की बेटी मंजु (बिंदिया) से शादी कर के उसे छोड़ देता है. अपनी भाभी के तानों के कारण छोटू अपने भाई हरि (संजीव) के पास भी नहीं जा सकता. केवल एक मैरी (परवीन बाबी) है जो उस के दर्द को समझती है. इन सब के मुकाबले में खलनायक बंसी (प्रेम चोपड़ा) है, जो किसी न किसी रूप में इन सब को अपने जाल में फंसता चला जाता है और फिर एकएक कर के इस जाल के सभी धागे कटते चले जाते हैं.

'खुद्दार' को अमिताभ शृंखला की एक सामान्य फिल्म कहा जा सकता है. इस में कोई नयापन नहीं है. फिर भी अमिताभ अपने व्यक्तित्व से फिल्म को अरोचक होने से बचा गया है. अभिनय की दृष्टि से संजीवकुमार उस से बेहतर है. शराब बेचने वाली के रूप में परवीन बाबी की मारधाड़ स्वाभाविक नहीं लगती. अमिताभ की

पिछले बारह महीनों में

★★★ बसेरा, उमराव जान, ये नजदीकियां.

★★ चक्र, मेरी आवाज सुनो, राजपूत, जीवनधारा, अंगूर, बाजार, हमकदम.

★ चश्मेबद्दूर, दर्द, प्रेमगीत, सिलसिला, पहला कदम, खरांखोटा, एक ही भूल, आहिस्ता आहिस्ता, इतनी सी बात, कालिया, दिले नादान, नई इमारत, श्रद्धांजलि, सत्ते पे सत्ता, जमाने को दिखाना है, अपना बना लो, श्रीमान श्रीमती, बेमिसाल, देशप्रेमी, तुम्हारे बिना, दासी, नमक हलाल, सवाल, शौकीन, आधारशिला, सितारा, तेरी कसम, मेहंदी रंग लाएगी.

○ खून की टक्कर, हम से बढ़ कर कौन, नारी, कसम भवानी की, कातिलों के कातिल, प्यासा सावन, ये रिश्ता न टूटे, सन्नाटा, खुदा कसम, मीठी मीठी बातें, नौकरी, साहस, अरमान, शैतान मुजरिम, तजरबा, याराना, जेलयात्रा, कमांडर, फिफ्टी फिफ्टी, राज, शाका, जल महल, नागिन और सुहागिन, मैं और मेरा हाथी, कोबरा, गहरा जख्म, गर्भज्ञान, दौलत, कहानी एक चोर की, आमने सामने, कच्चे हीरे, जोश, धन दौलत, गोपीचंद जासूस, रास्ते प्यार के, रक्षा, शमा, प्यारा तराना, प्रेम रहस्य, जियो तो ऐसे जियो, उस्तादी उस्ताद से, दो दिल दीवाने, प्यारा दोस्त, हीरों का चोर, तीसरी आंख, अशांती, दो उस्ताद, दिल का साथी दिल, बदले की आग, इनसान, ईंट का जवाब पत्थर, मैं इंतकाम लूंगा, गजब, मेहरबानी, बेगुनाह कैदी, आदत से मजबूर, पांच कैदी, सनम तेरी कसम, डायल 100, आपस की बात, घमंडी, बगावत, प्रेम रोग.

टैक्सी का नाम बसंती है और उस की भी अपनी एक पूरी भूमिका है, जो अति भावुक हो गई है. मजरूह के गीत व राजेश रोशन का संगीत बेकार है. कादरखान के संवाद चुटीले हैं और बेजान फिल्म में भी कुछ जान डाल गए हैं.

○ धर्मकांटा

निर्माता : सुलतान प्रोडक्शंस
निर्देशक : सुलतान अहमद
मुख्य कलाकार : राजकुमार, वहीदा रहमान, जितेंद्र, राजेश खन्ना, सुलक्षणा पंडित, रीना राय व अमजद खान.

फिल्मों के लिए डाकू भले ही पुराना विषय हो चुका हो लेकिन सुलतान अहमद हैं कि पिछले 10 सालों से इसी विषय को बारबार भुनाने की कोशिश किए जा रहे हैं. 'हीरा' व 'गंगा की सौगंध' के बाद डाकू समस्या पर बनाई गई 'धर्मकांटा' उन की तीसरी फिल्म है.

मोटे तौर पर तीनों फिल्मों के विषयों में कोई ज्यादा फर्क नहीं है. कहानी का तानाबाना भी लगभग एक जैसा है. अत्याचार का प्रतिशोध लेने के लिए अच्छाभला किसान डाकू बन जाता है, लेकिन जल्दी ही अंत:करण की आवाज पर आत्मसमर्पण कर देता है.

'धर्मकांटा' में मूल पात्र भवानीसिंह (राजकुमार) की यही कहानी है, लेकिन इस का कैनवास बड़ा करने के लिए इसे दो पीढ़ियों की कहानी बना दिया गया है. भवानीसिंह की वजह से क्योंकि अनजाने में एक बच्चे की मौत हो जाती है, इसलिए उस बच्चे की मां का शाप भवानीसिंह के परिवार को छिन्नभिन्न कर डालता है. लेकिन जैसा कि हर फिल्म में होता है, अंत में सभी मिल जाते हैं.

यह निर्मातानिर्देशक का दकियानूसीपन ही है कि ईश्वर के नाम पर उस ने धार्मिक अंधविश्वासों को ही फिल्म में प्रधानता दी है.

राजकुमार की संवाद अदायगी कभी उस की विशेषता मानी जाती थी, अब उस के संवाद बोलने व चेहरे पर भाव आने में कोई तालमेल न रहने से उस का स्टाइल ड्रामाई लगता है. उस की पत्नी की भूमिका में वहीदा रहमान ठीक रही है. राजेश खन्ना व जितेंद्र कामचलाऊ हैं. दोनों नायिकाओं सुलक्षणा पंडित व रीना के लिए करने को कुछ नहीं था. फिर भी सुलक्षणा भारी रही है. अमजद ने 'शोले' के गब्बरसिंह की ही नकल की है.

नौशाद का दावा रहा है कि वह पश्चिमी संगीत नहीं देंगे, लेकिन इस फिल्म में मजरूह की तुकबंदी पर उन्हें हलके स्तर का संगीत देना पड़ा है.

फिल्म की जान र.द. माथुर का छायांकन है. हिंसा ज्यादा होने की वजह से फिल्म को सेंसर ने रोक दिया था. काफी कटाईछंटाई के बाद भी फिल्म में इतनी हिंसा बाकी बच रही है कि फिल्म को 'ए' प्रमाणपत्र दिया जाना चाहिए था.

—सुमित

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

30 वर्षीया, एम.एससी., एम.एड., सेंट्रल सेवारत, राजपूत (तंवर) कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4175, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, कायस्थ सक्सेना, सुंदर, एम.ए., बी.एड., राजस्थान में अध्यापिका हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4177, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लंबी, सुंदर, पोस्ट ग्रेजुएट, 33, 37 ब्राह्मण कन्याओं हेतु योग्य वर चाहिए. स्थानीय वरों को प्राथमिकता. शीघ्र सादा विवाह. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4181, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जम्मू निवासी, गृहकार्यों में दक्ष, 151 सें.मी., बी.एड., अध्यापिका, वेतन 1,000/-रु. तथा बी.एससी., 151 सें.मी., सुसंपन्न, उच्च परिवारीय बहनों के लिए 35 से 40 व 31 से 35 वर्षीय सुशिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. शीघ्र लिखें : वि.नं. 4225, सरिता, नई दिल्ली-110055..

24 वर्षीया, स्वस्थ, गौरवर्ण, स्लिम, गृहकार्य, सिलाई दक्ष, हायर सेकंडरी, कान्यकुब्ज कन्या हेतु सुंदर, स्वावलंबी, मध्य प्रदेश वासी, कान्यकुब्ज/सरयूपारीण वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4242, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38 वर्षीया, अविवाहित, क्षत्रिय, सुशिक्षित, आकर्षक, कार्यरत कन्या हेतु सुशिक्षित, कार्यरत, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य जाति का अविवाहित, निस्संतान विधुर, 42 वर्ष तक वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4243, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 162 सें.मी., इंटर, आकर्षक, संबंधविच्छेद (1973), कुशवाहा कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4244, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, मंगली, अग्रवाल, पीएच.डी. कर रही स्मार्ट कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4246, सरिता, नई दिल्ली-110055.

डिप्टी चीफ इंजीनियर की 21 वर्षीया, अग्रवाल गोयल गोत्रीय, 152 सें.मी., कानवेंट शिक्षित, बी.एससी. आनर्स, सुशील, स्लिम, गृहकार्य निपुण कन्या हेतु उच्च अधिकारी, आई.ए.एस., डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए., शिक्षित व्यापारी वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4247, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 22 वर्षीया, 164 सेंटीमीटर, एम.एससी., बी.एड. कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4248, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सामान्य स्थिति, बंगाली ब्राह्मण, गोरी, मैट्रिक, गृहकार्य कुशल, 18 वर्षीया कन्या के लिए उपार्जनशील ब्राह्मण, हिंदी, बंगलाभाषी वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4249, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, मांगलिक, अग्रवाल, एम.ए., गेहुआं रंग, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, 152 सें.मी. कन्या हेतु सजातीय, योग्य वर चाहिए. उपजाति बंधन नहीं, पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4250, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, साधारण गेहुआं रंग, स्लिम, श्रीवास्तव, 150 सें.मी., बी.ए., गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4251, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, जैन, बी.ए., 157 सें.मी., सुंदर, गोरी, गृहकार्य में निपुण कन्या हेतु बारोजगार वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4252, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24, सुंदर हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4253, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 160 सें.मी., एम.ए., बी.एड., सुंदर, गौरवर्ण, सनाढ्य ब्राह्मण, उत्तर प्रदेश निवासी को सेवारत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4254, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.ए., बी.एड., अग्रवाल (बंसल), 157 सें.मी., 44 कि.ग्रा., गेहुआं रंग कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4255, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, 165 सें.मी., अति सुंदर, गोरी, स्लिम, स्मार्ट, कानवेंट शिक्षित, बी.एससी. आनर्स, सक्सेना कन्या हेतु आई.ए.एस., आई.ए.एफ., इंजीनियर, डाक्टर, बैंक अधिकारी तथा छोटी बहन 19 वर्षीया, 170 सें.मी., स्लिम, आकर्षक, स्मार्ट, बी.काम. द्वितीय की छात्रा हेतु सुयोग्य वर चाहिए. उपजाति बंधन नहीं. विवाह उत्तम तथा शीघ्र. लिखें : वि.नं. 4256, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, पंजाबी अरोड़ा, शिक्षा प्राइमरी, कद 140 सें.मी., रंग गेहुआं कन्या के लिए सुयोग्य वर चाहिए. जाति व दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4257, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, राजपूत, बी.ए., सांवला रंग, इकहरा बदन, सुंदर कन्या हेतु योग्य सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4258, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुसंपन्न, 28 वर्षीया, पंजाबी अरोड़ा, बी.ए., पी.टी., 161 सें.मी., आकर्षक, मृदु व्यवहार, गृहकार्य निपुण कन्या हेतु सजातीय, वैष्णो वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 4259, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, राजपूत, गौरवर्ण, कानवेंट शिक्षित, दो माह पूर्व अमरीका गई, जल्द हिंदुस्तान आ रही कन्या हेतु अमरीका में बसने के इच्छुक डाक्टर, इंजीनियर अन्य योग्यता वाला वर चाहिए. जातिबंधन

नहीं. लिखें: वि.नं. 4260, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 170 सें.मी., गोरी, अति सुंदर, स्मार्ट, गृहकार्य में दक्ष, एम.एससी. फाइनल में अध्ययनरत, सक्सेना कन्या हेतु योग्य इंजीनियर, आई.ए.एस., आई.पी.एस., आई.एफ.एस., कार्यरत वर चाहिए. पिता प्रथम श्रेणी अधिकारी, विवाह अति उत्तम. लिखें : वि.नं. 4261, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (शर्मा), 19/153 सें.मी., इंटर, गोरी आकर्षक कन्या हेतु कार्यरत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4262, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 165 सें.मी. कद, सुंदर, स्मार्ट, गोरी, गृहकार्य दक्ष, बी.ए., कानवेंट की पढ़ी जैन ओसवाल विधवा जिस का एक लड़का है के लिए शिक्षित, योग्य, सुलझे हुए विचारों वाला, आत्मनिर्भर, उच्च पदस्थ या व्यापाररत, अच्छी आमदनी वाला, लंबा, स्मार्ट, व्यक्तित्व वर चाहिए. बिना अपत्य विधुर या तलाकशुदा भी मान्य. लिखें : वि.नं. 4263, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, ब्राह्मण, एम.एससी. हेतु डाक्टर, इंजीनियर, समकक्ष, म.प्र. कार्यरत, 30 वर्षीय ब्राह्मण, अविवाहित युवक चाहिए. लिखें : वि.नं. 4264, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 156 सें.मी., एम.एच. एससी., बी.एड., शिक्षिका, सिलाईकढ़ाई व गृहकार्य में दक्ष, ईसाई कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4265, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, एम.एच. एससी., सुंदर, सुशील, उपमन्यु गोत्रीय, कान्यकुब्ज कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. शासकीय राजपत्रित/बैंक सेवारत, प्रोबेशनरी आफीसर्स को प्राथमिकता. उत्तम विवाह. संपूर्ण विवरण कुंडली सहित लिखें : वि.नं. 4266, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, पंजाबी, 155 सें.मी.आफीसर, आय 1,000/- कन्या हेतु वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4267, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, माहेश्वरी, 160 सें.मी., बी.ए. (फाइनल), गौरवर्ण, सुंदर कन्या हेतु गौरवर्ण, सुंदर, सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 4268, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, सक्सेना, हॉयर सेकंडरी कर रही, 158 सें.मी., आकर्षक, गेहुआं रंग, स्लिम, घरेलू कार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. दहेज के अभिलाषी संपर्क न करें. पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 4269, सरिता, नई दिल्ली-110055.

त्यागी ब्राह्मण, गौरवर्ण, इकहरी, स्नातक, 24/153 सें.मी., गृहसज्जा, सिलाई में दक्ष कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4270, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, हिंदू (पंजाबी), सुशिक्षित, मंझे स्मार्ट, 152 सें.मी., घरेलू, सुशील, निस्संतान तलाकशुदा हेतु सुशिक्षित, अच्छी आय वाले, प्रतिष्ठित, निस्संतान विधुर, तलाकशुदा, अविवाहित वर चाहिए. हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब, दिल्ली निवासी को प्राथमिकता. शीघ्र विवाह. लिखें : 4271, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 160 सें.मी., शिवहरे, कलकत्ता निवासी, सुंदर, दयामयी, रंग साफ, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु कार्यरत (शिवहरे, मौहरे, अग्रवाल, जायसवाल आदि) वर चाहिए. 29 तक विधुर स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 4272, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, फ्लाइट लेफ्टिनेंट की विधवा हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4273, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, सिख, एम.ए., बी.एड., सुंदर कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4274, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, स्नातक, सक्सेना कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4275, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, गौरवर्ण, सुंदर, स्वस्थ, सुशील, 152 सें.मी., सुशिक्षित, गृहकार्य में निपुण कन्या हेतु सजातीय, लगभग 30 वर्षीय वर चाहिए. निस्संतान विधुर भी स्वीकार्य. कन्या प्रतिष्ठित परिवार, अवकाश प्राप्त वरिष्ठ अधिकारी की पुत्री है. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4276, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तलाकप्राप्त, 18 वर्षीया, सुंदर, गृहकार्य निपुण कन्या 20 दिन ससुराल में रही, के लिए ब्राह्मण वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4277, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 157 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, इकहरा बदन, गृहकार्य, सिलाईकढ़ाई निपुण, मूकबधिर मारवाड़ी अग्रवाल कन्या हेतु आत्मनिर्भर, शाकाहारी वर चाहिए. थोड़ी खराबी, गरीब, मूकबधिर स्वीकार्य. मूकबधिर अग्रवाल को प्राथमिकता. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 4278, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 29½ वर्षीया, 157 सें.मी., एम.ए. बी.एड., राजस्थान में राजकीय अध्यापिका हेतु योग्य सजातीय वर चाहिए. अच्छी शादी. लिखें : वि.नं. 4279, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, प्रतिष्ठित, माहेश्वरी परिवार की गौरवर्ण, 150 सें.मी., एम.ए. पास कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4280, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, राजपूत, सुंदर, सुशील, गृहकार्य तथा हस्तकला में निपुण, मिडिल तक पढ़ी हुई कन्या के लिए सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. कलकत्ता के निवासी को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 4281, सरिता

नई दिल्ली-110055.

22½ वर्षीया, बीसा अग्रवाल, नागल गोत्र, बी.एससी., एम.ए., 157 सें.मी., स्लिम, गौरवर्ण, अति सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, जबलपुर के प्रतिष्ठित संभ्रांत परिवार की कन्या हेतु सुंदर, सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. विज्ञापन शीघ्र उत्तम चयन हेतु. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4282, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, प्रथम श्रेणी, एम.काम., वर्तमान में स्थायी रूप से डिग्री कालिज में कार्यरत लेक्चरर, गौरवर्ण, सुशील, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु कुशवाहा, शाक्य, मुराई, कोहरी, सैनी अथवा काछी जाति में वर चाहिए. पिता म.प्र. राजकीय सिविल सेवा में. लिखें : वि.नं. 4283, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इंदौर के प्रतिष्ठित गर्ग परिवार की 21 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए., गौरवर्ण, सुंदर कन्या हेतु अग्रवाल वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4284, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, विधवा (3 वर्ष का लड़का) हेतु वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4285, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 155 सें.मी., एम.काम., सहकारी बैंक में कार्यरत (ट्रांसफर संभव नहीं), सुंदर, आकर्षक कन्या हेतु शाकाहारी, निर्व्यसनी सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं, रूढ़िवादी, दहेज लोभी क्षमा करें. शीघ्र आदर्श विवाह. लिखें : वि.नं. 4287, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय हिंदू नाई, 19 वर्षीया, सतत प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण, स्नातक, कद 140 सें.मी., गृहकार्य कुशल, सुंदर कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4288, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुविख्यात और सुप्रतिष्ठित पिता की इकलौती पुत्री, गौरवर्ण, सौम्य, सुदर्शना, स्लिम, 162 सेंटीमीटर, 20 वर्षीया, मांगलिक, एम.ए., गौड़ ब्राह्मण कन्या के लिए सुप्रतिष्ठित, कुलीन, उच्चशिक्षित, सुस्थापित, सुंदर, स्वस्थ, संपन्न निर्व्यसनी, शाकाहारी ब्राह्मण कुमार की आवश्यकता है. शीघ्र उत्तम विवाह. संपूर्ण विवरण प्रथम बार में अपेक्षित. उपजाति बंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 4289, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीया, 160 सें.मी., बी.ए., एम.एड., गेहुआं रंग, इकहरा बदन, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, सैनिक विद्यालय में शिक्षिका के योग्य डाक्टर, इंजीनियर या उच्च पदाधिकारी वर शीघ्र चाहिए. नि:संतान विधुर अथवा तलाकशुदा भी विचारणीय. लिखें : वि.नं. 4290, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, पंजाबी, स्नातकोत्तर, 157 सें.मी., बिहार निवासी, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4291, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोरी, इकहरी, 22 वर्षीया, बी.ए., 155 सें.मी., गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु कार्यरत, योग्य, जैन वर चाहिए. सविवरण लिखें : वि.नं. 4292, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, इंटरमीडिएट, 157 सें.मी. एवं 18 वर्षीया, मैट्रिक, 155 सें.मी., आकर्षक, गृहकार्य में निपुण, सम्मानित श्रीवास्तव कन्याओं हेतु योग्य सजातीय वर चाहिए. दहेज नहीं. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 4293, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अमरीका इमीग्रेंट वीसा प्राप्त अग्रवाल, मारवाड़ी, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, बी.ए. पास, 24 वर्षीया कन्या हेतु डाक्टर अथवा उच्च शिक्षित वर चाहिए. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4294, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 27 वर्षीया, पंजाबी सारस्वत ब्राह्मण, रंग गेहुआं, कद 157, 150 सें.मी., योग्यता अंडर ग्रेजुएट और ग्रेजुएट कन्याओं हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 4348, सरिता, नई दिल्ली - 110055.

26 वर्षीया, माहेश्वरी, 160 सें.मी., एम.ए. (चित्रकला) प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए. अथवा उच्च सेवायत्त माहेश्वरी/अग्रवाल वर चाहिए. शीघ्र विवाह इच्छुक लिखें : वि.नं. 4357, सरिता, नई दिल्ली - 110055.

वधू चाहिए

29 वर्षीय, कान्यकुब्ज, गौरवर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व, वरिष्ठ प्रथम श्रेणी अधिकारी, मासिक आय 2,000/- के लिए गौरवर्ण, सुंदर, तीखे नाकनक्श की सुशिक्षित, सुयोग्य, ब्राह्मण वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. संपूर्ण विवरण प्रथमतः लिखें: वि.नं. 4194, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गर्ग, 168 सें.मी., 25 वर्षीय, सुंदर, स्वस्थ, बी.काम., उत्तम व्यवसाय, कलकत्ता निवासी युवक हेतु सजातीय, सुंदर, सुसंस्कृत, गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4200, सरिता, नई दिल्ली-110055.

द्विवेदी ब्राह्मण, 38 वर्षीय, 180 सें.मी., स्वस्थ, स्मार्ट, व्यवहारकुशल, निजी व्यवसाय, आय पांच अंकों में हेतु लंबी, सुंदर, सुशील, गौरवर्ण, सजातीय वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4202, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, साहू, एम.टेक. (खड़कपुर), शासकीय इंजीनियर, मासिक आय 1,600/- हेतु व्यवहारकुशल, गौरवर्ण, ग्रेजुएट/पोस्ट ग्रेजुएट कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 4213, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, संपन्न, एक्स कैप्टन (डाक्टर) हेतु अति सुंदर, लंबी, 21 वर्षीया तक वधू चाहिए. लिखें: वि.नं.

4214, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, स्नातक, कुशवाहा युवक 1,000/- हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4245, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, बी.ए., ऊंचाई 161 सेंटीमीटर, निजी व्यवसायरत, अच्छी आय वाले, मांगलिक, माहेश्वरी युवक हेतु सजातीय कन्या चाहिए. तोसनीवाल मालपानी छोड़ कर लिखें: वि.नं. 4286, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, राजस्थानी प्रजापति (कुम्हार), 165 सें.मी., एम.काम. (प्रथम श्रेणी), प्रशासनिक अधिकारी हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 4295, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37, 166 सें.मी., सुंदर, स्वस्थ, सरयूपारीण ब्राह्मण, गर्ग गोत्र, उत्तरप्रदेशीय, प्रतिष्ठित परिवार, विधुर (दो लड़की, एक लड़का स्थायी प्रबंध), स्नातकोत्तर, एम.एड., प्रवक्ता, मासिक आय 2,000/- हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. शीघ्र लिखें: वि.नं. 4296, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24½ वर्षीय, 160 सें.मी., तलाकशुदा, माहेश्वरी, निजी व्यापार युवक हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, सजातीय या अग्रवाल वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4297, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, अग्रवाल, निजी व्यवसायरत, 175 सें.मी., सुंदर, मासिक 5,000/- रुपए कमाने वाले, बी.काम., अंगरेजी माध्यम से शिक्षित युवक हेतु सुंदर, सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4298, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, बीसा अग्रवाल, 160 सें.मी., इंटर कालिज में रसायन प्रवक्ता, मासिक आय 1,600/- हेतु स्लिम, आकर्षक, गोरी, शिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 4299, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, कुर्मि, क्षत्रिय, कार्यरत इंजीनियर, मासिक आय चार अंकों में हेतु सजातीय, गोरी, सुंदर, स्लिम, सुशील, गृहकार्य निपुण, ग्रेजुएट कन्या चाहिए. बिहार-व पूर्वी उत्तर प्रदेश वासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 4300, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, पंजाबी, 176 सें.मी., स्मार्ट, राष्ट्रीयकृत बैंक में कार्यरत, आय 1,400/- मासिक हेतु राष्ट्रीयकृत बैंक में कार्यरत वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 4301, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, हिंदू/पंजाबी अरोड़ा, बी.ए.एम.एस., सुंदर, 175 सें.मी., अपना नर्सिंग होम, आय चार अंकों में युवक के लिए अति सुंदर वधू चाहिए. सुंदर मेडिको को प्राथमिकता. पिता ए क्लास गवर्नमेंट कंट्रैक्टर. लिखें: वि.नं. 4302, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, दिगंबर जैन, सुंदर, स्वस्थ, शासकीय सेवारत, वेतन 800/- मासिक युवक के लिए (सांसी निवासी) सजातीय, गृहकार्य में दक्ष, सुशील कन्या की आवश्यकता है. (एक पैर पोलियो के कारण पतला पर चलने या दौड़ने में कोई परेशानी नहीं). विवाह खर्च रहित. लिखें: वि.नं. 4303, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीय, पंजाबी अग्रवाल, विधुर, इंकमटैक्स में स्टेनो, 3 बच्चे के लिए कुंआरी, निस्संतान परित्यक्ता/विधवा वधू चाहिए. दहेज नहीं. विवाह शीघ्र. लिखें: वि.नं. 4304, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, बी.ए. प्रथम वर्ष, दुबले, लंबाई 16[illegible] सें.मी., सांवला रंग, बेरोजगार युवक हेतु कन्या चाहिए जो नौकरी दिलवा सकें. लिखें: वि.नं. 4305, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, अग्रवाल, एम.ए. अंगरेजी, [illegible] कार्यालय कार्यरत, मासिक 800/- रु., दाहिनी टांग की हड्डी दोषयुक्त, भूमि से ऊंचे स्थान पर बैठने में समर्थ, संतान रहित तलाकशुदा युवक हेतु गरीब वधू चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. निस्संतान विधवा तलाकशुदा एवं मामूली दोषयुक्त मान्य. लिखें: वि.नं. 4306, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, ओसवाल जैन, बी.एससी. एलएल.बी., 156 सें.मी., व्यापाररत, मासिक आय चार अंकीय (शादी के दो माह पश्चात पूर्व पत्नी के चारित्रिक कारणों से तलाकशुदा) युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, जैन कन्या चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4307, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 175 सें.मी., एम.ए., एलएल.बी., जाट नवयुवक ठेकेदारी में कार्यरत, वार्षिक आय 24,000 रुपए हेतु सजातीय, लंबी, सुंदर, गौरवर्ण, सुशील, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. शीघ्र विवाह हेतु संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 4308, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, अग्रवाल, संपन्न, शिक्षा बी.एससी. गौरवर्ण, स्वस्थ, सुंदर, स्मार्ट, क्लाथ बिजनेस, मासिक आय चार अंकों में, अविवाहित वर हेतु योग्य, गौरवर्ण, ग्रेजुएट, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 4309, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, मित्तल युवक, मासिक आय चार अंकों में, सेवारत, निजी फ्लैट बंबई हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4310, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीय, मैट्रिक, 163 सें.मी., सांवले वर्ण युवक के लिए सुंदर, सुयोग्य वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: आलोक, यू.बी.एफ., पी.ओ.बी. 5761, मनामा, बेहरेन.

32 वर्षीय, 171 सें.मी., पोस्ट ग्रेजुएट, प्रतिष्ठित निजी व्यवसायरत युवक हेतु लंबी, सुशिक्षित, स्वस्थ, आकर्षक वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4311, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, सुंदर, ग्रेजुएट, सेल्स इंजीनियर, सरयूपारीण ब्राह्मण (शर्मा), बंबई निवासी मूल निवास उत्तर प्रदेश हेतु सुंदर, स्लिम वधू चाहिए. व्यक्तिगत गुणों को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 4312, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, संभ्रांत, माहेश्वरी, शिक्षित, व्यवसायरत, 193 सें.मी. युवक हेतु सुंदर, गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें: वि.नं. 4313, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38 वर्षीय, अग्रवाल, निजी व्यापार, चार बच्चे विधुर हेतु गृहकार्य में निपुण, सुशील, निस्संतान विधवा या तलाकशुदा जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 4314, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीय, तलाक़शुदा, निस्संतान, माहेश्वरी, राजकीय सेवारत युवक हेतु सरल स्वभाव, गरीब परिवार, सुशील कन्या चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें: वि.नं. 4315, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, 176 सें.मी., गुप्ता, एम.काम., व्यवसायरत, संपन्न, प्रतिष्ठित, गौरवर्ण, स्वस्थ, स्मार्ट युवक के लिए सुंदर तथा सुशिक्षित कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4316, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, गोयल, 175 सें.मी., पोस्ट ग्रेजुएट, सुंदर, मैडिकल रिप्रेजेंटेटिव, आय 1,500/- रु. मासिक, नवयुवक हेतु लंबी, गौरवर्ण, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 4317, सरिता, नई दिल्ली-110055.

43 वर्षीय, तलाकशुदा, 168 सें.मी., बी.ए., मासिक वेतन 700/-, अध्यापक, अरोड़ा वर के लिए योग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4318, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, पंजाबी अग्रवाल बंसल गोत्र, हाई स्कूल, व्यवसायी, आय चार अंकों में युवक हेतु सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4319, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, पोस्ट ग्रेजुएट, रेलवे में सर्विस, सुंदर, सुशील, कद 170 सें.मी., श्रीवास (नाई जाति) के युवक के लिए गोरी, पतली, ग्रेजुएट, सजातीय वधू चाहिए. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 4320, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, एलएल.बी., 25, 165 सें.मी., राजकीय सेवारत, 600/-, भवन आय 1,200/- मासिक युवक हेतु सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4321, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, निस्संतान विधुर, आयुर्वेदिक डाक्टर, इंदौर में स्वयं का स्थापित नर्सिंग होम हेतु डाक्टर वधू चाहिए. दहेज व जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 4322, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, जैन, बी.काम., उच्च व्यवसायी, मासिक आय पांच अंकीय, 180 सें.मी., बिजनौर निवासी, सुंदर युवक हेतु अति सुंदर, मृदुभाषी, शिक्षित, गृहकार्य दक्ष, सुशील वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4323, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, सेवारत, निजी कृषि फार्म, एम.ए., आकर्षक, संपन्न राजपूत हेतु सेवारत जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 4324, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैथिल ब्राह्मण, मांगलिक, 29/170, व्यवसायी जयपुर, आय चार अंकीय युवक हेतु सुंदर, 25 आयु तक स्नातिका ब्राह्मण कन्या चाहिए. कुंडली सहित लिखें: वि.नं. 4325, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, डेसू में ए.टी.के. कार्यरत, मासिक आय 950/- हेतु सुशिक्षित, कार्यरत वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 4326, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैढ़ क्षत्रिय, 26 वर्षीय, 168 सें.मी., विधि स्नातक, बीमा कर्मचारी, मासिक आय चार अंकों में युवक हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4327, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, स्मार्ट, बी.एससी., निर्व्यसनी, यू.पी. सिख हेतु पढ़ीलिखी, स्वस्थ, सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. मासिक आय 1,000/- संपन्न परिवार, पिता व्यवसायी, कोई मांग नहीं. सिख परिवार को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 4328, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, शेखावत राजपूत, आय 800/- मासिक, विकलांग, सेवारत युवक हेतु घरेलू, सजातीय राजस्थानी वधू चाहिए. मामूली दोष स्वीकार्य. पूर्ण विवरण सहित पत्र लिखें: वि.नं. 4329, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तलाकशुदा, 42 वर्षीय, अपना व्यवसाय व मांटेसरी स्कूल के लिए ग्रेजुएट वधू चाहिए. आय 1,500/- प्रति माह. लिखें: वि.नं. 4330, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्लिम, संपन्न, अग्रवाल, कंप्यूटर्स इंजीनियर (अमरीका) हेतु मेडिको कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 4331, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, एम.बी.बी.एस. युवक हेतु अति सुंदर, योग्य, पढ़ीलिखी कन्या चाहिए. दहेज व जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 4332, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, आकर्षक व्यक्तित्व, ग्रेजुएट, इकलौते ब्राह्मण, मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव, मासिक वेतन 2,300/- युवक के लिए ग्रेजुएट, सुंदर, सुशील एवं गृहकार्य में दक्ष ब्राह्मण कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 4333, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25/167 सें.मी., गर्ग नवयुवक, आकर्षक व्यक्तित्व, संभ्रांत परिवार, प्रतिष्ठित संस्थान

कार्याधिकारी हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 4334, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, जैन ओसवाल, बी.ई. (मेकैनिकल), 158 सें.मी., इंजीनियर, केंद्रीय सरकारी सेवा राज्यपत्रित वेतन 1,800/- रु. मासिक, सुंदर, गौरवर्ण युवक हेतु इंजीनियर, डाक्टर अथवा उच्चशिक्षित, सुंदर, गृहकार्य में निपुण वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 4335, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, दिगंबर जैन नवयुवक, 154 सें.मी., मध्य प्रदेश सिंचाई विभाग सब इंजीनियर हेतु शिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4336, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, पंजाबी खत्री, संतान एक 2 वर्षीय पुत्री, व्यवसायी, आय 2,000/- माह, विधुर हेतु सुंदर, शिक्षित, सुशील कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. निस्संतान विधवा भी विचारणीय. लिखें: वि.नं. 4337, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, अग्रवाल, ग्रेजुएट, बैंक सर्विस, सुसंपन्न परिवार युवक हेतु कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 4338, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, बी.ए., 165 सें.मी., क्लर्क (आर्मी सेवारत), मासिक आय 800/- रुपए युवक हेतु योग्य, सुंदर कन्या चाहिए. प्रतिष्ठित परिवार की विधवा, तलाकशुदा को प्राथमिकता. जाति, धर्मबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 4339, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, ब्राह्मण, 168 सें.मी., रंग गोरा, बी.ई. (सिविल) जूनियर इंजीनियर पी.डब्ल्यू.डी. (राजस्थान), वेतन 1,000 मासिक, वैवाहिक प्रस्ताव आमंत्रित करता है. सजातीय, गोरी, सुंदर, ग्रेजुएट को प्राथमिकता. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 4340, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुशिक्षित एवं संभ्रांत परिवार के 25 वर्षीय, एम.एससी., एम.फिल., लंबाई 178 सें.मी., व्यवसायरत माहेश्वरी युवक के लिए सुंदर, सुशिक्षित तथा सुयोग्य वधू की आवश्यकता है. पूर्ण विवरण सहित पत्र लिखें: वि.नं. 4341, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्य भारतीय, बी.ए.एम.एस. (इंटर्नशिप वाराणसी), सुंदर, गौरवर्ण, 26 वर्षीय, 165 सें.मी., कान्यकुब्ज ब्राह्मण, (शांडिल्य) एवं तत्समकक्ष, 172 सें.मी., दिगंबर जैन (परवार) के लिए सुंदर मेडिकों वधू चाहिए. उपजाति बंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. लिखें: वि.नं. 4349, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, बी.एससी., एम.ए., सिंधी, बाह देश में कार्यरत, उच्च आय हेतु अति सुंदर एवं आकर्षक, स्लिम, सुशील, ग्रेजुएट या कॉन्वेंट शिक्षित कुलीन परिवार की कन्या चाहिए. विज्ञापन का सर्वोत्तम चयन हेतु. एक बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं 4350, सरिता, नई दिल्ली-110055.

> **व्यक्तिगत विज्ञापनों की दरें**
>
> सरिता : 2.50 रु. प्रति शब्द
> यूमंस ईरा : 50 पैसे प्रति शब्द
> सरिता व यूमंसईरा : 2.75 रु. प्रति शब्द

वर व वधू चाहिए

25 वर्षीया, एम.ए., माथुर, अध्यापिका एवं 2? वर्षीय भाई (क्लर्क) राजकीय सेवारत हेतु वर व चाहिए. लिखें: वि.नं. 4342, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, शिक्षित, सुंदर कन्या हेतु योग्य वर तथा 32 वर्षीय, एडवोकेट, कुशवाहा हेतु योग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4343, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, पंजाबी खत्री, 170 सें.मी., अल्पमांगलिक, मध्य प्रदेश महाविद्यालय में व्याख्याता, वेतन 1,600/-, पुत्र हेतु गौरवर्ण, ग्रेजुएट कन्या एवं 24 वर्षीया, 155 सें.मी., गौरवर्ण, स्लिम, गृहकार्य दक्ष, एम.एससी. प्रथम श्रेणी कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 4344, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 23 वर्षीया, विधि स्नातक, 160 सें.मी., रंग गेहुआं, इकहरा बदन कन्या के लिए योग्य वर तथा 25 वर्षीय, इंटरमीडिएट एवं इलेक्ट्रॉनिक डिप्लोमा, सरकारी तकनीकी नौकरी, भाई 165 सें.मी. के लिए योग्य, पढ़ीलिखी वधू की आवश्यकता है. दहेज रहित. लिखें: वि.नं. 4345, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, गोरा, हिंदू युवक, 27, 177 सें.मी., एक्जीक्यूटिव अफसर, प्राइवेट लिमिटेड कंपनी तथा उस की सुंदर, सुशिक्षित बहन 24, 152 सें.मी. हेतु सुशिक्षित, योग्य वधूवर चाहिए. पिता अवकाशप्राप्त सेना अधिकारी, ऊंचा घराना, जाति एवं प्रांत की बंदिश नहीं. एक ही परिवार के भाईबहन के संबंध को प्राथमिकता. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4346, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.एससी. (रसायन), बी.एड. 25 वर्षीया, सें.मी., राजपूत चौहान कन्या हेतु वर एवं 31 वर्षीय सें.मी., बी.ई. (मेकैनिकल) बैंक आफिसर हेतु वधू चाहिए. एक घर में संबंध को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 4347, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

अग्रवाल दंपती नवजात कन्या को अच्छे परिवार को गोद देना चाहते हैं. लिखें: वि.नं. 4348, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ताज़गी महसूस कीजिये







सीवा-गायत्री

सुबूत अपनी आँखों से देख लीजिए

यह आसान टेस्ट करके देखिये :

पानी से भरी तश्तरी में थोड़ा सा कोयले का चूरा छिड़किये। अब थोड़ा सा बिनाका टॉप पानी में मिला लीजिये और इस घोल की एक बूंद तश्तरी के बीचों-बीच टपकाइये। अब देखिये बिनाका टॉप कितनी तेज़ी से चारों तरफ फैलता है.... मैल को दूर करता है और पानी की सतह को बिल्कुल साफ़ कर देता है।

बिल्कुल इसी तरह बिनाका टॉप का विशेष फैलने वाला तत्व आपके मुँह के हर कोने में फैल कर दांतों में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणुओं का नाश करता है और साँस की दुर्गन्ध को रोकता है। बिनाका टॉप आपके मुँह की पूरी रक्षा करते हुए उसे ताज़गी से भर देता है।

ARMS-CBT-1-78-HN-82

बिनाका टॉप टूथपेस्ट – मुँह की पूरी रक्षा के लिए

रेशमी, मुलायम बाल
जड़ी-बूटियों का कमाल
कोमलता भरा सिंगार
नैचरेल का निखार

सिर्फ़ नैचरेल हर्बल शैम्पू ही १२ जड़ी-बूटियों के प्राकृतिक गुणों से युक्त

आप अपने बालों को प्राकृतिक रूप से स्वस्थ और सुंदर रखना चाहती हैं तो प्राकृतिक गुणों से भरपूर नैचरेल हर्बल शैम्पू पर भरोसा कीजिए.

नैचरेल शैम्पू में १२ जड़ी-बूटियां हैं जिनमें आंवला, कैमोमाईल, ऐलो-वेरा और शीकाकाई भी हैं. ये सब आपके बालों की सुंदरता और स्वास्थ्य के लिए प्रकृति की देन हैं.

प्रत्येक जड़ी-बूटी प्रकृति के जादुई गु... से भरपूर है. नैचरेल शैम्पू का शुद्ध, मुलायम ... आपके बालों को प्राकृतिक ... उन्हें मुलायम, रेशमी और चमकीला बनाता है. नैचरेल हर्बल शैम्पू सुंदर बालों का नैसर्गिक ...



Naturelle
HERBAL SHAMPOO

सितंबर (द्वितीय) 1982
अंक 658

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

कथा साहित्य

धारावाहिक उपन्यास

लेख

...दक व प्रकाशक विश्वनाथ

...में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार ...प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि., द्वारा सुरक्षित हैं. ...बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत ...की जानी चाहिए. सरिता में प्रकाशित कथा ...में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक ...और वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों, घटनाओं या ...से उन की किसी भी प्रकार की समानता ...मात्र है. © दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. ...सरिता शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड ...है.

...प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ ...दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स. प. प्रा. ..., गाजियाबाद में मुद्रित.
...न, प्रकाशन, एजेंसी व ग्राहक विभाग: 3–ई, ...एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.
...कार्यालय : 79 ए. मित्तल चैंबर, नरीमन पाइंट, ...फोन नं. 232409.
...कार्यालय : 6 एक्स, खलील शीराज एस्टेट, ...रोड, मद्रास. फोन नं. 88138.
...विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, ...दिल्ली-110001.
...: एक प्रति 3.25 रु., वार्षिक : 78 रु., ...से (समुद्री डाक से) : 160 रु. यूरोप में (हवाई ...से) 400 रु. तथा अमरीका में (हवाई डाक से) : ...रु.

कविताएं



स्तंभ

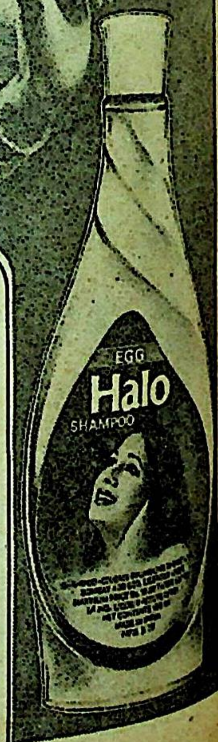
क्या आपके बाल पतले और कमज़ोर हैं? अपने बालों को स्वस्थ और घने बनाइये।

प्रोटीन से भरपूर हेलो एग शैम्पू से

सही पोषण न होने से आपके बाल पतले और कमज़ोर हो जाते हैं।

मखमली, सुनहरा हेलो एग शैम्पू अपने प्रोटीन से भरपूर पोषक फार्मूले से आपके बालों को संवारने में आसान बनाता है। साथ ही उनका आवश्यक पोषण भी करता है। आपके बाल घने और स्वस्थ हो जाते हैं। हेलो एग शैम्पू के झाग से आपके बाल एक स्वाभाविक लचक और चमक के साथ लहराने लगते हैं।

हेलो एग शैम्पू...
स्वस्थ और घने बालों के लिए





विपक्ष के नेताओं की बुद्धि भ्रष्ट क्यों?

श्रीमती इंदिरा गांधी की शतरंजी चालों (सरित प्रवाह/अगस्त/द्वितीय) का उल्लेख करते हुए आप ने लिखा है कि उन्होंने एक बार फिर 1979 की तरह लोक दल के नेता चौधरी चरणसिंह को बुद्धू बना कर उन के दल को लड़खड़ा दिया है और इस तरह विपक्ष एक बार पुनः कमजोर पड़ गया है. इन घटनाओं से तो ऐसा लगता है जैसे बुद्धि का संपूर्ण ठेका श्रीमती इंदिरा गांधी ने ही ले रखा है और वह अपनी राजनीतिक चालों में जब चाहे किसी को भी उलझा कर उसे मैदान से हटा सकती हैं. समझ में नहीं आता कि यह सब जानते हुए भी विपक्षी आपस में लड़ते क्यों हैं.

लगता है पद की लालसा ने ही विपक्ष के सभी दलों के नेताओं की बुद्धि भ्रष्ट कर रखी है, जो वे अलगअलग दल बना कर आपस में ही लड़झगड़ रहे हैं, जिस से शासन करने वाला आराम से अपना काम किए जा रहा है.

—अनिल सिंघई 'सागर'

*

गंदी बस्तियों की समस्या का हल

बंबई नगर निगम द्वारा हटाए जाने वाले अवैध कब्जों पर सर्वोच्च न्यायालय के प्रतिबंध के संबंध में आप के विचारों (सहित प्रवाह/अगस्त/द्वितीय) से बहुत कुछ सहमत होते हुए भी मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि बंबई में निवास करने वाले गरीब तबके के लोग जहां से आए थे, वहीं चले जाएं. सोचने की बात है कि जहां से वे आए हैं, यदि वहां पर उन लोगों को रोजगार व अन्य सुविधाएं उपलब्ध होतीं तो फिर वे बंबई आते ही क्यों. फिर इस बात की क्या गारंटी है कि एक बार हटाए जाने के बाद ये लोग फिर वहां नहीं लौटेंगे? मेरे विचार से तो सुविधाओं का विकेंद्रीकरण कर के ही गंदी बस्तियों की समस्या का समाधान किया जा सकता है.

—गोवर्धन कोठारी

*

सरकारी प्रचार के माध्यम

लेख 'बी.बी.सी. बनाम ब्रिटिश सरकार' (अगस्त/द्वितीय) यथार्थपूर्ण था. बी.बी.सी. की निर्भीकता व निष्पक्षता को देख कर भारतीय जन संचार माध्यमों की स्वतंत्रता की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक ही है. आकाशवाणी और दूरदर्शन किस कदर सरकारी गिरफ्त में जकड़े हुए हैं, इस का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि 75 प्रतिशत समाचार बुलेटिनों की प्रथम पंक्ति होती है "प्रधान मंत्री ने कहा..." लगता है इस सरकारी विभाग की नजर में प्रत्येक समाचार बुलेटिन तब तक अधूरा ही है जब तक कि उस में प्रधान मंत्री का जिक्र न हो.

—परमेंद्र पवार

*

बी.बी.सी. के विषय में लेख पढ़ने के बाद ऐसा महसूस हुआ कि जहां एक ओर बी.बी.सी. स्वतंत्र, निडर और निष्पक्ष है, वहीं दूसरी ओर आकाशवाणी बेहद लाचार और सत्तारूढ राजनीतिबाजों की कठपुतली मात्र है. वास्तव में हमें यह आशा ही नहीं करनी चाहिए कि आकाशवाणी बी.बी.सी. जितनी स्वतंत्र हो कर काम कर सकेगी.

—शंकर आहूजा

*

निराशावादी दृष्टिकोण

कहानी 'आत्महत्या' (अगस्त/द्वितीय) की शुरुआत जितने प्रभावशाली ढंग से की गई है, वहीं अंत उतना ही विवेकरहित था.

निराशावादी दृष्टिकोण से लिखी यह कहानी पाठकों को प्रेरणा देने के स्थान पर गुमराह ही अधिक करेगी.

—मुन्ना दूदानी 'कवि'

*

पोल खोल दी

व्यंग्य 'नई जमींदारी' (अगस्त/द्वितीय) बहुत पसंद आया. लेखिका ने वर्तमान समय में सरकारी तंत्र में हो रही गतिविधियों की सारी पोल खोल दी.

उदयपुर की तरह अन्य पर्यटन स्थलों की भी जानकारी देते रहिए, ताकि वहां जाते समय सरिता के पाठकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो.

—राजेंद्रकुमार खंडेलवाल

*

अच्छे उपन्यास हैं ही नहीं

सस्ते उपन्यासों का कुप्रभाव संबंधी लेख (अगस्त/प्रथम) ने अपनी सत्यता से मुझे काफी प्रभावित किया.

सच पूछिए तो आज अच्छी किस्म के उपन्यास कहीं उपलब्ध ही नहीं हैं. ऐसे उपन्यासों की अधिक मांग न होने के कारण विक्रेता उन्हें लाते ही नहीं हैं. सभी का मन अश्लील, सस्ते व घटिया किस्म के उपन्यासों पर लगा रहता है.

—अजय सक्सेना

*

विष्णोई समाज के लिए शिक्षाप्रद

लेख 'रूढियों के घेरे में विष्णोई समाज' (अगस्त/प्रथम) में लेखिका ने विष्णोई समाज में व्याप्त कुरीतियों की ओर ध्यान दिलाया है. वास्तव में विष्णोई समाज अपनी इन पुरानी रूढियों के कारण ही इतना पीछे है. आज भी इस समाज का अधिकांश वर्ग ऐसा है

जिसे 'विष्णोई' शब्द का अर्थ भी नहीं मालूम. इस लेख से उस बुद्धिजीवी वर्ग को, जो आधुनिकता का जामा पहन कर भी पुरानी मान्यताओं के आगे नतमस्तक हो जाता है, शिक्षा लेनी चाहिए. —मधु थापन

*

कुछ प्रतिक्रियाएं

कहानी 'रैना बीती जाए' (अगस्त/प्रथम) में अविवाहित लड़की उर्वशी का लेखिका ने बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है. यह केवल एक उर्वशी की ही नहीं बल्कि उन सैकड़ों अविवाहित लड़कियों की कहानी है, जो सामाजिक अत्याचार के बीच जीती हुई अनेक कुंठाओं का शिकार हो जाती हैं. यहां तक कि उन के प्रति उन के अपने मित्रों, पड़ोसियों, रिश्तेदारों तथा स्वयं उन के परिवार का भी सामान्य व्यवहार नहीं रहता. हर कोई इन लड़कियों को ऐसी नजर से देखता है जैसे ये तिरस्कृत वर्ग की हों. —शम्मी राकेश विरमानी

*

इस कहानी की लेखिका बधाई की पात्र है. हकीकत भी यही है कि कमाऊ लड़की के मांबाप उस की शादी के बारे में उत्साहित नहीं होते.

—राजीवशंकर शर्मा

*

'रैना बीती जाए' एवं 'भ्रमजाल' (अगस्त/प्रथम) दोनों ही कहानियां हृदय को छू गईं. ये कहानियां यह दर्शाती हैं कि पुरुष के बिना स्त्री का जीवन नीरस एवं अधूरा है. 'भ्रमजाल' में बाल स्वभाव का चित्रण बड़ा ही मार्मिक बन पड़ा है. 'रैना बीती जाए' जहां एक ओर उच्च शिक्षा के उन्माद में विवाह के प्रति आधुनिकाओं की बढ़ती अरुचि की ओर संकेत करती है, वहीं दूसरी ओर 'चूल्हा, चौका और कढ़ाई, फिर कैसे होगी पढ़ाई' का प्रश्नचिह्न भी लगा देती है. हमें इस का समाधान ढूंढ़ना होगा. —लखीचंदप्रसाद 'दिवाकर'

*

सत्यता का प्रकाशन

कहानी 'उजाले की ओर' (अगस्त/प्रथम) बेहद पसंद आई. इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने एक ऐसी सत्यता को उजागर किया है जो नोबेल पुरस्कार विजेता व वैज्ञानिक डा. हरगोविंद खुराना की याद को ताजा कर देती है. साथ ही यह कहानी यह सोचने पर मजबूर करती है कि वे कौन सी परिस्थितियां थीं, जिन से मजबूर हो कर डा. खुराना ने अपनी जन्मभूमि भारत को छोड़ कर अमरीकी नागरिकता स्वीकार कर ली.

—दयाराम सिंह

*

तबलीगी जमात

लेख 'तबलीगी जमात' (अगस्त/प्रथम) वास्तविकता से दूर है. किसी भी जमात पर भरपूर तनकीद (समालोचना) करने के लिए जरूरी है कि उस का पूरा जायजा लिया जाए. किंतु इस लेख से लगता है कि लेखक ने स्टेशन पर कुछ देखा या सुना और लिखने बैठ गए भ्रामक बातें.

तबलीगी जमात के लोग मजहब का पूरा जानने की बात नहीं करते. वे तो नमाज की तलकीन (उपदेश) इसलिए करते हैं कि आज का मुसलमान यदि इसलाम के एक पहलू का ही पूरी तरह पाबंद हो जाए तो फिर धीरेधीरे बाकी बातों पर भी अमल करना आसान हो जाएगा. यही उन की योजना है.

तबलीगी जमात वाले उपदेश कतई नहीं देते. वे तो अमल की बात करते हैं और उसी की तरगीब (प्रोत्साहन) देते हैं.

अगर तबलीगी जमात वालों ने इसलाम के दूसरे पहलू छोड़ रखे हैं तो लेखक को किस ने मना किया है? वह खुद एक जमात बना कर बाकी बातों को सिखाने जुट जाएं. —निसार मोहम्मद एडवोकेट

*

जागरूकता लाने वाला लेख

लेख 'धर्म और नैतिकता' (अगस्त/प्रथम) प्रकाशित करने पर लेखक तथा सरिता को मेरी ओर से बधाई.

स्वर्गनरक का डर बता कर और ढोंग रच कर समाज को अब तक निष्क्रिय किया जाता रहा है. किंतु ऐसे लेखों द्वारा समाज में निश्चय ही जागरूकता आएगी तथा इन बुराइयों से समाज को मुक्ति मिलेगी.

—पुखराज पटवा

*

क्रेडिट कार्ड

क्रेडिट कार्ड (अगस्त/प्रथम) के विषय में पहली बार जाना कि यह क्या होता है. इन कार्डों के चलन के विषय में दिया गया विवरण अत्यंत दिलचस्प है. इस प्रणाली ने सचमुच संसार के असंख्य लोगों के लिए खरीदारी का काम सुविधाजनक बना दिया है.

—सविता जैन

*

जरूरतमद छात्र बैंक से ऋण लें

'पाठकों की समस्याएं' स्तंभ के अंतर्गत (अगस्त/प्रथम) आप ने एक पाठक की आर्थिक स्थिति के कारण पढ़ाई जारी न रख पाने की समस्या का समाधान पार्टटाइम नौकरी बताया है. मेरे विचार में यदि आप उसे किसी बैंक से पढ़ाई के लिए ऋण लेने की सलाह देते तो अधिक उपयुक्त होता. अधिकांश सरकारी बैंक ऐसी सुविधा जरूरतमंद मेधावी छात्रों को उपलब्ध करवा रहे हैं. —चंद्रशेखर [illegible]

*

अत्युक्तिपूर्ण

लेख 'घर में ही बलात्कार' (जुलाई/द्वितीय) में बढ़ाचढ़ा कर लिखने की धुन में बाप और बेटी तथा ससुर और बहू के संबंधों में संदेह को केवल दो घटनाओं द्वारा पुष्ट किया गया है. मेरी दृष्टि में यह सही नहीं. —दामोदरप्रसाद [illegible]

[illegible]

दें'ज़ घराने की एक सफल जोड़ी

देश भर की गृहिणियां पूरे परिवार को कई वर्षों से विश्वसनीय केयो-कार्पिन केश तेल इस्तेमाल करने की सलाह देती हैं। हल्का, चिपचिपाता नहीं, भीनी भीनी खुशबूवाला केयो- कार्पिन केश को आकर्षक और स्वस्थ रखने में मदद करता है।



केयो-कार्पिन केश तेल

आकर्षक, सजे-संवारे केश के लिये

केयो-कार्पिन मसाज आयल

त्वचा सुरक्षा का सम्पूर्ण साधन



केयो-कार्पिन मसाज आयल में स्वस्थ त्वचा के लिये आवश्यक तीनों विटामिन-ई, ए और डी-मौजूद हैं। इसकी विशेष फार्मुलेशन आपकी त्वचा को झुर्रियों और फटन से बचाकर चमकदार और कोमल रखती है। यह जवान, अधेड़, सबके लिये फायदेमन्द है... बच्चों के लिये तो है ही।

दें'ज़ के दो श्रेष्ठ उत्पादन Dey's.

रोचक कहानी

कहानी 'सब से बड़ा दान' (जुलाई/द्वितीय) रोचक तो लगी ही, मन में भी घर कर गई.

मुझे नेत्रदान बैंक का पता चाहिए. कृपया सरिता में इस का पता प्रकाशित करें. मेरी हार्दिक इच्छा है कि मरणोपरांत कोई नेत्रहीन मेरे नेत्रों से इस संसार को देख सके.

—क.न. छावड़ा

नेत्रदान बैंक का पता इस प्रकार है :

- राष्ट्रीय नेत्र कोष, डा. राजेंद्रप्रसाद नेत्र विज्ञान केंद्र, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, असारी नगर, नई दिल्ली-110016.

*

हम ने लड़नाझगड़ना छोड़ दिया

लेख 'क्या आप के पति बदमिजाज हैं' (जून/द्वितीय) मुझे और मेरी पत्नी को भी पसंद आया. इसे पढ़ कर हमारा छोटीछोटी बात पर लड़नाझगड़ना बिलकुल बंद हो गया है.

—गुरपालसिंह

*

पत्नियां भी अपने दायित्व को समझें

लेख 'कहीं आप पति की राह में बाधा तो नहीं बन रहीं' (जून/प्रथम) बहुत पसंद आया. यदि भारत की हर महिला ऐसे ही लेखों को मूल मंत्र बना ले तो हजारों घर टूटने से बच सकते हैं.

भारत में पांच प्रतिशत नारियां भी संभवतः अपने इस मूलभूत कर्तव्य को नहीं निभा पाती हैं. शादी के बाद वे केवल अपने अधिकारों व सुविधाओं की लंबी सूची ले कर नए जीवन की शुरुआत करती हैं. उन्हें पति की रुचि या पति में छिपी किसी प्रतिभा को ढूंढ़ने का न तो समय होता है और न ही वे इस आवश्यकता को महसूस करती हैं. इस के अलावा पति के साथ सामंजस्य स्थापित करना भी बहुत कम स्त्रियां जानती हैं.

लेखिका ने लिखा है कि हर पति अपनी पत्नी के प्यार का भूखा होता है लेकिन हर पत्नी इस के विपरीत ही व्यवहार करती है. वह अपने हठ के आगे पति को झुका कर ही रहती है व इस में ही अपनी जीत समझती है.

बेचारा पति घर की शांति व वातावरण को कुंठित होने से बचाने के लिए अनेक बार पत्नी की गलती होने के बावजूद माफी तक मांगता है. क्या किसी पत्नी ने यह अनुभव किया कि पति के आगे थोड़ा सा झुक जाने से पत्नी का कुछ नहीं बिगड़ता, किंतु पति के दिल में पत्नी के लिए प्यार और बढ़ जाता है?

आज प्रायः हर पति अपनी पत्नी से इस संबंध में असंतुष्ट है, किंतु घर को टूटने से बचाने के लिए ही वह ऊपर से खुश व सुखी रहने का नाटक करता रहता है.

—हरजीतसिंह गांधी

सरिता के लेखक

सीता किशोर



प्रस्तुत अंक में प्रकाशित लेख 'मैं मायके चली जाऊंगी' की लेखिका सीता किशोर हैं. आप को हिंदी व अंगरेजी का पर्याप्त ज्ञान है और सामाजिक तथा साहित्यिक विषयों पर आप विशेष रूप से लिखती हैं. पुस्तकों का अध्ययन और घरेलू साजसज्जा आप के विशेष शौक हैं.



पूर्णिमा गुप्ता

प्रस्तुत अंक में प्रकाशित कहानी 'बहुत खूब' की लेखिका पूर्णिमा गुप्ता हैं. आजकल आप संयुक्त राज्य अमरीका में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं. भारत व अमरीका में आप ने कई पुरस्कार जीते हैं. विमान चालन, खेलकूद, नाचगाने तथा वादविवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेने में आप की विशेष रुचि है.

वैवाहिक विज्ञापन और समाचारपत्र

मैंने दिल्ली के दो प्रमुख अंगरेजी दैनिक समाचार-पत्रों में एक वर्ष के भीतर अपनी कन्या एवं पुत्रों के विवाह के लिए चार विज्ञापन दिए. सैकड़ों लोगों के पत्र आए. लगभग सभी से पत्रव्यवहार हुआ और बहुत से लोगों से मिला भी. खेद का विषय है कि लड़कियों के बारे में 90 प्रतिशत परिवारों ने आयु गलत बताई थी और 25 प्रतिशत लोगों के अन्य विवरण बिलकुल झूठे थे.

लड़कों की स्थिति तो और भी विचित्र थी. लगभग 95 प्रतिशत लड़कों ने अपनी आमदनी कई गुना बढ़चढ़ कर बताई थी और लगभग 30 प्रतिशत मामलों में लड़कों के बारे में पूछताछ करने पर बताया गया कि उन का आचरण ठीक नहीं है.

आज के इस तनाव के युग में क्या अखबार वालों का यह फर्ज नहीं कि वे सीधीसादी जनता को सतर्क करें कि विज्ञापन द्वारा वर या वधू चुनते समय पूरी छानबीन अवश्य कर लें? अंगरेजी दैनिक तो इस विषय में इसलिए शायद लिखना नहीं चाहेंगे कि इस से उन की ऐसे विज्ञापनों से होने वाली आमदनी में फर्क पड़ेगा किंतु आप की पत्रिका के दृष्टिकोण को देखते हुए यह आशा करता हूं कि आप कम से कम मेरे इस पत्र को अवश्य छाप देंगे.

—रामलाल टंडन

*

हिंदू धर्म की हंसी न उड़ाएं

लंबे समय से हिंदू धर्म के पुनरुत्थान के नाम पर आप ने जितने भी धार्मिक प्रसंगों की व्यंग्यात्मक व्याख्या की है उस से क्या हिंदू धर्म का भला हो सका है? शायद नहीं.

अब तक आप ने जितने भी धार्मिक प्रसंगों की व्याख्या की है, उन में से ज्यादातर का उद्देश्य हिंदू धर्म की कुरीतियों को दूर करना नहीं था. उदाहरण के लिए द्रौपदी की पांच भाइयों से शादी (जून/प्रथम) का प्रसंग लीजिए. अब आप ही बताइए कि महाभारत के इस प्रसंग को ले कर जो हंसी आप ने हिंदू धर्म की उड़ाई है, क्या उस से दहेज प्रथा, भेदभाव, जातिवाद जैसी कुरीतियां दूर हो सकती हैं?

फिर आप क्यों ऐसे प्रसंगों की हंसी उड़ाते हैं. शायद आप हिंदू धर्म के पुनरुत्थान के नाम पर इसे दुनिया का सब से घटिया धर्म घोषित करना चाहते हैं. लेकिन प्रश्न यह है कि जब हम अपने धर्म की आधारभूत मान्यताओं की ही अवहेलना कर देंगे तो हिंदू धर्म में बचेगा क्या? और ऐसी दशा में हमें हिंदू कौन कहेगा?

आप अपने रचनात्मक अभियान की तुलना राजा राममोहन राय जैसे महान समाज सुधारकों से करते हैं. परंतु क्या आप ने कभी यह भी सोचा है कि उन्होंने हिंदू धर्म की आधारभूत मान्यताओं की कभी आलोचना नहीं की थी? उन्होंने तो केवल सतीप्रथा जैसी हिंदू धर्म की कुरीतियों की आलोचना और उन्हें दूर करने का प्रयास किया था. —श्रीप्रकाश श्रीवास्तव

● हमारा उद्देश्य हिंदू समाज का मजाक उड़ाना और उसे सब से घटिया समाज साबित करना नहीं, बल्कि उसे शक्तिशाली, सुदृढ़ और उन्नत बनाना है. इस के लिए जरूरी है कि उन चरित्रों की असलियत उजागर की जाए, जो हिंदू समाज के आदर्श बने हुए हैं और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अनैतिकता, अकर्मण्यता और पलायनवाद की प्रेरणा देते हैं. इन चरित्रों के प्रति करोड़ों हिंदू श्रद्धा रखते हैं. धर्म के धंधेबाज उन के चरित्र की कमियों को भी विशेषता बता कर लोगों को दिग्भ्रमित करते हैं और उन के प्रभाव को और गहन बनाते हैं. उस स्थिति में हिंदू धर्म और उस के चरित्र की विसंगतियों को खुल कर बताना और ज्यादा आवश्यक हो जाता है.

सब से पहले मनुष्य महत्त्वपूर्ण है. इसलिए जिन कारणों से मनुष्य का अहित होता है, उन्हें दूर किया ही जाना चाहिए. हिंदू समाज की आज जो भी दुर्दशा है, उस का कारण हिंदू धर्म है. धर्म का व्यर्थ मोह छोड़ने और जीवन के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाने पर ही हिंदू समाज पतन के गर्त से बाहर निकल सकता है. यदि आप मनुष्य का हित चाहते हैं तो धर्म की चिंता छोड़िए.

—संपादक

*

रूस आखिर चाहता क्या है?

20 जुलाई को, जिस समय सोवियत नेता लियोनिद ब्रेझनेव यह कह रहे थे कि लेबनान में इजराइली कारवाई के लिए 'भीषण नरसंहार' के अतिरिक्त और कोई शब्द नहीं, क्या उस समय वह यह भूल गए कि रूसी आक्रमण तथा आधिपत्य के फलस्वरूप लगभग 10 लाख अफगान (कुल जनसंख्या का 20 प्रतिशत) मारे जा चुके हैं तथा 30 लाख से अधिक अफगानों को भाग कर पाकिस्तान, ईरान और भारत में शरण लेनी पड़ी है?

एक ओर तो वह लेबनान में विदेशी हस्तक्षेप की निंदा कर रहे थे, मरने वालों के लिए आंसू बहा रहे थे, दूसरी ओर दक्षिण लेबनान स्थित फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के शरणार्थी शिविरों से इजराइली सैनिकों को सोवियत शस्त्रास्त्र तथा गोलाबारूद के ऐसे विशाल भंडार प्राप्त हुए थे, जिन से पांच सैनिक टुकड़ियों को सुसज्जित किया जा सकता था. ये सोवियत हथियार वहां किसलिए थे, सोवियत संघ ने क्या इस प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश की है.

सोवियत शस्त्रों के बल पर ही वियतनामी सेनाएं अभी तक कंपूचिया पर कब्जा जमाए हुए हैं तथा इस बात के भी प्रमाण मिले हैं कि वे विरोध करने वाले कंपूचियावासियों पर विषैली रासायनिक गैसों तथा माइकोटाक्सिन जैसे घातक द्रव्यों का प्रयोग कर रहे हैं. इसी प्रकार गैरकानूनी और निषिद्ध हथियारों का प्रयोग रूस अफगान प्रतिरोधियों तथा नागरिकों पर भी कर रहा है.

—गंगाधर पांडे

संपादकीय
सितंबर (द्वितीय) 1982

सरित प्रवाह



राजनीतिबाज चुनावों में वोट बटोरने के लिए नाना प्रकार के स्टंट रचते हैं ताकि उन की जनहितकारी छवि उज्ज्वल होती रहे. मद्रास की स्कूलों में दोपहर का खाना मुफ्त देने की जिस योजना का जिक्र इन पंक्तियों में किया गया था (सरिता/अगस्त/प्रथम) और जिस पर 100 करोड़ रुपए वार्षिक खर्च किया जाएगा, एक ऐसा ही स्टंट है.

इस योजना के बारे में दावा किया जा रहा है कि इस से स्कूलों में बच्चों की संख्या बढ़ रही है. जो मांबाप अपने बच्चों को पढ़ाने में कतराते थे (ताकि वे कुछ काम कर के दो पैसे कमाएं), अब वे उन्हें स्कूलों में भेज रहे हैं. पर जहां कोई वस्तु मुफ्त मिलती हों, वहां भीड़ लग जाए तो इस में आश्चर्य क्या है और कौन सा तीसमारखांपना है?

इस योजना की आलोचना के प्रति तमिलनाडु के मुख्य मंत्री श्री रामचंद्रन इतने छुईमुई हैं कि एक पत्र ने लिख दिया कि एक स्कूल में भोजन के बाद कुछ लड़कों को उलटी आ गई. बस, इस पर उस पत्र के संवाददाता, संपादक और प्रकाशक को पुलिस ने धर पकड़ा और बिना जमानत जेल में ठूंस दिया. इस नए प्रेस विरोधी कानून को (जिस पर बिहार के मुख्य मंत्री पंडित जगन्नाथ मिश्र का प्रेस बिल आधारित है) अब सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई है.

फिर भी इस योजना के विरुद्ध आवाज उठने लगी है. स्कूलों के शिक्षकों का सारा समय खाने का सामान खरीदने, खाना पकाने और खाना खिलाने में ही लग रहा है. वे पढ़ाएंगे कब? दूसरे, खाने का स्तर बहुत खराब है— सरकारी योजनाओं में कर्मचारियों द्वारा पैसा न खाया जाए, यह कैसे हो सकता है? तीसरे, जिन लोगों से इस योजना के लिए जबरदस्ती पैसा वसूल किया जा रहा है, वे भी चीखने लगे हैं.

कांचीकामकोटि के कनिष्ठ शंकराचार्य श्री जयेंद्र सरस्वती ने इस बात पर आपत्ति की है कि हिंदू मंदिरों से सरकार ने इस योजना के लिए जबरदस्ती 50 लाख रुपए वसूल किए हैं, जब कि हजारों मंदिर टूटे पड़े हैं और मरम्मत के लिए धन नहीं है और जब कि अन्य धर्मों के पूजास्थलों से कुछ नहीं लिया गया.

शंकराचार्य ने तो अपनी आवाज उठा दी, पर उद्योगपति और व्यापारी जिन से काफी बड़ी रकमें वसूल की जा रही होंगी (धन का असली स्रोत तो यही हैं) वे तो इस प्रकार चीखपुकार कर नहीं सकते. पर वे मजबूर हो कर इस लूटखसोट का भार अपनी चीजों के दाम बढ़ा कर जनता पर सरकाएंगे ही.

*

जनता की सस्ती वाहवाही लूटने का तमिलनाडु सरकार ने एक और नया स्टंट रचाया है. अध्यादेश द्वारा यह आदेश दिया गया है कि जिन व्यक्तियों की वार्षिक आय 4,800 रुपए से कम हो, उन के सारे कर्ज माफ. उन्हें सिवाए सरकारी बैंकों के किसी का कर्ज नहीं चुकाना होगा.

देखने में तो यह योजना बड़ी गरीबपरवरी वाली लगती है, पर आगे चल कर

यह गरीबों का ही गला काटेगी. रुपया देने वाला अब तक दिया हुआ कर्ज तो खैर बट्टे खाते में डाल कर समझ लेगा कि यह सरकारी डकैती है, पर आगे से वह किसी गरीब को कभी कोई उधार नहीं देगा. अब रुपए की जरूरत तो हरेक को पड़ती है, बड़े से बड़े और छोटे से छोटे को, और गरीब को सब से ज्यादा. शादी, बीमारी, बेरोजगारी, भुखमरी इत्यादि के समय अब उन्हें रुपया कौन देगा? सरकार?

अव्वल तो सरकार या सरकारी बैंकों के पास इस प्रकार गरीबों को उधार बांटने की न कोई योजना है, न पर्याप्त धन. और अगर हो तो भी क्या सरकारी कर्मचारी अपना पूरा हिस्सा बंटाए बिना आसानी से किसी को कुछ दे देते हैं? और फिर यह रुपया जो अधिकांशतः डूब जाएगा, क्या गरीबों से ही टैक्स लगा कर वसूल नहीं किया जाएगा?

*

पिछले महीने दिल्ली उच्च न्यायालय ने एक महिला की वह अपील नामंजूर कर दी जो उस ने निचली अदालत द्वारा उस के पति की तलाक की अर्जी स्वीकार कर के विरुद्ध दायर की थी. इस महिला ने पति को कनाट प्लेस में सरेआम पीटा था और धमकाया था कि यदि उस ने तलाक लिया तो और भी कुछ भुगतना पड़ेगा.

उच्च न्यायालय के जज न्यायमूर्ति गोस्वामी ने कहा कि ऐसी परिस्थिति में तलाक होना ही ठीक है.

जहां रोज समाचारपत्रों में बहुओं और महिलाओं को जलाने, उन पर जुल्म ढाने की खबरें प्रकाशित होती हैं, क्या यह खबर 'ताजगी' दिलाने वाली नहीं मानी जाएगी?

*

एक और अदालती फैसला जो बड़ा दिलचस्प है. यवतमाल जिले के बबूलगांव थाने के थानेदार ने श्री अशोक मानिकचंद नामक एक व्यक्ति को बिना किसी जुर्म के गिरफ्तार कर लिया. श्री मानिकचंद ने हरजाने का दावा किया और यवतमाल के सिविल जज ने थानेदार जादव और हेड कांस्टेबल बोंडे के विरुद्ध 25,000 रुपए की डिगरी दे दी.

पुलिस और राजनीतिबाजों के जुल्म से टक्कर लेना आसान नहीं, पर साहसिक व्यक्ति काम कर गुजरते हैं. बेकसूर नागरिकों को पकड़ने और परेशान करने की आदी पुलिस को इस डिगरी से कुछ सबक तो मिलेगा ही, और जनसाधारण को पुलिस के अत्याचार को चुपचाप सहने के विरुद्ध एक प्रेरणा.

*

केंद्रीय पेट्रोलियम व रसायन मंत्री शिवशंकर एक अनुसंधान केंद्र का उद्घाटन करते हुए सरकारी दवा बनाने वाली कंपनी इंडियन ड्रग्स एंड फार्मेस्युटिकल्स लिमिटेड के प्रबंधकों पर बुरी तरह से बिगड़े. बोले: कंपनी की पूंजी 75 करोड़ रुपए है और पिछले वर्ष ही आप लोगों ने 26 करोड़ का घाटा दिखा दिया. (इस से पहले कितना नुकसान हो चुका है, यह उन्होंने नहीं बताया.) यदि स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो सरकार को प्रबंधकों के विरुद्ध बहुत बड़े कदम उठाने पड़ेंगे.

पर प्रबंधक जानते हैं कि सरकार हद से हद उन का तबादला कर सकती है, नौकरी से तो निकाल नहीं सकती. कर दो तबादला.

पर वास्तव में होगा यह कि कंपनी अपने माल का दाम बढ़ाएगी, जिस से बदइंतजामी का नुकसान पूरा हो जाएगा, क्योंकि कंपनी सरकारी है, सारी सरकारी खरीदारी इसी कंपनी से होगी, कुछ बहुत आवश्यक विदेशी दवाइयों को इसी कंपनी की मार्फत ही आयात किए जाने का नियम बन जाएगा (जैसे हिंदुस्तान फिलम कंपनी के घाटे को पूरा करने के लिए फिल्मों का सारा आयात इस कंपनी की मार्फत कर दिया गया था) और घाटे की पूर्ति हो जाएगी.

सरकारी अमले की अकर्मण्यता व बेईमानी को ढकने के लिए जनता पर टैक्स अब एक बहुत जानापहचाना साधन है.

स्वतंत्रता दिवस पर काले बिल्ले लगा कर परेड पर आने के अपराध में बंबई सरकार ने महाराष्ट्र पुलिस संगठन के नेताओं और प्रमुख कार्यकर्ताओं व 100 के लगभग सिपाहियों को गिरफ्तार कर लिया. इस पर बंबई की पुलिस के जवान बिगड़ उठे और शहर में दंगा मच गया. दुकानें लूटी गईं, यातायात ठप हो गया. पुलिस के इस विद्रोह को दबाने के लिए केंद्रीय रिजर्व पुलिस और सीमा सुरक्षा फौज को बुलाना पड़ा. चारपांच दिन तक बंबई का व सारे देश का भी वातावरण बहुत गरम रहा, पर अंत में शांति हो गई.

जानकार लोगों का कहना है कि यह पुलिस विद्रोह पुलिस वालों की उचित मांगों की अवहेलना करने और काले बिल्ले की बात का बतंगड़ बनाने के कारण हुआ.

इस में कोई संदेह नहीं है कि जितनी जिम्मेदारी एक पुलिस वाले की है, और जिस काम की उस से अपेक्षा की जाती है (वह वास्तव में कितना काम करता है, यह दूसरी बात है) उस के अनुपात से उस का वेतन और सुविधाएं बहुत कम हैं.

हमारी संसद और लगभग डेढ़ दरजन विधान सभाएं दिन प्रतिदिन धड़ाधड़ तरह-तरह के पेचीदा और अकसर बेहूदा कानून बनाती रहती हैं. इन सब को लागू करने और इन की अवज्ञा करने वालों को सजा दिलाने का काम पुलिस वाले का होता है.

जब आप ने एक पुलिस वाले को आम नागरिक को फांसने का इतना अधिकार दिया है तो उस के हिसाब से उस का वेतन भी दीजिए, ताकि पुलिस में उन कानूनों को ठीक ढंग से लागू करने योग्य व्यक्ति आ सकें. या उस पर इतनी जिम्मेदारी न थोपिए, न इतने अधिकार दीजिए.

जब पुलिस वाला देखता है कि उस के ऊपर बैठे राजनीतिबाज या अन्य सरकारी अधिकारी उस को अपना हथियार बना कर खूब पैसा बटोरते हैं, सत्ता में जमे हुए हैं, शान से रहते हैं तो वह भी क्यों घाटे में रहे? बिना पूरा मुआवजा लिए वह राजनीतिबाज की सत्ता को लोगों पर लाठी चला कर, गोलियां मार कर क्यों बरकरार रखे?

बंबई के बाद हरियाणा में भी 400 से अधिक सिपाही बर्खास्त कर दिए गए हैं, क्योंकि इन्होंने अपनी मांगों की पूर्ति के लिए आंदोलन चलाया था.

अनुशासनहीनता तो सहन नहीं की जा सकती, विशेषकर पुलिस और फौज में. पर साथ ही यह भी आवश्यक है कि पुलिस वालों को उचित वेतन और सुविधाएं दी जाएं और उन के काम और जिम्मेदारी का दायरा कम किया जाए. समाज का हर रोग केवल कानून पास कर के और उसे पुलिस के हवाले कर के दूर नहीं किया जा सकता.

*

जुलाई के अंतिम सप्ताह में राजधानी में धार्मिक दंगे हुए, जिस से काफी नुकसान हुआ और गोलियां चलीं. कुछ लोग मारे भी गए.

दंगा बड़ी मामूली बात से शुरू हुआ- एक लड़के ने एक दुकान से कुछ सामान मांगा. इस पर कहासुनी हो गई. क्योंकि दोनों में एक हिंदू था, दूसरा मुसलमान, बस देखतेदेखते शहर के बहुत बड़े भाग के हिंदू और मुसलमान एकदूसरे का सिर फोड़ने लगे, एकदूसरे की दुकानें लूटने लगे, आग लगाने लगे, पुलिस आई, कर्फ्यू लगा, गोलियां चलीं, थोड़े दिन बाद शांति हो गई.

प्रश्न यह है कि मामूली सी, जरा से आपसी झगड़े धार्मिक दंगों का रूप क्यों ले लेते हैं? (इन दंगों को सांप्रदायिक दंगे कहा जाता है, पर वास्तव में ये धार्मिक दंगे हैं और इन का कारण धर्म ही है जो एक मनुष्य को दूसरे का जानी दुश्मन बना देता है.

पहले कहा जाता था कि ब्रिटिश सरकार ये हिंदू मुसलिम दंगे कराती है ताकि उस का राज बराबर बना रहे. लेकिन अब आजादी के बाद कौन कराता है? कांग्रेस? लेकिन जनता सरकार के राज में भी व गैरकांग्रेसी दलों की सरकारों के राज में भी ये दंगे होते रहे हैं और हो रहे हैं.

जब तक धर्म और धर्म के धंधेबाज

अपना कारोबार चलाते रहेंगे, ये दंगे हमेशा होते रहेंगे. ये केवल वहां नहीं होंगे जहां कोई एक विशेष धर्म बहुत व्यापक और शक्तिशाली हो, जैसे पाकिस्तान व अन्य मुसलिम देशों में, जहां हिंदू इतने कम हैं कि वे सिर उठाने की हिम्मत नहीं कर सकते और उठाएं तो बेरहमी से कुचल दिए जाएंगे.

अन्यथा जहां दो पक्षों में कुछ भी अनुपात है वहां ये होंगे ही, जैसे उत्तरी आयरलैंड, पश्चिमी एशिया और भारत में. और यह आवश्यक नहीं कि केवल दो धर्मों के लोग आपस में एकदूसरे का गला काटें. एक ही धर्म के विभिन्न संप्रदायों में भी वैमनस्य है, मारामारी होती है. ईसाइयों में रोमन कैथोलिक प्रोटेस्टेंटों के जानी दुश्मन हैं, मुसलमानों में शिया सुन्नियों के और हिंदुओं में सवर्ण हरिजनों के.

*

भारत में इस समय दहेज के बारे में बहुत शोर मच रहा है. लड़कियां आत्महत्याएं करती हैं या दुर्घटनाओं की शिकार हो जाती हैं तो तुरंत उन के घर वाले और अन्य असंबंधित व्यक्ति भी 'दहेज के लिए हत्या' का नारा लगा कर अपना नाम अखबारों में छपवाना चाहते हैं. दहेज के विरुद्ध कड़े कानून बनाने की मांग की जा रही है और मातापिता द्वारा लड़की को कुछ भी देने पर पाबंदी लगाने का प्रस्ताव भी है. पर स्वयं ये चीखनेचिल्लाने वाले जब अपनी बारी आती है, अपने लड़के, भाई, भतीजे, चाचा का विवाह होता है तो सब से पहले यही देखते हैं कि लड़की वाले ने क्या दिया, उन्हें उस में कितना हिस्सा मिलेगा. किसी लड़की ने या लड़की वाले ने आज तक कोई सत्याग्रह या अनशन नहीं किया. न पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई कि मेरे भाई, भतीजे इत्यादि की या स्वयं मेरी ससुराल से यह सामान क्यों आया है.

इस सिलसिले में मजेदार बात यह है कि जहां वे दहेज को कोसती हैं, वहीं नारी मुक्ति आंदोलन की चौधरानियां पिता की संपत्ति में लड़की को पहले से अधिक हिस्सा मिलने की मांग भी करती हैं. इन दोनों बातों में पक्का विरोधाभास है, क्योंकि दहेज भी तो पिता की संपत्ति का बंटवारा ही है. दहेज के पक्ष में यह भी कहा जा सकता है कि वह पिता द्वारा स्वयं दिया जाता है जब कि मरणोपरांत संपत्ति के बंटवारे में भाई बहन को हिस्सा दें या न दें, या इस बीच में उसे कतई नष्ट कर दें.

वैसे भी दहेज स्वेच्छापूर्वक दिया जाता है. कोई लड़के वाला लड़की वाले के घर आयकर अधिकारियों की तरह पुलिस को ले कर धावा नहीं बोलता कि लड़की भी दो. और इतना दहेज भर दो, लड़की वाला स्वेच्छा से लड़के की कमाई की क्षमता और उस के मातापिता की संपत्ति के अनुसार दहेज देने की पेशकश करता है ताकि उस की लड़की उस कमाई और संपत्ति में हिस्सा बंटा सके. किसी संपत्तिहीन, मजदूर लड़के से विवाह करने पर किसी लड़की वाले को दहेज देना नहीं पड़ता. खैर.

अब अरब देशों का हाल सुनिए, जहां मामला बिलकुल उलटा है. वहां लड़की वाला दहेज मांगता है और अच्छे घर की लड़की के लिए दहेज चार लाख रुपए तक पहुंच जाता है.

समाचार यह है कि सऊदी अरब, कतर और अन्य पड़ोसी देशों में वहां की सरकारें हर लड़के को 70,000 रुपए तक का अनुदान दे रही हैं ताकि लड़के लड़कियों के मातापिता को 'दहेज' दे सकें और उन का विवाह हो सके.

अभी तक ऐसी कोई खबर नहीं मिली है जिस से पता चले कि इन अरब देशों में लड़कों या लड़कों के मातापिताओं ने दहेज-विरोधी आंदोलन चलाया हो.

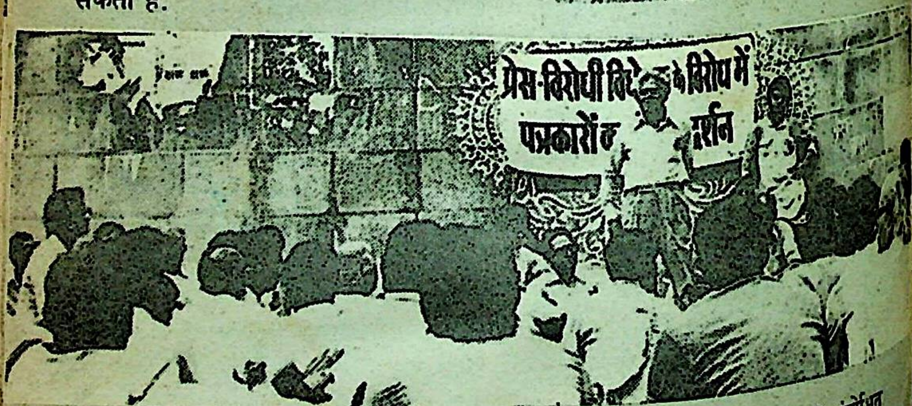
लगता है जब तक विवाह में मातापिता का दखल रहेगा, तब तक दहेज प्रथा नहीं हट सकती. दहेज लड़की वाला देगा या लड़के वाला देगा, यह इस पर निर्भर करता रहेगा कि वांछनीय लड़केलड़कियों की संख्या का आपस में क्या अनुपात है. ●

यह प्रहार प्रेस पर नहीं, मूल अधिकारों पर है

लेख • हरिशंकर व्यास

सरकार और प्रेस के बीच टकराव शुरू हो गया है. बिहार सरकार के एक ही कृत्य ने अखबारनवीसों को इस बात का एहसास करा दिया है कि उन्हें प्राप्त सुरक्षा कितनी खोखली है. शक्तिशाली केंद्र सरकार तो जो चाहे कर ही सकती है, पर आज छोटे स्तर पर भी अखबारों की स्वतंत्रता छुटभैये राजनीतिबाजों की कृपा पर आश्रित है. यदि राज्य स्तर पर भी सत्तारूढ राजनीतिबाज पत्रकारों को मजा चखाने की ठान ले तो वह चार मिनट में विधान सभा से एक विधेयक पारित करा के देश के संविधान के मूल अधिकारों वाले अध्याय को निष्क्रिय बना सकता है.





यही तो किया बिहार के मुख्य मंत्री डा. जगन्नाथ मिश्र ने. एक विधेयक बना कर महज चार मिनट में उसे पारित करा कर

शहीद स्मारक पर पत्रकारों को संबोधित करते हुए 'इंडियन नेशन' के संपादक श्री दीनानाथ झा.

जगन्नाथ मिश्र: अपने काले कारनामों पर परदा डालने के लिए प्रेस पर अंकुश.

उन्होंने सरकारी अफसरों को यह तय करने का अधिकार दे दिया कि राज्य के अखबारों में ऐसी खबर तो नहीं छप रही जो आपत्तिजनक, सरकार का हौसला गिराने वाली व अश्लील हो. यदि अफसरों के अमले ने ऐसा पाया तो यह एक ऐसा अपराध होगा, जिस पर पुलिस उस के खिलाफ काररवाई कर सकती है. गैरजमानती गिरफ्तारी होगी और पत्रकार को छः महीने से ले कर पांच साल तक की सजा दी जा सकेगी.

जाहिर है, यह विधेयक अखबारों का मुंह बंद करने, प्रेस की स्वतंत्रता को कम करने की साजिश है. भ्रष्टाचार, अव्यवस्था, लूटमार का बिहार एक टापू है. वहां के राजनीतिबाजों के प्रश्रय से ही बिहार की आज यह स्थिति बनी है. राज्य में बाकायदा ऐसे माफिया संगठन सक्रिय हैं जिन्हें सत्तारूढ राजनीतिबाजों का वरदहस्त प्राप्त है. कैदियों की आंखें फाड़ने, नक्सलवादी के नाम पर खेतिहर मजदूरों का संहार करने, सैंकड़ों विचाराधीन कैदियों को घुटघुट कर मर जाने तक जेलों में बंद रखने,

महज चार मिनट में प्रेस विधेयक बना कर तथा उसे पास करा के बिहार के मुख्य मंत्री जगन्नाथ मिश्र ने देश के संविधान में उल्लिखित मूल अधिकारों वाले अध्याय को क्या समाप्त नहीं कर दिया है?

पटना में आर ब्लाक के पास पत्रकारों के जलूस को रोकती हुई पुलिस.

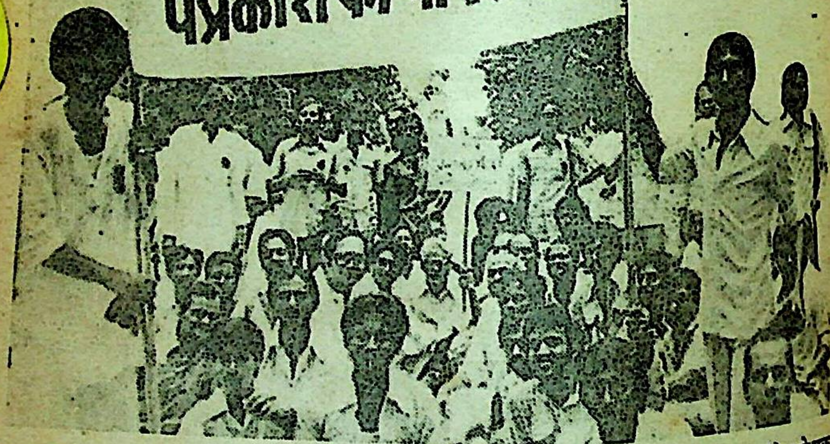


पटना जंक्शन और गांधी मैदान को गिरवी रख कर बैंक से कर्ज निकाल लेनें वाली डा. जगन्नाथ मिश्र की सरकार ऐसी खबरों के प्रकाशन से हमेशा चिढ़ी रहती है. अतः मौका मिलते ही डा. जगन्नाथ मिश्र ने अपने काले मनसूबों का काला कानून बनवा डाला.

यह घटना अनेक सवालों को जन्म देती है. क्या इस के लिए बिहार के मुख्य मंत्री ने केंद्र से अनुमति ले रखी थी? उन्हें इस विधेयक की प्रेरणा कैसे मिली? क्या केंद्रीय सरकार राज्यों के ऐसे विधेयकों की मार्फत पूरे देश में अखबारों का मुंह बंद करने की साजिश तो नहीं रच रही है? डा. जगन्नाथ मिश्र ने विधेयक के पक्ष में उड़ीसा तथा तमिलनाडु के जिन बिलों का हवाला दिया है उन की क्या स्थिति है? और अखबारों तथा केंद्र सरकार का इस बारे में क्या रुख रहेगा?

अभी तक प्राप्त सभी संकेत यह बताते हैं कि मुख्य मंत्री डा. जगन्नाथ मिश्र ने स्वयं अपने बूते पर यह कदम नहीं उठाया. भले ही केंद्रीय सूचना मंत्री वसंत साठे का यह कहना सही हो कि विधान सभा में विधेयक लाने से पहले डा. जगन्नाथ मिश्र ने उन से कोई परामर्श नहीं किया था, लेकिन यह चर्चा विश्वसनीय लगती है कि प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के वाशिंगटन जाने से पूर्व डा. जगन्नाथ मिश्र ने उन से इस बारे में बातचीत की थी. गृह मंत्री वेंकटरमण ने भी ऐसा कहा है. बिहार के दो सांसदों के अनुसार राष्ट्रपति श्री जैलसिंह को डा. जगन्नाथ मिश्र ने यह कहा बताते हैं कि वह समाचारपत्रों को अधिक जिम्मेदार बनाने की सोच रहे हैं.

यह हो सकता है कि श्रीमती इंदिरा गांधी तथा गृह मंत्री को विधेयक का पूरा ब्योरा न दिया गया हो. इंदिरा कांग्रेस के एक सांसद के शब्दों में, "यदि इंदिरा कांग्रेस के कुछ मुख्य मंत्री प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के पास जाएं और अखबारों की शिकायत करते हुए कहें कि इस स्थिति को सुधारने के लिए कुछ करना चाहिए तो निश्चित ही श्रीमती इंदिरा गांधी नाराज नहीं होंगी, क्योंकि ऐसी ही शिकायत तो वह स्वयं भी करती रहती हैं. समाचारपत्रों के प्रति श्रीमती इंदिरा गांधी के शिकायतपूर्ण रवैए को देख कर ही डा. जगन्नाथ मिश्र ने



प्रेस विरोधी विधेयक के विरोध में पत्रकारों का मौन जलूस.

इस विरोधी विधेयक को इतना व्यापक बनवाया.

यह भी तय है कि विधेयक पर हस्ताक्षर के लिए केंद्रीय मंत्रिमंडल की सलाह आंख मूंद कर राष्ट्रपति मानेंगे. केंद्रीय सरकार इस बारे में क्या रुख अपनाएगी, इस बारे में दो राय हैं. कुछ के अनुसार इस बिल को पड़ा रहने दिया जाएगा. आलोचना का राष्ट्रव्यापी माहौल देख केंद्र सरकार इसे विचारार्थ पड़ा रहने दे कर स्वत: निष्क्रिय होने देगी, तो दूसरी राय यह है कि इस आलोचना को चुनौती मान कर श्रीमती इंदिरा गांधी इस विधेयक के लिए हरी झंडी दिखा देंगी.

यदि राष्ट्रपति इस बिल को अपनी स्वीकृति दे देते हैं तो निश्चित ही फिर पत्रकारिता सर्वाधिक जोखिम का काम हो जाएगा. देखादेखी दूसरे राज्यों में भी ऐसे कानून बनने लगेंगे. डा. जगन्नाथ मिश्र ने तो कहा भी है कि यह कोई एकदम नया बिल नहीं है. अपने इस बिल के पक्ष में उन्होंने उड़ीसा तथा तमिलनाडु के ऐसे ही बिलों का हवाला दिया है. उन का कहना है कि जब इन दोनों राज्यों ने ऐसा बिल बनाया था तब पत्रकार क्यों नहीं बोले.

डा. जगन्नाथ मिश्र का यह बयान ज्यादा वजनदार नहीं है. उड़ीसा विधान सभा में ऐसा बिल मार्च, 1962 में पारित हुआ था, पर इस के लिए नियम कोई नहीं बनाए गए. अत: अभी तक इस पर अमल नहीं हुआ है. प्रक्रिया यह है कि जब कोई ऐक्ट विधान सभा में पास होता है तो उस के तहत विधि विभाग नियमों का प्रारूप बना कर उसे सदन की नियम समिति के पास भेजता है. समिति से स्वीकृति मिलने पर संबंधित मंत्री सदन में नियमों की इस सूची को रखता है और उन पर स्वीकृति मिलने पर ही वह ऐक्ट अमल में आता है. लेकिन उड़ीसा में गत 20 वर्षों से इस बारे में कुछ नहीं हुआ.

डा. जगन्नाथ मिश्र का यह कहना भी गलत है कि इन राज्यों में विरोधी दलों ने भी

अन्याय

यदि राजशक्ति के केंद्र में ही अन्याय होगा, तब तो समग्र राष्ट्र अन्यायों का क्रीड़ास्थल हो जाएगा.

—जयशंकर प्रसाद

कोई आपत्ति नहीं की. उड़ीसा विधान सभा में उस वक्त सभी विरोधी दलों, जैसे प्रजा सोशलिस्ट पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी, स्वतंत्र पार्टी व निर्दलीय उम्मीदवारों सभी ने इस विधेयक का जबरदस्त विरोध किया था.

भारतीय दंड संहिता में संशोधन तमिलनाडु सरकार ने 1982 में ही किया. यह अध्यादेश के रूप में सितंबर, 1981 में लाया गया था. राज्य स्तर पर इस का विरोध हुआ है. इस के विरुद्ध तीन याचिकाएं मद्रास उच्च न्यायालय में विचारार्थ प्रस्तुत हैं. 'दक्कन हेराल्ड' के विशेष संवाददाता रामचंद्रन, द्रविड़ मुनेत्र कषगम के कार्यालय मंत्री वीरसामी तथा तमिल ग्रुप दिनाकरण के कंदासामी ने अपनी याचिका दायर कर रखी है. डा. जगन्नाथ मिश्र ने तमिलनाडु विधेयक से ही प्रेरणा ली है.

गत मार्च में उन्होंने अपने कुछ अधिकारियों को वहां के प्रेस कानून का अध्ययन करने के लिए तमिलनाडु भेजा था. स्थानीय समाचारपत्रों ने जब तीन अधिकारियों की मद्रास यात्रा की खबर छापी तो मुख्य मंत्री ने उस का प्रतिवाद किया. फिर अखबारों ने उस सरकारी चिट्ठी की फोटोकापी छाप दी, जिस में तीन अधिकारियों को उपर्युक्त उद्देश्य से विमान द्वारा मद्रास जाने का निर्देश दिया गया था. इस पर राज्य सरकार के प्रवक्ता ने यह स्पष्टीकरण दिया कि ऐसी यात्राएं कोई नई बात नहीं हैं. अन्य राज्यों के कानूनों के लिए अधिकारियों को अकसर भेजा जाता है. यह भी कहा गया कि प्रेस के विरुद्ध कोई कानून बनाने का प्रस्ताव नहीं है.

फिर अरबन बैंक घोटाले का मामला

ज्यादा तूल पकड़ता गया. डा. जगन्नाथ मिश्र फंसते गए. एक खबर छपी कि विपरीत ग्रहों को शांत करने के लिए मुख्य मंत्री ने अपने जन्म स्थान बलुआ बाजार में 108 बकरों के रक्त से स्नान किया. इस खबर ने मुख्य मंत्री को उत्तेजित कर दिया और उन्होंने किसी भी कीमत पर प्रेस विरोधी विधेयक पारित कराने की ठान ली. बताया जाता है कि राज्य के मुख्य सचिव तथा विधि सचिव ने इस का विरोध किया था.

'गैरजिम्मेदार' प्रेस को सजा दिलाना या 'जिम्मेदार' बनाना इस विधेयक के पक्ष में डा. जगन्नाथ मिश्र का मुख्य तर्क है. सवाल यह है कि सरकार यह कैसे तय करेगी कि प्रेस का रुख जिम्मेदाराना और अनुशासित है? क्या उन अफसरों, राजनीतिबाजों के भरोसे जो भ्रष्टाचार से सराबोर हैं? अपने पक्ष में तर्क देते हुए डा. मिश्र कुछ अखबारों की कतरनें व चित्र सदन में लाए थे. इन में सोनपुर मेले में गत वर्ष दिखाए गए नग्न कैबरे नृत्यों की तसवीरें थीं. उल्लेखनीय है कि स्थानीय अधिकारियों की सांठगांठ से ही ये नृत्य दिखाए जाते थे और अखबारों द्वारा शोर मचाने से ये बंद हुए.

इस का मतलब तो यह हुआ कि सरकार की नजर में नग्न कैबरे का प्रदर्शन अपराध नहीं, बल्कि उस की तसवीरें प्रकाशित करना अपराध है. फिर यदि अखबारों के रुख पर एतराज ही है तो उस से जुड़े मसलों पर फैसला करने के लिए प्रेस परिषद है, अदालतें हैं. क्यों नहीं डा. जगन्नाथ मिश्र ने प्रेस परिषद से शिकायत की? शिकायत के क्या मसले हैं, इन का जवाब भी प्रेस कानफ्रेंस में डा. जगन्नाथ मिश्र के पास नहीं था.

अब डा. जगन्नाथ मिश्र प्रेस परिषद व संपादक संघ व अन्य संस्थाओं को भी लताड़ रहे हैं. पत्रकार ऐसे निरंकुश ऐक्ट का विरोध करने के लिए पूरे देश में उठ खड़े हुए हैं. लेकिन एक मानी में अखबार भी इस स्थिति के लिए कोई कम उत्तरदायी नहीं हैं. पत्रकार अपने अधिकारों की रक्षा करने में असफल ही रहे हैं. प्रेस में एकता का अभाव तथा आपसी स्वार्थों से प्रेस की स्वतंत्रता के विरोधियों को अपने मंसूबों को पूरा करने में सफलता मिलती रही है.

प्रेस की स्वतंत्रता लोकतंत्र का आधार है, ताकत है. अवसर आ गया है कि जब इस ताकत का साहस के साथ उपयोग हो, अन्यथा न केवल बिहार का यह विधेयक स्वीकृत हो इस राज्य को तानाशाही का टापू बना देगा, बल्कि धीरेधीरे इस से प्रेरणा ले कर पूरे देश में निरंकुशता अपनी जड़ें जमा लेगी. केंद्र के पास भी यह बहाना हो जाएगा कि हम क्या कर सकते हैं. राज्यों के मामले में हम कैसे हस्तक्षेप कर सकते हैं. हमारी आस्था तो लोकतांत्रिक आदर्शों के प्रति ही है.

लेखकों से निवेदन

प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में चारछः सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्रव्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि हम कुछ भी बताने में असमर्थ होते हैं. हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं. स्वीकृत रचनाओं के बारे में सूचना चार से छः सप्ताह में दे दी जाती है.

टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं.

रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें.

यदि आप किसी ऐसे विषय पर लिखना चाहते हैं जिस में अधिक समय अथवा परिश्रम के लगने की संभावना है तो उस बारे में पूर्व सलाह लेना काफी लाभदायक होता है. इस बारे में भेजे गए पत्रों का यथोचित उत्तर दिया जाता है.

—संपादक

शून्यकाल का शून्यालाप

बिहार सरकार का प्रेस विधेयक क्या अखबारों की आजादी के साथ मजाक नहीं है?

तथा अन्य प्रश्न...



सदस्य : आप सब को नेता के रूप में सिर्फ इंदिराजी ही क्यों पसंद हैं? आप की इतनी बड़ी पार्टी में कोई और नेता क्यों नहीं है?

मंत्री : इस का रहस्योद्घाटन इंदिराजी ने अमरीका यात्रा के समय किया था. उन्होंने एक अखबार को बताया था कि उन की पार्टी के लोग उन्हें इसलिए नेता मानते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि वोट इंदिराजी के नाम पर ही मिल सकते हैं. एक तरह से हम स्वार्थी और मजबूर ठहराए गए हैं. फिर भी हम उन्हें ही नेता मानेंगे. दूसरा कोई नेता इसलिए नहीं है कि एक से ज्यादा मठाधीश हो जाएं तो मठ उजड़ जाता है. राजस्थानी कहावत है–'घणा मोडा मठ उजाड़.'

सदस्य : इंदिराजी ने बड़ी विनम्रता के साथ अमरीका की यात्रा की, पर साथ ही एकआध जगह यह कहने से नहीं चूकीं कि अमरीका की नीतियां भारत विरोधी हैं. इंदिराजी का इशारा किस नीति की ओर था?

मंत्री : अमरीकी अखबार और वहां की जनता आज भी यह पूछती है कि भारत में आपातस्थिति की घोषणा क्यों की गई थी. यह पूछना खुल्लमखुल्ला भारत का विरोध करना है. रूस ने तो एक बार भी नहीं पूछा कि भारत में आपातस्थिति क्यों घोषित की गई थी. स्पष्ट है कि वह हमारा मित्र है.

सदस्य : इंदिराजी ने कहा है कि यदि न्याय नहीं मिला तो देश में अराजकता फैल जाएगी. न्याय कौन नहीं दे रहा है?

मंत्री : यही तो उन्होंने बताया नहीं. आज जनता सब से न्याय मांग रही है. जनता के साथ सब से ज्यादा अन्याय उस से वादा कर के वोट ले कर जीतने वाले और फिर येनकेन प्रकारेण सत्ताधारी बनने वाला ही करता है. पर इंदिराजी का इशारा न्यायपालिका की तरफ था. जब भी न्यायपालिका ने मौलिक अधिकारों की रक्षा करने वाले निर्णय दिए हैं, उन के दल के लोगों को ऐसा लगा कि यह गरीबों पर कुठाराघात है. हमें आशा है कि 'न्याय नहीं मिल रहा', 'न्याय नहीं मिल रहा' की सरकारी शिकायत एक दिन न्याय करने का काम न्यायपालिका से छीन कर कार्यपालिका को दिलवा देगी.

सदस्य : क्या सरकार के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव रखना देशद्रोह है?

मंत्री : यह तो आप और हम दोनों जानते हैं कि हमारे पास प्रबल बहुमत है. ऐसा कोई प्रस्ताव हमारे खिलाफ पास नहीं हो सकता. पर विरोधी पक्ष इसलिए यह प्रस्ताव रखता है कि इस बहाने उसे सरकार के खिलाफ बोलने का मौका मिल जाता है. हमारे खिलाफ बोलना क्या देशद्रोह नहीं है?

सदस्य : बिहार सरकार का प्रेस विधेयक क्या अखबारों की आजादी के साथ मजाक नहीं है?

मंत्री : तो क्या मजाक करने का आप को ही अधिकार है? हमारी अधिकांश योजनाएं अंत में मजाकिया ही सिद्ध होती हैं. आप तो इस विधेयक को ले कर पहले ही मजाक करने लगे. यह विधेयक सिर्फ अशोभनीय और अश्लील लेखन, प्रकाशन

के खिलाफ है.

सदस्य : अशोभन और अश्लील की परिभाषा क्या है?

मंत्री : यह लिखना अश्लील है कि मेनका गांधी का आज जो नेता विरोध कर रहे हैं, कभी उन के परिवार की महिलाओं ने उस के चरण स्पर्श किए थे. नशे की हालत में कोई नेता पटना की माल रोड पर नंगा हो जाए और उसे लोग देखें तो यह लोगों का कुकर्म होगा और इस की खबर छापना अशोभनीय. मुख्य मंत्री का भ्रष्टाचार छापना अश्लील और दुराचार छापना अशोभनीय. इतना काफी है.

सदस्य : पाकिस्तान की जनता चुनावों के लिए तड़प रही है. हम तो लोकतंत्रवादी हैं. क्या हमारी सरकार को पाकिस्तान की जनता के लिए चुनावों की मांग नहीं करनी चाहिए?

मंत्री : जरूर करनी चाहिए. यह मांग करने की हम ने सोची भी थी, लेकिन हमारे शुभचिंतकों ने बता दिया कि हम में भी जिया उल-हक के अंश मौजूद हैं. वह सारे देश में चुनाव नहीं करवा रहा है और हम सारे देश की राजधानी दिल्ली में चुनाव नहीं करवा रहे हैं. दोनों को ही हार का डर सता रहा है.

सदस्य : आप भारतीय जनता पार्टी के लोगों को जनसंघी क्यों कहते हैं?

मंत्री : एक बार जो जनसंघी हो जाता है वह हमेशा यही रहता है. नाम बदलने से कुछ नहीं होता.

सदस्य : क्या आप को ध्यान है कि हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी के एकदो विधायकों ने अपना दल छोड़ कर इंदिरा कांग्रेस की शरण ले ली है. क्या आप उन को वहां भी जनसंघी ही कहेंगे?

मंत्री : वह तो विरोधी दलों का दरिया है, जिस में नहाने पर गधा गाय नहीं बन जाता. पर हमारी पार्टी तो गंगा है, जिस में नहाने वाला गधा भी परम पूजनीय महामानव बन जाता है. उसे जनसंघी कह कर अपनी कुरसी के पायों पर कुल्हाड़ा नहीं मारेंगे. आजकल अधिकांश प्रदेशों में हमारे दल की सरकारें इन दलबदलुओं के कारण ही बनी हुई हैं.

सदस्य : कब तक विमान यात्रियों पर मुसीबतसिंह मुसीबत ढाते रहेंगे?

मंत्री : अब तो भारत में विमान अपहरण की जितनी भी घटनाएं हुई हैं, उन से यह पता चलता है कि हमारी सुरक्षा व्यवस्था में बहुत बड़ेबड़े छेद हैं. जब तक ये छेद बंद नहीं होंगे, विमान अपहरण की घटनाएं होती रहेंगी. राज की बात यह है कि सब विमान अपहरणों की कड़ी एक जगह मिलती है. हमें पता है कि यह सब कौन करवाता है, फिर भी हम उस के खिलाफ काररवाई तो दूर, मुंह भी नहीं खोलते हैं.

सदस्य : इन अपहरणकर्ताओं की मांगें क्या होती हैं?

मंत्री : धन मांगें तो शायद दे भी दें. पर वे तो हमारा सब कुछ छीन लेना चाहते हैं. पिछले अपहरणकर्ता की मांग थी कि हरियाणा के मंत्रिमंडल में से दलबदलुओं को निकाला जाए. बताइए, उन्हें निकाल देंगे तो वहां बचेगा क्या? मुख्य मंत्री और मंत्री पद धेने के लिए दूसरे प्रदेशों से विधायकों को बुलाना पड़ेगा. इस बार अपहरण करने वाले की मांग थी कि सत्ता दरबारासिंह से छीन कर अकाली दल को दे दी जाए. इस में आश्चर्य की बात यह है कि अकाली दल ने अभी तक यह नहीं कहा है कि वह इस तरीके से मिलने वाली सत्ता नहीं लेगा.

सदस्य : कहते हैं अंतुले ने आप लोगों की पोल खोलने की धमकी दी थी. क्या आप की पोलें खतरनाक हैं?

मंत्री : आप बहुत ही तीखे, बेहूदे, अश्लील और अशोभनीय प्रश्न कर रहे हैं. लगता है हमें 'शून्यकाल' खत्म करना पड़ेगा. हमें विपक्ष के एक महारथी का समर्थन तो मिल जाएगा, एकआध का और मिल जाए तो 'जीरो आवर' खत्म कर देंगे. न रहेगा बांस और न बजेगी आप की बेसुरी बांसुरी.

—गोविंद शर्मा •

सारंग

'बंबई की मिट्टी में बसी समुद्र की गंध! आंखें बंद कर के भी मैं उस सुगंध से बंबई को पहचान लूंगी...'

भारत स्थित अमरीकी राजदूत की पत्नी से भेंट

आज से ठीक 31 साल पहले की बात है. मार्च का महीना था. बंबई में मार्च का महीना कुछ उमसभरा हो जाता है. एक अजीब सी बेकली, चिपचिपाहट महसूस होने लगती है. ऐसी ही एक उमसभरी शाम को सांताक्रुज हवाई अड्डे पर एक विमान उतरा. उस विमान से उतरने वाले यात्रियों में एक युवा जोड़ा भी था. गोद में 18 महीने की गुड़िया सी प्यारी बिटिया को लिए उन्होंने ज्यों ही बंबई की धरती पर कदम रखा, पृथ्वी के इस पूर्वी भूखंड की गरमी व उमस से एक अनजानी सी बेकली उन के मनप्राण पर छा गई. कहां अमरीका की बर्फ से दबीढकी सर्द हवाएं और कहां समुद्र के नमकीन पानी के बोझ से बोझिल यह मौसम...खाराखारा सा.

"हमारा निवासस्थान अभी बन कर पूरा नहीं हुआ था. हमारे ठहरने, रहने का प्रबंध होटल में था. एक पर्यटक के रूप में होटल में ठहरना भला लगता है, पर होटल को घर समझ कर उस में रहना तो...उफ! बिना अपने घर के सामान के उस होटल में हमें चार महीने रहना पड़ा. अपने घर, देश से पहली बार इतनी दूर, खराब मौसम, रहने के लिए घर नहीं. स्वाभाविक ही था कि मैं अपनेआप को परिस्थितियों से तालमेल नहीं बिठा पा रही थी. हर वक्त थकीथकी सी रहती थी. बच्ची के लिए मैं ने आया रख ली थी, पर आया और बच्चे के बीच जानपहचान का रिश्ता कायम होने में भी तो वक्त लगता है. मुझे लगता, मेरी जिंदगी में एक उदास ठहराव आ गया है पर..."

"पर क्या?"

"पर तभी जैसे जादू की छड़ी ने एकाएक सब कुछ बदल दिया. वाशिंगटन हाउस में हमारा फ्लैट तैयार हो गया था. हम

भेंटवार्ता • मृदुला हालन



'अपने घर' में आ गए और तभी बरसात शुरू हो गई. ओह, बड़ा अच्छा लगा. यह मौसम, यह बारिश मुझे बहुत अच्छी लगी, आज भी अच्छी लगती है." कहतेकहते उन बीते दिनों की याद में वह युवती आज भी भावविभोर हो उठती है. हो क्यों न? आज भी तो मौसम वैसा ही है...भीगाभीगा सा...काले सघन बादलों की चादर से ढका आसमान...कभी रिमझिम तो कभी मुसलाधार वर्षा...तेज सर्द हवाएं...

जब लेखिका संयुक्त राज्य अमरीका के भारत स्थित राजदूत हैरी बार्न्स की पत्नी श्रीमती बैट्सी बार्न्स से मिलने उन के निवासस्थान पर पहुंची तो बाहर प्रकृति का यह सौंदर्य उस के कदमों को बांध गया था. पेड़ों की पत्तियों से टपटप टपकती बूंदें, हवा के झोंकों से थरथराते लंबे छरहरे पेड़, फूलों की पंखड़ियों पर रुकेरुके से जलबिंदु और नहाई सी चारों ओर बिखरी हरियाली. सम्मोहन से भरी लेखिका वहां खो जाती, इस से पहले ही दरवाजे पर तैनात संतरी लपकता चला आया, "अंदर चलिए, मेमसाहब आप का इंतजार कर रही हैं."

उस विशाल भवन के विशाल द्वार के बाहर अब लोहे की जाली का मजबूत दरवाजा लग गया है. जाली के बाहर से संतरी के बटन दबाने पर अंदर के दरबान ने बटन दबा कर जाली का द्वार खोला और लेखिका भीतर पहुंच गई. एक बहुत बड़ा हालनुमा कमरा, खूब अच्छी तरह सज्जित. दाईं ओर बैठक, बाईं ओर भी बैठक. फर्नीचर से ले कर किताबों की अलमारियां, फूलदान सभी कुछ सजासंवरा और इन सब से हट कर, खिड़कियोंदरवाजों के शीशों के पार से झांकती वही प्रकृतिसजी सुंदरी.

उस हाल से सीधे हाथ पर बैठक. उस में घुसते ही बाईं दीवार में एक दरवाजा. उस दरवाजे के भीतर प्रवेश करते ही लेखिका ने स्वयं को उस कक्ष में पाया जहां अमरीकी राजदूत श्री हैरी बार्न्स की पत्नी श्रीमती बैट्सी बार्न्स अनौपचारिक रूप से अतिथियों से मिलती हैं.

"आप बैठिए, मेमसाहब अभी आती हैं." इन शब्दों के साथ ही दरबान उसी दरवाजे के पीछे खो गया. कमरा काफी लंबा था और लंबाई वाली पूरी दीवार फर्श से छत तक पुस्तकों की अलमारी से सज्जित थी. शेल्फ पुस्तकों से भरे थे. बीच की मेज पर फूलों का खूब बड़ा गुलदस्ता और कमरे के दूसरे छोर के दरवाजे के कांच से झांकता वही वर्षा का भीगा मौसम. यह बात और है कि यह मानसून की वर्षा नहीं थी. इस साल मार्च का महीना वर्षा की मेजबानी पूरे मन से कर रहा था.

17 नवंबर, 1981 को अमरीका के नए राजदूत ने राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी को अपने परिचयपत्र भेंट किए थे. संयोग की बात है, आज के अमरीकी राजदूत की अपनी विदेश सेवा के दौरान विदेश में पहली नियुक्ति भारत में ही हुई थी. सन 1951 में वह अपनी युवा पत्नी और प्रथम संतान को ले कर बंबई आए थे, काउंसलर के

"बदलाव जीवन की एक अनिवार्यता है. प्रत्येक समाज अपने मूल रूप में सभ्यता के प्रारंभिक दिनों में रूढियों से बंधा हुआ था. विकास की सीढ़ियों पर चढ़तेचढ़ते जिन विचारों की जरूरत नहीं रह जाती, उन को वह छोड़ता जाता है."

रूप में. उस के बाद से अब तक के 31 वर्षों में अनेक बार वह भारत आतेजाते रहे हैं और यह आनाजाना उन्हें भारत के साथ जोड़ें रहा है.

"हलो, आप कैसी हैं?" इन शब्दों से मेरी विचारधारा भंग करते हुए श्रीमती बैट्सी बार्न्स ने कमरे में प्रवेश किया. अंदाज

हमारी बातचीत का प्रारंभिक विषय मौसम ही बन गया. "यह मौसम, यह बारिश मुझे बेहद पसंद है." बाहर वर्षा में स्नान करती लतागुल्मों को देखती हुई वह कहने लगीं, "जानती हैं, यहां के मानसून के उन्मादी रूप ने ही मुझे इस देश के साथ सब से ज्यादा जोड़ा है. अपने देश से निकल कर मैं सीधी



अमरीकी राजदूत हैरी बार्न्स अपने परिवार के साथ.

वही, अनौपचारिक, खुला, जिस के लिए यों भी अमरीकी समाज प्रसिद्ध है. 50 वर्षीया, लंबी और छरहरी, स्कर्ट और ब्लाउज पहने, छोटे घुंघराले बाल...और एक सहज सा व्यक्तित्व. यही हैं बैट्सी बार्न्स.

अभी भी बाहर वर्षा हो रही थी.

भारत आई थी, आज से 31 साल पहले. नया वातावरण, नए लोग और एकदम अनजाने, बेगाने से रात और दिन. इस से पहले कि

यहां की गरमी और उमस मुझ पर हावी होती, मैं ने अपनी खिड़की से समुद्र में मानसून के आगमन की सूचना देती हलचल को देख लिया था. दूर, क्षितिज के आसपास मंडराते काले सघन बादलों को पहचान लिया था. और...बंबई की बरसात की वह पहली झड़ी...आहं, आज भी वह उन्मादी अनुभव मेरे मन में ज्यों का त्यों ताजा है." और फिर उस के बाद तो बैट्सी को पीछे लौट कर झांकने का अवकाश ही नहीं मिला. यह स्नेहसंबंध प्रगाढ़ होता ही गया.

श्रीमती बार्न्स 1951 में जब पहली बार भारत आईं, उस समय उन के पति 'विदेश सेवा परिवार' के एक कनिष्ठ अधिकारी थे. इस सेवा में हर पद की एक अलग ही जिम्मेदारी होती है. उन को संभालते, एकएक कदम आगे रखते हुए वह आज राजदूत के रूप में यहां आए हैं. जाहिर है कि इन बीच के वर्षों के अनुभवों ने उन्हें जहां एक ओर परिपक्वता प्रदान की होगी. वहीं साथ ही बहुत सी खट्टीमीठी यादें भी मन के कोनों में इधरउधर बिखरी पड़ी होंगी. सोचा, क्यों न जरा उन को छेड़ा जाए. उन से लेखिका का पहला प्रश्न था, "एक राजदूत की पत्नी के रूप में आप को कौन सी औपचारिकताओं को निभाना होता है?"

"अब कुछ नहीं. पहले थी यह बंदिश. पर 1960 के आसपास कानून में संशोधन कर दिया गया और राजदूत की पत्नी पर लागू तमाम बंधनों को खोल दिया गया." मतलब यह कि अब वह किसी से मिले, कहीं जाए, इस तरह की गतिविधि पर कोई सरकारी, औपचारिक बंदिश नहीं है.

"वैसे भी मुझे वह रूप अच्छा नहीं लगता. अभी भी अनेक राजदूतों की पत्नियां जब मिलती हैं तो अपने पति के पद की गरिमा का प्रदर्शन करती रहती हैं. उस से बात नहीं करनी...उस से नहीं मिलना...भौंहें चढ़ा कर बोलना... यानी जाहिर करना कि हम कुछ खास हैं और तुम हम से छोटे हो."

पर श्रीमती बार्न्स को यह सब अच्छा नहीं लगता. उन का अपना व्यवहार इस का सशक्त प्रमाण है. "मुझे हर वर्ग के लोगों से मिलना, उन को जानने की कोशिश करना भला लगता है."

इसी समय काफी आ गई. अमरीकी स्वभाव के मुताबिक उन्होंने ब्लैक काफी ही ली. लेकिन लेखिका को शुद्ध भारतीय परंपरा में दूध और चीनी के साथ ही काफी भाती थी. उस ठंडे मौसम में गरमागरम काफी का अपना निराला ही आनंद था. काफी की चुसकियों के साथ बैट्सी ने अपने अनुभवों की रंगीन एलबम खोल दी, "मेरे पति हैरी की पहली नियुक्ति (बंबई में) के समय मैं अनुभवहीन थी. दुनियादारी, लोकाचार और कूटनीति...मुझे कुछ भी तो नहीं आता था. 1948 में विवाह हुआ. फिर पाली (पहली पुत्री) आ गई और 1951 में मैं अपने पति और पुत्री के साथ राजनयिक जिंदगी की जिम्मेदारियों से लदीलदी भारत आ गई.

वक्त सब कुछ सिखा देता है

"सच कहूं, उन दिनों मन के एक कोने में हर समय धुकधुक सी लगी रहती थी कि कहीं कुछ गलत न कर बैठूं...या किस से किस स्तर पर बात करनी चाहिए...किस समारोह में कैसे व्यवहार करना चाहिए. नितांत सहज मानवीय शंकाएं और ऊहापोह और कुछ भी तो नहीं.

"पर वक्त बहुत कुछ सिखा देता है. धीरेधीरे इस जीवन की मैं आदी होने लगी. इस के बाद एक बार फिर मैं ने स्वयं को शंकाओं के घेरे में कैद पाया. यह तब हुआ जब हैरी पहली बार राजदूत नियुक्त हुए. उस रूप में रूमानिया में पहली नियुक्ति थी. उस रूप में हैरी की अपनी जिम्मेदारियां थीं तो राजदूत की पत्नी के रूप में मेरी जिम्मेदारियां भी कम नहीं थीं. यह तो एक समूचे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व था."

अपने उन दिनों की बातें करते हुए अचानक उन्हें एक रोचक संस्मरण याद आ गया. वह बोलीं, "वहां के प्रारंभिक दिनों में

"भारत एक अनोखा देश है, प्राकृतिक संपदा से भरापूरा, कला का भंडार. यह अक्षुण्ण भंडार है. देखते जाइए यह समाप्त ही नहीं होगा."



लिए बहुत कठिन थे. राजदूत का सरकारी निवास प्रारंभ में हमें नहीं मिला. मुझे योग्य' बावरची भी नहीं मिला. मतलब यह कि प्रतिदिन का और औपचारिक भोजन का भी मीनू मुझे ही बनाना पड़ता था. कब क्या पेश करना है, कहां क्या रखना है, ऐसीऐसी ढेरों बातों का निश्चय करने की जिम्मेदारी भी मेरी ही थी. इस पद पर आए दिन ही देशीविदेशी अतिथियों की मेजबानी करनी होती है. खाना भी ठीक हो, घर भी साफसुथरा हो, परदे भी ठीक समय पर बदले गए हों...उफ! मैं पागल हो चली थी. महसूस होने लगा था कि मैं अपने घर में गृहिणी नहीं वरन एक ऊंचे किस्म के होटल की देखभाल करने वाली भर हूं."

पर इस से पहले कि बैट्सी की सहनशक्ति का बम विस्फोट होता, स्थिति संभल गई. उचित निवासस्थान भी मिल गया और योग्य बावरची भी मिल गया. "और तब मैं ने चैन की सांस ली."

हैरी की नियुक्ति विदेशों में होती रहने के कारण समूचा बार्न्स परिवार अपने देश से दूर, बाहर ही रहता आया है. ऐसे में क्या बैट्सी खुद को अपने समाज और समाज में होने वाले निरंतर परिवर्तनों से कुछ कटा हुआ महसूस नहीं करतीं?

"शायद ऐसा नहीं है."

इस समय लेखिका के सम्मुख बैठी महिला एकाएक ही पूर्णरूपेण राजनयिक हो उठीं.

"यह ठीक है कि हम महज छुट्टियां बिताने ही अमरीका जाते हैं, लेकिन जितने दिन वहां रहते हैं. मैं उस का पूरा फायदा उठाती हूं, अपने स्वजनों और मित्रों से मिलने में."

पर बच्चे? वे भी तो अपने समाज से अलगथलग, दूसरी परंपराओं में जन्मे और बड़े हुए हैं. स्वाभाविक है कि उन पर 'बाहरी' प्रभाव अधिक होगा?

"शायद हां...शायद नहीं..." कुछ सोचते, कुछ तौलते हुए बैट्सी कह रही थीं, "मूल रूप से तो वे अमरीकी ही हैं, विदेश सेवा में नियुक्त अधिकारियों के बच्चों में एक अहं प्रायः आ जाता है...उच्चतम की भावना. मेरा इकलौता बेटा (बैट्सी दंपती की तीन पुत्रियां हैं और एक पुत्र) भी इस का अपवाद नहीं था. ऐसी ही एक नियुक्ति में, एक बार ऐसा मौका भी आया, जब अमरीकन स्कूल की पढ़ाई समाप्त करने के बाद मेरे बेटे के सामने दो रास्ते थे– या तो वह स्थानीय संस्थान में, स्थानीय बच्चों के साथ आगे पढ़े या उसे यूरोप में कहीं होस्टल में भेज दिया जाए. बेटे पर अपने बड़प्पन का भूत सवार था. 'उंह, मैं इन छोटे लोगों के साथ पढ़ूंगा? हरगिज नहीं. मुझे कहीं यूरोप के स्कूल में भेज दीजिए.'

"हम दोनों यह चाहते थे कि वह हमारे साथ रह कर पढ़े. खैर, साम, दाम, दंड, भेद नीति अपनानी पड़ी और वह स्थानीय स्कूल में जाने को तैयार हो गया. और फिर तो..."

वह खनखनाती सी हंस दीं, "वह इतनी जल्दी उन में घुलमिल गया, उन की भाषा सीख गया कि देख कर उस को स्वयं आश्चर्य होता था. उस समय वह उम्र के बहुत नाजुक मोड़ पर था. मुझे खुशी है कि हम उस समय अमरीका से बाहर थे. वरना...उन दिनों में वहां 'ड्रग' (नशे) आंदोलन ने किशोर और युवा पीढ़ी को पूरी तरह अपने चंगुल में फंसाया हुआ था."

"अब वह पुत्र कहां है?"

पूछने पर वह स्नेह से मुसकराईं, "वह भी विदेश सेवा में आ गया है. पिछले वर्ष उस का विवाह भी हो गया." विवाह तो बार्न्स दंपती की बड़ी पुत्री का भी हो चुका है. दामाद भी विदेश सेवा में ही है. सुन कर लगा, जैसे पूरे परिवार का विदेश सेवा पर एकाधिकार हो.

बंबई के बीच कैंडी हस्पताल में जन्मी उन की दूसरी पुत्री आजकल अमरीका में अध्ययनरत है और सब से छोटी 14 वर्षीया साशा नई दिल्ली के अमरीकी स्कूल में पढ़ रही है.

अमरीकी समाज में तलाक की व्याधि निरंतर बढ़ती जा रही है. वैसे, पिछले कुछ वर्षों में इस ने कितनी आश्चर्यजनक गति पकड़ ली है, बैट्सी बार्न्स को इस का अंदाजा नहीं है. उन का कहना है, "नहीं, कुछ ऐसा आश्चर्यजनक बदलाव तो इस में नहीं आया है." लेकिन सरकारी आंकड़े दूसरी ही कहानी कहते हैं, पर बार्न्स परिवार अमरीकी समाज से घुलमिल ही कहां पाता है?

सन 1948 में विवाह के बाद आज तक के ये लंबेलंबे वर्ष भी इस परिवार को पूरी मजबूती से बांधे हुए हैं. कोई बिखराव नहीं, कोई टूटन नहीं. क्या परिवार के संस्कार इस के कारण हैं या उस समाज से दूर रहना?

सुन कर बैट्सी कुछ सोचने लगीं. फिर बोलीं, "मेरे मायके में मां, नानी किसी का अलगाव नहीं हुआ था. सुखी परिवार के संस्कार मुझे मिले. हैरी के परिवार में भी टूटन नहीं थी. काफी हद तक ये संस्कार ही हमारे सफल वैवाहिक जीवन को बचाए हुए हैं. संभवतः वहां से दूर रहने का अप्रत्यक्ष प्रभाव भी रहा होगा. बहरहाल, हमारा आपस में जुड़ा एक बंधा परिवार है. पर हम पतिपत्नी अपनीअपनी विचारधारा के अनुसार चलते हैं. जहां विचारों में टकराव होता है, हम लड़ने की जगह बहस कर लेते हैं."

बदलाव जीवन की अनिवार्यता

अपनी युवावस्था के प्रारंभिक वर्षों में ही बैट्सी भारत आ गई थीं. अमरीका के समुन्नत व बेबाक समाज की तुलना में (उन दिनों) भारतीय समाज ने विकास मार्ग पर कदम रखे ही थे. यहां की रूढ़ियों और अशिक्षा तथा पारिवारिक मर्यादाओं में सिमटी, संकुचित तब की भारतीय नारी, आज की शिक्षिता नारी और अपने समाज की नारी—इन सब में कितनी समानता, कितनी असमानता उन्होंने महसूस की?

"बदलाव जीवन की एक अनिवार्यता है. प्रत्येक समाज अपने मूल रूप में सभ्यता के प्रारंभिक दिनों में रूढियों से बंधा हुआ था. विकास की सीढ़ियों पर चढ़तेचढ़ते जिन विचारों की, रीतियों की जरूरत नहीं रह जाती, उन को वह छोड़ता जाता है. पर सब की गति एक समान नहीं होती. जो धीरे चल रहे हैं, वे थोड़ा पीछे रह जाते हैं, रूढ़ियों से चिपके रह जाते हैं. हमारे समाज में अभी भी किसीकिसी हिस्से में रूढिवादिता है. पर सुसंस्कृत व परिष्कृत लोग रूढिवादी नहीं हैं. वही अवस्था इस समाज की है. जब मैं पहलेपहल यहां आई थी, तब सहज ही ज्यादा कट्टरता महसूस हुई थी. पर धीरेधीरे उन की स्नेहभावना, अपनत्व और सहनशक्ति ये गुण प्रकट होने लगे. और ये ही तो मानवीय गुण हैं."

"भारत की किस चीज ने आप को सर्वाधिक प्रभावित किया?"

"भारत एक अनोखा देश है, प्राकृतिक संपदा से भरापूरा, प्राचीन संस्कृति, कला...

आगे पृष्ठ 37 पर

हंसता झरना

मैं जंगल सी शांत पड़ी हूं
मेरे भीतर हंसता झरना.

क्षण भर का ही सन्नाटा है
फिर चल पड़ती खूब हवाएं
रातरात भर जलतेबुझते
जुगनू प्रति क्षण खूब हंसाएं.

भूल गई हूं मैं घुटघुट कर
क्षण में जीना, क्षण में मरना.

लगता है नाराज नहीं है
आशाओं का कोई तिनका
अब हिसाब रखते हैं सपने
प्यार भरे पागल पल छिन का.

इस मादक गहराई से है
नहीं चाहती कभी उबरना.

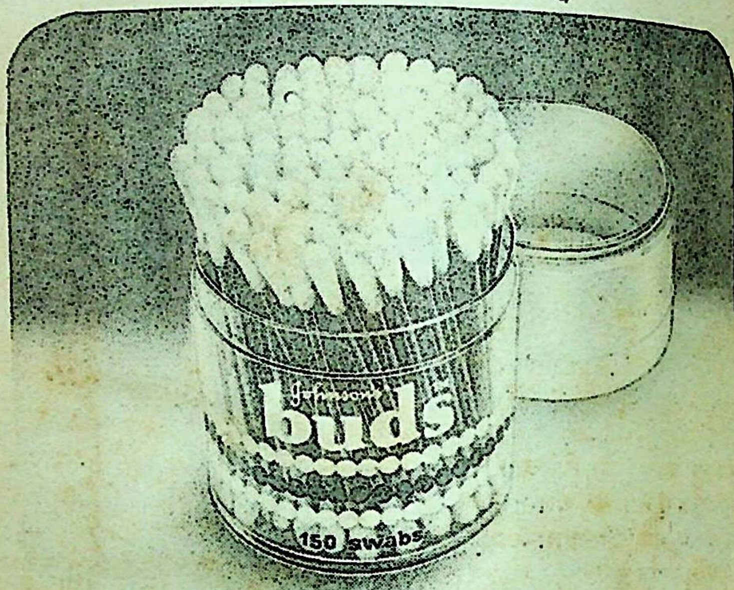
दुनिया की आंखों में लगती
यद्यपि मैं कुछ परेशान सी.
लेकिन मैं मन से प्रमुदित हूं
कस्तूरी मृग के गुमान सी.

कभीकभी यूं अच्छा लगता
अफवाहों के बीच गुजरना.

—सरल जैन



अब लीजिए जॉन्सन्स* बड्स™



कानों की सफ़ाई का सुरक्षित स्वास्थ्यप्रद तरीक़ा

माचिस की तीली, हेयरपिन, साड़ी का पल्लूव या तौलिये के कोने का इस्तेमाल... अस्वास्थ्यकर तो है, खतरनाक भी हो सकता हैं.
जॉन्सन्स बड्स पर भरोसा कीजिए. कानों के लिए ज़रूरी प्रतिदिन की कोमल सफ़ाई के लिए जॉन्सन्स बड्स से बढ़कर कोमल, सुरक्षित और स्वास्थ्यप्रद और कुछ नहीं है.
जॉन्सन्स बड्स के ऊपरी सिरे कोमल गद्देदार होते हैं ताकि आप कानों की सफ़ाई बड़ी कोमलता और सुरक्षा से कर सकें और हलके तने लचीले हैं, झुक जाते हैं, लेकिन टूटते नहीं.
जॉन्सन्स बड्स. आपके लिए विशेषरूप से निर्मित.
पैक पर दिए गए प्रयोग के निर्देशों का पालन कीजिए.



सफ़ाई में सावधानी
जॉन्सन्स बड्स.

Johnson & Johnson

OBM-6665-HN

पृष्ठ 34 से आगे

भंडार. यह अक्षुण्ण भंडार है. देखते जाइए, समाप्त ही नहीं होगा. यहां के ऊंचे हरे पहाड़ भी दर्शनीय हैं. हैरी को पहाड़ों पर पैदल यात्रा करने का बहुत शौक है. अतः हम वक्त मिलते ही निकल जाते हैं."

हैरी जिस देश में गए, वहां की भाषा सीख ली.क्या बैट्ली ने भी...?

"सीख नहीं पाती," शीघ्रता से वह बोलीं, "भाषाएं सीखना मुझे अच्छा लगता है, पर बिना अभ्यास के जल्दी ही उस के भूल जाने की संभावना बनी रहती है. हिंदी को ही लें. मेरे पति उस को सीख रहे हैं. उन का वास्ता अनेक लोगों से रहता है. उन का अभ्यास बना रह सकता है. पर मुझे अभ्यास का उतना अवसर नहीं मिलता. बस, इसी लिए..."

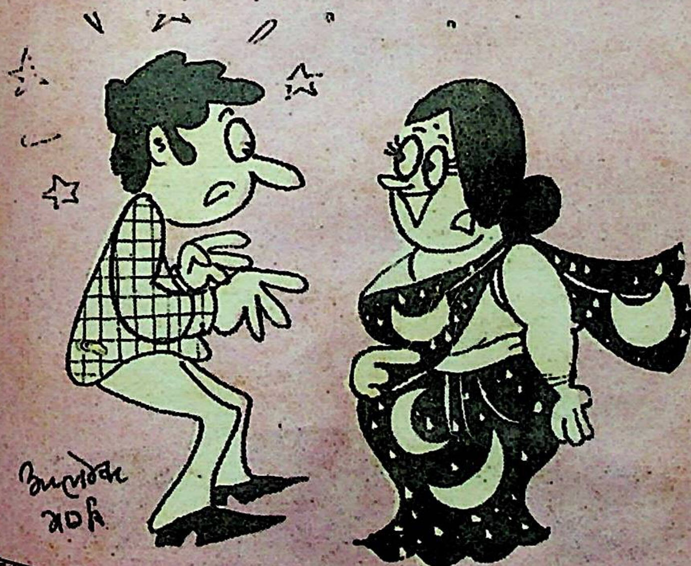
श्रीमती बार्न्स की दिनचर्या क्या किन्हीं सीमाओं में बंध कर चलती है?

"ऐसा तो कुछ नहीं. प्रातः खाली हो कर, 10 बजे के बाद मैं पत्रों को देखती हूं. आप जानती हैं, रोज ढेरों पत्र आ जाते हैं. अनेक संस्थाएं हैं, जो किसी भी प्रकार का सहयोग चाहती हैं. नाट्य संस्थाएं, संगीत, कला से संबंधित महिला संस्थाएं...

"इस के अलावा मेरी खुद की रुचि हस्तकला (क्राफ्ट) में है और यहां इस दिशा में जानने, देखने व सीखने के लिए बहुत कुछ है. लोगों से मिलना मेरा शौक है. जो महिलाएं किसी भी सामाजिक कार्य में प्रवृत्त हैं, मेरी कोशिश रहती है उन से मिलूं, उन का काम देखूं और स्वयं भी जो कुछ कर सकती हूं, करूं. यहां की वास्तुकला भी मेरे लिए बहुत आकर्षण रखती है."

अब तक की अनेक देशों की नियुक्ति में उन्हें किस देश विशेष ने ज्यादा मीठी यादें दी हैं?

"यों तो प्रत्येक स्थान पर ही मन लगता रहा, पर चेकोस्लोवाकिया बहुत खूबसूरत देश है. वहां हम लोगों ने कैंपिंग की थी. बस, उस की रसीली यादें बहुत जीवंत हैं. और, बंबई तो अपना सा ही लगता है. वहां की मिट्टी में बसी वहां के समुद्र की सुगंध...आह. आंखें बंद कर के मुझे वहां छोड़ दिया जाए तो भी उस सुगंध से मैं पहचान लूंगी कि यह बंबई है." ●



"दुकानदार ने कहा था कि इस साड़ी से मेरी खूबसूरती में चार चांद लग जाएंगे."

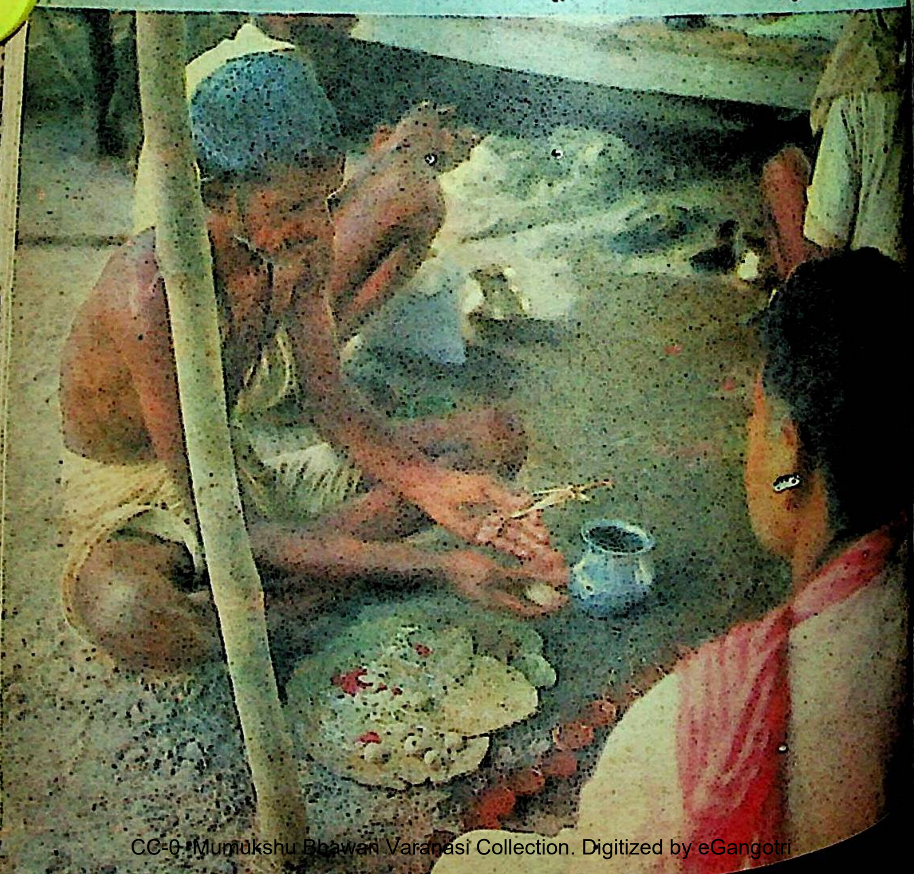
पिंडदान

लेख • ज्योतिर्मय

हिंदू धर्म मानने वाला प्रत्येक व्यक्ति साधारणतया यह विश्वास रखता है कि मृत्यु के बाद मनुष्य की आत्मा अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नरक में जाती है और वहां अपने किए कर्मों का फल भुगतने के बाद वापस जन्म लेती है. ब्राह्मणों द्वारा प्रचारित और घोषित इस धारणा के साथ यह गुंजाइश भी रखी गई है कि किसी व्यक्ति के मरने के बाद एक निश्चित अवधि में उस के परिवार वाले कुछ कर्मकांड कर लें तो मृत व्यक्ति ने अपने जीवनकाल में कितने ही बुरे काम किए हों, परलोक में उन की सजा भोगने से बचा जा सकता है और स्वर्ग में जाया जा सकता है.

इस तरह के कर्मकांड प्रायः मरने के 1[...] दिन बाद तक कर लिए जाते हैं और प्रत्ये[...] कर्मकांड ब्राह्मण द्वारा ही संपन्न कराए जा[...] हैं, जिन में से हरेक कर्मकांड के लि[...] ब्राह्मण को दानदक्षिणा, भोजन, वस्त्र और भेंटपूजा दी जाती है. इन सभी कर्मकांडों [...] प्रमुख है—पिंडदान. मरने के बाद मृ[...] व्यक्ति के लिए पिंडदान का इतना अधि[...] महत्त्व बताया गया है कि यदि उसे न[...] किया गया तो मरने वाले की आत्मा भटक[...] ही रहती है और अपने जीवित संबंधियों [...] परेशान करती है. एक तो मृत संबंधी [...] प्रति ममता के कारण परलोक में उस [...] तथाकथित सद्गति के लिए और दूस[...]

पिंडदान : पेड़ों की लूट का लंबा सिलसिला.





बनारस के घाट जहां प्राय: पिंडदान करन वालों की भीड़ लगी रहती है.

उस के अतृप्त रहने के कारण परेशान किए जाने के भय से धर्मभीरु हिंदू परिवार ब्राह्मणों के चंगुल में फंस जाता है और सामर्थ्य से अधिक दानदक्षिणा दे कर अपनी आर्थिक स्थिति चौपट कर लेता है.

पिंडदान के महत्त्व पर अनेक धर्मग्रंथों में विस्तार से लिखा गया है. गीता में अर्जुन न लड़ने का कारण बताते हुए यह भी कहता है कि युद्ध में सब लोग मारे गए तो पितरों का पिंडदान कौन करेगा. पिंडदान न करने से पितरों और उन के शाप से कुल के लोगों को नरक में जाना पड़ेगा (1-42). अन्य धर्मशास्त्रों और पुराणों में भी इसी प्रकार पिंडदान का महत्त्व बताया गया है. इन विषयों पर गरुड़ पुराण एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में अलग से है, जिस में स्वर्ग और नरक, मरने के बाद आत्मा की परलोक यात्रा, वहां मिलने वाले दुख और सुख का वर्णन इस तरह किया गया है कि सरल धर्मश्रद्धा रखने वाला व्यक्ति ब्राह्मणों के सामने आत्मसमर्पण किए बिना रह ही नहीं सकता.

> धर्म के ठेकेदारों ने अपना हलवापूरी बनाए रखने के लिए ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि चाहेअनचाहे लोग उस में फंस ही जाते हैं.

यों मरने के बाद सभी कर्मकांड घर पर ही किए जाते हैं, किंतु पिंडदान के लिए गया, काशी, प्रयाग, हरिद्वार तथा उज्जैन जाना अनिवार्य है. इन स्थानों में जो समीप पड़ता है, लोग अकसर वहीं जाते हैं. परंतु गया और हरिद्वार का विशेष महत्त्व बताया गया है. हरिद्वार की अपेक्षा गया में पिंडदान की

और भी अधिक महिमा बताई है. हरिद्वार को तो पिंडदान के अलावा और भी कई कारणों से तीर्थस्थान की मान्यता मिली है, परंतु गया तो केवल इसी लिए तीर्थ का दर्जा प्राप्त कर गया कि वहां पिंडदान करने से पितरों को सीधे स्वर्ग में प्रवेश मिल जाता है. वायु पुराण में कथा आती है कि गया नामक एक असुर घोर तप कर रहा था. तप के द्वारा उस ने इतनी सिद्धि प्राप्त कर ली कि वह जिस किसी को भी छू देता, वह मनुष्य हो या जानवर, सीधे स्वर्ग पहुंचने लगा. इस से देवताओं को बड़ी चिंता हुई. स्वर्ग पहुंचने वालों की संख्या बढ़ने के कारण वहां स्थान कम पड़ने लगा. देवताओं ने अपनी चिंता विष्णु के सामने व्यक्त की और विष्णु ने युक्ति के साथ गया को मार दिया. साथ ही यह भी वरदान दिया कि जिस स्थान पर 'वह' मरा है, वह स्थान उसी के नाम से जाना जाएगा और वहां जिस व्यक्ति का पिंडदान किया जाएगा, वह सीधा ब्रह्मलोक पहुंचेगा.

गया में पिंडदान न कर सकने वालों को निकटवर्ती तीर्थ या नदी के किनारे पिंडदान करने की छूट है, लेकिन यह छूट इस शर्त के साथ है कि जब भी सुविधा मिले तब गया, काशी, प्रयाग या हरिद्वार में जा कर पिंडदान करना चाहिए. इसी लिए हिंदू परिवारों में किसी की मृत्यु होने पर उस की दाहक्रिया के बाद अस्थि अवशेष ले कर लोग या तो उपर्युक्त स्थानों पर जाते हैं अथवा आगे कभी जाने के लिए अस्थि अवशेष रख लेते हैं.

शास्त्रों के अनुसार जिन का पिंडदान नहीं होता, उन्हें प्रेतयोनि मिलती है और उसी योनि में निर्जन वनों में भटकना पड़ता है (गरुड़ पुराण 45/1). पिंडदान करने पर ही प्राणी का नया शरीर बनता है और उस शरीर से वह परलोक में विचरण करता है. यों पिंडदान अपनेआप में बहुत संक्षिप्त कर्मकांड है. पके चावलों के पिंड बनाए जाते हैं और पंडों को उन का दान दिया जाता है. उपर्युक्त तीर्थों में पिंडदान की क्रिया कराने के कारण ही इन लोगों का नाम 'पंडा' पड़ा. चावलों के पिंड बना कर दान देने में कोई विशेष नहीं लगती, पर इस के साथ दानदक्षिणा का जो लंबा सिलसिला चलता है, उसे जेब काटने या लूट लेने से कम नहीं कहा जा सकता. इस लूट के बल पर ही पंडों ने अच्छीखासी संपत्ति जमा कर रखी है.

पंडों के नुसखे

लोग जब पिंडदान के लिए घर से रवाना होते हैं और तीर्थों के नजदीक पहुंचने लगते हैं तो स्टेशन पर कुछ पंडे पहले से ही मिल जाते हैं. ये लोग अपने शिकार को पहचानने में गजब की पारखी दृष्टि का परिचय देते हैं. कहां से आए हैं, जजमान, किन के यहां जाना है आदि तरहतरह के प्रश्न बड़ी ही आत्मीयता दर्शाते हुए पूछ कर पहले तो आश्वस्त हो लेते हैं कि आने वाला आदमी नया है या पुराना. यदि कोई नया आदमी होता है तो उसे पटाने में आसानी होती है. पुराने लोग पहले भी कभी किन्हीं अवसरों पर वहां पहुंचते रहते हैं. उन के पास अपने पंडों का नामपता होता है और वे किसी नए पंडे से पिंडदान कराने की अपेक्षा पुराने परिचित पंडे से ही पिंडदान कराना ज्यादा पसंद करते हैं.

पंडों के पास आम तौर पर बहियां होती हैं. भारत भर में उन के क्षेत्र भी बंटे होते हैं और इन बहियों में अपने क्षेत्र से आने वाले यजमानों के नाम दर्ज किए जाते हैं. बहियां देख कर ही ये लोग बता देते हैं कि उन यजमान के परिवार से कौन व्यक्ति कब उन के यहां आया था. यह सब बताने का उद्देश्य होता है यजमान पर विश्वसनीयता का प्रभाव डालना. लोग सोचते हैं कि हम से पहले भी हमारे पिता, पितामह आदि यहां आते रहे हैं तो पंडाजी हमारे साथ क्या ज्यादती करेंगे. लेकिन ऐसा नहीं होता. किसी के पूर्वज किसी पंडे के यहां पहुंचे हों अथवा न पहुंचे हों, अधिक से अधिक रकम ऐंठने की कोशिश दोनों के साथ की जाती है.



मुंडन कराने के बाद पंडा यजमान को दानपुण्य की विभिन्न क्रियाएं करा कर उस का सब कुछ लूट लेता है.

प्रथम भेंट में ही पिंडदान की दक्षिणा तय कर ली जाती है. दक्षिणा की रकम कुछ भी हो सकती है— 21 रुपए भी और 2,100 रुपए भी. यजमान को देख कर ही ये लोग अंदाज लगा लेते हैं तथा उसी अनुसार दक्षिणा तय करते हैं. दक्षिणा तय होने के बाद यजमान सोचता है कि अब कुछ भी खर्च नहीं करना है, इतने से ही काम चल जाएगा. पंडे भी इसी तरह का आभास देते हैं. लेकिन असली खेल पिंडदान के लिए मुंडन कराने के बाद शुरू होता है.

गोदान, पूजा, भोजन, गौग्रास, मुंडन, तिलक आदि दसियों अवसर ऐसे गिना दिए जाते हैं, जिन पर तय की गई दक्षिणा से भी अधिक देना पड़ता है. इस तरह बारबार दान देने पर पास में जो कुछ भी होता है, वह करीबकरीब सब निकल जाता है. बहुतों के पास तो वापस जाने के लिए किराया तक नहीं बचता. अपनी यह मजबूरी बताने पर पंडे इतनी ... छूट देते हैं कि एक अलग बही में यजमान का उधारी खाता खोल लेते हैं तथा वह रकम जा कर भेज देने की रियायत कर देते हैं.

यह नहीं सोचना चाहिए कि घर जा कर बात आईगई हो जाएगी. निश्चित समय के भीतर यदि उधार दान चुकता नहीं किया गया तो पंडाजी महाराज पत्र लिखते हैं. फिर भी न भेजने पर वह स्वयं या उन का कोई आदमी पहले से नोट किए पते पर पहुंच जाएगा तथा उधारी वसूल कर लाएगा. उधारी के अलावा तब उस आदमी के आनेजाने का खर्च भी देना पड़ेगा. न दिए जाने पर वह व्यक्ति इस तरह चीखचिल्ला कर शोर मचाएगा कि सामने वाले को शर्म के मारे देना ही पड़ेगा.

धर्मश्रद्धा कहां तक?

यह मत सोचिए कि कोई आदमी गलत पता लिखा कर बच जाता होगा. धर्मश्रद्धा का भूत इस कदर हावी होता है कि

अहंकार

मनुष्य जितना छोटा होता है, उस का अहंकार उतना ही बड़ा होता है.

—वाल्टेयर

भ्रष्ट से भ्रष्ट व्यक्ति भी धार्मिक कर्मकांडों में बेईमानी का साहस शायद ही कर पाता हो. जब पिंडदान के साथ मृत व्यक्ति के परलोक का प्रश्न जुड़ा हो तब तो मुकरने का प्रश्न और भी नहीं उठता. इसी धार्मिक श्रद्धा का लाभ उठा कर पंडे यजमानों का दोहन करते हैं.

चूंकि यह व्यवसाय पुश्तैनी होता है, इसलिए पंडों को अपने बचपन से ही प्रशिक्षण मिलता है. यजमान की अंटी ढीली कराने वाले सारे गुर वे जान लेते हैं. इस प्रशिक्षण और अभ्यास के बल पर ही ये लोग पिंडदान के लिए पहुंचने वाले हर तरह के व्यक्ति से अपनत्व का ढोंग कर उस के मन में अपने लिए स्थान बना कर इस तरह 'जाल' बुनते हैं कि उस से बच पाना प्रायः असंभव हो जाता है.

पिंडदान के लिए किसी तीर्थस्थान में जाने पर पंडों द्वारा की जाने वाली लूट का यह एक नमूना है. घर पर भी पिंडदान करना पड़ता है. वहां भी चावल के पिंड बनाए जाते हैं, मुंडन कराया जाता है और अलगअलग मदों में दान देना पड़ता है. यह क्रम मृत्यु के 13 दिन बाद तक चलता है. शव को जलाने के लिए अंत्येष्टि संस्कार के बाद प्रतिदिन ब्राह्मण भोजन, गरुड़ पुराण, हर रोज दानदक्षिणा में भी बहुत कुछ खर्च करना पड़ता है. इन सब के लिए जितना भी खर्च करना पड़ता है, उस का लाभ ब्राह्मणों को ही मिलता है, क्योंकि अन्य लोगों को खिलाने से मृतात्मा को कोई लाभ नहीं मिलता. ब्राह्मणों के अतिरिक्त अन्य किसी को कराए गए भोजन और दिए गए दान को, हिंदू जीवन पद्धति के निर्धारक मनु ने पैशाची दक्षिणा बताया है और कहा है कि जैसे अंधी गाय एक घर से दूसरे घर में नहीं जा सकती, उसी प्रकार इस दक्षिणा का लाभ परलोक में नहीं मिलता (मनु. 3—141).

तेरह दिन तक और उस के बाद प्रति अमावस्या को (मनु. 3—122) तथा वर्ष में 16 दिन (भाद्रपद की पूर्णिमा से आश्विन की अमावस्या) तक पितृयज्ञ के रूप में पिंडदान करने और ब्राह्मणों को दानदक्षिणा देने की परंपरा है. इस परंपरा को धर्मशास्त्रों और धर्मगुरुओं ने ही जन्म दिया. प्रश्न उठता है कि दान का इतना महत्त्व है तो उसे ब्राह्मणों और पंडों को ही क्यों दिया जाए? जो स्वयं जीविका उपार्जित करने में समर्थ हैं, उन के स्थान पर जरूरतमंद लोगों, अनाथालयों, पाठशालाओं, पुस्तकालयों जैसे जनोपयोगी कार्यों में दान देने में क्या हर्ज है?

इस का तर्कसंगत उत्तर किसी के पास नहीं है, क्योंकि दानधर्म के प्रति लोगों की आस्था उत्पन्न करने का एकमात्र उद्देश्य ब्राह्मणों के लिए दूधमलाई की व्यवस्था करना है, पिंडदान के बहाने उल्लू सीधा करने में आसानी भी रहती है, क्योंकि उन्हीं दिनों परिवार में किसी की मृत्यु हुई होती है, लोग शोकसंतप्त रहते हैं, मरने वाले व्यक्ति के प्रति ममत्व उमड़ता है और मरने के बाद भी उस का अस्तित्व बने रहने की धारणा के कारण उस की हितकामना से जो भी कुछ कर पाना संभव होता है, करने की उमंग उमड़ती है. और तो कुछ किया नहीं जा सकता, इसलिए लंबे समय से जमे संस्कार ब्राह्मणों के सामने समर्पण के लिए ही प्रेरित करते हैं.

बहुत से लोग, सोचते भी हैं कि पिंडदान के लिए जो कुछ ब्राह्मणों को दिया जा रहा है वह मरने वाले व्यक्ति तक पहुंचेगा भी या नहीं. परंतु परंपरा प्रचलित है, सो मन में संदेह रहते हुए भी उस का निर्वाहन करना पड़ता है. न किए जाने पर लोकापवाद का भय रहता है. इस तरह का वातावरण प्रयत्नपूर्वक उत्पन्न किया गया है, जिस के कारण लोग चाहेअनचाहे पिंडदान के रूप में आर्थिक बरबादी झेलते हैं. •

कुछ समय पहले की बात है. कालिज में पढ़ने वाले कुछ लड़के कुछ स्विस पर्यटकों से मिले. बातचीत के दौरान एक पर्यटक ने उन से कहा, "भारत का सब से बड़ा आश्चर्य यह है कि यहां हर

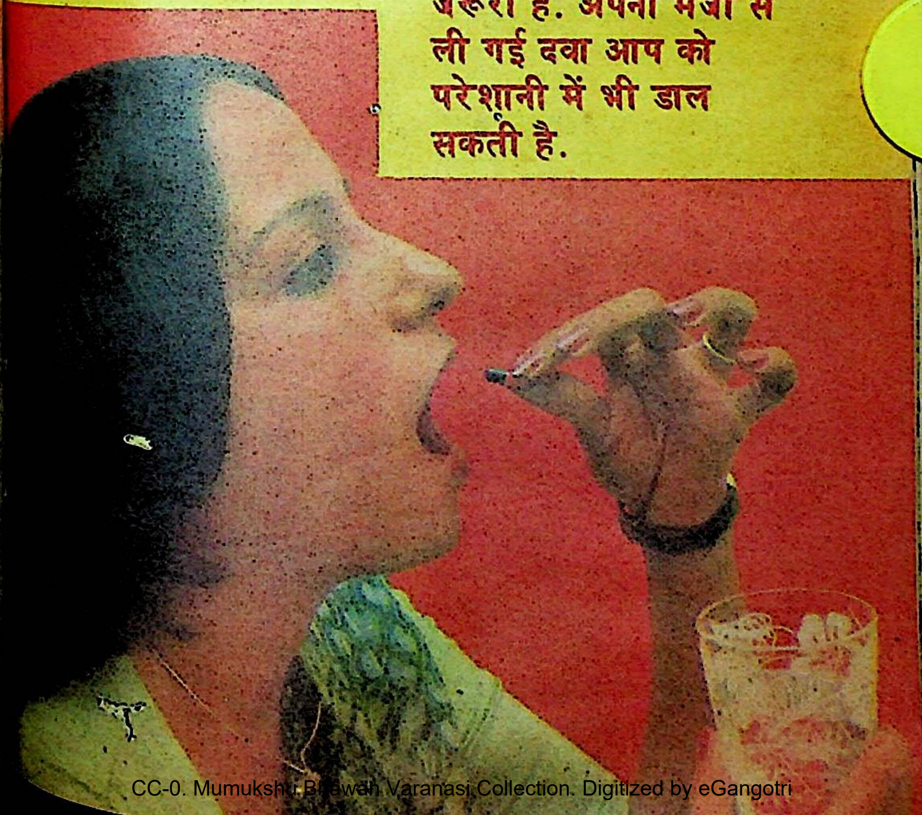
लेख • विभागीय लेखक

दवा खाएं जरूर पर डाक्टर की सलाह से

व्यक्ति डाक्टर है." इस टिप्पणी ने उन छात्रों को चुप रहने पर विवश कर दिया, क्योंकि वास्तव में भारत में स्थिति कमोबेश यही है.

यहां किसी भी परिवार का दवाओं का डब्बा देखिए. एस्पिरिन से ले कर रक्तचाप तक की दवाइयां तथा वर्षों से संभाल कर रखे गए डाक्टर के नुसखे उस में मिल जाएंगे: लोगों को मालूम रहने वाले घरेलू नुसखों की तो कोई गिनती ही नहीं है. मजे की बात यह है कि इन दवाइयों तथा नुसखों का प्रयोग लोग इस तरह से बेधड़क हो कर करते हैं मानो वे स्वयं डाक्टर हों. अपनी मर्जी से उन दवाइयों का प्रयोग करते समय वे यह भूल जाते है कि ये दवाएं उन्हें हानि भी पहुंचा सकती हैं. इस का कारण दवाओं के

डाक्टर की सलाह के मुताबिक दवा ले कर उस के निर्देशों का पालन करना जरूरी है. अपनी मर्जी से ली गई दवा आप को परेशानी में भी डाल सकती है.



विषय में उन का अज्ञान है. इन दवाओं के विषय में कुछ तथ्यों से परिचित हो जाने के बाद वे अपनेआप दवा खाने की गलती नहीं करेंगे.

1945 में पेनिसिलिन तथा बाद में अन्य रोगाणुनाशक (ऐंटीबायोटिक) दवाओं के आविष्कार से डाक्टरों को जीवाणुओं के कारण होने वाली बहुत सी बीमारियों से लड़ने के लिए एक सुदृढ़ हथियार मिल गया है. मृत्यु दर घटाने तथा जीवनकाल बढ़ाने में इन से काफी सहायता मिली है. ये दवाएं तपेदिक, मियादी बुखार, रतिज रोग आदि में प्रभावकारी सिद्ध हुई हैं, परंतु निमोनिया, साधारण सर्दीजुकाम, पोलियो, चेचक आदि विषाणु जनित बीमारियों में प्रभावहीन रही हैं. पहले डाक्टर अपने मरीजों को जम कर दवाएं देते थे, परंतु अब वे भी मानने लगे हैं कि ऐंटीबायोटिक का सेवन एक सीमा के बाद उन के प्रभाव में कमी कर देता है.

किसी भी बीमारी में इन दवाओं को अधिक मात्रा में लेने से रोग के जीवाणुओं में इन का मुकाबला करने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है. इसी वजह से अधिक सेवन करने से ये दवाइयां बेकार साबित होती हैं. ऐसा भी देखा गया है कि ऐंटीबायोटिक्स लेते रहने के बावजूद जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि होती रहती है. अतः डाक्टर इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि इन दवाओं को प्रभावकारी बनाए रखने के लिए इन की एक निश्चित मात्रा ही मरीजों को दी जानी चाहिए तथा छोटीमोटी तकलीफ में ये दवाएं नहीं दी जानी चाहिए. ऐसा करने से रोगी इन दवाओं के विषम प्रभावों से भी बचे रहेंगे. अतः यदि डाक्टर आप को ऐंटीबायोटिक दवा न दे तो उस से इस विषय में जिद न करें और न ही नुसखा देख कर निराश हों.

दवाओं के प्रभाव

करीबकरीब सभी दवाओं के शरीर पर कई तरह के प्रभाव पड़ते हैं. सब से अधिक महत्त्वपूर्ण प्रभाव तो यह होता है कि एक विशेष किस्म की तकलीफ तो दूर हो जाती है परंतु कोई दूसरी तकलीफ [illegible] घेरती है. कभीकभी वह तकलीफ गंभीर बीमारी का भी रूप धारण कर लेती है और जान को भी खतरा पैदा हो जाता है.

इसी लिए शक्तिशाली दवाइयां हमेशा डाक्टर के परामर्श से ही लेनी चाहिए और इन के प्रयोग के विषय में दिए गए निर्देशों का भी सावधानी से पालन करना चाहिए. डाक्टर हमेशा रोगी की आयु, लिंग, शारीरिक सामर्थ्य आदि को ध्यान में रख कर नुसखा लिखता है. दूसरे व्यक्ति के लिए हो सकता है वह दूसरी तरह से नुसखा लिखे, अतः एक व्यक्ति के लिए लिखे गए नुसखे का इस्तेमाल दूसरे व्यक्ति के लिए नहीं करना चाहिए. ऐसा करने के कभीकभी भयंकर परिणाम हो सकते हैं.

ऐंटीबायोटिक दवाओं के भी शरीर पर कुछ अन्य प्रभाव होते हैं. जो दवा विशेष, रोग की प्रकृति, इलाज के तरीके और व्यक्ति विशेष पर होने वाली प्रतिक्रिया पर निर्भर होते हैं. स्ट्रेप्टोमाइसिन की अधिक मात्रा पहुंच जाने से सुनने की शक्ति कम हो जाती है और चक्कर आने लगते हैं. पेनिसिलिन से एलर्जी की शिकायत हो जाती है. ट्रेट्रासाइक्लीन की अधिक मात्रा उल्टियां आने, डायरिया, दांत का प्लास्टर झड़ने और जी मचलाने की शिकायतों को जन्म देती है. जब जीवाणुओं के कारण होने वाली एक बीमारी के लिए ऐंटीबायोटिक दिए जाते हैं तो उस समय शरीर में अन्य रोगों के कीटाणु बढ़ जाते हैं.

बहुत सी दवाएं पुरानी पड़ जाने के कारण खराब हो जाती हैं. कई बार कुछ दवाएं कुछ महीनों के बाद ही खाने योग्य नहीं रहतीं. यद्यपि निर्धारित समय के बाद क्षमता खत्म हो जाने पर ये दवाएं पूरी तरह प्रभावहीन हो जानी चाहिए. परंतु कई बार निश्चित अवधि बीत जाने के बाद ये दवाएं विषैली हो जाती हैं. इसलिए दवा खरीदते समय यह अवश्य देख लेना चाहिए कि वह किस तारीख तक प्रयोग में लाई जा सकती है. ऐसी सभी दवाओं की [illegible]शियों या उनके

पर ऐसा लिखा रहता है. पिछली बीमारी के दौरान बच गईं दवाओं पर यदि ऐसा न लिखा हो तो उन्हें नष्ट कर देना चाहिए.

डाक्टर की सलाह के बिना कई दवाओं को एक साथ खाने से आप के शरीर में ऐसी प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं जो आप के लिए खतरनाक साबित हों. नींद लाने वाली दवाओं तथा आंतों की बीमारियों में दी जाने वाली दवाओं के साथ मादक द्रव्यों का सेवन प्राणघातक होता है. अलकोहल के साथ ये दवाएं अधिक जहरीली हो जाती हैं.

इन सब बातों को मद्देनजर रखते हुए यह आवश्यक है कि डाक्टर की राय के बिना अपनेआप दवा न खाई जाए और डाक्टर द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन सावधानी से किया जाए.

बहुत से लोग ऐसा करने से कतराते हैं. न तो आवश्यक परहेज करते हैं और न ही पूरा आराम. इन सब बातों से इलाज में बाधा पड़ती है. कई मामलों में यह लापरवाही जानलेवा बन जाती है. ये गलतियां बहुधा उन मरीजों से होती हैं जिन्हें जटिल निर्देश दिए जाते हैं. जैसे एक दिन में कई गोलियां खाना या एक बार में तीनचार तरह की दवा इकट्ठे एक विशेष क्रम में खाना.

कई लोग बताई गई मात्रा से अधिक दवा खा लेते हैं, क्योंकि उन के विचार में अधिक मात्रा अधिक असरदार होगी और स्वास्थ्यलाभ जल्दी होगा. इस के विपरीत कई मरीज बहुत कम मात्रा में दवा खाते हैं, क्योंकि वे यह सोचते हैं कि पूरी मात्रा में दवा खाने से वे इन के आदी बन जाएंगे. कई बार दवाओं के अन्य प्रभावों से घबरा कर भी वे कम मात्रा लेते हैं.

ऐसी मनःस्थिति होने पर डाक्टर से पूछ कर अपनी शंकाओं का समाधान कर लेना चाहिए. यदि डाक्टर परहेज आदि के विषय में अपनेआप कोई निर्देश न दे तो इस विषय में उस से स्वयं पूछ लेना चाहिए.

कई बार कैंसर, गठिया आदि पीड़ादायक रोगों से ग्रस्त लोग हर उस इलाज को अपनाते हैं जो उन्हें ठीक कर देने का आश्वासन देता है. हालांकि अभी तक इन रोगों के लिए चिकित्सा विज्ञान में कोई इलाज नहीं है. ऐसे लोग इलाज के नाम पर होने वाली जालसाजियों तथा पैसा कमाने के धंधे को प्रोत्साहन देते हैं. ठीक होने की आशा में वे धन और समय दोनों ही बरबाद करते हैं, योग्य डाक्टर से इलाज के अभाव में उन की दशा बदतर हो जाती है.

सर्दीजुकाम, खांसी आदि में कोई भी दवा प्रभावकारी सिद्ध नहीं होती. कुछ दवाएं इन तकलीफों के बाहरी लक्षणों को अवश्य दूर कर देती हैं. इन तकलीफों में रोगी डाक्टर से दवा देने की जिद करता है, अतः डाक्टर उसे प्लेसेबो नामक ऐसी गोली थमा देता है, जिस में वास्तव में दवा नाम की कोई चीज नहीं होती. इन गोलियों से अनेक प्रकार के रोगियों को ठीक भी होते देखा गया है. पर ऐसा केवल मनोवैज्ञानिक प्रभाव के कारण ही होता है. ●

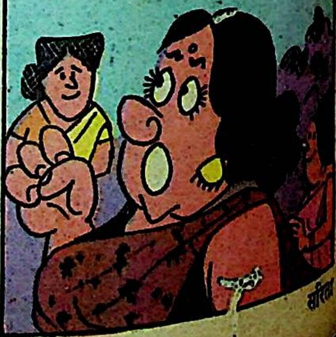
कमजोर वर्ग

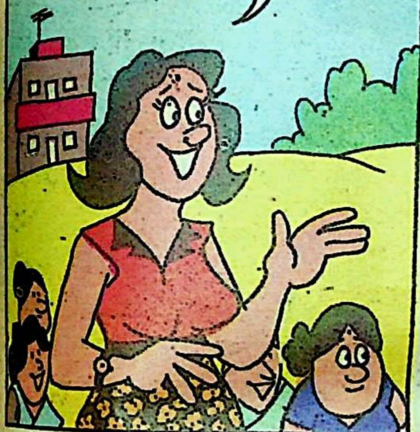



पुरुष वर्ग का महिलाओं पर अत्याचार बहुत बढ़ गया है. वे अपनी पत्नियों को कमजोर समझते हैं. उन पर रौब जमाते हैं...
महिला रक्षा समिति

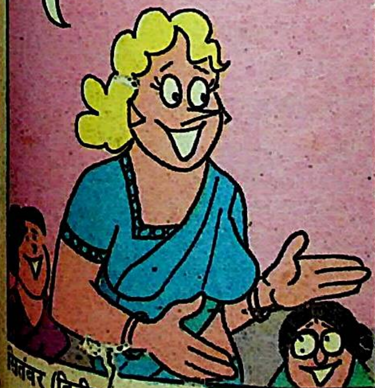

...आज की सभा में, पुरुषों की भर्त्सना करते हुए मैं यह प्रस्ताव प्रस्तुत करती हूं कि महिलाओं को उनके अत्याचार से मुक्त कराया जाए.


क्या हम आप को अबला और कमजोर नजर आती हैं?
महिला रक्षा समिति


कोई पुरुष हम पर अत्याचार कर के तो देखे.


हम ने तो अपने पतियों को काबू में कर रखा है.


हमारे पति तो हम से पूछे बिना एक कदम भी घर से बाहर नहीं रखते.


वे हम पर क्या रौब जमाएंगे, वे बिचारे तो खुद ही हमारे सामने भीगी बिल्ली बने रहते हैं.


हाय! मुझे तो 'पति बचाओ संघ' की सदस्या होना चाहिए!

दिन दहाड़े



हमारे एक पड़ोसी और उन की श्रीमतीजी एक दिन बाजार गए. उन दिनों उन के यहां खाना पकाने वाली गैस खत्म हो गई थी. तभी एक आदमी उन के घर आया और नौकर से बोला, "तुम्हारे साहब और मेमसाहब हमारी दुकान पर बैठे हैं. उन्होंने हमें खाली सिलेंडर लाने के लिए भेजा है. तुम फौरन सिलेंडर दे दो."

पहले तो नौकर हिचकिचाया, लेकिन जब उस आदमी ने कहा कि जल्दी करो, वहां एक ही सिलेंडर बचा है और देर होने से वह भी खत्म हो जाएगा तो नौकर ने वह खाली सिलेंडर दे दिया.

जब कि उन्होंने किसी भी आदमी को नहीं भेजा था. —शीला श्रीवास्तव

*

कुछ दिन पहले की बात है. मैं अपनी साइकिल द्वारा कालिज से घर आ रहा था. एक चौराहा पार करने के बाद मुझे एक काफी पुराने माडल की कार दिखी जो मुझ से कुछ ही दूरी पर जा कर रुक गई. उस में दो आदमी बैठे हुए थे.

उन में से दोनों आदमी उतरे तथा नजदीक जाने पर एक ने मुझे रोक कर कहा, "भाई साहब, जरा धक्का लगा देंगे?" मैं ने कुछ आदमियों को और बुलाया तथा अपनी साइकिल सड़क के किनारे खड़ी कर धक्का लगाने लगा.

थोड़ी दूर जा कर कार स्टार्ट हुई तथा बगैर रुके आगे बढ़ती चली गई.

जब मैं लौटा तब यह देख कर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि मेरी साइकिल वहां नहीं थी. काफी पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि गाड़ी से उतरे दूसरे आदमी को एक दुकानदार ने साइकिल ले जाते हुए देखा था. —अभयचंद्र

*

मेरे मौसाजी एक दिन घर में अकेले थे. करीब डेढ़ बजे एक गरीब सुंदर लड़की ने उन का दरवाजा खटखटा कर कहा, "बाबूजी, दो रोटी दे दो." मेरे मौसाजी रसोई में रोटी लेने चले गए. उस लड़की ने अंदर घुस कर दरवाजा बंद कर लिया और चीखने लगी. मेरे मौसाजी हड़बड़ा कर कमरे में पहुंचे. तब तक भीड़ इकट्ठा हो चुकी थी. तभी दो आदमी आए और कहने लगे, "मेरी बीवी की इज्जत लूटता है. चल जेल में." मेरे मौसाजी ने 300 रुपए दे कर उन से किसी तरह अपना पिंड छुड़ाया. —हरशरणानंद

*

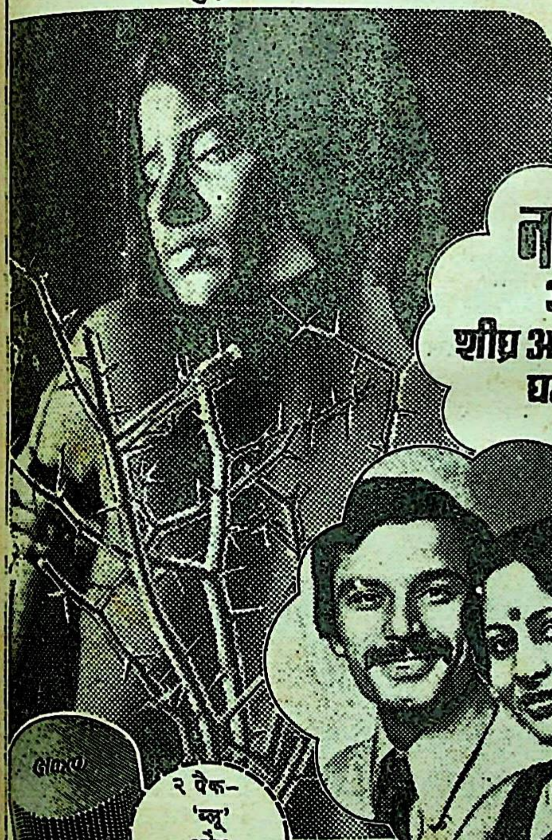
हमारे घर के बगल में एक फल विक्रेता रहता है. एक दिन दोपहर को उस की दुकान में बदमाश किस्म के लोग आए.

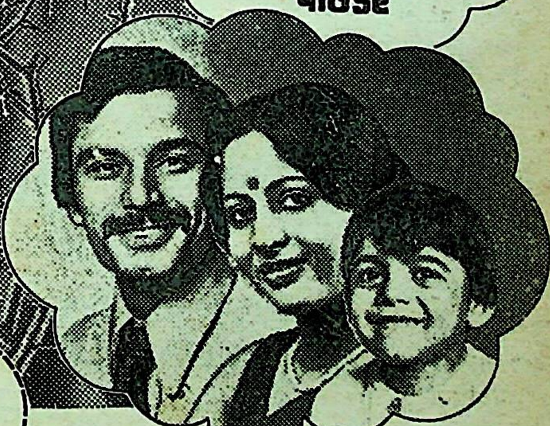
दुकानदार ने कहा कि थोड़ा ठहरिए, नौकर आएगा तब आप को संतरे का रस मिल सकेगा. लेकिन गुंडे दुकानदार की बात अनसुनी कर मनमानी करने लगे. वे दुकान के कांच के गिलासों व अन्य सामानों को तोड़नेफोड़ने लगे और हाथ से खून निकलने पर दुकानदार की कमीज से पोंछ कर उसे थाने ले गए.

वहां पर इन्होंने झूठा बयान दिया, जब कि वहां सिपाही भी मौजूद था. दुकानदार ने जब सिपाही की जेब गरम की तब कहीं उसे वहां छुटकारा मिला. —शीलबाला वासदेव

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

जलन से सताती, खुजलाती, घमोरियों की बेचैनी भूल जाइये।







२ पैक-
'ब्लू'
और
'सॅण्डलवुड'

नायसिल लाइये
घमोरियों को
भूल जाइये
टॅल्कम पाउडर से
भी कम क़ीमत में!



विशेष औषधियुक्त नायसिल हर दृष्टि से घमोरियों की रोकथाम करता है।

१. अत्यधिक पसीने को रोकता है।
२. पसीने को सोखता है।
३. दुर्गंध के कीटाणुओं का नाश करता है।
४. त्वचा को आराम पहुंचाता है।

कहानी • कुसुम गुप्ता

तीसरा महायुद्ध

रामलाल अपनी पत्नी से झूठ बोल कर दौरे पर चले गए. जब सरला को असलियत का पता चला तो उसे अपना घर बिखरता नजर आया. फिर उस ने ऐसा तरीका अपनाया कि रामलाल के छक्के छूट गए.

शाम सवा पांच बजे से सात बजे तक करीब दस बार फोन की घंटी बजी. हर बार एक ही प्रश्न किया जाता, "क्या मैं रामलालजी से बात कर सकता हूं?"

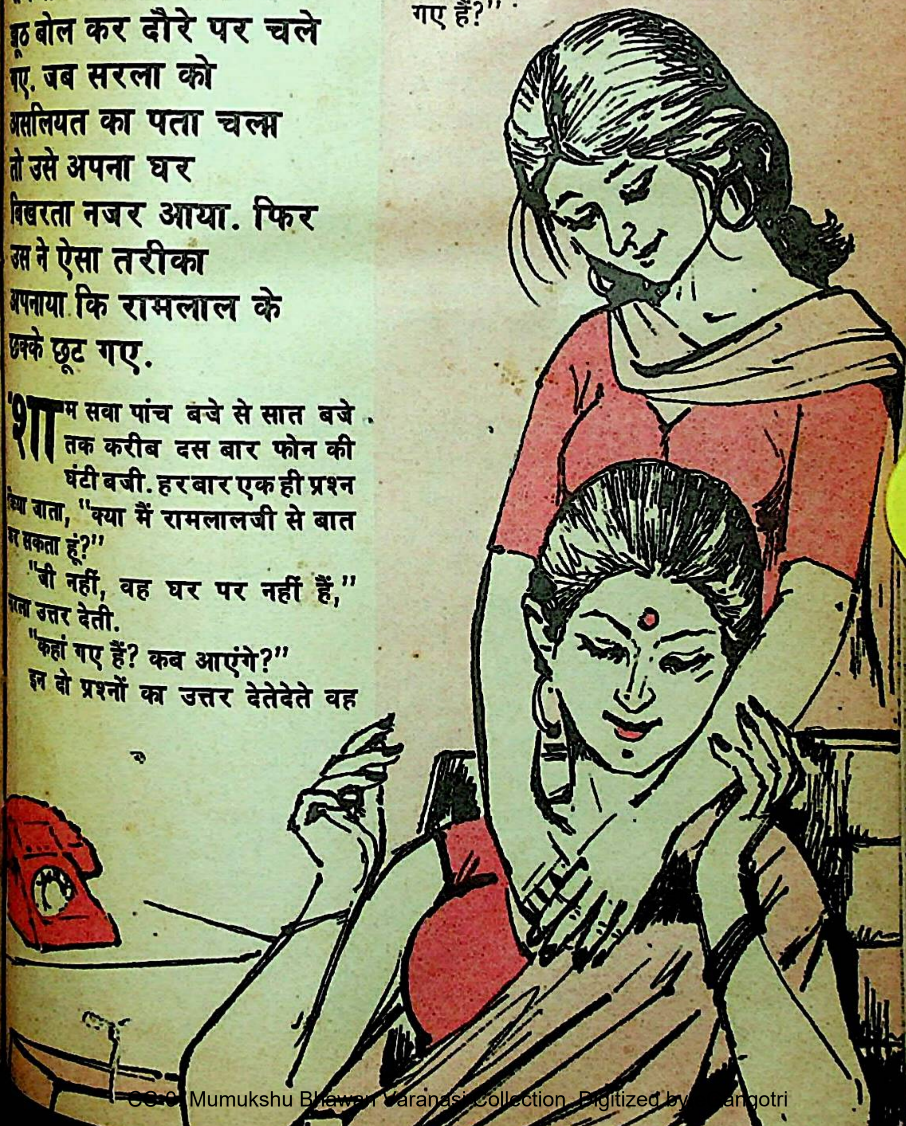
"जी नहीं, वह घर पर नहीं हैं," सरला उत्तर देती.

"कहां गए हैं? कब आएंगे?"

इन दो प्रश्नों का उत्तर देतेदेते वह परेशान हो गई. कहां गए हैं, इस के कई उत्तर दिए उस ने. "दिल्ली गए हैं, एक कानफ्रेंस में हिस्सा लेने के लिए," उस ने एक मित्र से कहा.

"अपने घर भटिंडा गए हैं. उन के रिश्ते के एक चाचा सख्त बीमार हैं," सरला ने रामलालजी के दफ्तर के एक सहयोगी को कहा.

"नहीं, उन की तबीयत खराब नहीं.



शालू पीछे से सरला के गले में अपनी दोनों बांहें डाल कर बोली, "मां, पिताजी कहां गए हैं?"

वह कार्यालय के काम से त्रिवेंद्रम गए हैं," एक अपरिचित को उस ने कहा.

इसी तरह उस ने अपने पति को भारत के अनेक शहरों की सैर पर भेज दिया. वह सचमुच कहां गए हैं, यह स्वयं उस को भी पता नहीं था. जब वह गए थे तो चलते हुए उन्होंने कहा था, "मद्रास जा रहा हूं, दफ्तर के जरूरी काम से. दो दिन में आ जाऊंगा."

"कब आएंगे?" यह तो और भी ज्यादा उलझा हुआ प्रश्न था. उसे इस के बारे में कुछ भी पता नहीं था. किसी को चार दिन, किसी को एक हफ्ता कह कर उस ने टाल दिया था.

लगातार बजते फोन से तंग आ कर सरला कमरे से बाहर आ बरामदे में बैठ गई और दूर तक बिखरी, असीम जलराशि को एकटक देखती रही. सागर आज अपेक्षाकृत शांत था और वातावरण स्तब्ध. हवा बेहद धीमी थी.

माथे को दोनों हाथों से पकड़े वह संज्ञाशून्य सी बैठी रही और अपनेआप से वह पूछती रही, 'आखिर यह कहां चले गए? क्यों चले गए? कब आएंगे?'

अप्पू काफी रख गया. तेज गरम काफी. सरला ने एक घूंट पिया और क्षणांश में ऊटी पहुंच गई. राजेश और कविता. वुडलैंड होटल. ऊटी झील में तिरती नाव. दोनों हनीमून मना रहे हैं. बेटे और बहू के बारे में सोच कर सरला का दिल उमंग से भर गया और मन भीग गया. इंजीनियरिंग करते ही बेटे को तत्काल बढ़िया नौकरी और सुंदर तथा सुशील पत्नी मिल गई. इक्कीस का होते ही जिंदगी में स्थापित हो गया. चलो, एक फिक्र तो मिटी. रह गई शालू. उस का क्या है? बी.ए. आनर्स कर रही है. उसे तो अभी से लोगबाग मांग रहे हैं. और तभी शालू बरामदे में आई और पीछे से मां के गले में अपनी दोनों बांहें डाल कर बोली, "मां, पिताजी कहां गए हैं?"

"मद्रास," अनायास सरला कह गई.

"मद्रास? पर परसों तो आप कह रही थीं कि वह दिल्ली गए हैं." शालू सीधी [...] और मां के सामने पड़ी कुरसी पर [...] बैठ गई और सीधे उन की आंखों में [...] लगी.

"ऐसा!" पलांश को सरला सकप[...] फिर वह शीघ्र ही संभल गई और [...] "दोनों जगह जाना था. पहले मद्रास, वहां [...] दिल्ली."

"अच्छा मां, पिताजी और भैया [...] के बिना घर कितना सूना लगता है," शा[...] उदास स्वर में कहा.

"वह तो है. कहो तो आज रात [...] फिल्म देखने चलें."

"नहीं मां, पिताजी के बिना क्या [...] आएगा?"

"काफी पियोगी?" सरला ने शालू [...] बहलाने का यत्न किया. वह जानती थी [...] राजेश का उस से और शालू का [...] पिताजी से विशेष लगाव है.

"नहीं, मां," कह कर उदास [...] परेशान सी शालू अंदर चली गई.

अगले दिन दफ्तर में करीब पंच [...] जब सरला छुट्टी करने वाली थी तो सुहा[...] का फोन आया, वह उसे बुला रहा था. [...] रामलालजी शहर में होते तो वह उसे कार [...] लेने सवा पांच तक आ जाते. अब तो [...] अकेली थी—एक लंबी, अकेली, बीहड़ [...] शाम लिए.

सुहास उस का बास था. पिछले कि[...] ही सालों से वह उस के अधीन काम कर र[...] है. एक विचित्र, अनाम और रहस्यम[...] संबंधों में जुड़े वे काम करते रहे हैं.

सुहास स्मार्ट और आकर्षक व्यक्तित्व का धनी है. उच्च पद. सम[...] भौतिक सुखसुविधाएं, कोठी, कार [...] पर दिन में आठ घंटे का सामीप्य और दैनि[...] समस्याओं में साझेदारी उन दोनों को क[...] बार बेहद करीब ले आई. सुहास मुख[...] पिघला था और संयम की सीमारेखाओं का [...] अतिक्रमण कर चला था.

पर वह? उस ने सुहास को भावात्म[...]

सरिता

सहारा भर दिया था. फिर आत्मसमर्पण या समझौता करने की मूर्खता से बच गई थी. उस ने सिर्फ यही कहा था, "सुहास, हम दोनों विवाहित हैं. हमारे व्यवस्थित दो घर हैं."

"सरला, हम विवाहित हैं, इसी लिए हम काफी ज्यादा सुरक्षित हैं," सुहास ने तर्क दिया था.

"नहीं, सुहास, तुम शायद घर को पर्याप्त महत्त्व नहीं दे रहे हो."

सुहास समझ गया कि वह क्या कह रही है. दोनों मित्र बने रहे, किंतु अंतरंगता में कोई अंतर नहीं आया.

सरला उठी. सुहास के केबिन में पहुंची तो उस ने खड़े हो कर बड़ी गरमजोशी से उस से हाथ मिलाया और बोला, "सरला, आज शाम को क्या कर रही हो?"

रामलाल क्रोधित हो कर सरला पर गरजे, "एक तो दुश्चरित्रता और ऊपर..." कहतेकहते वह रुक गए. उन की नजर सुधा पर पड़ी, जो हंस रही थी.



"क्यों, क्या बात है?" सीधेसीधे सुहास के प्रस्ताव को स्वीकार करने से पूर्व उस ने पूछा.

"मेरे साथ घर चलो. पूर्वी पार्टी दे रही है."

"किस उपलक्ष्य में?"

"अरे भई, ऐसी मैत्रीपूर्ण पार्टियों के लिए किसी उपलक्ष्य का मुहताज होना जरूरी है क्या?"

सरला निरुत्तर हो गई. अकेली घर पर बोर होने से तो अच्छा है कि सुहास के यहां शाम काटी जाए. अभी वह इस निर्णय प्रक्रिया से गुजर ही रही थी कि सुहास बोला, "अरे यार, क्या सोच रही हो? तुम तो अकेली हो आजकल."

"तुम्हें कैसे पता चला?" सरला ने घोर आश्चर्य से पूछा.

"मैं आज सुबह गोआ से आया था. वहीं पर मैं ने रामलाल को कल शाम एक होटल में शराब पीते हुए देखा था. उस के साथ एक छोकरी भी थी. अच्छीखासी मजबूत चीज थी."

"सच? तुम यकीन से कह रहे हो?" सरला भौचक्की रह गई. उस ने घोर आश्चर्य से पूछा.

"अरे भई, रामलाल से पचासियों बार मिला हूं. मेरी आंखें धोखा नहीं खा सकतीं. मैं ने उसे देखा था, पर उस ने मुझे नहीं देखा. अच्छा हुआ. मैं उस के काम में विघ्न नहीं डालना चाहता था."

सरला का चेहरा पीला पड़ गया.

"अरे, तुम्हारा चेहरा पीला क्यों पड़ गया? क्या रामलाल तुम्हें बता कर नहीं गया?" सुहास ने उसे कुरेदा.

तत्काल ही सरला संभल गई. अपने बास और मित्र के सामने वह अपने वैवाहिक संबंधों को नग्न नहीं करना चाहती थी. अतः वह संयत किंतु कृत्रिम स्वर में बोली, "नहीं, ऐसा नहीं है."

"मैं ने सोचा, इधर बेटा हनीमून मनाने ऊटी गया है, उधर रामलाल की बासी कढ़ी में भी उबाल आ गया और वह भी हनीमून मनाने के लिए गोआ चला गया. अगर ऐसा था तो रामलाल के साथ तुम्हें होना चाहिए था," सुहास ने सपाट स्वर में कहा.

पर इन सपाट शब्दों की तह में जो विष बुझा व्यंग्य छिपा था; उस ने सरला को तिलमिला दिया. तो क्या इसी कारण सुहास उसे अपनी कोठी पर ले जाना चाहता था कि वह अकेली है? यदि उस की कोठी पर उस की पत्नी पूर्वी नहीं हुई तो? नहीं, वह किसी अनबुलाई मुसीबत में नहीं फंसेगी.

अप्रियता को बिना आगे बढ़ाए उस ने सुहास से क्षमा मांगी और दफ्तर से बाहर आ टैक्सी पकड़ सीधी घर पहुंच गई. रानू अभी कालिज से नहीं आई थी. उस के आते ही अप्पू घर का सामान खरीदने बाजार चला गया. यह प्रिय अकेलापन उसे अपने वैवाहिक जिंदगी के ढहते राजमहल के कारणों के विश्लेषणों का अवसर प्रदान कर रहा था.

पूरे 24 साल का अटूट साथ है उस का और रामलाल का. सरला चारपाई पर औंधी पड़ी सुबकने लगी. इतनी लंबी अवधि की ईमानदारी, विश्वास, श्रद्धा और प्रेम की साझेदारी को रामलाल ने एक झटके में तोड़ डाला है. ओह! किस पर भरोसा किया जा सकता है?

सरला को लगा, उस के जीवन में

तलाश

कल तक उस की
तलाश थी लेकिन,
आज है अपनी
जुस्तजू मुझ को.

—दाग



मरुस्थल की वीरानी छा गई है. रामलाल के इस विश्वासभंग ने उस का सब कुछ नष्ट कर दिया है. क्या अब ये वैवाहिक संबंध टिके रह पाएंगे? उस ने सपने में भी नहीं सोचा था कि रामलाल ऐसा व्यवहार करेंगे? सच है, पुरुष कैसा भी हो, उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता.

तभी फोन की घंटी बजी. सरला उठी. धोती के पल्ले से उस ने गीली आंखों को पोंछा. मेज पर रखे फोन का रिसीवर उठा कर वह बोली, "हेलो."

"क्या मैं रामलालजी से बात कर सकता हूं?"

"जी, वह घर में नहीं हैं."

"कहां गए हैं?"

"शहर से बाहर."

"पर कहां?"

"शायद त्रिचनापल्ली गए हैं."

"कब तक आएंगे?"

"आ जाएंगे एकाध दिन में."

"हद हो गई! आप उन की बीवी हैं और आप को इतना भी नहीं पता कि वह कहां गए हैं और कब आएंगे?"

"आप कृपया अपना नाम बताइए. उन के आते ही मैं आप से..."

"मुझे दिवाकर कहते हैं."

"दिवाकरजी... नीलिमा के पति?"

"जी हां, आप ने ठीक पहचाना. मैं उसी नीलिमा का पति हूं जिसे ले कर आप के पति हनीमून मनाने गोआ गए हुए हैं."

"यह आप क्या कह रहे हैं, दिवाकरजी?"

"मैं ठीक कह रहा हूं, सरला देवी. मेरी पत्नी आप के पति की सेक्रेटरी है, पत्नी नहीं. रामलालजी ने मेरे साथ जो कुछ किया है, उस की सजा उन्हें भुगतनी पड़ेगी," धमकाते हुए दिवाकर ने फोन बंद कर दिया.

सरला सिहर गई. वेदना, पीड़ा और निराशा का स्थान भय ने ले लिया. तो रामलाल एक विवाहिता को ले कर गुलछर्रे उड़ाने गए हैं. यह तो और भी भयानक एवं खतरनाक बात है. विवाहित व्यक्तियों के



वफा

अगर बरबाद ही करना है
तो बरबाद कर डालो,
वफा के नाम पर आखिर
हमारा इम्तिहां क्यों है?
— मीनाकाजी साहिबा

इस तरह के संबंध कैसी जटिलता एवं विषमता उत्पन्न कर देते हैं, सरला को इस का आभास हो चला था. विश्वासभंग से ज्यादा अब उसे पति की सुरक्षा की चिंता सताने लगी थी.

क्या वह रामलाल से संपर्क करने की कोशिश करे? पर कैसे? क्या सुहास से वह गोआ के उस होटल का नाम पूछे, जहां उस ने रामलाल को देखा था? फिर वहां ट्रंककाल मिलाए? नहीं, वह ऐसा नहीं करेगी. बिजली की सी गति से उस ने फैसला कर लिया.

फिलहाल रामलाल को कोई खतरा नहीं था. नीलिमा के पति को शायद यह पता ही नहीं था कि वे दोनों कहां गए हैं. फिर वह एक तमाशा भी देखना चाहती थी. लौट कर रामलाल क्या नाटक करता है? अगर वह उस से गोआ में संपर्क करती है तो वह सोचेंगे कि वह उस की जासूसी करती रहती है.

शाम बदरंग हो गई. मनहूस माहौल में उस ने एक रात और काट दी. शालू अपनी किसी दोस्त के यहां से देर से लौटी और रात का खाना ले वह पढ़ने बैठ गई.

वह सारी रात ठीक से सो नहीं पाई. करवटें बदलती रही. उसे एक प्रश्न का उत्तर नहीं मिल रहा था—आखिर रामलाल



स्वाद में न्यारे—कुरमुरे और करारे!



डालिमा

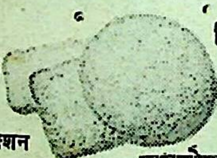
सोने में तुलने योग्य बिस्कुट!

बिस्कुट इतने मज़ेदार—अंतरराष्ट्रीय स्वर्ण-पदक जीते कई बार!

हमने लां मॉन्डे (वर्ल्ड) सिलेक्शन स्वर्ण-पदक इस प्रकार जीते :

१९७७—ब्रसेल्स में
१९७८—जिनेवा में
१९७९—पेरिस में
१९८०—विएना में
१९८१—एमस्टर्डेम में

डालिमा बिस्कुट बेमिसाल बिस्कुट हैं।



बिस्कुट—जिनमें उत्तमता का अनमोल स्वाद है

खस्ता कोकोनट कुकीज़—इतने मज़ेदार आप खाना चाहेंगे बार-बार!

पौष्टिकता से भरपूर ग्लूकोज़ बिस्कुट। स्वर्ण-पदक जीतने वाले एकमात्र ग्लूकोज़ बिस्कुट। क्योंकि इनमें सबसे अधिक ग्लूकोज़ है।

अनोखे स्वाद वाले क्रीम बिस्कुट—ऑरेंज क्रीम, पाइनेप्पल क्रीम, बटर क्रीम।

साथ ही नमकीन बिस्कुट, क्रैकर्स और बिस्कुटों की कई और किस्में!

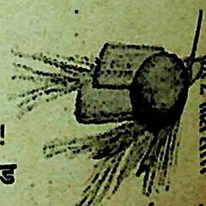
पंजाब की सुनहली गेहूं से बने बिस्कुट

हमारे बिस्कुट बनते हैं पौष्टिक, स्वास्थ्य-दायक सम्पूर्ण गेहूं से... पंजाब की सर्वोत्तम क्वालिटी की गेहूं!

बिस्कुट बनाने वाली हमारी फ़ैक्ट्रियां पंजाब के सुनहरे गेहूं भंडारों के बीचों-बीच ही तो बनी हैं।

८० वर्षों से उत्तर भारत में स्थापित, प्रसिद्ध और लोकप्रिय।





डालमिया बिस्कुट्स प्राइवेट लिमिटेड के उत्तम उत्पादन

ने उस के साथ यह विश्वासघात क्यों किया? क्या यह पहला मौका है या इस से पहले भी वह ऐसा करते रहे हैं? बच्चे सयाने हो गए हैं. बेटे की शादी हो गई है. वह श्वशुर बन गए हैं. एकाध साल में राजेश के बेटा हो गया तो बाबा भी बन जाएंगे. ऐसे में जब लोगों को यह पता चलेगा तो? तो उन का सिर लज्जा से झुक नहीं जाएगा?

सुबह हुई. वह दफ्तर जाने के लिए तैयार हुई. फालसई रंग की शिफान की साड़ी और स्लीवलेस ब्लाउज पहन कर वह ड्रेसिंग टेबल के आदमकद शीशे के सामने खड़ी हुई तो...तो वह स्वयं पर ही मोहित हो गई. कौन कह सकता है कि वह पैंतालीस की हो गई है और उस के घर में पुत्रवधू आ गई है?

साफ, गोरा रंग, लंबा कद, छरहरा शरीर, भरे वक्ष व अधेड़ावस्था की प्रतीक झुर्रियों का अभाव उस के केवल 30-35 वर्षीया होने का आभास देता था. चंपई रंग की त्वचा से मेल खाती मदमस्त सी आंखें जो पिछली रात जागने के कारण उनींदी सी हो रही थीं. काले घने बाल. एक भी सफेद तार नहीं. सच्चे हीरे के दपदप करते कर्णफूल. चेहरे की आकर्षक बनावट.

कहां कमी है उस में? सरला के कलेजे पर एक जबरदस्त घूंसा सा लगा. पीड़ादायक एक तीर ने उसे बींध डाला. इस गंगाधारा के साफ निर्मल जल से दूर भाग रामलाल को गंदे, पोखर के पानी में डुबकी लगाने की क्या सूझी?

दिन भर दफ्तर में वह काम करती रही. मन उचटा रहा. लोगों से उस की अन्यमनस्कता छिपी न रह सकी. पर किसी ने उसे छेड़ा नहीं, जैसे उन सब को उस की व्यथा का पता चल गया हो. उस दिन छठा दिन था और सरला को महसूस होने लगा था जैसे उस के यहां जबरदस्त डकैती पड़ी है और डाकू उस का तिनकातिनका तक उठाए लिए जा रहे हैं.

तभी फोन की घंटी बजी. सुहास का होगा, सरला ने सोचा. पर रिसीवर को कान से लगाते हुए उसे अपने अनुमान के गलत होने का आभास हो गया, क्योंकि वह इंटरकाम का नहीं, डायरेक्ट फोन का था. उस ने 'हेलो' की तो उधर से वासंती बयार जैसी मधुर आवाज आई, "सरला जानेमन, कैसी हो?"

"तुम?"

"हां, मैं रामलाल. अभी कुछ देर पहले घर पहुंचा था. कैसी हो?"

"ठीक हूं?"

"घर कब आ रही हो?"

"और कहां जाना है मुझे?"

"कार ले कर आऊं?"

"नहीं, मैं पहुंच जाऊंगी," कह कर उस ने फोन रख दिया.

दफ्तर के समय में अभी आधा घंटा बाकी था. उसे घर जाने की न कोई विशेष जल्दी थी और न उत्सुकता. एक अप्रियता से साक्षात्कार जितना टल सके, बेहतर होगा. यही सोच कर वह अपने काम में लगी रही.

रामलाल के व्यवहार ने उस के अंदर के परिवेश और विचारधारा को काफी तेज झटके दिए थे. यही कारण था कि जब साढ़े पांच बजे इंटरकाम पर सुहास ने उसे एक प्याला काफी और घर तक लिफ्ट की पेशकश की तो वह इस निमंत्रण को अस्वीकार नहीं कर पाई.

सात बजे के लगभग जब वह घर पहुंची तो देखा, बरामदे में कुरसी डाले दोनों बापबेटी हंसीमजाक और अनन्नास का रस पीने में व्यस्त हैं. उसे देखते ही रामलाल कुरसी से उठे और उसे आलिंगनपाश में कस कर बांध लिया.

"अच्छा, मां, मैं चलती हूं. मुझे जरा पड़ोस में अपनी सहेली नीता के पास जाना है. दो घंटे तक वापस आ जाऊंगी," कह कर शालू पिता की तरफ नामालूम तरीके से आंखें मटका कर चली गई.

"कितनी समझदार हो गई है हमारी बिटिया. मियांबीवी इतने दिनों बाद मिले हैं, इसलिए उन्हें अकेला छोड़ कर चली गई."

यदि आपका जन्म १९५२ से पहले हुआ है तो इस विज्ञापन को ध्यान से पढ़िये



३० साल से ऊपर की उम्र वाले १० में से ९ लोगों के बाल गिर रहे हैं... लेकिन उन्हें इसका पता नही

अगर आप उन ९ लोगों में से एक हैं तो आज से ही प्योर सिल्विक्रिन का इस्तेमाल शुरू कर दीजिये।

अपने बालों को ज़ोरों से कंघी कीजिये। अगर आपकी कंघी पर बाल उतर आयें तो समझ लीजिये कि आपके बाल झड़ रहे हैं। इससे पहले कि आपके पतले पड़ते बाल शीशे में साफ़ दिखाई देने लगें, आपको तुरन्त इसका उपाय ढूंढ़ना चाहिए। बालों की कुदरती खुराक, ज़रूरी एमिनो एसिड की कमी से बाल कम घने और अस्वस्थ होने लगते हैं। जब तक इस कमी को पूरा नहीं किया जायेगा, बाल झड़ते जायेंगे और इन्हें नहीं रोका जा सकेगा। इसलिए आपको आज से ही प्योर सिल्विक्रिन का इस्तेमाल शुरू कर देना चाहिए।



प्योर सिल्विक्रिन में कौन से तत्व हैं ?

① प्योर सिल्विक्रिन की कई गुना बढ़ा कर दिखायी गयी बूंद।

प्योर सिल्विक्रिन १७ एमिनो एसिड अनोखा मिश्रण है जो बालों की शरीर से मिलने वाली कुदरती जरूरतें पूरी करता है।

प्योर सिल्विक्रिन कैसे काम करती है ?

② सूक्ष्म भेदक कार्य।

प्योर सिल्विक्रिन को सर की त्वचा पर खूब अच्छी तरह मलिए ताकि यह बालों की जड़ों तक पहुंच जाय। प्योर सिल्विक्रिन का वैज्ञानिक फार्मूला बालों की जड़ों तक पहुंचता है और उन्हें फिर से स्वस्थ बनाता है। प्योर सिल्विक्रिन को प्रति दिन दो बार इस्तेमाल करिये जब तक आपके बालों का स्वास्थ्य लौट नहीं आता।



प्योर सिल्विक्रिन

OBM/5543

सरला ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की. वह एकटक गौर से रामलाल को देख रही थी. वह एकदम ओवन से निकले केक की तरह ताजा नजर आ रहे थे. न सफर की कोई थकान, न अपराध बोध से उत्पन्न कोई ग्लानि भाव या भय.

"तुम मुझे ऐसे क्यों घूर रही हो?" रामलाल सकपकाए.

"नहीं तो," सरला ने कहा और पल भर में ही उस ने फैसला कर लिया कि वह नीलिमा प्रकरण पर रामलाल से कोई चर्चा नहीं करेगी. जो हुआ, सो हुआ. जाहिलों की तरह, घुटनों के बल जमीन पर बैठ कर अपने हक और न्याय के लिए नहीं लड़ेगी. रामलाल को सीधे रास्ते पर लाने के लिए वह कोई न कोई उपाय अवश्य खोज निकालेगी.

"मेरे पीछे से राजेश या कविता का कोई पत्र या फोन आया?" रामलाल ने पूछा.

"हनीमून की मादकता में कुछ याद रहता है? इनसान मदहोश हो जाता है, सब कुछ भूल जाता है," सरला ने एक तीर से दो शिकार कर डाले.

"ठीक है. ठीक है. बच्चों के दिन हैं मौजमस्ती मारने के."

"और हम बूढ़े हो गए हैं," सरला ने व्यंग्यभरी वितृष्णा से कहा.

रामलाल अकारण ही 'होहो' कर के हंस पड़े. फिर वह बोले, "भई, कुछ खानेपीने का इंतजाम करो. बड़ी भूख लगी है."

"क्या बाहर खा कर पेट नहीं भरा?"

अचानक रामलाल गंभीर हो गए. उन्होंने सरला का हाथ पकड़ा और उसे प्यार से अपने पास सोफे पर बिठा कर बोले, "तुम कुछ उखड़ी हुई लग रही हो. बात क्या है?"

"कुछ भी तो नहीं. तुम्हारा खयाल है कि मैं उखड़ी हुई हूं. मैं भला क्यों उखड़ने लगी? खैर, छोड़ो. यह बताओ, सफर कैसा रहा? मद्रास से कब लौटे?"

"मैं मद्रास गया ही नहीं था," रामलाल ने बड़े सहज और शांत स्वर में कहा.

"फिर?" सरला ने उन्हें कुरेदा. उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था. क्या कोई पुरुष अपनी पत्नी के साथ विश्वासघात कर के भी उस के सामने सब कुछ स्वीकार लेगा?

"सरला, मैं तुम से कुछ भी नहीं छिपाऊंगा. मेरा दिल साफ है. तुम मेरी पत्नी हो और रहोगी. इसलिए मैं ईमानदारी से काम लूंगा. मैं मद्रास नहीं, गोआ गया था और मेरे साथ थी मेरी सेक्रेटरी नीलिमा."





स्कूल में ६ घंटे की सख़्त पढ़ाई... खेल की उछल-कूद और उस पर घंटों भर स्कूल का काम.



कितना कठिन है आज के बच्चों का बचपन.

इसीलिए आपके बच्चों को अच्छी से अच्छी देखभाल की ज़रूरत है।

तभी तो उसके लिए बूस्ट बनाया गया है।

उसे हर सुबह एक कप मज़ेदार बूस्ट दीजिए। बूस्ट— शक्ति का ईंधन जो उसे दिन-भर चुस्त और फुर्तीला रखेगा।

क्योंकि बूस्ट में उत्तम क्वालिटी के पोषक तत्वों—क्रीमयुक्त दूध, गेहूं, जौ मॉल्ट और कोको—के सभी गुण हैं।

उत्तमता की अपनी कीमत होती है। बूस्ट की उत्तमता भी कीमती है।

क्या आप अपने बच्चे के लिए इससे कम सोच भी सकते हैं?



चुस्ती और फुर्ती के लिए शक्ति का ईंधन

सरला विस्फारित नेत्रों से रामलाल की ओर देखती रह गई. वह जड़वत बैठी थी. कितने सहज और शांत रूप से जनाब अपनी बेईमानी का वर्णन कर रहे थे.

"पता नहीं, मैं ने जो कुछ किया वह गलत था या सही, पर एक बात है, नीलिमा के साथ गोआ में मैं ने जो चंद दिन गुजारे, उन्होंने मुझे फिर से जीवित कर दिया है. इस से पहले मैं महसूस करने लगा था जैसे युवावस्था किसी चोर की तरह मेरी जिंदगी से चुपचाप विदा हो गई है. और राजेश की शादी के बाद जब पुत्र और पुत्रवधू ने मेरे पांव छुए तो, सरला, सच मानना, मुझे पल भर में ही अपने लाठी टेक कर चलने और खोंखों खांसने वाले बूढ़े होने का एहसास कचोट गया. मैं ने तुम्हारी तरफ देखा और पाया, तुम वह नहीं, एक बूढ़ी दादी हो, जिस के चेहरे पर झुर्रियां हैं, मुंह पोपला है, कमर झुकी हुई है..."

"इस सब का मतलब?" सरला ने निराश स्वर में पूछा.

"वही समझाने जा रहा हूं. एक तरफ घर में यह बुढ़ापे की अनुभूति, एक बासीपन का बोझ और एकरसता की निरंतरता और उधर दफ्तर में नीलिमा... एकदम ताजगी, बसंती बयार की तरह मदमस्त और विविधता का अद्‌भुत संगम. काफी दिनों से वह मुझ पर आसक्त थी. बस, मैं अपनी खोई युवावस्था की तलाश में नीलिमा के साथ चला गया था."

सरला विस्मित रह गई. क्या कोई पुरुष इतनी निर्भीकता और निश्चितता से अपनी पत्नी के सामने दूसरों के साथ संबंधों की उपलब्धियों का वर्णन कर सकता है? न कोई अपराध भावना, न ग्लानि. कितनी सहजता और संतुष्टि. क्या इतनी ईमानदारी से अपनी बेईमानी का वर्णन कर के रामलाल ने अपने साफ दिल होने का प्रमाण नहीं दिया है? सरला ने इस दुर्घटना के विभिन्न पक्षों के बारे में विचारविमर्श किया किंतु एक भाव पीछा नहीं छोड़ रहा था—उसे ठगा गया है, उस के साथ विश्वासघात हुआ है. एक दबी घुटी सिसकी उस के गले से निकल भागी.

"यह क्या? तुम रो रही हो. आखिर क्यों?" रामलाल ने घोर आश्चर्य से पूछा.

"तो यह भी तुम्हें बताना होगा कि मैं क्यों रो रही हूं?" सरला ने क्रोध में भर कर कहा, "इस उम्र में यह कुकर्म? जवान बच्चों के घर में अगर कभी यह राज खुल गया तो... तो शर्म के मारे मरने तक को जगह नहीं मिलेगी."

रामलाल हंस पड़े. फिर वह हलके स्वर में बोले, "कैसी बातें करती हो? अरे बच्चों से कैसी शर्म? वे भी कहेंगे कि पिताजी कितने जवान और जिंदादिल हैं."

चोर और सीनाजोरी. इन पर तो चोरी के हनीमून मनाने का नशा चढ़ा है, सरला ने सोचा. पर तभी उस के अंतर्मन में एक जबरदस्त विचार कौंधा. उस ने इस विवाद को वहीं समाप्त कर दिया और रात्रि भोजन का प्रबंध करने के लिए रसोईघर में चली गई.

उस रात्रि को पतिपत्नी के बीच पूर्ण असहयोग का माहौल बना रहा.

करीब एक महीने बाद सरला को अवसर मिल गया. एक दिन अचानक उस के मामाजी की लड़की (जो बांद्रा में रहती थी और जिस के पति एक विदेशी कंपनी में नौकर थे) का फोन आया कि उस के पति तीन हफ्ते के लिए जापान गए हैं और आजकल एकदम अकेली है. उस ने शालू को कुछ दिन के लिए उस के यहां भेजने का अनुरोध किया.

"शालू तो नहीं, मैं आ रही हूं, सुधा," सरला ने कहा तो सुधा को जैसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ.

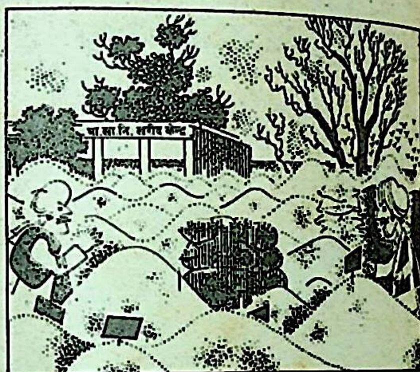
"आप? सच?"

"हां, सुधा, इस में इतना चौंकने की क्या बात है? मैं ने सोचा जरा जीवन में बदलाव आ जाएगा."

और अगले दिन एक अटैची में कपड़े डाल दफ्तर से एक हफ्ते की छुट्टी ले सरला

भारतीय खाद्य निगम आपके परिवार के लिए आप से भी पहले खरीदारी शुरु कर देता है।

खरीदारी का ऐसा सिलसिला जो भारतीय खाद्य निगम देश भर में चलाता है। हर वर्ष लगभग 130 लाख टन खाद्यान्न खरीदता है। यह खरीद सरकार द्वारा निश्चित मूल्यों पर की जाती है और यह मूल्य उचित और किसान को अधिक उत्पादन करने को प्रोत्साहन देने वाले होते हैं। 180 लाख टन की आधुनिक और वैज्ञानिक भण्डारण क्षमता में आप के लिए संचित सुरक्षित सूखे अनाज जो ऊंचे साइलो और देश भर में फैले सुनियोजित गोदाम समूहों में रखता है। देश भर में पूरे वर्ष में किये जाने वाले कार्य कलाप। यह निश्चित करने के लिए कि आप का थैला भरने के लिए हमेशा पर्याप्त अनाज उपलब्ध हो।



और आपके परिवार की उतनी ही चिन्ता करता है जितनी आप स्वयं करते हैं।



आपके परिवार का स्वास्थ्य

भारतीय खाद्य निगम को इसकी उतनी ही चिन्ता है जितनी आपको। इसका पता अच्छी किस्म के अनाज और भण्डारण में हर स्तर पर कड़ी गुण नियंत्रण व्यवस्था के रूप में देखने को मिलता है। जिसके लिए गुण मानक निर्धारित किये जाते हैं और उनकी कड़ाई से पालन किया जाता है। वास्तव में भारतीय खाद्य निगम गुणों का अत्यन्त ध्यान रखता है क्योंकि किसी अन्य खाद्य वस्तु की पूर्ति करने वाले की तरह इस पर भी खाद्यान्न मिलावट निरोधक अधिनियम लागू होता है। जब कभी आपको ऐसा लगे कि आप जो अनाज खरीद रहे हैं वह देखने भालने में इतना अच्छा नहीं है तो आप यह न सोचे कि यह घटिया किस्म का है। भारतीय खाद्य निगम कई किस्मों का अनाज खरीदता है जिनमें से कुछ प्राकृतिक रूप से चमकीली न हो या उनकी चमक खत्म हो गई हो। लेकिन हमेशा की तरह गुणवत्ता को एक जैसा बनाये रखने पर ध्यान दिया जाता है।

आपके परिवार का बजट

उपभोक्ता को खाद्यान्न की निर्बाध पूर्ति कैसे की जाये। यह भी अपने आप में एक कहानी है। विशाल परिवहन व्यवस्था के माध्यम से इस कार्य को ठीक प्रकार से पूरा करने की चेष्टा की जाती है। भारतीय खाद्य निगम प्रतिदिन कुशलतापूर्वक अनाज भेजने के लिए लगभग 2600 बड़ी लाइन और 300 छोटी लाइन के वैगनों का उपयोग करता है।

भारतीय खाद्य निगम परिवहन व्यय, मण्डी में चुकाये जाने वाले विभिन्न करों, भण्डारण लागत तथा बैंकों द्वारा ऋणों पर लिये जाने वाले शुल्क से आपको राहत दिलाता है। इनमें अधिकांश खर्चों को भारत सरकार उपभोक्ता सहायता राशि के जरिये पूरा करता है। जिससे आपको लागत मूल्य से कम कीमत पर उचित दर दुकानों से अनाज मिल सके और इसके फलस्वरूप आपका बजट संतुलित रहे।

खेतों से भण्डारण स्थलों पर तथा भण्डारण स्थलों से राज्य वितरण एजेंसियों (जो उचित दर दुकानों को अनाज पहुंचाती हैं) तक यह एक लम्बी यात्रा है। भारतीय खाद्य निगम गाइड के रूप में साथ रहता है। और अब गृहिणी इसके साथ अपनी चिन्ता बांट सकती है। भारतीय खाद्य निगम आपके परिवार की देखभाल करने में आपकी सहायता करता है।



भारतीय खाद्य निगम

राष्ट्र की सेवा में संलग्न

सुधा के यहां पहुंच गई. रामलाल से उस ने सिर्फ इतना ही कहा था कि वह दफ्तर के काम से एक हफ्ते के लिए अहमदाबाद जा रही है, पर उस ने सुधा को सब कुछ बता दिया.

और तीसरे दिन रात को सुधा ने सरला के घर फोन किया. संयोगवश फोन पर रामलाल ही थे. सुधा ने सीधासीधा प्रश्न पूछ लिया, "कहिए, जीजाजी, क्या हालचाल हैं?"

"सब ठीकठाक है."

"दीदी खंडाला से आ गईं?"

"खंडाला? नहीं तो... वह तो अहमदाबाद गई हैं."

"आप भी कमाल करते हैं जीजाजी. मैं और यह कल पुणे से अपनी कार में लौटते हुए कुछ देर के लिए खंडाला रुके थे. वहीं हमें दीदी मिल गईं, एक बहुत ही बांके और आकर्षक नौजवान की बांह में बांह डाले घूम रही थीं. उस से उन्होंने हमारा परिचय कराया. वह उन के दफ्तर का बास सुहास था."

"अच्छा!"

"हां, कह रही थीं कि दोतीन दिन के लिए सैर करने आई हैं. अगले दिन लौटने को बोल रही थीं. मैं ने सोचा, पता करूं. वह पहुंची या नहीं, क्योंकि कल आप सब को इधर बिट्टू की वर्षगांठ पर आना है."

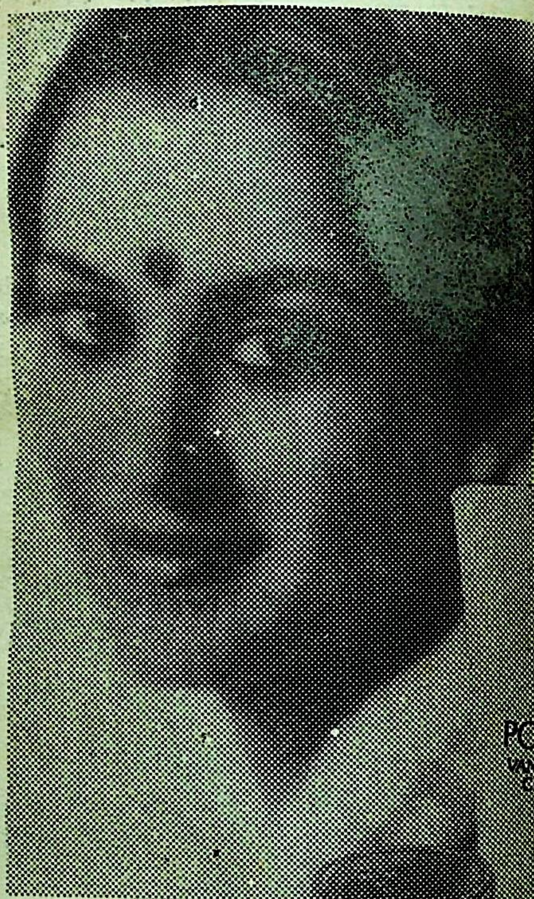
उधर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई.

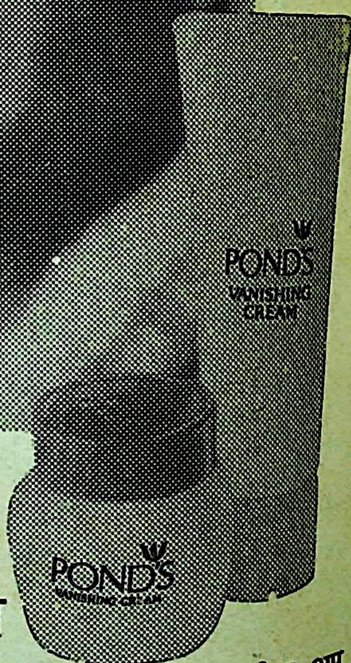
सरला सुधा की पीठ के पीछे खड़ी यह सारा तमाशा देख रही थी. अंदर ही अंदर उसे बड़ा मजा आ रहा था.

"हेलो, जीजाजी... हेलो... हेलो... लगता है, फोन बंद कर दिया है उन्होंने," कह कर सुधा ने रिसीवर नीचे रख दिया.

अगले दिन शाम को घर से कोई नहीं आया. बिट्टू की वर्षगांठ का तो बहाना था परिवार के सदस्यों को बुलाने का. सरला ने महसूस किया, इन चौबीस घंटों में युवावस्था की खोज में भटकने वाले राजेश के पिता की तबीयत साफ हो गई होगी. अतः

रूप सलोना त्वचा सुहानी
यही तो है मेरी बहुत दिनों की चाह





शुक्रिया
पॉण्ड्स
वैनिशिंग क्रीम

सही किस्म का हल्का मेक-अप
एक आदर्श पाउडर बेस
और मासूम त्वचा का निखार

POND'S

HTM-PIL-2647

अपनी योजना के अनुसार उस ने सुधा को साथ लिया और घर के लिए रवाना हो गई.

सुधा ने अपनी कार ले ली थी और वही चला रही थी.

"कहीं स्थिति जरूरत से ज्यादा विस्फोटक न हो जाए, इसलिए तुम अभी यहीं नीचे कार में प्रतीक्षा करो. जब मौका होगा तो मैं तुम्हें बुला लूंगी," कह कर सरला ने अपनी हलकी सी अटैची उठाई और लिफ्ट से अपने फ्लैट में पहुंच गई.

सुखद संयोग कि बच्चे शाम को शो देखने गए हुए थे. रामलाल पलंग पर औंधा मुंह किए पड़े थे. जैसे ही सरला शयनकक्ष में घुसी, रामलाल पलंग से उठे और तन कर, एकदम ठीक उस के सामने आ खड़े हुए. आंखों में क्रोध की ज्वाला, सारा शरीर थरथराता हुआ, होंठ फड़फड़ाते हुए, पर आवेश के मारे शब्द बाहर नहीं निकल रहे थे.

"बच्चे कहां हैं?" सरला ने पूछा.

"आ गईं?" उस के प्रश्न का उत्तर तो नहीं मिला. हां, साधिकार, भयभीत करने वाले स्वर में उस से यह प्रश्न पूछा गया था.

"तुम्हारे सामने हूं."

"कहो, अहमदाबाद का मौसम कैसा था?" गहरा व्यंग्य था रामलाल के स्वर में.

"मैं वहां गई ही नहीं."

"वहां तो तुम्हें जाना ही नहीं था. तुम्हें तो दूसरा हनीमून मनाने के लिए अपने यार सुहास के साथ खंडाला जाना था."

"ओह ! इस कंबख्त सुधा की बच्ची ने... उस से कितना कहा था कि इन को मत बताना, पर औरतों के पेट में तो कोई बात पच ही नहीं सकती," सरला ने निश्चित स्वर में कहा. उस ने कनखियों से रामलाल की ओर देखा. उन का चेहरा लिली के फूल की तरह सफेद पड़ा हुआ था.

"घर में बड़े बच्चे हैं और एक यह हैं... बूढ़ी घोड़ी, लाल लगाम. यह उम्र है इन की बदचलनी करने के लिए." रामलाल बड़बड़ा रहे थे.

"देखिए, मैं तो पतिव्रता स्त्री हूं. पति के पदचिह्नों पर ही चल रही हूं. राजेश की शादी कर के मुझे भी यह एहसास हुआ कि मैं बूढ़ी हो रही हूं... पर युवावस्था को कैसे प्राप्त किया जा सकता है, यह तरकीब तो तुम ने ही मुझे बताई थी... अभी ज्यादा वक्त भी नहीं गुजरा है, सिर्फ एक सवा महीना ही तो हुआ है."

"एक तो दुश्चरित्रता और ऊपर से..." कहतेकहते रामलाल रुक गए. बैठक के दरवाजे की चौखट पर कमर पर हाथ रखे, सुधा हंस रही थी—एक शैतानी से भरी हंसी.

"अरे, तू ऊपर आ गई?"

"हां, जब देर हो गई तो मैं ने सोचा, कहीं नाटक तीसरे महायुद्ध में न बदल जाए. बस, इसी लिए चली आई."

फिर दोनों बहनें खिलखिला कर हंस पड़ीं. उन की समवेत हंसी कोड़े बन कर रामलाल की पीठ पर बरस रही थी. उन्हें संपूर्ण स्थिति की भयावहता, वास्तविकता और अपनी भयंकर भूल का एहसास हो चला था. ●

भेड़ों का रखवाला सारस

सोवियत संघ में एक गड़रिए की भेड़ की रखवाली सारस करता है.

गड़रिए को यह सारस घायल अवस्था में एक चट्टान पर पड़ा मिला था. उस ने सारस की देखभाल की और स्वस्थ होने पर अब यह सारस उस की भेड़ों की देखभाल करता है.

सारस ने भेड़ों से मित्रता कर ली है और जब कभी कोई भेड़ या उस का बच्चा बाड़े से निकलता है तो यह पंख फैला कर और तेज स्वर में चिल्लाता है. इस आवाज को सुन कर भेड़ें वापस आ जाती हैं.

परिवार में सबके बालों की देखभाल करनी है? तो खास पारिवारिक शॅम्पू पर ही भरोसा रखिए.

पामोलिव.

पामोलिव शॅम्पू
रेग्युलर शॅम्पू या बालों के अतिरिक्त पोषण के लिए एग शॅम्पू



पामोलिव हर तरह के बालों के लिए बनाया गया है. यह उत्तम आधुनिक शॅम्पू बालों को साफ-सुथरा रखता है और बच्चों के बालों के लिए भी कोमल है. यह बालों को मुलायम, चमकीला और स्वस्थ बनाता है.

इतना ही नहीं, पामोलिव शॅम्पू की कीमत भी आपके बजट के अनुरूप है—और अपने किस्म के शॅम्पुओं में यह सबसे ज़्यादा किफायती भी है.

परिवार में सबके बालों की देखभाल करे... आपके बजट में भी आये.

GKGE.PS.7.HIN

पासा पलट गया



मेरा एक मित्र पत्रिकाओं में प्रकाशित वैवाहिक विज्ञापन के माध्यम से अकसर किसी न किसी लड़की के फोटो व विवरण मंगाया करता था.

एक दिन उस ने विज्ञापन देख कर अपनी जाति की एक लड़की का विवरण और फोटो मंगाया.

कुछ दिन बाद उस के पिताजी ने उसे बुला कर कहा, "बेटा, यह लो लड़की का फोटो जिस के लिए तुम ने लिखा था और यह रही उस की जानकारी." यह कह कर उन्होंने उसे एक फोटो व पत्र पकड़ा दिया.

फोटो देखते ही मेरे मित्र के पैरों तले जमीन खिसक गई क्योंकि फोटो उस की बहन की थी जिस के विवाह के लिए उस के पिताजी ने विज्ञापन दिया था.

—अरुणकुमार विश्वकर्मा (सर्वश्रेष्ठ)

*

मैं एक स्थानीय महाविद्यालय में क्लर्क के पद पर नियुक्त हो गया. शासकीय सेवा थी. अतः मुझे स्वास्थ्य की परीक्षा करवाने के लिए सरकारी चिकित्सालय भेजा गया. स्वास्थ्य परीक्षण के बाद प्रमाणपत्र के लिए मुझे चिकित्सालय के कार्यालय के अनेक चक्कर लगाने पड़े. मुझे स्वास्थ्य प्रमाणपत्र पूरे माह नहीं मिला. इसी लिए मुझे अपना वेतन भी नहीं मिला.

अंत में मैं ने मजबूरी में संबंधित कार्यालय के क्लर्क के पास पहुंच कर कुछ हरे नोट उस के सामने किए ही थे कि उस ने मुसकरा कर कहा, "इस की क्या जरूरत है?" कहते हुए मेज की दराज से मेरा स्वास्थ्य प्रमाणपत्र निकाल दिया. मैं हैरान था कि उस ने मुझे पूरे माह कितना उल्लू बनाया.

कुछ सोचते हुए एक ही झटके से वह प्रमाणपत्र अपने हाथ में लेते हुए मैं उठ खड़ा हुआ और रुपए जेब में रखते हुए मैं ने कहा, "आप ठीक कहते हैं, इस की क्या जरूरत है." और दूसरे ही क्षण मैं कार्यालय के बाहर था.

बाद में एम.बी.बी.एस. करने के बाद सहायक के पद पर जिस चिकित्सालय में मैं पहुंचा, वहां कार्यालय में क्लर्क के पद पर वही व्यक्ति था. मैं ने सहज स्वर में पूछा, "क्यों, भाई, पहचाना?" उत्तर में वह सिर नीचा किए हुए खड़ा था. —सुतीक्षण पांडे

*

अपने बच्चों के साथ मैं सिकंदराबाद में एक परिचित के यहां गया. स्टेशन से उस के घर जाने के लिए बड़ी मुशकिल से एक तिपहिया स्कूटर वाला 15 रुपए में तैयार हुआ. मीटर के हिसाब से वह चलने को तैयार नहीं हुआ.

सइदाबाद पहुंचने पर मैं ने थाने के स्टाफ क्वार्टर की तरफ चलने को कहा तो ड्राइवर ने थाने में प्रवेश करते ही झट से मीटर चालू कर दिया. मैं अभी सामान उतार ही रहा था कि मेरे परिचित सब इंस्पेक्टर आ गए. अभिवादन के बाद उन्होंने शिष्टाचारवश स्वयं किराया देने के लिए आटो वाले से मीटर देख कर पैसा बताने को कहा. अब ड्राइवर की दशा देखते ही बनती थी. मीटर में एक रुपया 30 पैसे थे. उन्होंने एक रुपया 30 पैसे दे दिए. स्कूटर वाला चुपचाप पैसे ले कर चला गया.

—स.र. अहमद ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ अनुभव पर 60 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

सवाल

कहानी • मो. मुबीन



आज उसे फिर मार पड़ी थी.

अम्मी की मार खा कर चुपकेचुपके रोती हुई वह चुपचाप कमरे में आ कर बैठ गई और अपने दोनों हाथों से अपना मुंह छिपा कर आंसू बहाने लगी.

इस बीच बबलू और गुड्डी आ कर उसे चिढ़ा गए. उन्हें चिढ़ाता देख उसे इतना क्रोध आया कि मन में तो आया कि समीप की लोहे की सलाख उठा कर बबलू के सिर पर दे मारे.

परंतु फिर वह सहम गई. उसे लगा, यदि उस ने गुड्डी अथवा बबलू को हाथ भी लगाया तो अम्मी मारमार कर उस का भुरता बना देंगी. उस ने अपना इरादा बदल दिया और चुपचाप बैठी आंसू बहाती रही.

उस का दोष केवल इतना था कि जो वस्तु उस को नहीं दी जाती थी, वह उस ने चुरा कर प्राप्त कर ली थी और जब वह उसे पाने का प्रयत्न कर रही थी, उसी समय बबलू की नजर उस पर पड़ गई थी. बबलू ने तुरंत जा कर अम्मी से कह दिया कि मुन्नी दूध चुरा कर पी रही है.

उसी समय आगबबूला हो अम्मी वहां आ धमकीं और उस के चेहरे पर तमाचों की बौछार कर दीं.

"क्यों री! दूध चुरा कर पी रही है! नालायक... अब यह काम भी सीख लिया? ...

कलमुंही... मनहूस... पाजी..."

और किसी तरह वह अम्मी से बच कर आई. उसे पिटता देख कर गुड्डी और बबलू तालियां बजाते रहे और छोटा मुन्ना आश्चर्य से देखता रहा.

वह बहुत देर तक सोचती रही, 'आखिर मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया जाता है. बबलू, गुड्डी और मुन्ना को तो अम्मी और अब्बा दोनों ही कितना प्यार करते हैं. क्या मैं उन की बेटी नहीं हूं? परंतु अम्मी तो स्वयं कहती हैं कि कहां से मैं उन के घर आ गई.'

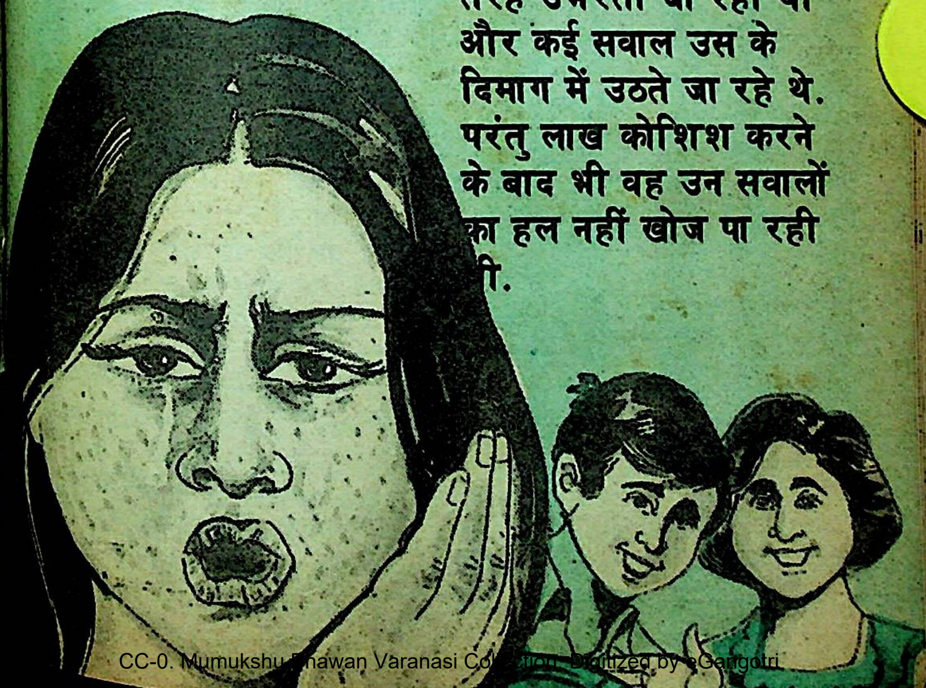
एक बार डरतेडरते उस ने पड़ोस की रजिया खाला से पूछा था तो उन्होंने भी उसे प्रेम से समझा कर कहा था, "नहीं बेटी, तू भी बबलू, गुड्डी की तरह अम्मी की ही बेटी है. जिस तरह अल्ला मियां ने तुम्हारी अम्मी को बबलू और गुड्डी दिए, उसी प्रकार तुम्हें भी दिया था."

"फिर वे इतने गोरे क्यों हैं? मैं काली क्यों हूं? मेरे मुंह पर ये दाग क्यों हैं," कहतेकहते उस का मन भर आया था.

"सब भाग्य का खेल है, बेटी," खाला ने कहा था, "जब तू छोटी थी न, तब तू भी मुन्ने की तरह ही गोरीचिट्टी, गोलमटोल थी. परंतु बचपन में तुम्हें एक बीमारी हो गई और चेचक से तुम्हारा चेहरा दागदार हो गया. रंग भी काला पड़ गया. तुम उस बीमारी से किसी तरह बच तो गई, परंतु तुम्हारी यह हालत हो गई. अब तुम्हें क्या बताऊं, तुम्हारे अच्छा होने के लिए उन दिनों तुम्हारे मांबाप ने क्या नहीं किया. वे तुम्हारे लिए कितना रोते थे. तुम्हारे अच्छा होने के बाद तो तुम्हारी अम्मी तुम्हें एक क्षण के लिए भी अपनी आंखों से ओझल नहीं होने देती थीं. फिर गुड्डी आ गई. बस इसी कारण तुम्हारी अम्मी का ध्यान तुम से हट गया."

खाला के बताने के बाद उसे विश्वास हो गया था कि वह भी अम्मी की ही बेटी है. परंतु एक बात उस के मस्तिष्क में बैठ गई

परिवार से मिली उपेक्षा मुन्नी के दिल में नासूर की तरह उभरती जा रही थी और कई सवाल उस के दिमाग में उठते जा रहे थे. परंतु लाख कोशिश करने के बाद भी वह उन सवालों का हल नहीं खोज पा रही थी.



थी कि गुड्डी के कारण ही अम्मी का प्यार उसे से छिन गया है. जो हुआ गुड्डी के कारण ही हुआ.

इसलिए वह गुड्डी से ईर्ष्या करने लगी थी. बातबात पर उस से झगड़ा करती. वह सोचती, यदि गुड्डी घर में नहीं रहेगी तो अम्मी फिर से उसे पहले के समान चाहने लगेंगी.

परंतु इस का परिणाम उलटा होता. वह जब भी गुड्डी को छेड़ती, उसे कुछ कहती, वह जा कर अम्मी से कह देती. अम्मी क्रोध में भरी हुई आतीं और उस की पिटाई आरंभ कर देतीं.

"क्यों री चुड़ैल, मेरी गुड्डी को तू ने मारा? ठहर, अभी तेरी टांगें तोड़ती हूं."

और वह चुपचाप अम्मी की मार खाती. मार खाने की वह आदी सी हो गई थी. परंतु यह मार भी गुड्डी, बबलू, मुन्ना के प्रति उस के मन की जलन कम नहीं करती थी.

गुड्डी और बबलू स्कूल जाते थे. वह बबलू से छोटी और गुड्डी से बड़ी थी. उस का भी मन चाहता था कि वह भी स्कूल जाए और बबलू और गुड्डी के समान क.ख़.ग. पढ़े. ए.बी.सी. की रंगीन पुस्तकें पढ़े.

परंतु जब उस ने अम्मी से यह कहा तो अम्मी उस पर बरस पड़ीं, "तू... काली मैना स्कूल जाएगी? तो घर के कामों में मेरा हाथ कौन बंटाएगा? मुन्ने को कौन संभालेगा? तेरे पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं. काली... तू पढ़ कर क्या करेगी?" और वह मन मसोस कर रह जाती.

जब बबूल और गुड्डी स्कूल जाते तो वह घर की सफाई करती और झूठे बरतन साफ करती या मुन्ने को संभालती. गुड्डी और बबलू पड़ोसियों के बच्चों के साथ खेलते तो वह चुपचाप मुन्ने को गोद में लिए हसरत से उन्हें देखती रहती. घर में यदि कोई मेहमान या मिलनेजुलने वाला आ जाता तो उसे अम्मी का कड़ा आदेश था कि वह सामने न आए. जब आने वाला बबलू या गुड्डी को समीप बैठा कर प्यार जताता तो उस का भी मन चाहता कि वह उसे भी प्यार जताए. और जब वह अम्मी का आदेश तोड़ कर उस के सामने चली जाती तो वह उसे देख कर आश्चर्य में पड़ जाता. जब उसे पता चलता कि वह भी अम्मी की ही संतान है तो वह उस से प्यार तो न दिखाता, हां उस का व्यंग्य का तीर उस के हृदय को अवश्य चीरता गुजर जाता.

"कितनी अजीब बात है. यह चारों बच्चे आप ही के हैं. परंतु ये तीनों कितने गोरेचिट्टे और सुंदर हैं, परंतु यह लड़की काली... बिलकुल इन से अलग."

उस समय अम्मी अपने होंठ काट रह जातीं और उस के जाते ही उसे आदेश तोड़ने की सजा देतीं.

अब्बा का व्यवहार उस के प्रति इतना सख्त नहीं था. परंतु वह भी उसकी बातों पर अधिक ध्यान नहीं देते थे. बबलू, गुड्डी को ही अधिक चाहते थे.

इस प्रकार वह सारे घर से स्वयं को अकेली ही अनुभव करती थी.

घर में सोते समय सब को एकएक गिलास दूध दिया जाता था. दूध गरम कर के सब को देने का काम भी उसी का था.

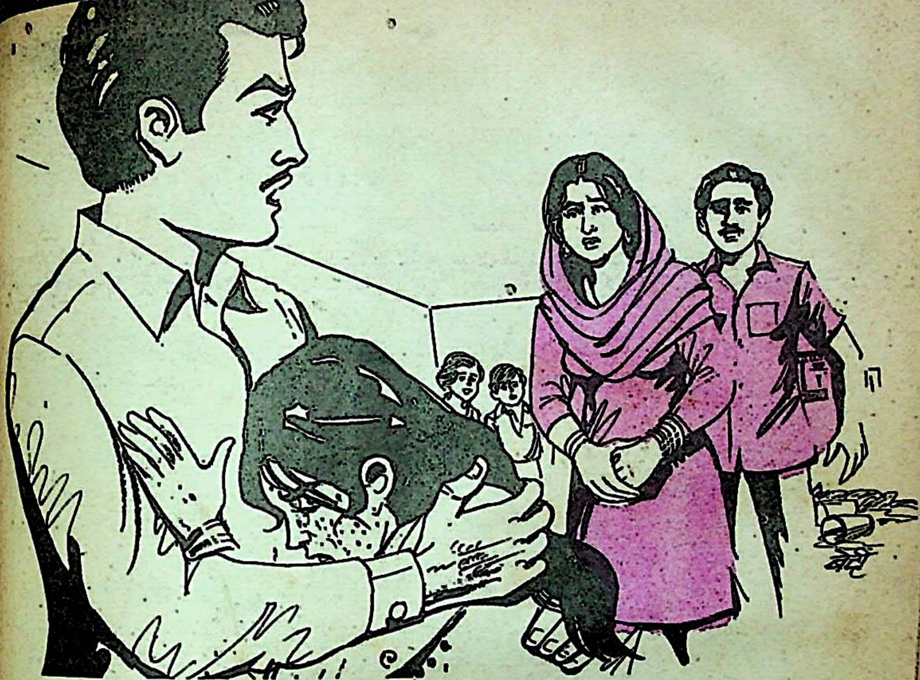
यदि गुड्डी या बबलू मांगते तो उन्हें और दूध देने का अम्मी ने आदेश दे रखा था.

परंतु उस पर बंदिश थी. वह अपने हिस्से से एक बूंद भी अधिक दूध नहीं ले सकती थी. उस का लाख मन ललचाता, परंतु वह मन मार कर रह जाती थी.

उस दिन उस ने सब को दूध देते हुए अपने लिए थोड़ा सा दूध छिपा कर रख दिया. वह गुड्डी ने देख लिया और वही हुआ जो होना था.

रात गए तक वह रोती रही. फिर सो गई. दिन बीतते गए, परंतु आठदस वर्ष के उस के अबोध मस्तिष्क में वही सवाल चक्कर काटता रहा कि उस के साथ इतना उपेक्षा का व्यवहार क्यों किया जाता है. वह उस का जवाब नहीं ढूंढ़ सकी.

उस की केवल एक सहेली थी-



"देखा भाभी, तुम्हारे उपेक्षित व्यवहार ने मुन्नी को किस हद तक विद्रोही बना दिया कि वह हमारे बच्चों के जान की दुश्मन बन गई," चाचा ने कहा.

कमला. वह उसी के साथ खेलती थी और अपने दुख कमला को बता कर हलका कर लेती थी.

कमला को उस के मांबाप बहुत प्रेम करते थे.

आखिर वह कमला से पूछ बैठी, "मुझे मेरी अम्मी व अब्बा क्यों प्रेम नहीं करते?"

"क्योंकि वे बबलू व गुड्डी को प्रेम करते हैं."

"वे उन्हें क्यों प्रेम करते हैं?"

"क्योंकि वे तुम्हारी तरह काले नहीं हैं," कमला बोली.

"तुम्हारे मांबाप तुम्हें क्यों प्यार करते हैं?"

"क्योंकि मैं अपने मांबाप की इकलौती बेटी हूं. यदि तुम भी अपने अम्मी व अब्बा की इकलौती बेटी होती तो वे भी तुम्हें मेरे समान प्यार करते."

"परंतु बबलू व गुड्डी का क्या किया जाए?"

"यदि वे सब मर गए तो फिर तुम्हारे अम्मी व अब्बा तुम्हें मेरी तरह ही चाहेंगे," कमला मासूमियत से बोली.

कमला ने तो अनजाने में कह दिया, परंतु मुन्नी के मस्तिष्क में दूर तक रोशनी फैल गई.

उस के अबोध मस्तिष्क में एक ही बात बैठ गई, 'यदि सब मर जाएं तो अम्मी व अब्बा मुझे बहुत प्यार करेंगे: फिर मेरे साथ उपेक्षा का व्यवहार नहीं होगा. परंतु वे मरेंगे किस तरह?'

एक नया सवाल उस के मस्तिष्क में नाचने लगा.

उन्हीं दिनों उस के चाचा उन के घर आए. वह सब के साथ उसे भी प्यार करते थे. कभी अम्मी उस पर बिगड़ती तो वह अम्मी को ही समझाते, "यह ठीक नहीं, भाभी. बच्चों के साथ उपेक्षा का व्यवहार उन्हें विद्रोही बना देता है. केवल शक्लसूरत के आधार पर उन से भेदभाव का व्यवहार नहीं करना चाहिए. आखिर वह भी आप का ही खून है."

जब अनवर चाचा उस का पक्ष लेते तो उसे बहुत अच्छा लगता था. और वह उन के इर्दगिर्द मंडराती रहती थी. एक दिन वह उन के कमरे में गई तो उस ने देखा, वह ज़मीन पर एक पाउडर छिड़क रहे हैं.

"यह क्या है, चाचा?" उस ने पूछा.

"यह खटमल मारने का पाउडर है, बेटी," चाचा बोले, "इस को खाते ही खटमल मर जाते हैं."

"यदि इसे हम खा लें तो?" उस ने पूछा.

"हम भी मर जाएंगे."

"सच?" चाचा की बात सुन कर उस की आंखें चमकने लगीं.

"हां." उस की अबोधता देख कर चाचा हंस पड़े. परंतु उस के मस्तिष्क में तो फिर उजाले फैल गए थे. उसे कमला की बात याद आई, "यदि वे सब मर जाएं तो फिर तुम्हारे अम्मी व अब्बा तुम्हें बहुत प्यार करेंगे."

'मैं उन्हें खटमल मारने का यह पाउडर दे कर मार डालूंगी,' उस ने सोचा, 'फिर कोई नहीं रहेगा. मैं ही रह जाऊंगी तो अम्मी व अब्बा मुझ से प्यार करने लगेंगे.'

उस ने चोर दृष्टि से देखा; चाचा ने पाउडर कहां रखा है और चली आई.

गुड्डी, बबलू व मुन्ना को किस तरह पाउडर दिया जाए, यह उस की समझ में आ गया था.



रात खाने के बाद जब अम्मी ने दूध गरम कर के उसे बच्चों को देने को कहा तो उस से पहले ही वह चाचा के कमरे से पाउडर चुरा लाई थी. उस ने दूध में पाउडर मिला दिया और दूध गरम करने लगी. दूध गरम कर के ठंडा होने के लिए उस ने नीचे रखा. वह संतुष्ट थी जैसे ही वे यह दूध पिएंगे, मर जाएंगे और जिस प्रेम से वह अभी तक वंचित रही है, उसे वह प्रेम मिल जाएगा.

उसी समय चाचा ने उसे पुकारा तो वह दूध उसी तरह खुला छोड़ कर चाचा के

जब वह जीवन में पहली बार हंसा

जीवन में कई बार ऐसे अवसर भी आते हैं कि हम हंसतेहंसते दोहरे हो जाते हैं, लेकिन म्यूनिक (पश्चिमी जरमनी) में एक व्यक्ति ऐसा है जिसे अपने जीवन में लगातार 44 वर्षों तक बिना हंसे रहने को मजबूर होना पड़ा.

ओटो मायर जैक नामक इस व्यक्ति के साथ अजीब दिक्कत थी कि लोग कितनी ही गप्पें हांकें, चुटकुले सुनाएं, वह अपने चेहरे पर मुसकराहट तक नहीं ला पाता था. इस का कारण यह था कि उस के मुंह में हंसने वाली पेशी ही नहीं थी. इस से उसे हंसने में बेहद कष्ट होता था और रक्तचाप व नब्ज की गति तेजी से गिर जाती थी.

लेकिन ओटो मायर जैक के जीवन में तब बहार आ गई जब कि म्यूनिक के ग्रोसहेडने क्लिनिक के प्रोफेसर वालेविन कार्ल ने उस का आपरेशन किया और उसे हंसने वाली पेशी लगा दी. यूरोप में ऐसा आपरेशन पहली बार ही हुआ है.

ओटो के जीवन में यह क्रांतिकारी परिवर्तन 38 वर्षीया एक स्त्री के कारण संभव हुआ. जहां ओटो हंस नहीं पाता था, वहीं इस स्त्री को बचपन से ही इतनी हंसी आती थी कि उस के लिए हंसी रोकना मुश्किल हो जाता था. ऐंटोनी नामक इस महिला के साथ प्रकृति ने एक ऐसा मजाक किया कि जब वह टेलीविजन पर एक मेले का कार्यक्रम देख रही थी तो उसे इतनी हंसी आई कि उस का दम ही निकल गया. मृत्यु के बाद उस की पेशियां ओटो को लगा दी गईं और वह हंसने लगा.

जल गया ?



फ़ौरन लगाइए बरनॉल–
जले के जख़्म का ख़ास इलाज



जले के जख्म में और दूसरे जख्मों में फ़र्क है. जलन की पीड़ा बहुत तेज़ होती है. जलने से फफोले पड़ जाते हैं. इसके लिए आपको चाहिए जले के जख्म का ख़ास इलाज बरनॉल ऐंटिसेप्टिक क्रीम. बरनॉल फ़ौरन ठंडक और आराम पहुँचाती है. फफोले नहीं पड़ने देती. जले के जख्म को जल्द अच्छा करनेवाले सभी ज़रूरी तत्व बरनॉल में हैं.

बरनॉल हमेशा घर में रखिए.

बरनॉल

जले के जख़्म का ख़ास इलाज

BC. 5641

कमरे में आई. अभी वह चाचा से बातें ही कर रही थी कि रसोईघर से बिल्ली के चीखने की आवाज आई.

"अरी मुन्नी," अम्मी की आवाज उभरी, "बिल्ली की आवाज रसोई से आ रही है. देख, कहीं वह दूध तो नहीं पी रही है."

उस का हृदय धक से रह गया. वह रसोई में आई. बिल्ली ने दूध पी लिया था और वह चकरा रही थी और बुरी तरह चीख रही थी.

बिल्ली की चीखें सुन कर सारा घर जमा हो गया. आखिर बिल्ली चीखचीख कर मर गई.

"हाय!" अम्मी बोलीं, "यह बिल्ली कैसे मर गई?"

"इस ने शायद दूध पिया था, परंतु दूध पीने से यह मर कैसे गई?" कहतेकहते अनवर चाचा बैठ कर दूध के बरतन को देखने लगे और फिर चीख कर बोले, "अरे, इस दूध में तो खटमल का पाउडर मिला हुआ है."

"क्या?" सब की चीखें निकल गईं, "दूध में पाउडर किस तरह आया?"

अचानक वह फूटफूट कर रोने लगी, "मैं ने मिलाया था."

उस की बात सुनते ही सब चौंक पड़े. अम्मी उसे मारने के लिए दौड़ीं तो चाचा ने उन्हें रोक कर उसे लिपटा लिया.

"ठहरो, भाभी," वह बोले, "तुम ने ऐसा क्यों किया, बेटी?"

"ताकि सब मर जाएं," वह सिसकती हुई बोली, "कोई मुझे उन के होते प्यार नहीं करता. वे मर जाएंगे तो सब मुझे प्यार करने लगेंगे."

उस की बात सुन कर सब सकते में आ गए.

"देखा, भाभी?" चाचा उस की पीठ सहलाते हुए अम्मी से बोले, "तुम्हारे उपेक्षापूर्ण व्यवहार ने मुन्नी को किस हद तक विद्रोही बना दिया था कि वह अपने हिस्से का प्यार प्राप्त करने के लिए दूसरे बच्चों की जान की दुश्मन बन गई थी."

अम्मी आश्चर्य से अपलक उसे घूर रही थीं, अब्बा का चेहरा पीला पड़ गया था.

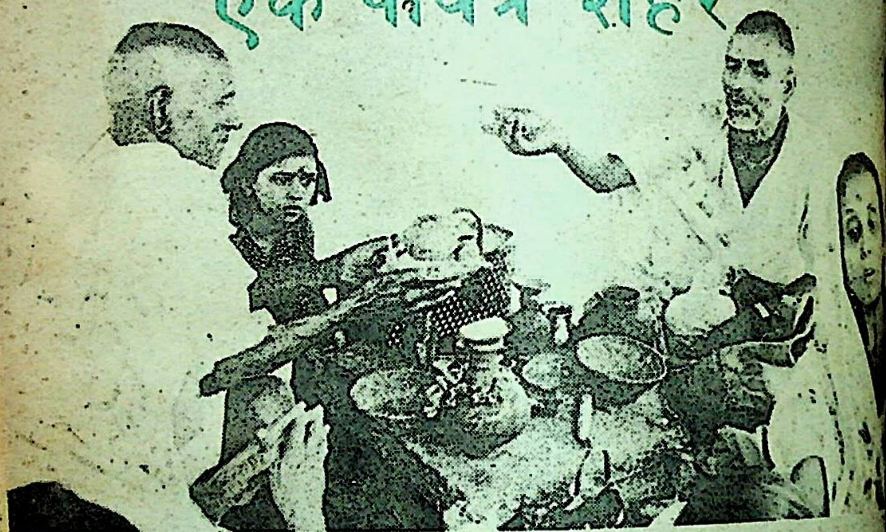
"मांबाप यदि अपनी संतान के रंगरूप व गुण के आधार पर भेदभाव और उपेक्षा का व्यवहार करते हैं तो वे अपनी नासमझी से अपनी ही राह में कांटे बो लेते हैं," चाचा बोले, "अबोध मस्तिष्क अपने साथ उपेक्षापूर्ण व्यवहार कब तक सहन करता? उस के मष्तिष्क में बस एक ही सवाल घूमता रहता है कि उस के साथ ही ऐसा व्यवहार क्यों किया जाता है और यदि ऐसे में उसे उस सवाल का गलत भी जवाब मिल जाता है तो वह अपने हिस्से का प्यार पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाता है. जिस तरह आज मुन्नी ने किया. भाभी, आप बहुत बड़ी गलती पर थीं. आज यदि किसी को कुछ हो जाता तो इस का सारा दायित्व आप पर आता."

चाचा की यह बात सुनते ही अम्मी की आंखों से आंसुओं की धारा फूट पड़ी. ●

सरिता के स्तंभों के बारे में सूचना

• सरिता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजते समय स्पष्ट और सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. भेजी गई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में, किंतु रोचकता लिए होनी चाहिए.

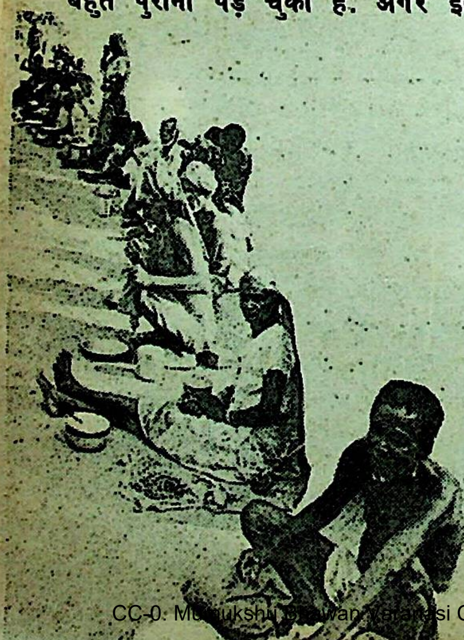
वाराणसी
गंदगी के सैलाब में डूबा एक पवित्र शहर



वाराणसी के बारे में यह कहावत अकसर सुनने को मिलती है कि 'रांड, सांड, सीढ़ी, संन्यासी,' इन से बचे तो भोगे काशी.' पर अब यह कहावत बहुत पुरानी पड़ चुकी है. अगर इसे संशोधित रूप में इस तरह कहा जाए कि 'गंदगी, सड़कें, सांड, संन्यासी, इन से बचे तो भोगे काशी' तो ज्यादा उपयुक्त होगा.

वास्तव में हिंदुओं का यह 'पवित्र' शहर सांडों, पंडों व तथाकथित साधुसंन्यासियों से भी ज्यादा यदि किसी समस्या से त्रस्त है तो वह है– यहां चारों तरफ छाई गंदगी व बुरी तरह से टूटी हुई सड़कें. सब से आश्चर्यजनक बात यह है कि सब से ज्यादा गंदगी मंदिरों व गंगा नदी के घाटों पर दिखाई देती है.

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने गंगा को संसार की सब से अधिक प्रदूषित नदी कहा है और कोई भी व्यक्ति वाराणसी के घाटों को देख कर सहज ही इस बात से सहमति व्यक्त करेगा. यदि 'पवित्र' शब्द का अर्थ स्वच्छता है तो पवित्र नगरी कही जाने वाली वाराणसी में इस का अर्थ एकदम उलटा है.

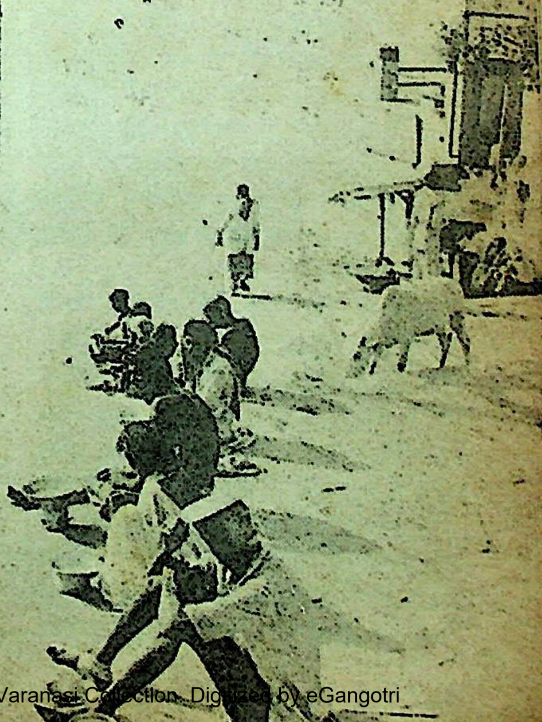


लेख • विवेक सक्सेना

हां, यदि इस का अर्थ धार्मिक स्थल है तो अलग बात है. धर्म के ठेकेदार किस तरह मंदिरों व घाटों की दुर्गति कर रहे हैं, इस का सब से ज्वलंत उदाहरण वाराणसी में देखने को मिलता है.

वाराणसी के पंडों के अनुसार गंगा नदी के किनारे पर स्थित घाटों की संख्या लगभग 350 है, जब कि प्रामाणिक तौर पर इन की संख्या 85 ही बताई जाती है. घाटों तक पहुंचने से पहले काफी सीढ़ियां उतरनी पड़ती हैं. इन सीढ़ियों पर कतार में दो साल के बच्चों से ले कर 70-80 साल तक के बूढ़े भिखारी बैठे रहते हैं. इन को भीख में देने के

सदियों से पवित्रता का जामा पहने वाराणसी शहर आज गंदे नालों, टूटी सड़कों और तथाकथित पंडों के कारण अपनी पहचान खोता जा रहा है. पर सब जानते हुए भी राज्य सरकार चुप क्यों है?





एक मंदिर में शिवलिंग के पास ही गंदगी फैलाती हुई वछिया.

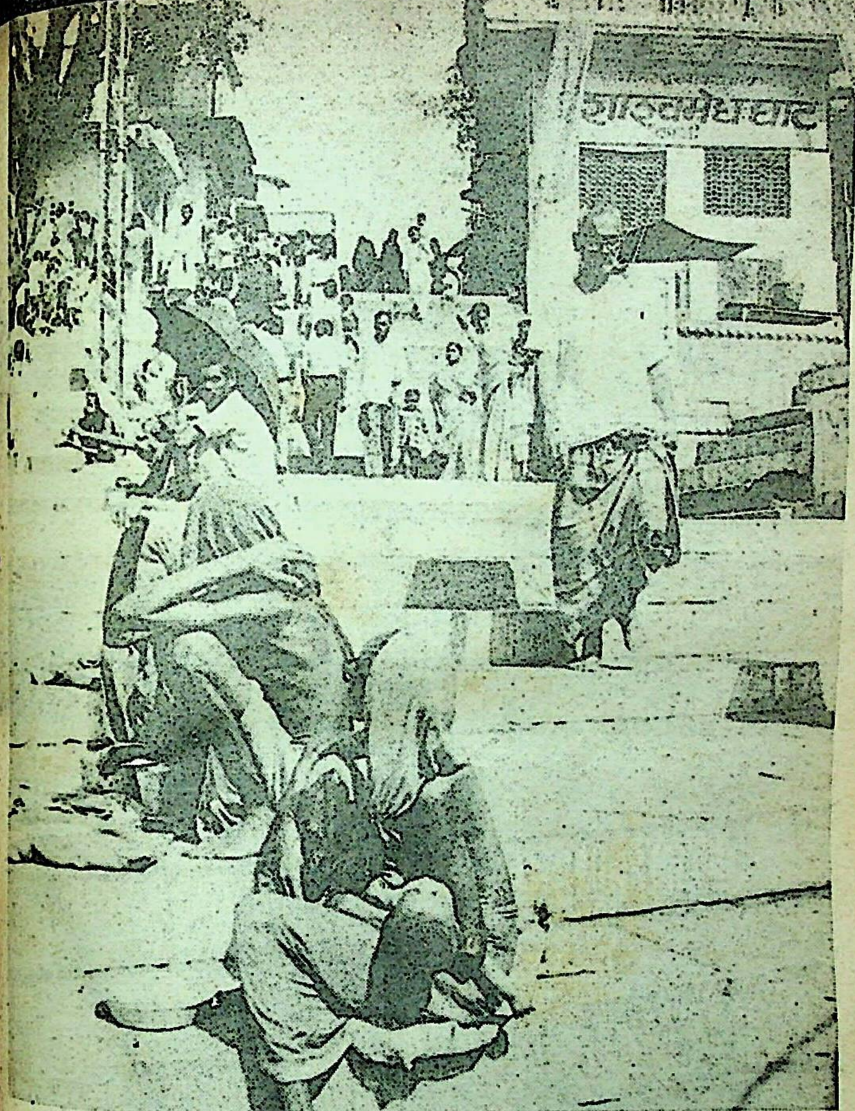
लिए सामने की दुकानों पर दो, तीन व पांच पैसे के सिक्के बिकते हैं.

ये भिखारी बहुत चालाक हैं. अगर कोई इन की फोटो भी खींचना चाहे तो ये लोग हल्ला मचाने लगते हैं और पैसे की मांग करते हैं. पैसा मिल जाने पर ही फोटो खींचने देते हैं अन्यथा मारपीट पर उतारू हो जाते हैं. 90 फीसदी भिखारी हृष्टपुष्ट हैं. प्रत्येक भिखारी की औसत दैनिक आय 20 से 35 रुपए तक है.

यहां का सब से प्रसिद्ध घाट दशाश्वमेध घाट है, जहां पर भक्तों की सब से ज्यादा भीड़ रहती है. यहां लोग न केवल नहातेधोते हैं, बल्कि बाहर से आए लोग विशिष्ट अवसरों पर उपयोग के लिए 'पवित्र' गंगा जल भी भर कर ले जाते हैं. इस घाट का जल कितना पवित्र है, इस का अंदाजा केवल इस बात से लगाया जा सकता है कि इस से केवल 15 फुट की दूरी पर एक नाला है जिस में पूरे शहर की गंदगी बहती है. उस से प्रवाहित होने वाला मलमूत्र यहीं गंगा में मिल जाता है.

इन सभी घाटों पर महिलाओं के लिए न तो अलग से नहाने के स्थान का कोई प्रबंध है और न ही किसी को इस की आवश्यकता महसूस होती है. केवल एक स्थान पर सिंचाई विभाग द्वारा टीन के शेड बना कर महिलाओं के नहाने की व्यवस्था की गई है, पर वहां शायद ही कोई महिला नहाती होगी.

गांवों से आने वाली और एक फुट तक घूंघट डालने वाली महिलाओं को यहां अर्धनग्न हो कर नहाने में कोई शर्म महसूस नहीं होती. पुरुष भी उन के साथ ही मुश्किल से छः इंच की दूरी पर केवल लंगोट पहन कर नहाते हैं और अकसर वे लंगोट भी उतार देते हैं. नहाते समय महिलाओं के विभिन्न अंग स्पष्ट दिखाई देते हैं, पर न तो उन्हें इस बात की कोई चिंता होती है और न ही उन के साथ नहा रहे पुरुषों को ही. यह लगता है कि



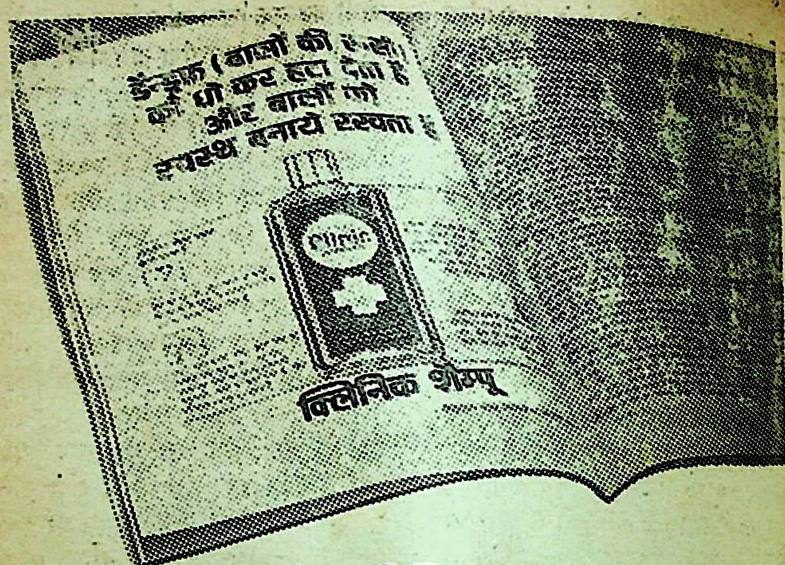
दशाश्वमेध घाट : भिखारियों के जमघट का स्थान.

वे स्त्रियों के बीच इस तरह नहा कर कोई अनुचित काम कर रहे हैं.

स्त्रियों विशेषकर युवतियों को नहाते देख कर वहां बहुत सारे मनचले भी इकट्ठे हो जाते हैं. कोईकोई मनचला घाट पर ही खड़ेखड़े पानी में पेशाब कर देता है. घाट पर सड़ी हुई फूलमालाएं तैरती रहती हैं और इन्हीं के बीच लोग अपने पापों को धोते रहते हैं.

दशाश्वमेध घाट से थोड़ी दूर उस के दूसरी ओर भी एक गंदा नाला बहता है और उस का पानी गंगा नदी में आ मिलता है. यह गंदा नाला क्षेमेश्वर व चौकी घाट के बीच में स्थित है. चौसट्टी घाट व राजामहल घाट पर मुसलमानों को नहाने की छूट है. यह घाट इन लोगों के लिए आरक्षित कर दिया गया है..

राजामहल-घाट पर चार पेशाबघरों



लेकिन
हठी और ज़ोरदार डैन्ड्रफ़ के लिए आपको चाहिए क्लिनिक से भी अधिक शक्तिशाली शैम्पू

नया

क्लिनिक स्पेशल



हम जानते हैं कि क्लिनिक आपका मनपसंद शैम्पू है, क्योंकि अपने डैन्ड्रफ़ पर इसका असर आपने देखा है. लेकिन हम यह भी जानते हैं कि कुछ लोगों के डैन्ड्रफ़ बहुत ही ज़ोरदार और हठी किस्म के होते हैं. इसके लिए ही हमने एक ऐसा खास नुसखा तैयार किया है जो ज़ोरदार और हठी किस्म के डैन्ड्रफ़ को भी रोकने में सहायता करता है. क्लिनिक से भी ज्यादा प्रभावशाली —क्लिनिक स्पेशल.
यानी कि दो तरह के क्लिनिक. सामान्य क़िस्म के डैन्ड्रफ़ के लिए क्लिनिक. जोरदार और हठी किस्म के डैन्ड्रफ़ के लिए क्लिनिक स्पेशल. इन दोनों की मदद से आप किसी भी प्रकार के डैन्ड्रफ़ पर क़ाबू पा सकते हैं.

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पादन

का निर्माण हो रहा है और इन से बहने वाला मलमूत्र भी सीधे वहीं घाट पर गंगा नदी में मिलेगा. पास में ही धोबी घाट है, जहां गंदे पानी में धोबी कपड़े धोते नजर आते हैं. यह गंदा पानी भी बह कर दशाश्वमेध घाट व दूसरे घाटों की ओर जाता है.

इन सभी घाटों पर सांडों के साथसाथ गधे भी टहलते नजर आते हैं, जो मलमूत्र कर के वहां गंदगी फैलाते हैं. हरिश्चंद्र घाट पर मुरदे जलाए जाते हैं. जहां ये शव जलाए जाते हैं, वह स्थान नदी के साथ ही है. जब यह लेखक इस घाट पर पहुंचा, उस समय एक चिता जल रही थी और दूसरी चिता में शव रखा हुआ था, जिसे आग तो दे दी गई थी पर वह ठीक से जल नहीं रही थी. मृतकों के रिश्तेदार वहां से काफी दूर बैठे थे, जो शव ठीक से नहीं जल रहा था, उस के पैर चिता के बाहर निकले हुए थे.

तभी वहां उस घाट का एक व्यक्ति आया और उस ने तेजी से जल रही चिता में से कुछ लकड़ियां निकाल कर दूसरी चिता में रखे शव के पैरों पर रख दीं व उस में से बिना जली लकड़ियां निकाल लीं. लेखक की नाव के मल्लाह ने बताया कि थोड़ी देर में जब पैर जल कर नीचे गिर जाएंगे तो उन्हें भी चिता के बीच में डाल दिया जाएगा. जो लोग लाश के पूरी तरह जले बिना ही वहां से चले जाते हैं, उन के द्वारा लाए गए शव की चिता में से लकड़ियां निकाल ली जाती हैं व अधजला शव पानी में बहा दिया जाता है.

पंडों का तिकड़म

वाराणसी में पंडेपुजारी भी लोगों को फंसाने में खूब व्यस्त दिखाई देते हैं. लोगों को फंसाने के उन के तरीके अलगअलग होते हैं, जिन में गोदान, अश्वदान व आरपार की माला चढ़ाना भी शामिल हैं. यहां आने वाले बहुत से लोग घाट के एक सिरे से ले कर दूसरे सिरे तक एक डोरी चढ़ाते हैं, जिस में दोदो फुट की दूरी पर फूल लगे होते हैं. इसे ही आरपार की माला कहते हैं.

ऐसा करने के लिए घाट में एक ओर डोरी का एक सिरा बांध दिया जाता है और बाकी डोरी ले कर पंडा नाव में बैठ कर घाट के उस पार चल देता है. दूसरे किनारे पर जा कर वह उस के दूसरे सिरे को वहां बांध देता है. यह माला ग्राहक की सामर्थ्य के अनुसार उसे 21 रुपए से ले कर 151 रुपए तक में बेची जाती है. बाद में यह डोरी फिर खोल कर नए ग्राहक को बेच दी जाती है.

घाट पर ही छोटेछोटे मंदिर बने हुए हैं, जहां गोदान की रस्म अदा की जाती है. पंडे बछियों को शिवलिंग के साथ बांध देते हैं. मंदिर में ही उन का चारा पड़ा होता है. बछिया शिवलिंग के पास ही गोबर व पेशाब कर के गंदगी फैलाती रहती है. यहां सवा रुपए से ले कर 1,000 रुपए तक में गोदान होता है. एक मिनट के लिए बछिया की पूंछ पकड़ा कर पंडा मंत्र बोलता है और इस प्रकार स्वर्ग के भ्रम में पड़े अंधविश्वासी का तुरंत ही मृत्यु के बाद असीम आनंद के उस कल्पना लोक में जाने के लिए स्थान आरक्षित हो जाता है. एक ही बछिया को सारा दिन लोग दान करते रहते हैं.

एक जगह पंडा एक ग्रामीण व्यक्ति के हाथ में बछिया की पूंछ पकड़ा कर उस से 51 रुपए मांग रहा था. जब उस ने इतने पैसे देने में अपनी असमर्थता जाहिर की तो पंडे ने उसे डराते हुए कहा, "हमें क्या, तुम इस की पूंछ छोड़ दो और एक भी पैसा दिए बिना चले जाओ. पर यह याद रखना, वैतरणी नदी को पार कराते समय यह गाय भी इसी तरह अपनी पूंछ छुड़ा कर चलती बनेगी, तब तुम्हें होश आएगी. हार कर उस भोले और अंधविश्वासी ग्रामीण ने अपनी सारी पूंजी उस पंडे के हवाले कर दी.

दशाश्वमेध घाट पर गायों के साथ घोड़ों का भी दान किया जाता है. आज महंगाई के युग में अश्वमेध यज्ञ करना तो संभव नहीं है, पर पंडों ने इस का इलाज भी ढूंढ़ लिया है. वे गाय की तरह घोड़े का दान करवा कर ही यह काम चला देते हैं.

गंगा नदी में बहुत से लोग कबूतरों के बैठने के लिए बांस भी छुड़वाते हैं. इन बांसों

अपने सरदर्द के लिए मैंने क्या-क्या नहीं किया,
पर बात बनी सिर्फ़ इस एक से!

सैरिडॉन

ट्रेडमार्क 'रोश'

शक्तिशाली. सुरक्षित.
सिर्फ़ एक काफ़ी है.



में लंबी रस्सी बंधी होती है. रस्सी के दूसरे सिरे पर एक पत्थर बंधा होता है. इस के कारण जब पानी में पत्थर वाला सिरा छोड़ दिया जाता है तो बांस एक ही स्थान पर स्थिर रहता है. ये बांस भी बाद में फिर निकाल कर पुनः छुड़वाए जाते हैं.

यहां के पंडे नानाविध भूमिकाएं निभाते हैं. ये अपने भक्तों के लिए स्वर्ग से ले कर सुरा, सुंदरी तक का प्रबंध करते हैं. यहां के नाव चलाने वालों ने बताया कि यजमान की मांग पर पंडे अपना कमीशन ले कर उन के लिए वेश्याओं की भी व्यवस्था कर देते हैं. ये वेश्याएं एक विशेष जाति की हैं और घाट के समीप ही रहती हैं.

सुबह गंगा नदी में अपने पाप धोने वाले ये भक्त शाम को बजरों (हाउसबोट) में इन सुंदरियों को ले कर गंगा में ऐयाशी करते हैं. खुल कर शराब के जाम चलते हैं. कुछ साल पहले तो इन बजरों में मुजरा भी होता था. पर अब इस का स्थान वेश्यावृत्ति ने ले लिया है. एक वेश्या के लिए 200 से 1,000 रुपए तक देने पड़ते हैं. पंडा अपने यजमान व वेश्या दोनों से ही अपना कमीशन लेता है. सुबह फिर यजमान से दान करवा कर वह उस के रात भर के पापों को गंगा नदी के 'पवित्र' जल से धुलवा देता है.

वाराणसी में सड़कों के किनारे पान की दुकानों व मंदिरों की भरमार है. अनेक मंदिर तो एकदम नाली के साथ बने हुए हैं. यदि यह कहा जाए कि शहर में बढ़ने वाली गंदगी के पीछे एक कारण ये मंदिर भी हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. जितनी संख्या में यहां मंदिर हैं, यदि उन के दसवें हिस्से के बराबर भी यहां पेशाबघर बनवा दिए गए होते तो न केवल नागरिकों के लिए एक सुविधा हो जाती, बल्कि सड़कों के किनारे खड़े हो कर पेशाब करने वालों की संख्या में भी कमी आ जाती.

वाराणसी का प्रसिद्ध विश्वनाथ मंदिर बहुत ही संकरी गली में है और वहां पहुंचने के लिए भी संकरी गलियों में से हो कर ही जाना पड़ता है. इस का गुंबद, जिस पर पंडों

के अनुसार ढाई मन सोना लगा हुआ है, बेहद गंदा है. जिस गली में यह मंदिर है, वह इतनी अधिक संकरी है कि इस का गुंबद तक दिखाई नहीं पड़ता. इन गलियों में प्रसाद व फूलमालाएं बेचने वालों की दुकानें हैं, जिन में मंदिर में चढ़ने वाला प्रसाद फिर से बाहर ला कर बेचा जाता है.

मंदिर का दरवाजा चांदी का होने के बावजूद सफाई न किए जाने के कारण काला हो चुका है. मंदिर के अंदर केवल हिंदू ही जा सकते हैं. विदेशी पर्यटकों के प्रवेश पर रोक है.

मंदिर के अंदर बहुत ज्यादा भीड़ रहती है. यह मंदिर लगभग 200 वर्गगज क्षेत्रफल में बना हुआ है. दरवाजे के साथ ही मंदिर के अंदर एक नल लगा हुआ है, जिस में लोग पैर धोते हैं. चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ फैली रहती है. मंदिर का फर्श संगमरमर का बना हुआ है. उस में जड़े हुए अधिकांश चांदी के सिक्के गायब हो चुके हैं.

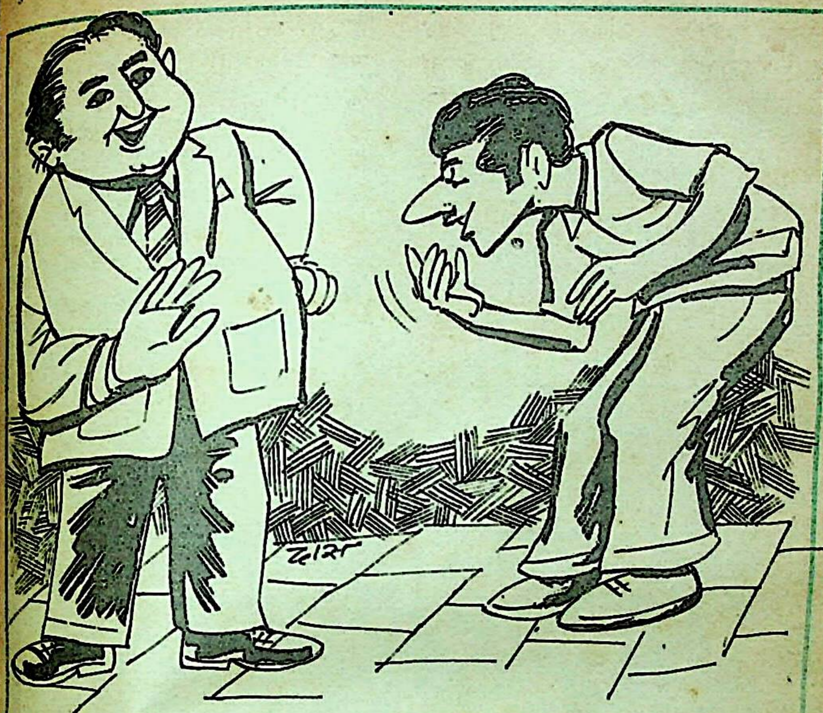
मंदिर में विश्वनाथ के दर्शनों के लिए बुरी तरह से धक्कामुक्की होती है. विश्वनाथ का शिवलिंग 10x10 फुट के कमरे में जमीन के अंदर लगभग दो फुट की गहराई में स्थित है. लोग उस में भरे हुए दूध, फल, फूल आदि को छूने के लिए एकदूसरे पर टूटे पड़ते हैं. वहां बैठा पंडा जिस हाथ से नाक पोंछता है उसी हाथ से लोगों का प्रसाद चढ़ाने लगता है. लेखक ने वहां बैठे एक दूसरे पंडे को अपने पैरों में लगे मैल को रगड़ने में व्यस्त पाया.

थोड़ी देर बाद उस ने उस मैल को वहीं झाड़ दिया और वह उड़ कर शिवलिंग के घेरे में जा गिरी. जिन दिनों ज्यादा दर्शनार्थी आते हैं, उन दिनों के लिए मंदिर के सामने वाले बरामदे में विश्वनाथ की एक अतिरिक्त मूर्ति बना कर रख दी जाती है, जिस से जब काम का बोझ बढ़ जाए तो अतिरिक्त विश्वनाथ भक्तों को अपने दर्शन दे सकें.

मंदिर के अंदर एक बहुत बड़ा पीतल का घंटा भी लगा हुआ है, जिसे वाराणसी के एक वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने लगवाया था. उस का नाम भी उस घंटे पर खुदा हुआ है. वाराणसी में सांडों को कहीं भी घूमने के लिए खुली छूट है. यहां तक कि विश्वनाथ मंदिर के अंदर भी दो मोटे सांड घूमते दिखाई दिए.

अंदर जगह बहुत कम होने के बावजूद इन सांडों के घूमने पर किसी तरह की [illegible] नहीं है. मंदिर में दीवारों के साथ [illegible] नालियां सी बनी हुई हैं, जिन के [illegible] दरजनों शिवलिंग रखे हुए हैं. सांड [illegible] शिवलिंगों पर पेशाब कर देते हैं. बा[illegible] श्रद्धालु भीड़ इन्हीं शिवलिंगों पर फूल[illegible] चढ़ा कर वहां फैले गंदे पानी को 'अमृत' रूप में चखती है और अपनी आंखों [illegible] लगाती है.

मंदिर में इतनी ज्यादा गंदगी रहती है कि उस का शब्दों में वर्णन कर पाना [illegible] नहीं है. जब विश्वनाथ मंदिर की यह हा[illegible] है तो बाकी मंदिरों की क्या हालत होगी, [illegible] का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है. इस के बावजूद भक्त स्वर्ग में अपना स्[illegible] आरक्षित करवाने के लिए जीते जी [illegible] 'नरक' को सहर्ष भोग रहे हैं.



मूर्खता

बड़े मूर्ख हो जी तुम!
आसान रास्ता अपनाया करो
सच को ज्यादा न सताया करो
ईमानदारी जैसे महान आदर्श पर
पालथी मार बैठ जाना
कहां की भलमनसाहत है.

ईमानदारी बेचारी की
कमर ही तोड़ दोगे क्या?
अरे, जरा सी
अपनी कमर झुका दो
समर्थ के आगे
कोर्निश बजा दो
और बस
अपना काम बना लो.

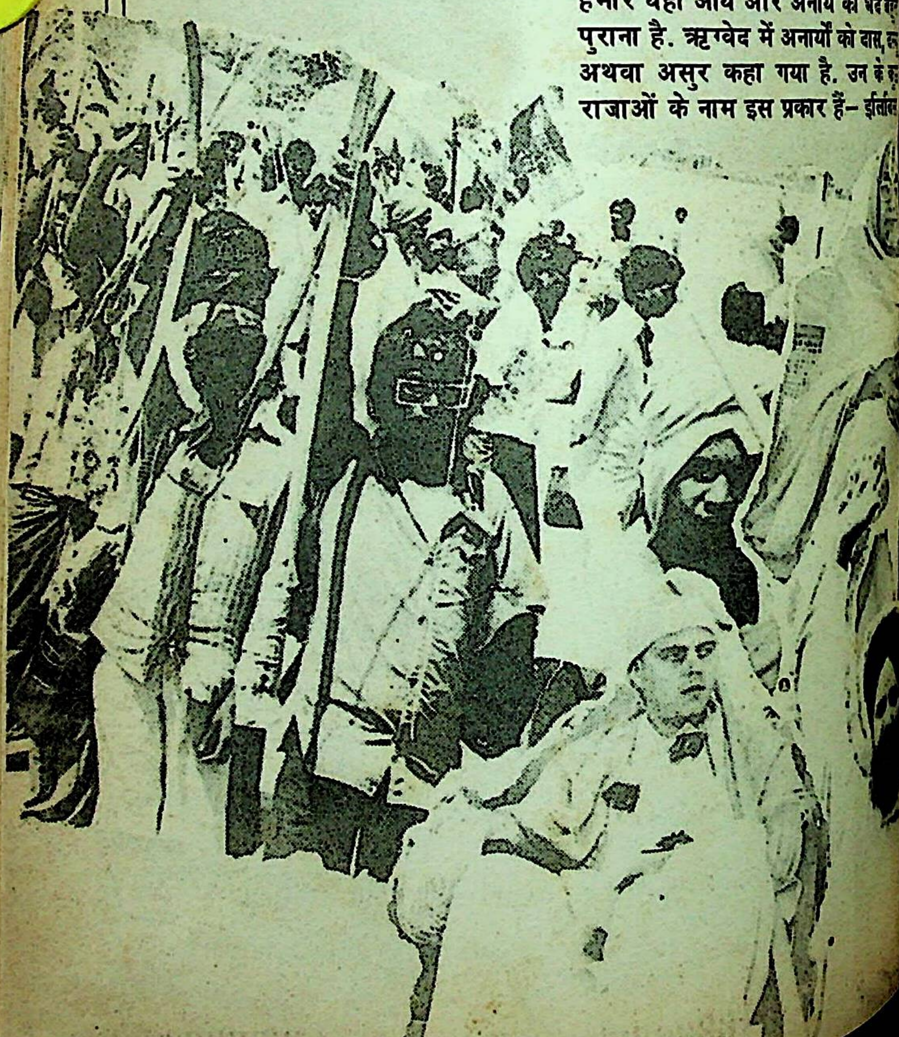
— उग्रसेन गोस्वामी

राष्ट्रीय एकता और हिंदू धर्म

लेख • डा. सुरेंद्रकुमार शर्मा

देश में कहीं असम की समस्या है तो कहीं खालिस्तान की, कहीं उत्तर और दक्षिण भारत का भेदभाव उभारा जा रहा है तो कहीं 'भूमिपुत्रों' का नारा लगा कर भारत के ही नागरिकों को प्रदेश विशेष में विदेशी बनाया जा रहा है और कहीं राष्ट्रीय ध्वज का अपमान हो रहा है. इन सब के पीछे एक ही मनोवृत्ति काम कर रही है. वह है—सारे भारत को एक देश न समझने की. इसे क्षुद्र प्रादेशिकतावाद कहें या पृथकतावाद, इस से खास अंतर नहीं पड़ता.

इस मनोवृत्ति का मूल हमारी संस्कृति में, हमारे धर्म में छिपा दिखाई पड़ता है. हमारे यहां आर्य और अनार्य का भेद बहुत पुराना है. ऋग्वेद में अनार्यों को दास, दस्यु अथवा असुर कहा गया है. उन के कुछ राजाओं के नाम इस प्रकार हैं- ईलीबिश



धुनि, चुमुरी, पिप्रु, वर्ची, शंबर, शुष्ण, वेतसु, तुग्र, अर्बुद आदि. उन के कुछ कबीलों के नाम इस प्रकार हैं— शिम्यु, कीकट, अज, यक्षु और शिग्रु. ये अनार्य लोग काले रंग वाले (ऋ. 7/5/3 व 6), यज्ञ न करने वाले (ऋ. 8/70/11), आर्यों से भिन्न नियमों का पालन करने वाले (ऋ. 8/70/11) और मृदु वचन न बोलने वाले थे. (ऋ. 7/6/3).

आर्यों द्वारा अनार्यों के प्रदेश लूटने, नष्ट करने आदि का ऋग्वेद में स्पष्ट उल्लेख है, उदाहरणार्थ ऋग्वेद के निम्नलिखित स्थल देखे जा सकते हैं :

(क) त्वं पिप्रुं मृगयं शूशुवांसमृजिश्वने वैदथिनाय रन्धीः,

पंचाशत्कृष्णा नि वप सहस्रात्कं न पुरो जरिमा वि दर्दः (ऋ. 4/16/13).

अर्थात हे इंद्र, तुम ने पिप्रु तथा प्रवृद्ध मृगय नामक असुरों को नष्ट किया था. तुम ने विदीथ के पुत्र ऋजिश्वा को बंदी बनाया था. तुम ने काले रंग वाले 50 हजार लोगों को मारा. जिस तरह बुढ़ापा रूप को नष्ट करता है, उसी तरह तुम ने अनार्य राजा शंबर के नगरों को नष्ट किया.

हिंदू धर्मग्रंथों ने किस तरह जनता में अलगाव की भावना भर के उन के अंदर राष्ट्रीय भावना को समाप्त कर दिया?

(ख) यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना वृषणं वज्रदक्षिणं सख्याय हवामहे (ऋ. 1/101/1).

अर्थात जिस इंद्र ने ऋजिश्वा राजा के साथ कृष्ण नाम के असुर की गर्भवती स्त्रियों को मारा, उसे अपना सखा बनाने के लिए हम उस का आह्वान करते हैं.

(ग) अव द्रप्सो अंशुमती मतिष्ठदियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः! आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नेहितीर्नृमणा अधत्त. (ऋ. 8/85/13).

अर्थात 10 हजार सेनाओं के साथ शीघ्र जाने वाला कृष्ण नाम का असुर



इतिहास में ऐसे ठोस प्रमाण मिलते हैं जो इस कथन को पुष्ट करते हैं कि न राजाओं ने और न उन की प्रजाओं ने ही कभी संपूर्ण देश के प्रति रुचि दिखाई.

अंशुमती नदी के किनारे रहता था. इंद्र ने उस की सारी सेना नष्ट कर दी.

(घ) अध द्रप्सो अंशुमत्या उपस्थे अधारयत्तन्वं तित्विषाणः, विशो अदेवीरम्या चरन्तीर्बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे. (ऋ. 8/85/15).

अर्थात द्रुतगामी कृष्ण अंशुमती नदी के पास दीप्तिमान हो कर शरीर धारण करता है. देवताओं को न मानने वाले उस कृष्ण का इंद्र ने बृहस्पति की सहायता से वध कर दिया.

(ङ) त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो जायमानो ऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्रः. (ऋ. 8/85/16).

अर्थात हे इंद्र, तुम ने ही वह कार्य किया—जन्मते ही तुम ने शत्रुशून्य कृष्ण, वृत्र, नमुचि, शंबर, शुष्ण, पणि आदि सात अनार्य राजाओं को नष्ट कर दिया.

(च) त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजो वज्रेण वज्रिन् धृषितो जघन्थ, त्वं शुष्णस्यावातिरो वधत्रैस्त्वं गा इन्द्र शच्येदविन्दः. (ऋ. 8/8517).

अर्थात हे इंद्र, तुम ने वह कार्य किया है: वज्रधर इंद्र, तुम ने संग्राम में कुशल हो कर शुष्ण के अनुपम बल को नष्ट किया है. तुम ने अपने आयुधों से शुष्ण का वध किया और गौएं प्राप्त कीं.

(छ) अकर्मादस्युरभि नो अमन्तुरन्य-व्रतो अमानुषः, त्वं तस्या मित्रहन्वधर्दासस्य दम्भय. (ऋ. 10/22/8).

अर्थात हे इंद्र, हमारे चारों और दस्यु दल हैं जो यज्ञादि नहीं करते. वे हम से भिन्न व्रतों व नियमों को मानते हैं. वे अमानुष हैं. इंद्र, तुम इस दस्यु जाति का विनाश करो.

(ज) किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावो नाशिरं दुहेन तपन्ति धर्मम्, आनो भर प्रमगन्दस्य वेदो नैचाशाखं मघवन् रन्धया नः !! (ऋा. 3/53/14).

अर्थात हे इंद्र, अनार्य देशों में रहने वाले लोगों (कीकटाः) की गौओं का तुम्हें क्या लाभ है? उन का दूध सोम में मिला कर तुम पी नहीं सकते. उन ब्याज लेने वालों की संपत्ति हमारे पास आ जाए. निम्न कुलों में उत्पन्न व्यक्तियों को हमारे वश में कर दो.

'कीकट' शब्द की व्याख्या करते हुए यास्क (800 ई.पू.) ने अपनी पुस्तक 'निरुक्त' में लिखा है—कीकटा नाम देशोऽनार्यनिवासः (नि.6/32) अर्थात कीकट वह देश है जहां अनार्यों का निवास है. इस पर टिप्पणी करते हुए प्रसिद्ध आर्यसमाजी विद्वान पं. राजाराम शास्त्री ने लिखा है—"कीकट अनार्य जाति थी, जो बिहार में कभी रहती थी, जिस के नाम पर बिहार का नाम कीकट है." (निरुक्त, पृ. 321,1914 ई.). स्वामी दयानंद ने 'कीकट' का अर्थ करते हुए लिखा है—'अनार्यदेशनिवासिषु म्लेच्छषु (अनार्य देशों में रहने वाले म्लेच्छों में).

ऐसे और बहुत से मंत्र प्रस्तुत किए जा सकते हैं.

आर्यअनार्य विद्वेष का कारण

शतपथ ब्राह्मण से पता चलता है कि इस आर्यअनार्य विद्वेष का कारण भाषा का भिन्न होना भी था. वहां लिखा है—"वे असुर मदिर बोलने वाले होने के कारण 'हे अरयः' के स्थान पर 'हे अलयः' कहते थे— तेऽसुरा आत्तवचसो हेऽलयः हे ऽलयः इति वदन्तः पराबभूवुः (3/2/1/23).

यह स्वाभाविक है कि आर्य लोग

अनार्यों के अस्तित्व को अच्छा नहीं समझते थे. आर्यों ने ऐसे इलाकों को अपवित्र और आर्यों के निवास के अयोग्य घोषित कर दिया. निरुक्त (800 ई.पू.) में लिखा है कि कंबोज (हिंदूकुश पर्वत और तिब्बत व लद्दाख तक फैला भूभाग) आर्य देश नहीं, यद्यपि वहां की भाषा आर्य भाषा प्रतीत होती है. (निरुक्त 2/2):

निरुक्त के भाष्यकार स्कंदस्वामी (7 वीं शताब्दी) के अनुसार कंबोज उत्तरापथ में एक ऐसा ही इलाका है, जैसे मद्र नामक इलाका है—कंबोजा नाम उत्तरापथे क्वचिज्जनपदाख्या मद्रादिवत् (स्कन्द स्वामिकृता निरुक्तवृत्ति, 2/2). उस का यह भी कहना है कि वहां के रहने वाले म्लेच्छ (अनार्य) हैं जो स्त्री और पेय पदार्थों के प्रयोग के विषय में भिन्न तरह के विचार रखते हैं— यथेष्टं विषयानुपभंजते म्लेच्छदेशत्वात् स्त्रियो पेयगम्यागम्या विव्यवहाररहिता इत्यर्थः (वही).

महाभाष्य (150 ई.पू.) का कथन है कि काठियावाड़ का इलाका आर्य देश नहीं. उस ने आर्यावर्त के बाहर के इलाकों को आर्यों के अयोग्य घोषित किया है. बौधायन धर्मसूत्र (1/1/31) का कहना है कि अवंति (धौलपुर का पश्चिमी इलाका), अंग (कौशिकी कच्छ के उत्तरी और गंगा के दक्षिणी किनारे पर आधुनिक भागलपुर के समीप का इलाका), मगध (दक्षिणी बिहार), सुराष्ट्र (काठियावाड़), दक्षिणीपथ (दक्षिण भारत), उपावृत्, सिंधु (सिंधु नदी के पास का इलाका) और सौवीर देश शुद्ध आर्य नहीं हैं. बौधायन ने यह भी कहा है कि जो आरट्टक देश (पंजाब के उत्तरपूर्व में स्थित इलाका), कारस्कर, पुंड्र, सौवीर, वंग, वंग, कलिंग एवं प्रानून को जाता है, वह अपवित्र हो जाता है और सर्वपृष्ठ नामक यज्ञ करने पर ही शुद्ध होता है. कलिंग को जाने वाला वैश्वानर अग्नि में हवन कर के शुद्ध होता है.

आरट्टान्, कारस्करान् पुण्ड्रान् सौवीरान् कलिंगान् प्रानूनानिति च गत्वा पुनस्तोमेन यजेत सर्वपृष्ठ्या वा. (बौधायन 1/1/15).

क्या राष्ट्रीय खंडता का मूल यही नहीं?

इस प्रकार के आदेश हिंदू धर्मग्रंथों में अनेक स्थानों पर मिलते हैं जिन में कुछ इलाकों को पवित्र और आर्यों के निवास योग्य कहा गया है तथा कुछ इलाकों को अपवित्र एवं द्विजों के निवास के अयोग्य बताया गया है. कहीं उन निषिद्ध इलाकों में दो दिन तक भी न रहने के आदेश हैं, तो कहीं उन इलाकों में तीर्थयात्रा के बिना जाने पर प्रायश्चित्त करने का विधान है और कहीं उन इलाकों में जाने वाले को शुद्ध करने के लिए बहुत कष्टसाध्य विधान हैं. उदाहरण के लिए निम्नलिखित स्थल देखे जा सकते हैं:

मनु का कथन है :

सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्
तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रवक्षते.
(मनु. 2/17).

अर्थात सरस्वती और दृषद्वती— इन दो देवनदियों के मध्य जो देश है, उसे देवनिर्मित 'ब्रह्मावर्त' कहते हैं.

कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पंचाला सूरसेनकाः! एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मवर्तादनन्तरः (मनु. 2/19).

अर्थात कुरुक्षेत्र, धौलपुर का पश्चिमी इलाका, पंचाल (गंगा यमुना का दोआबा या कन्नौज का समीपवर्ती भाग)

पिछले दोढाई हजार सालों के भारतीय इतिहास में सिवाय थोड़े समय के, कभी राजनीतिक तौर पर भारत एक देश नहीं रहा. वह सदा छोटेछोटे राज्यों में बंटा रहा.

धर्मग्रंथों में दी गई विदेश या देशांतर की परिभाषाएं बहुत संकुचित हैं. सौपचास मील दूर के इलाके को विदेश घोषित किया गया है.

और मथुरा का इलाका—यह 'ब्रह्मर्षि देश' है. यह ब्रह्मावर्त से कुछ कम पवित्र है.

हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विन-
'शनादपि!

प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः
प्रकीर्तितः !! (मनु. 2/21).

अर्थात हिमालय और विंध्य के बीच, कुरुक्षेत्र के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम का इलाका 'मध्यदेश' कहा गया है.

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु,
पश्चिमात्!

तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तं, विदु-
र्बुधाः!! (मनु. 2/22).

आर्यावर्त

अर्थात पूर्वी समुद्र तथा पश्चिमी समुद्र और हिमालय तथा विंध्य के मध्य स्थित प्रदेश को विद्वान लोग 'आर्यावर्त' कहते हैं.

कृष्णसारस्तु चरति मृगो यत्र
स्वभावतः!

स ज्ञेयो यज्ञियो देशो म्लेच्छदेश-
स्त्वतः परः !! (मनु 2/23)

एतान् द्विजातयो देशान् संश्रयेरन्
प्रयत्नतः!

शूद्रस्तु यस्मिन् कस्मिन् वानिवसेद्
वृत्तिकर्शितः!! (मनु. 2.24).

अर्थात द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) इन्हीं देशों में निवास करें. हां, 'शूद्र आजीविका के लिए कहीं अन्यत्र भी निवास कर सकता है.

दक्षिण भारत की निंदा

मनु ने स्पष्ट तौर पर दक्षिण भारत को 'म्लेच्छ देश' कहा है, क्योंकि विंध्य के उस पार के इलाके को उस ने आर्यावर्त की सीमा में नहीं माना और वहां द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) को न बसने की सीख दी है.

बौधायन ऋषि का आदेश है:

सिंधु सौवीरसौराष्ट्रांस्तथा
प्रत्यन्तवासिनः!

अंगवंगकलिंगांश्च गत्वा संस्कार-
मर्हति!!

(बौधायन, निर्णयसिंधु पृ 202 से उद्धृत).

अर्थात सिंधु, सौवीर, काठियावाड़, सीमांत प्रदेश, अंग (कौशिकी कच्छ के उत्तरी और गंगा के दक्षिणी किनारे पर आधुनिक भागलपुर के पास का इलाका), पूर्वी बंगाल और कलिंग में जाने पर आदमी अपवित्र हो जाता है. अतः उस का यज्ञोपवीत संस्कार फिर से होना चाहिए.

एक दूसरे धर्मशास्त्र 'देवल स्मृति' में कहा गया है:

त्रिशंकुं वर्जयेद् देशं सर्वं
द्वादशयोजनम्. उत्तरेण महानद्या
दक्षिणेन नु कीकटम्!!

(देवल स्मृति, 4)

अर्थात त्रिशंकु देश में न जाए जो 12 योजन (108 मील) तक फैला हुआ है, जो महानदी के उत्तर में और कीकट (दक्षिण बिहार) के दक्षिण में है.

सिंधु सौवीर सौराष्ट्र तथा
प्रत्यन्तवासिनः!

कलिंगकौंकणान् वंगान् गत्वा संस्कार
मर्हति! (देवल स्मृति 16)

अर्थात सिंधु प्रदेश, सौवीर प्रदेश, काठियावाड़, सीमा प्रदेश, कलिंग, कोंकण (केरल, तुलंग, सौराष्ट्रवासी, कोंकण, करकट, कर्नाटक, बर्बर आदि सात प्रदेश) और पूर्वी बंगाल में आ कर आदमी अपवित्र

हो जाता है, अतः उस का संस्कार (शुद्धिकरण)करना चाहिए.

एक अन्य धर्मशास्त्रीय वचन है :

अंगवंगकलिंगेषु सौराष्ट्रमगधेषु च! तीर्थयात्रां विना गत्वा पुनः संस्कारमर्हति !!

(व्याकरणचन्द्रोदय, तृतीय खण्ड, पृ. 509 पर उद्धृत).

अर्थात अंग (गंगा के दक्षिणी किनारे पर बसा राज्य), पूर्वी बंगाल, कलिंग, काठियावाड़ और मगध (दक्षिणी बिहार) में यदि बिना तीर्थयात्रा के कोई जाए तो वह अपवित्र हो जाता है, अतः उस की शुद्धि की जानी चाहिए.

पुराणों में भी इसी तरह के आदेशात्मक वचन मिलते हैं:

कांची काश्यपसौराष्ट्र देवराष्ट्रान्ध-मत्स्यजाः! कावेरी कोंकणा हूणास्ते देशा निन्दिता भृशम्!! सौराष्ट्रसिन्धुसौवीरमावन्त्यं दक्षिणापथम्! गत्वैतान् कामतो देशान् कालिंगांश्च पतेद् द्विजः!!

(आदित्य पुराण, स्मृतिचन्द्रिका से उद्धृत).

यात्रा निषिद्ध

अर्थात कांची (कांजीवरम), काश्यप, काठियावाड़, देवराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, धौलपुर व पश्चिमी इलाका, कावेरी, कोंकण, (केरल, तुलंग, सौराष्ट्रवासी, कोंकण, करहट, कर्नाटक, बर्बर– ये सात देश कोंकण हैं) और हूण ये बहुत निंदित इलाके हैं. काठियावाड़, सिंधु, सौवीर, अवंति (नर्मदा का उत्तरी इलाका), दक्षिण भारत और कलिंग में यदि कोई द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) स्वेच्छा से जाता है तो पतित हो जाता है.

आर्यावर्त समुत्पन्नो द्विजो व यदि वाऽद्विजः! कर्मदा सिंधुपारं च करतोयां न लंघयेत्!! आर्यावर्तमतिक्रम्य विना तीर्थक्रियां द्विजः। आज्ञां चैव तथा पित्रोरैन्दवेन विशुध्यति!!

(आदि पुराण, परिभाषाप्रकाश के पृष्ठ 59 से उद्धृत).

अर्थात आर्यावर्त (पूर्वी तथा पश्चिमी समुद्र और हिमालय तथा विंध्य के मध्य का भाग, न कि संपूर्ण भारतवर्ष (देखें मनुस्मृति 2/22) के रहने वालों को सिंधु, कर्मनाशा और करतोया नदियों को तीर्थयात्रा के अतिरिक्त कभी भी पार न करना चाहिए. यदि वे उन्हें पार करें तो उन्हें चांद्रायणव्रत (इस में 15 दिन उत्तरोत्तर एक ग्रास घटाना होता है और अंतिम दिन निराहार रहना होता है. अगले 15 दिन उत्तरोत्तर एक ग्रास बढ़ाना होता है और अंतिम दिन 15 ग्रास का पूर्ण भोजन करना होता है. इस तरह यह महीने भर का चक्कर होता है) करना चाहिए.

महाभारत पंजाब की निंदा करते हुए आदेश देता है:

पंच नद्यो वहन्त्येता यत्र पीलुवनान्युता ! (31) शतद्रुश्च विपाशा च तृतीयै रावती तथा! चंद्रभागा वितस्ता च सिन्धुषष्ठा बहिर्गिरः (32). आरट्टा नाम ते देशा नष्टधर्मा न तान् व्रजेत्!! (33).

पंच नद्यो वहन्त्येता यत्र निःसृत्य पर्वतात्! (40)

आरट्टा नाम वाहीका न तेष्वार्यो द्वयहं वसेत्!! (41)

(महाभारत, कर्णपर्व, अ. 44).

अर्थात जहां सतलुज, व्यास, इरावती (रावी), चंद्रभागा (चनाब), वितस्ता (झेलम) और छठी सिंधु नदी बहती है. वहां आरट्टा (जाट) लोग रहते हैं. वे धर्महीन हैं. वहां व्यक्ति न जाए.

पृथकतावाद की मनोवृत्ति ने हमेशा हमारे विकास में रोड़े अटकाए हैं और इस मनोवृत्ति की जड़ हमारी संस्कृति और हमारे धर्म में छिपी मिलती है.

जहां पर्वत से निकल कर पांच नदियां बहती हैं, वह आरट्टा (जाट) नाम के पंजाबियों (वाहीक) का इलाका है. आर्य लोग वहां दो दिन भी न बसें.

इस पर टिप्पणी करते हुए श्री खुशवंतसिंह ने लिखा है— "जाटों में स्वतंत्रता और समानता की भावना थी. अतः उन्होंने ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म को स्वीकारने से इनकार कर दिया और इस तरह वे गंगा के मैदानों के विशेषाधिकार संपन्न ब्राह्मणों के निंदा के पात्र बने जिन्होंने यह उद्घोषणा की थी कि 'किसी आर्य को पंजाब में दो दिनों तक भी नहीं रहना चाहिए.' (देखें, ए हिस्टरी आफ सिख्स, जिल्द 1, पृ. 15).

महाभारत (कर्णपर्व) में युगंधर नामक पर्वत प्रदेश और पंजाब के अच्युतस्थल नामक स्थान को इतना अपवित्र और घटिया कहा गया है कि वहां से गुजरते हुए यदि कोई आर्य पानी भी पी ले तो सीधा नरक को जाएगा.

युगन्धरे पयः पीत्वा, प्रोष्य चाप्यच्युतस्थलेः (39).

तद्भवद भूतिलये स्नात्वा कथं स्वर्गं गमिष्यति. (40,अ.44).

अर्थात युगंधर में पानी पी कर, अच्युतस्थल में निवास कर के और भूतिलय नामक स्थान में स्नान करने के बाद तुम स्वर्ग को कैसे प्राप्त करोगे? अर्थात नहीं प्राप्त कर सकते.

महाभारत, कर्णपर्व, अध्याय 45 में लिखा है— मलं पृथिव्यां वाहीकाः, स्त्रीणां मद्रस्त्रियो मलम्. (23) मानुषाणां मलं म्लेच्छाः (25) वृषला दाक्षिणात्याः स्तेना वाहीका, संकरा वै सुराष्ट्राः (28) आरट्टजान् पंचनदान् धिगस्तु. (30,38).

अर्थात वाहीक (पंजाबी) लोग सारी धरती का गंद हैं, सारी दुनिया की स्त्रियों का गंद मद्र देश की स्त्रियां हैं. म्लेच्छ सब मानवों का गंद हैं. दक्षिण वासी लोग मूर्ख—शूद्र हैं. पंजाबी चोर हैं, सुराष्ट्र के लोग दोगले हैं. पंजाबियों को लानत है.

'ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड' का कथन है— कर्णाटा निर्दयाश्चैव कोंकणाश्चैव दुर्जनाः, तैलंगा द्रविडाश्चैव दयावन्तो जना भुवि. (श्लोक 66).

अर्थात कच्छ, कशमीर, केरल, कर्नाटक, कांबोज, कामरूप, कलिंग, सौराष्ट्रादि देशों के लोग अभक्त, निर्दय हैं, राक्षस तुल्य हैं. तैलंग, द्रविड़, दयावंत हैं.

(ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड, पृ. 8).

आभीरकका यवनाश्च भृंगा नाटास्तथा मालवदेशविप्राः

श्राद्धे विवाहे खलु यज्ञकर्मणि ते वर्जिता यद्यपि शम्भुतुल्याः !!

(ब्रा. उ. म.).

पृथकतावाद को बढ़ावा

अर्थात अभीर देशीय (कोंकण के निचले हिस्से और ताप्ती नदी के पश्चिमी तट पर बसा इलाका), कंकदेशीय, यवन (मुसलिम) राज्यों के निवासी, हुसैनी और मालवदेश (मध्य भारत का एक इलाका) के ब्राह्मण यद्यपि शिव के समान हों तथापि विवाह, यज्ञ और श्राद्धकर्म में इन्हें नहीं लेना चाहिए.

न केवल धर्मशास्त्रों और महाभारत व पुराणों में, बल्कि संस्कृत ग्रंथों में भी ऐसे वाक्य उदाहरण स्वरूप दिए गए हैं जो प्रदेश विशेष के प्रति अपवित्रता और घृणा के भाव उत्पन्न करने में धर्मशास्त्रीय वचनों से कम शक्तिशाली नहीं. वे वाक्य कम से कम हजार डेढ़ हजार साल से संस्कृत पढ़ने वालों को आज तक पढ़ाए जा रहे हैं. व्याकरण का नियम है कि लिट् लकार (परोक्ष भूत) का प्रयोग तब होता है जब किसी बात से मुकरना हो या साफसाफ इनकार करना हो. अत्यन्तापह्नवे च लिड्वक्तव्यः (वार्तिक).

इस के उदाहरण स्वरूप जो वाक्य सातवीं सदी में लिखी गई 'काशिका' वाक्य व्याख्या में मिलते हैं, आज तक वही सब संस्कृत व्याकरणों में दिए जाते हैं. संभव है, काशिका से पहले भी यही प्रचलित रहे हों.

पहला उदाहरण है— कलिंगेषु ...

स्थितोऽसि? अर्थात (क्या तुम कलिंग देश में ठहरे हो?)

उत्तर में दूसरा वाक्य लिट् लकार में है– नाहं कलिंगान् जगाम अर्थात मैं तो कलिंग देश कभी गया भी नहीं हूं.

दूसरा उदाहरण है– "दक्षिणापथं प्रविष्टो सि." अर्थात क्या तुम कभी दक्षिण भारत में गए हो? उत्तर में लिट् लकार में वाक्य है "नाहं दक्षिणापथं प्रविवेश" अर्थात मैं तो कभी दक्षिण भारत में प्रविष्ट भी नहीं हुआ.) काशिकावृत्ति, पृ. 209, प्रथम भाग.

इन वाक्यों को उद्धृत कर के कई व्याकरणों में किसी धर्मग्रंथ का वचन उद्धृत कर के यह भी बताया गया है कि धर्मशास्त्र कलिंग और दक्षिण भारत में जाने को धर्मविरुद्ध कहता है. अतः ऐसे वाक्यों की रचना की गई है. संस्कृत व्याकरण के पंडित श्री चारुदेव शास्त्री ने अपनी पांच जिल्दों में प्रकाशित 'संस्कृत व्याकरणचन्द्रोदय' नामक पुस्तक की तीसरी जिल्द में ऐसा ही लिखा है.

विदेश की परिभाषाएं संकुचित

धर्मग्रंथों में दी गई विदेश या देशांतर की परिभाषाएं बहुत संकुचित हैं. सौ पचास मील दूर के इलाके को विदेश घोषित किया गया है. कई स्थानों पर तो पहाड़ के दूसरी ओर के इलाके को ही विदेश घोषित कर दिया है. बृहस्पति ने देशान्तर (दूसरे देश) की परिभाषा देते हुए लिखा है– "महानद्यन्तरं यत्र गिरिर्वा व्यवधायकः, वाचो यत्र विभिद्यन्ते तद् देशांतरमुच्यते. देशान्तर वदन्त्येके षष्टियोजनमायतं, चत्वारिंशद् वदन्त्यन्ये त्रिंशदन्ये तथैव च."

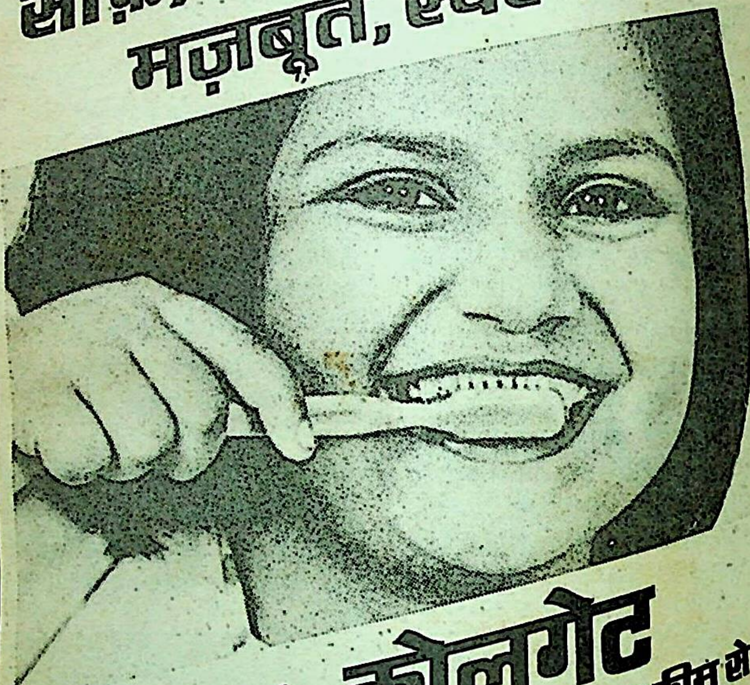
अर्थात, महानदी या महापर्वत बीच में पड़ता हो और भाषा की भिन्नता हो तो दोनों तरफ एकदूसरे के लिए देशांतर हैं. कुछ लोगों का कहना है कि 60 योजन (आठ मील एक योजन) से आगे नया देश शुरू होता है, कुछ 40 योजन से आगे शुरू होना मानते हैं और कुछ 30 योजन से आगे.

एक दूसरे मत को बृहस्पति ने उद्धृत



"यदि आप मुझे दक्षिणा ज्यादा दें तो मैं ग्रह मिलाने के साथसाथ यह बता दूं कि कौन सी जन्मपत्री वाली लड़की दहेज ज्यादा लाएगी."

साफ़, ताज़ा सांस
मज़बूत, स्वस्थ दांत



कोलगेट
डेन्टल क्रीम से

हर भोजन के बाद अपने दांत कोलगेट से साफ़ कीजिए. यह ठीक उसी तरह दांतों की रक्षा करता है, जैसे दुनियाभर के दांतों के डाक्टर कहते हैं.

दांतों में छुपे हुए अन्नकणों में कीटाणु बढ़ते हैं. इनसे सांस में बदबू पैदा होती है, और बाद में दांतों में सड़न.

इसीलिए, हमेशा भोजन के फ़ौरन बाद कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ कीजिए. यह सांस को ताज़ा, दांतों को सफ़ेद और दांतों की सड़न रोकने में असरदार साबित हो चुका है.

देखिए, कोलगेट के भरोसेमंद फ़ार्मूले का काम:



दांतों में छिपे हुए अन्नकणों में सांस में बदबू और दांत में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणु बढ़ते हैं.



कोलगेट का अनोखा, असरदार झाग दांतों के कोने में छिपे हुए अन्नकणों को और कीटाणुओं को निकाल देता है.



नतीजा: आपके दांत आकर्षक सफ़ेद, आपकी सांस तरोताज़ा और दंतक्षय की रोकथाम.

कोलगेट का ताज़ा पेपरमिंट – जैसा स्वाद मन में बस जाता है.

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की बदबू रोकिए– दंतक्षय का प्रतिकार कीजिए...



DC.G.74 HN

किया है, जिस में 'देशांतर' के स्थान पर 'विदेश' शब्द का प्रयोग किया गया है. वहां विदेश की परिभाषा इस प्रकार की गई है: "एकाहेन यत्रत्या वार्ता न श्रूयते स विदेश इति रत्नाकरः" अर्थात एक दिन में जिस जगह की खबर न जानी जा सके, वह विदेश है.

'धर्मसिन्धु' नामक धर्मग्रंथ में देशांतर (दूसरे देश) की व्याख्या जातियों के आधार पर की गई है—"देशांतरं तु विप्रस्य विंशतियोजनात्परम्, क्षत्रियादेः क्रमेण चतुर्विंशत्त्रिंशतषष्टि योजनैः! केचिद् विप्रस्यत्रिंशद्योजनोत्तरं देशान्तरमाहुः!! भाषा भेदसहितमहागिरिणा भाषाभेदसहितमहानद्या वा व्यवधानमपि देशान्तरम् यत्तु केचिद्भाषाभेदरहितमपि गिरिनदी व्यवधानं देशान्तरमाहुः तद्योजनगतविंशत्यादिसंख्यायास्त्रिचतुरादिन्यूनन्वेऽपि देशान्तरत्वसंपादकतया योज्यमिति भाति. अन्यथा महानदी पर पूर्वतीरवासिनासिनामेकयोजनमध्येऽपिदेशान्तरत्वापत्तेः (धर्मसिन्धुः, तृतीय परिच्छेद, पृ. 870-71).

विभिन्न वर्णों के देश की सीमा

अर्थात ब्राह्मण के लिए अपने निवास स्थान से 20 योजन, क्षत्रिय के लिए 24 योजन, वैश्य के लिए 30 योजन और शूद्र के लिए 60 योजन से दूर का इलाका 'देशांतर' (दूसरा देश) है, यदि महापर्वत या महानदी बीच में आ जाए और पर्वत या नदी के दोनों ओर रहने वालों की भाषा में भी अंतर हो तो वे दोनों तरफें भी दूसरा देश कहलाएंगी. जो यह कहा गया है कि चाहे भाषा में अंतर न भी हो, तो भी पर्वत या नदी के दोनों तरफें 'देशांतर' कहलाती हैं, वहां तात्पर्य यह है कि 20,24,30 और 60 योजन से कुछ योजन कम भी हो तो क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के लिए वह देशांतर ही हैं, यदि ऐसा न माना जाएगा तब तो महापर्वत या महानदी की दोनों तरफों को देशांतर मानना पड़ेगा. जिस के एक या आधे योजन पर ही दूसरा देश स्वीकार करना पड़ेगा.

इन धर्मशास्त्रीय ग्रंथों की परिभाषाओं और व्याख्याओं से स्पष्ट है कि अपने निवास स्थान से ज्यादा से ज्यादा 480 मील की दूरी तक ही स्वदेश है. वह भी सब के लिए नहीं. यह शूद्रों के लिए सीमा है. ब्राह्मण के लिए तो 160 मील के बाद ही दूसरा देश शुरू हो जाता है. क्षत्रिय के लिए 192 मील और वैश्य के लिए 240 मील से दूसरा देश शुरू हो जाता है. यदि कहीं पर्वत या नदी आ जाए तो उस की दोनों तरफें एकदूसरे के लिए विदेश बन जाती हैं.

इसी का फल यह है कि हिंदी आदि कई आधुनिक भारतीय भाषाओं में पड़ोसी या कुछ दूर के गांव व शहर के निवासी के लिए परदेसी या परदेशी (दूसरे देश का निवासी) शब्द का प्रयोग आज भी होता है. जब अपने गांव और उस के पासपड़ोस के इलाकों को छोड़ कर सब स्थान विदेश व देशांतर हों तब हजारों मील लंबे और हजारों मील चौड़े भारत कहे जाने वाले देश को एक देश कोई कैसे स्वीकार कर सकता है, विशेषतः तब जब धर्मग्रंथ भी इस के विरुद्ध हों.

इसी लिए आदि शंकराचार्य ने इधरउधर घूमने, यहां तक कि तीर्थयात्रा की भी निंदा की है. अपने शिष्य पद्मपाद को उन्होंने कई कारण बताते हुए देशभ्रमण और तीर्थयात्रा से विमुख करने के उद्देश्य से कहा था— "संभाव्यते क्व च जलं क्व च नास्ति पाथः, शय्यास्थलं क्वचिदिहास्ति न च क्व चास्ति! शय्यास्थली जलनिरीक्षण सक्तचेताः पान्थो न शर्म लभते कलुषीकृतात्मा!! (5). ज्वरातिसारादि च रोगजालं बाधेत चेत् तर्हि न कोऽप्युपायः! स्थातुं च गन्तुं च न पारयेतयदा तदा सहायोऽपि च विमुंचीतम्!!(6). स्नानप्रभाते न च देवतार्चनं क्व चोक्तशौचं क्व च वा समाधयः! क्व चाशनं कुत्र च मित्रसंगतिः पान्थो न शाकं लभते क्षुधातुरः!!" (7) (शंकरदिग्विजय, सर्ग 14).

अर्थात यात्रा में कहीं जल की संभावना नहीं होती और कहीं जल बिलकुल नहीं मिलता, कहीं लेटने को जगह मिलती है

और कहीं नहीं, इस प्रकार यात्री का मन हमेशा स्थान, शय्या, जल आदि में लगा रहने से वह सदा बेचैन रहता है. उसे यदि ज्वर, अतिसार आदि रोग हो जाएंगे तो उन से छुटकारा पाने का कोई साधन नहीं होता. यात्रा में न तो प्रातःस्नान हो सकता है और न देवताओं का पूजन, न पवित्रता और शुद्धि के नियमों का पालन हो सकता है, न समाधि लग सकती है. वहां भोजन और मित्र कहां से प्राप्त होंगे? यात्रा में तो भूखे को घास भी नहीं मिलता.

राष्ट्रभावना का अभाव

इस तरह के आदेशों ने सदियों से लोगों को प्रांतों के प्रति पूर्वाग्रहग्रस्त कर रखा है. इन्हीं के परिणामस्वरूप लोगों में संपूर्ण भारत के प्रति एक राष्ट्र की भावना उत्पन्न न हो सकी.

यदि लोगों में थोड़ा बहुत एक राष्ट्र का भाव जागरित होता भी था तो वह या तो धर्म के हाथों कुचल दिया जाता था या कहीं राजधर्म के हाथों या धर्मांधता के हाथों.

भारत पिछले ढाई हजार सालों के इतिहास में सिवा थोड़े से समय के, कभी राजनीतिक तौर पर एक देश नहीं रहा. सदा छोटेछोटे राज्यों में बंटा रहा. हर राजा के सामने युधिष्ठिर और राम के राजसूय और अश्वमेध यज्ञ के 'आदर्श' थे. अतः हर राजा 'दिग्विजय' के चक्र में रहता था. वह इसी ताक में रहता कि कम से कम पड़ोसी राज्यों की 'दिग्विजय' तो हो जाए. इस से विभिन्न राज्यों में लड़ाईझगड़ा रहता था, जिस के परिणामस्वरूप एक राज्य के लोग दूसरे राज्य को और वहां के लोगों को अपना शत्रु समझते थे. हर राज्य के लोग अपने इलाके के प्रति ही वफादार रहते थे. ऐसे में संपूर्ण देश को एक मान कर चलना न केवल कठिन था बल्कि असंभव भी था.

भारत के इतिहास से ऐसे ठोस प्रमाण मिलते हैं जो इस कथन को पुष्ट करते हैं कि न राजाओं ने और न उन की प्रजाओं ने ही कभी संपूर्ण देश के प्रति रुचि दिखाई. इस के विपरीत, कभी राजाओं ने अपने स्वार्थों के लिए या ईर्ष्यावश और कभी प्रजाओं ने राजाओं की धर्मांधता से तंग आ कर कभी देशी तो कभी विदेशी शक्तियों को आमंत्रित किया.

जब सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया तब आंभी ने पुरु से आपसी शत्रुता के कारण सिकंदर का साथ दिया. जब पुरु और शशिगुप्त सिकंदर से हार गए, तब स्वार्थवश वे सिकंदर के साथ चल पड़े और अपने देश को विदेशी के पैरों तले रौंदे जाने में उस के सहायक बने.

शालिशूक मौर्य कट्टर जैन था. उस की धर्मांधता के कारण प्रजा त्राहित्राहि कर उठी थी. इसी कारण उस ने ग्रीक के देमित्रियस बाख्त्री का स्वागत किया और धर्ममीत कह कर सम्मानित किया.

अंतिम मौर्य सम्राट वृहद्रथ के ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने सम्राट को कत्ल कर के जब राजगद्दी हथिया ली तो बौद्धों का कत्लेआम शुरू कर दिया. तब उन्होंने एक दूसरे विदेशी को बुलावा दिया. इस बार ग्रीक का ही मिनांद्र आया.

शुंग वंश के अंतिम सम्राट देवभूति को उस के मंत्री वसुदेव ने मरवा कर सिंहासन पर अधिकार कर लिया. इस वंश के चार राजा हुए. उन के अत्याचारों के विरुद्ध जैनों ने शकों को हमला करने के लिए आमंत्रित किया.

जब 712 में सिंध के राजा दाहिर पर 17 वर्षीय मुसलमान लड़के मुहम्मद बिन कासिम ने हमला किया तब दाहिर की बौद्ध विरोधी नीति से तंग आए बौद्धों ने विदेशी मुसलमानों का साथ दिया.

राणा सांगा ने दिग्विजय के चक्कर में दिल्ली हथियाने के उद्देश्य से बाबर को न केवल दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया, बल्कि उस की सहायता भी की और देश की गुलामी पक्की करवा दी.

जब पानीपत के मैदान में 1761 में मराठों और अहमदशाह अब्दाली में मुठभेड़ होने को थी तो कई राजाओं ने इकट्ठे हो कर

अब्दाली का सामना करने की ठानी. लेकिन ईर्ष्यावश और अपनी बात मनवाने के चक्कर में उन में आपसी तालमेल न हो सका, जिस से अब्दाली विजयी हो गया.

1857 में गोरखों और सिखों ने अंगरेजों की सहायता की.

भारतीय इतिहास से ऐसे अनेक प्रमाण जुटाए जा सकते हैं. यदि एक राष्ट्र की भावना होती तो कदापि ऐसा न होता. सारे प्राचीन इतिहास में एक भी ऐसा प्रमाण नहीं मिलता, जिस से सिद्ध हो कि कभी हम ने संपूर्ण देश के हित में बलिदान दिया हो. दरअसल, हम ने राष्ट्रवाद 19वीं शताब्दी में पश्चिम से सीखा. 1947 तक हमारा अजीर्ण राष्ट्रवाद अंगरेज विरोधी भावना से जुड़ा था, अतः सीधा चलता रहा. लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राष्ट्रवाद का मुलम्मा उतरने लगा. प्रांतीयताभाव, भाषावाद और पृथकतावाद जैसी प्रवृत्तियां पनपने लगीं.

ये प्रवृत्तियां हमारी स्वतंत्रता के लिए खतरा हैं. राजनीतिक स्वार्थों से ऊपर उठ कर इन का सामना करना चाहिए. इस के लिए विभिन्न मतालवंबियों और विभिन्न विचारधाराओं में सामंजस्य स्थापित करना होगा. तथा पृशकतावादी शक्तियों को सख्ती से कुचलना होगा. इस के साथ ही जनता को धर्म और इतिहास के पूर्वाग्रहों से मुक्त करने और लोकतांत्रिक विश्वासों व मान्यताओं के प्रति आस्थावान बनाने के लिए शिक्षा पद्धति में अभीष्ट सुधार लाना होगा. धर्म और जाति के नाम पर भेदभाव उत्पन्न करने वाले धर्मग्रंथों के प्रकाशन, सार्वजनिक प्रचार पर प्रतिबंध लगाना होगा. तभी भारत का भविष्य सुरक्षित रह सकता है, नहीं तो कभी भी खंडखंड हो सकता है. ●

पड़ोसी से दोस्ती

मगर कितनी?

लेख • प्रमिला कौशल

पड़ोसियों को आपस में प्यारमुहब्बत से रहना चाहिए. कभी बेकार का झगड़ा मोल नहीं लेना चाहिए. इस का नुकसान दोनों को ही होता है. ऐसा आप ने बहुत दफा पढ़ा या सुना होगा. बहुत हद तक यह सही भी है. हमारे रोजमर्रा के समय का कुछ न कुछ भाग तो पड़ोसियों के साथ अवश्य ही बीतता है. जब कि रिश्तेदार, भाईबंधुओं से मिलनाजुलना तो बस छुट्टियों में ही हो पाता है या फिर दुखसुख, शादीब्याह के मौकों पर.

आजकल किसी के पास इतनी फुरसत नहीं कि वह अपना घर छोड़ कर दोचार हफ्ते के लिए किसी रिश्तेदार के पास जा कर रह आए.

पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे, जिन में परिवार के लोग छोटेमोटे दुखसुख आपस में बांट लेते थे और एकदूसरे की जरूरतें भी पूरी कर देते थे. बाहर पड़ोसियों के घरों में झांकने की जरूरत ही नहीं पड़ती थी. अपने ही घर में इतने स्त्री, पुरुष व बच्चे होते थे कि साथ के लिए, बातचीत के लिए बाहर जाने की जरूरत ही नहीं रहती थी. उदाहरणतः घर की कोई स्त्री बीमार हुई तो उस का काम घर की दूसरी स्त्रियों ने मिलबांट कर कर लिया. यदि एक पुरुष बाजार का काम नहीं कर सका तो दूसरा उस की जगह बाजार हो आया.

परंतु अब परिवार बहुत छोटे हो कर रह गए हैं. अधिकतर पतिपत्नी और दो या तीन बच्चों का परिवार हो गया है. ऐसे में





एक ख़ास मीनू बजटशुदा गृहिणी के लिए

**बस देखते जाइये.
कैसे ये नरम, रसीले,
मुलायम, मज़ेदार न्यूट्रीला
चंक्स की मदद से
महँगाई को मात देती हैं**



**चीजें महँगी होती जा रही हैं
न्यूट्रीला को छोड़कर.**

बाकी प्रोटीनसमृद्ध आहारों से इसकी तुलना कर देखिये. ३½ लीटर दूध, २४ अंडे, एक किलो गोश्त. है ना सुखद आश्चर्य?

अब विविधता आपको महँगी नहीं पड़ेगी

वही पुरानी दाल, गोभी, बैंगन–तंग आ गये हैं सब. पर कुछ ख़ास बनाने चलो तो बहुत ख़र्च होता है. आसानी से पचने वाले न्यूट्रीला चंक्स अपने रोज़ाना के खाने में मिलाइये, और कम ख़र्च में दावत मनाइये. करना: सिर्फ इतना है—इसे थोड़ी देर नमकीन पानी में भिगोइये, और निचोड़िये, धोकर फिर निचोड़िये. फिर अपने मुख्य व्यंजन में मिलाइये.

गोश्त की मात्रा बढ़ाने का किफ़ायती तरीका.

अगली बार अपने सामान्य इस्तेमाल से आधा गोश्त ख़रीदिये, न्यूट्रीला मिला कर उसकी मात्रा बढ़ाइये, वो हमेशा–सा मज़ेदार रसीला बनेगा. २५० ग्राम और १०० ग्राम के पैकों में से अपना मनपसंद चुनिये.

बढ़े, तो बढ़ता ही जाये

चुनिंदा सोयाबीनों से बनी २०० ग्राम न्यूट्रीला पानी में भीगने निचुड़ने और पकने के बाद लगभग १ किलो हो जाती है. है न कमाल की किफ़ायत! उच्च प्रोटीन पुष्टिकरता के साथ–स्वाद ही स्वाद.

उच्च प्रोटीन पौष्टिकता के साथ–स्वाद ही स्वाद



रुचि प्रा. लि. का
उत्कृष्ट उत्पादन

100% शाकाहारी

न्यूट्रीला सोया आहार

स्वाद का भंडार, कुदरत का उपहार

everest/81/RH/



यदाकदा घर आए पड़ोसी का सम्मान पूरी शालीनता से करें.

पड़ोसी की मदद की अक्सर जरूरत रहती है. पड़ोसियों को आपस में एकदूसरे का बहुत सहारा रहता है.

आप के सिर में दर्द है, घर में दर्द की गोली नहीं है तो पड़ोसी का दरवाजा खटखटाया जाता है. अचानक रात को मेहमान आ गए हैं और आटा कम पड़ गया है तो पीछे के दरवाजे से पड़ोसी के यहां से ही मंगाया जाता है. फिर भला पड़ोसी से दुश्मनी मोल लेना या मनमुटाव रखना कहां की समझदारी है?

हम सब को आजकल अपने रिश्तेदारों से काफी शिकायतें रहने लगी हैं, जिस का नतीजा यह हुआ है कि हमारा समाज दोस्तों और पड़ोसियों तक ही सिमट कर रह गया है.

यदि पड़ोसी से आप की खूब पटने लगी है तो एक ही परिवार के सदस्यों का सा माहौल हो जाता है. आप के घर का हर भेद उसे पता होगा. आप की रसोई में आज क्या पक रहा है, उसे मालूम होगा. और तो और आप के पति से आप की क्या बात होती है, इस का भी उसे ज्ञान हो जाएगा. आप की कितनी आमदनी है और आप कितना बचाती हैं, इस की खबर भी उसे होगी. दिनरात का साथ जहां होता है, वहां कुछ भी छिपा रहना मुशकिल हो जाता है.

परंतु हर बात की कोई सीमा अवश्य होनी चाहिए. इस बात की क्या गारंटी है कि आप के अपने पड़ोसी से संबंध सदा अच्छे ही बने रहेंगे? मनुष्य के स्वभाव में ईर्ष्याद्वेष अवश्य शामिल होता है. जो आप के पास है, आप का पड़ोसी वह अपने पास न होने के कारण कभी आप से ईर्ष्या भी तो कर सकता है और अवसर आने पर आप को नुकसान भी पहुंचा सकता है.

आपसी संबंध

दो पड़ोसियों में आपसी संबंध बनाने में घर की स्त्रियों का बहुत हाथ होता है. नारी अपने स्वभाव से लाचार—जरा सा प्यार होते ही कुछ भी छिपा कर नहीं रख सकती.

आपस में स्नेहभाव रखना कुछ और बात है, घर के सारे भेद बता देना कुछ और. दोनों में बहुत अंतर है. हम सभी बहुत दफा इस अंतर को भुला देते हैं, जिस से स्नेह करने लगते हैं, उसे घर का भेदी बना डालते हैं.

पड़ोसी से जरूरत से ज्यादा मेलजोल हो तो गृहिणी का घर के और कामों की ओर ध्यान कुछ कम हो जाता है. रचना का ही किस्सा लीजिए. वह शिमला में एक ही घर को बांट कर बनाए गए दो फ्लैटों में से एक में रहती है. दूसरे फ्लैट में उस के पति के साथ दफ्तर में काम करने वाले एक महाशय रामनाथ रहते थे. रचना और रामनाथ की पत्नी में बहुत बनी हुई थी. पुरुषों के दफ्तर जाते ही दोनों बालकनी में आ खड़ी होतीं और बातों में मशगूल हो जातीं. एक घंटा तो पलक झपकते ही बीत जाता. फिर दोनों नहाधो कर कभी किसी सखी के यहां या फिर बाजार के लिए निकल जातीं.

दोपहर को लौट कर, सब्जी का डोंगा एकदूसरे के घर उठाए इकट्ठी बैठ कर खाना खातीं, फिर एक ही आंगन में धूप सेंकतीं, गप्पें हांकती और मर्दों के घर लौटने का इंतजार करतीं.

दोनों के घरों में सरकारी नौकरों को प्राप्त सभी सहूलतें थीं, इसलिए घर के काम की विशेष चिंता न थी. बच्चे स्कूल से आते, नौकरों के हाथों से खाना ले कर किसी तरह भूख मिटा कर बाहर खेलने चले जाते और जब तक अंधेरा न हो जाता, घर न लौटते.

पुरुषों का भी दफ्तर आनाजाना, उठनाबैठना सब साथसाथ ही होता था. वे भी दफ्तर से लौट कर कभी ताश खेलने की खातिर तो कभी गप्पें मारने के लिए एकदूसरे के घर में देर रात गए तक बैठे रहते.

कुछ वर्षों के बाद रामनाथ की बदली दूसरी जगह हो गई. दोनों परिवारों को जाहिर है, बिछुड़ने का बहुत दुख था, लेकिन और कोई चारा भी तो नहीं था. कुछ महीने वह फ्लैट खाली रहा. रचना का समय अब अकेले कटना मुशकिल हो रहा था. उस ने समय काटने की गर्ज से अपना रुख रसोई की तरफ किया. बच्चों ने भी, पति ने भी उस के बनाए खाने की बहुत तारीफ की, जिस से रचना की रुचि रसोई की तरफ और बढ़ी. केवल रसोई में खुद खाना बनाने से ही सौपचास रुपए बचने लगे.

धीरेधीरे और समय मिलने से बच्चों की पढ़ाई की तरफ भी ध्यान गया तो वहां काफी बुरा हाल था. शाम की गपबाजी और ताश का दौर खत्म हो जाने से रचना के पति को भी तीनचार घंटे का खाली समय मिल जाता था. इस समय का उपयोग वह पत्नी के कहने पर बच्चों को पढ़ाने में करने लगे.

इन सब बातों का एहसास रचना को अपनी पड़ोसन से बिछुड़ने पर ही हुआ. ऐसा ही, कुछ रामनाथ की पत्नी ने भी अवश्य महसूस किया होगा.

तो आप ने देखा न, पड़ोसी से जरूरत से ज्यादा प्यार या दोस्ती कितनी भारी पड़ती है. इन्हीं सब बातों को मद्देनजर रख कर हमें अपने पड़ोसी से दोस्ती रखनी चाहिए. पड़ोसी से प्रेमभाव रखना या उस का शुभचिंतक होना बहुत जरूरी है, परंतु उस से दोस्ती किस सीमा तक होनी चाहिए, इस बात को जरूर ध्यान में रखना चाहिए. •

बिजली गिरी भी तो कहां

पिछले दिनों लंदन में धातु के तारों वाली ब्रा (ब्रेजियर) पहन कर एक महिला ने स्वयं ही मौत को निमंत्रण दे डाला. ब्रा धातु की होने के कारण बिजली गिरने का निमित्त बन गई.

आयरलैंड की यह 72 वर्षीय महिला जब भयंकर तूफान व वर्षा के बाद एक पेड़ के नीचे मृत पाई गई तो चिकित्सकों ने उस के सीने के घावों को देख कर बताया कि धातु के तारों वाली उस की ब्रा के कारण गिरी बिजली से उस की मृत्यु हो गई.

नारंग

मैं मायके चली जाऊंगी

लेख • सीता किशोर

ससुराल में रह कर लड़की द्वारा बारबार मायके जाने की धौंस देना कहां तक जायज है?



अनिमेष के हाथ में लंच बाक्स थमाते हुए रोली ने कहा, "मैं मां के घर जा रही हूं, शाम को मुझे वहां से लेते आना."

"और विकी?"

"उसे साढ़े तीन बजे स्कूल से बुलवा लूंगी."

"पर अभी दो दिन पहले ही तो गई थीं तुम."

"फिर वही बात. कितनी दफा कहा है, इस विषय में मैं तुम्हारी कोई बात नहीं सुन सकती. मैं ने तो शुरू ही में कह दिया था..."

"बसबस, हो गईं न शुरू? ठीक है. जैसा कहती हो वैसा ही करूंगा."

और अनिमेष धड़धड़ सीढ़ियां उतर कर दफ्तर चला गया.

यह कहानी केवल रोली और अनिमेष की नहीं है, घरघर में आए दिन यही कुछ हो रहा है. घर में बहुएं हैं तो उन का मायका होगा ही. यदि मायका स्थानीय हो तो क्या कहना, बहू चाहेगी कि वह प्रतिदिन अपने मातापिता, सगेसंबंधियों से मिले, उधर

जो स्विश से दाढ़ी बनाए उसकी टक्कर में कौन आए !

नाम: सुनील गावस्कर
उम्र: 33 साल
क़द: १६२ सें.मी. (५'५")
राष्ट्रीयता: भारतीय
खेल: क्रिकेट
दर्जा: श्रेष्ठतम ओपनिंग बैट्समैन
ब्लेड: नया स्विश स्टेनलेस

नया स्विश स्टेनलॅस- विजेताओं का ब्लेड. ज़्यादा शेव... ज़्यादा साफ़ और ज़्यादा मुलायम शेव के लिए बनाया गया ब्लेड। साथ ही आपको एक और विशेष चीज़ मिलती है-आत्मविश्वास !

इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं जो सुनील गावस्कर का कहना है- ''बाज़ार में यह सबसे अच्छा ब्लेड है !'



Vision/BB/821/Hin

सास चाहेगी कि बहू घर में आ गई है तो पूरा काम वही संभाले, ताकि उसे पड़ोस में घूमने का अवसर मिल सके. यहीं पर दो पीढ़ियों के स्वार्थ टकरा जाते हैं और इस टकराव से जो चिनगारी निकलती है, उस से घर की सुखशांति सब नष्ट हो जाती है.

हमारे पड़ोस में एक परिवार है. उन के दामाद का तबादला इसी शहर में हो गया. उन के दामाद के साथ उन के बूढ़े मांबाप भी रहते हैं, फिर भी प्रत्येक रविवार को पड़ोसी की लड़की अपने मायके चली जाती है. बेचारा पति सप्ताह भर दफ्तर में काम कर के रविवार को घर पर आराम करना चाहता है, पर पत्नी की जिद के आगे उस की एक नहीं चलती. पत्नी का ठोस तर्क होता है, 'मैं तो हफ्ता भर तुम्हारे मांबाप के पास रहती हूं. तुम क्या एक दिन भी मेरे मांबाप के साथ नहीं रह सकते?'

उधर दामाद की मां चाहती है कि कम से कम रविवार को तो बेटा उस के पास रहे ताकि सुखदुख की बातें की जा सकें. उधर रविवार ही क्यों अपितु हर छोटीमोटी छुट्टी में भी पत्नी का मायके जाना आवश्यक है. पत्नी का कहना है कि स्थानीय मायका होने का यही तो सुख है.

इस प्रकार हर छुट्टी के दिन मायके जा कर स्त्रियां यह क्यों नहीं सोचतीं कि घर में मां के अतिरिक्त और भी तो सदस्य हो सकते हैं, जिन को उस की वजह से कठिनाई हो सकती है. घर में भाभियां हो सकती हैं, छोटी बहनें हो सकती हैं. रविवार को हर कोई अपनी छुट्टी का अपने ढंग से सदुपयोग करना चाहता है — कहीं घूम कर या बहुत दिनों से छोड़ रखा काम कर के. पर यदि घर में सवेरे से शाम तक कोई अतिथि सपरिवार आ धमके तो उन के काम का क्या होगा? प्रत्यक्ष रूप से कोई कुछ भी कहे, पर अंदर ही अंदर तो नाराजगी होती ही होगी.

उस दिन बाजार में इंदु मिल गई. बहुत दिनों बाद मिलना हुआ था. खूब व्यस्त दीख रही थी. उस की लड़की की शादी थी. कहने लगी, "क्या बताऊं, घर में कोई मदद करने वाला नहीं है. एक बहू है, उसे अपने मायके से ही फुरसत नहीं है. सप्ताह भर कालिज का बहाना और हर छुट्टी में मायके जाने की जल्दी. कभी कहती हूं, "बहू, शादी में कुल एक महीना रह गया है, जरा थोड़ी सिलाई ही कर दो तो टका सा जवाब देती है कि मुझे तो समय नहीं है, दरजी को दे दीजिए. बेटे से कुछ नहीं कहती, क्योंकि मैं नहीं चाहती कि उन के आपसी संबंधों में दरार का कारण मैं बनूं."

अभी उस दिन रेशमा अपनी मां के घर गई थी, पर जल्द ही वापस आ गई. पता चला कि उस की मां को उस दिन निमंत्रण पर कहीं जाना था. मां ने सोचा तो जरूर कि निमंत्रण पर जाऊं या न जाऊं, पर अंत में जाना ही ठीक समझा. रेशमा तो हर सप्ताह आती ही है. रिश्तेदारी में न जा कर संबंध तोड़ देने से अपने यहां ऐसे मौके पर कौन आएगा? पर रेशमा ने बात की गहराई को न समझ कर इस का बुरा मान लिया और मां के वापस आते ही वह वहां से चली आई.

हर बात की सीमा

ऐसा प्रत्येक घर में हो रहा है. एक हवा सी चल गई है, मायके दौड़ने की. मायके जाना गलत नहीं है, शादी के बहुत दिनों बाद तक भी मायके का मोह नहीं छूटता. जहां हमारा बचपन बीता, बड़े हुए वहां का मोह एकदम छूटना संभव नहीं है. फिर भी हर बात एक सीमा में उचित है. कुछ घरों में बहुओं के मायके जाने पर जो कड़ा प्रतिबंध रहता है, यह उसी की प्रतिक्रिया है. एक ही शहर में मायका होने पर भी बेटियां मां से मिलने को तरस जाती हैं, कभी एकाध घंटे के लिए इजाजत भी मिलती है तो एकदम समय से वापस लौटना पड़ता है. यदि कभी घंटा, आध घंटा की देरी हो जाती है तो सास का मूड बिगड़ जाता है और बहू के कोई अपराध न होने पर भी अपराध बोध से ग्रस्त हो जाती है.

ऐसा भी सुना है कि पुराने जमाने में बहुएं ससुराल से तभी मायके जाती थीं, जब



...और अब, अपने कपड़ों में चकमक सफेदी लाइए— उन्हें स्पार्क से धोइए !

स्पार्क, पूरे परिवार के लिए उपयोगी अद्‌भुत डिटर्जेण्ट बार जो आपकी अधिक कपड़ों की धुलाई की समस्या का बहुत किफायती समाधान करता है। आपके कपड़े जब स्पार्क से धुलें तब इन्हें मिले जगमग... चकाचौंध सफेदी !-

स्पार्क

एक सरकारी उपक्रम का उत्तम उत्पादन

केरल स्टेट डिटर्जेण्ट्स एण्ड केमिकल्स लिमिटेड, कुट्टीपुरम ६७९ ५७१

FDS KSDC 3693A HIN

जहां कोई शादीब्याह या जनेऊ, मुंडन होता था, फलस्वरूप दोचार वर्ष निकल जाना तो मामूली बात थी. ऐसा कर के बहुओं पर अन्याय ही होता था. पर आज समय बदल गया है. आज की पीढ़ी उस प्रकार अनुशासन में रह ही नहीं सकती.

उमा स्कूल में अध्यापिका है. घर में स्कूल जाने वाले दो छोटे बच्चे हैं. उस के घर में व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं. सप्ताह भर अपने काम से अवकाश नहीं रहता और छुट्टी के दिन मायके की तैयारी. न बच्चों के कपड़ों में बटन होते हैं और न पति के कपड़ों पर इस्तिरी. भंडार घर में भी उल्टासीधा सामान बिखरा रहता है. सोने के कमरे में जाले हैं. सब का एक ही उत्तर होता है, समय नहीं है. हर छुट्टी में मायके जाना उस की समझ से आवश्यक है. पति उस की इसी आदत से रुष्ट रहता है, पर उस की बला से.

मायका हो या ससुराल, सब अपनीअपनी जगह पर ठीक हैं. न तो पहले का समय ठीक था और न आज का ही. समयसमय पर मायके या ससुराल दोनों की कमी खटकती है. अतएव इन दोनों के बीच संतुलन बना कर रखना ही उचित तथा व्यावहारिक है.

मालती ने अपनी ननद का घर नहीं देखा, जब कि दोनों एक ही शहर में रहती हैं. कारण? वही हर छुट्टी में ननद मायके जा पहुंचती है, फिर भाभी को उस का घर देखने का अवसर कैसे मिले.

आप सोच कर तो देखिए, कोई ऐसा भी तो हो सकता है जो आप से आप के घर आ कर मिलने को उत्सुक हो. हर व्यक्ति को छुट्टियों में ही कहीं जाने का अवसर मिलता है, पर यदि आप हर छुट्टी में अपने घर से अनुपस्थित रहेंगी तो आप के घर कोई कब आ पाएगा?

कभी छुट्टियों में घर पर रह कर तो देखिए— केवल मेहमान बनने में ही आनंद नहीं है, मेहमानों का स्वागत करने में भी आनंद है. अपने घर में बिताया हुआ आप का हर क्षण सार्थक होगा. ●

नए रिश्ते

कहानी • हरिश्चंद्र

बादल उमड़ आए थे. वर्षा थमने का नाम ही नहीं ले रही थी. कैसे कोई होटल तक खाने जाए? तीनों बैठे सिगरेट पर सिगरेट फूंके जा रहे थे. कभीकभी वे खिड़की खोल कर आसमान की ओर देख लेते. एक ने कलाई घड़ी पर नजर डालते हुए कहा, "साढ़े दस बज गए. अभी तक पानी बंद नहीं हुआ. अब तो होटल और सारी दुकानें भी बंद हो चुकी होंगी. अब या तो स्टोव जलाओ या भूखे सो रहो."

दूसरे ने कपड़े उतारते हुए कहा, "यार मोती, अपने घर में है ही क्या. शायद चने पड़े हों, भून लो और एकएक प्याली चाय तैयार करो. अरे पुष्पाल, देखना, क्या डबल रोटी जरा भी नहीं बची?"

"है."

"तो फिर काटो."

तीनों मित्र भूख मिटाने के प्रयत्न में लग गए. स्टोव की आवाज गूंजने लगी जैसे बारिश और जोर से होने लगी हो. वे आपस में चिल्लाचिल्ला कर बातें कर रहे थे. अचानक जोर से दरवाजा खटका. "इतनी रात गए मूसलाधार पानी में कौन हो सकता है? शायद हवा से हिला होगा," उन में से एक ने कहा.

"नहीं, कोई है. इंद्र, दरवाजा खोल कर देखो तो कौन है."

इंद्र आगे बढ़ा. अन्य दोनों ने भी अपने हाथ रोक दिए. दरवाजा खोल कर इंद्र ठिठक गया. उसे इस तरह सहमा हुआ देख कर हाथ के इशारे से पुष्पाल ने पूछा, "कौन है?"



इंद्र ने आंखों की पुतलियों को इस तरह नचाया, जैसे वे कह रही हों, 'आ कर देखो.' फिर वह कई कदम पीछे हट गया.

उन तीनों मित्रों के बीच नंदा एक पहेली थी जिस का हल किसी के पास नहीं था. जबजब वे उसे सुलझाने की कोशिश करते वे खुद उलझते जाते.

सरिता, बीस साल पहले, सितंबर, 1962

वहा ठंड से कांपती एक सुंदर युवती खड़ी थी– पानी से लथपथ. भीगे वस्त्र शरीर से चिपके हुए थे, लटें गालों पर बिखरी हुई थीं.

"आप कौन हैं?" मोती ने पूछ.

"क्या वह नहीं हैं?" कहती हुई स्त्री अपनी साड़ी निचोड़ने लगी.

"वह कौन?" पुष्पाल ने पूछा.

"जाना साहब," स्त्री ने उसे आश्चर्य से देखते हुए उत्तर दिया.



"वह तो इस मकान से जा चुके हैं. उन के बाद अब हम लोगों ने यह मकान किराए पर ले लिया है. आप चाहें तो अंदर आ सकती हैं." मोती ने इशारे से उसे बुलाया.

स्त्री चौंक पड़ी. मगर घबराहट में वह अंदर चली आई. इंद्र ने अपना तौलिया उस की तरफ फेंक दिया.

"क्या आप के घर में कोई स्त्री नहीं है?"

"जी, नहीं," मोती ने बताया.

"फिर मैं..." स्त्री ने अपने भीगे कपड़ों की तरफ इशारा किया.

इंद्र अपनी पैंट और कमीज दे कर उसे दूसरे कमरे की तरफ ले गया.

युवती मरदानी पोशाक में कुछ अजीब सी लग रही थी. उस ने तौलिए से अपना शरीर ढक लिया और गरमी पाने के लिए स्टोव के पास आ बैठी. तीनों मित्र आश्चर्यचकित थे. वे एकदूसरे की तरफ देख रहे थे, मगर कुछ बोल नहीं रहे थे. इंद्र उसे घूरे जा रहा था. पुष्पाल चाय बनाने में व्यस्त था. मोती ने चाय का प्याला और डबल रोटी का टुकड़ा उस की ओर बढ़ाते हुए पूछा, "हां, तो आप ने बताया नहीं, आप कौन हैं?"

पर वह चुप ही बैठी रही. मोती ने फिर पूछा, "क्या आप जाना साहब की कोई रिश्तेदार हैं?"

"जी, नहीं, मेरा उन से कोई रिश्ता नहीं है."

तीनों ने फिर एकदूसरे को देखा.

स्त्री ने चाय के कई घूंट पी कर पूछा, "क्या आप लोग बता सकते हैं कि अब वह कहां रहते हैं?"

"सुनते हैं अपने को किसी बोगस कंपनी का एजेंट बता कर उन्होंने कुछ व्यापारियों को ठगा था, इसलिए पुलिस उन्हें पकड़ ले गई. हमें इतना ही मालूम है."

"उस ने मुझे भी धोखा दिया. मैं तो कहीं की भी नहीं रही."

"धोखा...आप से!" इस बार पुष्पाल ने प्रश्न किया.

स्त्री ने नजरें झुका लीं. वह बोली कुछ नहीं.

"आप चिंता न करें, हम आप की मदद करेंगे. आप हमें अपने बारे में सब कुछ बता दीजिए." मोती ने स्टोव बुझा दिया. कमरे में एकाएक सन्नाटा छा गया. बारिश रुक चुकी थी. बादल फटने लगे थे.

"मैं एक असहाय स्त्री हूं, जिस से जाना ने प्रेम जताया था. कई दिनों से उस का पता न चला तो मैं उस की तलाश में निकल पड़ी. इस से ज्यादा आप लोग मुझ से कुछ न पूछें. मैं कल सवेरे ही कहीं चली जाऊंगी." इतना कह कर स्त्री मौन हो गई.

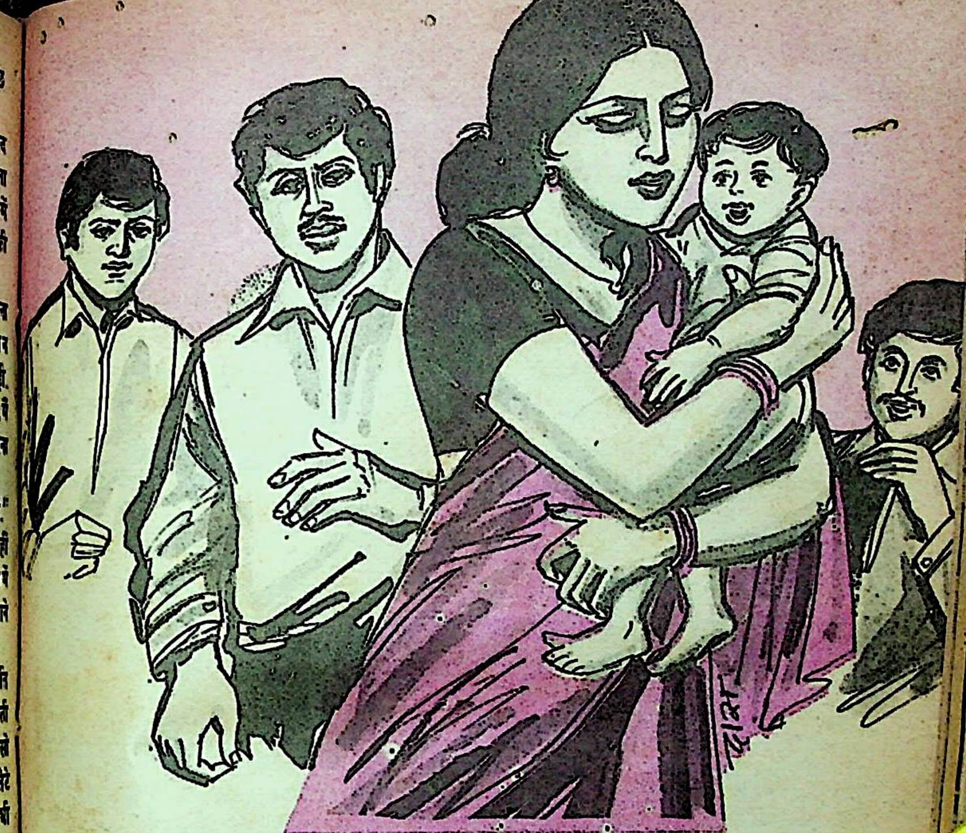
पुष्पाल बोला, "आप हमारे यहीं रहें."

मोती ने भी कहा, "हांहां, आप यहीं हम लोगों के साथ रहें. हम कल से होटल में न खा कर आप के हाथों का पकाया हुआ खाने लगेंगे."

इंद्र ने मुसकरा कर अपनी स्वीकृति दी. कुछ देर तक आपस में यों ही बातें होती रहीं, फिर युवती दूसरे कमरे में जा कर सो गई और वे तीनों अपनीअपनी जगह लेटे रहे. उन में से हर एक दुखी था, खुश भी और चकित भी.

नंदा इस घर की नौकरानी भी बन गई और मालकिन भी. वह रसोई से ले कर हर एक के टूटे हुए बटन टांकने तक के काम करती. 10 बजे तीनों मित्र दफ्तर चले जाते. घर में अकेली नंदा रह जाती. वह सब के कपड़े साफ करती, सुखाती और इस्तिरी कर के उन्हें अलमारियों में सजा देती.

नंदा से उन तीनों को आराम ही नहीं, घर और जिंदगी में सरसता का आभास भी होने लगा था. न जानें क्यों नंदा के आते ही तीनों नवयुवक आदर्शवादी और कोमल स्वभाव के हो गए. कोई अस्तव्यस्त न रहता, न अश्लील गाने गाता, न भद्दे मजाक करता, न कभी नंदा के रूपरंग की बातें चलतीं. वह भी आवश्यकता से अधिक किसी से न बोलती, न किसी की तरफ नजर उठा कर देखती. पर उस की उपस्थिति



"कोई नीच नहीं है, नीच मैं हूं," नंदा बच्चे को गोद में लिए हुए बोली.

पोखर के स्थिर जल में उस कंकड़ी के समान थी, जिसे फेंकते ही कई लहरें उठीं और हर लहर ने तीनों के मन को अलगअलग ढंग से छू लिया. इंद्र की सजधज पहले से अधिक हो गई थी. वह किसी न किसी बहाने नंदा के पास ही मंडराया करता. अन्य दोनों मित्र इंद्र की इस उच्छृंखलता पर मन ही मन खीजा करते.

एक दिन सहसा बाहर का दरवाजा खटका. दोपहर का समय था. सब के सब दफ्तर जा चुके थे. नंदा का दिल धड़कने लगा. उस ने दरवाजा खोला, सामने इंद्र मुरझाई हुई सूरत बनाए खड़ा था.

"मेरी तबीयत आज ठीक नहीं. छुट्टी ले कर चला आया हूं," वह बोला.

"क्या हुआ है?" नंदा ने पूछा.

"दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है, हरारत भी है," कहते हुए वह चारपाई पर जा गिरा, कुछ इस तरह कि नंदा सहमी सी खड़ी रह गई.

"कहिए तो आप के सिर में मालिश कर दूं?"

"कर दो," वह कराह कर बोला.

नंदा सिरहाने की ओर जमीन पर बैठ गई. कुछ देर तक इंद्र चुपचाप पड़ा रहा. फिर उस ने कई करवटें बदलीं. सहसा उस ने नंदा के हाथ पकड़ लिए. वह चुप रही.

"तुम्हारे हाथ दुख गए होंगे."

"नहीं."

"रहने दो."

"क्या दर्द जाता रहा?"

"बढ़ गया है," वह मुसकराया. फिर कुछ क्षण बाद बोला, "नंदा, तुम इतनी खोईखोई सी क्यों रहती हो? जी चाहता है,

आनंदमय भविष्य



















विकास

कैश सर्टिफ़िकेट में अपनी पूँजी लगाइये



सिंडिकेट बैंक

मैं तुम्हारी खोई हुई खुशियां वापस ला दूं."

"मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिए," वह हाथ छुड़ाती हुई बोली.

"नहीं, मुझ से कहो, तुम्हारा सुख किस ने लूटा है, क्यों लूटा है? क्या फिर किसी के प्यार से तुम्हारे जीवन में बहार आ सकती है? नंदा, मेरी तरफ देखो, इधर, मेरी आंखों में..." इंद्र भावनाओं के तूफान में जा फंसा था. उस ने नंदा के कंधे झंझोड़ दिए, "बोलो भी, चुप क्यों हो? मैं तुम से प्रेम करता हूं. मुझ पर विश्वास रखो."

नंदा उठी और रसोईघर में चली गई. इंद्र उस की तरफ देखता रह गया.

उसी दिन से नंदा उस से खिंचीखिंची सी रहने लगी. अन्य दोनों मित्रों ने भी भांप लिया कि इंद्र और नंदा में कोई बात हो गई है. इंद्र छिछोरा है, जरूर इस ने कोई गलती की होगी.

समय यों ही गुजरता रहा. नंदा के मुख पर पीलापन छाने लगा. सहसा एक दिन फिर दोपहर को दरवाजा खटका.

"आज लंच बाद छुट्टी हो गई. तुम्हारे लिए एक साड़ी लाया हूं." मोती अंदर कदम रखते हुए बोला.

"अभी पिछले महीने तो आप लोग साड़ियां लाए थे. अभी इस की क्या जरूरत थी?"

"बस पसंद आ गई, लेता आया. रख लो. मुझे शलगम बहुत पसंद हैं, लाया हूं. जरा बड़ेबड़े काट कर तलना और हो सके तो एक प्याली चाय भी बना डालो."

वह लेट कर अखबार पढ़ने लगा.

जब नंदा शलगम और चाय ले कर आई तो मोती बोला, "बैठ जाओ, तुम्हें किसी चीज की जरूरत हो तो मुझ से कहना. यह मत समझना कि यहां तुम्हारा कोई है ही नहीं. जब तक मैं जिंदा हूं, तुम्हें कोई तकलीफ न होने दूंगा."

"आप लोगों की मुझ पर बड़ी कृपा है."

"पहले जो भी बात रही हो, अब तो तुम अपने घर की लगती हो. अच्छा, जाओ, अपना काम करो. एक गिलास पानी दे जाना."

वह अब और उदास रहने लगी थी. उस के चेहरे का रंग और भी पीला पड़ने लगा था. पुष्पाल ने उसे हस्पताल ले जा कर दिखाने का जिम्मा अपने ऊपर ले लिया.

रास्ते में उस ने पूछा, "नंदा, उदास क्यों रहती हो?"

"ऐसी तो कोई बात नहीं है."

"मुझ से कहो, मुझे अपना समझो. मैं तुम्हारे लिए सब कुछ कर सकता हूं."

"आप लोगों का एहसान यों ही क्या कम है?" नंदा ने कहा.

"तुम गलत समझ रही हो. मैं तुम से कुछ भी नहीं चाहता, यहां तक कि तुम्हारा प्यार भी नहीं. बस, मैं यही चाहता हूं कि मुझे अपनी सेवा का अवसर दो," कहतेकहते उस ने नंदा के हाथ अपने हाथों में ले लिए.

पर वह चुप थी जैसे किसी आने वाले खतरे से भयभीत हो. पुष्पाल तो उस की ओर देखता ही रह गया, जब नर्स ने उसे धीरे से बताया कि नंदादेवी के पेट में चारपांच महीने का बच्चा है, इसी लिए यह अस्वस्थ रहती हैं.

दोनों ही चुपचाप लौट आए. रास्ते में एक बार भी पुष्पाल ने हमदर्दी न जताई.

शाम होतेहोते और दोनों मित्र भी जान गए कि नंदा गर्भवती है. पर यह गर्भ है किस का, हरेक यही सोचने लगा.

मोती ने गंभीर स्वर में कहा, "यह काम अच्छा नहीं हुआ."

"मुझ से क्यों कहते हो? इंद्र से कहो. वही छुट्टियां ले कर घर पर पड़ा रहता था," पुष्पाल बोला.

सुनते ही इंद्र चिढ़ उठा, "मुझ पर इलजाम न लगाना. नईनई साड़ियां तो मोती ला कर दिया करता था. और पुष्पाल, तुम भी अब भोले क्यों बनते हो? जब भांडा फूटने

को हुआ तो हस्पताल ले गए."

'शायद तीनों मित्रों में आपस में झगड़ा हो जाता कि नंदा हाथों में चाय की ट्रे लिए हुए आ गई. सब के सब चुप हो गए.

देखते ही देखते घर का वातावरण बदल गया. नंदा ने अनुभव किया कि अब उन की आंखों में श्रद्धा और दया की झलक नहीं है. वे आपस में भी नहीं हंसतेबोलते. बातबात पर झड़प हो जाती है और एकदूसरे पर व्यंग्य भी कसे जाते हैं.

उस के चेहरे का पीलापन एक दिन वेदना की लाली में बदलने लगा. डाक्टर और नर्स को बुलाया गया. बच्चा पैदा हुआ. नर्स कई दिनों तक उस की देखभाल करने के बाद चली गई.

अकसर रात में बच्चा रो पड़ता. तीनों चौंक पड़ते. फिर तीनों ही अपनेअपने लिहाफ में मुसकराते. उफ, बच्चे की आवाज कितना प्यार जगाती है.

मोती पूछता, "नंदा, बच्चा क्यों रो रहा है?"

"कुछ नहीं, यों ही."

"बच्चे को ओढ़ा कर रखना," पुष्पाल कहता.

"चुप हो जाओ, बेटा, हमें सोने दो. तुम बड़े हो जाओगे तो हम तुम्हें चाकलेट खिलाएंगे," इंद्र कहता.

"हम तो इस को एक छोटी सी ट्राइसिकल खरीद देंगे."

"मैं इस के लिए पालना लाऊंगा, खूब अच्छा सा, जिस में पड़ापड़ा यह सोएगा और रोएगा भी."

नंदा उन तीनों की बातें सुनसुन कर हंसा करती. उस के बच्चे ने उन के मन में दबा हुआ वात्सल्य जगा दिया था.

कुछ ही दिनों में सुंदर बालक गोद में खेलने लगा. उस की मधुर मुसकान उन तीनों को व्याकुल किए रहती. हर एक उसे गोद में उठा कर खिलाता, उस के साथ जानवरों और पक्षियों की बोलियां बोलता. उसे नएनए खिलौनों से बहलाता. दफ्तर जाते समय उस के गाल पर प्यार की थपकी दे कर जाता. कभीकभी कुछ दूर जा कर भी लौट आता. उसे प्यार करता और चला जाता.

तीनों मित्रों के मन में बच्चे के प्रति प्रेम का अंकुर बढ़ता रहा. जब उस की पहली वर्षगांठ आई तो तीनों ही उस के लिए चीजें लाए— ट्राइसिकल, पालना, चाकलेट, मिठाइयां, गुब्बारे और कपड़े. नंदा बच्चे को नहलाने और संवारने में लगी हुई थी और तीनों मित्र आपस में बातें कर रहे थे.

"यह मोती को पिताजी कहेगा, उस की मां के बड़े हितैषी जो ठहरे."

"चुप रहो. पुष्पाल, ऐसी बात फिर कभी न कहना," मोती ने उसे डांटा.

"तो छुट्टियां ले कर इंद्र ही घर जम रहता था, उस की हरकत हो सकती है."

इंद्र उत्तेजित हो उठा, "मैं तुम लोगों को बड़ा भाई समझता हूं और उसी तरह तुम्हारा आदर भी करता हूं. अगर तुम ने मेरे चरित्र पर संदेह किया तो मैं अभी यहां से चला जाऊंगा. मैं नीच नहीं हूं."

"कोई तो हम में नीच है ही वरना..."

"कोई नीच नहीं है, नीच मैं हूं," नंदा बच्चे को गोद में लिए हुए बोली, "मैं इस चिनगारी को अपने गर्भ में ले कर यहां आई थी. मैं बहुत दिनों से देख रही हूं, आप लोग एकदूसरे पर व्यर्थ ही संदेह कर रहे हैं."

"आखिर हमें भी तो बताओ, इस का बाप कौन है?" मोती ने पूछा.

"बाप की जगह पर भी मेरा ही नाम ले लो. समाज स्त्री के साथ तभी न्याय कर सकता है, जब संतान को जन्म देने के बाद उसे अपना कहने का अधिकार प्राप्त हो. नारी की भूल से अगर सृष्टि फलतीफूलती है तो मुझे ग्लानि नहीं," कहतेकहते उस की आंखें डबडबा आईं, "मुझे भी एक मित्र समझो."

तीनों युवकों ने बालक को बारीबारी से गोद में ले कर प्यार किया. कमरे का वातावरण बदल गया. नंदा ने मुसकराते हुए अपने आंसू आंचल से पोंछ डाले.

◆



हुस्न खामोश था...

रंग हर पल बदलती रहीं चूड़ियां
बिजलियों सी दमकती रहीं चूड़ियां.

हुस्न खामोश था आईनों के निकट
किंतु दिल बन धड़कती रहीं चूड़ियां..

नर्म हाथों को छूती रही यूं हवा
बेखुदी में बहकती रही चूड़ियां.

गंध आ कर गले से लिपट जो गई
फूल बन कर महकती रही चूड़ियां.

किस तरह से भला नींद आती 'कमल'
रात भर जब खनकती रही चूड़ियां.

—शिवप्रसाद 'कमल'

ननमुन







बच्चे आपस में क्यों झगड़ते हैं?

लेख • कुमुदसिंह

अकसर आप के कानों में पड़ोसियों के घरों से बच्चों के चीखनेचिल्लाने की आवाजें आती हैं या कभी आप प्रत्यक्ष ही देखती हैं कि पड़ोसन के बच्चे आपस में लड़झगड़ रहे हैं और लड़तेलड़ते एकदूसरे के ऊपर सामान उठाउठा कर फेंक रहे हैं. उन की इस लड़ाई का नतीजा कभीकभी यह भी होता है कि मेज पर रखी टाइमपीस घड़ी लुढ़क कर जमीन पर गिर पड़ती है और उस के हिस्सेपुर्जे सब अलग हो जाते हैं. कभीकभी तो यहां तक नौबत आती है कि आपस में लड़तेलड़ते एक भाई दूसरे



भाई पर मेज पर रखा फूलदान दे मारता है, जिस से उस के सिर से खून बहने लगता है. मां जब यह दृश्य देखती है तो गुस्से से लालपीली होने लगती है और एक भाई को चारपांच चांटे जड़ देती है और दूसरे को डाक्टर के पास दिखाने ले जाती है.

क्या आप के बच्चे भी जराजरा सी बातों पर इसी प्रकार आपस में लड़तेझगड़ते हैं और घर की कीमती चीजों का नुकसान करते हैं? अगर ऐसा है तो आप बहुत चिंतित रहती होंगी और आप का बहुत सा समय उन के झगड़े निबटाने में ही व्यतीत होता होगा. इस के अलावा खातेपीते, नहातेधोते, बाजार या फिर घर से कहीं भी बाहर जाने पर आप को हर समय चिंता बनी रहती होंगी और इस चिंता में धीरेधीरे घुलते रहने से आप असमय ही बूढ़ी दिखाई देने लगी होंगी.

बच्चे नुकसान क्यों करते हैं?

किंतु क्या आप ने कभी यह जानने का प्रयास किया है कि बच्चे आपस में क्यों लड़तेझगड़ते हैं? आखिर वे घर की कीमती चीजों का क्यों नुकसान करते हैं? अगर आप ने अभी से बच्चों की इन आदतों पर नियंत्रण नहीं किया तो आगे चल कर वे दादा किस्म के व्यक्ति बन सकते हैं. सरकारी इमारतों को नुकसान पहुंचा सकते हैं, आए दिन बसों में आग लगा सकते हैं, मिलों, दफ्तरों में हड़तालें करवा सकते हैं. हो सकता है वे क्रोध में आ कर किसी को जान से भी मार डालें. तब आप के लाड़ले बेटे को जेल की हवा खानी पड़ेगी. ऐसे क्षणों के बारे में सोच कर आप कांप उठती होंगी, भयभीत होने लगती होंगी.

पर प्रश्न तो यह है कि आखिर ऐसी नौबत आए ही क्यों? क्यों न अभी से बच्चों की इन आदतों पर नियंत्रण किया जाए? बच्चों के इस प्रकार आपस में झगड़ने और सामान उठाउठा कर फेंकने के पीछे कुछ न कुछ कारण अवश्य होता है और कारण जानने के बाद उस का मनोवैज्ञानिक ढंग से उपचार करना चाहिए.

जिन परिवारों में मातापिता के आपसी संबंध कटु होते हैं, उन में हर समय झगड़ा चलता रहता है. कभीकभी तो झगड़ा इतना अधिक बढ़ जाता है कि घर में खाना तक नहीं बनता. ऐसे घरों के बच्चे भी अगर आपस में झगड़ा करने लगें तो इस में किस का दोष है? बच्चों पर हमेशा बड़ों का असर पड़ता है. जब बच्चे मातापिता को हर समय आपस में झगड़ते देखते हैं तो वे भी आपस में लड़नाझगड़ना सीख जाते हैं.

जिन परिवारों में मातापिता दोनों ही नौकरी करते हैं, उन के बच्चे अकसर नौकरों के सहारे ही पलते हैं, नौकर तो केवल पैसे के लिए काम करते हैं. उन से आप यह कैसे आशा कर सकते हैं कि वे आप की ही भांति बच्चों का पालनपोषण करेंगे, आप की ही भांति बच्चों में अच्छी आदतें डालेंगे? ऐसे परिवारों में बच्चों को मांबाप का पूरा प्यार नहीं मिलता. फलतः उन का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है. अतः बातबात पर झगड़ा करना, दूसरों को मारना उन की आदत बन जाती है.

कुछ बच्चे शारीरिक व मानसिक रूप से औसतन कमजोर होते हैं. कमजोर होने के कारण उन्हें बातबात पर क्रोध आ जाता है और वे दूसरों को मारनेपीटने लगते हैं. ऐसे बच्चों को झगड़ा करने पर मारनापीटना नहीं चाहिए. ऐसे बच्चे के साथ आप का सब से पहला फर्ज तो यह है कि उसे किसी अच्छे डाक्टर को दिखा कर, उस से उचित परामर्श ले कर उस का उपचार कराएं. बच्चे की हर बात पर गौर करें कि वह क्या चाहता है. उस के खानेपीने का भी पूरा ध्यान रखें, किंतु यह सब करते समय इतना ध्यान अवश्य रखें कि उसे जरूरत से ज्यादा लाड़प्यार न दें, जिस से उस की आदत न बिगड़ सके.

बच्चों में प्रारंभ से ही परस्पर प्रेम और सहयोग की भावनाओं का विकास करें. इस के लिए उन्हें प्रारंभ से ही ऐसी कहानियां सुनाएं, जिन से उन में इस प्रकार की भावना

जाग्रत करने के लिए प्रोत्साहन मिले. घर में ऐसा वातावरण बनाएं, जिस से उन में एकदूसरे के लिए प्रेम, त्याग, सहानुभूति की भावनाओं का उदय हो. उन में एकदूसरे का काम करने की आदत डालें. अगर कोई बच्चा बीमार है तो दूसरे बच्चों से उसे पानी आदि दिलाएं. उसे कहानी पढ़ कर सुनाने को कहें, उस के साथ खेलने को कहें. जब भी कोई बच्चा बीमार हो तो उन दिनों दूसरे बच्चों के जिद करने पर भी कोई अच्छी चीज न बनाएं. इस प्रकार के वातावरण से उन में आपस में प्रेम व सहयोग की भावनाओं का विकास होगा. इस से किसी बच्चे के बीमार पड़ जाने पर उस को यह महसूस होगा कि उस का भी कोई महत्त्व है.

बच्चे को कुछ समय अवश्य दें ■

कई परिवारों में देखा जाता है कि मां दिन भर घर के कामों में ही व्यस्त रहती है और बेचारे बच्चे दिन भर इधरउधर घूमा करते हैं. ऐसे परिवारों के बच्चे जब पड़ोसी बच्चों को अपने मांबाप के साथ कोई खेल खेलते देखते हैं तो उन का मन निराशा से भर जाता है. अपने मन में दबी भावनाओं को वे दूसरे तरीकों से निकालते हैं. ऐसे बच्चे आपस में ज्यादा लड़तेझगड़ते हैं. अतः आप के पास चाहे कितना भी काम क्यों न हो, अपना कार्यक्रम इस प्रकार बनाएं कि अपने बच्चों के लिए आप कम से कम एकदो घंटे अवश्य निकाल सकें. इन एकदो घंटों में आप उन के साथ खेलिए, उन्हें अच्छीअच्छी कहानियां सुनाइए. फिर उन्हें अपने काम का महत्त्व समझाएं. जैसे— देखो, घर कितना गंदा हो गया है. अगर कोई बाहर से आ गया, गंदे घर को देख कर क्या कहेगा? वगैरहवगैरह. याद रखें, आप के ये दो घंटे व्यर्थ नहीं जाएंगे. इस का परिणाम शीघ्र ही आप को दिखाई देने लगेगा.

कई माताओं की यह आदत होती है कि जब उन के घर कोई मेहमान आता है तो वे बातों में इतनी व्यस्त हो जाती हैं कि अपने बच्चों का तनिक भी ध्यान नहीं रखतीं. हो सकता है, आप के मेहमान को जाने में देर हो और इस बीच बच्चों के नाश्ते या भोजन का समय हो जाए. अगर आप बातों में व्यस्त हैं और बच्चों को भूख लग रही है तो वे आपस में जरूर झगड़ेंगे, क्योंकि बहुत से बच्चे भूख लगने की बात मुंह से स्पष्ट न कह कर रोना, चिड़चिड़ाना शुरू कर देते हैं. और फिर बच्चों को समय से भोजन न मिलने से उन का शारीरिक विकास रुक जाता है. अतः जब भी कोई मेहमान आए, अपने बच्चों को समय से भोजन व दूध वगैरह देना न भूलें.

इस के अलावा इस बीच यदि कोई बच्चा कुछ कह रहा हो तो उस की बात पर भी ध्यान दें. हां, इतना अवश्य ध्यान रखें कि बच्चा जिद्दी न बनने पाए और मेहमान के रहते कोई ऐसी फरमाइश न करे कि न चाहते हुए भी आप को मेहमान के सामने अप्रिय स्थिति पैदा न होने देने के लिए उसे पूरा करना पड़े.

उचित मार्गदर्शन करें ■

हर मातापिता यह चाहते हैं कि उन के बच्चों का लालनपालन अच्छी तरह हो और उन की भविष्य उज्ज्वल हो. मातापिता के जीवन में यह काम सब से गंभीर जिम्मेदारी का है. यदि आप का बच्चा छोटा है तो आप को अपना सारा ध्यान उस पर केंद्रित करना होगा, अपनी सारी विचारशक्ति उस के चरित्र निर्माण में लगानी होगी. बच्चों को यदि बचपन से ही उचित मार्गदर्शन न मिले तो वे भटक जाते हैं.

बच्चे हमारे जीवन के फूल हैं. अपने जीवन के इन फूलों को सही ढंग से विकसित करना व उन का पालनपोषण करना हमारा सब से पहला कर्तव्य है. यदि आप ने अभी से उन पर ध्यान न दिया तो फिर जीवन में एक क्षण ऐसा आएगा जब आप यह महसूस करेंगी कि आप की ओर से जरूर कोई कमी रह गई है और तब आप के हाथ सिर्फ निराशा ही लगेगी और आप ने अपने बच्चों के बारे में जो भी सपने संजो रखे होंगे वे सब अमूर्त रह जाएंगे. ●

सुहावने मौसम की पोशाकें

आकर्षक नीले रंग में नीलकमल सी खिल उठिए. जी हां, सुहावने मौसम में गहरे नीले रंग के कपड़े के इस चूड़ीदार कुरतेपाजामे वाले सूट को पहन कर तो देखिए! कावेरी डिजाइन में सुनहरे धागे से किया गया काम योक व बांहों को विशेष आकर्षण प्रदान कर रहा है. हां, इस सूट के साथ दुपट्टा भी मेल खाता हुआ होना चाहिए

और अब चंचल दिखने के लिए पहनिए यह सूट. कभीकभी चंचलता में झूम उठने को मन करता है. ऐसे मौके के लिए ही तैयार किया गया है यह डिजाइन. आप जैसी चंचल रूपसियों के लिए आरगेंजा के चैक में कोई भी हलके रंग का दुपट्टा शाही नीले रंग के साथ खिल उठेगा.

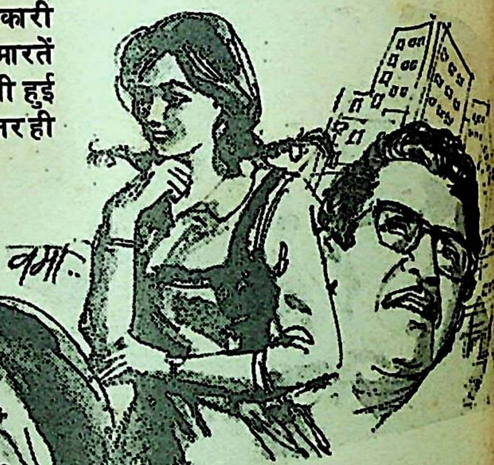
सफेद फूलों वाली यह सलवारकमीज किसी भी अवसर पर पहनिए. कमीज के गले पर सफेद पाईपिंग व सलवार के पांयचों पर सफेद फूलों की छटा पूरे सूट में संतुलित तालमेल बनाए रखती है.



अमरीका में आ कर रहने से लोग बदल थोड़े ही जाते हैं, चाहे मर्द 'हेलो' की जगह 'हाय' कहने लगें या औरतें साड़ी की जगह पैंट, सूट और स्कर्ट पहनने लगें. मानव प्रवृत्ति तो सारे संसार में एक ही है और एक ही रहेगी. अब तो शायद ही अमरीका में कोई ऐसा गांव या शहर बचा हो, जहां भारतीय न पहुंचे हों.

फ्लोरिडा राज्य में एक छोटा सा शहर है जैक्सनविल. डाउन टाउन (बाजार) के नाम पर यहां भी अन्य अमरीकी शहरों की तरह कोई आधे मील के घेरे में कुछ सरकारी और गैर सरकारी 10-12 मंजिला इमारतें बनी हैं. इन की निचली मंजिल में सजी हुई दुकानें हैं और ऊपर की मंजिलों में दफ्तर ही दफ्तर.

अकसर सरकारी दफ्तरों में नौकरी सिफारिश से मिलती है, मगर भारतीयों ने अपनी पहुंच वहां भी बना रखी है. ऐसे दफ्तरों में अकसर काम कम और तानाशाही अधिक होती है. लेकिन आप वहां कभी अपना कोई काम कराने जाइए तो सब व्यस्त मिलेंगे और कल या परसों आने को कहेंगे. ऐसे ही एक इंजीनियरी महकमे में नीता के पिता अफसर हैं. वह हमेशा



बहुत खूब

कहानी • पूर्णिमा गुप्ता

पढ़ाईलिखाई, खेलकूद में अव्वल रहे. लेकिन इस नौकरी में उन्हें अपनी अकल का परिचय देने का मौका कम ही मिलता है.

दो भाइयों हमीर और समीर के बीच पल रही नीता लाड़ली तो रही, लेकिन उसे इसलिए ज्यादा बढ़ावा नहीं मिला कि कहीं वह भाइयों से आगे न निकल जाए, होशियार जो थी वह.

नीता के पिता उसे हर क्षेत्र में अपने भाइयों से पीछे ही देखना चाहते थे. लेकिन अनेक मुशकिलों के बाद जब नीता उन्नति के शिखर पर पहुंच गई तो न जाने क्यों उन का चेहरा लटक गया.



इस शहर में 'हिंदू संघ' बनाने भर को काफी भारतीय थे. महीने में एक बार तीजत्योहार के बहाने सौपचास परिवार साथ बैठ कर खापी लेते थे. साथ में कुछ और कार्यक्रम भी रखा जाता था.

एक बार खेलकूद का कार्यक्रम रखा गया. उस बार नीता के पिता ही समारोह के अध्यक्ष थे. बच्चों, बड़ों की दौड़ की प्रतियोगिताएं भी थीं. नीता अपनी उम्र की लड़कियों में प्रथम आई और उस से दो बरस बड़ा हमीर लड़कों में द्वितीय. जब इनाम मिला तो दोनों को एक सा रंगबिरंगा कलम. पिताजी अध्यक्ष जो थे. उन्होंने जान कर ऐसा कराया था, जिस से हमीर हताश न हो. मालूम नहीं कि इस से हमीर को कितना बढ़ावा मिला, लेकिन जब नीता को यह मालूम हुआ तो उस ने कलम के टुकड़ेटुकड़े कर डाले और अपने कमरे में घंटों रो कर सो गई.

एक अन्य मौके पर रात्रि भोजन के समय नीता के पिताजी ने कोई पहेली पूछी. नीता ने झट से जवाब दे दिया तो सुनाई पड़ा, "लगता है इस ने पहले से सुन रखी थी."

नीता को पीछे रहना गवारा नहीं था. साल भर छोटे समीर से वह टेबल टेनिस खेलने की शर्त लगा बैठी. मां की शुभकामनाएं समीर के साथ थीं, लेकिन नीता फिर भी जीत गई.

घर लौटी तो पिताजी मां से कह रहे थे, "आज समीर का मन नहीं था, वरना खेलता तो वही अच्छा है. क्या तेजी से हाथ चलते हैं उस के. नीता तो जहां एक बार खड़ी हो जाती है, बस वहीं से खेलती रहती है."

हमीर को पढ़ाईलिखाई का शौक कुछ कम ही था. साथ ही पिछली बार इम्तहान के दिनों के आसपास वह बीमार पड़ गया था. उधर नीता ने एक साल में दो जमातें पास की थीं. इसलिए हाई स्कूल की परीक्षा दोनों साथसाथ दे रहे थे. ज्योंज्यों परीक्षा निकट आती जा रही थी, नीता का मन पढ़ाई की ओर और हमीर का दिल घर के बाहर लगने लगा.

नीता ने एक दिन पिताजी को मां से कहते सुना, "कहीं ऐसा न हो कि नीता के अंक हमीर से ज्यादा आ जाएं और उस का

आगे पृष्ठ 128 पर



पृष्ठ 125 से आगे
पढ़ाई का रहासहा शौक भी जाता रहे. नीता की उम्र अभी कम है. देखो, मान जाए तो उसे इस साल परीक्षा न दिलाओ."

नीता को परीक्षा देने से तो कोई नहीं रोक सका, मगर जिस सीढ़ी पर वह चढ़ रही थी, वह उसे दिन प्रतिदिन कमजोर होती हुई लगी. वह अपना विश्वास खो बैठी. उसे अकसर चक्कर आने लगे.

मांबाप की पैदा की हुई बीमारी का इलाज डाक्टर कैसे करता? वह तो कुछ गोली, टानिक दे कर अपने पैसे ले लेता था. नीता को अपनी सहेलियों से सलाह मिली कि 16 बरस की हो जाओ और हाई स्कूल पास कर लो. फिर ऐसे मांबाप को धता बता देना. लेकिन नीता ऐसी बातें सुन कर सिहर उठी.

पगपग पर उसे बताया गया था कि अमरीकी लड़कियां आवारा होती हैं. लड़कियों की स्वतंत्रता भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है. भारत में नारी पूजनीय कही जाती है, जब कि अमरीका में मात्र कामपूर्ति का साधन.

खैर, स्कूल में वादविवाद प्रतियोगिता थी. नीता ने बड़े शौक से आठदस पन्ने 'हेजिंग' के बारे में लिखे. उस ने पिताजी को अपना लिखा दिखाया तो उन्होंने कहा, "बहुत खूब" और दफ्तर चले गए.

शाम को ढूंढ़ढांढ कर वह दो किताबें लाए और नीता को देते हुए बोले कि हेजिंग यहां अवश्य लुप्त हो गई है, लेकिन भारत में अब भी रैगिंग के नाम से होती है और इन किताबों में उस का जिक्र भी है.

'भारत... भारत... भारत... कब छूटेगा इस शब्द से मेरा सरोकार? स्कूल में जितनी बार 'इंडिया' शब्द बोलती हूं, सब छात्र और छात्राएं मजाक उड़ाने लगते हैं. मगर पिताजी को इस से क्या?'

उस ने पिता की लाई किताबें पढ़पढ़ा कर एक बार और लिख कर पिता को खुश करने की कोशिश की, लेकिन यह तो मृगमरीचिका थी. आखिर वह लड़की थी. पिता के मन का भाषण वह कैसे लिख सकती थी? अंत में पिता ने उस को बैठ कर खुद सारा भाषण लिखाया. उस ने स्कूल में जा कर वही पढ़ दिया. उस को केवल प्रोत्साहन पुरस्कार मिला. असल में वह उस के पिता के मन का संतोष था.

घर लौटीं तो उस के पिता बोले, "इतना बढ़िया लिखाया था. ढंग से सुनाना आता तो पहला नंबर आता."

नीता को अपना दम घुटता सा नजर आने लगा. उस को लगा जैसे पिता ने उस के गले में रस्सी बांध कर कुएं में लटका रखा हो. बस, रस्सी ऊपर कर के इतना हवापानी देते थे, जिस से न तो वह मर पाती थी, नहीं जीने दी जाती थी.

इसी बीच परीक्षाएं हुईं. परिणाम आया. उस का सारे परचों में 'ए' ग्रेड था. हमीर को कुछ विषयों की परीक्षा दोबारा देनी थी. कालिज में उस का प्रवेश होना भी मुशकिल था. परीक्षाफल की शाम को नृत्य समारोह था. नीता भी जाना चाहती थी, लेकिन नाच और वह भी लड़कों के साथ. नीता को सारी शाम कड़ी निगरानी में रखा गया, जब कि हमीर की अनिच्छा के बावजूद उसे जाने को प्रोत्साहित किया गया. "वह लड़का है. कुछ गड़बड़ कर भी आया तो अपना क्या जाता है," पिता का कहना था.

डूबते को तिनके का सहारा बहुत होता है. जब से श्यामसुंदर उस के घर आने लगा था, वह खुश रहने लगी थी. खुद श्यामसुंदर भी पचासों बार जता चुका था कि वह किस के लिए उस घर में आता है. उस के 16वें जन्मदिन पर वह बिना बुलाए ही ढेर सारे फूल ले कर आया था. नीता ने दरवाजा खोला तो वह फूल देते हुए बोला था, "बहुत ही खूबसूरत..."

सामने से मां को आते देखा तो वाक्य पूरा किया, "फूल हैं ये." भोलीभाली नीता उस का शुक्रिया भी नहीं कह पाई.

उधर सरोज चाची थीं. प्रोफेसर थीं. आंए दिन नीता को खाने का न्योता देती थीं. कितना हंसीन था उन का बेटा. डाक्टरी कर

रहा था, मगर शायद जबान ही नहीं थी. चाची ने ही बताया था कि वह आने वाली है, यह जानकर बंटू छंटे भर से सज रहा था, पर जब उस के आने की आहट सुनाई दी तो अपने कमरे में जा कर किताब में आंखें गड़ा कर बैठ गया.

चाची ने बुलाया, "बंटू, नीता आई है. खाने में अभी जरा देर है. जरा इसे पार्क तक घुमा लाओ. आज वहां खूब रौनक होगी." कभी पार्क की घास पर तो कभी झूलों पर कितनी ही बार बंटू आज्ञाकारी पुत्र की तरह सिर झुकाए उसे घर से पार्क और पार्क से घर ला ले जा चुका था.

और एक हिंदी के प्रोफेसर साहब थे. नीता को तो बहू कह कर पुकारने लगे थे. लेकिन नीता ने यहां की सभ्यता में लजाना नहीं सीखा था, बस हलकी सी मुसकराहट आ जाती थी उस के चेहरे पर 'बहू' शब्द सुन कर. वह कहते थे, "कितनी सौम्यता है नीता के चेहरे पर. मेरा बेटा न्यूयार्क से डाक्टरेट कर के लौटेगा तो उस की झट से नीता से शादी कर दूंगा. हमारा घरआंगन सब खिल उठेगा नीता की मुसकराहट से."

प्रोफेसर साहब की बीबी को कार दुर्घटना में मरे तीन बरस हो गए थे. वही कार चला रहे थे, इसलिए अभी तक वह अपने को माफ नहीं कर पाए थे. पिछले तीन बरसों में शायद तीन बार भी नहीं हंसे होंगे. नीता को लगता था कि उस के कारण उन की सूनी जिंदगी बस जाए तो अच्छा ही है.

तरस खा कर ब्याह किया जा सकता है, लेकिन सारी जिंदगी नहीं बिताई जा सकती. यहां कोई भारतीय लड़कों की कमी थोड़े ही है. सारे महत्त्वाकांक्षी भारतीय नौजवान यहीं तो आते हैं. लड़कियों को तो चारदीवारी पार करने की भी इजाजत कम मिलती है, अकेले अमरीका आने की तो बात ही क्या है. इसलिए विवाह योग्य लड़कियां यहां फिलहाल कम हैं.

ऐसे ही एक साहब पिछले बरस आए थे—पड़ोस वाली सुधा दीदी के भैया. सुधा दीदी खूब सुघड़ और सर्व गुण संपन्न हैं. नीता अकसर उन से सिलाई, कढ़ाई या पाक विद्या सीखने उन के घर चली जाती थी. उस को क्या खबर थी कि उस को बातबात में चिढ़ानेसताने वाले भैया के मन में क्या है. जब



स्कूल में वादविवाद प्रतियोगिता के लिए नीता ने आठदस पन्ने 'हेजिंग' के बारे में लिख कर अपने पिताजी को दिखाया, लेकिन उन्हें संतुष्ट न कर सकी.

वह किसी और तरह नहीं समझ सकी तो होली के दिन उन्होंने नीता को बांहों में उठाया और ले जा कर रंगीन पानी भरे टब में डाल दिया.

दिल बहलाने के लिए ये सब खयाल अच्छे थे, लेकिन नीता को ये सब तिनके के सहारे से ज्यादा कभी नहीं लगे. वह तो ऐसा सहारा चाहती थी, जो स्थायी रूप से उस के साथ रहे. ऐसा सहारा पाने के लिए उस ने कंप्यूटर प्रोग्रामर बनने की सोची. सच ही तो था, एक बार डिगरी मिल गई तो जन्मभर साथ निभाएगी. और नीता सभी घर वालों की इच्छा के विरुद्ध एम.आई.टी. (मैसाचूसेट्स इंस्टिट्यूट आफ टेक्नोलाजी) में पढ़ने चल दी.

आज चार बरस बाद नीता लौटी है. एम.आई.टी. जैसी नामी संस्था की डिगरी ले कर. उसे स्वर्णपदक भी मिला है. नीता की मुसकराहट में चार चांद लग गए हैं. लेकिन पिताजी का चेहरा लटका हुआ है. चार साल पहले जिस नीता के रिश्ते बिन मांगे आते थे, आज वे सब बहाना बना कर गुल हो चुके हैं. नीता को इस बात का कोई अफसोस नहीं है. कैसे बताए वह पिता को कि वे सब तिनके थे, हलका सा झोंका आया और उड़ गए. वह दो दिन बाद ही जा रही है. बोस्टन में ही नौकरी मिल गई है.

"पिताजी, देखिए, मेरा एलबम. इस में मैं माइकेल के साथ नाच रही हूं. इस फोटो में हम स्कीइंग कर रहे हैं. माइकेल के पिता टैक्सास में तेल की एक कंपनी के अध्यक्ष हैं. कई हवाई जहाज हैं उन के. माइकेल से मैं ने भी हवाई जहाज चलाना सीख लिया है."

पिताजी सिर्फ "बहुत खूब" ही कह पाते हैं और 'शायद चक्कर आने से सोफे पर लुढ़क गए हैं. घर में बेकार बैठे हमीर की चिंता उन्हें दिनरात खाए जा रही है. •

पाठकों की समस्याएं

मैं ब्याहता स्त्री हूं और दो बच्चों की मां हूं, पढ़ीलिखी होने के साथसाथ सुंदर एवं प्रतिभाशाली भी हूं. पति व्यवसायी हैं, आर्थिक स्थिति सामान्य है. मैं मानसिक असंतोष से ग्रस्त हूं. स्वतंत्र आर्थिक आय तथा लोकप्रियता की भूख मुझे जीने नहीं दे रही है. विगत अनेक वर्षों से अपनी महत्त्वाकांक्षाओं का गला घोटती आ रही हूं. हर समय तनावग्रस्त रहती हूं. क्या करूं?

आप को अपने बारे में जरूरत से ज्यादा गलतफहमी है. केवल सुंदर और सुशील होना ही प्रतिभाशाली होना नहीं है. प्रतिभा हो तो आप अपने पति, घर, बच्चों की भी देखभाल ढंग से कर सकती हैं. सच्चाई यही है कि आप को अपने पति पसंद नहीं हैं और उस कुंठा को आप महत्त्वाकांक्षा की हत्या समझ रही हैं. आप को समझ लेना चाहिए कि विवाह के बाद आप का क्षेत्र मुख्यतः घर तक ही सीमित है.

*

मेरे तीन पुत्र हैं– दस, छः व दो वर्ष के. मैं उन्हें देशसेवा के लिए अर्पित करना चाहता हूं. इस के लिए क्या करना होगा?

देशसेवा केवल सेना में जाने से ही नहीं होती. उद्योगधंधों या प्रशासनिक सेवाओं से भी देशसेवा होती है. आप अपनी इच्छा बच्चों पर न थोपें और उम्र आने पर स्वयं उन्हें अपनी इच्छानुसार कार्यक्षेत्र चुनने दें.

*

मेरे पति एक देहाती कालिज में अध्यापक हैं. मैं कुछ दिनों के लिए मायके गई तो एक छात्रा से उन के शारीरिक संबंध स्थापित हो गए, वह हमारे यहां परीक्षा देने के लिए रही भी थी. जब भी मैं उस के बारे में कुछ बात करती हूं तो वह डांट देते हैं. बहुत दुखी हूं. क्या करूं?

इस मामले को ज्यादा तूल देने से कोई लाभ नहीं है. अगर वह लड़की अब आप के पति से नहीं मिलती है तो चुप रहिए. पर सतर्क रहिए कि वह आसपास न फटके. यदि दोबारा आए तो फटकार दें और उस के मातापिता से बात करें.

*

मैं 28 वर्षीया महिला हूं. 12 वर्ष पहले विवाह हुआ था. मेरे पति की नौकरी इस तरह की है कि वह महीने में केवल पांचसात दिन ही मेरे पास रहते हैं. इसी बीच मैं रास्ता भटक गई तथा एक दूसरे पुरुष से प्यार करने लगी. मेरे पति सब कुछ जान गए हैं तथा हर समय मारपीट करते हैं. डरती हूं कि कहीं कुछ कर न लें. मैं उन्हें भी बहुत चाहती हूं.

इस विचित्र परिस्थिति के लिए आप दोनों दोषी हैं. अब आप अपने प्रेमी से नाता तोड़ लीजिए. कोशिश कर के उसे बाहर भिजवा दें या पति की नौकरी की जगह बदल लें. बहुत प्यारसम्मान से पति का मन जीतने की चेष्टा करें. फिर भी जो गांठ आप दोनों के बीच पड़ गई है, शायद ही खुल सके.

*

मेरी आय कम है, इसलिए अपनी पत्नी व दो बच्चियों का भरणपोषण भली प्रकार नहीं कर पाता. पत्नी मुझ से झगड़ा करती है तथा अभाव से तंग आ कर जल कर मर जाने की धमकी देती है. एकदो बार उसे बचाया भी है. इन सब कारणों से दिमागी हालत अत्यंत परेशान है. क्या करूं?

यह आप की पत्नी की गलती है कि वह सोचती है कि लड़नेझगड़ने से आप की आय बढ़ जाएगी. उलटे इस से आप को काम करने में और कठिनाई ही होगी. पत्नी के किसी संबंधी को बीच में ला कर समझाइए.

*

मैं 30 वर्षीया विवाहित स्त्री हूं. चार बच्चे हैं. बहुत गोरी व सुंदर हूं. अपने स्वास्थ्य, बनावसिंगार की ओर पूरा ध्यान रखती हूं, पति का भी पूरा खयाल रखती हूं, तो भी वह मेरी शादीशुदा बहन से जो दो बच्चों की मां है और सुंदर भी नहीं है, शारीरिक संबंध बनाए हुए हैं. समझाने से भी नहीं मानते हैं. मेरा दिमाग एकदम खराब हो गया है. बिलावजह बच्चों को पीटने लगती हूं, कभी बेइंतहा रोने लगती हूं.

मारपीट, झगड़ा इस समस्या का हल नहीं है. या तो आप शहर बदल लें या अपनी बहन को शहर बदलने को कहें. यह कटु सत्य है कि एक ही जीवनसाथी से ऊबने पर लोग दूसरे के साथ संपर्क बढ़ा लेते हैं. वैसे ये संबंध आमतौर पर क्षणिक होते हैं. और जल्दी ही टूट जाते हैं. तब तक धैर्य रखना ही ठीक होगा.

*

मैं 30 वर्षीया विवाहिता हूं. दो बच्चे हैं. स्वयं अध्यापिका हूं. मेरी समस्या यह है कि मेरे पति बहुत शराब पीते हैं और मेरी उपेक्षा करते हैं. तलाक लेने से बच्चों का भविष्य बिगड़ जाएगा. मैं क्या करूं?

शराब की लत अपनेआप में एक रोग है. यदि आप के पति मन से इसे छोड़ना चाहते हैं और आदत के कारण नहीं छोड़ पा रहे हैं तो उन को हस्पताल जा कर अपना इलाज करवाना चाहिए, जहां शराब की लत छुड़वाने का डाक्टरी इलाज होता है. यदि इस में सफलता न मिले तो निर्णय आप के हाथ में है. हां, थोड़ा पैसा अलग से रखिए जो मुसीबत में आप के काम आए. पति को पैसा देने में रोक लगाइए.

-कंचन

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जा सकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

चिनगारी







गांव में तनाव छाया हुआ था. सभी लोगों के चेहरों से आक्रोश झलक रहा था, लेकिन साथ ही भय और आतंक ने उन के होंठ सी दिए थे. वे चाह कर भी कुछ बोल नहीं पा रहे थे. सब जानते थे, यदि उन्होंने कलुआ की आवाज के साथ अपनी आवाज मिलाई तो जो कुछ उस के साथ घट चुका है, वही उन के साथ भी घट सकता है. कलुआ की बेटी मंगली के साथ जो बीता है, वह उन की बहूबेटियों के साथ भी बीत सकता है.

अभी कल ही की तो बात है. कलुआ चीखचीख कर समाज के धन्नासेठों को भलाबुरा कह रहा था. अपने हमजोलियों, पड़ोसियों, समाजसुधारकों तथा बुद्धिजीवियों से न्याय की फरियाद कर रहा था. आखिर वह धन्नासेठों को भलाबुरा नहीं कहता तो क्या करता? इन्हीं धन्नासेठों के बेटों ने ही उस के जीवन का सुखचैन लूट लिया था. वह चीखचीख कर इन लोगों को

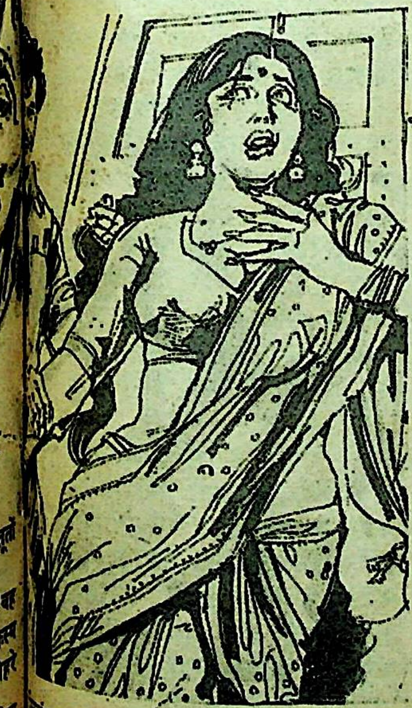
कहानी • विजयकांत खरे

कोस रहा था. उन के बेटों की काली करतूतों का भंडाफोड़ कर रहा था.

आखिर उन्हें यह कैसे सहन होता? वह चीख ही रहा था कि तभी कुछ शोहदे किस्म के युवक वहां आए. क्रोध से उन के चेहरे

लाल थे. आंखों से खून बरस रहा था. उन्होंने कलुआ को पकड़ लिया. पहले उठा कर पटका और फिर लातघूंसों तथा जूतों की ठोकरों से उसे फुटबाल की तरह उछालने लगे. बेबस, बेदम सा कलुआ 'बचाओबचाओ' की गुहार करते हुए दया की भीख मांगने लगा. लेकिन उसे बचाने कोई नहीं आया.

कलुआ की घरवाली कालिंदी पर जैसे गम का पहाड़ टूट पड़ा. वह पिछली रात की घटना से ही निढाल सी पड़ी थी. कलुआ की पिटाई की खबर से तो उस के हाथपैर फूल गए. किसी तरह अपनेआप को संभाला और गिरतेपड़ते पति को लेने दौड़ पड़ी. घर में मंगली बेसुध सी वैसे ही पड़ी थी, जैसे पिछली रात की घटना के बाद पड़ी थी. कालिंदी अपने दुर्भाग्य पर आंसू बहाते हुए गली के नुक्कड़ पर पहुंची तो वहां उस ने अपने पति कलुआ को खून से लथपथ पड़े देखा. वह चीखचीख कर कलुआ पर ही बेहोश हो कर गिर पड़ी



इस दृश्य को देखने वालों के दिल दहल गए, लेकिन कोई उस की सहायता के लिए आगे नहीं आया. जब उसे कुछ देर बाद सुध आई तो उस ने पति की ओर फिर से देखा. उस की छाती पर सिर रख कर धड़कनों की आहट ली. उसे लगा, उस ने महसूस किया कि धड़कन चल रही है, अलबत्ता बहुत धीमी है. वह समझ गई कि उस का पति अभी जीवित है. वह उठी. किसी तरह पति को कंधे पर लादा और घर की ओर बढ़ी.

इसी समय शहर से रामकिशोर आ रहे थे. वह सर्वोदयी कार्यकर्ता थे और गांव के विकास और सुधार में रुचि लेते रहते थे. उन्होंने यह दृश्य देखा तो तुरंत साइकिल को एक ओर पटका और कालिंदी की ओर दौड़े. उन्होंने कालिंदी से कलुआ को ले लिया और उसे अपने कंधों पर लाद लिया. रामकिशोर कलुआ को लिए हुए कलुआ की झोंपड़ी की ओर बढ़े. पीछे कालिंदी थी. रामकिशोर के आ जाने से लोगों के मन में साहस का संचार हुआ. कुछ लोग उस के पीछेपीछे कलुआ की झोंपड़ी की ओर बढ़ने लगे.

कलुआ की झोंपड़ी में कलुआ को बिस्तर पर लिटा दिया गया. रामकिशोर ने उस का प्राथमिक उपचार किया. कुछ देर बाद कलुआ होश में आने लगा. वह कराह कर उठ बैठा और फिर चीखने लगा, "मैं.. उन... दरिंदों को नहीं छोड़ूंगा. हाय, मेरी

मुखिया, महाजन तथा नेताजी ने जब अपने पुत्रों को बलात्कार और हत्या के संगीन मामले से घिरा देखा तो चटपट उन्होंने एक योजना बना डाली और शतरंज की बिसात बिछा कर मोहरे चलने लगे.

मंगली को बदमाशों ने कहीं का नहीं रखा."

कालिंदी तो मंगली को भूल ही गई थी. वह तुरंत उठी. अंदर के कमरे में गई. मंगली को झिंझोड़ा. मंगली की गरदन एक ओर को लुढ़क गई. वह चीख उठी, "मंगली के बापू, देखो... मंगली को क्या हो गया."

कलुआ के बिस्तर के निकट उपस्थित सभी व्यक्ति अंदर की ओर दौड़े. उन्होंने देखा, मंगली का शरीर एक चादर से लिपटा हुआ है. उस की गरदन एक ओर लुढ़की हुई है तथा आंखें बाहर निकल आई हैं. मंगली मर चुकी थी.

कलुआ भी गिरतापड़ता वहां पहुंचा. उस ने मंगली के शरीर पर ढकी चादर खींच डाली और चिल्लाचिल्ला कर कहने लगा, "देखो, यह है मेरी मंगली. देखो, दरिंदों ने उसे कैसे नोचा है, कैसे उन वहशियों ने मेरी फूल सी बेटी की आबरू लूटी है."

वह विलाप करने लगा. मंगली के निकट खड़े लोगों नें मंगली की निर्वस्त्र देह को देखा. उस के सारे शरीर पर नोचखसोट के चिह्न थे. दोनों गालों पर दांतों के गहरे निशान थे. उस के उन्नत उरोज बेदर्दी से मसले जाने की अपनी अनकही कहानी कह रहे थे. कटिप्रदेश के नीचे जंघाओं के बीच गाढ़ा सा खून जमा था, जो काला सा पड़ गया था.

रामकिशोर यह दृश्य नहीं देख सके. उन्होंने मंगली के निर्जीव शरीर को फिर चादर से ढक दिया. उन्होंने कलुआ और कालिंदी को ढाढ़स बंधाया.

गांव में यह खबर तेजी के साथ फैल गई कि कलुआ की बेटी के साथ कुछ बदमाशों ने बलात्कार किया है और आज उस ने दम तोड़ दिया है. गांव में सनसनी के साथसाथ तनाव का वातावरण बनने लगा. कलुआ की झोंपड़ी के आसपास लोग जमा होने लगे.

सर्वोदयी कार्यकर्ता रामकिशोर ने स्थिति की गंभीरता को भांपा और कलुआ से संक्षेप में घटना के विषय में जानकारी चाही. कलुआ ने जो कुछ बताया, वह इस प्रकार था– "मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है. मैं किसी तरह मेहनतमजूरी कर अपने परिवार का गुजारा करता हूं. मेरे परिवार में केवल तीन ही व्यक्ति हैं–मैं, मेरी पत्नी और बेटी मंगली. मंगली 16 साल की हो चुकी थी और घर में मां का तथा खलियान में मेरा हाथ बंटाया करती थी. हम उस के ब्याह के विषय में भी विचार कर रहे थे.

"कल रात खाना खा कर उठे ही थे कि हाथों में छुरा लिए तीन व्यक्ति घर में घुसे चले आए. उन के चेहरों पर नकाब थे. उन्होंने घर में घुसते ही दरवाजा बंद कर लिया. अभी हम अवाक से इस अप्रत्याशित घटना का प्रतिरोध करने के विषय में सोच भी न पाए थे कि उन तीनों व्यक्तियों ने हम तीनों पर बाज की तरह हमला कर हम पर काबू पा लिया. उन्होंने मुझे और कालिंदी को बांध कर हमारे मुंह में कपड़े ठूंस दिए. मंगली चीखने लगी. एक व्यक्ति ने, जो उसे दबोचे हुए था, उस के मुंह को अपनी हथेली से बंद कर दिया. मुझे और कालिंदी को उन्होंने एक ओर पटक दिया.

"मंगली ने उन व्यक्तियों से पूछा था, 'क्या चाहते हो तुम लोग? यदि डाका डालने के इरादे से आए हो तो तुम्हें यहां कुछ नहीं मिलेगा. धन, जेवर, कीमती चीजें यहां कुछ नहीं हैं. तुम लोगों ने गलत घर चुना है.' उन तीनों में से एक ने उस के गाल पर जोरदार तमाचा रसीद करते हुए कहा था, 'बहुत बोलती है.' तमाचे से मंगली के गोरे गाल पर उस बदमाश की उंगलियों के निशान उभर आए थे.

"मंगली ने उसे जानवर कहा तो वह बोला था, 'घबराती क्यों हो, रानी, हमें केवल तुम्हारा यौवन चाहिए. रुपएपैसे की हमें कोई दरकार नहीं. हम तो केवल तुम्हारा रस चूसने आए हैं.' उन में से एक मंगली की साड़ी खींचने लगा. दूसरे ने अपना हाथ उस की चोली में डाल दिया. मंगली चीख पड़ी. 'दरिंदो, क्या तुम्हारी मां बहन नहीं हैं?' उस

गया यह कहना था कि एक ने उस के नितंबों पर लात मारी. वह गिर पड़ी.

"इस बीच तीन में से दो व्यक्ति मेरी और कालिंदी की ओर बढ़े. उन के हाथों में छुरे लहराए. झोंपड़ी की चिमनी के हलके प्रकाश में मंगली ने छुरों की चमक देखी. वह चीखी, 'नहीं, नहीं.' छुरे जहां के तहां रुक गए. उन में से एक बोला, 'देख, मंगली, यदि तू विरोध करेगी, हल्लागुल्ला करेगी तो तेरे मांबाप को हम इन्हीं छुरों से गोद डालेंगे. यदि तू चुपचाप, जैसा हम कहें, वैसा ही करेगी तो फिर कुछ नहीं होगा.'

"मंगली बेबस हो गई. उस ने रोतेरोते कहा, 'तुम जो कहोगे, वही करूंगी, पर मेरे मांबाप को छोड़ दो.' इस पर वे सहज हो गए. मंगली ने स्वयं अपनी साड़ी उतार फेंकी. चोली खींच कर फाड़ डाली. लहंगे को पैरों से उछाल दिया. वह सब के सामने निर्वस्त्र खड़ी थी.

उस के मदभरे नयनों से आंसुओं की झड़ी बह रही थी. हमारी मंगली बहुत सुंदर थी. उस की कंचनकाया को निर्वस्त्र देख कर वे पागल हो उठे. वह लुटने के लिए तैयार खड़ी थी. उन दरिंदों ने आपस में कुछ सलाह की.

"उन में से एक मंगली की ओर बढ़ा. उस ने मंगली को दबोच लिया. मंगली कराह उठी. उस ने मंगली के शरीर को बुरी तरह नोचनाखसोटना शुरू कर दिया और उस का कौमार्य लूटने लगा. बारीबारी से उन दरिंदों ने उस का कौमार्य लूटा. मैं और कालिंदी बेबसी में आंसू बहाते रहे.

"जब वे जानवर पस्त हो गए तो हांफने लगे, सुस्ताने लगे. उन्होंने एक ओर पड़ी अपनी पैंटों से सिगरेट निकालीं, सुलगाईं और कश लगाने लगे. उन में से एक बोला, 'यार, मजा आ गया. साली बहुत अकड़ती थी. देखो, अब कैसी बेबस पड़ी है.' दूसरा बोला, 'उस दिन तालाब में नहाते समय इस का बदन क्या देखा, इसे पाने के लिए तभी से तड़प रहे थे.'

"एक के बाद एक उन पशुओं की तो

तृप्ति हो चुकी थी, लेकिन मंगली आंसू बहाती हुई होश खो बैठी थी. होश खोने से पूर्व, कौमार्य लुटने से पूर्व उस के मन में जरूर कुछ प्रश्न गूंजे होंगे कि क्या असहाय, निर्बलों का कोई नहीं होता. लेकिन उस के मन में उठे ये प्रश्न अनुत्तरित ही रहे. कोई कृष्ण द्रौपदी की तरह उस की लाज बचाने नहीं आया. कालिंदी यह सब नहीं देख सकी थी. वह बेहोश हो गई थी, पर बाबू साहब, मैं अवाक्, आंख बंद किए पड़ा था.

"तीनों दरिंदे जब थक गए तो उन्होंने पसीना पोंछने के लिए नकाबें हटाईं. मैं उन्हें देख कर स्तब्ध रह गया. जो देखा उस पर विश्वास नहीं हुआ. उन दरिंदों में से एक मुखिया रामकृष्ण का बेटा मुकेश था. दूसरा महाजन का लड़का सुरेश तथा तीसरा भूतपूर्व जमींदार ठकुर भानुप्रतापसिंह का बेटा चंद्रप्रताप था, जिस का पिता अब नेताजी के नाम से मशहूर है.

"उन दरिंदों ने अपने चेहरे का पसीना पोंछा, फिर नकाब चढ़ाए और झोंपड़ी का जायजा लिया. निर्वस्त्र मंगली के उरोजों को एक बार पुनः मसला और मुझे एक ठेकर और लगाई. बूट की ठेकर से मेरी कराह निकल गई. उन्होंने मुझे उठाया और धमकी देते हुए कहा, 'कलुआ, तू ने अगर किसी से कुछ कहा तो जिंदा नहीं बचेगा. ले ये कुछ रुपए.' उन्होंने कुछ नोट मेरे मुंह पर दे मारे और मुझे फिर से जमीन पर पटक कर दरवाजा खोल कर बाहर निकल गए."

रामकिशोर और गांव के लोगों की, जो कलुआ की आपबीती सुन रहे थे, आंखों में खून उतर आया. कलुआ कहे जा रहा था, "सुबह जब मुझे होश आया, तब किसी तरह मैं ने कालिंदी के हाथ खोले. उस ने पहले अपने मुंह से और बाद में मेरे मुंह से कपड़ा निकाला, मेरे हाथपांव खोले. तब कहीं हमें अपनी बेबसी पर आंसू बहाने का अवसर मिल पाया. हम ने जा कर मंगली को देखा. वह अभी भी बेहोश पड़ी थी. मुझे कुछ [illegible]हीं रहा था. मैं बाहर निकल पड़ा और उन बदमाशों को, जिन्होंने रात मेरी झोंपड़ी में घृणित वासना का तांडव रचा था, कोसने लगा.

"बाबू साहब, आप ही बताइए, मैं और क्या करता? अपनी प्यारी बिटिया की इस दुर्गति को कैसे भूलता? उन दरिंदों ने इस मासूम को किस तरह कुचला है, कैसे भूल जाऊं? कौन मेरी बेटी की अस्मत लूटने वाले उन दरिंदों से बदला लेगा?"

कलुआ के विलाप और उसकी आपबीती सुन कर तथा अबोध मंगली के बलात्कार और उस की मौत की घटना ने समूचे गांव को हिला कर रख दिया. कलुआ की फरियाद और गांव के शोहदों द्वारा की गई उस की धुनाई ने वातावरण में और उत्तेजना भर दी.

पर सर्वोदयी कार्यकर्ता रामकिशोर ने सब को धैर्य बंधाया और शांत रहने को कहा. वह अपने साथ गांव के दो नवयुवकों को ले कर घटना की रपट लिखाने के लिए शहर चले गए. इधर मुकेश, सुरेश और चंद्रप्रताप को भी मंगली की मौत की खबर मिल गई थी. वे घबराए हुए थे. यद्यपि उन्होंने कलुआ की फिर से धुनाई कर उस का मुंह बंद करना चाहा था, तथापि मंगली की मौत और सर्वोदयी कार्यकर्ता रामकिशोर की कलुआ से भेंट से वे घबरा गए थे.

जब उन्हें यह जानकारी मिली कि रामकिशोर चंदन और कुंदन के साथ थाने में रपट लिखाने शहर रवाना हो गए हैं तो उन के दिल कांप उठे. उन तीनों ने शहर के अपने एक बदमाश मित्र को फोन किया तथा संक्षेप में घटना का विवरण देते हुए रामकिशोर, चंदन और कुंदन को थाने न पहुंचने देने का निर्देश दे दिया. इस काम से फारिग होने के बाद इन तीनों ने अपनेअपने पिताओं से मिन्नत की तथा गांव का माहौल देखते हुए उन से इस मामले में पहल करने की प्रार्थना की. उन्होंने वादा किया कि आगे से वे ऐसी कोई हरकत नहीं करेंगे.

मुखिया, महाजन तथा भूतपूर्व जमींदार अपने बेटों के बल[illegible]

हत्या के संगीन मामले से घिरा देख सन्न रह गए, किंतु मामले का रंग बदल देना और माहौल को अपने अनुकूल बना लेना उन के बाएं हाथ का खेल था. अभी तक वे ऐसे खेल ही तो खेलते आए थे. उन्होंने चटपट योजना बना डाली. उन्होंने अपनी योजना की शतरंज की बिसात बिछा दी और मोहरे चलने लगे.

अभी लोग कलुआ की झोंपड़ी के आसपास ही बैठे हुए थे कि उन्होंने अपनी बस्ती से धुएं की लकीरें सी उठती देखीं. बच्चे दौड़ रहे थे. औरतें चीख रही थीं. और सब भाग कर कलुआ की झोंपड़ी की ओर आ रहे थे. बुधिया ने हांफतेहांफते बताया, "बापू, बस्ती के सभी घर जल रहे हैं." लोग अपने घरों की ओर दौड़ पड़े. इतने में कुछ लठैत भी आ गए. लठैतों ने कलुआ की झोंपड़ी के इर्दगिर्द खड़े बाकी लोगों को भी खदेड़ दिया. इस के बाद उन्होंने कलुआ और कालिंदी को झोंपड़ी से बाहर निकाला. दो लठैत कलुआ को पकड़ कर कहीं ले गए. शेष लठैतों ने कलुआ की झोंपड़ी में आग लगा दी. कलुआ की झोंपड़ी धूधू कर जलने लगी. साथ ही जलने लगी मंगली की निर्जीव देह.

गांव के लोगों ने जब अपनी झोंपड़ियों को जलते हुए देखा तो वे पागल हो उठे. उन के दिमाग सुलग उठे. उन्होंने गांव के बड़े घरों पर हमला कर दिया. किंतु न तो वे उन में आग लगा सके और न ही किसी बड़े घर को कोई क्षति पहुंचा सके, क्योंकि उन के यह सब करने से पूर्व ही गांव में पुलिस कदम रख चुकी थी. नेताजी ठाकुर भानुप्रतापसिंह ने गांव में दंगा होने की आशंका से पुलिस को बुला लिया था. कलुआ को महाजन के घर में आग लगाने के प्रयास के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया.

उधर सर्वोदयी कार्यकर्ता रामकिशोर, जो चंदन और कुंदन के साथ शहर के थाने में रपट लिखाने गए हुए थे, शहर ही नहीं पहुंच पाए. गांव की सीमा के बाहर शहर जाने वाली सड़क पर तीनों पुलिस को बेहोश पड़े मिले. चंदन और कुंदन के सिरों पर लाठी के वार हुए थे, जिन से उन की अवस्था भी चिंताजनक थी. ऐसे ही



तृप्ति हो चुकी थी, लेकिन मंगली आंसू बहाती हुई होश खो बैठी थी. होश खोने से पूर्व, कौमार्य लुटने से पूर्व उस के मन में जरूर कुछ प्रश्न गूंजे होंगे कि क्या असहाय, निर्बलों का कोई नहीं होता. लेकिन उस के मन में उठे ये प्रश्न अनुत्तरित ही रहे. कोई कृष्ण द्रौपदी की तरह उस की लाज बचाने नहीं आया. कालिंदी यह सब नहीं देख सकी थी. वह बेहोश हो गई थी, पर बाबू साहब, मैं अवाक, आंख बंद किए पड़ा था.

"तीनों दरिंदे जब थक गए तो उन्होंने पसीना पोंछने के लिए नकाबें हटाईं. मैं उन्हें देख कर स्तब्ध रह गया. जो देखा उस पर विश्वास नहीं हुआ. उन दरिंदों में से एक मुखिया रामकृष्ण का बेटा मुकेश था. दूसरा महाजन का लड़का सुरेश तथा तीसरा भूतपूर्व जमींदार ठकुर भानुप्रतापसिंह का बेटा चंद्रप्रताप था, जिस का पिता अब नेताजी के नाम से मशहूर है.

"उन दरिंदों ने अपने चेहरे का पसीना पोंछा, फिर नकाब चढ़ाए और झोंपड़ी का जायजा लिया. निर्वस्त्र मंगली के उरोजों को एक बार पुनः मसला और मुझे एक ठेकर और लगाई. बूट की ठेकर से मेरी कराह निकल गई. उन्होंने मुझे उठाया और धमकी देते हुए कहा, 'कलुआ, तू ने अगर किसी से कुछ कहा तो जिंदा नहीं बचेगा. ले ये कुछ रुपए.' उन्होंने कुछ नोट मेरे मुंह पर दे मारे और मुझे फिर से जमीन पर पटक कर दरवाजा खोल कर बाहर निकल गए."

रामकिशोर और गांव के लोगों की, जो कलुआ की आपबीती सुन रहे थे, आंखों में खून उतर आया. कलुआ कहे जा रहा था, "सुबह जब मुझे होश आया, तब किसी तरह मैं ने कालिंदी के हाथ खोले. उस ने पहले अपने मुंह से और बाद में मेरे मुंह से कपड़ा निकाला, मेरे हाथपांव खोले. तब कहीं हमें अपनी बेबसी पर आंसू बहाने का अवसर मिल पाया. हम ने जा कर मंगली को देखा. वह अभी भी बेहोश पड़ी थी. मुझे कुछ [illegible] नहीं रहा था. मैं बाहर निकल पड़ा और उन बदमाशों को, जिन्होंने रात मेरी झोंपड़ी में घृणित वासना का तांडव रचा था, कोसने लगा.

"बाबू साहब, आप ही बताइए, मैं और क्या करता? अपनी प्यारी बिटिया की इस दुर्गति को कैसे भूलता? उन दरिंदों ने इस मासूम को किस तरह कुचला है, कैसे भूल जाऊं? कौन मेरी बेटी की अस्मत लूटने वाले उन दरिंदों से बदला लेगा?"

कलुआ के विलाप और उसकी आपबीती सुन कर तथा अबोध मंगली के बलात्कार और उस की मौत की घटना ने समूचे गांव को हिला कर रख दिया. कलुआ की फरियाद और गांव के शोहदों द्वारा की गई उस की धुनाई ने वातावरण में और उत्तेजना भर दी.

पर सर्वोदयी कार्यकर्ता रामकिशोर ने सब को धैर्य बंधाया और शांत रहने को कहा. वह अपने साथ गांव के दो नवयुवकों को ले कर घटना की रपट लिखाने के लिए शहर चले गए. इधर मुकेश, सुरेश और चंद्रप्रताप को भी मंगली की मौत की खबर मिल गई थी. वे घबराए हुए थे. यद्यपि उन्होंने कलुआ की फिर से धुनाई कर उस का मुंह बंद करना चाहा था, तथापि मंगली की मौत और सर्वोदयी कार्यकर्ता रामकिशोर की कलुआ से भेंट से वे घबरा गए थे.

जब उन्हें यह जानकारी मिली कि रामकिशोर चंदन और कुंदन के साथ थाने में रपट लिखाने शहर रवाना हो गए हैं तो उन के दिल कांप उठे. उन तीनों ने शहर के अपने एक बदमाश मित्र को फोन किया तथा संक्षेप में घटना का विवरण देते हुए रामकिशोर, चंदन और कुंदन को थाने न पहुंचने देने का निर्देश दे दिया. इस काम से फारिग होने के बाद इन तीनों ने अपनेअपने पिताओं से मिन्नत की तथा गांव का माहौल देखते हुए उन से इस मामले में पहल करने की प्रार्थना की. उन्होंने वादा किया कि आगे से वे ऐसी कोई हरकत नहीं करेंगे.

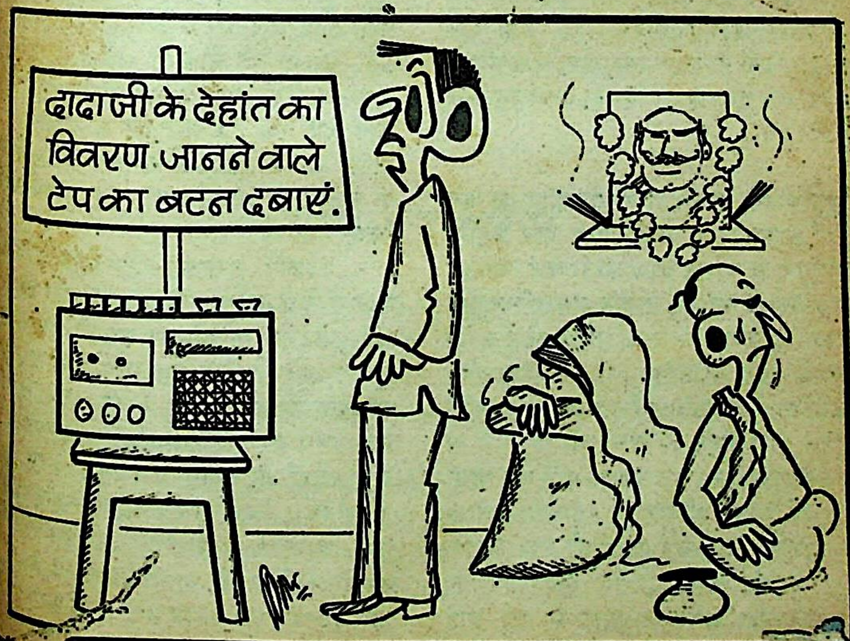
मुखिया, महाजन तथा भूतपूर्व [illegible] और जमींदार अपने बेटों को बल [illegible]

हत्या के संगीन मामले से घिरा देख सन्न रह गए, किंतु मामले का रंग बदल देना और माहौल को अपने अनुकूल बना लेना उन के बाएं हाथ का खेल था. अभी तक वे ऐसे खेल ही तो खेलते आए थे. उन्होंने चटपट योजना बना डाली. उन्होंने अपनी योजना की शतरंज की बिसात बिछा दी और मोहरे चलने लगे.

अभी लोग कलुआ की झोंपड़ी के आसपास ही बैठे हुए थे कि उन्होंने अपनी बस्ती से धुएं की लकीरें सी उठती देखीं. बच्चे दौड़ रहे थे. औरतें चीख रही थीं. और सब भाग कर कलुआ की झोंपड़ी की ओर आ रहे थे. बुधिया ने हांफतेहांफते बताया, "बापू, बस्ती के सभी घर जल रहे हैं." लोग अपने घरों की ओर दौड़ पड़े. इतने में कुछ लठैत भी आ गए. लठैतों ने कलुआ की झोंपड़ी के इर्दगिर्द खड़े बाकी लोगों को भी खदेड़ दिया. इस के बाद उन्होंने कलुआ और कालिंदी को झोंपड़ी से बाहर निकाला. वे लठैत कलुआ को पकड़ कर कहीं ले गए. शेष लठैतों ने कलुआ की झोंपड़ी में आग लगा दी. कलुआ की झोंपड़ी धूधू कर जलने लगी. साथ ही जलने लगी मंगली की निर्जीव देह.

गांव के लोगों ने जब अपनी झोंपड़ियों को जलते हुए देखा तो वे पागल हो उठे. उन के दिमाग सुलग उठे. उन्होंने गांव के बड़े घरों पर हमला कर दिया. किंतु न तो वे उन में आग लगा सके और न ही किसी बड़े घर को कोई क्षति पहुंचा सके, क्योंकि उन के यह सब करने से पूर्व ही गांव में पुलिस कदम रख चुकी थी. नेताजी ठाकुर भानुप्रतापसिंह ने गांव में दंगा होने की आशंका से पुलिस को बुला लिया था. कलुआ को महाजन के घर में आग लगाने के प्रयास के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया.

उधर सर्वोदयी कार्यकर्ता रामकिशोर, जो चंदन और कुंदन के साथ शहर के थाने में रपट लिखाने गए हुए थे, शहर ही नहीं पहुंच पाए. गांव की सीमा के बाहर शहर जाने वाली सड़क पर तीनों पुलिस को बेहोश पड़े मिले. चंदन और कुंदन के सिरों पर लाठी के वार हुए थे, जिस से उन की अवस्था भी चिंताजनक थी. ऐसी ही



अवस्था रामकिशोर की भी थी. पुलिस ने इन्हें हस्पताल में दाखिल करा दिया. अभी ये तीनों बयान देने की स्थिति में नहीं थे.

दारोगा रणवीरसिंह गांव में जुल्म ढा कर शांति कायम रखने में लगे हुए थे. ठाकुर भानुप्रतापसिंह के शाही मेहमानखाने को उन्होंने पुलिस चौकी बना लिया था. कलुआ सहित 20 व्यक्तियों को गिरफ्तार कर के वह शहर स्थित जेल भेज चुके थे. गांव में अब ठाकुर भानुप्रतापसिंह, महाजन और मुखिया के सभी विरोधी जेल जा चुके थे. गांव में कहने को तो शांति कायम हो चुकी थी, लेकिन इस शांति में मरघट जैसा सन्नाटा निहित था. रणवीरसिंह भी जांचपड़ताल की खानापूरी कर के शहर लौट गए. जाते समय ठाकुर भानुप्रतापसिंह ने उन की मुट्ठी गरम कर दी थी.

रणवीरसिंह की जांच रिपोर्ट पर जिला प्रशासन द्वारा जारी की गई विज्ञप्ति कुछ इस प्रकार थी: "भानुपुरा में भड़के जातीय दंगे में 20 झोंपड़ियां जल कर नष्ट हो गईं. झोंपड़ियों में हुए अग्निकांड में मंगली नामक एक 16 वर्षीय युवती जीवित ही जल मरी. यह दंगा एक ही समाज के दो वर्गों की आपसी रंजिश का परिणाम था. दोनों पक्षों के 20 लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है तथा अब भानुपुरा में स्थिति नियंत्रित और शांतिपूर्ण है."

सर्वोदयी कार्यकर्ता रामकिशोर को जब हस्पताल में होश आया और उन्होंने भानुपुरा में घटित कांड की रिपोर्ट स्थानीय अखबारों में पढ़ी तो उन्होंने अपना सिर पीट लिया. अखबार में प्रकाशित रिपोर्ट उन्हीं 'तथ्यों' पर आधारित थी, जो शासकीय विज्ञप्ति में प्रकाशित किए गए थे. उन्होंने चंदन और कुंदन की खबर ली तो उन्हें जो सदमा लगा, उसे वह व्यक्त नहीं कर पाए. उन की हिम्मत सी टूट गई. सांघातिक चोटों के कारण चंदन और कुंदन भी चल बसे थे.

किसी तरह उन्होंने अपनेआप को संभाला और अपने कार्यालय में गए. वहां उन्होंने कार्यालय प्रधान को घटना का पूर्ण विवरण दिया. कार्यालय प्रधान ने एक ओर तो संवाददाता सम्मेलन का आयोजन किया था, दूसरी ओर स्थानीय राजनीतिक नेताओं से संपर्क कर उन्हें भी कार्यालय में बुला लिया.

रामकिशोर ने जहां अखबारों के संवाददाताओं को भानुपुरा गांव में घटित कांड का सही ब्योरा दिया, वहीं उन्होंने विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं से मंगली के हत्यारों को दंडित कराने तथा कलुआ को न्याय दिलाने की सक्रिय पहल करने की अपील की. संवाददाता जब जेल पहुंचे तो उन्हें पता चला कि कलुआ की तो मौत हो चुकी है. इसी बीच विपक्षी दलों के नेता भी वहां पहुंच गए. कलुआ की असामयिक मौत पर उन्होंने वावैला खड़ा कर दिया तथा उस के शव की पोस्टमार्टम जांच कराने की मांग की. वे गांव से गिरफ्तार अन्य लोगों से भी मिले. गांव के लोगों की आंखों में खून उतरा हुआ था. लेकिन उन्होंने किसी प्रकार का बयान देने से इनकार कर दिया.

दूसरे दिन भानुपुरा कांड अखबारों की सुर्खी बना. राजनीतिक क्षेत्रों में हलचल मच गई. कलुआ की मौत के संबंध में जिला प्रशासन द्वारा जारी किए गए प्रेस नोट में कहा गया कि "कलुआ की मौत आग से झुलस जाने से हुई. उसे भानुपुरा में महाजन के मकान में आग लगाते हुए गिरफ्तार किया गया था."

पत्रकार, सत्तारूढ और विपक्षी दलों के नेताओं के काफिले भानुपुरा की ओर बढ़ने लगे. भानुपुरा पहुंचने पर इन की अगवानी मुकेश, सुरेश और चंद्रप्रताप तथा ठाकुर भानुप्रतापसिंह के लोगों ने की. पत्रकारों ने वातावरण की गंभीरता को परखा. गांव के शेष लोगों के बयान कलमबद्ध करने के प्रयास किए, किंतु गांव के लोगों के होंठ नहीं खुले. कालिंदी उन्हें ठाकुर भानुप्रतापसिंह की हवेली में मिली. वह विक्षिप्त थी, बयान नहीं दे सकी. वह केवल उन्हें सूनी आंखें फाड़ कर

टुकुरटुकुर निहारती सी रही. काफिले लौट गए.

भानुपुरा कांड की रपट से अखबारों के कालम के कालम रंग गए. विपक्षी नेताओं के वक्तव्यों से राज्य सरकार थर्रा उठी. भानुपुरा गांव रातोंरात एक चर्चित गांव बन गया. इसी बीच जिला प्रशासन ने घटना की दंडाधिकारी से जांच के आदेश जारी कर दिए. इधर गांव के लोगों से, जो जेल में बंद थे, ठाकुर भानुप्रतापसिंह मिले. उन्होंने उन्हें छुड़ाने का आश्वासन दिया तथा जबान बंद रखने की धमकी भी. इस के एवज में उन्होंने सरकार से सुविधाएं उपलब्ध कराने का वचन भी दिया. उन का संबंध सत्तारूढ़ पार्टी से था. उन की तथा सत्तारूढ पार्टी के नेताओं की पहल से गिरफ्तार ग्रामवासी रिहा हो गए.

जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों ने ग्राम का दौरा कर स्थिति का मुआयना किया था. पीड़ित परिवारों को पुनर्वास के लिए एकएक हजार रुपए की आर्थिक सहायता देने की घोषणा कर दी. राज्य के दो मंत्रियों ने भी ग्राम का दौरा किया था, ग्रामवासियों से शांति और सद्भाव बनाए रखने की अपील करते हुए कलुआ की घरवाली कालिंदी को पांच हजार रुपए का चैक भेंट किया तथा उस के पति और बेटी की मृत्यु पर सरकार की ओर से संवेदना व्यक्त की.

इसी बीच दंडाधिकारी की जांच पूरी हो गई. दंडाधिकारी की जांच में यह कहा गया कि सर्वोदयी रामकिशोर के भड़काने पर ग्राम में आगजनी और दंगाफसाद की घटना हुई. सर्वोदयी रामकिशोर की गिरफ्तारी के आदेश जारी किए गए और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया. जांच रिपोर्ट में दंगा और आगजनी की घटना में ही कलुआ और मंगली की मृत्यु होने की पुष्टि भी की गई. विज्ञप्ति में कुंदन और चंदन की मृत्यु आपसी संघर्ष में सांघातिक चोटें लगने के कारण हुई बताई गई. इस की भी जांच रिपोर्ट में पुष्टि की गई.

इधर विपक्षी नेताओं ने इस मामले को राज्य विधान सभा में उठाने का प्रयास किया, किंतु बहुमत ने उन्हें दबा दिया. मुकेश, सुरेश और चंद्रप्रताप आज भी गांव की गलियों में निर्द्वंद्व घूम रहे हैं, लेकिन बस्ती की ओर जाने का साहस उन में अभी भी नहीं है. बस्ती के एक व्यक्ति ने ग्राम की रिपोर्ट लेने आए पत्रकारों के एक दल से कहा था, "साहब, चिनगारी हवेली से लगी थी और एक न एक दिन परिणाम हवेली को भोगना ही पड़ेगा, चिनगारी भड़केगी जरूर." ●

पुरुषों का परदा

स्त्रियां परदा करती हैं, यह सब तो आप जानते ही हैं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि विश्व में एक जगह ऐसी भी है जहां पुरुष भी परदा करते हैं.

पश्चिमी अफ्रीका में सहारा मरुस्थल में टिंबूकूट नामक स्थान पर रहने वाले त्वरिम जाति के पुरुष ऐसे ही हैं, जिन्हें स्त्रियों से परदा करना पड़ता है और स्त्रियां बड़े मजे से बेपरदा रहती हैं.

इस जाति के पुरुष कुरूप होने के अलावा आशंकित और झगड़ालू प्रकृति के होते हैं. इन्हें अपनी पत्नी के अलावा मां, दादी, मामी, भाभी, बूआ आदि से परदा करना पड़ता है. ये पुरुष हर समय लंबा सा एक घूंघट काढ़े रहते हैं. सिर्फ भोजन के समय ही उन का यह परदा हटता है ताकि भोजन करने में उन्हें दिक्कत न हो.

जब टीले हंस पड़े

कहानी • प्रभात त्यागी

जहां तक दृष्टि जाती, रेत ही रेत दिखाई दे रही थी. ऊंचे टीलों पर हवा की अठखेलियों से अगणित लहरें बन गई थीं. कहींकहीं फोक व बबूल आदि के वृक्ष दार्शनिकों की तरह अकेले खड़े थे. संध्या काल में सूर्य की पीली किरणों से चमकते चारों ओर बिखरे स्वर्ण जैसे कणों को देख कर नाथी दौड़ती हुई घर से निकल पड़ी. निश्चित टीले पर आ कर वह सीधी कटे वृक्ष की तरह गिर पड़ी. अपने दोनों





नाथी को जबरदस्ती ब्याह कर ले जाने वाले उदयसिंह को जब गांव वालों ने घेर लिया तो उस ने वहां से बच निकलने का खूबसूरत बहाना गढ़ लिया. लेकिन नाथी की सहेली दम्मा ने उस के आगे एक शर्त रख कर एक तीर से दो शिकार कर दिए.

हाथों को फैला कर उस ने रेत के कणों को दोनों मुट्ठियों में भर लिया. आंखें बंद कर जैसे ही वह इन पलों को अपनी पलकों में समेटना चाहती थी, उसे लगा जैसे एक झंझावात उठ खड़ा हो—दम्मा ने न जाने कहां से आ कर उसे अपनी बांहों में कस कर भर लिया.

असावधान नाथी दम्मा को लिए हुए टीले से नीचे की ओर फिसल पड़ी. टीले की सीमा तक जा कर दोनों हंसती, खिलखिलाती उठ खड़ी हुईं. दोनों ने एकदूसरे को देख कर और भी ठहाके लगाए. दोनों के बालों, आंख व कान, नाक में धूल भर गई थी.

"दम्मा की बच्ची, मुझे तेरा यह लड़कपन बिलकुल पसंद नहीं है. देख न, आज ही बाल धो कर कंघी की थी, तू ने फिर इन में धूल भर दी," गुस्से से नाथी बोली.

"बिगड़ो मत, मेरी प्राणेश्वरी. लाओ मैं अपने हाथों से तुम्हारे खूबसूरत चेहरे की धूल साफ कर दूं."

"बस, बस, रहने दे. ये तेरा लाड़दुलार तो मुझे और भी बुरा लगता है," नाथी अपने वस्त्रों व बालों से धूल निकालते हुए बोली.

"बुरी तो मुझे भी तेरी एक हजार एक बातें लगती हैं. बल्कि मेरे तो दिल पर सांप ही लोट जाता है यह सोच कर कि तेरे जैसी

"मोटे राजा, देखती हूं तू मुझ से कैसे फेरे लेता है," नाथी ने सुलगती हुई लकड़ी हाथ में थाम ली. ▲

अप्सरा को ब्याह कर ले जाने वाला कौन भाग्यशाली होगा. काश, मैं पुरुष होती तो... सचमुच तेरी सुंदरता देख कर मेरा कलेजा हमेशा आहें भरता रहता है."

"चुप भी रह, कमबख्त, तू अपनी इन मीठीमीठी बातों से जरूर मेरे दिल को छलनी बना देगी. क्या पता कल हीं कोई जीजाजी आ कर तुझे ले जाएं. यहां इस टीले पर मैं अकेली बैठी तब टसुवे बहाती रहूंगी और तू वहां प्रेम के फाग रचाने में मग्न होगी," नाथी दम्मा की गोद में सिर छिपा कर रुआंसी हो कर बोली.

"अरे, फिर वही बात? नाथी, मैं ने तुझे कितनी बार कहा है कि तू मेरे सामने रोया मत कर. क्या पता तुझे ले जाने वाला तेरे सपनों का राजकुमार तुझे यहां से ले जा कर कभी पीहर आने देगा भी या नहीं. मैं तो बस यही चाहती हूं कि एक बार अपनी परी जैसी सहेली, लंबे काले बालों, मरमरी बांहों, घनी भौंहों, लाल पतले होंठों और अनार जैसे दांतों वाली नाजुक सुकुमारी के जीवनाधार को इन आंखों से देख लूं." पीठ के बल टीले पर लेटते हुए दम्मा बोली.

"उसे बाद में देखना, अभी तो इस जंगली भैंसे को देख."

"ऐं, जंगली भैंसा, इस रेगिस्तान में?" दम्मा बैठते हुए बोली.

"देख न उधर," नाथी खिलखिलाई. दम्मा भी अपनी हंसी को नहीं रोक सकी.

थोड़ी दूरी पर एक भारीभरकम मोटा व्यक्ति हांफता, लंबी सांसें लेता हुआ, टीलों पर ऊपर चढ़ता चला आ रहा था. रुकरुक कर रेत में गहरे चले जाने वाले पैरों व जूतों को वह बारबार बाहर निकालतेनिकालते तंग आ चुका था. उस के पीछे दो सेवक एक घोड़े की रास पकड़े चले आ रहे थे. दम्मा व नाथी यह सोच कर मुसकरा उठीं कि अपने मोटापे के कारण वह व्यक्ति घोड़े पर चढ़ने में भी असमर्थ था. अचानक उस व्यक्ति के पीछे कई हथियारबंद सिपाहियों को देख कर दम्मा चीत्कार कर उठी, "उई मां..."

"अरी, रुक तो सही, क्यों भाग रही हैं?" नाथी उसे पुकारती ही रह गई.

तब तक वह मोटा व्यक्ति धोती और अंगरखे में पसीने से तरबतर एक टीले पर संभल न सकने के कारण फिसल कर चारों खाने चित हो कर गिर पड़ा. नाथी उन्मुक्त रूप से ठठा कर हंस पड़ी. तब तक चार व्यक्तियों ने दौड़ कर मोटे व्यक्ति को पंखे से हवा करनी शुरू कर दी. दो व्यक्तियों ने घोड़े से बंधा एक तख्ता खोल कर जमीन पर रखा और उस मोटे व्यक्ति को उस पर सुला कर चारों व्यक्ति उसे उठा कर टीले की चढ़ाई पार करने लगे.

गांव का रास्ता उसी टीले पर से था, जिस पर नाथी बैठी हुई थी. उस की आंखें व्यंग्य से मानो खिली पड़ रही थीं. जैसे ही तख्ते को लिए हुए चारों व्यक्ति नाथी के पास से गुजरने लगे, तख्ते पर लेटेलेटे मोटा व्यक्ति नाथी को घूरने लगा.

"कौन हो तुम?"

"मैं...?" नाथी हंसी, "शरीर तो तुम्हारा हाथी जैसा ही है, पर मुझे पता न था कि तुम्हारी आंखें भी उसी की तरह छोटी होंगी. देख नहीं रहे हो कि मैं एक लड़की हूं?"

मोटा व्यक्ति कट कर रह गया. उसे हाथों में थाम कर खड़े चारों व्यक्ति भी अपनी हंसी नहीं रोक सके. खीसें निपोर कर वे पत्थर के बुत बन कर खड़े हो गए.

"कौन सा गांव है यह?" उस ने फिर पूछा.

"बीलड़ा. क्यों, गांव को क्या ज्योनार (दावत) दोगे?" नाथी व्यंग्य से बोली.

"जानती हो, मैं कौन हूं?" सहसा मोटे व्यक्ति ने प्रश्न किया.

"तुम्हें? हां...हां, क्यों नहीं. अभी थोड़ी देर पहले उस टीले पर तुम्हें चारों खाने चित पड़ा देखा तो था," शरारत से नाथी बोली.

"चलो." क्रोध से मोटे व्यक्ति ने सेवकों को आगे बढ़ने का आदेश दिया.



"अपना नाम और अतापता तो बताते जाओ, शायद किसी काम आ जाए."

"मेरा नाम और पता दोनों ही थोड़ी देर में मालूम हो जाएंगे. वैसे तेरे बाप का क्या नाम है?"

उस के गदराए तन पर दृष्टि गड़ाते हुए वह बोला.

"क्यों, मेरी जन्मपत्री तैयार करनी है क्या तुम्हें? जाओ, रास्ता नापो अपना."

डूबते सूर्य की लालिमा में जब चारों ओर की रेत सुर्ख हो उठी, नाथी अंगड़ाई ले कर अपने स्थान से उठ खड़ी हुई. उस के गौरवर्ण और सांचे में ढले सुंदर मुख पर सूर्य की लालिमा से उस का लावण्य और भी अधिक आकर्षक हो उठा. हंसिनी जैसी आकर्षक चाल से जब वह अपने घर की ओर लौटने लगी तो अचानक एक टीले के पीछे से उसी मोटे व्यक्ति को उठते देख कर नाथी चौंक पड़ी.

"तुम?"

"हां, मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था. क्या करूं, तुम ने तो मुझे अपने रूपजाल में ऐसा बांध लिया कि मेरे पैर आगे उठे ही नहीं. अभी सूर्य की किरणों में तुम लाल, पीली लौ जैसी कमसिन लग रही थीं."

"यह मत भूलना कि लौ जब लपलपा उठती है तो उस की चपेट में आने वाली प्रत्येक वस्तु जल कर राख हो जाती है."

"तो तुम भी मत भूलना कि तुम्हारा पाला किसी और से नहीं, मोटा उदयसिंह से पड़ा है. मुझे जो चीज एक बार पसंद आ गई, मैं ने उसे हर कीमत पर प्राप्त किया है."

"मोटा राजा उदयसिंह?" नाथी सचमुच कांप उठी. अब वह समझी कि दम्मा क्यों भागी थी. भागतेभागते उस ने उसे भी इशारा किया था, पर वह तो कुछ सोचसमझ ही नहीं पाई थी. विलासी, आलसी और कामी जोधपुर के राजा उदयसिंह को कौन

"मुझे पता था कि तुम दोनों यहां से भाग सकती हो. अब तो उदयसिंह यहां से नाथी को ब्याह कर ही ले जाएगा," उदयसिंह की बात सुन कर मांबेटी घबरा गईं. ▲

नहीं जानता था? स्त्रियों के सम्मान और उन की लाज का वह कट्टर शत्रु था. 27 रानियों के रहते हुए भी वह हर सुंदर युवती को देख कर ललचा उठता था. उस की अपनी 34 संतानों में से कई तो नाथी से छोटी या बराबर की उम्र की होंगी. तब भी...?

घृणा व क्रोध से नाथी का शरीर जल उठा. उस की इच्छा हुई कि अगर कोई बड़ा पत्थर उसे इस समय मिल जाए तो उस से इस सांप का सिर कुचल डाले और फिर इन टीलों में ही कहीं इस की समाधि बना दे. पर पत्थर तो क्या उस अथाह रेगिस्तान में तो एक तिनका तक भी दिखाई नहीं दे रहा था. रेत और केवल रेत का सागर चारों ओर लहरा रहा था. अपनेआप को नियंत्रित कर वह तेजी से घर की ओर चल पड़ी. उदयसिंह कुछ दूर तक उस के पीछे चला पर दम फूल जाने के कारण उसे बीच में ही रुक जाना पड़ा.

घर पहुंच कर नाथी को सारे गांव में अजीब हलचल दिखाई दी. जिसे देखो खुश हो कर घूम रहा था. सब के मुंह पर एक ही वाक्य था– "बीलड़ा का सौभाग्य है कि अन्नदाता यहीं बसेरा कर रहे हैं." उन के ठहरने की विशेष व्यवस्था की जा रही थी. सब घरों से चटपट घी और दूध इकट्ठा किया जा रहा था, जिस से महाराजाधिराज को किसी प्रकार का कष्ट न हो.

नाथी गला फाड़ कर उन के महाराजाधिराज का वास्तविक रूप सब पर प्रकट करना चाहती थी, पर वह चुप रही. वह जानती थी कि उस की बात का कोई मूल्य नहीं, सब अपने 'परमपरमेश्वर' को ही सही बताएंगे. उन्हें कौन समझा सकता है कि 'हमेशा शासक सही होता है' वाला युग न कभी था और न कभी भविष्य में रहेगा. शासक भी हाड़मांस का जीव होता है, जिस की चारित्रिक कमजोरियों की भी उतनी ही कड़ी सजा होनी चाहिए, जितनी साधारण व्यक्ति को दी जाती है.

नाथी यह देख कर तो आसमान से ही गिर पड़ी कि उदयसिंह ने उसी का घर अपने भोजन के लिए चुना था. उस की मां उस की अनुपस्थिति में विशेष भोजन तैयार करने में जुटी हुई थी.

कोई ज्वालामुखी तभी फटता है जब एक सीमा के पश्चात उसे अपने ताप को नियंत्रित रखना कठिन हो जाता है. पर यह विडंबना ही थी कि अपने हृदय के दावानल को नाथी अपने परिवार वालों तक को नहीं बता सकती थी. वे निश्चय ही उसी को दोषी ठहराते. अतः उदयसिंह के विरुद्ध बिना एक भी शब्द बोले वह चुपचाप रसोई में जा बैठी.

उस की मां ने बेसन की कढ़ी और मूंग मोठ की मिली हुई दाल बनाई थी. मां के कहने पर उसे बेसन के मसालेदार गट्टे भी बनाने पड़े. थोड़ी देर में उस के सिद्धहस्त हाथ बाजरे की गोलमटोल फूलीफूली रोटियां बना रहे थे. उदयसिंह उन रोटियों और स्वादिष्ट खाने की तारीफ करता नहीं अघाया. खाना खाते हुए चौके से वह नाथी को चूल्हे के सम्मुख अपलक निहारता रहा.

कमर से नीचे तक लटकी बालों की चोटी में लटकते घुंघरुओं के मधुर स्वर, नाक की बड़ी नथ व गले में लटकी छोटेछोटे, खूबसूरत, रंगबिरंगे शंखों की माला और कलाई से ले कर ऊपर बांहों तक पहने हाथी

सहारा

ये दिल जरा सा तेरी
यादों में खो गया,
जर्रे को आंधियों का
सहारा है इन दिनों.

—कतील शिफाई



कांत के चूड़ों की खनखनाहट से उस का मन कुलांचे भरने लगा था. जबजब नाथी अपने चेहरे पर गिरती बालों की लटों को आटे से सने हाथ से झटके से पीछे डालती, कामुक उदयसिंह का हृदय 'आह' भर उठता.

राजा की ईश्वर के रूप में पूजा करने वाले गांव के सीधेसादे लोगों को उस में कभी कोई दोष दृष्टिगोचर हो ही नहीं सकता था. पर एक नारी हृदय ऐसा भी था जिस की दृष्टि से उदयसिंह की सारी गतिविधियां, उस की कुत्सित चेष्टाएं व निंदनीय कामुकता छिपी न रह सकी. वह थी नाथी की मां गंगा. खाना खाते उदयसिंह के चेहरे और उस की वासनामय दृष्टि पर उस की बराबर नजर थी.

चार दिन व्यतीत हो जाने पर भी जब उदयसिंह ने बीलड़ा से जाने का नाम न लिया तो गंगा का माथा ठनका. उसे विश्वास हो गया कि जोधपुर का बदनाम शासक कुछ गलत मंतव्य से ही बीलड़ा में आ कर ठहरा हुआ है. उस ने मन ही मन एक निश्चय किया. रात्रि के अंधेरे में वह चुपचाप अपने मकान से निकल कर एक ओर चल दी. उस के साथ नाथी भी थी.

नाथी का पिता जयपाल मकान से काफी दूर एक झोंपड़े में सुलगते हुए हवनकुंड के पास ध्यान चित्त बैठ हुआ न जाने किस साधना में लीन रहता था? वैसे तो गांव के सभी लोग आया पंथी संप्रदाय के होने के कारण कुछ रहस्यमय तंत्र क्रियाएं करते रहते थे, पर जयपाल तो इन क्रियाओं के पीछे दीवाना हो चुका था. लोग उसे वास्तविक साधक मान कर उस का बहुत सम्मान करते थे. नाथी व गंगा जब उस रात्रि को जयपाल के झोंपड़े में पहुंची तो वह दीनदुनिया से बेखबर गहरे नशे में धुत पड़ा था. हवनकुंड जल कर राख हो चुका था और उस के पास ही मदिरा के पात्र व मांस की तश्तरी औंधी पड़ी हुई मुंह बिसूर रही थीं.

गंगा अपने पति की यह स्थिति देख कर क्रोध से कांप उठी. उस ने उसे झिंझोड़ कर जगाना चाहा. पर वह बोला, "क्यों तंग करता है रे? पीनी है तो ले ले, मुझे परेशान करने की क्या जरूरत है?" कहतेकहते उस ने ऐसा अभिनय किया जैसे मदिरा के पात्र में वह मादक द्रव उड़ेल रहा हो.

"बापू..." नाथी अपने पिता की दुर्दशा देख कर चीख उठी.

"ओह मां." दूसरे ही पल वह गंगा के कंधे पर सिर रख कर सुबकने लगी.

"तेरा बापू ही किसी काम का होता तो हमारी यह दुर्दशा ही क्यों होती? अब तक तो कभी के तेरे हाथ पीले हो जाते. हमारे प्राणों पर बीत रही है और यह दुनिया से भाग कर यहां सब को भुलाए बैठा है."

थोड़ी देर तक झोंपड़े में शांति का साम्राज्य रहा. नाथी अपनी मां के उद्गारों को समझ रही थी. उस के मन में भी अपने पिता की नकारात्मक नीति के प्रति गहरा आक्रोश था. पर प्रश्न तो यह था कि आने वाले भयावह संकट से कैसे बचा जाए.

"जंत्रतंत्र के नाम पर मुफ्तखोरी करने और हाथ पर हाथ धर कर बैठने वाले कापुरुष, यदि संकट में तू मेरी सहायता नहीं कर सकता तो फिर तू मेरा पति भी बनने योग्य नहीं है."

"मां, यह तू क्या कह रही है?" नाथी



हमसफर

वफा की राह में
इक ऐसे मोड़ पर हम थे,
जहां पे कोई न था
अपने हमसफर हम थे.
—सलीम अश्क

ने मां के विचारों की गति में व्यवधान उपस्थित करना चाहा.

"बेटी, मैं इस धार्मिक व खोखली क्रिया को समाप्त कर के ही मानूंगी. देखती हूं, मुझ पर कौन सा कहर गिरता है." गंगा ने हवनकुंड को उलटा कर दिया. तांत्रिक साधना के लिए बनाए हुए खड़िया के चित्रों को उस ने अपने पैरों से धरती से मिटा डाला. मदिरा और मांस के पात्रों को तो उस ने रेगिस्तानी टीलों पर ही फेंक दिया.

"जो धर्म व्यक्ति की समय पर सहायता न कर सके, चाहे उस का रूप कुछ भी क्यों न हो, वह त्याज्य है. ऐसे ढकोसले को बढ़ावा देना भी कायरता है. हम 'आया' लोग धर्म के नाम पर आज तक कितने मूर्ख बनते रहे हैं."

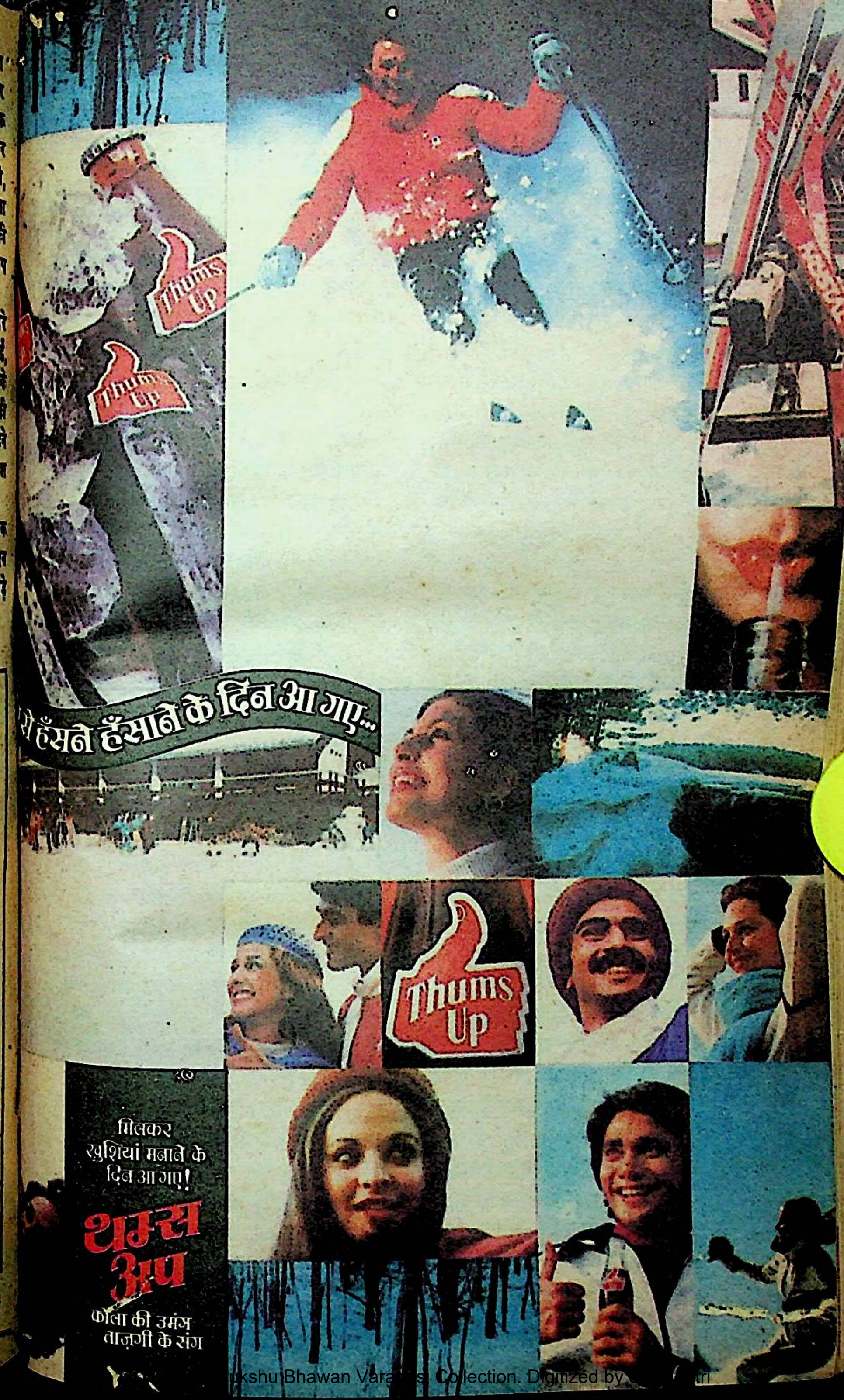
"पर, मां, बापू का जब नशा दूर होगा तो वह तुम्हें अपनी तंत्र विद्या से कोई नुकसान पहुंचा देंगे," नाथी ने आशंका व्यक्त की.

"बेटी, इस से अधिक मेरा और क्या नुकसान होगा जो मुझे अभी हो रहा है? पर मैं नहीं मानती कि तेरे बापू एक तिनके तक को भी अपनी जगह से हिला सकते हैं. फिर मुझे यह क्या हानि पहुंचाएंगे? आ, बेटी, चलें, हम दोनों को ही कोई रास्ता ढूंढ़ना होगा. आलसी, कामचोर और नशेबाज की बेटी और पत्नी बनने का यही तो अभिशाप है."

मांबेटी दोनों उदयसिंह के विरुद्ध सारे गांव के लोगों से सहायता लेने घरघर गईं, पर कौन उन की सहायता करता? राजा के तो नाम से ही लोग डरते थे. उस की उपस्थिति के बाद तो किसी को कुछ कहने का साहस ही नहीं था. गंगा व नाथी निराश और दुखी हो कर अपने घर लौट आईं.

घर के बाहर उदयसिंह के एक सेवक को खड़ा देख कर गंगा चौंकी. उस ने प्रश्न किया, "क्या बात है? तुम यहां क्यों खड़े हो?"




Thums Up
Thums Up
...हँसने हँसाने के दिन आ गए...
Thums Up
मिलकर
खुशियां मनाने के
दिन आ गए!
थम्स
अप
कोला की उमंग
ताज़गी के संग

वह बोला, "अन्नदाता ने तुम्हारे खाने की बहुत तारीफ की है और इनाम के रूप में यह हार भेजा है."

हार को देख कर दोनों को तनिक भी खुशी नहीं हुई.

"महाराज ने यह भी कहलाया है कि आज रात को सेवा के लिए अपनी बेटी को भेज दोगी तो और भी मालामाल हो जाओगी. और अगर रात को नहीं पहुंची तो परिणाम बहुत खराब होगा." सेवक धमकी दे कर चला गया.

गंगा व नाथी के मुंह से कई क्षणों तक कोई बोल नहीं निकला. प्रजावत्सल कहलाने वाले शासक से उन्हें ऐसे व्यवहार की बिलकुल आशा नहीं थी. अचानक गंगा बोली, "नाथी, चल जल्दी मेरे साथ, नहीं तो मैं तेरी इज्जत नहीं बचा सकूंगी."

वे दोनों ठकुर बलवानसिंह के घर के बाहर पहुंचीं. बाहर बंधी ऊंटनी को खोल कर दोनों उस पर सवार हो कर तेजी से रेगिस्तानी टीले को पार करने लगीं. किंतु बीलड़ा की सीमा पार कर जैसे ही वे आगे बढ़ीं, सामने से तीनचार ऊंटों को अपनी ओर आता देख कर दोनों को वापस लौटना पड़ा. बीलड़ा की सीमा पर स्वयं उदयसिंह खड़ा हुआ था. वह बोला, "मुझे पता था कि तुम दोनों यहां से भाग सकती हो. इसी लिए जोधपुर से मैं ने और ज्यादा सिपाही बुला लिए थे. अब तो उदयसिंह यहां से नाथी को ब्याह कर ही ले जाएगा."

बेचारी गंगा कुछ न बोल सकी. पर नाथी से विवाह के प्रस्ताव की बात सुबह होतेहोते सारे गांव में फैल गई.

उसी रात्रि के तीसरे पहर में जब मांबेटी सुबह आने वाली मुसीबत की चिंता में दुखी बैठी थीं, अचानक उन के मकान के बाहर के दरवाजे पर एक जोरदार प्रहार हुआ. टूटे दरवाजे पर जयपाल खड़ा हुआ था. उस के हाथ में कुल्हाड़ी थी और गुस्से से वह थरथर कांप रहा था.

"तेरी इतनी हिम्मत कि तू मेरी तांत्रिक साधना को नष्ट कर डाले? पूरे गांव में मेरी साधना की चर्चा है, पर तू अकेली इसे ढकोसला समझती है. मैं तुझे आज जीवित नहीं छोड़ूंगा."

"यदि तुम्हारी साधना में वास्तव में कुछ दम होता या तुम में कुछ साहस होता तो तुम्हारी पत्नी और बेटी की आज दुर्दशा न होती. अच्छा हो यदि तुम इस कुल्हाड़ी का वार मोटा राजा उदयसिंह पर करो जो हमारा असली शत्रु है," गंगा शांति से बोली.

"क्या कह रही है तू?" कुल्हाड़ी को जमीन पर रखते हुए जयपाल बोला, "अन्नदाता के लिए ऐसे बोल बोलते हुए तुझे लाज नहीं आती?"

"लाज?" गुस्से में भर कर गंगा तमक कर बोली, "तुम्हारा अन्नदाता, बूढ़ा, खूसट, अपनी पोती की उम्र की हमारी नाथी से विवाह करने के लिए गांव में डेरा डाले पड़ा है. बोलो, दे दोगे अपनी बेटी उसे?"

"नाथी का विवाह मोटा राजा उदयसिंह से?" कुल्हाड़ी धरती पर गिरा कर जमीन पर बैठते हुए जयपाल इस बात को सुन कर आश्चर्य प्रकट करता हुआ बोला, "उस दुष्ट का मैं अभी खात्मा करता हूं. तू भी देखना कि मैं क्या हूं. जैसे ही वह कुल्हाड़ी उठा कर चलने को उद्यत हुआ गंगा बोली, "जाने से पहले यह मत भूलना कि उस के हथियारबंद सेवक गांव में और गांव के बाहर फैले हुए हैं, जो तुम्हारे शरीर के टुकड़ेटुकड़े कर देंगे. क्यों नहीं तुम उसे व उस के साथियों को मच्छर या भालू बना कर अपनी साधना और तंत्र विद्या का नाम चमका देते?"

गंगा के कड़वे व्यंग्य पर भी जयपाल चुप रहा.

"तो फिर मैं इस मुसीबत की जड़ को ही खत्म कर देता हूं..." कहतेकहते वह जैसे ही नाथी पर कुल्हाड़ी ले कर झपटा, उस की कुल्हाड़ी को कस कर पकड़ कर गंगा चिढ़ कर बोली, "इस का क्या दोष है जो इस पर अपनी मर्दानगी दिखा रहे हो? अपनी

अयरता का शिकार एक कमजोर को बना कर बहादुर बन रहे हो? कुछ करना है तो मोटे राजा के साथ करो और नहीं तो चुप हो कर या फिर मदिरा पी कर सारी दुनिया को भूल जाओ. पर खबरदार जो फिर कभी मेरे आगे अपनी झूठी विद्या की डींगें हांकीं."

किसी हारे हुए खिलाड़ी की तरह निराश, झुके कंधे और बुझी नजरें लिए जयपाल चुपचाप घर से बाहर निकल गया. अपने झोंपड़े में जा कर तंत्र साधना में काम आने वाली सारी वस्तुओं को ठोकर मार कर, दोनों हाथों में अपना सिर पकड़ कर वह धरती पर बैठ गया.

उदयसिंह तो अब हर कीमत पर नाथी से अपना विवाह रचाने को तुला हुआ था. गांव में फैली इस खबर से वह और भी बेशर्म हो गया. उस ने अपने हथियारबंद सैनिकों की सहायता से पास के गांव से एक पंडित को पकड़ बुलाया. उस के आदेश से उस के सैनिक नाथी को जबरदस्ती विवाह के लिए उठा लाए. उदयसिंह ने नाथी को आदेश दिया कि वह वरमाला उस के गले में डाल दे.

जयपाल भी इतने में वहां आ पहुंचा था. उस ने कहा, "ठहरिए, महाराज. विवाह की वेदी मैं बनाऊंगा."

देखतेदेखते उस ने एक विशाल अग्निकुंड का निर्माण किया. वह चुपचाप उस अग्निकुंड की बगल में बैठ गया. लोगों को तो जैसे सांप ही सूंघ गया था. वे मूक दर्शक बने अपनी आंखों से अन्याय होता देखते रहे. केवल गंगा अश्रुपूरित नेत्रों से अपनी बेटी को ताक रही थी. जब सारा गांव ही मौन था तो वह क्या कर सकती थी?

जैसे ही नाथी को फिर कहा गया कि वह उदयसिंह के गले में वरमाला डाले, सहसा जयपाल उठ खड़ा हुआ. वह बोला, "मोटे राजा उदयसिंह, मेरे जैसे कमजोर इनसान के लिए, जो अपनी बेटी के सम्मान की भी रक्षा न कर सके, केवल एक ही उपाय बचा है. जब शासक ही अधर्मी हो जाए, बाड़ ही खेत को खाने लगे तो वहां सज्जनता

अंधा

जन्म से अंधे नहीं देखते, काम से जो अंधा हो रहा है उस को कुछ सूझता नहीं, मदोन्मत्त किसी को देखते नहीं, स्वार्थी मनुष्य दोषों को नहीं देखता.

—चाणक्य

का ऐसा ही अंत होता है," कहतेकहते जब तक कोई कुछ समझे, जयपाल जलते हुए अग्निकुंड में कूद गया. उदयसिंह के सेवक जब तक उसे निकालें, वह काफी जल चुका था. अतः उस की तत्काल मृत्यु हो गई.

पति के मरते ही गंगा बिफर पड़ी. वह रोनाकलपना छोड़ कर रौद्र रूप में, अग्निकुंड से जलती हुई लकड़ी ले कर उदयसिंह के सामने पहुंची और बोली, "प्रजानाशक, दुष्ट उदयसिंह, अब मैं देखती हूं कि तू मेरे रहते हुए मेरी बेटी से कैसे ब्याह करता है?"

तब तक नाथी भी विवाह के वस्त्र और गहने फेंक कर बोली, "बीलड़ावासियो, धिक्कार है तुम्हें. तुम्हारे सब के रहते दो स्त्रियों को अन्याय का सामना करना पड़ रहा है. मोटे राजा, देखती हूं तू मुझ से कैसे फेरे लेता है? हम दोनों मांबेटियां तो आज मरेंगी ही, पर तुझे भी हम जीवित नहीं छोड़ेंगी." नाथी ने भी सुलगती हुई लकड़ी अपने हाथ में थाम ली.

उदयसिंह को यह देख कर गहरी चिंता हुई क्योंकि गांव वालों ने उसे चारों ओर से घेर लिया था. यद्यपि वह अस्त्रशस्त्रों के बल पर नाथी और गंगा का सामना कर सकता था, पर कई गांव वालों को मार कर भी उस का वहां से जीवित निकलना कठिन था. यदि एकएक वार भी वे लोग उन पर कर देते तो उन का जीवित बचना कठिन था. गांव वालों की मूक और भक्तिपूर्ण दृष्टि भी

आगे पृष्ठ 152 पर




KANGAROO
HIGH GLOSS
ENAMEL



पृष्ठ 149 से आगे

अब क्रोध, हिंसा व प्रतिशोध की भावना से भर गई थी. यह भी स्पष्ट था कि उस का गलत आदेश उन सब की उस रेगिस्तान में शवक्रिया का कारण बन सकता था.

बहुत मधुर स्वरों में वह हाथ जोड़ कर बोला, "बीलड़ानिवासियो, कोई भी शासक यदि जनता पर अत्याचार करता है तो उसे शासक बने रहने का कोई अधिकार नहीं है. मैं तो आप लोगों की परीक्षा ले रहा था. मुझे प्रसन्नता है कि आप लोग, विशेषकर, ये दोनों नारियां, सत्य व निष्ठा की प्रतिमूर्तियां सिद्ध हुई हैं. मैं आप दोनों व सभी बीलड़ा निवासियों की अभ्यर्थना करता हूं. मेरे राज्य के नागरिकों का नैतिक स्तर इतना ऊंचा है, यह देख कर मेरे हर्ष का पारावार नहीं है. जयपाल ने अनावश्यक रूप से जल्दबाजी दिखाई, इस का मुझे अत्यंत खेद है."

पर गांव वालों को उदयसिंह की बातों पर तनिक भी विश्वास नहीं हुआ. जब उस ने कहा कि वह अपने कृत्य के लिए क्षमा चाहता है और शीघ्र ही इस गांव से चला जाएगा तो एक वृद्ध व्यक्ति आगे बढ़ा. वह बोला, "मोटा राजा, हमें पता नहीं है कि तुम्हें वास्तव में अपने ऊपर पश्चात्ताप है या नहीं. पर हम चाहेंगे कि..."

"आप अपने सैनिकों में से किसी एक को हमारे पास धरोहर के रूप में छोड़ें. जब आप हमारे गांव को छोड़ कर जोधपुर की सीमा में प्रविष्ट हो जाएंगे, हम उस व्यक्ति को छोड़ देंगे," अचानक प्रकट हो कर वृद्ध व्यक्ति की बात बीच में ही काटती हुई दम्मा बोली.

"और अगर हमें पता चला कि आप हमारे साथ कोई धोखा कर रहे हैं तो हम उसे समाप्त कर डालेंगे." वृद्ध व्यक्ति ने दम्मा की बात पूरी की.

"उस व्यक्ति का चुनाव मैं करूंगी, बप्पा," दम्मा ने एक विशेष दृष्टि से उसे ताकते हुए कहा. मौन स्वीकृति प्राप्त हो जाने पर दम्मा ने एक सुंदर, खूबसूरत नौजवान को सब सैनिकों में से छांट लिया.

"अन्नदाता!" उस युवक की घिग्घी बंध गई.

"डरो मत, हम सीधे जोधपुर जा रहे हैं," अपने प्राण बचा कर गांव से निकलने को आतुर उदयसिंह बोला. वह अपने सैनिकों व सेवकों सहित टीलों से नीचे उतर गया.

उन सब के जाते ही दम्मा खिलखिला कर हंसती हुई बोली, "जीजाजी, अब जल्दी से हमारी सहेली का नाम लीजिए.

नवयुवक भी मुसकरा उठा.

"क्या कह रही है तू?" गंगा उस का मंतव्य समझ कर बोली.

"और नहीं तो क्या? मैं पहले ही जीजाजी के साथ मिल कर सारी बात तय कर चुकी थी. जीजाजी ने मुझे वचन दिया था कि यदि वह योजना सफल नहीं हुई तो वह सब सैनिकों और राजसेवकों को अपनी ओर मिला कर जबरदस्ती नाथी से विवाह करेगा, अकेला उदयसिंह क्या कर सकता था? चलो, सब कुछ योजनानुसार ठीक हो गया. जीजाजी, आप ने घबराने का अभिनय बहुत अच्छा किया."

"आखिर आप का, सालीजी का सुंदर प्रशिक्षण जो था."

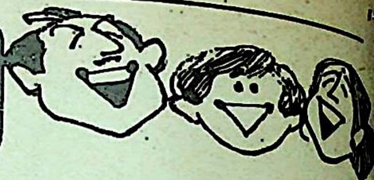
"अच्छा, बेटा, जल्दी विवाह की तैयारी करो कहीं उदयसिंह वापस न लौट पड़े," गंगा अधीर हो कर बोली.

"मां, कायरों का दिल चींटी के बराबर होता है. उदयसिंह तो अब जोधपुर जा कर ही दम लेगा. फिर तैयारी क्या करनी है, मैं सामने जो बैठा हूं आप के. बस, चटपट फेरे डलवा दीजिए."

खुशीखुशी सारे गांव वाले वहीं बैठ गए. दम्मा के चयन की सब ने प्रशंसा की. नाथी का दूल्हा सचमुच बहुत सुंदर था. विवाह के बाद नाथी दम्मा के गले से लग कर खूब रोई. पर उस रुदन में हर्ष के साथ प्रशंसा भी छिपी हुई थी. उदयसिंह सारी बात सुन कर बहुत झुंझलाया. पर अब वह कर ही क्या सकता था? रेत के टीलों की हलचल वह कभी भुला नहीं सकता था. •

अनुवाद: [illegible]

यह भी खूब रही



रविवार को मैं अपने मित्र के साथ फिल्म देख रहा था. फिल्म जरूरत से ज्यादा लंबी थी. मध्यांतर होने पर हम लोग बाहर निकले. कुछ देर बाद जब हम अंदर पहुंचे तो एक नवदंपती को अपनी सीटों पर बैठे हुए पाया. हम ने सोचा शायद गलती से वे हमारी सीटों पर बैठ गए होंगे. हम ने उन से कहा तो वह बोले, "जी नहीं, हम अपनी ही सीटों पर बैठे हैं." उन्होंने अपनी टिकटों के नंबर भी दिखाए जो वही, हमारी टिकटों के थे.

मैं ने उन का टिकट ले कर देखा तो सारा माजरा समझ में आ गया. वास्तव में वे टिकट उस शो के न हो कर अगले शो के थे. जब मध्यांतर हुआ तो उन्होंने समझा कि पहला शो खत्म हो गया है और वे इतमीनान से आ कर बैठ गए. जब मैं ने उन्हें वास्तविकता बतलाई तो उन की हालत देखते ही बनती थी. आसपास के सभी दर्शक खिलखिला कर हंस पड़े. वे बेचारे लज्जित हो क्षमा मांगते हुए हाल से बाहर चले गए. —रवि रंजन

*

मेरी एक सहेली कुछ दिनों के लिए दूसरे शहर गई हुई थी. जाने के बाद उस ने मेरे पास एक पत्र भेजा. उसे मेरा पता ठीक से नहीं मालूम था. फिर भी उस ने अंदाज से घर का पता लिख दिया था और वह पत्र मुझ तक पहुंच भी गया. उस पत्र के अंत में लिखा था : "अगर यह पत्र तुम्हें न मिले तो तुम अपने घर का सही पता मुझे लिख भेजना, क्योंकि मुझे तुम्हारे घर का सही पता नहीं मालूम." यह पढ़ कर हंसी रोकना मुशकिल हो गया. —गीता श्रीवास्तव

*

उन दिनों मैं पहली कक्षा में पढ़ती थी. जगह कम होने के कारण कक्षा तीन के छात्रछात्राओं को एक ही कमरे में बैठाया जाता था. एक दिन इंस्पेक्टर साहब निरीक्षण करने आए. कक्षा शिक्षक ने जल्दी से आ कर हमें बताया कि जब इंस्पेक्टर साहब आएं तब हम सब खड़े हो कर उन का सम्मान करें.

इंस्पेक्टर साहब ज्यों ही हमारे कमरे में आए, हम सभी बेंचों पर खड़े हो गए. यह देख कर प्रधानाध्यापक और शिक्षक के साथ आए इंस्पेक्टर साहब अवाक रह गए.

बात यह थी कि हमें ऊधम करने पर बेंच पर खड़े होने की सजा दी जाती थी. सम्मान प्रदर्शन का तरीका जल्दी में हमारी समझ में नहीं आया था. —कुमुद भट्ट

*

मैं अपने दोस्तों के साथ फिल्म देखने गया. फिल्म चल रही थी. अचानक मैं ने देखा कि मेरे आगे बैठी लड़की बहुत ही परेशान नजर आ रही है. वह जैसे ही पीछे की ओर होती, सीट आगे की ओर बढ़ जाती.

मध्यांतर होते ही वह पीछे की ओर घूम कर तपाक से बोली, "भाई साहब, आप मेरी सीट पर बारबार पैर मार कर क्यों तंग कर रहे हैं?"

मैं ने कहा, "बहनजी, लगता है आप पहली बार फिल्म देख रही हैं. यह सीट स्प्रिंग के कारण आगेपीछे हो रही है, न कि मेरे पैर मारने से." —रविकांतसिंह (सर्वश्रेष्ठ)

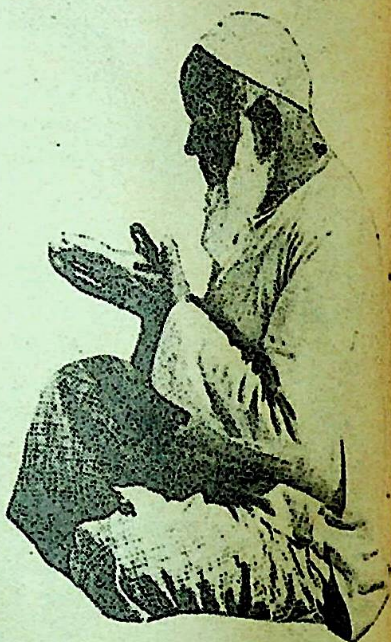
इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ अनुभव पर 60 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



मुसलिम समाज के आंसू

लेख • अंसार 'इटावी'

आज जब हम मुसलिम समाज को देखते हैं तो उन में अधिकतर को अशिक्षा, दरिद्रता और विभिन्न रोगों से घिरा पाते हैं. प्रायः मुसलमानों का जीवन अभावों से भरा हुआ है. इस का दोष किस पर है— स्वयं उन पर या उन की धर्मपद्धति पर या उन स्वार्थी व धनलोलुप प्रचारकों पर, जो वास्तविकता से आंख मूंद कर ऐसे षड्यंत्र में लगे हुए हैं जिस से मुसलिम समाज कभी भी अपना सिर ऊपर न उठ सके और सदा उन की अधीनता में रहता हुआ अपना सर्वस्व गंवाता रहे? मुसलिम समाज की इस निष्क्रियता के लिए आखिर कौन उत्तरदायी है?



प्रश्न उठता है कि सत्य क्या है? बच्चा जन्म लेता है. उस का लालनपालन किया जाता है. उस की प्रत्येक आवश्यकता पूरी की जाती है. उस का विकास होता है. उस का शरीर हृष्टपुष्ट होता है. शरीर में मस्तिष्क और हृदय होता है, जिन में विभिन्न प्रकार के विचार बनते हैं. हमारी आंखें सृष्टि को निहारती हैं, जिस से हम को ज्ञान प्राप्त होता है और हम निर्णय लेते हैं कि क्या अच्छा है और क्या बुरा. यदि हम अज्ञानवश अग्नि की ओर बढ़ते हैं तो ताप लगते ही हमारा मस्तिष्क आग को कष्टकारी समझ लेता है और भविष्य में हम आग की ओर नहीं जाते. हम सीख जाते हैं कि हमें उस से बचना है. साथ ही यही ज्ञान हम दूसरों को, अपने से छोटों को भी देने का प्रयास करते हैं.



इसलाम धर्म भी परिश्रम, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, धैर्य आदि महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों पर जोर देता है. इस के बावजूद अधिकतर मुसलिम अभाव में तड़प रहे हैं. जेब भरो पीरों की और पेट भरो मौलवियों का. इस शिकंजे में जकड़ा हुआ मुसलिम समाज आखिर कब सत्य पा सकेगा? कब यह वास्तविकता का सामना करेगा? कब वह अपने मस्तिष्क का सदुपयोग करेगा?

इसलाम की शिक्षाएं जहां कठोर हैं, वहां लचीली भी हैं. दुरूहता के साथसाथ वे सरल भी हैं. इसी दोहरेपन का लाभ उठाया है इस धर्म के स्वार्थी ठेकेदारों ने. यह कहना उचित होगा कि इसलाम की शिक्षाएं विरोधाभास लिए हुए हैं. यही कारण है कि इसलाम में षड्यंत्रों का समावेश हो गया है.

इसलाम ने पूंजीवाद और समाजवाद दोनों का ही समर्थन किया है.पर पूंजीवाद और समाजवाद दोनों की ही एक साथ स्थापना कैसे संभव है? एक ओर यह निर्धनों को दान देने के लिए कहता है, उन पर दया की बात दर्शाता है. खुदा की राह में व्यक्ति को ऐश्वर्य का मार्ग त्यागने की बात कहता है. पूंजी को एक बुराई के रूप में प्रस्तुत करता है. किंतु दूसरी ओर कुछ ऐसे कर्तव्य बताए गए हैं, जिन से प्रदर्शन को बढ़ावा मिलता है. ये सारे काम पूर्ण रूप से पैसे पर निर्भर हैं. इन की पूर्ति के लिए बंदा पूंजीपति बनना चाहता है. सभी धार्मिक कार्य तभी संपन्न किए जा सकेंगे और तभी व्यक्ति दान दे सकने में समर्थ हो सकेगा, जब वह धनिक होगा. मजा यह है कि इसलाम में प्रदर्शन को एक बुराई स्वीकार किया गया है.

बच्चे के जन्म लेने पर अकीका में पशुबलि दी जाती है. कोई संपन्न व्यक्ति ही यह कर सकता है न कि कोई निर्धन. ऐसी अनेकानेक धार्मिक क्रियाएं हैं, जिन्हें आज की बढ़ती हुई महंगाई में कर पाना मात्र सपना रह गई है. ये बुराइयां व्यक्ति को

आज अधिकतर मुसलमान गरीबी तथा अभावों से भरा जीवन जीने को मजबूर हैं. इस सब के लिए उत्तरदायी कौन है?

दरिद्र और ऋणी बनाने में सहायक हैं. बिस्मिल्लाह की रस्म (बच्चे द्वारा प्रथम बार पुस्तक का स्पर्श करने पर मिष्ठान वितरण), खतना, मीलादमजलिस, रोजा कुशाई (पहली बार रोजा रखने पर), त्योहार, जन्ममरण, फितरा, जकात, खैरात, मजार इन सब पर खर्च किया जाने वाला धन एक दिन के परिश्रम से नहीं जुटाया जा सकता. उसे केवल कठोर श्रम से प्राप्त किया जाता है. परिश्रम द्वारा अर्जित किया गया धन इस बेदर्दी से लुटा देना कहां की बुद्धिमता है?

दोराहे पर खड़ा मुसलिम समाज

भौतिकता और आध्यात्मिकता के दोराहे पर खड़ा हुआ मुसलिम समाज कैसे निश्चित करे कि वह अपना कौन सा पग किस पथ पर बढ़ाए? जीविकोपार्जन की शिक्षा ग्रहण करने पर यह समाज अपने धार्मिक ग्रंथ के अध्ययन से वंचित रह जाता है. यदि वह धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने में जुटा रहे, तब वह अपने परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति उत्पादकता की दृष्टि से उदासीन और निष्क्रिय माना जाएगा. तब वह पूर्ण अर्थों में अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह न कर सकेगा.

इसलाम में भाग्य पर विश्वास रखना भी अनिवार्य है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति के भाग्य का निर्माता अल्लाह है, ऐसा मान कर चलना जरूरी है. व्यक्ति लाख प्रयत्न करे, परिश्रम करे किंतु यदि अल्लाह को कुछ प्रदान करना है, तो ही वह उसे उपलब्ध हो सकेगा अन्यथा नहीं. इसलाम के इस सिद्धांत ने साधारण मुसलमान को मंदबुद्धि बना दिया है. वह निष्क्रिय और अकर्मण्य बन कर रह गया है. मुल्ला या मौलवी भले ही अपनी तिकड़म से अपनी जीविका कमा लें, किंतु जनसाधारण का जीवन उन के आदेशों के पालन में ही व्यतीत हो रहा है. वह केवल यह संतोष कर लेता है कि अल्लाह ने उस के भाग्य में जीविका नहीं लिखी है.

यह कोरा भ्रम है. इसलाम की शिक्षा

केवल देवी देवताओं के प्रदेश की ठंडी हवाओं में ही उग सकती है शुद्ध दार्जलिंग...

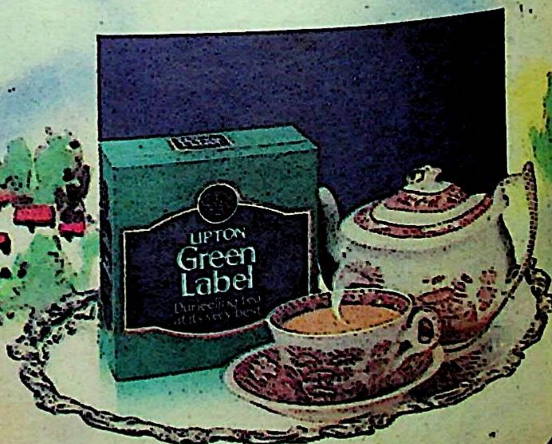
संसार की सर्वमान्य चाय

बादलों की धुंध से ऊपर...हिमालय की बरखा की रिमझिम और शीतल मधुर हवाएं...वहां की धरती में वो गुण भर देती हैं जो और किसी भूभाग के भाग्य में नहीं। और केवल इसी विशेष दोष रहित धरती में संसार की सर्वमान्य चाय पैदा हो सकती है...यानी शुद्ध दार्जलिंग चाय... !!

दार्जलिंग चाय का सुनहरा रंग...मधुर स्वाद...लुभावनी खुशबू, आपको एक निराले संसार में ले जाए...एक अनोखी छाप छोड़ जाए ! हो भी क्यों न...दार्जलिंग चाय संसार की सर्वमान्य चाय जो है !

और वर्षों से अच्छी चाय के रसिकों के लिए बेहतरीन चाय का मतलब है...ग्रीन लेबल !

तो फिर आप भी ग्रीन लेबल दार्जलिंग चाय पीजिए...और जिंदगी का अनोखा मज़ा लीजिए... !



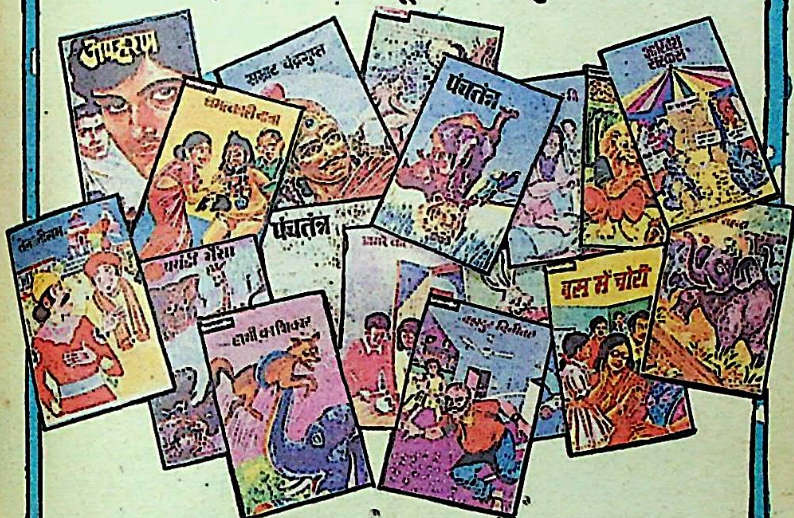
लिप्टन ग्रीन लेबल

दार्जलिंग चाय में चोटी की चाय

LIPTON

विश्व बाल साहित्य

मनोरंजक, वीरतापूर्ण, ज्ञानवर्धक, प्रेरक एवं देशभक्तिपूर्ण बाल पुस्तकें



तेनालीराम
प्रत्येक 1.50 रु.
बस में चोरी
तिनके का सहारा
गलतफहमी
प्रत्येक 2.00 रु.
चीकू
नकलची ननकू
अपहरण
चमत्कारी बाबा

घमंडी भैंसा
हाथी का शिकार
सम्राट चंद्रगुप्त
पंचतंत्र
घमंडी कौआ
बहादुर विनीता
प्रत्येक 2.50 रु.
आखिरी सरकस
3.00 रु.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें.



दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

पूरा सैट केवल 30 रुपए में. डाक खर्च नहीं. कोई 10 पुस्तकें 24 रुपए में. डाक खर्च नहीं. पांच रुपए अग्रिम भेजें.

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट
सेट नं. 3

सिपाही क्यों लड़ता है
इस्लाम और स्त्री
डायरी न लिखिए
प्रेम पत्र न लिखिए
योगी अरविन्द
गीता में अन्तर्विरोध
गायत्री मंत्र
गायत्री मंत्र: आ. व आ. के उत्तर
ट्रेड यूनियन
त्रासदी मुसलिम समाज की
भगवान की दुकानें
वेदों में नारी
स्वर्ग कहां है
आखिरत की अटकलें
हिन्दी साहित्य में बपौती
घाटे वाले बालाजी
भीष्म
संत कवियों के चमत्कार
उलाहने
वैदिक युग में मांस भक्षण
देवताओं के वैद्य–अश्विनी कुमार
महाभारत की ऐतिहासिकता
महाभारत की ऐतिहासिकता: आ. व आ. के उत्तर
दहेज और हिंदू धर्म
आप की लड़की प्रेम करती है
यूनियन
सौंदर्य प्रतियोगिता
वैज्ञानिक ज्ञान बनाम अध्यात्म ज्ञान
पूंजीपति
नियोग

मूल्य-5 रुपए
50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट.
रुपए अग्रिम भेजें.
वी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी.
सेट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली

तो केवल यही है कि अल्लाह धीरज रखने वालों के साथ है. इस कथन की सही व्याख्या प्रस्तुत करने वाले कम विद्वान ही आगे आते हैं.

हजरत मुहम्मद स्वयं एक योग्य व सफल व्यापारी थे. साथ ही वह एक अच्छे तैराक भी थे. उन के कथन इस बात की पुष्टि करते हैं कि व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य पर विशेष बल देना चाहिए. अच्छे स्वास्थ्य के लिए श्रम को महत्त्व देना आवश्यक है. यह कितने दुख की बात है कि मुसलिम समाज स्वास्थ्य की दृष्टि से अस्थिपंजर मात्र रह गया है. यह कभी नहीं कहा जा सकता कि इसलाम स्वच्छता का पाठ नहीं पढ़ाता, किंतु सर्वाधिक अस्वच्छता, दरिद्रता, अस्वस्थता तथा रोगों का शिकार मुसलिम समाज ही है. कौन मुल्ला या मौलवी इस समाज के स्वास्थ्य लाभ के लिए चिंतित है? कौन इस के सही सिद्धांतों के प्रचार व प्रसार की बात करता है?

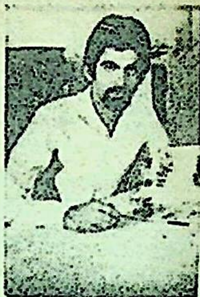
प्रत्येक धर्म मातापिता व गुरु के प्रति सम्मान रखना जरूरी बताता है. पति के प्रति सम्मान रखना भी आवश्यक है. प्रजा का राजा के प्रति सम्मान रखना भी आवश्यक है. यही इसलाम की भी शिक्षा है. परंतु यदि जनसाधारण को इस हद तक भ्रमित कर दिया जाए कि वे गुरु को ही खुदा मान बैठें तो दोष किस का?

स्त्री के अधिकार व अनेकानेक कर्तव्य हैं. उस की अपनी आवश्यकता है. समाज व राष्ट्र की उन्नति में उस का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है. इसलाम ने इन्हें क्या दिया है? जो दिया, वही इन से इस धर्म के ठेकेदारों ने छीन लिया. यह आवश्यक है कि आज की स्त्री को पूर्ण रूप से शिक्षित किया जाए और उसे अपने पैरों पर खड़े होने दिया जाए. उसी समय इसलाम की सही शिक्षा अमल में आ सकेगी.

इसलाम में व्याप्त सभी कुरीतियों के बहिष्कार का दायित्व पूरे मुसलिम समाज पर है. ऐसा नहीं हुआ तो यह समाज अनेक जीवंत गुणों से वंचित रह जाएगा.



आर्किटेक्ट



इन्टीरियर डेकोरेटर



फाइव-स्टार होटल



गृहिणी

सब के सब एक बात से सहमत हैं...

सैनिटरीवेर लेने हों तो पैरीवेर ही लिया जाये !

वर्षों से कायम उच्च गुणवत्ता के कारण पैरीवेर का नाम एक स्थायी ख्याति बन गया है। पैरीवेर के सभी नमूनों पर आइ एस आइ निशान अंकित है और ये सफ़ेद तथा अन्य कई मोहक रंगों में उपलब्ध हैं।

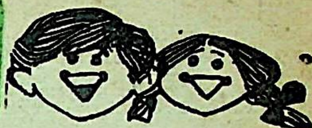


Parryware VITREOUS

ई. आइ. डी.-पैरी (इंडिया) लि.
रामिक्स डिविज़न
डेअर हाउस, मद्रास ३०० ००१

हमारे सभी उत्पादनों की क्वालिटी-सुपरफाइन

बच्चों के मुख से



एक बार मेरे दादाजी बाहर बगीचे में बैठ कर अखबार पढ़ रहे थे. तभी मेरा छोटा भाई हाथ में दादाजी के बचपन की एक फोटो लिए दादी के पास भागता हुआ आया और पूछने लगा कि यह किस की फोटो है.

दादीजी ने फोटो देखी और बोलीं, "तुम्हारे दादाजी की है."

इस पर मेरे छोटे भाई ने आश्चर्य से पूछा, "तो फिर जो बाहर ऐनक लगाए अखबार पढ़ रहे हैं, वह कौन हैं?"

— विजय सौंधी

*

मेरा चार वर्षीय भाई बड़ा बातूनी और हाजिरजवाब है. एक दिन वह बहुत ज्यादा बोल रहा था तो मां ने तंग आ कर गुस्से से कहा, "टिंकू, ज्यादा बकवास नहीं करते," इस पर टिंकू ने भोली सी सूरत बना कर कहा, "मां, कम तो कर सकते हैं." इतना कहना था कि घर में हंसी का फव्वारा छूट गया. मां का गुस्सा भी न जाने कहां फुर्र हो गया.

—र.क.मेहता

*

मैं अपने तीन वर्षीय पुत्र को जब भी डांटती तो वह हमेशा अपने पिता के पास जा कर मेरी शिकायत करता था. इस पर वह उसे हमेशा यह कह कर चुप करा देते थे, "देख, बेटे, यह गंदी मां है, हम तुम्हारे लिए अच्छी सी नई मां ले कर आएंगे."

एक दिन शाम को दफ्तर से लौटते समय एक महिला अधिकारी भी उन के साथ थीं. उन्हें पास ही के बाजार में कुछ खरीदारी करनी थी, इसी लिए वह मेरे पति के साथ ही गाड़ी पर आ गई थीं.

दरवाजे की घंटी बजते ही मैं ने दरवाजा खोला तो उन को नमस्ते करने से पहले ही मेरा बेटा तपाक से बोला, "पिताजी, आप नई मां ले कर आए हैं?" यह सुनते ही वह बेचारी महिला शर्म से पानीपानी हो गई और मेरा हंसतेहंसते बुरा हाल हो गया.

जब मैं ने बाद में उन्हें पूरी बात बताई तो वह भी हंसे बिना नहीं रह सकीं.

—मंजुश्री

*

मेरा लड़का करीब तीन वर्ष का है. उस ने अभी हाल ही में बोलना सीखा है व बड़े लहजे में बातें बनाता है.

कुछ दिन पहले जब उस के सिर में खुजली होने लगी तो वह मुझे अपना सिर दिखलाने लगा. मैं ने उस के सिर में से एक टूटा हुआ सफेद बाल निकाला और हंसी में उस से कहा "अरे, तेरे बाल भी सफेद हो गए हैं."

वह झट से मुझ से उस बाल को लेते हुए बोला, "मां, मेरी तो बड़ी आफत है. जब मैं जीजी के पास सोता हूं तो वह मेरे सिर में भी जुएं कर देती है, भैया के पास सोता हूं तो वह पेशाब कर देता है और चाचाजी के पास सोता हूं तो सफेद बाल कर देते हैं. बताओ मैं किस के पास सोऊं?"

इतना सुनना था कि हमारे पेट में हंसी के मारे बल पड़ गए. —शैलेश अग्रवाल

(सर्वश्रेष्ठ)

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 30 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 60 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली 110055

रेत के महल

धारावाहिक उपन्यास • नारायणी

पांचवी किस्त

पिछले अंकों में आप ने पढ़ा:

प्रशांत के साथ ब्याह कर शुभ्रा अपनी ससुराल आ तो गई, पर ससुराल आते ही उस ने जाना कि ससुराल में उस की मनमरजी से काम होना बेहद मुशकिल है और इस हालत में प्रशांत उस का साथ नहीं देता. तभी सुरेश उस परिवार से जुड़ता चला गया. प्रशांत और शुभ्रा के बीच संदेह की दीवार यहीं से खड़ी हो गई. अपमानित हो कर शुभ्रा मायके चली जाती है. कुछ दिनों बाद उसे दूसरे शहर के एक स्कूल में नौकरी मिल गई. वहीं एक कमरा किराए पर ले कर रहने लगी. उस की मकान मालकिन उस से बारबार उस के पति के बारे में पूछती रहती, लेकिन वह टाल जाती. सुरेश वहां भी पहुंच जाता है. शुभ्रा उस की नीयत भांप कर मकान मालकिन के साथ सो जाती है. सुरेश खुद को अपमानित महसूस कर एक परची लिख कर रात में ही चला जाता है. शुभ्रा तय नहीं कर पाती है कि उस का निर्णय उचित था या नहीं. अब आगे पढ़ें...

"अच्छा है, बेटी, वहां बड़े शहर में ही तू खरीदारी कर लेना. कल तो वैसे भी मेहमानों के आने से वक्त नहीं मिलना था. रुपए तू लेती जा. और देख, यहां किसी को न बोलना कि रुपए मैं ने दिए हैं. औरों से छिपा कर रखती हूं, नहीं तो कहां बचें? इसी तरह बचाने से वक्त पर काम आ जाते हैं."

साथ ले जाने को खानेनाश्ते के साथसाथ सरस्वती ने उसे रास्ते में सावधान रहने के लिए बहुत सी हिदायतें भी दे डाली थीं. फिर जातेजाते कहा था, "लौटते हुए अपने साथ बहनजी को भी लेती आना, बड़ा अच्छा लगता था उन का साथ."

घर में पहले से कोई सूचना नहीं दी थी. सोचा ही कब था उस ने जाने का. स्टेशन से जब रिक्शे पर बैठी तो सोचने लगी, आटो-रिक्शा क्यों न ले लिया. इस में तो घंटा भर लग जाएगा घर पहुंचतेपहुंचते. फिर उस के सामने घर वालों के चेहरे घूमते चले गए थे. अजीब बात थी कि उस दिन उसे वैसा ही लग रहा था जैसे लखनऊ से आते समय लगा करता था. कितनी अधीरता रहती थी तब उस के मन में. गाड़ी में बैठते ही उस की आंखों में बारबार घर पहुंचने का दृश्य दिखाई देता रहता था. कैसे क्षिप्रा और मुकुल चिल्लाते, शोर सा मचाते, मुहल्ले भर को सुनाते हुए भागे चले आते थे, "दीदी आई, दीदी आई." परिमल कैसा मुसकराते हुए बड़प्पन जताते थे. अकसर तो लेने वही आते थे, इसलिए साथ में वही रहते थे. मां भी मुसकराते हुए काम के कपड़ों में ही भागी आतीं और पिताजी... वह भी अपनी गंभीरता छोड़ जहां कहीं भी होते वहीं से दौड़े चले आते थे. जब से भाभी आई थीं, वह भी उसे देख कर मुसकरा देती थीं.

रिक्शा फाटक के अंदर पहुंच गया. परिमल कालिज जाने के लिए तैयार हो चुके

शुभ्रा कितने उल्लास से मांबाप के घर आई थी, पर वहां आने पर उस का जैसा स्वागत हुआ उसे देख कर उस की आंखों में अनायास ही आंसू आ गए.

शुभ्रा ने रिक्शे से उतरते ही विह्वल स्वर में पुकारा था, "भैया."

लेकिन परिमल उसे देख कर अंदर चले गए थे. क्षिप्रा भतीजे को कंधे से लगाए आंगन में घूम रही थी. रामेंद्रकुमार अपने दफ्तर में बैठे थे. सामने ही खिड़की थी. शुभ्रा को रिक्शे से उतरते देखा तो उठ कर बरामदे में आ गए थे और वहीं से आवाज दी थी, "क्षिप्रा...क्षिप्रा, देखो तुम्हारी दीदी आई है."

"दीदी!" क्षिप्रा के उत्कंठित स्वर के साथसाथ भाभी का स्वर भी सुनाई दिया था, "मनु को बाहर न ले जाइए, सर्दी लग जाएगी. वैसे ही जुकाम हो रहा है."

शुभ्रा ने रिक्शे वाले को पैसे दे कर स्वयं ही बगल के द्वार में सामान उतार लिया था.

"आ गई, शुभ्रा बिटिया...कहां से आ रही हो—नौकरी पर से या ससुराल से?"

"दीदी, जल्दी करो न, अब तैयार हो जाओ, फोटो के लिए," क्षिप्रा ने शुभ्रा से आग्रह किया.



आंगन बुहारती पुरानी महरी राजेश्वरी अटैची पकड़ने आगे बढ़ आई थी.

"नौकरी पर से, भई, ससुराल अब कहां है?" निशि के हाथ में चाय का कप था, स्वरों में उपेक्षा और भर्त्सना.

बरामदे में कुरसी पर बैठी निशि चाय पीती रही थी. शुभ्रा ने ही उस के पास आ कर उस के पैर छूते हुए नमस्कार किया था.

"क्या आशीर्वाद दूं—मुख्याध्यापिका हो जाओ या मुकदमे में जीत जाओ या कुछ और?" निशि ने होंठों पर हंसी लाने की चेष्टा की थी.

शुभ्रा को सहसा एक धक्का सा लगा था. कितने उल्लास से आई थी और यहां आने पर यह कैसा स्वागत. वह भाभी को कोई उत्तर नहीं दे सकी थी. रुलाई दबा कर उस ने केवल इतना ही पूछा था, "मनु को क्या हो गया?"

क्षिप्रा पास ही खड़ी थी. भतीजे को आगे बढ़ाते हुए बोली थी, "लो, देखो न, कितना प्यारा है."

"छुईमुई कहो. देखो न, कितना जुकाम हो रहा है."

"लो, भई, बड़ी बूआजी..." क्षिप्रा ने मनु को शुभ्रा की ओर बढ़ाते हुए कहा था.

"ऐसे खाली हाथ नहीं. दो मिनट ठहर जा. मां कहां हैं? दिखाई नहीं दे रहीं."

"वह क्या बैठी हैं चौके में. अरे हां, मैं तो उन्हें बताना ही भूल गई कि तुम आई हो."

"मां" शुभ्रा पुकारती हुई आगे बढ़ गई थी. माधुरी दरवाजे से सटी उसी की ओर देख रही थी. शुभ्रा का हाथ थाम कर उस के मुंह से अस्फुट स्वर निकले थे, "सुखी रहो, तुम्हारे मन को शांति मिले."

सब कुछ कितना बदला हुआ लग रहा था. वह लखनऊ से पति के घर से नहीं आई थी, अपने घर से आई थी, जहां वह अकेली अपनी बिटिया के साथ रहती थी. न मांग में सिंदूर, न माथे पर टीका, न सुखसुहाग की कामना.

"अरे, बिटिया आई है इतने दिन बाद, पर तुम तो रसोई में ही चिपकी हो. टीका तो कर दो." राजेश्वरी ने अपने बुजुर्गों के अंदाज से माधुरी को चेताया था.

संस्कार कितने प्रबल होते हैं, उस क्षण शुभ्रा को लगा था. लेकिन मन से उस ने सोचा था, वह अब है क्या? कुंआरी तो है नहीं. कोई लाख अपने नाम के आगे 'मिस' या 'कुमारी' शब्द लगा ले, लेकिन जब कौमार्य एक बार खंडित हो गया तो वह अब कुंआरी रह ही नहीं सकती. न वह विधवा है और न सुहागन. जब पति पति ही न रहा तो सुहाग कैसी?

मां ने राजेश्वरी की बात को अनसुना कर के उसे रसोई के पास ही बैठने के लिए कुरसी सरका दी थी. फिर क्षिप्रा को आवाज दी थी, "दीदी के लिए चाय बना दो और बेबी का हाथमुंह धुला कर उसे नाश्ता दे."

क्षिप्रा ने बांहों में झूल रहे मनु की ओर देख कर कहा था, "मां, इसे कोई ले तो आऊं."

"लाओ, मुझे दे जाओ," निशि ने अंदर से कहा था. फिर धीरे से बोली थी, "अब तो हमेशा ही यह मेहमानदारी निभानी है. छुट्टी हुई नहीं कि दीदी हाजिर रहेंगी."

शुभ्रा ने न सुनने का दिखावा किया था, फिर ऊपरी तौर पर निशि से बातचीत करने का भी प्रयत्न किया था, अधिकतर दो महीने पहले हुए प्रसव के बारे में. चाय खत्म करते ही वह उठ खड़ी हुई थी. अटैची से पांच सौ रुपए निकाल कर उस में एक और मिला कर भतीजे के हाथ में पांच सौ एक थमा दिए थे. मनु ने भी उन रुपयों को लेने के लिए हाथ फैला दिए थे.

"यह क्या?"

"एकदम से आना हुआ न, इसलिए कुछ ला नहीं पाई. फिर वहां मौसी ने भी कहा कि छोटे शहर से बड़े शहर में क्या ले जाओगी, वहां ही भाभी जो पसंद करेंगी ले लेंगी."

"यह तो ठीक है, मगर इतने

"एक मेहमान आया था न, ठीक कह रहा हूं न," लल्लू ने कहा.



...पए क्यों?"

"क्यों, क्या मैं अपने भतीजे के लिए ...तना भी नहीं कर सकती?" कहतेकहते ...ह रुआंसी हो उठी थी. निशि के कथन में ...पा भाव उस से छिपा नहीं रहा था.

"मेरा मतलब आप ने मुशकिल से ...तना जोड़ा होगा, वह सब दिए दे रही हैं. ...भी आप को मिलता ही क्या होगा. आप को ...भाल कर खर्च करना चाहिए. वैसे भी ...गृहस्थी में एकएक चीज जुटानी है. सब ...छूट गया. वैसे मुझे पता नहीं कि आप को ...ात से कुछ मिलेगा या नहीं. बेबी का खर्च ...मिल ही जाएगा. फिर भी..."

"अपने और बेबी के लिए मुझे काफी मिल रहा है. आगे भी मिलता रहेगा. अतः मुझे कहीं से कुछ नहीं चाहिए."

"जैसी आप की मर्जी. अपने वकील से कह दीजिएगा."

"मुझे वकालत नहीं करवानी. मेरी ओर से संबंध बना रहने का कोई आग्रह ही नहीं है."

निशि उठ कर कमरे में परिमल के पास चली गई थी.

"रस्सी जल गई, लेकिन ऐंठ नहीं गई. शुभ्रा के मिजाज का तो कोई ठिकाना ही नहीं है," परिमल ने शुभ्रा की बात सुन ली थी, इसलिए निशि के कमरे में पहुंचते ही वह उस से बोला था.

"ऐसी न होती तो यह नौबत ही क्यों आती." निशि परिमल पर झुक सी गई थी, "सच, मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि कोई औरत ऐसी कैसे हो सकती है."

"छोड़ो, उस की बात. चलो, पिक्चर चलते हैं. मनु को ये लोग देख ही लेंगे. उसे बहुत अपने पास रहने की आदत न लगाना. जब बेबी छोटी थी, तब मां ही उसे संभालती थीं."

"मां के बहुत लाड़ ने ही उन्हें बिगाड़ दिया है."

"शायद, नहीं तो एक से एक बुरे आदमी होते हैं. प्रशांत का न चरित्र खराब था, न ही बैठ के वह बोतल चढ़ाता था."

"शुभ्रा दीदी कहती थीं कि पीते हैं..."

"पीते हैं! कभीकभार दो घूंट हलक में डाल लिया तो उसे पीना कहेंगे? खैर, छोड़ो, तुम तैयार हो जाओ."

शुभ्रा के आने से मुकुल सब से ज्यादा प्रसन्न नजर आता था. जो फरमाइश होती शुभ्रा पूरा कर देती. खानेपीने की बहुत सी चीजें जो इधर माधुरी बना नहीं पा रही थी, वे अब बन रही थीं. इस के अतिरिक्त उस के जेबखर्च में भी काफी वृद्धि हो गई थी. वह हर समय शुभ्रा की हां में हां मिलाया करता था. वैसे भी प्रारंभ से ही वह शुभ्रा का बहुत आदर करता था.

दीवाली आई तो पटाखे भी उस की इच्छानुसार ढेरों आ गए थे. नहीं तो कभी भी उस का मन नहीं भरता था. पूजा के समय एक सादी सी नाइलोन जार्जेट की साड़ी पहने हुए थी शुभ्रा. क्षिप्रा स्वयं सज कर आई तो उस से बोली थी, "दीदी, कोई जगरमगर करती साड़ी पहन लो. भैया हम लोगों की फिल्म ले रहे हैं."

"फिल्म!"

"हां, भैया ने प्रोजेक्टर लिया है न. तुम्हें नहीं पता? अच्छा है, दोएक रीलें हो जाएं तो मजे से अपनी चलतीफिरती फिल्म देखें. कितना आनंद आएगा."

छोटी बहन का उल्लास से दीप्त चेहरा. उस की तुलना में उसे अपना चेहरा व्यंग्य, कटाक्ष, उपेक्षा और उपहास से श्रीहीन लगा था. दीपक में तेल और बाती डालते उस के हाथ रुक गए थे. इस से अच्छा तो...

"दीदी, जल्दी करो. तेल डाल दिया सब दीयों में?"

"हां."

"और बाती?"

'बाती' शब्द सुनते ही उसे सहसा अपने विवाह के समय की बात याद हो आई थी. विवाह होने के बाद उन के यहां दो बाती को एक ही ज्योति में करने की प्रथा है. विवाह का हर संस्कार कुछ न कुछ पहनने के लिए होता है, चाहे बाती एक करना हो या शिला पर पांव रखना...

"दीदी, जल्दी करो. अब तैयार हो जाओ न फिल्म के लिए."

"क्षिप्रा, मैं अपनी तैयारी करने जा रही हूं. मुझे कल वहां पहुंचना जरूरी है."

"फिर फिल्म?"

"समझ ले मैं आई ही नहीं."

क्षिप्रा असमंजस में खड़ी रही थी. माधुरी ने उस को समीप बुला कर डांटा था, "सब कुछ जानते हुए भी बच्ची क्यों बन जाती है, क्षिप्रा? तू अपना काम कर, उसे रहने दे. नहीं तो परिमल नाराज होने लगेगा."

क्षिप्रा शुभ्रा से लंबी थी. रंग भी कुछ निखरा हुआ था. मुंह का गठन गोल और नक्श सुंदर थे. बड़ीबड़ी आंखें थीं. ढंग से रहती थी. जरा ढंग से सजती तो बड़ी आकर्षक लगती थी.

मां देखती तो यही सोचती थी, चलो, शक्लसूरत पर कोई नापसंद नहीं कर सकेगा. विवाह में कोई ऐसी परेशानी नहीं होगी.

दूसरे दिन क्षिप्रा को कुछ लोग देखने आने वाले थे. माधुरी दो दिन से उस की तैयारी में व्यस्त थी. शुभ्रा को भी एक दिन के लिए रोक लिया था. क्षिप्रा को तीन ही

सारता

बजे तैयार कर के बिठा दिया गया था. चायनाश्ते का सारा प्रबंध कर के वे लोग बारबार फोन की ओर देखने लगे थे. उन लोगों ने चार बजे आने को कहा था. रात को आना स्वीकार नहीं किया था, शायद यह सोच कर कि आजकल तो मेकअप का जमाना है, सौंदर्य प्रसाधनों की मदद से कालीकलूटी असुंदर लड़की को भी ऐसी हसीना बना दिया जाता है कि उस को देख कर थोड़ी देर के लिए चांद भी लजा जाए. अतः वे लोग शाम चार बजे आने के पक्ष में थे.

चार के बाद पांच और फिर छः बज गए थे. सब परेशान थे, आखिर देखने वाले आए क्यों नहीं? यह संबंध क्षिप्रा की चाची तय कर रही थीं. शाम सात बजे वह लड़के वालों का यह संदेश लाई थीं कि वे ऐसे घर में अपना संबंध करने को तैयार नहीं जहां पहले ही एक लड़की अपने पति का घर छोड़ चुकी हो.

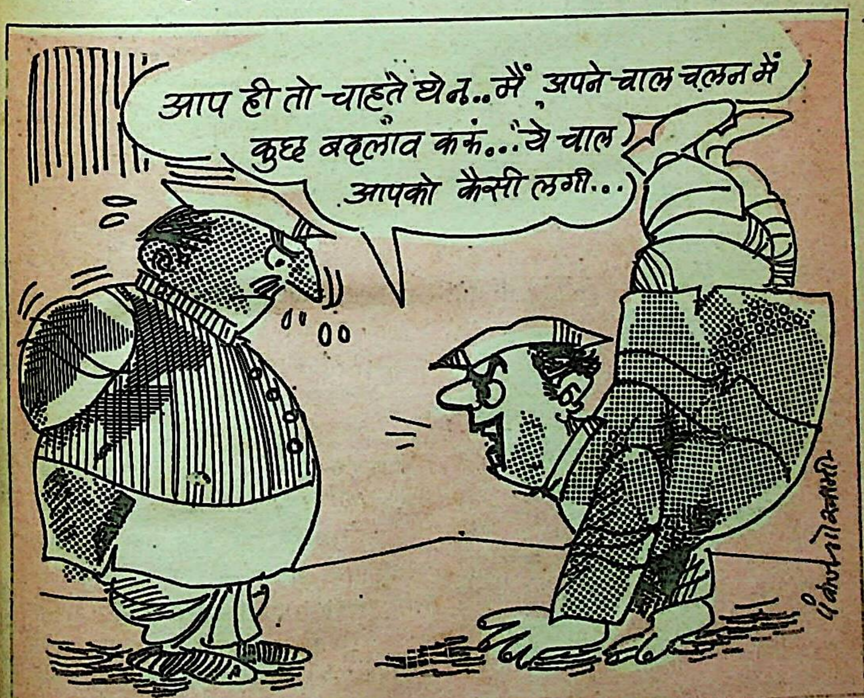
शुभ्रा ने जब सुना तो पहली बार उस की आंखें सब के सामने अश्रुपूर्ण हो उठी थीं. मांबाप दोनों के चेहरे फक हो गए थे.

निशि ने रोष से कहा था, "जरूरी थोड़े ही है कि सभी एक जैसा करें. सब का स्वभाव अलगअलग होता है."

"अभी क्या है...अभी आगेआगे देखना, इस ऐंठ के क्याक्या नतीजे निकलते हैं. हम लोगों को तो जिंदगी भर सुनना भी पड़ेगा और भोगना भी पड़ेगा." परिमल मां के आगे गरजा था.

शुभ्रा पहले ही वहां से उठकर चल दी थी. चाची कह रही थीं, "आप लोगों ने तो हमें बताया भी नहीं कि मामला यहां तक बढ़ गया है, नहीं तो हम इस मामले में क्यों पड़ते. हम ने यही सुना था कि शुभ्रा यहां पढ़ रही थी, फिर नौकरी पर चली गई. तलाक का मामला चल रहा है, इस की तो हमें भनक ही नहीं थी. लड़कियों से ही घर की इज्जत बनतीबिगड़ती है. आप के और हमारे सभी के ऊपर कलंक की बात हो गई."

"कलंक की बात क्यों कहती हो, छोटी



बहू? क्या यह अच्छा है कि घर में दिनरात किचकिच होती रहे, झगड़े होते रहें, लड़की उपेक्षित पड़ी रहे, अनचाहे संबंधों को ढोती रहे? अब उस का रास्ता निकाल लिया गया है. पहले औरत उसी में पिसती रहती थी. अब रास्ते अलग हो जाते हैं. शुभ्रा के संग भी यही बात है."

"बात कुछ गंभीर ही होगी, तभी आदमी इतना बड़ा कदम उठाता है. वैसे क्या घर तोड़ना अच्छा लगता है? लड़की के साथसाथ लड़के की भी तो बदनामी होती है. वैसे आप तो हमेशा उन लोगों की तारीफ ही किया करते थे. अब ऐसा क्या हो गया?"

"तारीफ के लायक कहां थे वे लोग, चाची, वहां तो कोई ढंग से बोलना भी नहीं जानता. वह जो माताजी थीं, हमेशा व्यंग्य में ही बात करती थीं. हमारे घर का मजाक उड़ाया करती थीं और जीजाजी तो किसी से कोई मतलब ही नहीं रखते थे. वह बोलते ही नहीं थे किसी से."

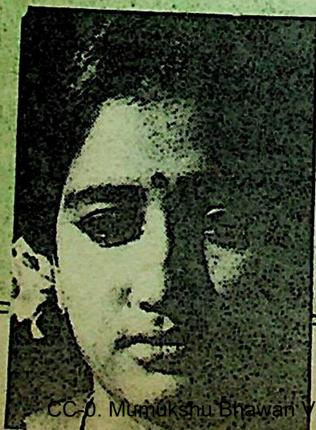
"अरे, मुकुल तो क्या तू भी उन से नाराज है?" चाची बोली थीं.

"तो क्या खुश रहता? हम लोग तो सिर्फ दीदी के कारण उन लोगों को मस्का लगाया करते थे."

आंखें

बहने जो लगे तो
सारे जमाने को बहा दे,
इन झील सी आंखों को
समंदर ही कहा जाए.

—सलीम अश्क



शुभ्रा बुत बनी दूसरे कमरे से सब कुछ सुन रही थी. पिताजी और मुकुल का उस की रक्षा के लिए उस के पक्ष में बोलना उसे कहीं गहरे तक हिला गया था, 'मेरे लिए कितना स्नेह, कितना प्यार है. जिसे अनुचित समझते रहे हैं, उस का भी समर्थन कर दिया पिताजी ने. और मुकुल...छोटे से मन से कैसा तर्कवितर्क कर रहा है. घर में छोटी बहन और मां कैसे कोमल वचनों से उस के मन के घाव को सहलाती रहती हैं. लेकिन उस ने क्या किया? क्या वह इन लोगों की खातिर अपने अहं को भूल कर, अपने को झुका कर इस स्थिति का निवारण नहीं कर सकती?'

रात भर उस के मन में मंथन होता रहा. वह अपने परिवार के लिए राहु क्यों बन रही है?

गाड़ी भोर में जाती थी. उसे चार बजे उठ जाना चाहिए था. लेकिन नींद न आने पर भी वह बिस्तर पर पड़ी थी. मन में जाने की कोई उत्सुकता नहीं रही थी. उसे जैसे प्रकाश से डर लग रहा था. पता नहीं क्यों, उसे अंधेरा ही भला लग रहा था.

माधुरी ने चार बजे उठ कर ही दिन भर के लिए खानेपीने का प्रबंध कर दिया था. साथ ले जाने के लिए मठरी और लड्डू भी इतने बना दिए थे कि दसपांच दिन चल सकें. सोचा था, आखिर मांबाप के घर से जा रही है तो घर में आनेजाने वालों को देगी ही. अचारचटनी भी बांध कर रख दी थी. जब पांच भी बज गए तो शुभ्रा को आवाज दी, "उठो, नहीं तो ट्रेन छूट जाएगी."

"छूट जाएगी तो क्या हुआ. दूसरी है न, उस से चली जाएगी." रामेंद्रकुमार आंगन में ही अंधेरे में टहल रहे थे. माधुरी ने देखा भी नहीं था.

"दूसरी ट्रेन रात को पहुंचती है. अकेली लड़की अंधेरे में कैसे जाएगी? इस से तो दिनदिन में पहुंच जाएगी."

मां के आगे वह अभी तक लड़की ही है. मां को कितनी छोटीछोटी बातों की चिंता है. अंधेरे में कैसे जाएगी. शुभ्रा का मन भर

आया. बेमन से वह उठ खड़ी हुई थी, "कहो, मां, मैं उठी हुई हूं. देर नहीं होगी."

वह कब से सोच रही थी कि उठ कर मां से कहेगी कि वह लखनऊ जा रही है, प्रशांत से मिलने. उस के आगे सब कुछ कह कर देख लेगी. सब की ओर से मिलने वाला तिरस्कार और भर्त्सना भी सह लेगी...

लेकिन रात भर का संकल्प धरा रह गया था. मां के चेहरे पर उस को ले कर कोई मलिनता नहीं थी. केवल उदासी भर थी, जैसी हमेशा उस के जाने के समय हो आया करती थी.

कुछ क्षण वह मां के पास चुपचाप खड़ी भी रही थी, मगर लाख चाह कर भी कह नहीं सकी थी. उसे लगा था, जैसे उस के होंठ किसी ने सी दिए हों.

क्षणक्षण कर के समय भाग रहा था. उस का एक कथन भी शायद नियति को फेर सकता था. मगर आगे बढ़े हुए पांवों को पीछे लौटाने के लिए जिस दृढ़ता की आवश्यकता थी, उस की उस में कमी थी. आधे घंटे में तैयार हो कर वह किसी तरह स्टेशन पहुंच गई थी.

"बेटी, तू वहां अकेली है, सब तरह से अपना ध्यान रखना," मां ने चलतेचलते धीरे से उस से कहा तो वह क्षण भर को सोच में पड़ गई थी. मां हमेशा कहती हैं, 'अच्छा, अपना ध्यान रखना,' और आज वह कह रही हैं, 'तू वहां अकेली है, सब तरह से अपना ध्यान रखना.' कलंक वहीं तक सीमित रहे, शायद यही सोच रही हैं. उस ने दृढ़ता से कहा था, "मां, तुम निश्चिंत रहो. मौसी भी बहुत ध्यान रखती हैं."

"चलो, मौसी नहीं थी तेरी कोई, अब मिल गई."

माधुरी ने सहजता का पुट लाना चाहा था, लेकिन उस की दृष्टि कह रही थी कि जितना कुछ लांछन मिला, वही बहुत है. अब ऐसा कुछ न हो कि उस का जीवन ही दूभर हो जाए. अभी तो वह भी चार लोगों में थूथू होते देख कह उठती है, "अब वह जमाना थोड़े ही है कि निभे न तब भी सहन कर के



ख्वाब

आंख का एतबार
क्या करते,
जो भी देखा,
वह ख्वाब में देखा
—अदम

वहीं रहो. लड़कियां भी अब अपनी हस्ती समझने लगी हैं."

"हां जी, अब तो जमाना ही दूसरा आ गया है. अब कोई वह बात तो रह नहीं गई कि जिस देहरी पर डोली गई, वहां से लाश ही निकले." माधुरी सुन कर कलेजा मसोस कर रह जाती थी.

घर से नौकरी के लिए निकली थी तो एक ढर्रे से लग जाने की, मांबाप के सिर से भार उतारने का संतोष था. इस से घर छोड़ कर आना इतना दुखद नहीं लगा था. अब तो ट्रेन में बैठेबैठे उस का मन बैठ जा रहा था. घर पहुंचने पर अपना स्वागत करने वाला कौन है? रहरह उसे प्रशांत की याद तड़पा जाती थी. उसे याद आ रहा था, वह जब भी मां के घर से ससुराल जाती, मांजी और श्यामा उस से कुछ ढंग से बात करने के स्थान पर चिढ़ीचिढ़ी सी ही नजर आती थीं. उस से कठोर मुखमुद्रा बना कर उलटेसीधे प्रश्न किए जाते थे, जैसे वह कोई 'गुनाह' कर के लौटी हो. इस चिढ़ के मूल में उन लोगों का रूखा स्वभाव ही था अथवा आशा के अनुरूप शुभ्रा के घर से उन लोगों के प्रति भेंटउपहार का न मिलना, शुभ्रा ने यह जानने

की कभी कोशिश नहीं की थी. प्रशांत से मिलने के हर्ष के आगे ये छोटीछोटी बातें उस की दृष्टि में कुछ मानी नहीं रखती थीं. प्रशांत निर्लिप्त दिखते हुए भी कैसे ललक से मिलता था, जैसे वर्षों से अलग रहा हो...

कई बार उस ने अपने मन को झटका दिया था. जाने क्यों उसे प्रशांत की असलियत नजर नहीं आ रही थी. ललक होगी मिलने की, वह भी निजी स्वार्थ की खातिर ही तो. उस से प्रेम कहां था? होता तो आज उसे इस तरह छोड़ देता? वासना के क्षणों के लाड़ को प्रेम का नाम दिया था, बस.

दिन छोटे होने लगे थे. शुभ्रा घर पहुंची तो सूरज ढल चुका था. रिक्शे की आहट सुनते ही सरस्वती दौड़ी आई थी. उस ने ऐसी उमंग से शुभ्रा को अपने सीने से चिपटा लिया था जैसे वह माधुरी का ही दूसरा रूप हो. उस ने बेबी को प्यार किया था और स्वयं ही उस की अटैची उठा ली थी. इस पर जब शुभ्रा ने घबरा कर उस का हाथ पकड़ लिया था तो वह बोली थी, "चल न, तू थकीमांदी आई है. आराम कर मैं रख देती हूं, नहीं तो सुखिया रख देगी." फिर क्षण भर रुक कर बोली थी. "मां को क्यों नहीं लेती आई साथ में...? थोड़ा तेरा मन भी लगता और हमारा भी कुछ साथ हो जाता..

सुन कर शुभ्रा ने गहरी सांस ली थी. जब जीवन में अकेलापन ही लिखा हो तो मां कहां तक साथ देने आएंगी? भरापूरा घर छोड़ कर उस के साथ कितने दिन रहेंगी?

फिर भी मौसी को उत्तर देना ही था. कहा था, "आएंगी, मौसी. अभी तो भतीजा छोटा है न. क्षिप्रा भी पढ़ने जाती है, इसलिए घर छोड़ना मुशकिल है. वह तो कहीं नहीं जातीं."

"हां, बेटी, घर छोड़ना तो मुशकिल होता ही है. जीते जी घर कहां छोड़ा जा सकता है. ले, अब तू चायनाश्ता कर के लेट जा. खाना तैयार हो जाएगा तो मैं भेज दूंगी यहीं. आराम से खा लेना. सब के साथ खाने में कष्ट होगा. अच्छा बता, क्या खाएगी—रोटी या परांठे? मेथी के परांठे बना रही हूं. पर नहीं, तू ने तो गाड़ी में भी पूरी खाई होगी. तेरे लिए दालचावल भेज दूंगी."

"नहींनहीं, मौसी, मुझे भूख नहीं है." शुभ्रा मौसी के स्नेह से अभिभूत हो उठी थी, "भूख होगी तो परांठे ही खा लूंगी."

"क्यों, री, परांठे क्यों खा लेगी? क्या मैं जानती नहीं कि पूरब वालों को एक दिन भी अरहर की दाल व चावल न मिलें तो बेचैन हो उठते हैं. मैं ने दाल बनवा रखी है. पता था न कि आजकल में ही तू आएगी, चावल अभी बने जाते हैं."

मौसी के शब्दों में जाने क्या जादू था कि वह प्रतिवाद ही नहीं कर पाई. वैसे कितना ही सोचती रहती कि उस ने उन्हें जोर दे कर तो मना किया ही नहीं, मगर जब वक्त आता तो मौसी के आगे उस की जीभ न जाने क्यों तालू से चिपट जाती.

सरस्वती स्वयं ही थाली परोस कर रसोई से ले आई थी. शुभ्रा को आग्रह से खाने को बैठाया था. कुछ क्षण वह दूर से चुपचाप उसे निहारती रही थी.

"मैं सोच रही थी कि अब की तो कुंवर साहब ही पहुंचाने आएंगे, मगर तू तो अकेली ही आई. वहां तो आए होंगे?"

शुभ्रा को लगा कि अब मौसी के आगे झूठ नहीं चल पाएगा. आंख उठाना उस के लिए मुशकिल हो रहा था.

"नहीं, वहां नहीं आए."

"तो क्या अभी गढ़वाल में ही हैं? वहां तो बहुत ठंड पड़ रही होगी. बर्फ भी गिरने लगी होगी, बदरीकेदारजी के भी पट इन दिनों बंद हो जाते हैं. बेचारा बर्फ में ही काम कर रहा है? ले, तू तो कुछ खा ही नहीं रही, सब ठंडा हो जाएगा."

शुभ्रा को जैसे राह मिली. पहली बात का उत्तर नहीं दे पाई थी. दूसरी बात के विषय में कहना ठीक लगा.

"बात यह है, मौसी, रास्ते भर ही कुछ न कुछ खाती आई हूं. मां ने इतना सारा रख दिया था. बेबी कुछ खाए तो खिला दूंगी."

"लेकिन, मां, आप ने तो गाड़ी में कुछ भी नहीं खाया."

बेबी के कथन से एक सन्नाटा सा खिंच आया था. आखिर मौसी ने ही कहा था, "क्यों, री शुभ्रा, मुझ से ही झूठ बोलने लगी? सच तो यह है कि मांबाप से अलग होतेहोते मन न जाने कैसा हो आता है, खानेपीने की भी सुध नहीं रहती."

शुभ्रा के मुख पर एक करुण मुसकान फैल गई थी. मन में सरस्वती के वाक्य ने उथलपुथल मचा दी थी. 'क्यों, मुझ ही से झूठ बोलने लगी?' जब मौसी को पता चलेगा कि मैं कितना बड़ा झूठ मन में रखे हुए हूं तो क्या इसी तरह स्नेह कर सकेगी?

उस ने एक निश्चय सा किया था मन में, चाहे कुछ भी हो, मौसी को अब सब कुछ बता देगी. अधिक से अधिक यही तो होगा कि उसे घर छोड़ना पड़ेगा.

सरस्वती को विश्वास नहीं हो रहा था. सुनतेसुनते अजीब सा मन हो गया था. जिस फूल के सौंदर्य पर मुग्ध हो कर वह उस की सराहना करती रही थी, वह फूल नहीं बल्कि सांप का फन था.

"अम्मांजी, मुझे तो विश्वास नहीं आता. इतनी सीधीसादी सुघड़ औरत, न कोई फैशन करती है, न जरा ऊंचे से बोलती है. सड़क पर चलती है तो हमेशा नीची नजर रख कर. वह भला ऐसा करेगी?" बहू भाई का प्रतिवाद कर रही थी.

अब आप मानें न मानें, बात सोलह आने सच्ची है. सुनते हैं, ऐसा देवता सा आदमी है, कामदेव सा सुंदर, अच्छी ऊंची नौकरी अफसर की. कोई खोट नहीं."

"ऐसी देवी सी औरत को छोड़ दिया और तुम कहते हो कोई खोट नहीं?" सरस्वती बमकी, "कोई कारण तो जरूर ही होगा, लल्लूजी, तभी कोई औरत घर छोड़ती है. कोई ऐसे ही अपना बसाबसाया घर थोड़े ही छोड़ देगी. वह भी इतने भले संस्कारी घर की लड़की."

लल्लूजी बहन की ओर देख हंसते हुए बोले थे, "अम्मांजी पर तो लगता है शुभ्रा

आचरण

सुंदर आचरण सुंदर शरीर से अच्छा है. —एमर्सन

का जादू चल गया है, कुछ मानने को तैयार ही नहीं. बात गालीगलौज, लड़नेझगड़ने की नहीं चरित्र को ले कर रही होगी. हम ने तो यहां तक सुना है कि वह आदमी यहां भी आ कर कई दिन साथ रह कर गया है."

सरस्वती के मुख का रंग क्षण भर को उड़ गया था. लेकिन शीघ्र ही उस के मन में उस एक रात की घटना बिजली की तरह कौंध गई थी. एक ही रात तो कोई मेहमान आया था और वह कैसी डरीडरी उस के पास सोने आई थी.

याद आते ही वह तमक कर बोली थी, "तुम बेगुनाह को कुछ भी दोष लगा दो, वह क्या करेगी? लेकिन कुछ भी कहो, यहां तो चिड़िया का भूत भी आएगा तो क्या सरस्वती से छिपा रहेगा? जब से आई है, बस एक ही दिन एक मेहमान आया था."

"आया था न, ठीक कह रहा हूं न?"

"नहीं," उस ने स्थिर शब्दों में कहा था, "जो तुम सुनना चाहते हो, या जो तुम ने सुना है वह गलत है. उस रात शुभ्रा मेरे पास आ कर सोई थी. मुझे बताया था कि वह उस के पति का दोस्त है. उस के पास दो कमरे हैं, फिर भी वह वहां नहीं सोई. सांझ होते ही वह इधर आ गई थी और वह सवेरा होते ही चला गया था. फिर कभी कोई नहीं आया. झूठ लांछन क्यों दें किसी को? अपने आगे बेटी नहीं तो बहू तो है, पोतियां तो हैं? हाय रे, लोग कहां तक बेपर की उड़ाने लगते हैं."

लल्लूजी चटखारेदार खबर लाए थे. सोच रहे थे कि अम्मांजी रस लेले कर सुनेंगी, समाचार देने के लिए कृतज्ञ होंगी, चेतावनी सुन कर बलिहारी जाएंगी. जब उन्हें ही सुनना पड़ गया तो रुआंसे हो कर बोले, "अब मैं क्या जानूं, जो सुना वह तुम से कह दिया. पर लोग तो बातें बनाएंगे ही कि

जाने कैसी चरित्र वाली औरत को घर में रखे हुए हैं."

"लल्लू, कोई कह के तो देखे. जिस के आंख नहीं हो, जो उस को नहीं समझे, वह भले ही कह ले, पर मैं भी वैसी ही हो जाऊं क्या?"

"जाने अंदर की क्या बात रही है, किसी को क्या पता. इतने दिनों से तो देख रही हूं, साध्वी सा चेहरा लगता है उस का."

"चेहरा कभीकभी धोखा भी दे जाता है, अम्मांजी."

"मेरी आंखों को धोखा नहीं दे सकता, लल्लू."

दृढ़तापूर्वक स्वर के आगे लल्लूजी क्या बोलते?

शुभ्रा स्कूल से लौटी तो मकान मालिक का हर व्यक्ति उस को जांचता हुआ सा लगा था. वह समझ नहीं पाई थी कि क्या बात है. दृष्टि में कौतूहल, जिज्ञासा लिए भी वह अनजान सी बन गई, यह सोच कर कि शायद उसे ऐसे ही लग रहा हो.

शुभ्रा ने पहले तो कुछ सोचने से जैसे इनकार कर दिया था, लेकिन वे निगाहें इतनी तीक्ष्ण थीं कि उस से सही नहीं जा रही थीं. उसे अपने ऊपर कांटों की चुभन सी महसूस हो रही थी. वह सार्वजनिक चर्चा का विषय नहीं बनना चाहती थी, लेकिन अपनी स्थिति छिपाने की कोशिश भी कब तक कर सकेगी? विवाहित और संभ्रांत घर की होते हुए भी वहां अकेले रहना ही काफी कौतूहल और चर्चा का विषय बन चुका था. ऐसी भी क्या पैसे की साध कि जिंदगी भर अकेले ही बने रहो? कोई पूछता, ऐसे नौकरी कर के अलग रहना था तो कुंआरी ही क्यों न रही? कैसा पति है—होना न होना एक बराबर. प्रश्नों के भाले यों ही तने रहते थे. वह यथासाध्य उन से बचने का प्रयत्न करते हुए कहीं भी आतीजाती, मिलतीजुलती नहीं थी. फिर भी उत्सुक निगाहें बनी ही रहती थीं, भले ही वह कितना ही सब से कट कर अपनी दुनिया सरस्वती तक सीमित रखने की कोशिश करे.

असंतोष

असंतुष्ट मनुष्य संसार में अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहते.

—शेक्सपियर

बड़ी बहू ने सरस्वती को कोंचा, "अम्मांजी, जरा पूछ के तो आइए, सही बात क्या है, कहीं लल्लू यों ही तो नहीं बोल रहा है."

"पूछ लूंगी. क्यों बेचारी की जान की गाहक बन रही हो? जिस का घर टूटा होगा, उस का मन कौन सा स्थिर होगा." सरस्वती की पलकें भीग आई थीं.

"अम्मांजी को तो झट रुलाई आ जाती है. उसे तो कोई गम नहीं लगता, पर यहां आंसू बहे जा रहे हैं." छोटी बहू ने उलाहना देते हुए बड़ी को संबोधित कर कहा था, "चलो, जीजी, हम ही पूछ लेते हैं. कुछ हुआ होगा तो शोक प्रकट करने तो जाना ही होगा."

बड़ी बहू कुछ कहती, इस से पहले ही सरस्वती का सास रूप प्रकट हो उठा था, "मर्दों के आने का समय हो गया है. चलो, कुछ खानेनाश्ते की तैयारी करो." कहने के साथ वह स्वयं भी रसोईघर की ओर चल दी थी.

बहुओं ने समझ लिया था कि सास को पसंद नहीं कि वे इस विषय में शुभ्रा से कुछ पूछें. उन्होंने सोचा, थोड़ी देर बाद चलेंगी. सरस्वती ने बहुओं को तो काम में लगा दिया था. किंतु स्वयं कोशिश कर के भी कुछ नहीं कर सकी थी. हाथों में जैसे शक्ति ही नहीं रह गई थी. बावली सी बैठी रही थी जड़ बनी. मटर छीलने लगी थी अचेत सी. मुन्नी के पेट में कच्ची मटर कितनी जा रही है उसे यह भी ध्यान नहीं था. क्या सच है, क्या झूठ, उस का मन कोई गवाही नहीं दे रहा था. अंततः जब उस ने देखा कि उस पर किसी का ध्यान नहीं है और शुभ्रा को भी कुछ आराम मिल गया होगा तो वह धीरे से उधर खिसक गई थी.

—क्रमशः

बच्चे तीन से कम पैदा कीजिए, पेड़ पांच से अधिक लगाइए.

भारत की सब से बड़ी समस्या गरीबी है, और इस का बहुत बड़ा कारण है जनसंख्या का बेलगाम बढ़ते जाना.

सारे धर्म ग्रंथों में लगभग हर चौथे पृष्ठ पर यह लिखा होने पर भी कि अमुक राजा या व्यक्ति अमुक पुरुष के वीर्य से, अमुक स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ, जनता को यही भुलावा दिया जाता रहा कि संतान भगवान की देन है, कोई स्त्री बांझ है तो भगवान के कोप से, किसी के दर्जनों हैं तो भगवान की कृपा से.

जब तक आधुनिक विज्ञान और पश्चिमी चिकित्सा पद्धति भारत में नहीं आई थी, गरीबी, भुखमरी, अकाल और अनेक महामारियों के कारण जनसंख्या सीमित रहती थी. परंतु आज इन सब पर आधुनिक विज्ञान ने काबू पा लिया है और मृत्यु दर लगातार घटती जा रही है. जहां पहले 100 बच्चों में से मुश्किल से 5-10 बच पाते थे, आज 60-70 से अधिक जीवित रहते हैं. प्लेग, मलेरिया, हैजा, चेचक, तपेदिक इत्यादि बड़ी संख्या में मारने वाली बीमारियां प्रायः स्वयं मर सी गई हैं.

इस सब के कारण जनसंख्या में भीषण वृद्धि हो रही है और इस व्याधि को भगवान और भाग्य के भरोसे छोड़ना सामूहिक आत्महत्या के प्रयत्न से कम नहीं है. 'भगवान जिसे दो हाथ देता है, उसे खाना भी देगा,' यह सिद्धांत पहले भी सही नहीं था, आज तो बिलकुल ही गलत और भ्रामक है.

यदि आप अपनी, अपने परिवार की और देश की गरीबी रोकना चाहते हैं तो बच्चे कम पैदा कीजिए. यह बिलकुल आप के हाथ की बात है, भगवान का इस में कोई दखल नहीं है. यदि गर्भ निरोधक सही प्रकार से प्रयोग में लाए जाएं, यानी पुरुष का वीर्य स्त्री के गर्भाशय में न जाए, तो भगवान भी लाख सिर पटक कर किसी स्त्री के संतान उत्पन्न नहीं कर सकते.

आज का युग मशीनी युग है.' सैकड़ों व्यक्तियों का काम एक मशीन हजार गुना गति से पूरा कर देती है. आज वही व्यक्ति शक्तिशाली व धनी हो सकता है, जिस को ऊंचे दर्जे की शिक्षा और प्रशिक्षण मिला हो. इन सब के लिए धन चाहिए. जितने अधिक बच्चे होंगे, उतना ही धन प्रति बच्चा कम होता जाएगा. नतीजा यह होगा कि जिन के बच्चे कम होंगे, वे उन्हें अच्छा, महंगा प्रशिक्षण दे सकेंगे. आप के बच्चे यदि ज्यादा हैं तो वे पीछे रह जाएंगे.

जहां जनसंख्या सीमित करनी है, वहां देश में अधिक से अधिक पेड़ उगाने की भी आवश्यकता है. क्योंकि बाढ़ें अधिक आ रही हैं, नदियों और बांधों में मिट्टी भरती जा रही है, सूखा पड़ता जा रहा है, रेगिस्तान फैलता जा रहा है. लकड़ी कम और महंगी होती जा रही है.

इसलिए आप अपने बच्चों का मोह अधिक वृक्ष उगा कर पूरा कीजिए. यह निश्चय कीजिए कि अपने जीवन में आप कम से कम पांच वृक्ष अवश्य लगा कर बड़े करेंगे. आप को इन से भी बच्चों से कम खुशी नहीं प्राप्त होगी. बच्चे बड़े हो कर विश्वासघात कर सकते हैं, आप को कष्ट पहुंचा सकते हैं, परंतु वृक्ष सदा आप के प्रति वफादार रहेंगे, वे आप को बराबर हर वर्ष अपनी शक्ति के अनुसार फलफूल देंगे, छाया देंगे, मौसम की बदलती आंखों से आप के घर की रक्षा करेंगे.

हो सकता है आप किराए के मकान या फ्लैट में रहते हों, और आप की कोई जमीन नहीं हो. यदि आप निचली मंजिल में रहते हैं तो वहां भी पेड़ लगा सकते हैं—और इस पर लागत दसबीस रुपए से अधिक नहीं आती. यदि आप केवल ऊपरी मंजिलों में रहते हैं तो वहां गमलों में पौधे लगाइए, सब्जी बोइए, बेलें चढ़ाइए और अन्यथा जहां भी मौका मिले पेड़ लगाइए. अपनी जमीन न हो तो किसी सार्वजनिक स्थान में—स्कूल, अस्पताल, बगीचा, सड़क, धर्मशाला आदि में, प्रबंधकों से अनुमति ले कर वृक्ष लगाइए. ज्योंज्यों वे बढ़ते जाएंगे, आप को एक अपूर्व संतोष, शांति और परिपूर्ति का उत्तरोत्तर अनुभव हो जाएगा.

आज ही निश्चय कीजिए :

बच्चे दो या तीन—पेड़ पांच से पचीस.

वेदों में क्या है?

जनसाधारण को वेदों के विषय में सही जानकारी देने के लिए सरिता में इस स्तंभ में हर बार ऋग्वेद के एक सूक्त का (सायण भाष्य पर आधारित) अविकल अनुवाद (अनुवादक डा. गंगासहाय शर्मा, एम.ए. (हिंदीसंस्कृत), पी.एच.डी., व्याकरणाचार्य प्रकाशित किया जा रहा है.

प्रथम मंडल

सूक्त-७२ देवता—अग्नि

मनुष्यों के लिए हितकारक धन हाथ में धारण करते हुए नित्य एवं ज्ञानसंपन्न अग्नि ब्रह्म संबंधी मंत्रों को स्वीकार करते हैं. स्तुतिकर्ताओं को अमृत प्रदान करते हुए अग्नि उत्कृष्ट धन के स्वामी होते हैं. (१)

मरणरहित समस्त देवगण एवं मोहहीन मरुद्गण चाहने पर भी हमारे प्रिय एवं सब ओर वर्तमान अग्नि को प्राप्त नहीं कर सके. अग्नि के बिना वे दुखी हो गए एवं पैदल चलते हुए थक कर प्रकाश को देखते हुए अग्नि के स्थान में उपस्थित हुए. (२)

हे शुद्ध अग्नि! दीप्तिसंपन्न मरुतों ने तीन वर्ष तक घृत से तुम्हारी पूजा की, तब तुम प्रकट हुए. तभी तुम्हारी अनुकंपा से उन्होंने यज्ञ में प्रयोग करने योग्य नाम एवं शरीर प्राप्त किए. (३)

यज्ञपात्र देवों ने विस्तृत आकाश एवं धरती के बीच रह कर अग्नि के योग्य स्तुतियां की थीं. मरुद्गणों ने इंद्र के साथ जाना कि अग्नि उत्तम स्थान में छिपे हैं. इस के पश्चात उन्हें प्राप्त किया. (४)

हे अग्नि! देवगण तुम्हें भली प्रकार जान कर बैठ गए एवं अपनी स्त्रियों के साथ तुम्हारी पूजा करने लगे. तुम उन के सामने घुटनों के सहारे बैठे थे. देवता तुम्हारे सखा एवं तुम्हारे द्वारा रक्षित थे. उन्होंने अपने मित्र अग्नि को देखा तो अपने शरीरों को सुखाते हुए यज्ञ करने लगे. (५)

हे अग्नि! यजमानों ने तुम्हारे भीतर छिपे हुए इक्कीस तत्त्वों को जाना. जान

कर वे उन्हीं से तुम्हारी रक्षा करते हैं. तुम यजमानों के प्रति उतना प्रेम रखते हुए उन के पशुओं एवं स्थावरजंगम धन की रक्षा करो. (६)

हे अग्नि! समस्त ज्ञातव्य बातों को जानते हुए तुम यजमान रूपी प्रजाओं के जीवन के लिए भूख रूपी रोग को दूर करो. धरती और आकाश के मध्य देवों के जाने के मार्गों को जानते हुए तुम आलस्य छोड़ कर देवों के दूत रूप में हवि वहन करो. (७)

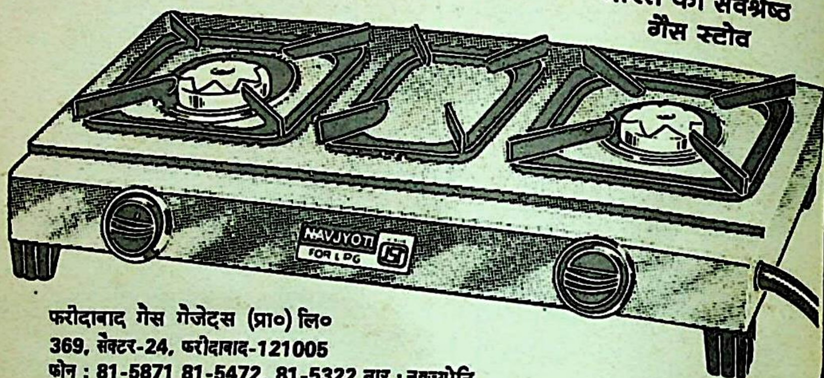
हे अग्नि! तुम ने शोभन कर्म युक्त सात महान नदियों को आकाश से निकाल कर धरती पर बहाया है. यज्ञ को जानने वाले अंगिरागोत्रीय ऋषियों ने बल नामक असुर द्वारा चुराई गई गायों का मार्ग तुम से जाना था. तुम्हारी ही कृपा से सरमा ने अंगिराओं से गोदुग्ध पाया था. उसी गोदुग्ध से मानवों की रक्षा होती है. (८)

आदित्यों ने अमरण भाव की सिद्धि के लिए उपाय करते हुए पतन रहित होने के लिए कर्म किए एवं उन महानुभावों के सहित उन की अदीना माता पृथ्वी ने समस्त जगत को धारण करने के लिए विशेष महत्त्व प्राप्त किया था. हे अग्निदेव! यह सब इसी कारण हो सका कि तुम ने उस यज्ञ का हवि भक्षण किया था. (९)

यजमानों ने इस अग्नि में शोभन यज्ञ संपति स्थापित की एवं यज्ञ का चक्षुरूप घृत डाला. इस से मरणरहित देव यज्ञ का समय जान कर आए. हे अग्नि! तुम्हारी प्रकाशयुक्त ज्वालाएं सरिताओं के समान समस्त दिशाओं में फैल गईं एवं आए हुए देवों ने उन्हें जाना. (१०)



IS: 4246
ISI



NAVJYOTI
FOR LPG
ISI





LISA
NAIL ENAMEL
LISA
GLAMOUR



★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

○ घमंडी

निर्माता : एफ. प्रोडक्शंस
निर्देशक : रमेश वेदी
मुख्य कलाकार : मिथुन चक्रवर्ती, सारिका, रंजीत.

आदर्श सामाजिक व्यवस्था के लिए पतिपत्नी का पारस्परिक समन्वय व प्रेम बेहद जरूरी है, इस विषय पर हिंदी में पहले भी कई फिल्में बन चुकी हैं.

'घमंडी' में नयापन तो दूर, हाल ही में प्रदर्शित कई फिल्मों की कोरी नकल है. 'श्रीमान श्रीमती' में से सारिका व अमोल पालेकर वाला प्रसंग पूरी सफाई से उड़ा लिया गया है. फिल्म की लंबाई बढ़ाने के लिए मारपीट के कुछ प्रसंग भी जोड़ दिए गए हैं.

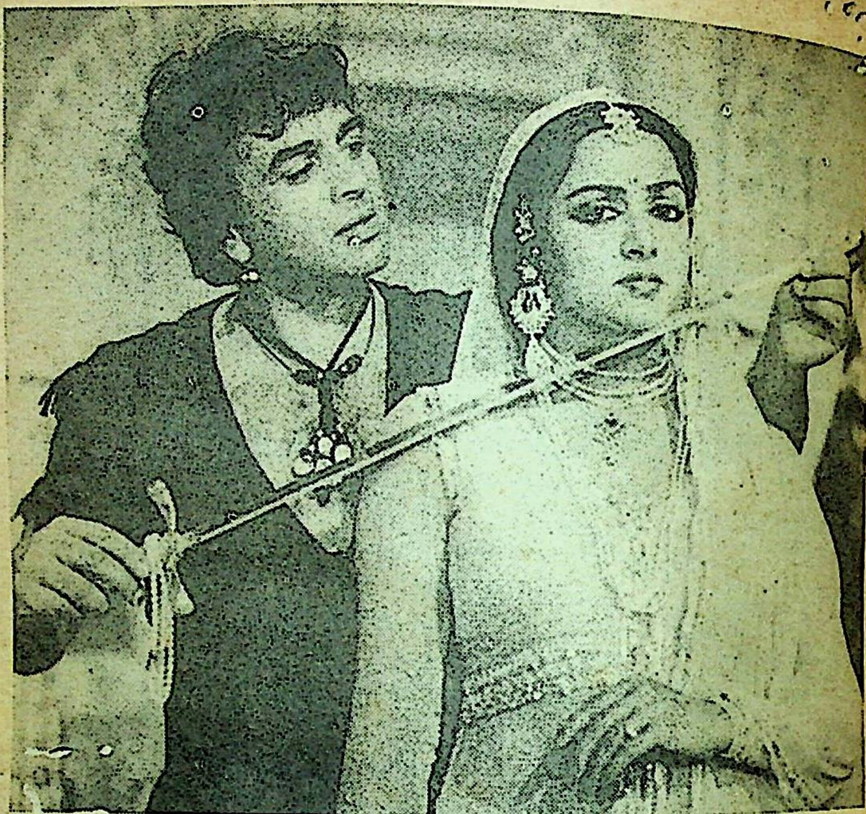
सीमा (सारिका) दौलत के नशे में चूर हो कर अपने पति कमलेश (मिथुन) से अलग हो जाती है, लेकिन परिस्थितियां उसे फिर से उसी के पास ले आती हैं और वह महसूस करने लगती है कि बिना पति के उस की कोई अहमियत नहीं है.

अभिनय, गीत, संगीत व तकनीकी दृष्टियों से फिल्म सिर्फ शून्य है. समझ में नहीं आता कि जब फिल्म उद्योग की हस्तियां पैसे की कमी का रोना रोती हैं, तब लाखों रुपए खर्च कर ऐसी फिल्में क्यों बनाई जाती हैं जिन्हें किसी भी वर्ग का दर्शक देखना पसंद नहीं करता.

○ बगावत

निर्माता : सागर आर्ट इंटरनेशनल
निर्देशक : रामानंद सागर
मुख्य कलाकार : धर्मेंद्र, हेमा, अमजद खान, रीना राय, सुजीतकुमार, दिनेश ठाकुर, उर्मिला भट्ट, शीतल.

उद्देश्यपूर्ण फिल्मों के विपरीत कुछ फिल्में केवल मनोरंजन की दृष्टि से बनाई जाती हैं. निर्मातानिर्देशक रामानंद सागर दूसरी कोटि के निर्माता हैं. लेकिन 'आंखें' के बाद उन की फिल्मों के मनोरंजन का स्तर भी लगातार गिरता जा रहा है. इस का मुख्य कारण यह है कि अब उन में मौलिक सूझबूझ नहीं रही है. दूसरे निर्माता बाक्स आफिस पर सफल फिल्में बना कर जिन मसालों को त्याग जाते हैं, सागर महोदय उन की नकल को दौड़ते हैं. इस नकल का ध्यान भी उन्हें बहुत देर बाद आता है या फिल्म बनाने में इतना समय लगा देते हैं कि उन की फिल्म नकलों की नकल बन कर रह जाती है. फिल्म 'बगावत' इस का ताजा उदाहरण है.



फिल्म 'बगावत' के एक दृश्य में धर्मेंद्र व हेमा मालिनी.

बगावत में एक राजपरिवार की कहानी ली गई है. राजसिंहासन पर विक्रम (अमजद) ने अवैध कब्जा कर रखा है और वह प्रजा पर तरहतरह के अत्याचार करता है. सिंहासन का असली वारिस अमर (धर्मेंद्र) गरीबी में पलता है और दोनों में टक्कर होती है. इसी कहानी में अमर, राजकुमारी पद्मा (हेमा) और छल्लो (रीना राय) के प्रेम का त्रिकोण दिखा कर छल्लो का बड़े ही घिसेपिटे रूप में बलिदान दिखाया गया है.

फिल्म की कहानी तो बासी है ही, उसे टूटेफूटे पुराने राजमहलों में बचकाना सेटों पर फिल्माया गया है. इस से दृश्यों में राजसी ठटबाट की झलक नहीं आ सकी. जब चाहे अमर का ऊंचे महलों में चढ़ कर राजकुमारी के कक्ष में जा घुसना और उसी प्रकार सेना को चकमा दे कर कूद जाना आदि दृश्य 30-40 साल पहले तो मनोरंजन कर सकते थे, आज तो दर्शक को उकताहट ही देते हैं.

राजपरिवार की कहानी होने से निर्माता को तरहतरह की पोशाकों पर भारी खर्च करना पड़ा है, जब कि राजकुमारी के व्यक्तिगत कक्ष को छोड़ कर एक भी भव्य राजसी सेट देखने को नहीं मिलता. दरबार के एक साधारण से सेट पर अधिकतर दृश्य फिल्मा लिए गए हैं.

अभिनय और व्यक्तिगत दोनों दृष्टियों से धर्मेंद्र और हेमा अनाकर्षक लगते हैं. रीना राय का अभिनय जरूर कुछ अच्छा है, पर वह शक्ल से भद्दी लगती है. आनंद बख्शी और लक्ष्मीकांत प्यारेलाल एक भी मधुर गीत नहीं दे सके. फिल्म का एक मात्र सराहनीय पक्ष बैकुंठ की फोटोग्राफी है.

○ प्रेम रोग

निर्माता : के.आर. फिल्म्स
लेखिका : डा. (श्रीमती) कामनाचंद्र
निर्देशक : राज कपूर
मुख्य कलाकार : ऋषि कपूर, पद्मिनी कोल्हापुरे, शम्मी कपूर, नंदा, कुलभूषण, तनुजा.

राजकपूर की हर फिल्म का सामान्यतः दर्शकों को काफी उत्सुकता से इंतजार रहता है. लेकिन लगता है कि 'मेरा नाम जोकर' की असफलता की वजह से उस का सारा आत्मविश्वास खत्म हो गया है. 'प्रेम रोग' में उस राज कपूर की कहीं भी छाप नजर नहीं आती जिस ने 'आवारा,' 'बूट पालिश' व 'श्री 420' जैसी फिल्में दी थीं.

'प्रेम रोग' में राज कपूर ने विधवा विवाह व कुलीन वर्ग की दोहरी मानसिकता, संकीर्णता और बेहूदी परंपराओं के जाल में जकड़े रहने की विवशता का विषय उठाया है.

ये तमाम विषय एक तो हिंदी फिल्मों में अनेक बार इस्तेमाल किए जा चुके हैं और दूसरे आज के समय में 30-40 साल पुरानी समस्या की बात करना बिलकुल बेमानी लगता है.

ठाकुर की बेटी मनोरमा (पद्मिनी) व अनाथ युवक देवधर (ऋषि) का प्रेम किसी को स्वीकार नहीं होता. मनोरमा की शादी नरेंद्रप्रताप (विजयेंद्र) से कर दी जाती है. लेकिन विधवा हो कर जेठ द्वारा बलात्कार का शिकार हो कर वह वापस अपने घर लौट आती है. नायक नायिका के मिलन की कोशिश में आखिरी छः रीलों में नारेबाजी व मारपीट ही होती रहती है.

पंडित द्वारा मनोरमा की झूठी जन्मपत्री बनाने का प्रसंग जोड़ कर राज कपूर ने धार्मिक पाखंड पर चोट की है, लेकिन खुद ही अपने जाल में फंस गया है.

पिछले बारह महीनों में

★★★ बसेरा, उमराव जान, ये नजदीकियां.

★★ गृह प्रवेश, चक्र, मेरी आवाज सुनो, राजपूत, जीवनधारा, अंगूर, बाजार, हमकदम.

★ धनवान, चश्मेबद्दूर, दर्द, प्रेमगीत, सिलसिला, पहला कदम, खराखोटा, एक ही भूल, आहिस्ता आहिस्ता, इतनी सी बात, कालिया, दिले नादान, नई इमारत, श्रद्धांजलि, सत्ते पे सत्ता, जमाने को दिखाना है, अपना बना लो, श्रीमान श्रीमती, बेमिसाल, देशप्रेमी, तुम्हारे बिना, दासी, नमक हलाल, सवाल, शौकीन, आधारशिला, सितारा, तेरी कसम, मेहंदी रंग लाएगी.

○ वारदात, मान गए उस्ताद, खून की टक्कर, हम से बढ़ कर कौन, नारी, कसम भवानी की, कातिलों के कातिल, प्यासा सावन, ये रिश्ता न टूटे, सन्नाटा, खुदा कसम, मीठी मीठी बातें, नौकरी, साहस, अरमान, शैतान मुजरिम, तजरेबा, याराना, जेलयात्रा, कमांडर, फिफ्टी फिफ्टी, राज, शाका, जल महल, नागिन और सुहागिन, मैं और मेरा हाथी, कोबरा, गहरा जख्म, गर्भज्ञान, दौलत, कहानी एक चोर की, आमने सामने, कच्चे हीरे, जोश, धन दौलत, गोपीचंद जासूस, रास्ते प्यार के, रक्षा, शमा, प्यारा तराना, प्रेम रहस्य, जियो तो ऐसे जियो, उस्तादी उस्ताद से, दो दिल दीवाने, प्यारा दोस्त, हीरों का चोर, तीसरी आंख, अशांती, दो उस्ताद, दिल का साथी दिल, बदले की आग, इनसान, ईंट का जवाब पत्थर, मैं इंतकाम लूंगा, गजब, मेहरबानी, बेगुनाह कैदी, आदत से मजबूर, पांच कैदी, सनम तेरी कसम, डायल 100, आपस की बात.

आई की घटनाओं से लगता है कि अगर जन्मपत्री ठीक होती तो मनोरमा विधवा ही न होती.

इस फिल्म पर दो करोड़ रुपया लगाने के बाद राज कपूर ने घोषणा की थी कि अगर फिल्म नहीं चली तो वह फिल्में बनाना छोड़ देगा.

पहले यह फिल्म छोटे बजट में बन रही थी. निर्देशक थे— जैनेंद्र जैन. बाद में राज कपूर ने जब निर्देशक का काम संभाला तो पद्मिनी कोल्हापुरे से तारीखें देने के मामले पर उस का मतभेद हो गया. फिल्म ज्यादा भव्य बना कर उस ने इस की लागत इतनी बढ़ा दी कि कोई वितरक छः महीने तक आगे नहीं आया. अब अधिकांश जगह कपूर परिवार से संबंधित लोगों ने ही फिल्म वितरित की है.

फिल्म में पद्मिनी सब से ज्यादा प्रभावित करती है. ऋषि के लिए कोई गुंजाइश ही नहीं थी. वह पद्मिनी के मुकाबले कहीं अधिक बड़ा लगता है. शम्मी कपूर ने पृथ्वीराज कपूर बनने की ही असफल कोशिश की है. नंदा व तनुजा सामान्य हैं. खलनायक के रूप में कुलभूषण खरबंदा बेहद नाटकीय लगता है.

राधू करमाकर की फोटोग्राफी अच्छी हो कर अंदरुनी फोटोग्राफी अंधेरे में की गई लगती है. सेट भव्य हैं. एकदो गीतों में खास तौर से 'मुहब्बत है क्या...' में लक्ष्मीकांत प्यारेलाल का संगीत मधुर है. ●

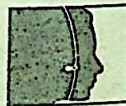
क्लिअरेसिल अब

नई क्लिअरेसिल वैनिशिंग मेडिकेशन जो आपकी त्वचा में घुलमिल जाए, असर दिखाए

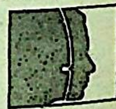
मतलब आपकी चहेती क्लिअरेसिल अब वैनिशिंग क्रीम के रूप में भी मिलती है. ये चेहरे पर दिखाई नहीं देती. कील – मुंहासों की प्रभावशाली दवा की दवा और सौंदर्य प्रसाधन भी.

दोनों, कील-मुंहासे साफ़ करें, क़ाबू में रखें

अपनी अनोखी ३-तरफ़ा क्रिया से



१. मुंहासे खोलती है



२. मुंहासे साफ़ करती हैं



३. मुंहासे मुखपर मिटा देती हैं



क्लिअरेसिल कील मुंहासे साफ़ करे, क़ाबू में रखे

दुनिया की नं. १ कील-मुंहासों की दवा

एक नहीं, दो!

क्लिअरेसिल स्किन कलर्ड मेडिकेशन, जो कील-मुंहासों को छुपाए, असर दिखाए

आपकी जानी पहचानी क्लिअरेसिल, जो आप हमेशा ही इस्तेमाल करती रही हैं—वह भी मिलती है. अब पसंद आपकी, जो मन भाए वही लीजिए. दोनों औषधिगुणों से भरपूर, प्रभावशाली. आपकी कील-मुंहासों की समस्या को सुलझाने लिए त्वचा विशेषज्ञों द्वारा बनाई गई.

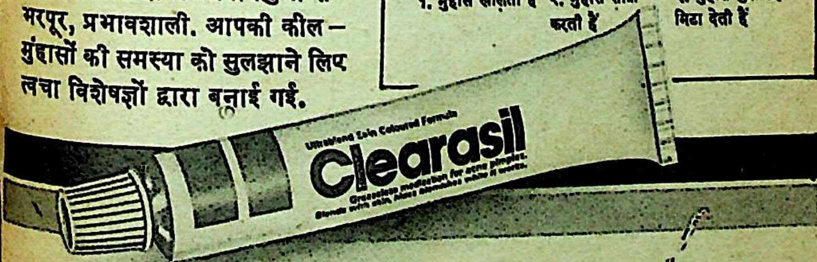
दोनों, कील-मुंहासे साफ़ करें, क़ाबू में रखें

अपनी अनोखी ३-तरफ़ा क्रिया से


१. मुंहासे खोलती हैं


२. मुंहासे साफ़ करती हैं


३. मुंहासे सुखाकर मिटा देती हैं



क्लिअरेसिल कील मुंहासे साफ़ करे, क़ाबू में रखे

दुनिया की नं. १ कील-मुंहासों की दवा

OBM-8784-HN

वैवाहिक विज्ञापन
व्यक्तिगत विज्ञापन
वर चाहिए

28 वर्षीया, 155 सें.मी., गौरवर्ण, स्लिम, अध्यापिका 600/-, राजस्थान निवासी उत्तरप्रदेशीय कूर्मि क्षत्रिय कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4065, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., कद 164 सें.मी., साफ रंग, स्लिम, चश्माधारी, सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व, गृहकार्य प्रवीण, मृदुभाषी, पारिवारिक माहेश्वरी कन्या हेतु सुशिक्षित, कार्यरत, सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. शीघ्र अच्छा विवाह. लिखें : वि.नं. 4160, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, 158 सें.मी., सेंट्रल स्कूल में म्यूजिक टीचर, वेतन 700/-, (पहले पति से संबंध विच्छेद) बहुत सुशील, सुंदर वैश्य लड़की हेतु आत्मनिर्भर, चरित्रवान, आदर्शवादी, उच्च विचारों वाला वर चाहिए. दहेज के पक्षधर संपर्क न करें. आदर्श विवाह. लिखें : वि.नं. 4161, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 24, तलाकशुदा, निस्संतान, मैट्रिक, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए. विधुर भी स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 4162, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्य प्रदेश निवासी, 29 वर्षीया, कान्यकुब्ज, एम.ए., गौरवर्ण, अति सुंदर, इकहरा शरीर, 160 सें.मी., गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु बिजनेस, एक्जीक्यूटिव, डाक्टर, इंजीनियर या द्वितीय श्रेणी अधिकारी, योग्य वर चाहिए. जन्मपत्रिका सहित लिखें: वि.नं. 4163, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, बी.एससी., बी.एड., शिक्षिका, श्रीवास (नाई) कन्या हेतु सजातीय, योग्य, सेवारत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4164, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 व 21 वर्षीया, सुंदर, सुशील, गृहकार्य दक्ष, वार्ष्णेय गुप्ता, 150 सें.मी., 43 कि., 1,200, बी.एससी., एक्सपोर्ट एक्जीक्यूटिव और 153 सें.मी., 45 कि., बी.काम. अध्ययनरत, डिप्लोमा एडवरटाइजिंग मार्केटिंग मैनेजमेंट पब्लिक रिलेशंस कन्याओं हेतु सुयोग्य वर चाहिए. विशेष प्रतिभावान उम्मीदवार हेतु जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4165, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, सनाढ्य ब्राह्मण, बी.ए., मांगलिक, सुंदर, स्वस्थ कन्या के लिए सुयोग्य, कार्यरत वर चाहिए. जन्मपत्री सहित लिखें : वि.नं. 4166, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20, 155 सें.मी., बी.ए., संगीत प्रभाकर, सुंदर, सौम्य एवं गृहकार्य में दक्ष, इलाहाबाद में कार्यरत, इंजीनियर की कन्या हेतु सैनी (भागीरथी) वर चाहिए. दहेज के इच्छुक कृपया संपर्क न करें. लिखें : वि.नं. 4167, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, जाट दहिया, बी.ए., रंग साफ कन्या हेतु सजातीय, सरकारी सेवारत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4168, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, पंजाबी खत्री, बी.ए., बी.टी.सी. ग्रेजुएट, गृहकार्य में दक्ष, 155 सें.मी., अविवाहित, सुंदर लड़की के लिए संतान न चाहने वाले अविवाहित युवक, सरकारी सर्विस करने वाला वर चाहिए. शादी शीघ्र. लिखें : वि.नं. 4169, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 160 सें.मी., राजपूत, रंग गेहुआं, बी.ए., गृहकार्य व संगीत में निपुण के लिए वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4170, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तर प्रदेश, सुशिक्षित परिवार की 26 वर्षीया, 152 सें.मी., एम.ए., बी.एड. तथा 24 वर्षीया, 155 सें.मी., बी.एससी., बी.एड., सुंदर, सुशील, गौरवर्ण, गृहकार्य में दक्ष कन्याओं हेतु सुशील, सुयोग्य आत्मनिर्भर वर चाहिए. शीघ्र अच्छा विवाह. कोई बंधन नहीं. विश्वकर्मा ब्राह्मण को वरीयता. पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 4171, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, ग्रेजुएट, गृहकार्य दक्ष, 154 सें.मी., रंग गोरा, राजपूत कन्या हेतु सुयोग्य कार्यरत राजपूत वर चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें : वि.नं. 4172, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, सुंदर, स्वस्थ, 155 सें.मी., एम.एससी., बी.एड., कान्यकुब्ज कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4173, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, अग्रवाल, एम.ए., 150 सें.मी., इकहरी, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य, मांग विरोधी वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणावासी को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 4174, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, एम.एससी., एम.एड., सेंट्रल सेवारत, राजपूत (तंवर) कन्या हेतु सुयोग्य सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4175, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, एम.एससी. प्रथम श्रेणी, 23 वर्षीया, 156 सें.मी. लंबी, रंग साफ, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु ब्राह्मण कार्यरत सुयोग्य वर चाहिए. अच्छा एवं शीघ्र विवाह. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4176, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, कायस्थ सक्सेना, सुंदर, एम.ए.,

बी.एड., राजस्थान में अध्यापिका हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4177, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, श्रीवास्तव, एम.ए., गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, आकर्षक, गृहकार्य कुशल युवती हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4178, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, 24 वर्षीया, 155 सें.मी., गेहुआं रंग, आकर्षक, सुशील, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु अधिकारी या सुव्यवसायी वर चाहिए. शीघ्र व उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 4179, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 158 सें.मी., एम.ए., स्वस्थ, सुंदर तथा गृहकार्य में दक्ष कुर्मि क्षत्रिय कन्या हेतु सजातीय योग्य कार्यरत वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 4180, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लंबी, सुंदर, पोस्ट ग्रेजुएट, 33, 37 ब्राह्मण कन्याओं हेतु योग्य वर चाहिए. स्थानीय वरों को प्राथमिकता. शीघ्र सादा विवाह, जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4181, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार की इकहरे बदन, 25 वर्षीया, एम.एससी., बी.एड., शासकीय सेवारत कन्या के लिए क्लास वन आफिसर, डाक्टर, इंजीनियर वर चाहिए. शीघ्र शादी. लिखें : वि.नं. 4215, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, दिगंबर जैन, मैट्रिक, 165 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर कन्या के लिए सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 4216, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, संपन्न, माहेश्वरी पचीसिया परिवार की 25 वर्षीया, नर्सरी टीचर्स ट्रेनिंग पास, बी.ए. पार्ट–II में अध्ययनरत कन्या के लिए सुयोग्य, सुशिक्षित वर चाहिए. पिता विदेश में कार्यरत हैं. लिखें : वि.नं. 4217, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंहल, अग्रवाल गोत्रीय, 26 वर्षीया, 157 सें.मी., एम.ए., साफ रंग कन्या हेतु सुयोग्य वर की आवश्यकता है. लिखें : वि.नं. 4218, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संतानोत्पत्ति अयोग्य 18 वर्षीया, लंबी, सुंदर, सुशील, अग्रवाल, गर्ग कन्या हेतु संतानोत्पत्ति अयोग्य, संतान का अनिच्छुक परंतु वैवाहिक धर्म में पूर्णतया सक्षम वर चाहिए. एकदो संतानयुक्त 25,26 वर्षीय विधुर को वरीयता, नसबंदीयुक्त स्वीकार्य. शीघ्र अच्छी शादी. केवल संजातीय ही गोत्र सहित लिखें : वि.नं. 4219, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, एम.ए. प्रथम (हिंदी), दिगंबर जैन (सरावगी) गोधा गोत्रीय, साधारण परिवार की स्वस्थ, सुंदर एवं सुशील कन्या हेतु सजातीय, सुशिक्षित एवं स्वावलंबी वर चाहिए. मानवतावादी विचारों को प्रधानता. दहेज नहीं. संपूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4220, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, एम.ए., मध्य प्रदेश शासन में अधिकारी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण (मंगली), गौरवर्ण, छरहरी, 163 सें.मी., सुंदर कन्या हेतु सजातीय योग्य वर चाहिए. अच्छी शादी. मध्य प्रदेश में सेवारत को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 4221, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जिला मेरठ के प्रतिष्ठित परिवार रस्तोगी 22/152 सें.मी., बी.ए. (अंगरेजी) प्रथम श्रेणी, एम.ए. (इतिहास) प्रथम श्रेणी, गोरी, अति सुंदर, इकहरी, स्वस्थ, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु शिक्षित, आत्मनिर्भर वैश्य वर चाहिए. उत्तम शादी. लिखें : वि.नं. 4222, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, ब्राह्मण, बी.ए. पास, सुंदर एवं साफ रंग कन्या हेतु वर चाहिए. पिता गजेटेड आफिसर एवं मध्य प्रदेश निवासी हैं. लिखें : वि.नं. 4223, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 160 सें.मी., पंजाबी, सारस्वत ब्राह्मण, स्मार्ट, एम.ए., गृहकार्य दक्ष, वाराणसी निवासी कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4224, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जम्मू निवासी, गृहकार्यों में दक्ष, 151 सें.मी., बी.एड. अध्यापिका, वेतन 1,000/- रु. तथा बी.एससी., 151 सें.मी., सुसंपन्न उच्च परिवारीय बहनों के लिए 35 से 40 व 31 से 35 वर्षीय, सुशिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. शीघ्र लिखें : वि.नं. 4225, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22/156 सें.मी., सक्सेना मंगली, बी.ए., बी.एड., अति सुंदर, गोरी, गुणवान, स्वस्थ, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सी.ए./इंजीनियर/बैंक अधिकारी/राजपत्रित अधिकारी मांगलिक कायस्थ वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4226, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मांगलिक कायस्थ, 22 वर्षीया, एम.ए., 150 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, प्रतिष्ठित परिवार, पिता व भाई उच्च वकील, इंजीनियर तथा फैक्टरी व माइंस व्यापाररत कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, व्यवसायरत वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 4227, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शिक्षित परिवार की 26/152 सें.मी., इकहरा बदन, गौरवर्ण, एम.ए., बी.एससी., बी.एड., गृहकार्य दक्ष अध्यापिका कन्या हेतु क्षत्रिय स्वर्णकार, डाक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक या प्रोबेशन अधिकारी, कालेज प्रवक्ता वर की आवश्यकता है. जातिबंधन नहीं, लेकिन क्षत्रिय स्वर्णकार तथा राजपूत को वरीयता. लिखें : वि.नं. 4228, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 23 वर्षीया, 158 सें.मी., बी.ए., सुंदर, गेहुआं रंग, सुशील, मृदुभाषी, गृहकार्य में दक्ष, कानपुर वासी कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 4233, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुशिक्षित माहेश्वरी परिवार की एकमात्र 21 वर्षीया, 158 सें.मी., एम.ए. अध्ययनरत, स्मार्ट,

गौरवर्ण, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर, चार्टर्ड एकाउंटेंट, उच्च व्यावसायिक, सजातीय वर चाहिए. सविवरण लिखें : वि.नं. 4238, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ग्वालियर की 19 वर्षीया, एम.ए., गौड़ ब्राह्मण कन्या के लिए व्यवसायी/उच्चाधिकारी वर चाहिए. अच्छी शादी. लिखें : वि.नं. 4241, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

29 तथा 24 वर्षीय, एम.ए., जायसवाल, औषधी व्यवसाय, आय चार अंकों में, सुंदर वधू चाहिए. शीघ्र विवाह, मेडिकोज प्राथमिकता, जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4121, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, श्वेतांबर जैन, 180 सें.मी., ग्रेजुएट, आकर्षक, छोटा व्यवसाय, तलाकशुदा युवक हेतु सुशील, व्यावहारिक वधू चाहिए. तलाकशुदा, गरीब, विधवा को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 4126, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय, भारद्वाज गोत्र, 30 वर्षीय, शिक्षा आठवीं तक, केंद्रीय संस्थान में ड्राइवर, मासिक आय 500/- युवक हेतु सजातीय वधू चाहिए. दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4182, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, अग्रवाल, भारतीय सरकार में सेवारत, प्रथम श्रेणी आफीसर, 1,500 रु. मासिक आय युवक के लिए गृहकार्य दक्ष, सुंदर, सुशील, शिक्षित कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4183, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अमरीकी नागरिक, निस्संतान तलाकशुदा हिंदू सिस्टम इंजीनियर, 164 सें.मी., 40, के लिए वधू चाहिए. वार्षिक आय 40,000/- डालर, निस्संतान तलाकशुदा, विधवा भी विचारार्थ. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4184, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंबई वासी, अग्रवाल जिंदल 26, 162 सें.मी., 50 कि.ग्रा., सुशिक्षित, सुपरवाइजर, 1,500/-, सुसंस्कृत सुंदर युवक हेतु छरहरी, गौरवर्ण, आकर्षक नववधू चाहिए. दहेज बंधन नहीं. विज्ञापन उपयुक्त चुनाव हेतु. लिखें : वि.नं. 4185, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, राजपूत, सरकारी कर्मचारी को सुंदर, सुशील जीवनसाथी चाहिए, बी.ए., बी.एड. को प्राथमिकता. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 4186, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, सारस्वत ब्राह्मण, एम.बी.बी.एस., स्नातकोत्तर प्रशिक्षित, संपन्न परिवार के युवक हेतु सुंदर, सुशील कन्या की आवश्यकता है. पूर्ण विवरण सहित शीघ्र एवं सादा विवाह के लिए लिखें : वि.नं. 4187, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, साध (कोरी), 160 सें.मी., स्टेट बैंक में कार्यरत, वेतन चार अंकों में युवक हेतु वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. एक बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 41[illegible], सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, पंजाबी खत्री, राजस्थान निवासी विधुर, 1½ वर्षीय एक संतान, मासिक आय 1,500/- रु., अच्छा घर, सामान्य पढ़े युवक के लिए सजातीय वधू चाहिए. दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4189, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली सुस्थापित, सौम्य, स्मार्ट, स्नातकोत्तर, एकाकी, विधुर हिंदू 50 हेतु निर्बंधन वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4190, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू वैश्य, 30 वर्षीय, अमरीका में उद्योगपति वर हेतु सुंदर, शिक्षित हिंदू लड़की चाहिए. दहेज का बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4191, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू वैश्य, 28 वर्षीय, व्यवसाय नौकरी वर हेतु सुंदर, शिक्षित हिंदू लड़की चाहिए. दहेज का बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4192, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (कारपेंटर), 26,181 सें.मी., पूर्व रेलवे कमर्शियल असिस्टेंट हेतु अति सुंदर कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4193, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, कान्यकुब्ज, गौरवर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व, वरिष्ठ प्रथम श्रेणी अधिकारी, मासिक आय 2,000/- के लिए गौरवर्ण, सुंदर तीखे नाकनक्श की, सुशिक्षित, सुयोग्य ब्राह्मण वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. संपूर्ण विवरण प्रथमतः लिखें : वि.नं. 4194, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, एम.काम., महावरकोली, संपन्न परिवार, सुंदर युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4195, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 165 सें.मी., कार्यरत, वेतन 1,000/-, अनुसूचित जाति के स्नातक, स्वस्थ, सुंदर युवक हेतु सुशिक्षित, घरेलू वधू चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4196, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, मित्तल, प्रथम श्रेणी कांट्रेक्टर, 178 सें.मी. युवक हेतु सुशिक्षित, सुंदर वधू चाहिए. पिता इंजीनियर. लिखें : वि.नं. 4197, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीय, शुक्ल ब्राह्मण, मासिक 1,500/-, निजी घर, केंद्रीय विद्यालय सेवारत हेतु ब्राह्मण, सुंदर, सुशिक्षित, दहेज रहित वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4198, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अमरीका शिक्षित, अग्रवाल, इंजीनियर हेतु मेडिको कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4199, सरिता नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गर्ग, 16[illegible] सें.मी., 25 वर्षीय, सुंदर, स्वस्थ, बी.काम., उत्तम व्यवसाय, कलकत्ता निवासी

युवक हेतु सजातीय, सुंदर, सुसंस्कृत, गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4200, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित पंजाबी परिवार के 30 वर्षीय, एम.ए., 165 सें.मी., अपने व्यापार में संलग्न युवक हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. मांग बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4201, सरिता, नई दिल्ली-110055.

द्विवेदी ब्राह्मण, 38 वर्षीय, 180 सें.मी., स्वस्थ, स्मार्ट, व्यवहारकुशल, निजी व्यवसाय, आय पांच अंकों में हेतु लंबी, सुंदर, सुशील, गौरवर्ण, सजातीय वधू चाहिए. दहेज बंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4202, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, माहेश्वरी, 170 सें.मी., एम.काम. (फाइनल), मासिक आय पांच अंकों वाले, सुंदर युवक हेतु सुंदर, गौरवर्ण वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु लिखें : वि.नं. 4203, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, शासकीय विभाग क्लर्क, हिंदू भुजवा जातीय हेतु गैर जाति वधू चाहिए. नौकरीशुदा मान्य. लिखें : वि.नं. 4204, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर वैश्य, साइंस स्नातकोत्तर, बैंक में, आय 800, छरहरे 25/166 सें.मी. युवक हेतु सुंदर, साइंस ग्रेजुएट वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4205, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग, 25, बैंक हैड कैशियर हेतु वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4206, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव (अनुसूचित जाति) अविवाहित, 25 वर्षीय, 170 सें.मी., एम.ए., स्मार्ट, सुंदर, बैंक सेवारत युवक हेतु सजातीय, सुशिक्षित, सुंदर, सुशील, गौरवर्ण, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4207, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीय, सिविल (सब इंजीनियर) कान्यकुब्ज ब्राह्मण हेतु सजातीय, सुंदर, गौरवर्ण, लंबे कद की कन्या चाहिए. जन्मपत्रिका सविवरण लिखें : वि.नं. 4208, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मुराव (काछी) 28, बैंक अधिकारी, आय 1,700/-, दहेज विरोधी, सांवले युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. अन्य जातियां भी विचारणीय. लिखें : वि.नं. 4209, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न, व्यावसायिक, बीसा अग्रवाल (गोयल) परिवार के 23 वर्षीय, 170 सें.मी., सुंदर, शिक्षित युवक हेतु सजातीय, सुंदर, सुशील, शिक्षित वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 4210, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, कान्यकुब्ज, 168 सें.मी., डिवीजनल फारेस्ट आफीसर पद पर कार्यरत, मासिक आय 2,000/- हेतु सुंदर, गौरवर्ण, मेडिको/बैंक आफीसर ब्राह्मण वधू चाहिए. एक बार में संपूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 4211, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय, 23 वर्षीय, वैश्य, इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियर (रुड़की), आय 2,000/- [illegible] कार्यरत, 183 सें.मी., अति आकर्षक व्यक्ति[illegible] आधुनिक विचारक परिवार, [illegible] हेतु अति सुंदर, स्लिम, लंबी कन्या चाहिए. उत्तम चयन हेतु जाति अविचारणीय. लिखें : वि.नं. 4212, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, साहू, एम.टेक (खड़कपुर) शासकीय इंजीनियर, मासिक आय 1,600/- हेतु व्यवहारकुशल, गौरवर्ण, ग्रेजुएट/पोस्ट ग्रेजुएट कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4213, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, संपन्न, एयस कैप्टन (डाक्टर) हेतु अति सुंदर, लंबी, 21 वर्षीया तक वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4214, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय डाक्टर हेतु वधू चाहिए. तलाकशुदा भी मान्य, जाति व दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 4232, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, धोबी जाति, राजपत्रित अधिकारी, वेतन चार अंकों में प्राप्त युवक हेतु उच्च शिक्षित वधू चाहिए. सरकारी सेवा में अच्छे पदों पर कार्यरत को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 4237, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी, 25 वर्षीय, गौड़ भारद्वाज, बी.-काम., कार्यरत हेतु सुंदर सुशील, सजातीय वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 4240, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

कायस्थ, वरिष्ठ सरकारी अधिकारी की 27 वर्षीया, एम.ए., गौरवर्ण, 153 सें.मी., सुंदर, सुशील कन्या तथा 26 वर्षीय, विज्ञान एवं विधि स्नातक भाई, 168 सें.मी. केंद्रीय कर्मचारी, आय रु. 1,400/- मासिक हेतु सुशिक्षित एवं योग्य वर व वधू चाहिए. एक ही परिवार के भाई बहन के संबंध भी विचारणीय. लिखें : वि.नं. 4229, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, कहार, अंडर ग्रेजुएट कन्या तथा 24½ वर्षीय, भाई अंडर ग्रेजुएट, इकलौता लड़का, अपना मकान, बिजनेस द्वारा आय 1,500/- मासिक. दोनों के साफ रंग, अति सुंदर हेतु वरवधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4230, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, 21 वर्षीया, गेहुआं, 160 सें.मी., एम.ए., सुंदर कन्या हेतु योग्य वर एवं 25 वर्षीय भाई गेहुआं, 164 सें.मी., एम.ए., जर्नलिस्ट व्यवसायरत हेतु सुंदर कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 4231, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

आवश्यकता है प्रतिनिधियों की जो घरघर जा कर पर्स की बिक्री कर सकें. वेतन 600/-, कमीशन 2% तथा बस पास. लिखें : वि.नं. 4239, सरिता, नई दिल्ली-110055.